राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक—जितेन्द्रकुमार जैन, एम. ए.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

तृतीय भाग

सम्पादक

नारायणसिंह भाटी, एम.ए., एल.एल.बी., पी-एच.डी.

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1 9 7 4

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—जितेन्द्रकुमार जैन, एम. ए.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

तृतीय भाग

सम्पादक

नारायणसिंह भाटी, एम.ए., एल.एल.बी., पी-एच.डी.

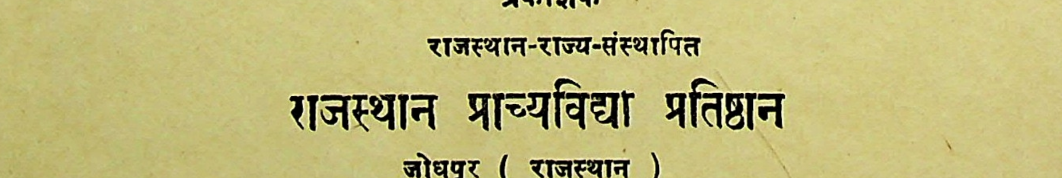

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1974

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक—जितेन्द्रकुमार जैन, एम. ए.

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १२१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

तृतीय भाग

सम्पादक

नारायणसिंह भाटी, एम. ए., एल. एल. बी., पी-एच, डी.

निदेशक—राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

सम्पादक—परम्परा (शोध पत्रिका)

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

प्रथमावृत्ति १०००　　1974　　मूल्य १५.५०

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक

जितेन्द्रकुमार जैन, एम. ए.
निदेशक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १२१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

तृतीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर (राजस्थान)
१९७४

मुद्रक

अजन्ता प्रिन्टर्स, जनगण प्रेस, शुभदा प्रिन्टर्स एवं श्रीसुमेर प्रिण्टिङ्ग प्रेस, जोधपुर

वि. सं. २०३१ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रकाशकीय

"मारवाड़ रा परगनां री विगत" ग्रंथ-सम्पादन की योजना इस भाग के साथ पूर्ण हो जाती है। विद्वान् सम्पादक डॉ० नारायण-सिंह भाटो ने इस ग्रंथ का सूक्ष्म विवेचन प्रथम भाग में किया है। ग्रंथ में मारवाड़ के चप्पे-चप्पे का वर्णन मिलता है।

फारसी से इतर भाषाओं में लिखे गये ग्रंथों में ऐसे सर्वाङ्गीण ग्रंथ कम ही मिलेंगे। इस भाग की एक यह विशेषता भी है कि इसमें मारवाड़ के गाँवों के जागीरदारों से सम्बन्धित ऐसी समस्त उपयोगी सामग्री जोड़ दी गई है जो ग्रंथ का भाग न होकर भी उस रहे-सहे अभाव को पूर्त्ति के साथ-साथ शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है, शायद जिसको संकलित करने के लिए यत्र-तत्र भ्रमण करना पड़ता।

"विगत" की चर्चा तो होती ही रहती थी, परन्तु इसको पूर्णतया प्रकाश में लाने की आवश्यकता थी जिसको प्रतिष्ठान ने पूरा किया। मुझे पूर्ण विश्वास है—इसका सम्मान विद्वज्जगत् में होगा तथा इस ग्रंथ से अनेक शोध-प्रबन्ध लिखे जाने में सहायता मिलेगी।

इस ग्रंथ को तैयार करने में विद्वान् सम्पादक ने जिस धैर्य और सूझ-बूझ का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है।

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सम्पादकीय

"मारवाड़ रा परगनां री विगत" के प्रथम और द्वितीय भागों में विगत के मूल पाठ के अतिरिक्त परिशिष्टों में विगत को पूर्णता देने हेतु तत्सम्बन्धी अन्य स्फुट जानकारी समाहित की गई थी। इस तृतीय भाग में राजस्थानी भाषा से अनभिज्ञ पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में शोध-सूत्र प्रस्तुत किया गया है, तथा विशिष्ट शब्दों के अर्थ विविध नामानुक्रमणिकाएं, महत्वपूर्ण पुरुषों की जन्म-कुण्डलियां भी दी गई हैं।

इस विशाल ग्रंथ में ऐसे अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियों का उल्लेख आया है जिनका उल्लेख ओझा, रेऊ, गहलोत तथा टाड आदि इतिहासकारों ने नहीं किया है, पर विगत और ख्यातों से पता चलता है कि यहां के इतिहास-निर्माण में उन व्यक्तियों ने महती भूमिका निभाई है। उपर्युक्त इतिहासकारों का दृष्टिकोण प्रायः राजवंश के व्यक्तियों तक ही सीमित रहा है, जिससे यह इतिहास एकांगी है। विगत में इस प्रकार के अनेक वीरों का भी उल्लेख है जिनका प्रभाव उस समय के जनमानस में लम्बे समय तक रहा, उन से सम्बन्धित काव्य, गीत, कहावतें आज भी जनता में प्रचलित हैं। अनेक ख्यातों और हस्तलिखित ऐतिहासिक ग्रंथों का अध्ययन कर मैंने ऐसे पुरुषों तथा विशिष्ट स्थानों आदि पर इस भाग में ६४ पृष्ठों में टिप्पणियां दी हैं, आशा है ये इतिहासकारों के लिये उपयोगी होंगी और जब भी समाज सापेक्ष तथ्यों का आधार लेकर इतिहास लिखे जायेंगे तो इस प्रकार की सामग्री से तथ्यान्वेषकों का मार्ग-दर्शन हो सकेगा।

तीसरे भाग को तैयार करने के दौरान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की उदयपुर शाखा में मुझे एक महत्वपूर्ण ग्रंथ-ग्रंथांक २७१७ (६०८) की प्रति देखने को मिली, जिसमें मारवाड़ के राठौड़ जागीरदारों की पीढ़ियां तथा गांवों के पट्टों की विगत व्यवस्थित रूप में दी हुई थी। मैंने उस ग्रंथ को जोधपुर मंगवाकर उसकी प्रतिलिपि करवाई और अध्ययन करने पर पता लगा कि सामग्री इतिहास की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। नैणसी ने अपनी विगत में गांवों के भौगोलिक तथ्य तथा फसल व बसने वाली प्रमुख जातियों आदि का उल्लेख तो किया है, पर जागीरदारों का उल्लेख नहीं किया, यह कमी मुझे प्रारम्भ से ही अखर रही थी। इस सामग्री के समायोजन से न केवल गांवों के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करने में सहायता मिलेगी अपितु प्राचीन राजस्थानी में जो अपार स्फुट साहित्य बिखरा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पड़ा है उसकी ऐतिहासिकता को समझने में भी इससे सहायता मिलेगी। इस प्रकार की सामग्री के अभाव में, बहुत सा स्फुट साहित्य जो यहाँ के वीरों, दातारों और साहित्य की कद्र करने वालों की प्रशंसा में लिखा गया है उसका कई बार अर्थ लगाना कठिन हो जाता है और इतिहास में एक ही नाम के कई व्यक्ति होने के कारण कई भ्रान्तियाँ पैदा हो जाती हैं। उदाहरण के लिए डिंगल गीतों को लिया जा सकता है। गीतों में प्रायः नायक का नाम, जाति, पिता या पूर्वजों का नाम आदि देने की परिपाटी है, परन्तु जब तक उस व्यक्ति के गाँव और खांप आदि से सम्बन्ध नहीं जोड़ा जाता तब तक जिस घटना-प्रसंग को लेकर जिस नायक पर काव्य-रचना की गई है, उस तक पहुंचना बड़ा कठिन होता है। पीढ़ियों की सूची से यह कार्य काफी सरल हो जाता है, और इस प्रकार इतिहास की अनेक आंतरिक उलझनों को सुलझाया जा सकता है। शोध-कर्त्ताओं की सुविधा के लिए मैंने पाद-टिप्पणी में यह भी संकेत दे दिया है कि कौनसा जागीरदार किस गांव की पीढ़ियों में से फंटकर उस गांव का जागीरदार बना। कुछ व्यक्तियों के बारे में प्राप्त ऐतिहासिक जानकारी भी फुटनोट में रखी गई है, आशा है वह शोधकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

विगत के प्रत्येक परगने के अन्त में नैणसी ने सांसण के गांवों का विवरण दिया है जिनमें चारणों, भाटों, ब्राह्मणों आदि को दिये गये गांवों का वृत्तान्त है। इनमें खास तौर से चारणों को दिये गये गांवों का वर्णन राजस्थानी-साहित्य के शोधकर्त्ताओं के लिए बड़ा उपयोगी है। शोधकर्त्ताओं की सुविधा के लिये इस भाग के अन्त में उन गांवों की सामग्री के आधार पर विस्तृत सारणियां भी दे दी गई हैं।

विगत के महत्व और सम्पादन-पद्धति आदि पर प्रथम भाग की भूमिका में विस्तृत प्रकाश डाल दिया गया है। अतः यहाँ केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि न केवल इतिहास परन्तु भूगोल, समाज-शास्त्र, नृतत्व-शास्त्र, राज्य-प्रशासन आदि अनेक दृष्टियों में विगत का महत्व है और इस तीसरे भाग के प्रकाशन से इसके अध्ययन में शोधार्थियों को विशेष सुविधा होगी, ऐसी आशा है।

इस ग्रंथ का सम्पादन-कार्य श्रद्धेय पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयी के आदेश से आज से कोई १० वर्ष पूर्व मैंने प्रारम्भ किया था। इसके दो भाग तो यथासमय प्रकाशित हो गये थे, पर तीसरे भाग के प्रकाशन में अनेक

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अप्रत्याशित व्यवधान आ खड़े हुए। प्रतिष्ठान में लम्बे समय तक स्थायी निदेशक के अभाव में प्रशासनिक कठिनाइयों के कारण अवरोध आता रहा और साथ ही प्रेसों की असुविधा के कारण भी बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। इस भाग ने चार प्रेसों की यात्रा की, तब कहीं जाकर इसकी छपाई का कार्य पूर्ण हो पाया है। पर इन सब कठिनाइयों के बावजूद मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस ग्रंथ के महत्व को इस दौरान में इतिहासकारों ने समझ लिया और देश और विदेश के अनेक शोधार्थी इस ग्रंथ की सामग्री का आधार लेकर अपना शोध-कार्य कर रहे हैं, इस प्रकार राजस्थान के इतिहास को नवीन शोध-दृष्टि को फलीभूत करने में इस ग्रंथ द्वारा जो योगदान मिल रहा है उसमें मुझे विशेष संतोष है।

इस भाग में दी गई ऐतिहासिक व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियों[1] को प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ० रघुवीरसिंहजी (सीतामऊ) ने देख-परख कर ईस्वी सन् व तारीख भी प्रत्येक कुण्डली के साथ लगा देने की कृपा की है जिसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मेरे अनुज हुकमसिंह भाटी एम० ए० ने ग्रंथ के अन्त में दी गई सारिणियों को तैयार करने में पूरी सहायता की जिसके लिए उसे आशीर्वाद देता हूँ। इस भाग का लगभग आधा भाग सुमेर प्रिण्टिङ्ग प्रेस के संचालक श्री सरदारमलजी थानवी ने सुव्यवस्था पूर्वक छापा है, जिसके लिये मैं इनका आभारी हूं।

अन्त में मैं प्रतिष्ठान के वर्तमान निदेशक श्री जैन व उनके प्रकाशन विभाग के अधिकारियों का भी आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि जिन्होंने अनेक कठिनाइयों के बावजूद इस भाग के प्रकाशन में रुचि लेकर कार्य को सम्पन्न करने में वांछित योग दिया।

चौपासनी, जोधपुर
रक्षाबंधन ३-८-७४

नारायणसिंह भाटी

---

१. ये कुंडलियें मुझे बारहठ देवकरणजी इन्दोकली के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

—: विषयानुक्रम :—

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
१.	विगत की विस्तृत सूची (तीनों भागों की)	१—१२
२.	शोधसूत्र (विगत का हिन्दी-सारांश)	१—६३
३.	महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा स्थानों आदि पर टिप्पणियां	६४—१२८
४.	विगत में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों के अर्थ	१२९—१३८
५.	नामानुक्रमणिकाएं	१३९—
	(१) पुरुष व स्त्री-नामानुक्रमणिकाएँ	१३९—१९६
	(२) ग्राम, नगर, देश आदि नामानुक्रमणिकाएं	१९७—२७०
६.	परिशिष्टों की नामानुक्रमणिकाएँ	२७१—
	(१) पुरुष व स्त्री-नामानुक्रमणिकाएँ	२७१—३०१
	(२) ग्राम, नगर, देश आदि नामानुक्रमणिकाएँ	३०२—३२२
७.	विविध नामानुक्रमणिकाएँ (मूल ग्रंथ की)	३२३—३२६
८.	,, ,, (परिशिष्टों की)	३२७—३२९
९.	विशिष्ट पुरुषों की जन्मकुण्डलियाँ	३३०—३६०
१०.	गाँवों के पट्टों व जागीरदारों की पीढ़ियों की विगत	३६१—

खाँप करमसोत—३६१ मांडणोत—३६७. भादावत—३६८
बालावत - ३६८. ऊदावत—३७४. मेड़तिया—३६८. रायमलोत—
३८६. जगमालोत—३८८. ईसरदासोत—३९०. चांदावत—३९१.
गोयनदासोत—३९८. माधोदासोत—४१९. सुरताणोत—४२४.
केसोदासोत—४२७. विट्ठलदासोत—४३४. विसनदासोत—४३५.
गोपीनाथोत मेड़तिया—४३८. चाँपावत—४४१. सगतसिंघोत—४४१.

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रामसिंघोत—४४२. जगमालोत —४४३. गोयनदासोत—४४४. द्वारकादासोत—४४५. हरभाणोत—४४५. केसोदासोत—४४५. रायसिंघोत—४४६. रायमलोत—४४६. विट्ठलदासोत—४४६. बलोत—४५५. भोपतोत—४५६. खेतसिंघोत—४५९. हरिदासोत—४५९. आईदांनोत—४५९. किलाणदासोत—४६४. करणोत—४६५. रूपावत—४६८. पुनावत—४६९. भींयोत—४७०. देवराजोत—४७०. चाड़दे—४७१. गोगादे—४७२. महेचा—४७३. जुंजाणिया—४७४. मंडला—४७४. पातावत—४७६. कूंपावत—४८३. मांडणोत—४८३. महेसदासोत—४८८. उदैसिंघोत—४९०. ईसरदासोत—४९१. तिलोकदासोत—४९२. नरावत—४९३. नारणोत—४९४. कांधलोत—४९४. वीदावत—४९४. ऊदावत बेडवासिया—४९४. जैतावत—४९६. पिरथीराजोत—४९६. आसकरणोत—४९७. भोपतोत—४९८. कलावत—४९९. खांप जोधा—४९९ से— गोयनदासोत—४९९. गोपालदासोत—५०१ जगनाथोत—५०२. रतनोत—५०२. किलांणदासोत—५०५ अमरसिंघोत—५०६. किसोरसिंघोत—५०७. खंगारोत—५०७. बाघावत—५०८. गांगावत—५०९. रामोत—५१०. चंद्रसेणोत—५१०. रतनसिंघोत—५११. महेसदासोत—५१५. भोजराजोत—५१८. अभैराजोत—५१८. केसरीसिंघोत—५२०. बिहारीदासोत—५२८.

११. विगत में आये हुए चारण, भाट व ब्राह्मणों के सांसण आदि की सारिणी ५२९—५५१

१२. शुद्धि पत्र ५५२ वां

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विगत की विस्तृत सूची

[मारवाड़ के ७ परगनों (तीनों भागों) की विस्तृत सूची]

विषय	पृष्ठ सं.	अनुच्छेद सं.	सारांश, भा० ३ में
१. मंडोर की विगत, वात परगने जोधपुर री	१	१	१
२. नाहड़राव का वृत्तांत	४	६	१
३. सीहाजी का वृत्तांत	५	८	२
४. आसथान सोनग, अज का वृत्तांत	६	१३	२
५. वीरम व राव चूंडा का वृत्तांत	२१	३२	४
६. राव रिड़मल का वृत्तांत	२६	४३	६
७. राव जोधा का वृत्तांत	३१	५२	७
८. राव जोधा ने अपने भाइयों व लड़कों में जमीन बांटी	३८	६२	८
९. राव सातळ का वृत्तांत	४०	६४	९
१०. नरा सूजावत का हाल	४०	६५	९
११. कुंवर बाघा सूजावत का हाल	४१	६६	९
१२. राव गांगा की उपलब्धियां	४१	६८	९
१३. राव मालदे का हाल	४२	७१	१०
१४. राव मालदे की लड़कियों की विगत	५२	८२	११
१५. राव मालदे की पत्नियों की विगत	५५	८८	१२
१६. शेरशाह से युद्ध हुआ जिसका हाल तथा काम आने वालों की सूची	५६	८९	१२
१७. राव जैमल पर मालदे की चढ़ाई	५९	९०	१२
१८. हरमाड़े में राणा उदयसिंह तथा हाजीखां का युद्ध	६०	९२	१२
१९. मालदे ने जैसलमेर पर फौज भेजी	६४	९५	१३
२०. राव मालदे के समय की फुटकर बातें	६५	९६	१३
२१. राव चन्द्रसेन के समय की बातें	६७	१०६	१३
२२. चन्द्रसेन का जोधपुर छोड़ना	६८	१०७	१४
२३. चन्द्रसेन का अकबर बादशाह से मिलना	६९	१११	१४
२४. चन्द्रसेन का मेवाड़ जाना	७०	११५	१५
२५. राव राम व कला का वृत्तांत	७१	११६	१५
२६. राव चन्द्रसेन का डूंगरपुर से आना व मुगलों से युद्ध	७२	११८	
२७. मोटाराजा (उदयसिंह) की बात	७५	१२०	१६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२८. कल्याणदास रायमलोत पर उदयसिंह की चढाई	७५	१२०	१६
२९. राव चन्द्रसेन व मोटाराजा का फलोदी में युद्ध	८०	१२९	१७
३०. मोटाराजा ने चारणों आदि के गांव जब्त किये, सूची	८१	१३१	
३१. मोटाराजा की जैसलमेर से खटपट	८४	१३४	१७
३२. अकबर ने फलोदी भाखरसी हरराजोत को दी	८८	१३८	१८
३३. मोटाराजा का गुजरात को प्रस्थान तथा आसकरन देवीदासोत को जागीर का पट्टा	९०	१४५	१९
३४. राजा सूरसिंह की बात	९२	१४६	१९
३५. सूरसिंह को तेरवाड़ा मेरवाड़ा का परगना मिलना	९४	१५०	२०
३६. कुंवर सबलसिंह को फलोदी मिलना	९५	१५२	२०
३७. दक्षिण में अम्बर चम्पू और सूरसिंह का युद्ध	९६	१५६	२१
३८. सूरसिंह का मारवाड़ को लौटना	९७	१५७	२१
३९. सूरसिंह की मांडवे पर चढाई	९७	१५८	२१
४०. प्रधान भाटी गोयंददास तथा राठौड़ किशनसिंह का मारा जाना	९९	१६१	२२
४१. सूरसिंह का पुनः दक्षिण में जाना	१०१	१६२	२२
४२. कुंवर गजसिंह की जालोर पर विजय	१०२	१६६	२२
४३. सूरसिंह की जगह दक्षिण में गोयंददास भाटी रहा	१०३	१६८	२३
४४. राणा की फौज से गोयंददास का युद्ध	१०३	१७०	२३
४५. महाराजा गजसिंह की गद्दी नशीनी तथा मनसब	१०५	१७१	२३
४६. गजसिंह का दक्षिण में युद्ध	१०६	१७२	२४
४७. शाहजादा खुर्रम का विद्रोह	१०७	१७३	२४
४८. गजसिंह को मेड़ता मिलना	१०८	१७४	२५
४९. जांहगीर की मृत्यु पर गजसिंह का मारवाड़ आजाना और बादशाह द्वारा मनाया जाना	११०	१७९	२५
५०. गजसिंह के समय की अन्य फुटकर बातें	१११	१८२	२६
५१. महाराजा जसवंतसिंह का वृत्तांत	१२३	१९९	२८
५२. जसवंतसिंह के मनसब का हिसाब	१२३	१९९	२८
५३. राठौड़ महेस सूरजमलोत को प्रधान बनाना	१२५	२०३	२८
५४. परगना ऊदेही जागीर में मिलना	१२६	२०५	२९
५५. परगना मलारणा जागीर में मिला	१२७	२०६	२९
५६. परगना बघनोर जागीर में मिला	१२८	२०७	२९
५७. परगना रोहतक जागीर में मिला	१२८	२०७	२९
५८. रतलाम की जगह जालोर का परगना मिला	१२९	२०८	२९
५९. नागोर की ७ पटी जागीर में मिली	१३०	२०९	२९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६०. जसवंतसिंह का उज्जैन के युद्ध के लिये प्रस्थान करते समय सात हजारी मनसब का हिसाब	१३०		२६
६१. महाराजा का आगरे से प्रस्थान और जागीर का हिसाब	१३३	२११	३०
६२. महाराजा का जहानावाद को प्रस्थान	१३४	२१२	३०
६३. शाहजादा शुजा से युद्ध	१३५	२१३	३०
६४. राजा जयसिंह से जसवंतसिंह का रास्ते में मिलना	१३५	२१५	३०
६५. औरंगजेब से आश्वासन मिलना तथा गुजरात को प्रस्थान	१३७	२१७	३०
६६. नैणसी आदि को पोकरण पर सबलसिंह की सहायता के लिये भेजना	१३८	२१६	३१
६७. अहमदाबाद में डेरे के समय मनसब की विगत	१४४	२२८	
६८. सं. १७१८ में गुजरात तागीर, प्रस्थान	१४६	२३०	३१
६९. महाराजा को पूना का सूबा मिलना	१५०	२३१	३१
७०. गुजरात से विदा होते समय जागीर का हिसाब	१५०	२३४	३१
७१. पं. मनोहरदास ने १७२० की खरीफ से हिसाब लिखा	१५३		
७२. कुंवर को दिल्ली दरबार में भेजना	१५६	२३६	३२
७३. संवत १७२१ (आसोज) में पं. मनोहरदास ने जागीर का हिसाब किया	१५८	२३७	३२
७४. परगने जोधपुर का तफावार हिसाब	१६३	२३९	३३
७५. परगने जोधपुर का सालीना हिसाब	१६६		३३
७६. उज्जैन की लड़ाई व शामिल होने वाले शाही मनसबदार आदि	१७०	२४२	३३
७७. जोधपुर शहर की विगत	१८६	२४६	३४
७८. गांवों की विगत	१८९	२४७	३५

वात परगने सोझत री

१. सोझत का प्राचीन नाम तथा पंवारों का राज्य	३८३	१	३७
२. सोझत पर हुलों तथा सोनगरों का राज्य	३८४	३	३७
३. राणा द्वारा सोझत रिड़मल को मिली	३८७	७	३७
४. राव रिड़मल का चित्तौड़ में मारा जाना	३८७	८	३७
५. सोझत पर राज्य करने वालों की सूची	३८८	९	३७
६. सोझत शहर की विगत	३९०	१०	३८
७. कसबे सोझत की बस्ती	३९१	११	३८
८. खेतों की विगत	३९४	१७	३९
९. कस्बे सोझत का हासल	३९५	१९	३९
१०. परगने सोझत के हासल आदि की विगत	४००	२२	३९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११. परगने सोझत के गांवों की विगत	४२५	४४	३९
१२. सांसण की विगत	४८९	४९	३९

बात परगने जैतारण री

१. जैतारण का नामकरण तथा न ब्रद सींधल की बात	४९३	१	३९
२. ऊदावतों व जोधपुर के राजाओं को जैतारण रही	४९५	१	४०
३. कस्बे जैतारण की बस्ती की विगत	४९७	१	४०
४. सांसण के गांवों की विगत	४९८	१	४०
५. जैतारण से कुल गांवों के हासल की विगत	५००	२	४०
६. परगने के गांवों की विगत	५०९	१२	४०
७. सांसण की गांव वार विगत	५४३	२३	४०
८. सीमा के गांवों की सूची	५५५	२४	४०

द्वितीय भाग

बात परगने फलोधी री

१. फलोधी का नामकरण व प्राचीनता	१	१	४१
२. राव नरा द्वारा फलोदी को बसाना	२	२	४१
३. नरा का काम आना और गोयंद की गद्दी नशीनी	३	२	४१-२
४. राव डूंगरसी से मालदे ने फलोदी छीनी	४	५	४२
५. राठौड़ पृथ्वीराज जैतावत का कुंवर हरराज से युद्ध	४	५	४२
६. उदयसिंह को फलोदी का अधिकार मिलना	५	६	४२
७. लोहावट में उदयसिंह और चन्द्रसेन का युद्ध	६	७	४२
८. भाटी भाखरसी हरराजोत को फलोदी मिली	६	८	४३
९. राजा रायसिंह (बीकानेर) को फलोदी मिली	७	८	४३
१०. राजा सूरसिंह (जोधपुर) को फलोदी मिली	८	९	४३
११. संवत १७१५ में भाटियों की फलोदी पर चढाई	८	१५	
१२. फलोदी के कोट व बस्ती की विगत	८	१६	४३
१३. फलोदी की सीमा	९	१७	४३
१४. फलोदी की सालाना आमदनी	१०	१८	४४
१५. फलोदी के गांवों का आबादी के अनुसार वर्गीकरण	१०	२१	४४
१६. परगने के गांवों की विगत	१२	२८	४४
१७. सांसण में दिये हुए गांवों की विगत	२८	२९	४४
१८. सीमा के गांवों की सूची	३२	३२	४४
१९. मारवाड़ के वे गांव जहां नमक की खानें हैं	३४	३४	४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बात परगने मेड़ते री

१. मेड़ते की प्राचीनता	३७	१	४४
२. राव जोधा द्वारा बरसिंघ और दूदा को मेड़ता दिया जाना	३७	२	४४
३. दूदा और बरसिंघ द्वारा वर्तमान मेड़ता बसाना	३८	४	४४
४. डांगा जाटों को मेड़ता की सीमा में बसाना	३९	५	४५
५. बरसिंघ व दूदा में अनबन तथा बरसिंघ का सांभर लूटना	४१	११	४५
६. बरसिंघ व सातल में अनबन व अजमेर के सूबेदार के पास जाना	४२	१२	४५
७. मलूखां की मारवाड़ पर चढाई	४३	१३	४५
८. बरसिंघ का कैद किया जाना तथा दूदा की अजमेर पर चढ़ाई	४५	१७	४६
९. सीहा बरसिंघोत को गद्दी से हटाकर दूदा का अधिकार होना	४६	१९	४६
१०. वीरम् की गद्दी नशीनी और सीहा के लड़कों का विरोध	४७	२१	४६
११. मालदे द्वारा मेड़ता हस्तगत करने की साजिश	४८	२२	४७
१२. वीरमदे का अजमेर पर कब्जा	५१	२५	४८
१३. वीरमदे द्वारा सहसा को मारने के लिये रीयां पर चढाई	५२	२६	४८
१४. मालदे की अजमेर पर चढाई और वीरम का भागना	५४	२७	४८
१५. वीरम का रणथंभोर के सूबेदार की मारफत शेरशाह से मिलना	५४	२८	४८
१६. शेरशाह की मारवाड़ पर चढाई	५६	३०	४९
१७. बादशाह का वीरमदे सहित जोधपुर आना	५७	३३	४९
१८. वीरम का मेड़ते पर पुनः अधिकार	५८	३४	५०
१९. जयमल वीरमदेवोत का मेड़ते की गद्दी पर बैठना	५८	३६	५०
२०. कुंडल में राव मालदे और जयमल का युद्ध	५८	३८	५०
२१. हाजीखां और राणा के युद्ध में मालदे का भाग लेना	५९	४०	५०
२२. जयमल का मेड़ता छोड़कर मेवाड़ जाना	६०	४१	५०
२३. आधा मेड़ता जगमाल वीरमदेवोत को मिलना	६१	४२	५०
२४. जैमल को बादशाह की ओर से पुनः मेड़ता मिलना	६३	४५	५०
२५. बादशाह का सरफदीन से नाराज होना और जैमल का मेड़ता छूटना	६७	४८	५१
२६. सुरताण व केसोदास जैमलोत का हाल	६९	५४	५२
२७. नवाब खानखाना के साथ गुजरात में सुरताण की चाकरी	७०	५७	५२
२८. सुरताण को पुनः मेड़ता मिलना	७२	५९	५२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२९. गोपालदास सुरतांणोत को मेड़ता (आधा) मिलना	७२	६०	५३
३०. पूरा मेड़ता राजा सूरसिंघ को बादशाह की ओर से मिला	७३	६२	५३
३१. गजसिंह की गद्दी नशीनी और मेड़ता तागीर	७३	६३	५३
३२. २०४ गावों से मेड़ता भीम अमरावत शीशोदिया को दिया गया	७३	६४	५३
३३. परवेज की ओर से मेड़ता गजसिंह को मिलना	७५	६७	५३
३४. मेड़ते की रेख पर वृद्धि	७६	६८	५४
३५. जसवंतसिंह की गद्दी नशीनी और मेड़ता की रेख में फिर वृद्धि	७७	७०	५४
३६. मेड़ते की धरती की नपाई	७७	७१	५४
३७. परगने मेड़ते की सालाना आमदानी सं० १७०१-१७२०	७८	७३	५४
३८. परगने मेड़ते की बस्ती सं० १७२० में	८३	७६	५४
३९. परगने मेड़ते का अमल दस्तूर (कर)	८८	७९	५५
४०. परगने के सीमावर्ती गाँव	९८	८६	५५
४१. सांसण के गांवों की विगत	१०६	८९	५५
४२. श्री फलोधी माताजी के देहुरे (मंदिर) की हकीकत	११५	९१	५५
४३ परगने के गाँवों की विगत	११६	९२	५६
४४. तफावार रेख, सांसण, आदि की तालिका	२१३	१११	

वात परगने सीवाणे री

१. सिवाने गढ की हकीकत	२१५	१	५६
२. सिवाने का प्राचीन इतिहास	२१५	२	५६
३ राव जोधा का सिवाने पर आधिकार	२१६	४	५७
४. सिवराज से राणा देवीदास का सिवाना छीनना	२१८	५	५७
५. राव मालदे द्वारा सिवाने पर अधिकार	२१९	७	५७
६. बादशाह की ओर से कल्याणदास रायमलोत को सिवाना मिला	२१९	८	५७
७. उदयसिंह (जोधपुर) द्वारा सिवाने पर अधिकार	२२०	९	५७
८. परगने के गाँवों की रेख की सूची	२२१	१२	५८
९. सिवाने की बस्ती सं० १७२१ में	२२३	१३	५८
१०. सूने गांवों की सूची	२२८	१५	५८
११. सांसण के गांवों की सूचो	२३०	१७	५८
१२. परगने के गांवों की विगत	२३२	१९	५८
१३. सांसण दिये हुए गाँवों की विगत	२६६	२३	५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. परगने के सीमावर्ती गांव	२७८	२५	५८
१५. सूकड़ी नदी के बहाव का वृत्तांत	२८१	२८	५८

वात परगने पोहकरण री

१. पोकरण की आदि कथा	२८९	१	५८
२. रांमदे पीर द्वारा पोकरण को बसाना	२९१	५	५९
३. षींवा से नरा द्वारा पोकरण छीनना	२९२	६	५९
४. गोयंद द्वारा नरा का बैर लेना	२९३	७	५९
५. राव मालदे का जैतमाल से पोकरण छीनना	२९४	८	६०
६. मानसिंह ढूंढ़ाड़ा की पोकरण पर चढाई	२९५	११	६०
७. चंद्रसेन द्वारा जैसलमेर को पोकरण अडाणी देना	२९६	१२	६०
८. राजा जसवंतसिंह का पोकरण पर अधिकार	२९८	१५	६०
९. पोकरण के कोट का वृत्तांत	३०८	१९	६१
१०. पोकरण शहर की बस्ती व मंदिर, जलाशय आदि	३१०	२०	६१
११. पोकरण की धरती की हकीकत	३१६	२६	६२
१२. पोकरण परगने के सीमावर्ती गांव	३२०	३०	६२
१३. परगने का दस्तूर अमल	३२३	३४,३७	६२
१४. परगते के गांवों की विगत	३४८	४२	६३
१५. परगने के सांसण के गांवों की विगत	३२७	३९	६३

भाग १ व २ के परिशिष्टों की विस्तृत सूची

भाग १

परिशिष्ट १ (क) कमठां री विगत

			पृष्ठ
१. राव जोधाजी के समय के गढ, स्मारक व भवन-निर्माण कार्य			५५९
२. राव सातळजी	"	"	५६०
३. राव सुजाजी	"	"	५६०
४. कंवर वागाजी	"	"	५६०
५. राव गांगाजी	"	"	५६०
६. राव मालदेजी	"	"	५६०
७. राव चंद्रसेणजी	"	"	५६२
८. महाराजा श्री सूरसिंघजी	"	"	५६२
९. महाराजा श्री गजसिंघजी	"	"	५६४
१०. महाराजा श्री जसवंतसिंघजी	"	"	५६५
११. महाराजा श्री अजीतसिंघजी	"	"	५६५
१२. महाराजा श्री अभैसिंघजी	"	"	५६७
१३. महाराजा श्री बखतसिंघजी	"	"	५६९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२६. गोपालदास सुरतांणोत को मेड़ता (आधा) मिलना	७२	६०	५३
३०. पूरा मेड़ता राजा सूरसिंघ को बादशाह की ओर से मिला	७३	६२	५३
३१. गजसिंह की गद्दी नशीनी और मेड़ता तागीर	७३	६३	५३
३२. २०४ गावों से मेड़ता भीम अमरावत शीशोदिया को दिया गया	७३	६४	५३
३३. परवेज की ओर से मेड़ता गजसिंह को मिलना	७५	६७	५३
३४. मेड़ते की रेख पर वृद्धि	७६	६८	५४
३५. जसवंतसिंह की गद्दी नशीनी और मेड़ता की रेख में फिर वृद्धि	७७	७०	५४
३६. मेड़ते की धरती की नपाई	७७	७१	५४
३७. परगने मेड़ते की सालाना आमदानी सं० १७०१-१७२०	७८	७३	५४
३८. परगने मेड़ते की बस्ती सं० १७२० में	८३	७६	५४
३९. परगने मेड़ते का अमल दस्तूर (कर)	८८	७९	५५
४०. परगने के सीमावर्ती गाँव	९८	८६	५५
४१. सांसण के गांवों की विगत	१०६	८९	५५
४२. श्री फलोधी माताजी के देहुरे (मंदिर) की हकीकत	११५	९१	५५
४३ परगने के गाँवों की विगत	११६	९२	५६
४४. तफावार रेख, सांसण, आदि की तालिका	२१३	१११	

वात परगने सीवाणे री

१. सिवाने गढ की हकीकत	२१५	१	५६
२. सिवाने का प्राचीन इतिहास	२१५	२	५६
३ राव जोधा का सिवाने पर अधिकार	२१६	४	५७
४. सिवराज से राणा देवीदास का सिवाना छीनना	२१८	५	५७
५. राव मालदे द्वारा सिवाने पर अधिकार	२१९	७	५७
६. बादशाह की ओर से कल्याणदास रायमलोत को सिवाना मिला	२१९	९	५७
७. उदयसिंह (जोधपुर) द्वारा सिवाने पर अधिकार	२२०	९	५७
८. परगने के गाँवों की रेख की सूची	२२१	१२	५८
९. सिवाने की बस्ती सं० १७२१ में	२२३	१३	५८
१०. सूने गांवों की सूची	२२८	१५	५८
११. सांसण के गांवों की सूचो	२३०	१७	५८
१२. परगने के गांवों की विगत	२३२	१९	५८
१३. सांसण दिये हुए गाँवों की विगत	२६६	२३	५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. परगने के सीमावर्ती गांव	२७८	२५	५८
१५. सूकड़ी नदी के वहाव का वृत्तांत	२८१	२८	५८

वात परगने पोहकरण री

१. पोकरण की आदि कथा	२८९	१	५८
२. रांमदे पीर द्वारा पोकरण को बसाना	२९१	५	५९
३. पींवा से नरा द्वारा पोकरण छीनना	२९२	६	५९
४. गोयंद द्वारा नरा का बैर लेना	२९३	७	५९
५. राव मालदे का जैतमाल से पोकरण छीनना	२९४	८	६०
६. मानसिंह ढूंढ़ाड़ा की पोकरण पर चढाई	२९५	११	६०
७. चंद्रसेन द्वारा जैसलमेर को पोकरण अडाणी देना	२९६	१२	६०
८. राजा जसवंतसिंह का पोकरण पर अधिकार	२९८	१५	६०
९. पोकरण के कोट का वृत्तांत	३०८	१९	६१
१०. पोकरण शहर की बस्ती व मंदिर, जलाशय आदि	३१०	२०	६१
११. पोकरण की धरती की हकीकत	३१६	२६	६२
१२. पोकरण परगने के सीमावर्ती गांव	३२०	३०	६२
१३. परगने का दस्तूर अमल	३२३	३४,३७	६२
१४. परगते के गांवों की विगत	३४८	४२	६३
१५. परगने के सांसण के गांवों की विगत	३२७	३९	६३

भाग १ व २ के परिशिष्टों की विस्तृत सूची

भाग १

परिशिष्ट १ (क) कमठां री विगत पृष्ठ

१. राव जोधाजी के समय के गढ, स्मारक व भवन-निर्माण कार्य			५५९
२. राव सातळजी	,,	,,	५६०
३. राव सुजाजी	,,	,,	५६०
४. कंवर वागाजी	,,	,,	५६०
५. राव गांगाजी	,,	,,	५६०
६. राव मालदेजी	,,	,,	५६०
७. राव चंद्रसेणजी	,,	,,	५६२
८. महाराजा श्री सूरसिंघजी	,,	,,	५६२
९. महाराजा श्री गजसिंघजी	,,	,,	५६४
१०. महाराजा श्री जसवंतसिंघजी	,,	,,	५६५
११. महाराजा श्री अजीतसिंघजी	,,	,,	५६५
१२. महाराजा श्री अभैसिंघजी	,,	,,	५६७
१३. महाराजा श्री बखतसिंघजी	,,	,,	५६९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. महाराजा श्री विजयसिंघजी के समय के गढ, स्मारक व भवन–निर्माण कार्य ५७०
१५ महाराजा श्री भींवसिंघजी ,, ,, ५७२
१६. महाराजा श्री मानसिंघजी ,, ,, ५७३
१७. महाराजा श्री तखतसिंघजी ,, ,, ५७५

नीवांणाँ री विगत (ख)

१. नीवांणां (जलाशयों) की विगत ५७६
२. कसबै जोधपुर में बागां की विगत ५६५

गढ जोधपुर नीवांण छै जिकाँ की याददास्त (ग)

१. गढ ऊपर के नीवणों (जलाशयों) की याददास्त ५६६
२. शहर के नीवाण पहाड़ पर बनेहुए ५६६
३. शहर के अन्दर नीवांण हैं उनकी विगत ५६६
४. शहर के शहरपना के नीवाणों की विगत ५६६

भाग–२

परिशिष्ट–१

(क) बात परगने सांचोर री

१. साँचोर का प्राचीन इतिहास ३५६
२. परगने सांचोर की रेख ३६०
३. सं. १७२० से परगने की आमदनी ३६४
४. चहुवान सूराचंद के राज्य की विगत ३६६
५. राणा सिवराज के गांवों की विगत ३७०
६. परगने के गांवों का हाल सं. १६६२ की बही से ३७३
७. परगने के गांवो की फहरिश्त सं० १७७७ में ३८६
८. सांसण के गांवों की विगत ४०७
६. गांवों की रेख व चाकरी के घोडों की विगत ४०८

(ख) परगने जालोर रो हाल

१. जालोर गढ की स्थापना तथा इतिहास ४१३
२. कुंवर गजसिंह की जालोर पर चढाई ४१४
३. महेसदास रतनसिंहोत को जालोर की जागीर ४१५
४. महाराजा जसवंतसिंह के राज्य में जालोर शामिल ४१५
५. राव श्री सुजानसिंह जी को जालोर मिली ४१५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६. दीवाण फतैखांजी कमालखांजी को ,, ,, ४१५
७. राज श्री रांमसिंघजी को ,, ,, ४१५
८. पठाण दलेलखांजी को ,, ,, ४१५
९. दीवांण फतैखांजी को ,, ,, ४१५
१०. महाराजा श्री अजीतसिंहजी को ,, ,, ४१५
११. महाराज श्री अभैमिहजी को ,, ,, ४१५
१२. महाराज श्री बखतसिंहजी को ,, ,, ४१६
१३. महाराज श्री विजयसिंहजी को ,, ,, ४१६
१४. पासवान व गुलाबराय जी को ,, ,, ४१६
१५. महाराजा मानसिंहजी जालोर पधारिया ,, ,, ४१६

(ग) परगने भीनमाळ रौ हाल

१. भीनमाल की स्थापना ४१७
२. भीनमाल का प्राचीन इतिहास ४१७
३. कुँवर गजसिंह का भीनमाल पर कब्जा ४१८
४. महाराजा अजीतसिंह की भीनमाल पर चढाई ४१९
५. फतेहखां की राठौड़ों से मुठभेड़ ४२०
६. राठौड़ भगवानदास जोगीदासोत के पटै भीनमाल ४२०
७. संवत १८१० में भंडारी पोमसीजी के पटै ,, ४२०

(घ) परगने नागोर रौ हाल

१. नागोर गढ की स्थापना ४२१
२. चहुवानों का नागोर पर राज्य ४२१
३. खांनजादों को नागोर का पट्टा ४२१
४. समसुखां को नागोर की जागीर मिलना ४२१
५. राव चूंडा का नागोर पर अधिकार ४२१
६. राव मालदे ,, ,, ४२१
७. हुमायू तथा अकबर के सूबेदारों का अधिकार ४२१
८. बीकानेर के राजा रायसिंह को अकबर की ओर से नागोर दी गई ४२२
९. राणा सगर को जहांगीर की ओर से मिली ४२२
१०. पठान जावदी को नागोर मिली ४२२
११. राठौड़ अमरसिंह को दी गई ४२२
१२. महाराजा जसवंतसिंह तथा रायसिंह के बंट में ४२२
१३. महाराजा अजीतसिंह को मिली ४२२
१४. सवाई जयसिंह को मिली ४२२
१५. महाराजा अभयसिंहजी को मिली ४२२
१६. बखतसिंहजी को मिली ४२३
१७. नागोर के आस पास के अन्य इलाके ४२३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

६. मूता बछावत ४७६
७. मूता दफतरी ४८०
८. मूता वेद ४८०
९. सिंघवी ४८०
१०. ब्राह्मण पोहकरणा ४८०
११. पोहकरणा कोलाणी ४८०
१२. पोहकरणा व्यास नाथावत ४८०
१३. पोहकरणा बिरामण जोसी, पिरोयत ४८०
१४. बिरामण सिरमाली ४८१

परिशिष्ट–६

जोधपुर रा ओदादारां (८६) री याददास्त ४८२

परिशिष्ट–७

श्री हजूर उमरावां ने कुरब इनायत करै सो याददास्त ४८४

परिशिष्ट–८

मिरजा राजा जैसिघ रे मनसव रौ नांवों सं. १७२१ ४८६
१. कुंवर रामसिघ ,, ,, ,, ,, ४८६
२. कुंवर कीरतसिंघ ,, ,, ,, ,, ४८६

परिशिष्ट–९

हिन्दू उमरावां री विगत

१. अकबर बादशाह के हिन्दू उमरावों की विगत ४९१
२. जहाँगीर बादशाह ,, ,, ,, ,, ४९२
३. शाहजहां बादशाह ,, ,, ,, ,, ४९३
४. औरंगजेब बादशाह ,, ,, ,, ,, ४९६

परिशिष्ट–१०

यादादास्त नव कोटां री

१. बाड़मेर — — ५००
२. आबू — — ५००
३. पारकर — — ५००
४. पूंगल — — ५००
५. जालोर — — ५००
६. ऊमरकोट — — ५०१
७. लौद्रवो — — ५०१
८. अजमेर — — ५०१
९. गढ मंडोर — — ५०१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मारवाड़ रा परगनां री विगत

शोध-सूत्र : प्रथम भाग

परगना जोधपुर

जोधपुर की प्राचीन राजधानी मण्डोर थी। यह स्थान अति प्राचीन है। पद्मपुराण में इसका उल्लेख मिलता है। यहाँ का भोगिशैल पर्वत सुमेरु का पुत्र माना जाता है। यहाँ मण्डलेश्वर महादेव आदि पवित्र स्थानों का बड़ा माहात्म्य है। मण्डोर की स्थापना मन्दोदर दैत्य की की हुई मानी जाती है। यहीं उसकी लड़की मन्दोदरी का विवाह लंकापति रावण से हुआ था।
(पृ० १/अनु० १-२)

मण्डोर काफी समय तक पँवारों की राजधानी रहा। धरणीवाराह ने अपने भाइयों को नौ किलों का मालिक बनाया था, उनमें से यह किला सांवत को प्रदान किया। (१/२)

पँवारों के पश्चात् यहाँ पड़िहारों का राज्य कायम हुआ। इनमें नागराजन का पुत्र नाहड़राव बड़ा प्रसिद्ध शासक हुआ। उसने यहाँ अनेक निर्माण-कार्य करवाये। नाहड़राव ने अपनी पुत्री की सगाई सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज से की थी, पर बाद में पृथ्वीराज में अनेक खामियाँ बताकर उसके साथ लड़की ब्याहने से इन्कार कर दिया, जिसके फलस्वरूप पृथ्वीराज ने चढ़ाई कर दी। नाहड़राव हार गया। पृथ्वीराज की कंचनमाला से शादी हुई। पाटण के भीमदे के साथ युद्ध कर धवलेहर में नाहड़राव मारा गया। (२-३/३-५)

चहुवान पृथ्वीराज ने मण्डोर महणसी अल्ह को दिया। जब पृथ्वीराज साहबुद्दीन गौरी द्वारा पकड़ा गया तब मण्डोर भी उसके हाथ से निकल गया। संवत् ११७३ के लगभग यहाँ मुगलों का राज्य हुआ। (४/५)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सेतराम का पुत्र राठौड़ सीहा कन्नौज से द्वारिका जा रहा था। उस समय अनिहलवाड़ा पत्तन में मूलराज सोलंकी राज्य कर रहा था। वह लाखा फूलाणी से अपने बाप का बैर लेने को बहुत उत्सुक था। उसने इसके लिए पाटण की देवी भद्रकाली की बड़ी उपासना की। देवी ने आदेश दिया कि लाखा की मृत्यु सीहा के हाथ से ही सम्भव है। सीहा कन्नौज से द्वारिका को चला है, अतः उससे मिलकर यह काम करो। मूलराज ने ऐसा ही किया। उसने सीहा की बड़ी आवभगत की तथा अपनी पुत्री का विवाह उससे कर देने की इच्छा प्रकट की। सीहा ने द्वारिका से लौटते समय यह कार्य करने का वायदा किया। लौटते समय दीपावली के दिन उन्होंने लाखा पर हमला किया। लाखा खुले मैदान में युद्ध कर काम आया। मेहद झाले ने इस अवसर पर अच्छा काम दिया, अतः उसे सीहा ने हलवद जागीर में दी। (५-८/६-१३)

मूलराज ने अपनी बहन राजां का विवाह सीहा से किया। सीहा कन्नौज लौटा। उसके पहले की रानी से चार पुत्र थे। इस रानी से तीन पुत्र हुए— आसथान, सोनग और अज। सीहा का स्वर्गवास होने पर दोनों रानियों में बनी नहीं, तब वह अपने पुत्रों सहित पाटण को रवाना हुई। (८-६/१२-१३)

रास्ते में ये लोग पाली में ठहरे जहाँ राणा के गुरु पालीवाल ब्राह्मण रहते थे। वहाँ मेर आदि जातियों के लुटेरों का बड़ा भय था। पाली वालों ने इन्हें खानदानी व वीर समझकर अपनी रक्षार्थ वहीं रहने का आग्रह किया। इनकी मांगें भी उन्होंने स्वीकार कीं। वहाँ इन्होंने अपना अच्छा प्रभुत्व कायम कर लिया। जनता की सुरक्षा का इन्होंने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। (६-११/१४-१७)

फिर ये तीनों भाई वहाँ से अन्य स्थान को जाने के लिए तैयार हुए। तब जनता ने बड़े भाई आसथान को अनुनय-विनय कर वहीं रख लिया। ५०-६० गांव उसकी जागीर के लिए निश्चित कर दिये गये। (११-१२/१८-१६)

उस समय प्रतापसिंह गोहिल का अधिकार खेड़ पर था। उसने अपनी लड़की की शादी आसथान से करदी। वह आसथान की खूब आवभगत किया करता था। डाभी जेहली प्रतापसिंह का प्रधान था। उससे मिल कर कुछ दिनों पश्चात् खेड़ से आसथान ने गोहिलों का सफाया कर दिया। अपना पूर्ण अधिकार कायम करने के लिए उसने डाभियों को भी धोखे से मरवा दिया। इस प्रकार

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निम्नलिखित गांव उसके अधिकार में आ गये—

गांव १४० खेड़ के

गांव १४० कोढणे के

गांव १४० (देवराज गोगादे चाहड़दे आदि के)

———

४२० कुल गांव तवसे राठौड़ों के अधिकार में आये ।
(१२-१४/२०-२१)

आसथान के पश्चात् उसका पुत्र धुहड़ गद्दी पर बैठा । वह नागाणा नामक गांव में गायों की बाहर करते हुए मारा गया । उसके पश्चात् रायपाल गद्दी पर बैठा । वह बड़ा दातार जूंझार हुआ तथा 'महिरेलण' कहलाया । उसने अपना अधिकार ५६० गांवों तक बढ़ाया । (१५/२२)

रायपाल के बाद कान्हड़राव, और उसके बाद जल्हण गद्दी पर बैठा । वह मुगलों से लड़ाई कर मारा गया । उसके बाद राव छाड़ा गद्दी पर बैठने का अधिकारी हुआ । सोनगरों से उसने कई युद्ध कर वीरगति प्राप्त की । तत्पश्चात् राव टीडा अधिकारी हुआ । उसने अनेक युद्ध लड़े । सोनगरों से अपने बाप का बैर लिया । अलाउद्दीन बादशाह से सिवाने में युद्ध कर उसने वीरगति प्राप्त की ।
(१५/२४)

गद्दी पर कान्हड़दे छाडावत बैठा । सलखा को टीका नहीं दिया गया । सलखा के ४ बड़े वीर पुत्र हुए । उनमें माला बड़ा दूरदर्शी था । उसने जालोर के खांन की सहायता से कान्हड़दे को मरवा कर बाड़मेर पर अधिकार कायम किया । उसके भाई जैतमाल को सिवाना दिलवाया । वीरम सलखावत बड़ा वीर और अनेक युद्धों में विजयश्री का वरण करनेवाला हुआ । इसे बाड़मेर के केवल ५-७ गांव मिले । (१५-१६/२४-२७)

उन दिनों सोहण में अकाल पड़ा तब देपाल लूण जोया अपने मवेशी सहित उस ओर आये थे । माला जगमाल ने उन्हें लूटने का विचार किया । जोयों ने वीरम की शरण ली । इस पर वे वीरम से बहुत रुष्ट हुए । फिर जोयों के आग्रह पर वीरम ने उन्हें बीकानेर की सीमा तक सुरक्षित पहुँचा दिया । माला अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहा । (१६-१८/२७-२८)

इन परिस्थितियों के बीच ही गुजरात से एक घोड़ों की कतार आ रही थी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उसे वीरम ने अपने अधिकार में कर लिया। इसका पता लगने पर गुजरात के बादशाह ने महाबलीखांन को १२००० सैनिक देकर महेवा पर विदा किया। जालोर आने पर उसने माला को कहलवाया कि या तो वीरम को निकाल दो वरना हम उसे पकड़ कर मारेंगे। इस पर वीरम अपने साथियों सहित जांगळू के साँखला ऊदा सूजावत के पास चला गया। महाबलीखांन ने पीछा किया। साँखला ने वीरम को सवारी देकर आगे निकाल दिया। तब खांन वहाँ तक जाकर वापस लौट गया। (१८-१९/२९)

वीरम सोहरण में देपाल के पास पहुँच गया। देपाल ने उसे भाई की तरह आमदनी का हकदार बना कर रखा। कुछ समय में उसके पास अच्छे राजपूत सैनिक शामिल हो गये, तब उसने जोयों से वहाँ की धरती छीन लेने का विचार किया। (१९-२०/२९-३१)

जोयों ने वीरम का बड़ा लिहाज किया, परन्तु वीरम माना नहीं। वह अपनी शक्ति बढ़ाता गया और एक दिन उनके पूज्य वृक्ष (फरास) को कटवा दिया। इस पर दला जोया ने आकर वीरम की गायें घेर लीं। युद्ध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप वीरम मारा गया और जोयों की जीत हुई। वीरम की पत्नी मांगलियाणी को चार आदमी देवराजों के थल तक पहुँचा आये जहाँ कलाऊ ग्राम में अपना परिचय छिपाकर वह मजदूरी करने लगी। उसका पुत्र चूंडा बछड़े चराता था। (२१/३१)

एक दिन जब टोघड़े चराते-चराते चूँडा सो गया, तो एक काले सर्प ने आकर अपना फन उसके सिर पर कर दिया। आल्हा चारण उधर से आ रहा था। उसने जब यह देखा तो शकुन के आधार पर जाना कि यह कभी न कभी छत्रधारी राजा बनेगा। आल्हा ने बच्चे को जगाकर उसका परिचय पूछा। वह परिचय नहीं दे सका और अपनी माँ के पास ले गया। माँ ने बड़ी कठिनाई से अपना परिचय दिया, तब आल्हा ने बड़ा अफसोस किया और उनके रहने आदि की व्यवस्था की। (२१/३२)

चूँडा को ठीक कपड़े पहनाकर व शस्त्र बंधवाकर वह महेवे के स्वामी रावळ माला के पास ले गया, परन्तु माला को वीरम का दुर्व्यवहार याद था। इसलिए उसकी कोई आवभगत नहीं की और साधारण सैनिक की तरह उसे रख लिया। (२१/३३)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रावळ माला का प्रधान भोपा था। उसे चूँडा ने प्रसन्न किया, तब उसने रावळ से कह-सुन कर बड़ी मुश्किल से मण्डोर के पास सालोड़ी थाने पर उसे भेजा। (२१/३३)

चूँडा ने सालोड़ी आकर अपनी व्यवस्था जमाई और चामुण्डादेवी की खूब सेवा की। दिनों-दिन उसका प्रभुत्व बढ़ने लगा। लोग अच्छी संख्या में उसके यहाँ आने-जाने लगे। एक दिन देवी ने प्रसन्न होकर उसे बताया कि अमुक दिन सोने से भरी एक कतार आयेगी उसे तू हस्तगत कर लेना, फिर तुझे मैं गढ़पति बनाऊँगी। चूँडा ने ऐसा ही किया। सोना हाथ लगते ही उसने अपनी सैनिक-शक्ति बढ़ा ली। (२३/३५)

उन दिनों मण्डोर में बादशाही थाना था। उसका अधिकारी मुगल ऐवक था। चारों ओर विशेष आबादी नहीं थी। ईंदा, सींधल, साँखला, कोटेचा, आसायच आदि राजपूतों की चौरासियाँ थीं। मुगल ऐवक ने इन सबको बेगार में घास की गाड़ियाँ लाने का आदेश दिया। इनमें ईंदा टोहा बुजुर्ग आदमी था, उसने ऐबक से प्रार्थना की कि यह बेगार उचित नहीं है। परन्तु जब सुनवाई होती नहीं दिखाई दी तब वे घास की गाड़ियों के बहाने गाड़ियाँ सैनिकों से भर कर मण्डोर पहुँचे और जब ऐवक निरीक्षण के लिए आया, तो उस पर हमला कर उसे मार डाला। फिर तो साधारण से संघर्ष के बाद ही मण्डोर का गढ़ कब्जे में कर लिया। (२४-२५/३६-३७)

तत्पश्चात् ईंदों ने देखा कि इधर नागोर में मुगलों का थाना नजदीक पड़ता है और उधर राणा का प्रभाव भी है ऐसी स्थिति में गढ़ को कब्जे में रखना कठिन है, अतः चूँडा जैसे सुयोग्य व्यक्ति के अधिकार में गढ़ दे देना चाहिए, जिससे हम सब की सुरक्षा का प्रबन्ध भी हो जायेगा। चूँडा की स्वीकृति मिलने पर गढ़ उसे सौंप दिया गया तथा ईंदा गांवदेव ऊगड़ावत की पुत्री का विवाह उसके साथ कर उससे वायदा करवाया कि वह तथा उसके वंशज ईंदों के अधिकार की भूमि में दखल नहीं देंगे। चूँडा ने धीरे-धीरे अपनी व्यवस्था कायम की तथा सैनिक-शक्ति भी बढ़ाई। (२५-२६/३८-३९)

राव चूँडा का राज्य मण्डोर पर खूब जमा। उसने नागोर तथा डीडवाना पर भी अपना अधिकार जमा लिया। वृद्धावस्था में मोहिलाणी से शादी की। फिर भाटियों से चूँडा का बैर बँधा। फलस्वरूप राव केलण मुल्तान से सलेम

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांन को उस पर चढ़ा लाया। संवत् १४२८ में नागोर में चूँडा १२ योद्धाओं सहित काम आया और अपने कुंवरों को वहाँ से सुरक्षित निकाल दिया। मरते समय चूँडा ने रिणमल से वचन मांगा कि मण्डोर का टीका मेहिलाणी के पुत्र कान्हा को दिया जाय। रिणमल ने ऐसा ही किया और सलेमखांन को मार कर बाप का बैर लिया। (२५-२६/४०-४१)

रिणमल मेवाड़ में जाकर अपने भानजे राणा कुम्भा व मोकल के पास रहने लगा। कान्हा बड़ा निर्बल शासक हुआ। राव रिणधीर चूँडावत ने उससे राज्य छीन लिया। सता को शासक बनाया और रिणधीर सारा काम-काज देखने लगा। सता का लड़का नरवद बुद्धिहीन व्यक्ति था। वह रिणधीर को मारने के प्रयत्न लगातार करने लगा। तब रिणधीर धणले में रिणमल के पास गया और उसे समझा-बुझा कर राणा मोकल की सहायता से मण्डोर पर चढ़ाई की। सता भाग गया, नरबद ने मुकावला किया पर घायल होकर गिरा। रिणमल ने सीसोदियों की फौज को वहीं से विदा कर दिया। वे नरवद को उठाकर चित्तौड़ लौट गये। नरवद राणा का चाकर हुआ। (२६-२७/४२-४४)

इसी समय के आस-पास मेवाड़ के राणा मोकल के पासवानिये भाइयों चाचा और मेरा ने पही के पहाड़ों पर अपने सुरक्षित मकान बनवाये थे, उन् रिणमल की सहायता से मोकल नें गिरवा दिया था, इससे वे द्वेष रखने लगे। रिण-मल नें राणा को उनसे सतर्क रहने को कहा था, पर ऐसा अवसर आया कि इधर राणा मोकल के दामाद गागुरण के अचलदास खीची पर मांडव का बादशाह चढ़ आया, उसकी सहायतार्थ जाने के लिए राणा ने भी रिणमल को मण्डोर से अपनी फौज ले आने को कहा। उधर रिणमल गया और पीछे मौका देख कर चाचा और मेरा ने मोकल को मार डाला। कुम्भा ने रिणमल को सूचना देकर फौरन सहायतार्थ आने को कहा। रिणमल बिना कुछ खाये-पिये ४००० घुड़सवार लेकर मेवाड़ आया। चाचा और मेरा पही के पहाड़ों में छिप गये, परन्तु अन्त में मारे गये। (२७-२६/४५-४८)

अब चित्तौड़ का शासक राणा कुम्भा है, पर आज्ञा रिणमल की ही चलती है। चूँडा सीसोदिया जैसे बुजुर्ग मांडवे जा बैठ रहे, बाकी के चुपचाप सहन करते गये। अन्त में राठोड़ों का वर्चस्व समाप्त करने के उद्देश्य से महपा पँवार ने चूँडा लखावत को बुलवाया और रात में सोते हुए रिणमल की हत्या करवा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दी। जोधा तलहटी में घोड़ों के पास सोया था, जहाँ उसे छोकरी ने आवाज देकर सूचित किया तब वह अपने सवारों सहित वहाँ से भाग निकला। रिणमल पर आक्रमण होते समय भाटी सता, लूणकरण हमीर का, रिणधीर सूरावत तथा वीजा विक्रमादित्य काम आये। (२९-३०/४९-५०)

जब जोधा वहाँ से निकला तो भींव चूँडावत को वहीं छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह शराब के अत्यधिक नशे में था। चित्तौड़ से ८-१० कोस पर राणा की फौज ने जोधा पर आक्रमण किया, जिसमें जोधा के २०० सवार मारे गये। कोस ३० पर फिर युद्ध हुआ, जिसमें कितने ही लोग काम आये। यों करते-करते सोमेश्वर के घाटे पर जब जोधा पहुँचा तो उसके पास केवल २००-२५० आदमी रह गये थे। उन्होंने बड़ी वीरता से राणा की फौज का मुकाबला किया और केवल ७ सवारों से जोधा को घाटे के पार उतारा। इस युद्ध में वरजांग भींवोत घायल होकर गिरा। उसे उठाकर राणा की फौज लौट गई। जोधा मण्डोर पहुँचा। वहाँ से अपना साज-सामान लेकर नापा सांखला के पास जांगलू चला गया। नापा सांखला की लड़की नोरंगदे जोधा को ब्याही हुई थी। (३१/५१)

अब जहाँ कोड़मदेसर तालाब है वहाँ रिणमल के बारह दिनों की रश्म अदा की। राणा ने मण्डोर पर अधिकार करने के लिए राव राघवदे सिंहमलोत आदि को भेजा। सहेसमल चूँडावत को अपना चाकर रखकर सोजत का पट्टा दिया। आका सीसोदिया, हींगोला आहाड़ा, नरवद सतावत, सता चूँडावत आदि जोधा को मार डालने के लिए प्रयत्नशील हुए। अलग-अलग थानों पर भी समुचित व्यवस्था की गई। जोधा विपत्ति के मारे इधर-उधर भागता रहा। १२ वर्ष तक हिम्मत रख कर उसने कष्ट सहे। दो बार नरवद ने जोधा पर चढ़ाई की और उसका सामान लूट लिया। (३२-३३/५२-५५)

इसी दौरान राव जोधा ने अपने भाई-बन्धों को शामिल किया और संगठित रूप में प्रयास करके धरती पर अधिकार करने का विचार किया। उस वर्ष अकाल पड़ा था, अनाज की बड़ी कमी थी। जब वे सोढी मूलवणी के यहाँ पहुँचे, तो मजीष्ठ डाल कर उसने उन्हें लपसी खिलाई। वहाँ से वे फलोदी कस्बे में हरभू के पास पहुँचे, जो बड़ा करामाती व्यक्ति था। उसने उनके आने से पहले ही भोजन की व्यवस्था करवा दी और उनके आते ही सर्वप्रथम भोजन की मनुहार की तथा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बहुत अच्छा भोजन करवाया। सभी लोग दंग रह गये। फिर जोधा ने हरभू से पूछा– आप में वड़ा चमत्कार है, आप भविष्य की बात जानते हैं, आप बताएँ कि हमारे दिन कब अनुकूल होंगे। हरभू ने कहा—आज से ही अनुकूल हैं, तुम अपना राज्य लेने का प्रयत्न करो। वहीं से जोधा अविलम्ब सेत्रावे गया और वहाँ से रावत लूणा की स्त्री के सहयोग से उसके १४० घोड़े लेकर मण्डोर पर चढ़ाई की। आका सीसोदिया और हींगोला आहाड़ मारे गये। मण्डोर पर अधिकार कर चौकड़ी तथा कौसाणे के थानों पर अधिकार किया। फिर सोजत, धणला आदि भी ले लिये। वहीं सोजत में अपने साथियों को बुलाकर विजयोत्सव मनाया। दो वर्ष तक सोजत में रहने के बाद मण्डोर में अपना स्थाई थाना रखा। (३३-३५/५६-५७)

फिर राणा कुम्भा उस पर चढ़ आया। जोधा के पास घोड़े बहुत थोड़े थे। वह १०,००० राठौड़ों को लेकर गाड़ियों में बैठ उसका सामना करने गया। राणा कुम्भा इस प्रकार मर मिटने के लिए उद्यत राठौड़ों को देख भाग खड़ा हुआ। जोधा ने गोडवाड़ का इलाका लूटा और जाकर पीछोला तालाब पर अपने घोड़ों को पानी पिलाया। चित्तौड़ को लूटा। समझौता करवाने वालों के बीच-बचाव से बबूलों वाली धरती जोधा के रही और आंवल वाली धरती कुम्भा के। जोधा ने रिणमल के बैर में सोजत व जैतारण दबा कर रख लिये। (३५-३६/५८)

राव रिणमल को मारने के बाद कुम्भा ने उसकी लाश उठाने नहीं दी। तब चाँदण खिड़िया ने बड़ी जोखिम उठाकर रिणमल का दाह-संस्कार किया और फूल गंगाजी में प्रवेश किये। जोधा तथा उसके वंशजों ने अनेक ग्राम इस उपकार के बदले में चाँदण तथा उसके बेटे पोतों को दिये। (३७/५९)

राव जोधा

राव जोधा पड़िहारों का भानजा था। पड़िहार जेसल राणा की पुत्री हंसाबाई का पुत्र था। संवत् १४७२ वैसाख सुद ४ बुधवार को इसका जन्म हुआ। संवत् १५१२ के करीब धरती पुनः प्राप्त की और संवत् १५१५ में चिड़िया टूंक पर किले की नींव दी। जोधा के पास ये परगने थे—जोधपुर, मेड़ता, सोजत, जैतारण, जाँगलू। यह भी कहा जाता है कि पूंगल के स्वामी राणगदे की पुत्री कोड़मदे चूँडा के बैर में रिणमल को ब्याही थी, उसका पुत्र जोधा था। (३८/६०-६१)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव जोधा २६ वर्ष राज्य भोगकर संवत् १५४१ में स्वर्गवासी हुए। अपने भाइयों को इस प्रकार धरती बांटकर बसाया—

१. अखैराज रिणमलोत को सोजत की बगड़ी।
२. डूंगरसी रिणमलोत को भाद्राजून।
३. राठौड़ बाला भाखर के को खेरला।
४. राठौड़ रूप रिणमलोत को चाडी।
५. राठौड़ मंडला रिणमलोत को बीकानेर का सांदूड़ा।
६. राठौड़ करना रिणमलोत को लूणावास।
७. राठौड़ पाता रिणमलोत को करणू।
८. राठौड़ वैरा रिणमलोत को सोजत का दुधवड़।
९. राठौड़ जगमाल रिणमलोत के पुत्र खेतसी को नेतड़ां। (३८-३९/६२)

राव जोधा ने अपने पुत्रों को धरती इस प्रकार बांटकर दी—

१. सातल को जोधपुर।
२. नींबा कंवरपदे में मर गया।
३. भारमल व जोगा को कोढणा ऊहड़ों वाला।
४. सिवराज को पहले सिवाना दिया था फिर दूनाड़ा।
५. करमसी तथा रायपाल को नाहढ़सरा दिया। सलेहखांन ने इन्हें आसोप व खींवसर दिये। (३९-४०/६३)

राव सातल

राव सातल जोधावत संवत् १५४१ में गद्दी पर बैठा। ४ वर्ष राज्य करके १५४५ में देवलोक सिधारा। इसने मलूखां से कुसांणे में युद्ध किया था। वरसिंघ ने सांभर लूटी तब मलूखां चढ़ आया था। इस युद्ध में बरजांग भींवोत ने वड़ा काम दिया। सूजा घायल होकर गिरा। सातल की विजय हुई। सातल के कोई पुत्र न था, नरा सूजावत गोद था। नरा ने पोकरण पर खींवा लूंका को हटाकर अधिकार कर लिया था। फिर गोइंद नरावत पोकरण का अधिकारी हुआ।

(४०-४१/६४-६५)

राव गांगा

कुँवर बाघा सूजावत मांगलियों का भानजा था, परन्तु कँवरपदे में ही कालकलवित हुआ। राव गांगा बाघावत चहुवानों का भानजा था। इसे ईडर

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

से लाकर सरदारों ने संवत् १५७२ में गद्दी पर बैठाया। संवत् १५८८ में इसका स्वर्गवास हुआ। इसने स्वयं सेवकी में नागोर की फौज से युद्ध किया था। अनेक योद्धा इसमें मारे गये। ईडर को जब गुजरात के बादशाह ने दबा लिया, तो इसने राणा सांगा और वीरमदे मेड़तिया की सहायता से उसे मुक्त करवाया। (४१-४२/६६-६६)

राव मालदे

राव मालदे गांगावत देवड़ों का भानजा था। संवत् १५८८ जेठ सुदि ४ बुधवार को गद्दी पर बैठा। संवत् १६१६ कातो सुदि १२ को इसकी मृत्यु हुई। यह राव बड़ा प्रतापी व भाग्यशाली हुआ। इसने जोधपुर का गढ़ संवरवाया तथा खूब धरती जीती। इसने मेड़ता, नागोर, सांभर, बांवळ, मालपुरा, सांचोर, सिवाना, डीडवाना, जालोर, फलोदी, पोकरण, खाटू, जाजपुर, बधनोर, गोडवाड़, कोटड़ा, राधणपुर, वाहतखड़, बीकानेर, रायपुर, बाड़मेर, सलेमाबाद, भाद्राजून आदि स्थानों पर अपना अधिकार किया। अनेक किलों को गिरवाया और कई नये किले बनवाये तथा उनकी मरम्मत करवाई। (४२-४५/७०-७१)

इसने जैता पंचायणोत को टाकों की लड़की ब्याही तथा राव को हरसोळाव १२ गांव सहित देकर समझौता किया। १६१७ में देवीदास से समझौता कर जोधपुर में बसाया। संवत् १५९३ में सीरवी गोयंद को पकड़ा। १५९३ में जैसलमेर ऊमादे भटियाणी से शादी की और उसका रूठना १५९५ में हुआ। ऊमादे मेवाड़ के केलवे में रही तथा १६१९ में जब राव के स्वर्गवास का समाचार सुना तो सती हुई। मालदे का विवाह झाला जैत की लड़की सरूपदे से हुआ था। उसकी छोटी बहन भी बड़ी सुन्दर थी, उससे भी विवाह करने का प्रस्ताव मालदे ने किया। झाला माना नहीं, उसने चुपके से उसकी शादी राणा उदयसिंह से कर दी। इससे मालदे और उदयसिंह में बैर-भाव बढ़ा। राव ने गोढ़वाड़ में अपने थाने बैठाये तथा कुम्भलमेर पर भी चढ़ाई की, परन्तु सफलता न मिली। (४७-४८/७३-७६)

बालीसा सूजा सांवतोत एक बार राणा उदयसिंह से रूठकर जोधपुर आ बसा। मालदे ने उसका बड़ा स्वागत किया। राणा से मालदे का विरोध था ही, उसने राणा पर जब फौज विदा की तो सूजा को उसके साथ जाने को कहा। सूजा ने मना कर दिया, परन्तु अधिक दबाने पर आगे के प्रबन्ध की

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जिम्मेदारी के बहाने वह रवाना हुआ और राणा से जा मिला। राणा ने आदर सहित उसे नाडूल की जागीर १२ गांवों से दो। अब तो मालदे सूजा से बड़ा रुष्ट हुआ। उसने अपने प्रसिद्ध सरदार बींजा, नगा, धना आदि को बुलाकर सूजा से वैर लेने को कहा। ये ५०० सवारों से नाडूल गये और कुछ सिपाहियों को गांव की गायें घेर लाने को भेजा। सूजा को खबर मिलते ही वह समझ गया कि यह कोई चाल है। उसने अपने सभी लोगों को शामिल कर पीछा किया। बींजा, धना काम आये। नगा को लोगों ने वहाँ से निकाला। उसने भी बड़ा पराक्रम दिखाया था। (४८-५१/७७-८०)

संवत् १६१३ में जब राणा उदयसिंह और हाजीखां के बीच युद्ध हुआ तब राठौड़ देवीदास ने सूजा को बींजा, धना का बैर याद दिलाते हुए ललकार कर उसे मारा। (५२/८१)

राव मालदे के कुल ८ लड़कियाँ हुई थीं। उनका विवाह इस प्रकार किया—सजना जैसलमेर के रावळ हरराज को, कनकावती (नोरंगदे) गुजरात के बादशाह महमद को, पोहपावती हलवद के राणा आसकरण को, हंसाबाई लूनकरण सेखावत को, रतनावती बाई हाजीखां को, बाल्हाबाई अमरकोट के सोढा वरसिंघ को, राजकुंवर बूंदी के हाडा सुरतांण को, एक लड़की बाघव के बाघेले सरदार को। (५२-५३/८२-८३)

मालदे का प्रताप सुनकर बाहरठ आसा दीतावत आया था। उसने कुँवर चंद्रसेन की प्रशंसा में गुण चौरासी रूपक लिखा। उन्हीं दिनों राव ने नागोर पर अधिकार किया था। खांन के दिये दो गांव नागोर परगने के आसा के पास थे। मालदे ने कहा कि खांन के दिये हुए सांसण नहीं माने जायेंगे, इनके बदले या तो दूसरे गांव ले लो या उनको हमारी तरफ से दान-स्वरूप स्वीकार करो। तब आसा ने धरणा दिया और अपने गले पर कटारी से घाव किये। ऊमादे भटियाणी ने अपने पास रख कर इनका इलाज करवाया और स्वस्थ होने पर सीख दी। ऊमादे सती हुई तब आसा ने कवित्त कहे। (५३-५४/८३-८४)

मालदे ने पंचोली अभा को २ गांव नंदवाण, नहेड़वा दिये थे। रावळ मेघराज को महेवा के अतिरिक्त जोधपुर के तीन गांव झत्रर, बावळली, आगोळाई दिये गये थे। भाटी राव जेसा पूंगलिया चढ़ आया, उस युद्ध में ५ बड़े सरदार राव के काम आये। राठौड़ अचला पंचायणोत ने नागोर की प्रोल के लोहे के

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दरवाजे लाकर जोधपुर के किले में चढ़ाये। फिर अचला नागोर में ही काम आया। नागोर में भाटी दुरजण जोधावत तथा राव जोगा सदावत भी काम आये थे। (५४-५५/८६-८७)

राव मालदे के इतनी रानियाँ थीं—सरूपदे झाली, ऊमादे भटियाणी, अरघां झाली, हीरां झाली, रंभावती हाडो, लाछळदे कछवाही, जमन टांकणी, लाछ आहाड़ी, जामवाली, सोनगरी, धारबाई भटियाणी, भांण, चहुवाण, जादम, सोढी, जसड़। (५५-५६/८८)

संवत् १६०० में वीरमदे तथा राव कल्याणमल बीकानेरिया सहसराम के मारफत शेरशाह के पास फरियादी होकर गये। राव को खबर लगी तो वह भी ससैन्य मुकाबला करने चला। गिरटरी और समेल दो पहाड़ियों के बीच युद्ध हुआ, जिसमें जैता कूंपा आदि १९ सरदार काम आये। जोधपुर शेरशाह की फौज आई तब अचळा सिवराजोत, तिलोकसी बरजांगोत ऊदावत, भाटी मालो जोधावत (समेल में घायल हो चुक था) राव पतौ दुरजणसालोत, चरड़ो अरकमल चूंडा रौ, भा. सांकर सूरावत (गढ़ पर छतरीहै) आदि काम आये। बादशाह सूरशाह ने किले पर मस्जिद बनवाई। (५६-५८/८८-८९)

संवत् १६१० में वैसाख वदि २ को मालदे ने मेड़ता पर चढ़ाई की। जैमल मेड़तिया ने वाहर आकर जबरदस्त युद्ध किया। राव को लौटना पड़ा। राठौड़ पृथ्वीराज जैतावत आदि १४ सरदार काम आये। राठौड़ जैमल के अखैराज भादावत आदि ६ सरदार काम आये। (५९-६०/९०-९१)

हरमाड़ा के युद्ध में राव ने १५०० सैनिकों की सहायता हाजीखां को दी थी। उधर राणा उदयसिंह के साथ कल्याणमल वीकानेरिया ईडर, बाँसवाड़ा, देवलिया, डूंगरपुर आदि के शासक तथा मेड़तिया जैमल थे। हाजोखां जीत गया। जैमल के आदमी मेड़ता खाली कर बधनोर चले गये। मालदे ने जैमल की कोटड़ी गिरवायी तथा आधा मेड़ता जगमाल वीरमदेओत को दिया। जयमल फिर बादशाह से सहायता प्राप्त करने गया। सफरदीन मुगल फौज लेकर आया। मालकोट में रहकर देवीदास ने मुकाबला करने का दृढ़ निश्चय किया। मालदे ने उसे गढ़ खाली कर देने को कहा और चंद्रसेन आदि को भेज कर बुलवाया। पर उसने गढ़ खाली नहीं किया और युद्ध किया। बुर्ज उड़ जाने पर किले से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

निकला तब सफरदीन ने पीछा किया। गांव सातलवास के पास युद्ध हुआ। राव देवीदास ४० योद्धाओं सहित काम आया। (६०-६३/९२)

बादशाह सूर का थानायत हाजी अली फतेखांन पीपलरण के पहाड़ों में मालदे पर ५००० पठानों से चढ़ आया। मालदे के २००० योद्धा थे। मालदे ने युद्ध जीता। आदमी ४०० काम आये। अनेक सरदार भी काम आये तथा घायल हुए। (६३/९३)

संवत् १६०४ में डूंगरसी से मालदे ने फलौदी ली। १६०७ में पोकरण सातलमेर राव जैतमाल से ली। बाड़मेर कोटड़ा लिया। तब रावत भींवा जैसेलमेर से हरराज को मदद के लिये लाया। बाड़मेर के थाने से रतनसिंघ खींवावत आदि को सामान छोड़कर भागना पड़ा। (६३-६४/९४)

तब कंवर रायमल तथा पृथ्वीराज जैतावत आदि को मण्डोर से फौज देकर मालदे ने जैसलमेर पर विदा किया। उन्होंने जैसलमेर के बगीचों का नुकसान किया और शहर में लूट-पाट की। रावळ ने गढ़ का आश्रय लिया। राव का चाकर भाटी मूळा नीबावत वहाँ काम आया। (६४/९५)

संवत् १६१६ में आसोज वदि ७ को रावजी की ओर से देवीदास जैतावत, राठौड़ पता, वाला नेतावत ने जालोर का गढ़ लिया। मालक बूढण निकल भागा। चंद्रसेन गढ़ पर चढ़ा। राव जेसा पूंगलिया जब फलोदी पर आया तब राव की सेना के भाटी किसना नीबावत आदि ६ योद्धा काम आये। (६४/९५)

(६५/९७-१०१) पूर्वोक्त वृत्तांत ही यहाँ संक्षेप में दिया गया है।

राव चंद्रसेन

राव चंद्रसेन मालदेवोत झालों का भानजा था। संवत् १५९८ सांवण सुद ८ को जन्म हुआ। संवत् १६१९ में गद्दी पर बैठा और संवत् १६३७ को स्वर्गवास हुआ। मालदे का जब स्वर्गवास हुआ तब चंद्रसेन सिवाने में था। वहाँ से जोधपुर आया। उसकी माता झाली उदयसिंह को फलोदी दिलवाकर फिर सती हुई। (६५-६६/१०२-१०३)

गद्दी पर बैठते समय इतनी धरती चंद्रसेन के पास थी—जोधपुर, सोजत पोकरण, सिवाना, जालोर। जोधपुर संवत् १६२२ में उससे छूटा और फिर सभी परगने हाथ से निकलते गये। (६६-६७/१०४-१०५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १६२० जेठ सुदि १२ को हसनकुलीखां को राव राम चढ़ाई के लिये लाया। तब उसे सोजत देने का वायदा चंद्रसेन ने किया। संवत् १६२१ चैत सुदि १२ को फिर मुगल चढ़ आये। चंद्रसेन ने जोधपुर का किला सजाया। ६ महीने तक किसनदास गांगावत, करनोत आदि ने गढ़ में मुकाबला किया। मुगल-सेना अधिक होने से चंद्रसेन बातचीत करके संवत् १६२२ मंगसर सुदि १० को गढ़ खाली करके भाद्राजून चला गया। सो० मानसिंघ, राव पतो नगावत, रा० तिलोकसी कूंपावत साथ में गये। (६७-६८/१०६-७)

एक बार बीकानेर के राजा रायसिंघ को बादशाह ने संवत् १६३१ से डेढ़-दो वर्ष के लिये जोधपुर दिया। कुंवर दलपत यहाँ काँच के महल से गिर पड़ा था, परन्तु बच गया। (६८/१०८)

संवत् १६२४ माह सुदि १० को गढ़ जोजावर के पास इसमाइलकुली को राव लखमण भदावत ने लूटा। खूब माल-असबाब हाथ लगा। कई मुगल मारे गये। हाथी ४ हाल थगे। (६८/१०६)

संवत् १६२५ में चंद्रसेन ने सुरज हाड़ा की पुत्री के साथ रणथम्भोर में शादी की। संवत् १६२७ में बादशाह अकबर अजमेर के ख्वाजा की मनौती के लिये आया। राव चंद्रसेन ५०० सवारों से बादशाह से मिलने को भाद्राजून से रवाना होकर नागोर आया। इसी समय उदयसिंह भी आया। कुंवर उगरसेन व रायसिंघ बादशाह के पास रहे। (६६/११०-१११)

संवत् १६२६ में जब राणा उदयसिंह को जैसलमेर वालों ने अपनी लड़की नहीं दी, तो भाद्राजून में चंद्रसेन ने अपनी लड़की करमेती की उससे शादी की। (६६/११२)

संवत् १६२७ मे चंद्रसेन भाद्राजून छोड़कर सिवाना में पीपलण के पहाड़ों में आ बसा। उस समय कलाखांन ने चढ़ाई की तब रा० देस पातलोत ने राव के हुक्म से युद्ध किया। लूनी नदी तक सीमा निश्चित हुई। (६६/११३)

संवत् १६२६ में चंद्रसेन अपने आदमियों सहित काणूजे आकर रहा। रतनसी खींवावत के लड़के उन दिनों मुगलों से संधी करके आसरलाई रह रहे थे। इन्हें चंद्रसेन ने अपने पास बसने के लिये कहा। उन्होंने स्वीकार नहीं किया। राव ने उन पर चढ़ाई की। ऊदावत बड़े नाराज हुए। उधर जोधपुर के बनियों

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

से रावजी ने कुछ सहायता मांगी थी वह उन्होंने नहीं दी और लूंकड़, संखलेचा, भंडसाली मुगलों को राव पर चढ़ा लाये। इस समय रावत पंचायण ने खूब सेवा की। (६६-७०/११४)

संवत् १६३१ के लगभग राव मेवाड़ के मुडाड़े ग्राम में जा रहा। उदयसिंह की कन्या चांदा सीसोदणी से राव की शादी हुई थी, उसके पट्टे में यह गांव था। फिर सिरोही के कोरटा ग्राम में डेढ़ वर्ष तक रहा। १६३२ में पोकरण का कोट राव के आदमियों ने भाटियों को सौंपा। संवत् १६३२ में पता के सिवाने गढ़ में गोली लगी। राव के आदमी मुगलों को गढ़ सौंप कर उसके पास मुडाड़ा आ गये। (७०-/११५)

संवत् १६२६ में सोजत के मालिक राव राम की मृत्यु हुई। उसका लड़का करन बढ़े-बूढ़ों की सलाह की परवाह नहीं करता था। तव राम के छोटे लड़के कला का पक्ष आसकरण तथा महेश कूंपावत ने लिया तथा वे बादशाही चाकर पृथ्वीराज कूंपावत के पास कला को टीका दिलवाने की सिफारिश लेकर गये। पृथ्वीराज ने उन्हें आश्वस्त किया और बादशाह अकबर को कहकर सोजत कला को दिलवाई और ६० गांवों से सुराइता करन को दिलवाया। पृथ्वीराज की वसी के लिये उसे खैरवा देने का वायदा उन्होंने किया था, पर वे आते समय पृथ्वीराज से मिले ही नहीं। तब अवसर देखकर पृथ्वीराज ने खैरवा जोधपुर परगने के अधीन करवा दिया। (७१/११६)

एक बार कला बादशाह के दरबार में गया। वहाँ एक हुरम से उसका प्रेम हो गया। जब बादशाह को मालूम हुआ तो उसे मारने का हुक्म बादशाह ने दिया। वह सोजत से भाग कर डीघोड़ आया। शेख इभराइम ने उसे फुसला कर नाडुल बुलाया और वहीं धोखे से मार डाला। इस प्रकार सोजत का स्थान रिक्त देख सादूल महेसोत तथा आसकरण आदि ने डूंगरपुर से चंद्रसेन को बुलवाया। (७२-७३/११७)

राव चंद्रसेन ने सिवराड़ में जब मुगलों से युद्ध किया था तो संवत् १६३५ में ऊहड़, जैमल नैतसियोत अदि १२ प्रसिद्ध योद्धा काम आये। (७२/११८)

मोटा राजा के अधिकार में जैतारण के ६५ गांव थे। जब उसकी मृत्यु हुई तो बादशाह ने उसके लड़कों में उनका बँटवारा इस प्रकार कर दिया—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२८।। सगतसिंघ उदैसिंघोत को, १८।। राव दलपत उदैसिंघोत को, ११ राव भोपत उदैसिंघोत को, ३ राव माधोसिंघ उदैसिंघोत को, ३ राव मोहणदास उदैसिंघोत को। (७३-७५/११९)

राव कल्याणदास रायमलोत पर, कुंवर भोपतसिंघ के साथ मोटा राजा ने जब फौज भेजी तो उसने संवत् १६४६ मंगसर वदी ७ को गढ़ के घेरा दिया। मंगसर वदि ७ को गढ़ ले लिया। इस युद्ध में ७ उदयसिंह के सरदार और ११ कल्याणदास के सरदार काम आये। उदयसिंह स्वयं भी वहाँ आया। संवत् १६४० में अकबर ने उदयसिंह को जोधपुर दिया था। (७५-७६/१२०-१२१)

मोटा राजा उदयसिंह

उदयसिंह मालदेवोत तथा चंद्रसेन सगे भाई थे। संवत् १५८४ माघ सुदि १२ का जन्म, तथा १६४० में जोधपुर की गद्दी पर बैठा। संवत् १६५१ आसाढ़ वदि १ को लाहोर में इसकी मृत्यु हुई। प्ररम्भ में इसका मनसब ८०० सवारों का था। जोधपुर से दो तफे अलग थे—१ आसोप भांण कूंपावत को था, २ बीलाड़ा बाघ पृथ्वीराजोत को। १६४६ में नवाब खांनखांना मुदफर पर चढ़ाई को जा रहा था, तब इसे सोजत दिलवाई। (७६-७७/१२२-१२३)

सिवाना कल्याणदास से लिया था। कोटा १६५० में गोपालदास मांडणोत फौजदार से लिया। समावली बादशाह ने दी थी, वह ग्वालियर से नजदीक है। सातलमेर—पोकरण भी बादशाह की ओर से जागीर में लिखी गई थी, परन्तु वहाँ अमल-दस्तूर नहीं हुआ। (७७/१२४)

कुंवर सूरजसिंघ भाटी गोयंददास पर बड़ा कृपालु था। तुंवरों की वासणी उसके पट्टे में थी। आसोप का एक काम देकर उदयसिंह ने उसकी परीक्षा ली। आखिर वह काम करके आया। (७७-७८/१२५)

रायसिंघ ने चन्द्रसेनोत का बैर लेने को सिरोही पर चढ़ाई की। पता तेगा सुरावत को धोखे से मारा। संवत् १६४४ में वरसल पृथ्वीराजोत के कहने से देवड़े आये, उन्हें भी समाप्त किया। तब वरसल गुजरात में नवाब खांनखांना के पास चला गया। (७८/१२६)

राव राम व कला के समय में चारणों तथा ब्राह्मणों ने बहुत से गांव दान में ले लिये थे। संवत् १६४३ में जोधपुर परगने के १५ गांव तथा परगने

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सोजत के ३५ गाँव उदयसिंघ ने जब्त किये। दुरसा आढा अखा बारहठ के पास आया, अखा ने उसको सहयोग दिया। मोटाराजा उस समय गुजरात को जाते समय सोजत ठहरा, वहाँ चारणों ने काजेसर महादेव पर तागा (आत्महत्या करने के लिये प्रयास) किया। बारहठ अखा ने आत्महत्या की तथा दुरसा अढा ने भी घाव खाये पर बच गया। (७८-७९/१२७ तथा १३१)

संवत् १६४४ में मोटाराजा सिरोही गया तब जामबेग साथ था। देवड़ों को छल से मारा। फिर जामबेग को बीजा को मारने के लिये भेजा, वहां जामबेग का भाई घायल हुआ। (७९-८०/१२८)

फलोदी परगने के लोहावट ग्राम में एक लड़ाई चंद्रसेन और उदयसिंघ के बीच हुई। उदयसिंघ का चाकर गोपालदास पृथ्वीराजोत इसमें घायल हुआ। मोटाराजा के हाथ की बरछी चंन्द्रसेन के लगी थी और रावळ मेघराज के हाथ की बरछी मोटाराजा के लगी। राव जसवंत डूंगरोत, राव जैतमल जसवंतोत, तिलोकसी कूंपावत, रावळ मेघराज, राठौड़ पृथ्वीराज कूंपावत, सो. मानसिंघ, राव पतौ नगावत आदि चन्द्रसेन की ओर थे। यहाँ युद्ध में कोई १२ योद्धा काम आये। (८०-८१/१२९-१३०)

मोटाराजा ने परगना जोधपुर, सिवाना और सोजत पाये थे। जैतारण के गांव ६६५ मोटाराजा को थे और गांव ७२ गोपालदास को। मालदे की मृत्यु होने पर झाली स्वरूपदे ने मोटाराजा को फलोदी दिलवाई थी। फलोदी में दोनों भाई मोटाराजा और चंद्रसेन के लड़ाई, कहते हैं गंधाणी के हासल के प्रश्न को लेकर हुई थी (युद्ध का वृत्तांत पहले आ चुका है)। (८३/१३२-१३३)

केलण भाटियों और मोटाराजा के बीच एक लड़ाई घोड़ों की कतार को लेकर हुई। उन दिनों मोटाराजा के फलोदी थी और बीकूपुर का मालिक राव डूंगरसी था। डूंगरसी ने अपने भाई भा० भानीदास को बीकानेर के पास ठहरी हुई घोड़ों की कतार को अपनी सीमा में से निकलने के लिये इधर ले आने को भेजा जिससे उसे आमदनी हो, उधर मोटाराजा ने भी अपने सरदारों को १०० सवारों के साथ उन्हें बुलाने को भेजा। भानीदास ने पहले ही पहुँचकर उन्हें अपने साथ रवाने कर लिया था। इस पर मांडणसर नामक स्थान पर भा० भानीदास को उदयसिंह के आदमियों ने घेरकर मार डाला। इस पर

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बैर-भाव बढ़ा। भाटियों ने उदयसिंह को मालदे का पुत्र समझकर काफी लिहाज किया। आखिर भा० किसनसिंघ के प्रयत्न से समझौते को बोरनाडो के पास दोनों पक्ष आये। परन्तु उदयसिंघ के मन में भाटियों के कम आदमी देखकर कपट आया, डूंगरसिंह का घोड़ा लेने की जिद्द की तथा नरा की जाल के पास परगने की सीमा निश्चित करने को कहा। भाटियों ने अवसर देखकर स्वीकार कर लिया और लिखावट के लिये भी तैयार हो गये। जैसे तैसे लिखावट कर दी। राजा दिनोंदिन जोर पकड़ता गया। भाटियों ने अपने प्रधान को भेज कर उसे बहुत समझाया कि वह उनके गांव लेने की जिद्द न करे। परन्तु भाटियों को दबा हुआ देखकर उसने उन पर चढ़ाई कर दी। डूँगरसी सामना करने को कटिबद्ध हुआ। जोधपुर थाने के थानेदार नासीरदी ने ६०-८० तोपची मोटाराजा की सहायतार्थ भेजे। मोटाराजा ने ५००-७०० आदमियों से चढ़ाई की पर युद्ध में भाटी जीते। मोटाराजा के २१ आदमी काम आये और भाटियों के ४ प्रसिद्ध योद्धा काम आये जिनमें भाटी काना किसनावत भी था। मोटाराजा भागकर फलोदी आया, भाटी कुण्डल में ही ठहरे और धरती लूटी। (८४-८८/१३४-१३७)

संवत् १६३१ में मोटाराजा से हटाकर अकबर ने फलोदी भाटी भाखरसी हरराजोत को दी। फलोदी जाते समय उदयसिंघ बीकूंकोहर डूंगरसी के पास ठहरा तब डूंगरसी ने अपनी लड़की उसके पुत्र अखैराज को ब्याही। (८८/१३८)

मोटाराजा ने जोधपुर पर ११ वर्ष राज्य किया परन्तु जीतेजी भाटियों के इस बैर का नाम न लिया। मोने हरराजिये ने संवत् १६४१ में मोटाराजा के १६ आदमी मारे थे तब सूरजमल खींवावत भी घायल हुआ था। समावली की लड़ाई में मोटाराजा की पुत्री धनाबाई ने, जो नागोर के चिरमखान को ब्याही थी, इसकी सहायता की थी। वहाँ गहलोत अचला धरमावत पूरबिया जामणी आदि काम आये थे। १६४० में राजपीपले की लड़ाई में भाटी गोयंददास मानावत का सगा भाई सादूल सोर से जलने के कारण मारा गया। (८९/१३९-१४३)

रायसिंघ चद्रसेनोत संवत् १६४० में काती सुदि ११ को सिरोही में मारा गया था। तत्पश्चात् नवाब ने उदैसिंघ को सोजत दी। उसने परिवार को जोधपुर ही रखने की व्यवस्था की। (८९/१४४)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोटाराजा जब गुजरात को रवाना होने लगा तब आसकरन देवीदासोत को काम सौंपने के लिये कई अधिकारी भेजकर बुलाया पर वह आया नहीं, तब कुंवर सूरजसिंघ खुद बुलाकर लाया और अपने पट्टे के लिये उसने खाली पन्ने पर दस्तखत करवाकर मंगवाये तथा उसे पट्टे में निम्न गांव दिये गये—३४ गांव परगने जोधपुर के, ३१ गांव परगने सोजत के। इस प्रकार कुल ६५ गांव ११४६००) की रेख के दिये। (९०/१४५)

राजा सूरजसिंघ

यह कछवाहों का भानजा था। संवत् १६२७ बैसाख वदि ६ मंगलवार को जन्म हुआ। संवत् १६५१ आषाढ़ वदि १३ बुधवार को बादशाह से मिला और संवत् १६७६ भादवा सुदि ९ को मेहकर में स्वर्ग सिधारा। १६५२ में जोधपुर आकर गद्दी पर बैठा। ८ दिन जोधपुर रहकर गुजरात की ओर चला, रास्ते में सुरतांण से दण्ड वसूल किया। (९०/१४६)

बादशाह एक बार जब काश्मीर में था तब अन्य कोई उमराव पहुँचा नहीं। तब भाटी गोयंददास के साथ कुंवर सूरजसिह एक प्रहर रात गये वहाँ पहुँचा। बादशाह से मुजरा किया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे खासी ड्योढी का चौकी पर रहने का अवसर दिया। इस प्रकार बादशाह उससे खुश था, अतः उदयसिंह के मरते ही उसे टीका दिया। मोटाराजा की मृत्यु हुई उस समय उसने ४ उमरावों को निकाल दिया था तब राजा सूरजसिंघ से कहकर भाटी गोयंददास ने उन्हें रखवाया, ये सरदार थे—राव रामदास ऊदावत, जसवंत मानसिंघोत सोनीगरो, राठौड़ नराणदास पातावत। (९२/१४७)

संवत् १६७४ भादवा सुदि ९ जालोर का गढ़ बादशाह की ओर से राजा सूरजसिंघ को मिला। कई बिहारी काम आये तथा उदैसिंघ के तीन योद्धा-साहणी रायसिंघ, मांगळियौ सरणावत, नायक खान मेहमद मारे गये। सांचोर संवत् १६७४ में लिया। (९४/१४८)

परगना फलोदी संवत् १६२७ में राजा को मिला। सूरजसिंघ की मृत्यु पर सलकसिंघ सूरजसिंघोत को दी गई। पोकरण सातलमेर बादशाह की ओर से ५७५०००) में जागीर में लिखा जाता था, पर वहाँ इनका अमल नहीं हुआ। (९४/१४९)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

एक बार राजा ने जोशी देवदत्त, राव चांदो वीरमोत, तेरवाड़ा-मेरवाड़ा के बारे में अर्ज करने को बादशाह के दरबार में भेजा। वहाँ उनका अमल नहीं हुआ था, इसलिए फैसला करवाना था, परन्तु बात बनी नहीं। यह परगना ६३,०००) में इनके नाम लिखा हुआ था। लूणा दासावत उसके थाने पर था, वह वहीं काम आया। संवत् १६७४ में मु० राम के हवाले सांचोर के शामिल हुआ। गुजरात के बड़नगर में मु० जैमल जेसावत था। खेरालू गुजरात का पहले भा० जैमल मानावत को था फिर संवत् १६७२ में मु० रामा को सौंपा। गांव ११० का मुकाता रु० ४०,०००)। रतलाम भाटी ईसरदास हरदासोत को रु० १,००,०००)। पीसागण सांवळदास किलांणदासोत के पटे २०,०००)। रजणी गुजरात की भैरवदास हाकिम। दक्षिण में बौरगा तथा राजौरो की जागीर थी।

(६४-६५/१५०)

राजा सूरजसिंघ पूरा पंचहजारी नहीं हुआ। संवत् १६७५ काती सुदि १५ को जब वह बीमार हुआ तो ५०० सवारों के ईजाफे का हुक्म फरमान में आया था, पर जागीर नहीं पाई। (६५/१५१)

१६७६ भादवा सुदि ६ को जब सूरजसिंघ का स्वर्गवास महकर के थाने पर हुआ तब उसकी रानी अहाड़ी और कुंवर सबळसिंघ वहाँ थे। श्री गजसिंह को मनसब में बादशाह ने जोधपुर, जेतारण, सोजत, सिवाना दिये थे। सबळसिंघ को दाम २,७०,००० में फलोदी दी गई। राजा गजसिंघ जब बुरहानपुर आया तो उसने रानी अहाड़ी को समझाया कि मोटाराजा की मृत्यु पर सूरजसिंघजी ने किसनसिंघ को जो बंट दिया था उतना बंट मैं सबळसिंघ को दे रहा हूँ तुम लोग व्यर्थ में दिल्ली क्यों जाते हो, पर वह सबळसिंघ को लेकर दिल्ली गई। राजा भींव से बादशाह ने इस बाबत राय ली तो उसने और कुछ हक नहीं बताया, तब बादशाह ने रु०-२०,००० दिलवाये। (६५-१५२/१५३)

सोजत संवत् १६५६ में सकतसिंघ उदैसिंघोत को हुई। एक साल रही। फिर राणे अमरसिंघ ने मालपुरा लूटकर गांव सेखावास डेरा किया तब उतरी। जैतमालोत को सोजत हुई तब वह छापले आया। भा० मान ने राजाजी के बिना आदेश ही अमल दे दिया (अधिकार करवा दिया) तब राजाजी ने भण्डारी माना के साथ फौज भेजी। रा० भाण ने ६०० सवारों से रात को हमला किया था।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फिर राठौड़ सघतसिंघ आया। संवत् १६६४ में सोजत करमसेण उग्रसेनोत को हुई। संवत् १६६५ में फिर सूरजसिंघ को हुई तब भा० गोयंददास मानावत छापले आया। करमसेन को सोजत मोहबत खान ने इसलिये दिलवाई थी कि राणा पर चढ़ाई करने को जब उसे भेजा, तो राणा के बहुत से लोगों को मारवाड़ में शरण मिल गई थी। जब सूबा अब्दुलाखान को हुआ तब भाटी गोयंददास ने उससे मिलकर ११ थानों पर अधिकार किया व सोजत ली।

(६५-६६/१५४-१५६)

संवत् १६५८ में जेठ वदि ७ को दक्षिण में अंबरचंपू और राजाजी के युद्ध हुआ तब राजाजी की विजय हुई। इसमें उनके मुख्य सरदार भा० वैरसी रायमलोत, राव भाण संसारचंदोत आदि काम आये। इस विजय के उपलक्ष में बादशाह ने आधा मेड़ता दिया। संवत् १६६३ राव भोपत उदैसिंघोत को पंवार सादूळ मालदेवोत ने मारा। संवत् १६६८ में पंवारों का बैर समाप्त हुआ। (६६/१५६)

जब महाराजा सूरसिंह दक्षिण की चढ़ाई पर था तब भा० गोयंददास ने बादशाह से अर्ज करके उसे दरबार में बुलवाया। बादशाह ने राजाजी को अपने देश जाने की स्वीकृति दी। उन दिनों गोयंददास मेहकर थाने पर रहता था। सूरजसिंह ने बादशाह से निवेदन किया कि मैं अपने राज्यकार्य की पूरी जानकारी नहीं रखता। भाटी गोयंददास के बिना मैं अपने राज्य को जाकर क्या करूं, क्योंकि वही मेरे सब प्रशासन का आधार स्तम्भ है। इस पर बादशाह ने गोयंददास को भी दरबार में बुलाया और आधा मेड़ता तथा जैतारण के परगने जागीर में और दिये। संवत् १६६१ आषाढ़ बदि ८ को ये जोधपुर आये। (६७-१५७)

संवत् १६६२ बादशाह जहांगीर ने राजाजी को गुजरात का सूबा दिया। ये रवाना होकर मांडवा के पास पहुँचे, वहाँ अपनी फौज को दो भागों में विभक्त कर मांडवा पर चढ़ाई की। एक अणी (टुकड़ी) का सेनानायक गोयंददास था और एक का सूरजमल जैतमालोत। वहाँ इन्होंने गांव लूटे और दुश्मन भाग खड़े हुए। अनजान जगह होने पर भी इन्होंने पीछा किया, फिर झाड़ा केतू पर मुकाबला हुआ। राजाजी के सूरजमल जैतमालोत चांपावत सहित २३ योद्धा काम आये। (६७-६८/१५८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोसी चंडू दामोदर के टीपणे में भी इन प्रमुख घटनाओं की संक्षिप्त विगत है। (९९/१५९)

संवत् १६६९ में भाटी सुरताण मानावत को राठौड़ सुंदरदास, सूरसिंघ रामदासोत, नरसिंघदास कल्याणदासोत, राठौड़ गोपालदास भगवानदासोत ने मिलकर मार डाला। उसने मरते-मरते सुंदरदास और सूरसिंघ को मार डाला। गोपालदास घायल होकर निकला, जिसे भा० गोयंददास और कुंवर गजसिंघ ने मारा। (९९/१६०)

संवत् १६७१ जेठ सुदि ९ को अजमेर में किसनसिंघ उदैसिंघोत राठौड़ करन सूरजसिंघ के डेरे पर आये और भाटी गोयंददास को मारा। राठौड़ किसनसिंघ और करन भी वहीं मारे गये। राजाजी के १८ लोग मारे गये, कई घायल हुए, २६ आदमियों सहित किसनसिंघ मारा गया। (९९-१०१/१६१)

यह घटना होने के पश्चात् एक बार बादशाह ने राजाजी को देश जाने की छुट्टी दी। दो महीने रहने के बाद उन्हें बुला भेजा। अजमेर पहुँचने पर बादशाह ने उन्हें आश्वस्त कर दक्षिण की चढ़ाई पर भेजा। उनके डेरे पीसांगण हुए। कुंवर गजसिंघ तथा राजसिंघ खींवावत को वापस देश भेजा। काम का जिम्मा लूणा को दिया। (१०१/१६२)

भण्डारी माना रायसिंघ चंद्रसेनोत के पास सोजत में था। १६४० में जब जोधपुर आया, तो इसे देश का काम सौंपा गया था। १६५१ के लगभग वलूंदे होता हुआ बीकानेर गया, फिर चांवड जाकर राणा से मिला। १६५२ में जब सूरसिंघ गद्दी पर बैठा, तो उसने भण्डारी लूणा को भेजकर उसे सादर बुलाया और देश का काम सौंपा। (१०१-१०२/१६३-१६४)

संवत् १६७२ में नागोर परगने के तीन गांव दबा लिये गये थे। फिर नागोर आसपखान को हुआ तब भण्डारी लूणा नागोर जाकर गजसिंघपुरा सालाना ३,१००) के मुकाते पर ले आया तथा आसोप के तफे के शामिल कर लिया। (१०२/१६५)

संवत् १६७४ को भादवा सुदि ९ कंवर गजसिंघ ने जालोर का गढ़ जीता। राव दयालदास गोपालदासोत, भा० गोपालदास आसावत को वहाँ का फौजदार किया। सिरोही के राव राजसिंघ सुरताणोत ने इनसे बात की कि देवड़ा

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पृथ्वीराज देवल के पहाड़ों में घुसा बैठा है, इसे निकालने में सहायता दें तो राजाजी को कोरटा १४ गांवों से दे देंगे। इन्होंने पृथ्वीराज को निकाल दिया। वार्षिक आय १३,०००) आई। अगले वर्ष आय नहीं दी। १६७५ में १४ गांव कोरटा सहित दिये। (१०२-१०३/१६६)

भाटी गोयंददास के मारे जाने के पश्चात् सूरजसिंह ने रावळ तेजसी दूदावत से ३ गांव, हाथी १ तथा रु० ५००० लिये थे। भाटी गोयंददास मानावत राजाजी के बदले दक्षिण में रहा और राजाजी दिल्ली रहे। उस समय गोलकुंडा का बादशाह अपनी बेटी का डोला शाहजादा दानशाह के लिये भेजना चाहता था, पर बीजापुर दौलताबाद के बादशाह ने रोक रखा था तब गोयंददास जाकर डोला ले आया। १६५८ के लगभग वह मुजरे का अधिकारी हुआ। (१०३/१६७-१६८)

जोशी देवदत्त पोकरणा बड़ा आदमी था। सूरसिंघ ने उसे देश की दिवानगी १६७२-७३ में दी थी। वह रु० ६-७ हजार की तनख्वाह पाता था। दो वर्ष तक गजसिंह के समय में भी रहा। (१०३/१६९)

संवत् १६६९ में कुंवर गजसिंघ जोधपुर था, गोयंददास नाडुल के थाने पर था। राणा अमरसिंघ अमराई के पहाड़ों में था। राणा ने २००० सवार भेजकर अहमदाबाद से आगरे जाती हुई कतार को लूटने का प्रयास किया, परन्तु कतार को खबर हो जाने से वह निकल गई। फौज दूनाड़े के पास आकर लौटने लगी तब भाटी गोयंददास ४०० सवारों से आउवा के पास उन पर चढ़ आया। राणा के २००० आदमी भाग गये। (१०३-१०५/१७०)

राजा गजसिंघ

राजा गजसिंघ कछवाहों का भानजा था। संवत् १६५२ काती सुदि ८ गुरुवार का जन्म। संवत् १६७६ आसोज सुदि ६ गुरुवार को मेहकर में गद्दी का अधिकारी हुआ। संवत् १६९४ जेठ सुदि ३ को आगरे में स्वर्गवास हुआ। प्रारम्भ में मनसब ३ हजारी जात २००० सवार का पाया।

१. गढ़ जोधपुर तफा १९ से रु० १,९९,१२५) में।
२. सोजत का परगना रु० १,२५,०००) में।
३. जैतारण का परगना रु० ९८,५०८) में।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४. सिवाने का परगना रु० ३७,५००) में।

५. सातलमेर पोकरण लिखी गई पर अमल न हुआ रु० १५,०००) में।

६. तेरवाड़ा मेरवाड़ा गुजरात का रु० ६३,२८६) में।

तत्पश्चात् समय-समय पर ये परगने और हुए—

१. जालोर संवत् १६७७ में।

२. सांचोर संवत् १६७९ में।

३. फलोदी १६७९ में।

४. मेड़ता संवत् १६८० में।

५. जलगांव बैराड़ का १६८१ में।

सूरजसिंघ की मृत्यु पर इतने परगने तागीर हुए थे— फलोदी, जालोर, सांचोर व मेड़ता। (१०५-१०६/१७१)

दक्षिण के सूबे के लोग ३०,००० फौज से एक बार चढ़ आए तब सब लोग कोट में घुस गये। गजसिंह ने बाहर आकर जबरदस्त युद्ध किया। दुश्मन भाग गये। उस समय उसकी मदद को कोई नहीं आये यद्यपि नवाब खानखाना आदि सभी वहीं थे। प्रहर २ तक युद्ध चला। बाद में सभी उमरावों ने आकर उसे दलथंभन की उपाधि दी। १६७७ में शाहजादा खुरम दक्षिण में आया, इसने उसकी आवभगत की तब प्रसन्न होकर इसे जालोर का परगना दिया। गोपालदास आसावत व मु० जैमल को जालोर का हाकिम बनाया गया। जब शाहजादे ने इन्हें देश जाने की छुट्टी दी तो इसने जालोर के उचित प्रबंध के लिये सांचोर भी मांगी तब सांचोर उसे १६७९ में प्राप्त हो गई। संवत् १६७९ में वैसाख में वह जहांगीर से चाटसू के पास मिला। (१०६-१०७/१७२)

संवत् १६७९ में शाहजादा खुरम बादशाह से विमुख होकर उस पर चढ़ आया। महाबत खान ने बादशाह का पक्ष खूब मजबूत किया। महाबत खान के साथ गजसिंघ जब चढ़ाई पर जाने लगा, तो उसने सिफारिश करके फलोदी इसे दिलवाई। (१०७-१०८/१७३)

संवत् १६८० में अजमेर सूबे के सभी परगने परवेज की जागीर में थे और गजसिंघ उसकी अधीनता में था। इस समय मेड़ता सैयदों को जागीर में दिया

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जाने को था परन्तु राजसिंघ के मारफत कहासुनी होने पर मेड़ता शाहजादे की तरफ से गजसिंघ को जागीर में दे दिया गया। शाही मनसब में नहीं लिखा गया। कान्ह खींवावत तथा भंडारी लूणा ने आकर मेड़ते में राज्य-दस्तूर किया। (१०८/१७४)

संवत् १६८१ में टूस नदी पर शाहजादे परवेज और खुरम के बीच युद्ध हुआ। गजसिंघ हरोल में था उसने भीम सीसोदिये को मारा और विजय पाई। हजार सवार इस समय इजाफा होने पर यह पंचहजारी हुआ। दक्षिण में जलगांव जागीर में पाया। भा० सिंघ रूपसीवोत वहां फौजदार नियुक्त हुआ। (१०८/१७५)

संवत् १६८२ में खुरासानियों के सिखाने से बिरहानपुर महाबतखान से तागीर कर लिया गया और उसे दरबार में बुलाया तथा परवेज आदि सब सरदारों को आदेश भेजा कि कोई इसके साथ न आवे। सभी लोग बड़े पसोपेश में पड़ गये। गजसिंघ अपनी हवेली में ही रहा। फिदाईखान जो इस कार्य को अमल में ला रहा था जब गजसिंघ से मिला तो उसने कहा कि मैं यहीं रह रहा हूँ पर महाबतखान हमारा नुकसान करवायेगा। तब फिदाईखान ने उसे आश्स्वत कर रा० राजसिंघ को अपने साथ लिया और बादशाह के सामने गजसिंघ की वफादारी की बड़ी तारीफ की। दीवान खोजा अवलहुसेन ने बताया कि महाबतखान ने हिमायत करके गजसिंघ को मेड़ता दिलवाया था, शाही मनसब में वह नहीं है इसलिये जब्त कर लिया जाय, परन्तु फिदाईखान ने कहा-सुनी करके २,५०,०००) में मेड़ता राजा को दिलवा दिया। राजसिंघ यह काम करवा कर जोधपुर लौटा। (१०९/१७६)

संवत् १६८३ में परवेज मर गया। महाबतखां और बादशाह में वैमनस्य बढ़ा। महाबतखान बागी हुआ। उस पर फौज चढ़ी तब उसमें कुंवर अमरसिंघ और राजसिंघ भी साथ थे। पर बाद में जोधपुर आ गये, तब नागौर की छ पटी सूरघसिंघ बीकानेर वाले को हुई। (११०/१७७)

संवत् १६८४ कार्तिक वदि १३ को जहांगीर का स्वर्गवास हुआ। जूनेर से महाबतखा और शाहजहान अजमेर आये तब महाबतखान ने गजसिंघ से नागौर उसे दिलवाने को अर्ज की। नागौर उसे देदी गई। शाहजहां जूनेर से उदयपुर आया, राणा करन मिला और जगतसिंघ को साथ भेजा। शाहजहां

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दो दिन अजमेर रहा फिर रणथम्भोर के पास से होता हुआ आगरे आया। तखत पर बैठा। (११०-१११/१७९-१८०)

जहांगीर की मृत्यु होने पर गजसिंघ तथा अन्य हिन्दू नवाब आदि विदा लेकर अपने-अपने घर चले आये। रा० सकतसिंघ की लड़की लीलावती बाई शाहजहां के साथ थी। उसे उसने राजा गजसिंघ को आश्वस्त करने को भेजा। लीलावती जोधपुर आई और राजा को आश्वस्त किया तथा बादशाह की ओर से दी हुई वस्तुएँ उसे प्रदान कीं। ८ दिन बाद गजसिंघ ने आगरे के लिए अपने सरदारों सहित कूच किया। दरबार में पहुँचने पर बादशाह ने उसका बड़ा सम्मान किया। (१११/१८१)

शाहजादा खुरम दक्षिण को जारहा था तब चांदा की घाटी के पास माल से भरे शाही ऊँट लूट लिये गये थे। शाहजादे ने मुहमद मुराद को इसकी तलाश के लिए बदनोर भेजा। उसने लगभग ४००० आदमियों को शामिल किया तथा पूछ-ताछ प्रारम्भ की, परन्तु पता नहीं लगा। फिर अबू को जाहजादे ने इस काम के लिए भेजा। उसने पंवार सादूळ तथा राठौड़ नरसिंघदास का विश्वास अर्जित कर कुछ सुनारों आदि को पकड़ा तथा मेड़ता में आकर डेरा किया। भा० माना से बातचीत करके रु० २०,०००) मानपुरा के वित्त आदि की वसूली के निश्चय किये थे, परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी अबू के रुपये हाथ नहीं लगे। फिर उसने नीबोल के बोहरों को पकड़ा। रा० किशनसिंह खींवावत को जब यह खबर मिली तो वह तुरन्त जैतारण से चढ़ा। मुगदड़े के पास अबू से युद्ध हुआ, संवत् १६७८ जेठ सुदि ९ को। रा० किशनसिंह सहित ७ सरदार और ८ चाकर काम आये, कुछ घायल हुए। अबू के १५-२० आदमी काम आये। वह ८ दिन मेड़ते में रहा फिर अजमेर होता हुआ अपने घर मेरठ की ओर चला गया। अबू के लड़के को भी जाने दिया।

(११२-११५/१८२-१८३)

जब बादशाह गद्दी पर बैठा और गजसिंह वहाँ उपस्थित हुआ उस समय आगरे के आस-पास के पंवार भोमिये बड़ा नुकसान करते थे। उन्हें दबाने के लिए मुगल सरदार की फौज ने चढ़ाई की तब रा० भगवानदास वाघोत को काफी सवार देकर उसके साथ भेजा। १६८४ आषाढ़ सुदि ८ को गढ़ घेर लिया गया। आग लगा दी गई। जलती हुई आग में एकाएक हमला करने से

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अनेक लोग भगवानदास बाघोत सहित काम आये। हाडे साथ थे उनके भी ६०—८० आदमी काम आये। गढ़ यों ही रहा तब पा० बलू ने चढ़ाई करके पंवारों को मारा। (११५-११६/१८४-१८६)

संवत् १६६३ काती सुदि १५ जालोर के परगने में रा० किशनसिंह जसवंतोत काम आया था। उसे भा० जगनाथ लूणावत के साथ देवल वणवीर धारावत को परास्त करने भेजा था। वणवीर के पास अच्छी फौज थी, उसने पहाड़ों की ओट ली। एक दिन संध्या समय जब राठौड़ों की फौज पहाड़ से उतर रही थी तब झगड़ा हुआ उसमें किसनसिंघ और ३ अन्य आदमी मारे गये, कई घायल हुए। कई दिन युद्ध चलता रहा। घेरा मजबूत हो गया तब सिरोही वालों ने आदमी भेजकर वणबीर को सुलह करने की राय दी। वह १५ आदमियों से राठौड़ जसवंत के डेरे मिलने आया, वहाँ वणवीर को मार डाला और गढ़ पर कब्जा किया। (११६-११८/१८७-१९०)

संवत् १६९० में बलोच मुगलखान, समायलखान के लोगों ने फलोदी के दो गांव कोटड़ा के पास लूटे। मु० रूपसिंह बाहर चढ़ा, आसा के तालाब के पास झगड़ा हुआ, भा० सकतसिंह खेतसिंघोत आदि काम आये।

(.१८-११९/१९१)

संवत् १६९३ आसोज वदि ९ बलोच हैदरअली फतेअली फलोदी पर चढ़ आये। कुंडल को लूटकर खूब मवेसी ले गये। सोना रुपया आदि भी ले गये। इन्होंने घटियाला आदि ग्राम भी लूटे, वहाँ अनेक लोग काम आये।

(११९/१९२-१९३)

संवत् १६९४ काती वदि १२ मुदफरखान मदा का लड़का फलोदी पर चढ़ आया, वहाँ भा० जसवंत सूजमलोत आदि मारे गये। उस समय मु० जगनाथ फलोदी का हाकिम था। संवत् १६९४ में नैणसी को फलोदी का हाकिम राजा ने बनाया और वह स्वयं शाही दरबार को चला। नैणसी फलोदी को गया और वाप के राव की सहायता से बलोचों का खूब पीछा किया। वीकूंपुर के राव ने भी सहायता की। आखिर मुगलखान को मार डाला, बलोच ३०० मारे गये। युद्ध-भूमि में खोज की गई तो मुगलखान की लाश मिली। वह ३०-४० वर्ष का सुन्दर जवान था। (११९-१२३/१९४-१९८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महाराजा जसवर्तासिह

महाराजाधिराज जसवंतसिंह सीसोदियों का भानजा था। संवत् १६८३ माह वदि ४ का जन्म। संवत् १६९४ आषाढ़ वदि शुक्र को बादशाह शाहजहां ने आगरे में टीका दिया। प्रारम्भ में मनसब चार हजारी चार हजार सवारों का दिया। जागीर के परगने—जोधपुर, सिवाना, मेड़ता, सोजत, फलोदी, सातलमेर मिले। जालोर और सांचोर तागीर हुए। जैतारण को प्राप्त करने का प्रयत्न भींव कल्याणमलोत ने इस समय किया था, परन्तु राजसिंघ खींवावत ने प्रयत्न करके राजा जसवंतसिंघ को ही दिलवा दी। (१२४/१९९-२००)

संवत् १७०२ में हजार सवारों की वृद्धि हुई तब मनसब पंच-हजारी जात, पाँच हजार सवार उनमें एक हजार दो अस्पह हुआ। देश के परगनों के अतिरिक्त रेवाड़ी और मिला। १७०३ में ५०० सवारों की वृद्धि हुई और गर्जासिहपुरा की जागोर भी प्राप्त हुई। (१२४-१२५/२०१)

संवत् १६९६ को जब बादशाह काश्मीर को जा रहा था तो जसवंतसिंह को देश जाने की इजाजत दी और हजार सवारों की मनसब में और वृद्धि हुई। जैतारण रुपये २,५०,०००) में राजाजी को दी। संवत् १६९७ पोष वदि ५ राजसिंघ खींवावत का देहान्त हुआ। (१२५/२०२)

संवत् १६९७ चैत्र में महेसदास सूरजमलोत को प्रधान बनाया। यह लाहोर में २७०० सवारों से बादशाह को सम्मान देने उपस्थित हुआ, तब १००० सवारों की मनसब में और वृद्धि कर दी गई, जिसके पेटे नकद रकम राजाजी को मिलती रही। (१२५-१२६/२०३)

संवत् १७०१ में बादशाह ने राजाजी को रेवाड़ी का परगना दिया रु० २,९२,६२५) में। यह संवत् १७१५ में तागीर होकर राजा जैसिंघ को दिया गया था। सि० पृथ्वीमल वहाँ हाकिम था। (१२६/२०४)

संवत् १७०५ में हजार सवारों का इजाफा हुआ जिसमें सूबे आगरे का परगना हीडवाणा मिला। संवत् १७१४ में यह परगना तागीर हुआ।

संवत् १७०७ में अकाल पड़ा तब कर के रूप में केवल पाताल-भोग लिया गया। संवत् १७०९ में हजार सवारों का इजाफा हुआ, तब पंचहजारी जात पांच हजार सवार दो अस्पह हुए। (१२६/२०५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १७०९ में राजाजी को जागीर में और वृद्धि हुई। सूबा अजमेर सरकार रणथम्भोर का परगना मलारणा उन्हें दिया गया। मुहता नैणसी को फरमाना देकर वहाँ भेजा गया। संवत् १७१२ में जब जालोर दी तब मलारणा तागीर कर दिया गया। (१२६/२०६)

संवत् १७११ में हजार सवारों का इजाफा हुआ। तब मनसब ६ हजार जात ६ हजार सवारों का हुआ। राणा राजसिंघ से उसी समय ४ परगने तागीर किये, तब वदनोर राजाजी को दी। राव नाहरखान राजसिंघोत वहाँ राज्याधिकार का दस्तूर करने को गया। संवत् १७१४ में राणा के परगने पुनः लौटाये गये तब वदनोर तागीर हुई। संवत् १७११ भोरूंदा तथा संवत् १७१२ में रोहतक जागीर में शामिल हुए। रोहतक में हरीदास राघवदासोत को हाकिम बनाकर भेजा गया था। यह जगह अशान्तिपूर्ण थी। अतः संवत् १७१४ में जब हजार सवारों का इजाफा हुआ, तो यह जगह छोड़कर मालवा का परगना देपालपुर लिया। संवत् १७१३ में मलारणा के एवजाने में जालोर पाई। जालोर रतन महेशदासोत के पट्टे में थी, परन्तु उसे इससे अच्छा आर्थिक लाभ नहीं हो रहा था। इसलिए जब उसने बादशाह से अर्ज की तो बादशाह ने राजाजी के मना करने पर भी मलारणा हटाकर जालोर लिखदी। मुं० सुन्दर को रेवाड़ी से हटाकर जालोर हाकिम बनाया। उसने सींधलों को यहाँ कब्जे में किया। नागौर परगने के १० गांवों की पट्टियें भी राजाजी के अधिकार में आईं। संवत् १७१५ में यह इनसे तागीर कर बीकानेर वालों को औरंगजेब ने दीं। संवत् १७१५ में जब इनका मनसब शाहजहां ने सप्त-हजारी किया और उज्जैन को विदा हुए तब उज्जैन, देपालपुर तथा नागौर की दो पट्टी जागीर में और जोड़ी गयीं।

(१२७-१३२/२०७-२०९)

संवत् १७१४ भादवा सुदि १० को जहानाबाद में शाहजहां बीमार हुआ। मृगशिर वदि ५ आगरे पहुँचे। संवत् १७१५ पोष वदि ७ को राजाजी को बादशाह ने उज्जैन विदा किया तब हजार सवार इजाफे करके इनका मनसब सात हजारी जात सात हजार सवारों का किया। ५ हजार सवार दुअस्पह और २ हजार सवार इक अस्पह। इनके दाम ११,००,००,००० हुए।

(१३३-१३४ / २११)

संवत् १७१५ को भादवा सुदि २ बादशाह लाहोर गया, राजाजी को

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जहानाबाद विदा किया। एक महीने बाद सुल्तान महमूद आगरा से जहानाबाद आया। कुछ दिन बाद जब बादशाह जहानाबाद के कोट में दाखिल हुआ तो राजाजी ने उसका मुजरा किया। फिर किसी ने गुप्त सूचना राजाजी को दी कि उनके साथ धोखा होने वाला है तब वे बीमारी का बहाना कर अपने डेरे पर ही रहे। (१३४-१३५ / २१२-२१३)

फिर यह खबर आई कि सूजा चढ़ाई कर रहा है। तब बादशाह पूर्व की ओर चला। पोष वदि ७ को राजाजी भी पूर्व को चले। माह वदि ४ शाहजादा सूजा से लड़ाई हुई। राजाजी फौंज को दाहिनी ओर रखे गये। हाडा भोंवसिंघ राजाजी की दाहिनी ओर कुछ दूरी पर था। सुल्तान मुहमद ७००० फौज से हरोल में था। माघ वदि ५ को एक प्रहर रात बाकी थी तब जसवंतसिंहजो वहाँ से जबरदस्ती करके निकले और लूटपाट की। अदेही जायल मौजाबाद होते हुए भोरूंदा पहुँचे। वहाँ राठौड़ रुघनाथ सुंदरदासोत ने उनकी मेहमानी की। लांपोळाई में नाहरखान व नैणसी पांवों लगे। नैणसी को मेड़ता रवाने किया और स्वयं जोधपुर आये।

(१३५-१३६ / २१३-२१५)

फागुन वदि ६ को राबड़ियाक के लिए रवाना हुए। जब बीलाड़े पहुँचे तो दाराशिकोह का पुत्र सपरशकोह राजाजी से आकर मिला। राजाजी उसके साथ नहीं गये और उसे विदा दी। चैत्र वदि १२ को आगोळिया आसा औरंगजेब से दिलासा का फरमान ले आया। राजा जैसिंघ का भी कागज लाया। राजाजी ने आगे कूंच किया। दाराशाह का संदेश आया कि वह राजाजी से आकर मेड़ते में मिलेगा, पर मियां फरासत को भेजकर राजाजी ने उसे मना करवा दिया। इसी समय बादशाह का फरमान आया कि तुम्हें गुजरात का सूबा दिया जाता है, दाराशिकोह की सहायता न करें। राजाजी जोधपुर लौटकर २।। घड़ी ठहरे और फिर गुजरात को रवाना हुए। (१३६ / २१६)

राजा जैसिंघ की मेहमानी के लिए राव महेशदास तथा मुंहता नैणसी को भेजा। बहादरखान को रु. १०,००० मेहमानी के जैसिंघ ने दिलवाये। जैसिंघ तथा बहादरखान से राजाजी सैणे ग्राम में मिले। इसी समय जोधपुर से सूचना आई कि २०००० भाटियों ने पोकरण घेर ली है। (१३७/२१८)

संवत् १७१५ वैशाख वदि ३ को राजाजी विवाह करने को सिरोही गये

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

और राव राजसिंघ तथा मु० नैणसी आदि को पोकरण की सहायतार्थ भेजा। नैणसी जोधपुर लौटकर आया, ४ दिन ठहरकर युद्ध-सामग्री की तैयारी की तथा जागीरदारों को ससैन्य रास्ते में मिलने को लिखा। अनेक सरदार अपने सैनिक लेकर उपस्थित होते रहे। ४००० आदमी पोकरण पहुँच गये। आसणीकोट आदि जैसलमेर के गांव भी लूटे। इस प्रकार लम्बा संघर्ष चला। इतने में राजा करन बीकानेर वाला जैसलमेर शादी करने को जा रहा था, उसका डेरा कीरड़े ग्राम में हुआ। उसने नैणसी आदि को बुलवाया तब ये राव राजसिंह सूरजमलोत सहित वहाँ उपस्थित हुए तथा १०००) मेहमानी के नजर किये। फिर करन ने बातचीत करके इन्हें विदा कर दिया। जैसलमेर से लौटते समय भाटियों के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर रामदेवरे में दोनों पक्षों में समझौता करवा दिया और उन्हें भोजन साथ करवाया। (१३८-१४४/२१९-२२६)

संवत् १७१५ में शाही दरबार के वकील मनोहरदास ने मनसब का विस्तृत हिसाब पेश किया। (१४४-१४७/२२७-२२८)

संवत् १७१७ भादवा सुदि ४ को एक करोड़ दामों का इजाफा हुआ उसका विस्तृत हिसाब। (१४७-१४८/२२९)

संवत् १७१८ को मृगशिर वदि ८ गुजरात का सूबा तागीर हुआ। राजाजी १७१८ को पोष वदि ३ गुजरात से रवाना होकर भड़ोंच, सूरत होते हुए औरंगाबाद में राजा जैसिंघ की हवेली में ठहरे। संवत् १७१९ में छावणी नयी हवेली जाकर अमील उमराव पर हमला किया। उसका लड़का अवलफतै काम आया। नवाव से सूबा तागीर होकर राजाजी को दिया गया। १७२० आषाढ़ सुदि १५ को सूबे का दीवान किया गया। कार्तिक वदि ११ को पूना से कुडाणा रवाने हुए। गढ़ के दो बार सुरंग लगाई, परन्तु सफलता नहीं मिली। (१४९-१५०/२३०-२३२)

राजाजी ने जब गुजरात का सूबा तागीर हुआ और दौलतावाद का हुक्म हुआ तब सावणू फसल की आमदनी राजाजी को ही मिली; तब पं० गंगादास आदि आमदनी वसूल करने को रखे गये। उस समय जागीर की आमदनी का विस्तृत हिसाब शाही दरबार में हुआ। (१५०-१५६/२३४-२३५)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १७१६, जब राजाजी गुजरात के सूबे में थे तब कुंवर को दिल्ली दरबार में भेजने का विचार किया। राव भींव गोपाळदासोत, मु० सुंदरदास आदि को इस कार्य के लिए जोधपुर को विदा किया। कुंवरजी पोष में जोधपुर से रवाना हुए। सोरभ में जाकर कुंवरजी बादशाह के पांवों लगे। संवत् १७१७ में कुंवरजी को बादशाह ने हाथी, सिरपाव, किलंगी आदि देकर जहानाबाद से विदा किया। मृगशिर सुदि १० को गढ़ जोधपुर पहुँचे।

संवत् १७१९ में वकील मनोहरदास ने शाही दरबार में राजाजी के नाम से निकलने वाली रकम का विस्तृत हिसाब भेजा। (१५६-१५८/२३६)

संवत् १७२१ में फिर मुतालबे का विस्तृत हिसाब वकील मनोहरदास ने शाही बहियों के आधार पर पेश किया। उसमें सभी प्रकार की आमदनी बताई गई। (१५८-१६२/२३७)

राजाओं ने जोधपुर पर राज्य किया उसका हिसाब—

	वर्ष	मास	दिन
राव जोधा	३०	—	—
सातल	३	—	—
सूजा	२४	—	—
राव गांगा	१६	५	१३
राव मालदे	३०	५	८
राव चंद्रसेन	१८	१	०
	(बीच में मुगल अधिकार)		
राजा उदयसिंघ	११	११	०
राजा सूरजसिंघ	२५	२	११
राजा गजसिंघ	१८	७	२३

राजा जसवंतसिंह १६९४ आषाढ़ वदि ७ को गद्दी पर बैठा। अलग-अलग राजाओं के समय परगनों की शाही रकम का हिसाब। (१६२-१६४/२३८-२३९)

परगना जोधपुर के १४ तफों के गांवों की संख्या १७१९, मु० नैणसी तथा पं० नरसिंघदास ने कानूनगो महेशदास को तफावार लिखवाई।
(१६४/२४०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुछ तफे देशी फहरिश्तों में हैं परन्तु शाही दरबार में नहीं लिखे जाते। · तफे संवत् १७१८ में हवेली में लिखवा दिये गये। परगने जोधपुर के खालसे की आमदनी का हिसाब संवत् १६९२ से १७२० तक का प्रतिवर्ष के अनुसार। फिर संवत् १७११ से १७२० तक का सालीना विस्तृत हिसाब। तत्पश्चात् तफा वार हिसाब। (१६०-१७०/२४१)

संवत् १७१४ भाद्रपद सुदि ७ बादशाह शाहजहां बीमार हुआ तब साम्राज्य का सारा कार्यभार दाराशिकोह पर था। राजा जैसिंघ को हजार सवारों का इजाफा देकर पूर्व की ओर शाहजादा सूजा पर भेजा। पोष वदि ७ को जसवंतसिंह को उज्जैन की तरफ औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध भेजा। जसवंतसिंह के सवार २३,२४७ तथा मनसबदार २६६ बादशाही थे। मनसबदार व सवारों का विस्तृत व्यौरा। (१७०-१७६/२४२-२४४)

संवत् १७१४ वैशाख वदि ७ खबर आई कि मुरादबक्स बढ़ा चला आ रहा है, तब महाराजा जसवंतसिंह ने उज्जैन से चलकर क्षिप्रा नदी के उस पार डेरे डाले। ३ दिन रुककर वहाँ से १० कोस खाचरोद तक गये। वैशाख वदि ८ को चोरनाराइए गांव गंभीर नदी पर डेरा किया। उज्जैन से १।। कोस पर धरमतपुरा स्थान पर वैशाख वदि ९ को डेढ़ घड़ी दिन चढ़ने पर औरंगजेब से युद्ध हुआ। बादशाही फौज हारी। महाराजा के जितने आदमी काम आये उनकी सूची—९ चांपावत, ६ कूंपावत, ६ ऊदावत, ४ जैतावत, ५ करमसोत, ६ मेड़तिया, ५ जोधा, ४ भदावत, २ ऊहड़, ४ पातावत, १ रूपावत, १ पुरबिया, १ महेचा, १ भूंभणिया, ४ भींवोत, १ बालावत, २१ भाटी, ३ सोनगरा, ६ चहुवान, ६ ईंदा, २ भायल, १ मुंहता, १० सुजानसिंह केसरीसिंघोत के चाकर, १८ खवास पासवान [३ साहणी, ४ चौहाण आबदार, ४ पंवार चीतीवांन, १ वेस, २ सोलंकी हीड़ागर] ४ दफतरी, ४ ब्राह्मण, १० दूसरे हीड़ागर।

अन्य उमरावों के आदमी काम आये—

राठौड़ करन सुजानसिंघोत के राजपूत ६, उदैभाण भगवानदासोत के ९, राव जगराज कुंभकरनोत का १, बछराज दलपतोत के २, राठौड़ राजसिंघ भगवानदासोत का १, पृथ्वीराज दलपतोत के ७। (१७६-१८६/२४५)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १७२१ में जोधपुर शहर में जो दूकानें हैं, वे पं० हरकिसन को आदेश देकर लिखवाई गईं—

२१ दूकानें नागौरी दरवाजे पर।

२६५ नागौरी दरवाजे के अन्दर आडे चौहटे तक।

[१३६ दरवाजे के अन्दर आते समय दाहिनी ओर।

१२६ दरवाजे के अन्दर आते समय बायीं ओर।]

२३ जालोरी दरवाजे के वाहर दूकानें हैं।

४०५ जालोरी दरवाजे के अन्दर पदमसर तालब तक।

१८ मढी में।

४ रातानाडा के दरवाजे के बाहर।

३६ दरवाजे के अन्दर गांगादास की प्रोल तक।

६ महावीरजी के मन्दिर के पीछे।

३ सिलावटों की गली में।

४ मूलनायकजी के मन्दिर के नीचे।

१५ गधियों की गली में दरवाजे तक।

१५ दरजियों की दूकानें हैं।

———————

८१५ कुल दूकानें।

संवत् १७२१ में श्री कुंवरजी के हुक्म से पं० हरकिसन ने शहर की धरती नापी—

डोरी	पांवड़ा	
६५	१३००	बाग कागा नागौरी दरवाजे से कुंज तक।
८५	१७००	बहूजी सरूपदे का तालाब नागौरी दरवाजे से।
१००	२०००	साहणियों वाली तलाई, शेखावतजी के तालाब तक।
५७	११४०	राईको हाडीजी का बाग नागौरी दरवाजे से।
७४	१४८०	रातानाडो सोजती दरवाजा से।
८०	१६००	मसूरिया पहाड़ जालोरी दरवाजे से।
४२	८४०	सूरसागर फूलेळाव दरवाजे से।
१००	२०००	बालसमंद केवड़ा सहित। (१६८-१८६/२४६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १७२१ में परगने जोधपुर के ११६७ गांवों का मेल—

आसामी	गांव	तफा	बसता	वीरान	सांसण
तफा १६	१०३६	१६	७३५।	१७७।।	१२७
महेवो	१२८	१	६७	४३	१८
योग	११६७	२०	८०२।	२२०।।	१४४

जातियों की प्रमुखता के अनुसार तफावार गांवों की विगत ।
(१८६-२०३/२४७-२४८)

परगने जोधपुर के गांवों का तफावार मेल—बसे हुए, वीरान तथा सांसण । (२०३-२०४/२४६)

परगने जोधपुर के गांवों का विवरण—तफा हवेलो कुल २७७ । बसे हुए २०७, वीरान ३६।।, सांसण ३३ । (२०४-२४२/२४६-२५३)

तफा पींपाड़—कुल ७६ । आबाद ६६, वीरान २, सांसण ८ ।
(२४४-२५६/२५४-२५५)

तफा बीलाड़ा—कुल १५ । आबाद ६।, वीरान २, सांसण ३।।। ।
(२५६-२५६/२५६-२५७)

तफा बाहला कुल ८ । आबाद ७, वीरान ०, सांसण १ ।
(२५६-२६०/२५८)

तालका खेरवा—कुल ११ । आबाद ७, वीरान २, सांसण २ ।
(२६०/२५६)

तालका पाली—कुल ४४ । आबाद २८, वीरान ६, सांसण १० ।
(२६२-२६८/२६०-२६२)

तफा रोहठ—कुल २० । आबाद १६, सांसण १ । (२६६-२७२/२६३)

तफा गूदोच—कुल १० । आबाद ५, वीरान ५ । (२७२-२७३/२६४)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तफा भाद्राजण—कुल ६५ । आबाद ५६, वीरान ३०, सांसण ६ ।
(२७३-२८७/२६५-२६६)

तफा दूनाड़ा—कुल ४४ । आबाद ३३, बीरान ६, सांसण ५ ।
(२८७-२९३/२६६-२७२)

तफा कोढण—कुल ८४ । आबाद ५२, वीरान १४, साँसण १८ ।
(२९३-३०५/२७३-२७७)

तफा बहेळवा—कुल ६२ । आबाद ३५, वीरान १५, सांसण १२ ।
(३०५-३१२/२७८-२८१)

तफा सेतरावा—कुल २८ । आबाद २१, वीरान ७ ।
(३१२-३१५/२८२-२८३)

तफा केतू—कुल २३ । आबाद १५, वीरान ७, सांसण १ ।
(३१५-३१८/२८४-२८६)

तफा देछू—कुल १० । आबाद ७, वीरान २, सांसण १ ।
(३१८-३१९/२८७-२८८)

तफा ओसियां—कुळ ११२ । आबाद ७९, वीरान २०, सांसण १३ ।
(३१९-३३६/२८९-२९०)

तफा खींवसर - कुल ३५ । आबाद १९, वीरान १४, सांसण २ ।
(३३६-३४१/२९१-२९२)

तफा लवेरा—कुल ६६ । आबाद ५१, वीरान ९, सांसण ६ ।
(३४१-३५०/२९३-२९४)

तफा आसोप—कुल १६ । आबाद १६ । (३५०-३५३/२९५)

तफा मेहवा—कुल १२८ । आबाद ६७, वीरान ४३, सांसण १८ ।
(३५३-३७२/२९६-३०३)

परगने जोधपुर के गांवों की सीमा, जो अन्य परगनों के गांवों से लगती है, की तालिका । (३७२-३८२/३०४-३१३)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परगना सोजत

शास्त्रों में इसका नाम शुद्धदंती मिलता है। प्राचीन काल में त्रंबावती नगरी कही जाती थी। यहाँ त्रंबसेन राजा राज्य करता था, यह जाति से पंवार होना चाहिए। इस राजा के सोभ्रत नामक एक लड़की थी जिसमें दैविक शक्ति थी। एक बार राजा ने अपने प्रधान वानरा हुल को आज्ञा दी कि राजकुमारी रात पड़ने पर कहाँ जाती है इसका वह पता करे। प्रधान ने पता लगाया तो वह योगनियों के साथ खेलने जाती थी। सोभ्रत को जब इस चौकसी का पता चला तो उसने राजा को श्राप दिया, जिससे उसका राज्य नष्ट हो गया और वानरा हुल शासक बना। कई पीढ़ियों तक हुलों का राज्य रहा। कई दिनों तक सोजत सोनगरों के रही फिर राणा की तरफ से सींधलों को हुई। (३८३-३८४/१-३)

चूँडा ने मरते समय रिडमल से वचन मांगा था कि मारवाड़ का टीका कान्हा को दिया जाय अतः रिड़मल ने ऐसा ही किया और स्वयं राणा मोकल के पास चला गया। मोकल ने उसे बसने के लिए सोजत का गांव धिणाला कई गांवों सहित दिया। कान्हा के बाद सत्ता को राज्य करने का अवसर मिला और फिर जब सत्ता के लड़के नरबद की मूर्खता से उसका प्रधान रिणधीर अप्रसन्न हुआ तो मोकल की सहायता से रिणमल ने मंडोर पर अधिकार कर लिया तब भी सोजत इसे राणा की ओर से दी हुई थी। जब रिड़मल चित्तौड़ में धोखे से मारा गया, तो जोधा को भी मंडोर में टिकने नहीं दिया। सोजत रा० राघवदास सहसमलोत को राणा की तरफ से देदी गई।

(३८३-३८८/३-६)

जोधा ने जब मंडोर पर पुनः अधिकार किया, तो सोजत पर भी कब्जा कर लिया। जोधा के बाद शासकों का अधिकार इस प्रकार रहा—

१. राव सूजा, सैयदों को बादशाह ने दी।
२. राव वीरमदे वाघावत को भाई-बंटे में हुई।
३. राव गांगा ने वीरमदे से १५८८ में लेली।
४. राव मालदे के पास सोजत रही।
५. टीके बैठते समय चंद्रसेन के पास भी थी।
६. राव राम को संवत् १६२१ में अकबर ने चंद्रसेन से दिलवाई।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७. राव कला रांमोत को एक बार हुई।
८. संवत् १६३४ सुरतांण जयमलोत मेड़तिया को अकबर ने दी।
९. राजा सूरजसिंह को पुनः १६६५ में दी।
१०. राजा गजसिंह को टीके के साथ संवत् १६७६ में हुई, तबसे जीवन-पर्यन्त रही।
११. राजा जसवंतसिंह के यथावत जीवन भर रही—१६९४ तक।

अस्थाई तौर पर इन लोगों के पास भी रही—
१. राव चंद्रसेन डूँगरपुर से लौटकर आया तब एक बार सोजत ली।
२. रायसिंघ चंद्रसेनोत को अकबर ने संवत् १६४० में दी।
३. मोटाराजा को नवाब खानखाना ने १६४१ में दी थी।
४. राजा सूरजसिंघ को १६५१ में।
५. सकतसिंह उदैसिंघोत को अकबर ने १६५६ में दी, १ वर्ष रही।
६. राव करमसेन उग्रसेनोत को संवत् १६६४ में जहांगीर ने दी थी।

(३८८-३९०/९)

सोजत का कोट छोटी-सी पहाड़ी पर बना हुआ है। थोड़े-से ही घर उसमें हैं। राजा गजसिंह ने एक घर यहाँ बनवाया था। वीरमदे बाघावत का यहाँ देवस्थान है। पूजा होती है। घरों के आगे दरबार लगाने का चौतरा है। एक ही प्रोल है। परकोटे की प्रोल है उस पर दीवानखाना है। परकोटे में एक मन्दिर चत्रभुजजी का है। गौतमगिरी सन्यासी का तकिया है। घर २,२०० के करीब वस्ती है। (२९०-२९१/१०)

संवत् १७१६ में कस्बे की बस्ती का अनुमान इस प्रकार है -

७३८ महाजनों के घर, ८ पंचोली, ३०५ करसा, १४२ राजपूत, ७२ मुसलमान, ३६४ ब्राह्मण। ६५२ अन्य निम्न कौंम के घर। कुल २,२५४ घर।

(३९१/११)

शहर में ८ के लगभग देवस्थान हैं, १० के करीब तालाब हैं। इस समय सोजत की सीमा में ५ गांव नये बसे हैं। शहर में एक रहट है, चारों तरफ भी रहट हैं। सूकड़ी और गीलड़ी नदियां शहर के आगे आकर शामिल होती हैं। नदी के दूसरी तरफ २५-३० बड़े रहट हैं। बाग, बाड़ी आदि हैं। बड़ा जोड़ भी है। घांची, माली, सीरवो राजपूत आदि खेत बोते हैं। (३९२-९४/१२-१६)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कस्बे के खेतों की विगत। (३९२-९५/१७)

सोजत की सीमा इतने गांवों से लगती है। (३९५/१८)

कस्बे सोजत के हासल व लगान आदि की विगत। (३९४-४००/१९-२०)

बादशाह की तरफ से राजाओं को सोजत दी गई उसकी तनख्वाह के दाम। (४००/२१)

परगने सोजत के खालसे के हासल की पैदावार—संवत् १६९२ से १७१७ तक की। जागीरदार तथा सांसण आदि की आमदनी की कुल विगत संवत् १७११-२१ तक की। (४००-४०२/२२)

परगने के गांवों के हासल की विगत किस्म के अनुसार—

४९ गांव अवल आमदनी, ४५ दोयम आमदनी, ३४ सहेल ऊनाली, २४ सेंवज तथा ढीबड़े आदि होते हैं। (४०२-४०५/२३-२६)

३२ गांव सूने हैं, वे मांजरे की सूची में लिखे जाते हैं। २७ गांव मेरों के अधिकार में हैं। ३३ सांसण के गांव हैं। (४०५-४०८/२७-३१)

कुल गांव १५२ ऐसे हैं जिनका हासल आता है। इनकी आमदनी आदि की सूचियाँ वर्गीकरण के अनुसार। (४०८-४१६/३२-३७)

सांसण तथा सूने गांवों की संक्षिप्त विगत। (४१६-४२४/३८-४३)

परगने सोजत के गांवों का विवरण—

सोजत से दूरी, आबादी, जमीन की किस्म, जलाशय आदि। पांच वर्ष की आमदनी १७१५ से १७१९। (४२५-४७७/४४-४५)

सांसण के गांवों की विस्तृत विगत, ब्राह्मण, चारण, जोगी आदि को। (४७७-४९२/४६-४९)

परगना जैतारण

यह परगना जोधपुर से २७ कोस की दूरी पर पूर्व के दाहिनी ओर को है। संवत् १५२५ में यहाँ नया शहर बसा। पहले आगेवा के स्थान पर था। यहाँ पहले जैतू गूजर रहती थी, इसीलिए जैतारण नाम पड़ा। जोधा ने यह स्थान बसाया। पहले यह सींधलों के अधिकार में राणा की ओर से थी।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नरसिंघ की पत्नी सुपियारी को नरबर ले आया था। उसका बैर लेने की घटना इस परगने से सम्बन्ध रखती है। जब सूजा गद्दी पर बैठा, तो उसने सभी सींधलों को निकाल दिया। ऊदा सूजावत को जैतारण में बसाया जिससे ऊदावतों का अधिकार यहाँ खूब जमा। राव मालदे ने रतनसी खींवावत को जैतारण दी थी। संवत् १६१४ में बादशाह की फौज से लड़कर वह काम आया। रतनसी के लड़के कल्याणसिंह आदि ने मुगलों से मिलकर इस पर अधिकार रखा, इस पर चंद्रसेन ने उन पर चढ़ाई की थी।

मोटाराजा को अकबर ने इसका आधा हिस्सा ६५ गांवों से दिया था। संवत् १६५१ में उसकी मृत्यु होने पर उसके लड़कों में गांव बाँट दिये। आधी जैतारण ऊदावतों को थी। संवत् १६६१ में पूरी जैतारण सूरसिंघ को अकबर ने दी। सूरसिंघ के बाद १९ साल तक गजसिंह के ही पास रही। गजसिंह की मृत्यु पर एक बार जैतारण तागीर हुई। जसवंतसिंह को संवत् १६९६ में मिली। (४९३-४९६/१)

कस्बे की बस्ती संवत् १७१९ में लिखी गई तब सभी जातियों के घर १८३९ थे। सांसण के गांवों की विगत शासकों के अनुसार। (४९८-५००/१)

जैतारण के खालसा के गांवों की आमदनी संवत् १६९२ से १७१७। परगने के खालसा, जागीर, सांसण आदि सभी प्रकार के गांवों की आमदनी संवत् १६११ से १७२०। गांवों का वर्गीकरण मय आमदनी के। सूने गांव तथा सांसण के गांवों की भी सूची। (५००-५०९/२-११)

परगने जैतारण के गांवों का विस्तृत वृत्तान्त जोधपुर से दूरी, आबादी, जमीन की किस्म, पैदावार, जलाशय तथा ५ वर्ष की आय संवत् १७१५ से संवत् १७१९ तक की। (५०९-५४२/१२-२२)

सांसण के गांवों का विस्तृत विवरण, ब्राह्मणों, चारणों व जोगियों को दिये हुए। (५४३-५५४/२३-२४)

परगने जैतारण के गांवों की सीमा जिन अन्य परगनों के गांवों से लगती है, उनकी तालिका। (५५५-५५७/२४)

——

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शोध-सूत्र : द्वितीय भाग

परगना फलोदी

इसका आदि नाम विजैनगरी है। यहां पंवार राजा राज्य करता था। उस काल में बने कल्याणरायजी के मंदिर के स्तम्भ पर इस आशय का एक लेख संवत् ११४५ का है। पंवारों से जब वाहड़मेर छूटा तब यह धरती भी छूट गई। यह शहर उजड़ गया, केवल एक मंदिर ही बचा। तत्पश्चात् जब मंडोर पर राठौड़ों का राज्य हुआ तो चूंडा, रिड़मल और जोधा के समय तक यह कस्वा आबाद नहीं हुआ। जब सूजा जोधपुर की गद्दी दर बैठा, तो उसने अपने पुत्र नरा को बसने के लिए इस ओर भेजा। यहां पहले फलू पालीवाल ब्राह्मण की बेटी फळोधी आकर रही थी और यह स्थान फळूधी का वास कहलाता था। सींधू फला जैसलमेर के गांव आसणीकोट रहता था। रावळ से उसकी अनबन हो गई तब वह अपने १४० गाडे लेकर यहां आकर रहा। नरा ने प्रयत्न करके इसे आबाद किया। (पृ० १/अ० १-२)

उन दिनों पोकरण जगमाल मालावत के पोत रावत खींवा बरजांगोत के अधिकार में थी। नरा ने उसे अपने अधिकार में करने का विचार किया। उसने अपने जासूस लगा रखे थे उन्होंने एक दिन खबर दी कि खींवा उधारस गांव गया हुआ है। अवसर देख कर नरा २०० सवारों से पोकरण पर चढ़ा और गढ पर अधिकार कर लिया। खींवा बाहड़मेर चला गया। नरा राव सातल के गोद था इसलिये उसने सातल के नाम से वहां सातलमेर गढ बनाया। (२/२)

फिर खींवा लूंका पोकरण पर चढ आया और वहां की गायों को घेर कर ले गया। नरा ने उसका पीछा कर नांदणहाई नामक स्थान पर उसे पकड़ा परन्तु युद्ध में नरा मारा गया। सूजा को खबर मिलते ही वह ससैन्य आया और खींवा के गांव लूटता हुआ पोकरण पहुँचा। नरा के पुत्र गोयंद को गद्दी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर बैठाया। यह गोयंद बड़ा युद्धनिपुण वीर हुआ। इसने हमीर को फलोदी दी। वह राव कहलाया। हमीर ने संवत् १५५५ में कोट के लोहे के दरवाजे करवाये तथा अनेक जलाशय आदि बनवाये। एक बार पोकरण और फलोदी की सीमा के सम्बन्ध में गोयंद से इसकी खटपट हुई तब इसकी दादी लक्ष्मीबाई ने आकर घोड़ाकंधी के पास सीमा निश्चित कर दी। (२-३/३)

हमीर के पश्चात् उसका पुत्र रांम गद्दी पर बैठा। रांम ने यहां रांम तालाब खुदवाया। ये जोधपुर के शासक को अपना स्वामी मानते रहे हैं परन्तु मालदे और शेरशाह में संवत् १६०० में जब युद्ध हुआ तो रांम ने सहयोग नहीं दिया, जिससे मालदे नाराज हो गया। रांम के प्रधान जगहथ के द्वारा विष दिये जाने के कारण रांम की मृत्यु हुई। (३/४)

रांम के स्थान पर उसका भाई डूंगरसी गद्दी पर बैठा। उधर पोकरण में गोयंद की मृत्यु संवत् १५८२ में हुई तब उसके स्थान पर जैतमाल गोयंद का लड़का गद्दी पर बैठा। मालदे ने ये दोनों परगने लेने के विचार से षड़यंत्र रचा और डूंगरसी को होली खेलने के बहाने से गांव चवां में बुलाया और आंखों में गुलाल डाल कर बंदी बना लिया। फलोदी पर घेरा डाला गया। जगहथ देपावत ने किले की रक्षा का बीड़ा उठाया। पोकरण का स्वामी जैतमाल जैसलमेर के रावल मालदे का दामाद था। उसने जैसलमेर वालों से सहायता के लिये निवेदन किया तो रावल ने कुंवर हरराज के साथ पोकरण को फौज भेजी। उन्होंने जाकर फलोदी पर भी दखल किया तब राव मालदे की फौज से युद्ध हुआ जिसमें भाटियों का बड़ा नुकसान हुआ। पृथ्वीराज के हाथ से रावत भींव मारा गया। डूंगरसी ने रावजी से कहा कि मुझे मुक्त करें तो मैं आपको फलोदी का गढ सौंप दूंगा। राव ने ऐसा ही किया तब डूंगरसी के कहने से जगहथ देपावत ने गढ़ मालदे को सौंपा। १५ वर्ष तक वहां मालदे का अधिकार रहा। (३-५/५)

संवत् १६१९ में जब मालदे की मृत्यु हुई तो झाली सरूपदे ने उदयसिंह को फलोदी दिलवाई। उदयसिंह फलोदी में रहने लगा। गांधाणी के हासल के प्रश्न को लेकर लोहावट के पास उदयसिंह और चंद्रसेन में यहां जबरदस्त युद्ध हुआ था। संवत् १६२७ में घोड़ों की कतार के प्रश्न को लेकर राव

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डूँगरसी और उदयसिंह के बीच झगड़ा हुआ जिसमें उदयसिंह की पराजय हुई। इसमें राव मंडलीक वैरसलपुर का स्वामी काम आया। (५-६/६-७)

संवत् १६३१ में मोटाराजा का फलोदी से अधिकार हटा और भाखरसी हरराजोत का अधिकार हुआ, सो १६३३ तक रहा। संवत् १६३३ के लगभग पोकरण रावळ हरराज के रहन रखी गई थी। संवत् १६३५ में बीकानेर के राजा रायसिंघ के अधिकार में फलोदी दी गई सो संवत् १६७२ तक उसके रही। राठौड़ मालदे वणवीरोत और करमचंद सांगावत का प्रबंध कुछ समय के लिये रायसिंघ की ओर से रहा। (६-७/८)

संवत् १६७२ में जोधपुर के राजा सूरजसिंह को यह परगना ६७५००) में दिया गया। मुंहता जैमल हाकिम बनाया गया और चौ॰ सिखरा थानेदार। फिर १६७४ में बादशाह की ओर से बीकानेर के सूरजसिंह को देने का आदेश हुआ। परन्तु सूरजसिंह (जोधपुर) ने इसे अपनी जन्मभूमि समझकर छोड़ना उचित नहीं समझा और बादशाह से इस आशय का फरमान करवा लिया। महाराजा गजसिंह और जसवंतसिंह के यह परगना जीवनपर्यन्त अधिकार में रहा। (७/९)

संवत् १६८० में फलोदी में जो युद्ध हुआ उसमें अचलदास विक्रम का पुत्र काम आया। १६९० में अचलदास सुरताणोत तथा भा० सकतसिंघोत को मुगलखान ने पराजित किया। संवत् १६९३ में हैदरअली ने कुंडल को लूटा, मदा फतैअली ने चाखू तथा घटियाली को लूटा। रा० हरराज राणोत तथा ईश्वरदास काम आये। संवत् १६९५ में बलोच मदा फतैअली ७५० आदमियों से चढकर आया। मु० नैणसी व सुन्दरदास मुकाबिले को गये, बलोच भाग खड़े हुए। (८/११-१५)

फलोदी का गढ २३८ हाथ लंबा तथा १२२ हाथ चौड़ा है। बुरजें १९ हैं, २१ हाथ ऊंची। बावड़ी एक तथा तालाब १ है। कस्बे में कुल ६५७ घर हैं। जोधपुर से यह स्थान ३५ कोस है। (८/१६)

फलोदी की सीमा पर के गांवों की सूची। फलोदी की खालसा भूमि की वार्षिक आय संवत् १७०३ से १७१७। परगने के जागीरदार सांसण आदि कुल मिलाकर वार्षिक आय १७११ से १७२० तक। (९-१०/१७-१९)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परगने फलोदी में कुल ६७ गांव लिखे जाते हैं। ६७५००) में फलोदी दी गई तब से इस रकम पर कोई वृद्धि नहीं हुई सूरसिंह व गजसिंह के समय में यही रेख रही। (१०/२०)

कस्बे की आबादी पहले दी जा चुकी है। गांवों को आबादी की प्रमुखता के आधार पर उन्हें इस प्रकार बांटा जा सकता है—६ जाटों के, १३ विश्नोयों के, ८ जाट और विश्नोई शामिल, १० पलीवालों के, ८ रजपूतों के, १० सूने और ६ सांसण के गांव। (१०/२१-२७)

फलोदी के उक्त गांव का अलग-अलग विवरण मय ५ वर्ष (१७१५-१७१६) की आमदनी के। (१२-२८/२८-२६)

सांसण के गांवों की विस्तृत विगत। (२८-३४/२६-३१)

सीमावर्ती गांवों की सूची तथा मारवाड़ में नमक की खानें, कुंएँ आदि हैं उनकी विस्तृत सूचना प्रत्येक परगने में गांवों के अनुसार—जोधपुर, पचपदरा, फलोदी व पोकरण। (३२-३६/३२-३६)

परगना मेड़ता

मेड़ता बहुत पुराना शहर है, राजा मानधाता द्वारा बसाया हुआ है। कहते हैं कि यहां राव कान्हड़दे का भी अधिकार रहा था। फिर वीरान होने से झाड़ियें उग आईं थीं। जब राव जोधा का जोधपुर पर अधिकार हो गया तो उसने अपने दो लड़कों—वरसिंध और दूदा (सोनगरी रानी के पुत्र) को मेड़ता बसने को दिया। जब ये चौकड़ी ग्राम के पहाड़ में पड़ाव डाल कर बसने के लिये उपयुक्त स्थान की खोज कर रहे थे उस समय ऊदा कान्हड़देसोत ने, जहां अभी मेड़ता शहर है, यह जगह बताई और उन दोनों भाइयों ने यहीं पर अपने गढ की नींव दी। (३७-३८/१-३)

जब यहां बसने का मुहूर्त करने लगें उस समय शकुनी ने शेरों का शकुन लेकर बताया कि यह जगह बरसिंघ के वंशजों के कब्जे में नहीं रहेगी। परन्तु दोनों भाइयों में अच्छा प्रेम था इसलिए इस बात को यों ही टाल दिया। ऊदा कान्हड़देसोत इनका प्रधान बना। सूनी धरती अब बसने लगी। नागौर परगने में डांगा जाटों के कठोती जायल में अनबन हो गई। उनका प्रतिनिधि

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थिरराज डांगा इनके पास आया। डांगा को आश्वस्त कर, उसके साथियों सहित डांगावास नामक स्थान पर देशमुख चौधरी बनाकर बसाया।
(३८ ३९/४-५)

फलोधी पारसनाथजी का मन्दिर संवत् ११९१ में साह श्रीमल ने बनवाया। संवत १५५५ में देवराज के पुत्र राणा हेमराज ने उसका जीर्णोद्धार करवाया। राव बरसिंघ तथा दूदा ने कोसाणा, मादलिया तथा चौकड़ी के अनेक सांखलों का सफाया किया। (३९/६-७)

नागौर के जिन-जिन गांवों से आकर जाट मेड़ता के गांवों में बसे उनकी सूची। (३९-४१/८)

डांगा जाट प्रारम्भ में चहुवान राजपूत थे। इनका पूर्वज जगसी, छाजू का पुत्र, जाट हुआ। डांगा जाटों की पीढ़ी। (४१/९)

श्री फलोदी माता का मन्दिर मूलतः राजा मानधाता का बनवाया हुआ है। संवत १०८३ का लेख स्तंभ पर है। एक स्तंभ पर १०७६ का भी लेख है। संवत १५५५ में बरसिंघ और दूदा के आदेश से देवराज के पुत्र हेमराज ने उसका जीर्णोद्धार करवाया। (४१/१०)

कुछ दिनों वाद बरसिंघ और दूदा में अनबन हो गई। राव दूदा बीकानेर चला गया। पीछे अकाल पड़ा। बरसिंघ के चाकर भूखों मरने लगे तब उसने सांभर पर हमला किया और खूब धन लूट लाया। उन दिनों अजमेर मांडव के वादशाह के अधीन था। वहाँ मलूखाँ सूबेदार था। वह इस घटना से बड़ा कुपित हुआ परन्तु चुपचाप बैठा रहा। (४२/११)

कुछ समय बाद बरसिंघ और सातल के बीच भी अनबन हो गई बरसिंघ ने सातल से जोधपुर की सीमा में से कुछ भूमि मांगी। समझौते के लिये दोनों ही अजमेर मलूखाँ के पास पहुँचे। इस समस्या का कोई हल नहीं निकला। इतने में बरसिंघ से मलूखाँ नाराज था ही वह कुछ बहाना बनाकर उस पर चढ आया। बरसिंघ सातल के पास जोधपुर गया। पीछे मलूखाँ ने मेड़ता और जोधपुर की धरती में काफी नुकसान किया। ये लोग जोधपुर से तैयारी करके ससैन्य बीसलपुर आकर ठहरे। उस समय युद्ध-संचालन का सारा कार्य-भार वरजांग भींवोत पर था। परन्तु वह युद्ध से उदासीनता प्रकट करने लगा।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तब प्रधानों ने परामर्श दिया कि यह कभी का भावी की जागीर मांगता है सो इसे भावी का पट्टा देकर भी जसे तैसे राजी करो। तब भावी का पट्टा उसे लिख दिया गया। वह बड़ा अनुभवी योद्धा था। उसने गुप्त वेश में जाकर पहले विरोधियों की फौज की स्थिति का अध्ययन किया और फिर रात में फौज की तीन टुकड़ियाँ बनाकर अचानक हमला किया। इस युद्ध में राव सूजा बुरी तरह घायल हुआ। मुगल बहुत-से मारे गये। सातल की विजय हुई। बरसिंघ आकर मेड़ता में बसा। (४२-४४/१२-१५)

मलूखाँ ने मांडव के बादशाह से सहायतार्थ सेना माँगी। सेना आजाने पर बरसिंघ से मलूखाँ ने फिर बात-चीत प्रारम्भ की। सरदारों ने बरसिंघ को सम्पर्क न करने के लिये बहुत समझाया पर वह नहीं माना। अन्त में मुगलों से वचन लेकर बरसिंघ अजमेर जाकर मिला। पहले उसका बड़ा स्वागत किया गया और फिर विश्वास में लाकर कैद कर लिया। जब दूदा को बीकानेर में यह घटना मालूम हुई तो उसने बीका से सीख मांगी। बीका भी सहायतार्थ रवाने हुआ। दूदा ने मेड़ता में फौज शामिल की। दोनों ने जब अजमेर पर चढ़ाई की तो मलूखाँ ने बातचीत करके फौरन बरसिंघ को छोड़ दिया। ये तीनों मेड़ते आये। (४४-४६/१६-१७)

६ महीने बाद बरसिंघ मर गया क्योंकि मलूखाँ ने उसे मयादी जहर दे दिया था। उसके लड़के सीहा को टीका दिया गया। सीहा अयोग्य था जिससे अवसर देखकर सातल और सूजा ने इस ओर दखल देना प्रारंभ किया। अपने अधिकारी तक कुछ स्थानों पर भेज दिये। ऐसी स्थिति देखकर सीहा की मां ने पंचों से राय ली और उसी के अनुसार राव दूदा को आधे मेड़ते का हकदार स्वीकार करके बीकानेर से बुलाया। उसने आकर सारी व्यवस्था जमा ली। (४६-४७/१८-१९)

दो वर्ष तक तो सीहा और दूदा ने मेड़ता की आमदनी आधी-आधी बांट-कर ली। परन्तु सीहा किसी काम के योग्य नहीं था। अतः दूदा ने उसे राहण की जागीर देदी और मेड़ते की गद्दी पर स्वयं बैठा। संवत् १५५४ में दूदा का स्वर्गवास हो गया। टीका उसके पुत्र वीरम को मिला। सीहा के तीन लड़के थे र, वे बड़े तेजस्वी निकले। मेड़ते का अधिकार प्राप्त करने को वे राव मालदे से जा मिले। मालदे यह चाहता ही था। अतः सीहा के पुत्रों और

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीरम के बीच तनाव बढ़ा और कुसाणा के पास युद्ध हुआ, उसमें अनेक आदमी मारे गये। वीरमदे का प्रमुख योद्धा रा० खंगार जोधावत घायल हुआ। वे तीनों भाई घायल हुए। वीरमदे विजयी हुआ। (४७-४८/२१)

संवत् १५८८ में गांगा की मृत्यु होने पर मालदे गद्दी पर बैठा। मेड़ते पर वीरमदे का अधिकार उसे सदा खलता था। मालदे उसे प्राप्त करने के खूब मन्सूबे बांधता था पर जैत कूंपां आदि की इसमें सहमति नहीं थी। जब मालदे ने सींधलों पर चढ़ाई की तो वीरमदे भी उसकी सहायतार्थ अपने योद्धाओं सहित उसके शामिल था। उसने अवसर देखकर नागौर के दौलतखांन को कहलवाया कि यह ही उचित अवसर है तुम मेड़ते पर चढ़ाई करदो, तुम्हारा जो हाथी वीरम ने रख लिया है उसको भी प्राप्त करलो। उधर उसने पंवार पंचायण को भी कहलवाया कि मेड़ते पर चढ़ाई करके अखा का बैर लेने का यह उपयुक्त समय है। इसी प्रकार गांगा सीहावत को भी चुपके से चढ़ाई करने का संदेश भेजा। वीरम को संदेह होने पर इस षड़यंत्र का कुछ अभास भी उसे हो गया। उसने फौरन मेड़ते सूचना भेजी। वहां अखैराज भादावत था, उसने सुरक्षा की व्यवस्था जैसे तैसे की। दौलतखान ने जब आकर घेरा डाला तो केवल १५-२० आदमियों से वह उन पर पिल पड़ा, वे भाग खड़े हुए। पंवार पंचायण लोहियावाम नामक स्थान पर रायसल के सामने न टिक सका। गांगा सीहावत ५०० सवारों से चढ़ाई के लिये आ रहा था परन्तु जब बांभांकूड़ी की नदी के पास आया तो क्या देखता है कि अनेक लोग उसका साथ छोड़ चुके हैं, तब वह निराश होकर वहीं से लौट गया। (४८-५०/२२-२४)

वीरम को इन घटनाओं की सूचना मिलते ही वह अपने आदमियों को समझा-बुझाकर वहाँ से मेड़ते के लिये रवाना हुआ और दूसरे दिन उसकी सेना के लोग भी मालदे से विदा लेकर मेड़ते आये। मालदे जैता कूंपा के सामने लज्जित हुआ। (५०-५१/२४)

इन्हीं दिनों में मांडव का बादशाह मर गया तब सूबेदार अजमेर का गढ़ खाली कर चला गया। वीरम को जब पता लगा तो उसने गढ़ पर अधिकार कर लिया। मालदे ने जब यह सुना तो वह ईर्षा से जल-भुन गया। उसने वीरम को कहलाया कि अजमेर तुम्हारे अधिकार में खट नहीं सकेगा और राठौड़ों

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

के घर में टीकायत मैं हूं सो गढ़ मुझे सौंपो। वीरम ने इसकी परवाह नहीं की। मालदे ने मेड़ते पर चढ़ाई की। वीरमदे ने मेड़ता पहले ही खाली कर दिया और अजमेर आ रहा। संवत १५९५ में मालदे ने मेड़ते में अपना अमल किया और अजमेर की ओर के बड़े-बड़े गांव अपने उमरावों को बाँट दिये। रा० सहसा तेजसियोत को अनेक गांव पट्टे में दिये। वीरम इस बात से बड़ा अप्रसन्न हुआ और सहसा को मारने को कटिबद्ध हुआ, यद्यपि सरदारों ने उसे समझाने का वहुत प्रयास किया। (५१-५२/२५)

वीरमदे ने अपने जासूस भेजे। उन्होंने सूचना दी कि सहसा रीयां में रहता है। एक घड़ी रात निकलने पर वीरम रीयां पर चुपके से चढ़ा। सहसा के जासूसों ने उसे भी खबर दी। उसने कूंपा भी के पास संदेश भिजवाया कि हमारी सहायता करो तो यह समय है। सहसा ५०० आदमियों के साथ केसरिया करके गांव के बाहर आकर बैठा और वीरम का इन्तजार करने लगा। अब भी रात कुछ शेष थी। उधर से कूंपा भी अपने साथियों सहित आ रहा था। ठेट सहसा के पास पहुँचने के पहले ही गांव के समीप कूंपा के साथियों और वीरम में मुठभेड़ हो गई। बड़ा जबरदस्त युद्ध हुआ। वीरमदे और राठौड़ भदा ने बड़ा पराक्रम दिखया। भदा कूंपा ने फिर भी लिहाज किया। जालोर के एक बिहारी सरदार ने वीरमदे को बड़ी कठिनाई से युद्ध-भूमि में से निकाला। वीरमदे अपने घायलों को लेकर लौट गया। मालदे का मेड़ते पर अधिकार इस घटना से जम गया। (५२-५४/२६)

एक वर्ष के बाद मालदे ने वीरमदे से अजमेर भी छीन लिया। वह वहां से कुछ समय के लिये कछवाहों के यहाँ नरायणे जा रहा। मालदे ने डीडवाना और सांभर पर भी अपना अधिकार कर लिया। वीरमदे चाटसू गया। राव की फौज ने उसका पीछा किया तब वह लालसोट गया। वहाँ भी उसे टिकने नहीं दिया तब बांवली जाकर डेरे किये। (५४/२७)

फिर वीरमदे ने अपने प्रधान राठौड़ अखैराज तथा मु० खींवा को रणथंभोर के सूबेदार के पास भेजा। वह कोई नवाब था जो प्राय: भीतर ही रहता था इसलिये उससे मुलाकात होना बड़ा कठिन काम था। तब उन्होंने युक्ति से काम किया और नवाब के लड़के की सगाई करने के बहाने से वहाँ के

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अधिकारियों को राजी किया। खींवा ने यह सब कार्यवाही की। नवाब बड़ा प्रसन्न हुआ। वीरमदे को मिलने का अवसर दिया गया। वह ४०० सवारों सहित आकर मिला। विरमदे ने सारी परिस्थिति उसके सामने स्पष्ट की। तब उसने बादशाह को सारी स्थिति लिख कर अवगत कराया। बादशाह ने वीरम को दिल्ली भेजने को लिखा। वीरम ने वहां पहुँच कर दीवान आदि अधिकारियों को अपनी चतुराई से प्रसन्न किया। बादशाह भी खुश हुआ। वह मालदे से अप्रसन्न था ही। उधर बीकानेर से भींव जैतसियोत मु० नगा भी अपनी फरियाद मालदे के विरुद्ध लेकर आये थे। बादशाह ने चढाई की तैयारी कर आगरे में डेरा किया। (५४-५६/२८-३०)

यह सूचना मालदे को भी मिली तब उसने भी युद्ध की तैयारी की। वह ८०,००० सवारों से चढ़कर मेड़ते पहुँचा। बादशाह मौजाबाद के पास आया। मालदे अजमेर पहुँचा। वीरमदे और मालदे के बीच संदेशवाहक फिरने लगे, पर बात बनी नहीं। जैता कूंपा के पास भी आदमी आये, जिससे मालदे को संदेह हो गया। मालदे ने अपना डेरा पीछे हटाया। फिर एक डेरा और पीछे हटाने को कहा, तब जैता कूंपा ने ऐसा करना अनुचित समझ, राव की आज्ञा नहीं मानी। मालदे के दिल में संशय पैदा हो गया। वह थोड़ी रात गये जैता कूंपा से बिना सलाह किये वहाँ से रवाना हो गया। जैता कूंपा, खींवा, जैतसी, सो० अखैराज रिणधीरोत आदि सरदार २०,००० आदमियों सहित वहीं रुके, बाकी के लोग राव के साथ चले गये। सुबह समेल की नदी के उस ओर युद्ध हुआ। राव के ५००० से ऊपर आदमी काम आये। (५६-५७/३१)

रा० वीरमदे बादशाह को लेकर जोधपुर आया। यहाँ रा० अचलो सिवराजोत, रा० तिलोकसी सिवराजोत, भा० संकर सूरावत आदि गढ़ के रक्षार्थ काम आये। कुछ दिन बादशाह यहाँ रहा, फिर यहाँ का प्रबन्ध सैयद हासिम कासिम को सौंपकर प्रस्थान किया। मेड़ता वीरमदे को मिला। बीकानेर कल्याणमल को प्राप्त हो गया। (५७-५८/३२-३४)

राठौड़ वीरमदे का जन्म संवत् १५३४ में हुआ और मृत्यु १६०० के पोष माह में हुई। उसके पीछे उसके पुत्र जैमल को मेड़तियों ने टीका दिया और बादशाह की ओर से मेड़ता उसे जागीर में मिला। १० वर्ष तक उसने शान्ति से राज्य किया। (५८/३५-३६)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत् १६०३ में शेरशाह की मृत्यु होने पर मालदे ३ वर्ष का समय पीपलण के पहाड़ों में काटकर जोधपुर के खाली गढ़ में आ रहा, क्योंकि बादशाह के अधिकारी यहाँ से चले गये थे। फिर संवत् १६१० में मालदे ने जैमल पर चढ़ाई की। जयमल इस युद्ध में विजयी हुआ। मालदे के प्रथीराज जैतावत, धनो भारमलोत आदि वीर काम आये। जैमल के रा० अखेराज़ भदावत आदि काम आये। (५८-५६/३७-३६)

संवत् १६१३ में हाजीखाँ और राणा उदैसिंघ के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मालदे ने हाजीखाँ की सहायतार्थ १५०० आदमी देकर राठौड़ देवीदास जैतावत को भेजा था। राणा उदैसिंघ की तरफ जंमल सहित अनेक हिन्दू राजा थे। यह युद्ध अजमेर से कोस १२ हरमाड़े नामक स्थान पर हुआ। यहाँ रा० देवीदास जैतावत के हाथ से बालीसा सूजा मारा गया। हाजीखाँ की विजय हुई। विपरीत परिस्थितियाँ देख कर जैमल मेड़ता खाली कर राणा के देश चला गया। मालदे ने मेड़ते पर अधिकार कर लिया और मकान ध्वस्त करवाये। (५६-६०/४०-४१)

राव ने आधा मेड़ता संवत् १६१६ में जगमाल वीरमदेओत को ७१ गाँवों से दिया। फलोदी महामाया के मंदिर में कँवर चंद्रसेन और जगमाल के बीच मुख्य सरदारों की उपस्थिति में कुछ शर्तों को दोनों ओर से निभाने की शपथ ली गई। शहर के अनेक मकान ध्वस्त किये गये और उसका नाम बदल कर नयानगर रखा गया। (६१-६३/४२-४४)

संवत् १६१८ में जैमल बादशाह के पास गया। बादशाह ने मेड़ते पर जैमल का अधिकार करवा देने के लिये ७००० घोड़ों से सरफदी को भेजा। राव की ओर से देवीदास जैतावत मेड़ते के मालकोट में थानेदार की हैसियत से रहता था। मालदे को चढ़ाई की सूचना मिलने पर चंद्रसेन और पृथ्वीराज कूंपावत आदि को २००० सवारों सहित यह आदेश देकर भेजा कि युद्ध करने का ठीक अवसर देखें तो युद्ध करें, वरना देवीदास को लेकर लौट आवें। इन लोगों ने जाकर मालकोट के पास डेरे किये। रा० सांवलदास ने एक हमला किया, जिसमें १०० मुगल मारे गये। (६३-६४/४५)

मालकोट के मुगलों का घेरा लग जाने पर निरंतर हमले पर हमले होने लगे। मालदे का यह संदेश बार-बार आने लगा कि मुगलों की फौज अधिक है अतः

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवीदास किला खाली करके निकल जाय, व्यर्थ में क्यों वीरता का प्रदर्शन करता है। किले की एक बुर्ज सुरंग से उड़ गई तब देवीदास मुगलों से बातचीत कर किले से निकलने लगा। कुछ ही दूर निकला होगा कि जैमल ने सरफदीन को कहा कि देवीदास प्राणां की भिक्षा माँगकर किले से निकले ऐसा सरदार नहीं है। वह निकला इसीलिये है कि मालदे को लेकर रातों-रात अपने ऊपर आएगा। अतः इसे मार डालना ही उचित है। बात ही बात में उन्होंने देवीदास का पीछा किया। सातलवस के पास युद्ध हुआ, उसमें देवीदास सहित ३३ योद्धा मारे गये। (६४-६६/४६-४७)

इस युद्ध के बाद मालदे ने कोई चढ़ाई मेड़ता पर नहीं की। जैमल को मेड़ता बादशाह की ओर से मिला। मालदेव की मृत्यु के उपरान्त चंद्रसेन गद्दी पर बैठा परन्तु आन्तरिक विग्रह के कारण उसने मेड़ता का नाम नहीं लिया। जयमल की ओर से बादशाह के वहाँ वीठलदास जैमलोत चाकरी करता था। सरफदीन उस पर बड़ी कृपा रखता था। सरफदीन पर किसी कारणवश बादशाह नाराज हो गया, अतः वह वहाँ से भागा तब वीठलदास को भी साथ लेकर मेड़ते की तरफ आया। सरफदीन डागोलाई ग्राम में रुका और वीठलदास ने आकर सारी हकीकत जमल से कही तो जैमल बड़ा पसोपेश में पड़ा। सरफदीन की इच्छानुसार उसके आदमियों को नागौर से बुलवाने के लिये सादूल जैमलोत को नियुक्त किया। बादशाह के एक मनसबदार से उसकी मुठभेड़ हो गई उसमें वह ४० आदमियों सहित मारा गया। जयमल बड़ा निराश हुआ और अन्य कोई चारा न देखकर संवत् १६१९ में मेड़ता छोड़कर मेवाड़ गया। राणा ने उसे बदनोर की जागीर दी। जब संवत् १६२४ में बादशाह अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तो अपने ४०० आदमियों सहित जैमल वीरतापूर्वक लड़कर काम आया। (६६-६८/५१)

सरफदीन को क्यों भगना पड़ा, इसका किस्सा इस प्रकार है—बादशाह की मां हज के लिये मक्का गई थी, तब सरफदीन साथ भेजा गया था। मक्का में यह कायदा है कि सुहागिन स्त्री अपने पति के साथ उसका दामन (छेहड़ा) बांध कर ही पीरों के दर्शन कर सकती है। बेगम ने सफरदीन को छेहड़ा बांधने के लिये कहा। उसने बहुत आनाकानी की, परन्तु बेगम मानी नहीं, तब छेहड़ा बांध कर दर्शन किये। इस बात को लेकर कुछ चुगलखोरों ने बादशाह को

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उल्टा सीधा सिखाया जिससे बादशाह नाराज हो गया और उसे मरवाने का हुक्म दिया तब वह भागकर जैमल के पास आया। (६८/५२)

जैमल स्वयं सरफदीन को पहुँचाने सीरोही तक गया और अपने आदमियों को सपरिवार मेवाड़ की ओर रवाना किया। फिर जैमल बदनोर आया। राणा ने आकर उसे आश्वस्त किया और बदनोर, करहेड़ा तथा कोठारिया ग्राम जागीर में दिया। (६९/५३)

चित्तौड़ का साका होने के ४-५ वर्ष बाद जैमल के लड़के रा० सुरताण केसवदास बादशाह के दरबार में पहुँचे। बादशाह ने मेड़ता तो उन्हें उस समय नहीं दिया परन्तु रणथंभोर के पास मलारणा का परगना दिया। (६९/५४)

एक बात यह भी सुनी कि संवत १६३७ के लगभग बादशाह की ओर से सुरताण को सोजत जागीर में दी हुई थी। १६३७ में जब वह दरबार में गया तो उसे मेड़ता भी दे दिया गया। गांवों के बंटवारे को लेकर रा० नरहरदास ईसरोत से अनबन हो गई तब नरहरदास ने केसवदास जैमलोत का पक्ष लिया। वह उसे दरबार में ले गया और बादशाह को खुश कर आधा मेड़ता अपने नाम करवाया। (६९-७०/५५)

फिर ऐसी घटना हुई कि बादशाह की धाय एक बार मेड़ते आई। सीरोही का राव सुरतांण वहां तक पहुँचाने आया। धाय ने राठौड़ सुरतांण व केशवदास से कहा कि मुझे आमेर तक पहुँचाने का प्रबन्ध करो। उन्होंने उसकी परवाह नहीं की और अपमानजनक शब्द कहे। उसने आमेर जाकर बादशाह से मेड़तियों के दुर्व्यवहार की शिकायत की जिस पर उसने मेड़ता इनसे तागीर कर लिया। रहने के लिये सुरताण को सरवाड़ और केसवदास को नागेलाव दिया। (७०/५६)

संवत १६४० में जब नबाब खानखाना गुजरात का सूबेदार था तब सुरतांण जैमलोत उसके अधीनस्थ था। वहाँ जगा जाड़ेचा अहमदाबाद में बहुत लूट-पाट करता था। उसे मारने के सभी प्रयास विफल होते थे। अंत में सुरतांण के राजपूतों ने उसे मारा। नबाब खानखाना इस कार्य में बड़ा प्रसन्न हुआ और बादशाह को सिफारिश कर मेड़ता उसे दिलवाया। संवत १६४२ की फागुन सुदि ३ को ये मेड़ता आ रहे। संवत १६४६ में सुरताण की मृत्यु हो गई। मेड़ता बलभद्र को मिला। (७१-७२/५७-५९)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत १६५३ में बलभद्र सुरताणोत की मृत्यु हो जाने पर उसके हिस्से का मेड़ता राठौड़ गोपालदास सुरताणोत को मिला। केसवदास का हिस्सा केसवदास के पास रहा। संवत १६५६ में दक्षिण में बीड़शहर है, वहाँ शाही सेना की ओर से चाँदबीबी के विरुद्ध लड़ते हुए गोपालदास, केसवदास और द्वारकादास जैमलोत तीनों ही काम आये। गोपालदास का हिस्सा उसके पुत्र जगन्नाथ को और केसवदास का हिस्सा कान्हदास को मिला। (७२/६०)

बाद में जब जगनाथ गोपालदासोत और कछवाहा राजा रामदास के बीच वैमनस्य हुआ तब संवत १६५८ में जगनाथ का हिस्सा राजा सूरजसिंह को दे दिया गया। उन दिनों कान्हदास केसवदासोत के आदमी शहर की कोटड़ी में रहा करते थे, तथा राजाजी का कामदार मालकोट में रहता था। संवत १६६१ में कान्हदास का स्वर्गवास हुआ तब मेड़तिया सरदार मुगल दरबार में गये परन्तु बादशाह ने इन्दरभाण को उत्तराधिकार देना स्वीकार नहीं किया और कान्हदास का भी हिस्सा सूरजसिंह को दे दिया। वह जीवन पर्यन्त उनके अधिकार में रहा। (७३/६१-६२)

संवत १६७६ में जब सूरजसिंह का स्वर्गवास हुआ तो मेड़ता तागीर होकर शाहजादे खुर्रम को हुआ। अबू अमीन होकर आया। संवत १६७६ में शाहजादे ने परगने के गांव अपने उमराव चाकरों को बांट दिये सो दो वर्ष तक इसी तरह रहे। २०४ गांवों से कस्बा भीम अमरावत सीसोदिया को था। (७३/६३-६४)

संवत १६७६ में राजाजी के जागीरदारों ने माल घासमारी वसूली की थी। इस सम्बन्ध में रा० गजसिंह खींवावत अबू के पास आकर २० दिन मेड़ते रहा तथा रुपये ५०,०००) दिये। (७४/६५)

संवत १६७६ में शाहजादा खुर्रम जहांगीर के विरुद्ध हो गया तब महाराजा गजसिंह बादशाह से चाटसू के पास आकर मिले। राजाजी के मनसब में हजार जात की वृद्धि की गई। अजमेर सूबे के खालसे के सभी परगने परवेज की जागीर में हुए, उनमें मेड़ता भी शामिल था। मेड़ता परवेज ने सैयद को जागीर में दिया। फिर राजसिंह खींवावत ने प्रयत्न करके शाहजादे की ओर से ही मेड़ता राजाजी को दिलवाया। संवत १६८० भादवा वदि ८ को उनकी ओर से कान्ह खींवावत तथा भंडारी लूणा ने मेड़ते में अमल दस्तूर किया। रु० २,००,०००) में मेड़ता राजाजी को दिया गया था। (७४-७५/६६-६७)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संवत १६८२ में दक्षिण में महाबतखान परवेज की सहायतार्थ नियुक्त था। खुरासानियों के बहकावे में आकर बादशाह ने उसे दरबार में आने के लिये फिदाईखान के मारफत फरमान भेजा। उस समय फिदाईखान के साथ राजसिंह खींवावत दरबार में उपस्थित हुआ और मेड़ता शाही मनसब में पचास हजार रुपये खोजा के कहने से बढाकर ढाई लाख रुपये में राजाजी को प्रदान किया गया। (७६/६८)

संवल १६८९ में जब आसपखांन के साथ राजा गजसिंह दक्षिण में नियुक्त थे तब उक्त खान से राजाजी की अनबन हो गई। उसने दरबार में आने पर राजाजी के विरुद्ध बादशाह को शिकायत की तब पचास हजार रुपये की मेड़ते की रेख में वृद्धि करदी गई। (७६-७७/६९)

संवत १६९४ में जब राजा गजसिंह का देहान्त हुआ तो जसवंतसिंह गद्दी पर बैठा। उस समय उन्हें मेड़ता पचास हजार रुपये और बढ़ाकर साढे तीन लाख रुपये में प्रदान किया गया। (७७/७०)

परगने मेड़ते की पैमाइश संवत १६३० में किरोड़ो मूले ने की थो। उसके अनुसार जमीन की स्थिति इस प्रकार है—

कुल धरती बीघा—२६,१२.९५६
पहाड़, जंगल, नदी आदि—२,१५,४३०
बाकी उपयोगी भूमि—२३,९६,४२५
(७७/७१)

पटी वार प्रत्येक तफा की धरती की विगत उपरोक्त हिसाब से। (७८/७२)

परगने मेड़ते की सालाना कुल आमदनी की सूची संवत १७०१ से लेकर संवत १७२० तक। (७८-७९/७३)

मेड़ते परगने की तफावार आमदनी की सूची संवत १७०१ से १७२१ तक।
(७९-८२/७४)

परगने मेड़ते की खालसा की आमदनी की विगत संवत १६९२ से संवत १७१७ तक। (८२-८३/७५)

परगने की आबादी संवत १७२० में नैणसी द्वारा कूती गई—२५१२ महाजन घर, ३६९ ब्राह्मण, ५३ कायस्थ, १ खत्री टोडरमल (तोडरमल), १९०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजपूत, २९२ सिपाही (मुसलमान), ८ गेरूतबाव ईसर के लड़के, २१२४ अन्य निम्न जातियों के घर, ११ फकीर घरबारी लोग। (८३-८६/७६-७७)

परगने में कानूगोओं के हिस्से में बंटी हुई पट्टियों की विगत—

१॥ पट्टी पंचोली रूपचंद सूरजमल भींवाणी के।

१॥ पट्टी पंचोली हरवंस मांणक भंडारी के।

४ पट्टी छतरसिंह जादवदास जोगीदास अणंदोसा के पुत्रों के।

१ पट्टी कानूगा करमचंद गंगाराम के।

१ पट्टी कानूगा गूजरमल के लड़के पोतों के।

इस प्रकार कुल ९ पट्टी। (८६-८८/७८)

परगने मेड़ते में लिया जाने वाला जमीन का लगान व अन्य करों की विस्तृत विगत महाराजा गजसिंह के समय से लेकर जसवंतसिंह के समय की (सं० १७१९)। (८८-९८/७९-८५)

परगने मेड़ते के गांवों की सीमा पास के परगनों के जिन-जिन गांवों से लगती है उसकी तालिका। (९८-१०६/८६-८८)

परगने में ब्राह्मणों, चारणों, देवस्थानों, भाटों तथा पीरजादा को दिये गये ग्रामों की विगत— राव बरसिंह जोधावत से लेकर जसवंतसिंहजी तक।

गांव	रु०	आसामी
१५॥	७७००)	ब्राह्मणों को
२	१३००)	देवस्थान
१	५००)	पीरजादा को
२७	१५०००)	चारणों को
१	२००)	भाट को
४६॥	२४७००)	(१०७-११५/८९-९०)

श्री फलोदी माताजी के मंदिर की हकीकत—यह मंदिर प्राचीन काल में राजा मानधाता का बनवाया हुआ माना जाता है। मालवदेश में जब शेरखान बादशाह का राज्य था तब उसके हुक्म से हिन्दू मंदिर गिराये गये तब इसका भी कुछ भाग खंडित किया गया। इसका जीर्णोद्धार राव जोधा के समय में हेमराज सुराणा ने करवाया। इसके पूर्वज बड़े प्रसिद्ध दानी थे। सं० १५५५ में इसकी प्रतिष्ठा का दस्तूर किया गया। (११५-११६/९१)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परगने के प्रत्येक गांव की विस्तृत विगत, तफा वार—

तफा	गांव	आबाद	सूने	दान दिये हुए
हवेली	१२	१०	०	२ (११६-१२०/६२)
आणंदपुर	३६	३३	३	३ (१२०-१२६/६३-६४)
मोकाला	४५	३४॥	२	८॥ (१३०-१४१/६५-६६)
कलरा	४४	३२	८	४ (१४१-१५३/६७-६६)
राहण	५६	३८	७	११ (१५३-१६६/१००-१०३)
मोडरो	४१	३७	०	४ (१६६-१७६/१०४-१०३)
अलतवा	३८	३०	४	४ (१७६-१८६/१०४-१०७)
देघाणा	५१	४०	६	५ (१८६-१६६/१०७-१०६)
रेयां	५८	४४	१०	४ (१६६-२१३/१०६-११०)

परगना सिवाणा

यह जोधपुर से दक्षिण में है। जोधपुर से ३० कोस तथा जालोर से १५ कोस पड़ता है। धरणीवाराह ने अपने भाई भोज को जालोर दिया था। उसके लड़के पंवार वीरनारायण ने पहाड़ी पर सिवाने का गढ़ बनवाया, संवत् १०७७ में। इसके बीच में भांडेलाव नामक बड़ा तालाब है। किले में विशेष इमारतें बनी हुई नहीं है। (२१५/१)

पंवारों से यह गढ़ चहुवानों के अधिकार में गया। कान्हड़दे ने यह स्थान अपने भतीज सातलसाम को दिया था। बादशाह अलाउद्दीन इस पर

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चढ़कर आया तो उसने छोटा-सी पहाड़ो पर यह किला देखा और इसका जीतना सहज जानकर इसका नाम सीवाणा रखा। पहले नाम कुंभटा था। गढ़ के रक्षार्थ सातलसोम के साथ राव तोडा यहां काम आया था। (२१५-२१६/२)

फिर माला सलखावत ने मुगलों से छीनकर यह गढ़ रा० जंतमाल सलखावत को दिया सो ६ पीढ़ी तक जंतमालों के सिवाना रहा। (२१६/३)

तत्पश्चात राव जोधा ने देवीदास से छल करके गढ़ पर अधिकार किया। अपने पुत्र सिवराज जोधावत को इसका प्रबंध सौंपा। देवीदास भटकता हुआ सांचोर आकर रहा और घुघरोट के भायलों की सहायता लेकर किले पर पुनः अधिकार कर लिया। सिवराज दूनाड़े चला गया। (२१७-२१८/४-५)

कुछ दिनों बाद राणा देवीदास की मृत्यु हो गई तब गद्दी पर राणा जोगा बैठा। जोगा के बाद करमसी अधिकारी हुआ और उसके बाद डूंगरसी गद्दी पर बैठा। इस पर जोधपुर का शासक राव मालदे चढ़ आया। डूंगरसी ने गढ़ में रहकर कई महीने मुकाबला किया परन्तु अन्त में संवत् १५६५ आषाढ़ वदि ८ को गढ़ पर मालदे का अधिकार हो गया। मालदे के बाद कुछ समय के लिये रायमल मालदेओत को मिला। फिर चन्द्रसेन ने गढ़ अपने अधिकार में ले लिया। (२१८-२१९/६-७)

कुछ समय बाद बीकानेर के राजा रायसिंह व शाहबाजखां ने गढ़ को आ घेरा। राव भी वहीं था। मुकाबला हुआ। फिर संवत् १६३२ में गढ़ उन्हें सौंप दिया। कई दिनों तक मुगलों का अधिकार रहा फिर वे खाद्यान्न की कमी के कारण उसे खाली कर गये। संवत् १६३५ में डूंगरपुर से आकर चन्द्रसेन फिर यहां रहने लगा। सं० १६३७ में उसकी मृत्यु हुई। रायमल भी जल्दी ही मरा। (२१९/८)

कल्याणदास तथा प्रतापसिंह मुगल दरबार में उपस्थित हुए तब इन दोनों भाइयों को सिवाना दिया गया। मोटा राजा ने शाहजादे को अपनी लड़की ब्याही तब वहां कल्याणदास से झगड़ा हो गया जिसके फलस्वरूप बादशाह नाराज हो गया और उसने चढाई का हुक्म दिया। कला ने वीरता से मुकाबला किया और अनेक योद्धाओं सहित काम आया। गढ़ पर सं० १६४६ में कब्जा हो गया। (२१९-२११/८-१०)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीवाने परगने व उसके गांवों की रेख की सूची। (२२१-२२३/११-१२)

कस्बे सीवाने की आबादी संवत् १७२१ के वर्ष में–राजपूतों के घर ९५, महाजनों के ८१, ब्राह्मणों के २५, मुसलमानों के ४० तथा अन्य निम्न जातियों के ४२, कुल बस्ती घर २८३। (२२३-२२४/१३)

गांवों की सूचियें बसने वाली जातियों की प्रमुखता के अनुसार। सूने गांव तथा सांसण के गांवों की विगत। (२२४-२३२/१४-१८)

परगने के गांवों की विस्तृत विगत उपरोक्त वर्गीकरण के अनुसार।
(२३२-२६६/१९-२१)

परगने के सांसण (दान में दिये हुए) के गांवों की विस्तृत विगत।
(२६६-२७७/२३-२४)

परगने के गांवों से पास के परगने की सीमाएँ लगती हैं उनकी तालिका।
(२७८-२८०/२५)

परगने के खालसा के लगान की आमदनी की विगत संवत् १६९२ से १७१७ तक। (२८०/२६)

खालसा जागीर सांसण आदि कुल मिलाकर परगने की आमदनी।
(२८१/२७)

सूकड़ी नदी के बहाव का हाल, जिन-जिन गांवों में होकर बहती है उनके नाम। (२८१/२८)

परगने के गांवों का वर्गीकरण–जहां सिंचाई होती है, जहां पानी भरने से गेहूं आदि होते हैं, जहां केवल सावणू एक ही फसल होती है, गांव जो सूने हैं।
(२८२-२८५/२९)

सांसण के गांवों की सूची, दान देने वाले शासकों के क्रम से।
(२८६-२८८/३०)

परगना पोकरण

प्रारम्भ में यह शहर पुष्करणा ब्राह्मणों के पूर्वज पुष्कर ऋषि के द्वारा बसाया गया था। पुष्कर ऋषि जब यहां आकर बसा तो पानी की बड़ी कमी

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थी, उसने वरुण की आराधना की जिससे शहर के आस-पास पानी की अधिकता हुई। (२८९-२९०/१-२)

प्राचीन काल में यहां पर रवा पंवार राज्य करता था, श्री लक्ष्मीनारायणजी का मंदिर उसी का करवाया हुआ है। उसके लड़का नहीं था। उसकी मृत्यु के पश्चात् नानग छावड़ा गद्दी पर बैठा जो बड़ा प्रसिद्ध वीर हुआ। उसका लड़का महि धवल हुआ। उसके समय में भैरवा राक्षस का बड़ा उत्पात था, उसके श्राप से पंवारों का राज्य समाप्त हुआ। (२९०-२९१/३-४)

इसके पश्चात् कई वर्षों तक यह धरती सूनी रही। महेवा में जब रांव माला राज्य कर रहा था तब रामदेव पीर के पिता अजैसी ने उससे स्वीकृति लेकर पोकरण को बसाया। भैरवा राक्षस को पराजित कर रामदे ने वहां से उसे सिंध की ओर चले जाने का आदेश दिया। राठौड़ जगमाल मालावत के पुत्र हमीर के साथ रामदे की पुत्री का विवाह हुआ तब पोकरण उसे देकर रामदे रामदेवरे आ रहा। हमीर के बाद उनका राज्य तीन पीढ़ी तक यहां रहा। (२९१-२९२/५)

वरजांग का पुत्र राव खींवा निर्बल शासक था। उस समय तक पोकरण के किले की पोल के दरवाजे तक नहीं थे। नरा सूजावत उन दिनों फलोदी रहता था, उसने अवसर देखकर पोकरण पर अधिकार कर लिया। खींवा ने आकर उसके बहुत से जानवर घेर लिये। नरा ने पीछा किया और मुठभेड़ होने पर मारा गया। इस पर सूजा स्वयं फौज लेकर आया और दूर-दूर तक माला के गांव लूटे तथा पोकरण का टीका नरा के पुत्र गोयन्द को दिया। नरा ने पोकरण के पास पहाड़ी पर सातलमेर बसाया था। गोयन्द १५६० में गद्दी पर बैठा। कुछ वर्षों बाद पोकरणों ने रामदेवरे के पास से अनेक गायें घेर ली तब गोयन्द ने उनका पीछा किया। कोढ़णे के पास १४० पोकरणों को मारा और लूंका को पकड़ लिया। फिर लूंका से मेल करके पुराना बैर भुलाकर पोकरण के दो हिस्से कर दिये। सातलमेर अपने पास रखा और पोकरण लूंका को दी। सातलमेर में उस समय ५०० घरों की बस्ती थी। (२९२-२९३/६-७)

गोयन्द की मृत्यु (सं० १५८२) के पश्चात उसका पुत्र जेतमाल गद्दी पर बैठा। यह योग्य शासक नहीं था। जैसलमेर के रावल मालदे की पुत्री से उसका विवाह हुआ था। इसके प्रधान ने कुछ बनियों को बहुत

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सताया, उन्होंने जोधपुर के मालदे से फरियाद की जिसके फलस्वरूप मालदे फौज लेकर चढ आया। केवल ५ दिन जैतमाल मुकाबले में टिक सका और गढ मालदे को सौंप कर जैसलमेर चला गया। (२६३-२६४/८)

मालदे ने संवत् १६०७ में सातलमेर को ध्वस्त करवाया और पोकरण में पुराने गढ के स्थान पर नया गढ करवाया। पोकरण मालदे के अधिकार में जीवन पर्यन्त रही। उसके बाद चन्द्रसेन जब जोधपुर छोड़ कर पीपलण के पहाड़ों में चला गया तब पोकरण के किले में चहुवान रामा झांझणोत आदि सरदार रहते थे। उन दिनों राठौड़ मानसिंह कछवाहों की सहायता से गढ पर चढ आया। चन्द्रसेन भी सूचना मिलते ही पहुँचा और मानसिंह को भगा दिया। (२६५/११)

बादशाह ने भाटी भाखरसी हरराजोत को पोकरण प्रदान की। उस समय चन्द्रसेन मेवाड़ में था। भाखरसी ने आकर गढ़ के घेरा दिया। २ महीने तक बहुत प्रयत्न करने पर भी भाखरसी को सफलता न मिली और वह चला गया तब हरराज ने भींव को २००० योद्धाओं सहित भेजा। गढ़ के लोगों ने मुकाबला किया। इसी बीच लोगों ने बातचीत करवा कर एक लाख रुपियों में पोकरण इन्हें अडाणी (रहन) दिलवादी। तत्पश्चात चन्द्रसेन अन्य सघर्षों में व्यस्त रहने के कारण पोकरण की खबर न ले सका। (२६६-२६७/१२)

संवत् १६३८ में मोटा राजा को जब बादशाह अकबर ने जोधपुर दिया तब सातलमेर भी मनसब में लिखा गया। परन्तु वहाँ उसका अमल (राज्याधिकार) न हुआ। (२६७/१३)

सूरजसिंह जब गद्दी पर बैठा तो मनसब में सातलमेर एक लाख दाम में लिखी गई। राजा ने कुंवर गजसिंह को सेना देकर पोकरण पर अधिकार करने को भेजा पर बादशाह ने मना कर दिया, अतः अधिकार न हो सका। (२६७-२६८/१४)

महाराजा जसवंतसिंह को ६ लाख दाम में मनसब में पोकरण दी गई। जैसलमेर का मनोहरदास पोकरण का स्वामी था। उसका देहान्त हो गया तब बादशाह की स्वीकृति लेकर फौज की तीन टुकड़ियाँ तीन अधिकारियों - गोपालदास, वीठलदास और नाहरखान के सेनापतित्व में गढ प्राप्त करने को

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भेजी। मु. नैणसी भी साथ था। भाटियों के ३५० योद्धा उस समय किले में थे। कई दिनों तक युद्ध होता रहा, अनेक भाटी काम आये। अन्त में काती वदि ५ को महाराजा का किले पर अधिकार हो गया। मुहणोत नैणसी को वहां के थाने पर सुरक्षा के लिये अनेक योद्धा देकर रखा। (२९८-३०८/१५-१७)

पोकरण १५०००) की आमदनी का परगना है। इसमें रुपये ५०००) की आमदनी संवत् १७१६ में राहगीर व्यापारियों से वसूल किये गये कर से हुई थी। (३०८/१८)

पोकरण समतल व ठोस भूमि पर बसा हुआ है। मालदे ने जो गढ़ करवाया वह १५ गज ऊँचा है। इसे जगह-जगह रावळ भींव व कल्याणमल ने भी ऊँचा करवाया था। कोट में कुल २१ बुर्जें हैं। पहले एक ही पोल थी। महाराजा ने परकोटे की एक पोल और करवाई जिसे जसपोल कहा जाता है। कोट २०० गज चौड़ा और २०० गज ही लम्बा है। इसमें एक कुंआ था, एक बावली है। १०० घर भाटियों के अन्दर बसते थे। मन्दिर एक जैन, एक देवी का तथा एक चावंडा की मूर्ति है। कोट के चारों ओर ४ गज गहरी और पांच गज चौड़ी खाई है। (३०८-३०९/१९)

पोकरण शहर की आबादी का अनुमान इस प्रकार है—३१० महाजनों के घर, ५० करसों के घर, ५० ब्राह्मणों के, ३० भोजग डोहकिया, तथा दूसरे अन्य जातियों के। इस प्रकार कुल घर ५५७ हैं। (३१०-३११/२०)

शहर में मन्दिर व जलाशय आदि इस प्रकार हैं—चत्रभुजजी का मन्दिर, सूरजजी का मन्दिर, देवीजी का मन्दिर (शहर से आधा कोस दक्षिण में), महादेवजी का मन्दिर, बालनाथजी का स्थान। जलाशय—डूंगरसर (शहर से १ कोस उत्तर में), नरासर (शहर से १½ कोस ईशान में), मेहरलाई (पूर्व में आधा कोस दूर), रूखी री तलाई, सुदाताधी तलाई, संघरलाई, मोखासर (इस पर नरा की छतरी बनी हुई है), रामदेसर, धरणीसर (पोकरण से डेढ कोस), लीगासर (पूर्व में ३ कोस दूर)। बावलियें—कुंभार वाय, मोहण वाय, नीबली, सरंग वाय, मेहा वाय, बीस वाय, मदागण, भाखर वाय, कोहरियो, खांडी वाय, वछेसर, बाली बावड़ी, थड़ी वाव, सता वाय, देहाऊग वाय, खांखो री वाय, मोखासर आदि। ५ बावड़ियें दान दी हुई हैं। (३११-३१५/२१-२४)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नदी एक, पोकरण से दक्षिण की ओर (जो कुम्भारों का बाहळा कहाता है) कोट के नीचे से बहती है। इससे अनेक खेत भरते हैं। एक बड़ा जोड (चरागाह) है। इसमें खूब घास होती है। पीर रामदे का स्थान गढ में है क्योंकि पहले यहां रामदे की कोटड़ी थी। तीर्थ एक तृवाय कुंड है।
(३१५-१६/२५

पोकरण की जमीन का व्यौरा—सावणू खेती से सभी अनाज अच्छे पैदा होते हैं। ५ गांवों में सेंवज से २००० मन के करीब गेहूँ होते हैं। ५०० मन गेहूँ बावलियों पर होते हैं। (३१६/२६)

५ गांवों में नमक पैदा होता है—पोकरण, दांतसुई, लोहमे, धुहड़सर, आवणेसे। (३१६/२७)

परगने के गांवों की सूचियें जातियों की बस्ती के अनुसार।
(३१६-३१९/२८)

पोकरण से अन्य शहरों की दूरी—जोधपुर ४० कोस, जैसलमेर ३५ कोस, फलोदी १६ कोस, नागौर ६० कोस, बीकानेर ५५ कोस, महेवो ३५ कोस आदि। (३२०/२९)

परगने के गांवों से अन्य परगनों के गांवों की सीमा लगती है उसकी तालिका। (३२०-३२२/३०)

परगने की आमदनी, जमीन के लगान व मेले तथा सांसण के गांवों की, संवत् १७११ से संवत् १७१९ तक। (३२२/३१)

महाराजा जसवन्तसिंह का अधिकार होने के पश्चात् पोकरण परगने की आय संवत् १७०७ से संवत् १७१५ तक। तथा १७०७ से १७१५ तक नियुक्त हुए हाकिमों के नाम। (३२२-३२३/३२-३३)

श्री रामदेवजी के दो मेले वर्ष भर में लगते हैं—१. भादों में, २. माघ में। इनसे होने वाली आमदनी की सूची संवत् १७०७ से संवत् १७२०। पोकरणा राजपूतों की जसवन्तसिंह के समय में स्थिति पर टिप्पणी।
(३२३-३२४/३५-३६)

परगने की आमदनी के साधन तथा विभिन्न करों की विगत।
(३२५-३२७/३७-३८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परगने के गाँवों की विस्तृत विगत। (३२७-३४८/३९-४१)

सांसण दिये हुए गांवों की विगत, ब्राह्मणों व चारणों को।

(३४८-३५५/४२-४३)

पोकरण का परगना शाही दफ्तर में सातलमेर लिखा जाता है। १७२१ में मु० नैणसी व पं० नरसिंघदास ने ४० गांवों की रेख शुद्ध करके लिखी। (३५६-३५७-/४४)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

टिप्पणियाँ : प्रथम भाग

[महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा स्थानों आदि पर टिप्पणियाँ]

परगना जोधपुर

मंडोवर (प्र० १/अनु० १)—यह जोधपुर से ५ मील उत्तर की ओर है। इसका अस्तित्व ईसा की ४ शताब्दी से माना जाता है। शिलालेखों में इसका नाम माण्डव्यपुर लिखा मिलता है। यहाँ का दुर्ग अब ध्वस्त हो गया है परन्तु प्राचीन कला के कुछ सुन्दर नमूने अब भी देखे जा सकते हैं। राव रिडमल और कुछ समय तक जोधा की राजधानी यहाँ रही। जोधपुर राजधानी हो जाने के पश्चात् भी महाराजा तखतसिंह तक के शासकों का दाह-संस्कार इसी स्थान पर हुआ है। उन पर बड़े भव्य स्मारक बने हुए हैं। वर्तमान में यहाँ बड़ा आकर्षक उद्यान बना हुआ है।[1]

नव कोटि (१/२)—यहाँ उल्लिखित नव कोटों के आधार पर ही मारवाड़ को 'नव कोटी' मारवाड़ कहा जाता था और इसका क्षेत्र बड़ा विस्तृत माना गया है।[2]

नाहड़राव—इस शासक के सम्बन्ध में प्राचीन ख्यातों में अनेक वृत्तान्त मिलते हैं। इसने मंडोवर का दुर्ग सुदृढ़ करवाया तथा पुष्कर का तालाब खुदवाया। मारवाड़ का नारलाई ग्राम तथा आसोप के पास नाहड़सर तालाब भी इसी के बनाये हुए कहे जाते हैं। यह बड़ा प्रतापी शासक था।

लाखो फूलाणी (५/६)— यह यादवों की जाड़ेचा शाखा का शासक था, कच्छ भुज में इसका राज्य था। अपनी दानशीलता के कारण कर्ण के

---

१. विस्तृत जानकारी के लिये देखें 'जोधपुर राज्य का इतिहास' (प्रथम खण्ड) डॉ० ओझा, पृ० २४।

२. द्रष्टव्य—'नव कोटां री विगत"—मारवाड़ रा परगनां री विगत भाग २, पृ० ५००।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समान आज भी याद किया जाता है। मारवाड़ की ख्यातों में भी यह वृत्तान्त मिलता है कि लाखा की मृत्यु सीहा के हाथ से हुई। रासमाला के प्रणेता फारबस ने भी यहो संभावना प्रकट की है।[1] परन्तु ओझाजी के अनुसार दोनों शासकों के समय में कोई २०० वर्षों का अन्तर है, इसलिये सीहा के हाथ से लाखा की मृत्यु होना कपोल कल्पना ही है।

राव सीहा (६/१४)—जोधपुर की रीत किरियावर की बही[2] में लिखा है कि महेश्वर महादेव ने सीहा को मारवाड़ में उसके वंशजों का राज्य होने का वरदान दिया था। अतः बाद में आसथान ने यहाँ नीलकंठ महादेव का मन्दिर बनवाया जिसे सीहेश्वर महादेव भी कहते हैं।

रायपाल (१५/२२-२३)—रायपाल बड़ा दातार शासक हुआ। उसने रोहड़िया चारणों को अपना प्रोल पात्र बनाया। इस प्रसंग का एक प्राचीन गीत भी मिलता है—"बारै सौ समत बासठै..................... दीधा नेग तदी कमधां पत रायपाल रीझे महाराव"। नैणसी ने यहाँ यह मत व्यक्त किया है कि मगा बुध को रायपाल ने रोहड़िया चारण बनाया तब से यह शाखा चली। परन्तु यह बात विचारणीय है क्योंकि रायपाल से पहले ऊनड़ जाम हो गया जिसने रोहड़िया शाखा के सांवलसुद कवि को कोड़ समाई देकर सम्मानित किया था। सांवल बारहठों की १२ शाखाओं में से १ शाखा का प्रवर्त्तक भी माना जाता है।[3]

पूजनीक (वृक्ष) (२०/३१)—यहाँ पूजनीक शब्द से तात्पर्य जोधों के पूजनीक वृक्ष फरास से है। मारवाड़ की ख्यात में लिखा है कि वीरम ने उक्त वृक्ष को कटवाकर उस पर ढोल मंडवाया और उसे बजाया तब जोयों ने इस अपमान को सहन नहीं किया जिसके फलस्वरूप युद्ध हुआ जिसमें वीरम मारा गया। इसका वर्णन बादर ढाढ़ी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ वीरमायण[4]

---

१. रासमाला (प्रथम भाग) अनु० गोपालनारायण बहुरा, पृ० १२५।

२. राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी का संग्रह।

३. मुहणोत नैणसी री ख्यात (भाग २) रा० प्रा० वि० प्र०, पृ० २३६ तथा मुरारीदान की ख्यात रा० प्रा० वि० प्र०, पृ० २६।

४. वीरमायण—संपादिका रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

में बड़े रोचक ढंग से किया है। वीरम का बैर गोगादे ने दला को मार कर लिया।

आल्हा चारण (२१/३२)--इस कवि का यह दोहा चारण समाज में आज भी प्रचलित है—

चूंडा ना आवै चीत, काचर काळाऊ तणा।
भड़ थहियौ भैभीत, मंडोवर रै माळिये।।

सालोड़ी ग्राम (२२/३४-३५)—यह ग्राम जोधपुर से उत्तर पश्चिम में २० मील की दूरी पर है, उसके पास मालूंगा तथा बालरवा ग्रामों के बीच बाड़ी के पहाड़ों में होकर नदी बहती है। वहाँ चामुण्डा का प्राचीन मन्दिर और चूंडा-वावड़ी अब भी विद्यमान हैं।

गांगदेव री बेटी लीला (२५/३६)—गांगदेव की लड़की की शादी चूंडा से करके ईंदों ने उसे मंडोवर सौंपीं, इसकी साक्षी का दोहा इस प्रकार है—

चूंडो चंवरी चाड़, दियौ मंडोवर दायजै।
ईंदां रौ उपकार, कमधज कदे न विसरै।।

चूंडो काम आयो (२६/४१)—नागौर में चूण्डा के काम आने के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों में मतभेद है परन्तु नागौर परगने के हाल में चूंडा का नागौर के टुकछा ग्राम में काम आना लिखा है।[1]

नरबद सतावत (२६/४३)—नरबद राणा के प्रसिद्ध सामन्तों में हुआ। नरवद और सुप्यारदे की बात प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख नैणसी ने इस ग्रन्थ में अन्यत्र किया है।

अचलदास खीचो (२८/४७)—यह गढ गागरून का प्रसिद्ध शासक हुआ। इसके विषय में लिखी हुई शिवदास गाडण की वचनिका[2] तथा लालां मेवाड़ी और अचलदास खीची री बात प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियाँ हैं।

---

१. मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २), पृ. ४२१।

२. संपादक : दीनानाथ खत्री, शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भीम चूंडावत (३१/५१)—यह चूंडा का पुत्र था। इसके पट्टे में सालावास, नन्दवाणा, गुड़ा मोगड़ा, भावी, लांबा और भुंडली ये सात गाँव थे। उसके तीन पुत्र थे—वैरसल, वरजांग और वीजा।[1] उसकी प्रशंसा में एक प्राचीन सोरठा इस प्रकार है—

हुओ कियां ही हार, जैत हुओ क्यां ही जुडण।
बेदल बापूकार, भींवा तैं भेला किया॥

वरजांग भींवोत (३१/५१) यह भींव चूंडावत का पुत्र था और अपने समय का बड़ा रजपूत हुआ। इसने राव रिड़मल जोधा और सत्ता के समय में बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी। इसीलिये इसकी प्रशंसा में इसे 'एक पाखर लाख पाखर' कहा जाता है। जोधा जब चित्तौड़ से निकला तो बरजांग उसके साथ था। भीलवाड़े के घाटे के पास जो घमासान युद्ध हुआ उसमें घायल होकर गिर गया। शीशोदिये इसे उठाकर चित्तौड़ ले गये क्योंकि वह उनका भानजा था। राणा ने उसे किले में नजरबंद रखा। बरजाँग के घावों पर पट्टी बांधने के लिये उसके सेवक रोज १२ गज रेजी (मोटा कपड़ा) लाया करते थे। जब घाव ठीक होने को हुए तो रेजी के बचे हुए टुकड़ों का रस्सा बनाकर सेवकों ने वरजांग को किले की दीवार पर से सीधा नीचे उतार लिया और गुप्त रूप से एक बैलगाड़ी लेकर वहां से निकल भागे। रास्ते में गागुरन के तालाब पर डेरे किये और संयोग से अचलदास खीची की पुत्री के साथ उसका विवाह भी हुआ।

फिर यह जोधा से आ मिला। जोधा ने जब मंडोर पर अधिकार कर लिया तो इसे रोयट का पट्टा दिया। राणा की फौज वहां उस पर चढ़ आई थी परन्तु उसने बड़ी वीरता से उसका मुकाबला किया और घायल होने पर भी फौज को भगा दिया। कहते हैं कि इस युद्ध में उसके गर्दन की एक हड्डी तलवार के झटके से टूट गई थी उसकी जगह कैर की लकड़ी डाल कर उसे दुरस्त कर दिया था। उस कैर का पूजन बाद में भी उसके वंशज करते थे।

---

१. द्रष्टव्य—मुरारीदान की ख्यात, ग्रंथांक १५६७२, रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

एक बार जब इसकी घोड़ियें महेवा के शासक वीदा के पुत्रों ने पकड़ली तो इस बात पर दोनों पक्षों में बड़ी लड़ाई हुई। अनेक योद्धा मारे गये।

राव सातल के समय में कोसाणे के पास मलूखां से जो युद्ध हुआ उसका सफल संचालन बरजांग ने ही किया था और सातल की उसमें विजय हुई थी। इस अवसर पर भावी का पट्टा उसे दिया गया था।

राव बोका ने जो जोधपुर पर सूजा के समय में चढ़ाई की थी उसमें भी बरजांग का हाथ बताया जाता है।

वरजांग के परिवार की विगत[1]—

१. सुरजण वरजांगोत, राणा की फौज से लड़कर काम आया।
२. कला सुरजणोत बड़ी लड़ाई में काम आया। सालावास, नंदवाणा तथा डूंगरपुर इसके पट्टे में थे।
३. अखैराज कलावत, फलोधी काम आया। सालावास तथा नंदवाणा पट्टे में थे।
४. मेघराज कलावत, सालावास पट्टे में था।
५. राघोदास मेघराजोत।
६. सुन्दरदास राघोदासोत।
७. बलू मेघराजोत तथा मना मेघराजोत।
८. लूणा अखैराजोत, तणावड़ा दोनों पट्टे में थे।
९. केसोदास लूणावत।
१०. जसा लूणावत, राधणपुर काम आया।
११. नरसिंघदास लूणावत, लक्ष्मीदास लूणावत।
१२. लधा लक्ष्मीदासोत।
१३. सांकर कलावत।
१४. सांवल सांकरोत।
१५. कूंभा सांवलोत।
१६. देवा कलावत।

---

१. मुरारीदान की ख्यात, ग्रंथांक १५६७२, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१७. महेसदास देवा का ।

१८. भाखरसी महेस का ।

१९. जेधा, वाघा, वीरमदे महेस के ।

२०. सुरताण देवा का ।

२१. माना सुरताण का दौलताबाद काम आया ।

२२. रामसिंह मानावत—बीकानेर की लड़ाई में काम आया ।

२३. बीजा सुरजनोत—सेवकी को लड़ाई में काम आया ।

२४. हमीर बीदावत ।

२५. दला सुरजनोत, जबा सुरजनोत सिरियारी में राव राम के लिये काम आया ।

२६. राका जबावत मांडते काम आया, सावराड़ पट्टे में था ।

२७. माधा रासावत ।

२८. बलू माधा का ।

२९. आसा रासावत ।

३०. तोगा आसावत ।

नापा साँखला (३१/५१)—यह राणा कुंभा का भी कृपापात्र था । जोधा को मंडोवर पुनः प्राप्त करवाने में इसने बड़ी सहायता दी थी ।[1]

हरभू (३३/५६)—मारवाड़ के प्रसिद्ध ५ पीरों में इसका नाम लिया जाता है । यह साँखला राजपूत था और सकुन शास्त्र का अद्वितीय जानकार होने के नाते बहुत प्रसिद्ध था । भाटी जैसा इसका भानजा था ।

लूणा (३४/५७)—यह देवराज चूंडावत का पुत्र और सेत्रावे का मालिक था ।

राव जोधा ने राणा री धरती उजाड़ी (३६/५८) – इसकी साक्षी का प्राचीन कवित्त इस प्रकार है :

जेथ हुआ धरपाल, तेथ उडै राखोड़ा ।
बैठा जित सारंग, तेथ बंधाता घोड़ा ।
मांडीती मंडूसी, बचा तित घूघू जाया ।
घरंत नित चौपग्गा, बेड तिण बाघ बिवाया ।
अजमेर अनै आबू बिचै, माणस वीसं चाडिया ।
कमधज्ज राव कुंभे तणा, जोधे देश उजाड़िया ॥

१. देखें, डॉ॰ टैसेटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण, सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी, पृ० ३० ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चानण खिड़िया (३७/५६)—यह खिड़िया शाखा का चारण था। इसने रिड़मल का दाह-संस्कार करवा कर रिड़मल के पुत्रों पर उपकार किया था। इसकी साक्षी का एक दोहा उपलब्ध होता है—

> चोबीसूं रिड़माल रा, धर खांटण वड़धूत।
> परतक पात पचीसवां, है तूं चन सपूत॥

तिंवरी के पुरोहित दामा को भेज कर राव जोधा ने इसे अपने पास बुलाया और मारवाड़ में जागीर दी। जोधा के वंशजों ने भी इसके बेटे पोतों को खूब गाँव दिये, जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ में आगे किया गया है। विशिष्ट अवसरों पर इसके वंशज चानण खिड़िया की मोहर नेग के रूप में राठौड़ों से लेते रहे हैं।

चिड़ियाटूंक रै भाखर ऊपर गढ़ मंडायो (३८/६०)—संवत् १५१५ में जब जोधा ने जोधपुर का किला इस पहाड़ी पर बनवाया तब वहाँ चिड़ियानाथ नामक तपस्वी तपस्या कर रहा था। उसे जब वहाँ से हटने को कहा गया तो वह नाराज होकर वहाँ से उठ गया और उठते समय अपनी धूनी के अंगारे झोली में डालकर वहाँ से चलता बना। लोगों ने उसे पहुँचा हुआ महात्मा जान कर वहीं रहने की विनती की परन्तु वह न माना और सालावास तक जाकर रुका। जनता ने वहीं पर उनकी धूनी लगवाई और राज्य की ओर से कुछ भूमि अर्पित की गई। चिड़ियानाथजी के झरणे के पास उनके चरणों की पूजा पालासणी के पीर अभी तक करते रहे हैं। चारण समाज में यह धारणा है कि गढ़ की स्थापना के अवसर पर करणीजी ने स्वयं पधार कर जोधा को आशीर्वाद दिया था। इसकी साक्षी का एक प्राचीन गीत भी मिलता है—

> विमल देह धरयां, सगत जंगळ धर बिराजै,
> थान देसांण श्री हुयां थाया।
> उठै कवि मेजियो, राव करवा अरज,
> जोधपुर पधारै जोगमाया॥

कुछ ख्यातों में यह भी उल्लेख मिलता है कि गढ की नींव आदि का मुहूर्त हडभूजी ने बतलाने को कहा था और जोधा को कहा था कि वह अपने किसी पुत्र को सकुन पूछने के लिये प्रातःकाल उसके पास भेज दे।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परन्तु किसी कारणवश जेसा को ही मुहूर्त पूछने के लिये भेज दिया। हड़भू ने उसे मुहूर्त बतला दिया और बाद में राव जोधा से कहा कि जैसा के मारफत यह मुहूर्त तुम्हारे पास पहुँचा है अतः तुम्हारे शासन में जैसा भाटियों का महत्वपूर्ण स्थान रहेगा।

अखैराज रिणमलोत (३८/६२)—इसने चरड़ा को मार कर बगड़ी पर अधिकार किया। इसके दो पुत्र मेहराज और पंचायण हुए। प्रसिद्ध वीर कूंपा मेहराज का पुत्र था और जैता पंचायण का। बारठ देवकरण (इन्दोकली) के अनुसार अखैराज रिणमल का पाटवी पुत्र था परन्तु जोधा योग्य होने के कारण अखैराज ने जोधपुर की गद्दी का दावा नहीं किया, और बगड़ी लेकर ही संतोष कर लिया। तब से जोधपुर को गद्दी पर बैठने वाले शासक का राजतिलक करने का अधिकार बगड़ी वालों को मिला।

सातल-जोधाउत (३९/६३)—इसने जोधपुर की गद्दी पर लगभग चार वर्ष राज्य किया। मुरारीदान की ख्यात के अनुसार उसके सात राणियें थीं। उसकी मृत्यु होने पर सातों ही सती हुई। उसकी राणी फूलां भटियाणी ने फूलेळाव तालाब बनवाया। उसकी एक राणी हरखाबाई का राज्यघराने में अब भी पूजन होता है।

सूजा जोधावत (३९/६३)—सातल की मृत्यु के पश्चात् सूजा गद्दी पर बैठा क्योंकि सातल के कोई पुत्र न था। सूजा का परिवार—

१. नरा सूजावत—यह सातल के गोद था। इसने सातलमेर का पोकरण में कोट करवाया इसके वंशज नरावत कहलाये।

२. सेखा सूजावत।
अखैराज सेखावत—सेखाजी के साथ सेवकी के युद्ध में काम आया।

३. देईदास सूजावत—यह चौहानों का भानजा था। यह भी सेवकी के युद्ध में उपस्थित था। किन्तु सरदारों ने सेखाजी के काम आने पर उसे वहां से निकाला। मुरारीदान की ख्यात के अनुसार राणा विक्रमादित्य की सेवा में यह चित्तौड़ में लड़ता हुआ काम आया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४. कान्ह देईदासोत यह बागड़ में काम आया। अचलदास कान्होत—इसको मोटा राजा ने बागड़ से बुलाकर रोहट का पट्टा दिया।

५. बलभद्र अचलदासोत—संवत् १६६७ में रोहट की जागीर इससे जब्त हुई।

६. केशवदास अचलदासोत—इसे सं० १६६५ में पीपाड़ का गाँव जाल्हका चार गाँवों सहित पट्टे में मिला। संवत् १६७७ में सिवाने का गाँव मोतीसरा तीन गाँवों से मिला।

७. वेणीदास अचलदासोत—बलभद्र के पास रहता था।

८. मानसिंह देईदासोत—जब अकबर बादशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तब यह राणाजी की ओर से लड़कर काम आया।

९. जैता मानसिंहोत—इसको परगने सोजत का गाँव नीबली ४ गाँवों से पट्टे था। फिर पीपाड़ का गाँव लोहारी तीन गाँवों से पट्टे में रहा।

१०. हरदास देईदासोत—यह खीचीवाड़े में रहता था। इसका पुत्र रामसिंह मुगलों से लड़ कर काम आया था। रामसिंह का पुत्र चाँदा खीचीवाड़े के गाँव रीछवा में रहता था।

११. पृथ्वीराज हरराजोत—यह मानसिंह कछवाहा के विरुद्ध बादशाह की फौज से लड़कर काम आया।

१२. साँगा सूजावत—यह ऊदाजी का सहोदर भाई था। इसका पुत्र तिलोकसी बड़ा वीर हुआ और पठानों के विरुद्ध लड़ कर काम आया। इसका पोता सांवलदास मांडवा के युद्ध में १६६२ में काम आया।

नींबा जोधावत (३९/६३)—यह सोजत में रहता था तथा जैसा सिंधल की भानजी से ब्याहा था। जैसा सिंधल ने जब जनता को गायें ले जाने का प्रयत्न किया तब नींबा बाहर चढ़ा। गाँव डोभडी के पास उसने सूजा को मारा। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि वह शिकार करते समय घोड़े से गिर कर मरा। सोजत के बाघेळाव तालाब में उसकी छतरी स्मारक स्वरूप बनी हुई है। इसके कोई पुत्र नहीं था।

जोधो गया गयो (३९/६३)—ख्यातों में लिखा है कि इस अवसर पर उसने वहाँ के शासकों से गायों की चराई माफ करवाई और चारणों तथा ब्राह्मणों को बहुत-सा दान दिया।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भारमल जोधावत (३६/६३)—इसे वीरणे की जागीर दी गई थी। जोधाजी की मृत्यु होने पर गंगाजी में उनकी अस्थियों का प्रवेश करने का संस्कार इसके हाथ से हुआ था। इसका पुत्र जयसिंघदे अयोग्य था। इसलिये उसका अधिकार वहां से छूट गया और राव गांगा ने ऊहड़ो को वहाँ का पट्टा कर दिया। इसके वंशजों में वलू तेजसिंहोत, पृथ्वीराज वलूओत हरीदास बलूओत आदि प्रसिद्ध वीर हुए।

सिवराज जोधावत (३६/६३)—इसको दुनाड़ा गांव दिया गया था। इसके वंशजों में हमीर डूंगरसिंहोत, भाखरसी डूंगरसिंहोत आदि प्रसिद्ध योद्धा हुए। अचला शिवराजोत मालदे के समय में शेरशाह का मुकाबला करता हुआ जोधपुर गढ़ पर काम आया, उसकी छतरी वहाँ बनी हुई है।

जोगा जोधावत (३६/६३)—यह भारमल का सगा भाई था। इसके बारे में ख्यातों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि जोधा के बाद कुछ लोगों का विचार जोगा को गद्दी पर बिठाने का था परन्तु गद्दी के मुहूर्त तक वह तैयार नहीं हुआ और बनठन कर आने में देर करने लगा। तब लोगों ने उसको अयोग्य समझ कर सातल को टीका दे दिया। यह खारिये ग्राम में रहता था। इसका पुत्र खंगार बड़ा दानी हुआ। वह नित्य प्रति चारणों को दान में घोड़ा देता था। जब घोड़े उसके पास न रहे तब वह बैल देने लगा। उसकी इस मजबूरी को किसी चारण ने बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है—

घोड़ा दे थाको घण दानी।
खारिये खोपा दिये खंगार॥

कुंवर बाघो सूजावत (४१/६६)—मुरारीदान की ख्यात में इसे लक्ष्मी का पुत्र बताया गया है। यह कुंवरपदे में ही मर गया था। मृत्यु के समय इसने यह इच्छा प्रकट की थी कि मेरे पुत्र को राजगद्दी मिलनी चाहिये। इसी ख्यात के अनुसार बाघा के ७ पुत्र थे—गाँगा, सीधण, भींव, वीरमदे, जैतसी, प्रतापसी और खेतसी। इनमें से गाँगा को राजगद्दी दी गई। इसके सात ही पुत्रियें थीं। इनमें से तीन राणा सांगा को ब्याही गई थी। बाँकीदास की ख्यात से भी इसकी पुष्टि होती है[1]।

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान की हस्तलिखित प्रति, पत्रांक १४।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इसकी एक पुत्री कछवाहा सूजा को ब्याही गई थी। जिसका पुत्र रायसल कछवाहा हुआ।

मालदे जोधपुर गढ़ संवरायो (४२/७१)—देखें इसी भाग का परिशिष्ट ५६०-६२।

राव मालदे धरती लीवी (४२/७१)—इस सम्बन्ध में प्राचीन पाँच कवित्त उल्लेखनीय हैं—

> महि सोजत ली माल माल लियो मेड़तो।
> माल लियो अजमेर सीम सांभर सहेतो।
> बाँको गढ बदनोर माल लीधौ दल मेलै।
> राइमाल रायपुर लियो, भाद्राजण मेलै।
> नागोर निहेवे चढिन लै, खाटू लीधौ जड़खणो।
> तव आण हुवौ गाँगा तणौ, धीग मालदे सँधणी ॥१॥
>
> लोड़ लियो लाडनू, दुरंग लीधौ डीडवाणौ।
> नगर फतेपुर नाम, आप वसि कियौ अपाणौ।
> कमधज लई कोसली, रुक बळ लियौ रेवासौ।
> चांप लई चाटसू, मूक्यौ वीरभांण मेवासौ।
> जड़लग पांण जोधपुर लीयौ, गह छोडे कुंभो गयो।
> मालदे लियो मदारपुर, लियो टूंक तोडो लियो ॥२॥
>
> चित्रकोट चांपियौ, पाली बणवीर लियौपुर।
> अनड़ दुरंग अणखलं ढौं लीधा करि सिधर।
> लोहां बळ लोहगढ़, जेखल नाडुल जोजावर।
> रहल उदेसी रांण, नगर ले कीधा निजर।
> घुणली राई कुंभमेर घर हाथो माल जे बस हुवै।
> एक हुवो छत्र बाघा हरो, भोग माल सहि भोगवै ॥३॥
>
> जुड़ लीधो जाळोर, पांण सांचोर पजाए।
> भीनमाल भंजियो, विरद मोटा बुलाए।
> बीकानेर विधूंस लीध, पोहकरण फळोधो।
> करी माल कोपियो, सीम समुद्रां सही सुधि।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आंण फेर लगे उमर नयर, पारकर सर पधरें।
मालदे देस मालों तणा, बस कीधा बाघा हरं ॥४॥

कमंध लियौ कोटडो, काढ पह कोटड़ केरा।
गा दुरंग गाहटें, मालदे बाहड़मेरा।
छहटरण होछरलाई, खुंद खांवड खुरताले।
साज सींध सामई, हाथ विखाळ बंगाले।
आंण फिर लगं उमर नयर, पारकर कर पधरं।
माल देस मालां तणा, बस कीधा बाघाहरं ॥५॥

ऊमादे भटियाणी (४७/७४)—यह जैसलमेर के रावळ लूणकरण की पुत्री थी और राव मालदे को व्याही गई थी। इसी राणी को एक रूपवती दासी भारमली पर मालदे मोहित हो गया था। उमादे को यह बात बरदास्त नहीं हुई और उसने ससुराल जाने से इनकार कर दिया। आसा बारट ने इनका मेल करवाने का प्रयत्न किया पर वह असफल रहा। कछवाई राणी लाछळदे का पुत्र राव राम इसके पास रहता था। मालदे की मृत्यु होने पर यह केलवे ग्राम में सती हुई और राव राम से कहा कि मेरे सती होने का संस्कार पूर्ण करके यहां से विदा होना, तुझे जोधपुर का अधिकार मिलेगा। परन्तु राव राम बीच में ही भागकर जोधपुर चला आया, जिससे गद्दी का अधिकारी नहीं बना। बारट आसा ने इसके सतीत्व की प्रशंसा में बड़े सुन्दर कवित्त कहे हैं। यह राणी इतिहास में रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है।

बारट आसो (५३/८३)—यह प्रसिद्ध कवि ईसरदास का चाचा था। इसकी स्फुट डिंगल रचनाएं उपलब्ध होती हैं, जिनमें बाघा भारमली के दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं। कहते हैं कि बाद में बाघा से उसकी बडी मित्रता हो गई थी। इसलिये मालदे का आश्रय उसे छोड़ देना पड़ा था। राव मालदे की प्रशंसा में उसके लिखे कवित्त अवलोकनीय है।

कवण किसन पति सबळ काळ पति कवण अंग जित।
प्रिथी पति कुण वांणपत, सुरपति कवण सतेजसी।
कवण नाथ पति जति कवण, केसव पति दाता।
सीतापति कुण सति कवण, लखमण प्रति भ्राता।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सबल को अवर सुझै नहीं जांचि गंजै पेसयल जण।
हिन्दुआं मांहि औ हिंदवौ, मालपति मोटौ कवण ॥१॥

माल काळ मछराळ माल जमजाळ त्रिभै मन।
माल जांण महिरांण सेन जळि माल संपूरण।
सबळ माल अरिसाल माल भंजण मेवासा।
गज थाटां गाहणौ गिलण गढ कोटां ग्रासा।
सुरतांण रांण संकोडिया, सझि लीधा देसहि सहि।
मालदे सीस छत्र मंडियौ, माल हुवौ मंडलीक महि ॥२॥

रावल मेघराज (५४/८६)—यह महेवा के स्वामी मलोनाथ के वंशज हापा का पुत्र था। इसे संवत् १६४० में मोटा राजा उदयसिंह ने महेवा का अधिकार प्रदान किया। यह गुजरात की चढ़ाई में मोटा राजा के साथ गया था। इसके उपलक्ष में जोधपुर के उल्लिखित गाँव मोटा राजा ने और दिये थे। मुरारीदानजी की ख्यात में दुन्दाड़े का भलड़ों का वाड़ा नामक ग्राम भी इस अवसर पर देने का उल्लेख है। यह वीरमदे कलावत को महेवा सौंप कर मथुराजी चला गया था। वहीं संवत १६४७ में उसका स्वर्गवास हुआ।

राव मालदे को राणियें (५५/८८)—मुरारीदान की ख्यात में मालदे की २४ राणियों के अतिरिक्त आठ पड़दायत आठ वेश्याएँ तेरह गायिकायें भी थीं। मालदे का स्वर्गवास होने पर इनमें से अनेक उसके साथ सती हुई।

शेरशाह पातशाह से युद्ध (५६/८८)—इसका विस्तृत वृत्तांत भाग दो में मेड़ता के इतिहास में देखो।

अखो सोनगरो (५६/८८)—अखैराज सोनीगरा अपने समय का जबरदस्त वीर हुआ। यह पाली का स्वामी था। इसने अनेक युद्धों में भाग लिया था। इसका लड़का मानसिंघ सोनीगरा भी राणा की ओर से लड़ता हुआ हल्दीघाटी के युद्ध में काम आया था। अखैराज के सम्बन्ध में यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि इसकी दोनों पत्नियों में से उसके पीछे कोई सती नहीं हुई थी। कोई छः महीने बाद उनके गाँव में एक कवि पहुँचा, और बातों ही बातों में उसने एक दोहा सुना दिया—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जैतो तो कूंपै रं जीमै, पाळं है गोत पखो ।
सायधण बिन दोरौ, सोनीगरौ हाथे रोटी करे अखो ।।

अखा की स्त्रियों के कानों में इस दोहे की भनक पड़ गई और उसी समय उन्हें सत चढ़ आया । विधिवत ढंग से तैयार होकर वे सती हुई । जोधपुर राजघराने की ओर से विशेष घरेलू अवसरों पर इनकी छतरियों पर पूजन सामग्रो भेजी जाती थी[1] ।

तिलोकसी वरजांगोत आदि (५८/८८)—यह शेरशाह के हमले के समय जोधपुर का किलेदार था । रक्षा का कोई उपाय न जानकर इसने दुर्ग के द्वार खोल दिये और अपने कुछ साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हुआ ।

उल्लिखित इन प्रसिद्ध वीरों के अतिरिक्त मुरारीदान की ख्यात में भाटी जयमल रूपसीहोत के काम आने का विशेष उल्लेख किया गया है । इसने जोधपुर के किले की रक्षार्थ प्राण देने का दृढ़ निश्चय कर रखा था । इसीलिये गढ पर पहले से ही छतरी बनवा रखी थी । इसके वीरतापूर्ण उत्सर्ग पर किसी कवि ने मार्मिक गीत कहा है—

जसवास जठ जुग चार न जावै, दूदं जिम जेसाण दुभाल ।
जादव नग हेम सुं जड़ाणौ, जोधनयर माथै जयमाल ॥१॥
नरवदहरौ बिया निकळतां, कोट राख गळहार फिर ।
जग में भले कहाणो जयमल, सहित कनक जोधाण सिर ॥२॥
रूपसीह रौ छांड राठोडां, मछर दाख जयमाल मुवौ
भुरजां कमधां रे राव भाटी, हिरण कंठीर जड़ाव हुवौ ॥३॥

ऊगो वरसिंग रौ (६३/६३)—ऊगा व हापा महेवा से मालदे की सहायता के लिये आये थे । हापा के पास ८०० सैनिक थे । ये दोनों सगे भाई थे । ऊगा अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध वीर था । मुरारीदान की ख्यात में उसका विरुद 'कोरत पाल' लिखा है । हापा इस युद्ध में बुरी तरह घायल हुआ था । यहाँ दी गई सूची के अतिरिक्त उक्त ख्यात में भाटी तेजसी वणवीरोत का नाम भी है । इस युद्ध में बहुत-सा खजाना भी राव मालदे के हाथ लगा ।

---

१. देखें, मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग दो, परिशिष्ट, पृष्ठ ४५१ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव चन्द्रसेण गढ छोडियो (६६/१०३)—ख्यातों में लिखा है कि चन्द्रसेण जब गढ से उतरने लगा तब साही सेनापति हसनकुली को माँ ने उसे देखकर बड़ा स्नेह व्यक्त किया और उसे पुत्रवत जान कर हसनकुली से कहा कि राव को सामान आदि लेजाने के लिये इसका यथोचित प्रबन्ध करो।

विशेष—ख्यातों के वृत्तान्त से पता लगता है कि राव चन्द्रसेण जीवन भर इधर-उधर भटकता रहा और युद्ध करता रहा। परन्तु उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। यदि चन्द्रसेण के सहयोगी कुछ विशेष वीर निरन्तर सहयोग देते तो उसे अपने उद्देश्य में शायद कुछ सफलता भी मिलती। इस दृष्टि से निम्नलिखित गीत पठनीय है—

ग्रह न सके ग्रहै उग्रहै ग्रहियां, दाखै चन्द दुडंद दुवै।
सेखड़ा साम सनाह सरीखौ हेक कनै जो मींच हुवै ॥१॥
अघड़ गिले किम सुजण आपणा, कहै किरणपत सोम कथा।
एकाध पह जिसो उदावत, हेक हुवे जो खड़ग हथ ॥२॥
राह गिले किम कहै सोम रवि, मुड़ें असुर ग्रह तेम मुड़ें।
सुभट रियां रिणमाल सरीखो, जवण हार जो इसो जुड़ें ॥३॥
ससिहर कहै संपेखो सूरज, अधड़ करै इम ग्रहण अनैक।
सूर कलह गुर सिखर सारिखो, आयां बिहुँ न मिळियो एक ॥४॥

कलांणदास रायमलोत (७५/१२०)—यह उन प्रसिद्ध शासकों में से हुआ है जिसके नाम के पीछे उसकी राजधानी भी गौरवान्वित हुई है। इसीलिये सिवाणा कला रायमलोत वाला कहा जाता है। सिवाने के वृत्तान्त में इस युद्ध का कुछ विस्तृत वृत्तान्त दिया गया है। प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज ने इसके वीरतापूर्ण युद्ध, अकबर के सामने न झुकने की प्रवृत्ति और प्राणोत्सर्ग से प्रेरित होकर बड़ी सुन्दर काव्य-रचना की है।[1]

भाटी गोयन्ददास मानावत (७७/१२५)—यह जैसा के वंशजों में मारवाड़ का प्रसिद्ध सामन्त हुआ। इसका पूर्वज नीम्बा जैता कूंपा के साथ समेल के युद्ध में काम आया था। बाँकीदास की ख्यात में लिखा है कि गोयन्ददास सूरसिंघ के कंवरपदे से ही प्रधान था। लवेरा ग्राम इसकी जागीर

१. अधिक जानकारी के लिये देखें मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग (२) का परिशिष्ट, पृष्ठ ४४०-४४३।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

में था। फिर सूरसिंघ ने आसोप भी इसके पट्टे में दे दिया था। इसके ५ पुत्र थे जिन्होंने समय-समय पर राज्य की बड़ी सेवाएँ की और उन्हें स्वतन्त्र जागीर मिली। यह लम्बे समय तक सूरसिंघ का प्रधान रहा, और अनेक युद्धों में भाग लिया, जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ में आगे किया गया है। गोयन्ददास की सबसे बड़ी देन जोधपुर राज्य के प्रबन्ध सम्बन्धी नियम बनाकर उन्हें क्रियान्वित करना हैं। इसने शाही ढंग के प्रशासन के आधार पर ३६ कारखानें (विभाग) कायम किये और परगनों में हाकिम, कारकून पोतदार, वगैरह अधिकारी रखने की व्यवस्था की व उनकी कार्य-प्रणाली निश्चित की। सरदारों व मुत्सद्दियों के परिवार के किले में आने जाने के भी नियम बनाये। इसने चार डावी और चार जोवणी मिसलें भी बांधी। जिवणी मिसल के सिरे पर आउवा के चाँगवतों को रखा और डावी मिसल के सिरे पर मेड़तियों को। उनका कुरब आदि भी इसने निश्चित किया। दीवान और व्यास डावी मिसल में रखे गये और बक्सी तथा पुरोहित जीवणी मिसल में। इन नियमों में समय के अनुसार हेर-फेर भी होते रहे हैं। गोयन्ददास के वर्चस्व पर एक प्राचीन दोहा इस प्रकार है—

गोयन्ददास गरजियो सूर हंदे वारै।
ऊथापै सो ऊथपै मेवासा मारै॥

यह अजमेर में किशनसिंह के हाथ से मारा गया था जिसका वृत्तांत आगे दिया गया है।

बारठ अखो भांणरो (७८/१२७)—यह डिंगल का प्रसिद्ध कवि था। इसका पालन-पोषण राज घराने की ओर से ही हुआ था और वह प्रायः राज-दरबार में ही रहता था। इसीलिये इस अवसर पर चारणों को समझाने के लिये उदैयसिंह ने इसे भेजा था। परन्तु इसने परस्थिति को देखकर धरणे में शामिल होना ही उचित समझा। उसके इस आचरण से राजा उदयसिंह और अधिक नाराज हुआ।

चन्द्रसेण लोहावट वेढ जीती (८३/१३३)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि विजय प्राप्त कर लेने पर चन्द्रसेण ने उदयसिंह का पीछा करना चाहा था परन्तु उसके सहयोगी सरदारों के कहने सुनने से उसने यह विचार त्याग दिया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घोड़ों री दांण पगां उपाव हुग्रो (८४/१३४)—नैणसी ने अपने वृत्तान्त में इस विवाद को प्रकट करते हुए यह नहीं बताया है कि वास्तव में घोड़ों की कतार पर दाण लेने का अधिकार फलोदी वालों का था या बीकुपुर वालों का। एक अन्य प्राचीन पोथी में ऐसा संकेत मिलता है कि वास्तव में दाण का अधिकार फलोदी वालों का ही था।

ग्रासकरण देवीदासोत (९०/१४५)—यह अपने समय का बहुत बड़ा प्रशासक व वीर हुग्रा। संवत १६४२ में अकबर जब लाहौर से काबुल गया तो सूरसिंह के साथ यह भी शामिल था।

सबलसिंह सूरजसिंघोत (९५/१४९)—राजा सूरसिंघ के दो ही पुत्र गजसिंघ और सबलसिंघ सूरसिंघ की मृत्यु के समय जीवित थे। इसको फलोदी का पट्टा दिया गया था। बाद में इसको मोडासा का भी पट्टा दिया गया। यह अच्छा शासक हुग्रा ग्रौर बादशाह की ग्रोर से इसको राजा का खिताब मिला हुग्रा था। इसके सात राणिय थीं। इसकी मृत्यु ग्रहमदाबाद में हुई, जहां यह बादशाह की ग्रोर से नियुक्त था।

सगतसिंघ उदयसिंघोत (९५/१५४)—सगतसिंह को राजाजी ने हून गांव का पट्टा दिया था। इसके ग्रतिरिक्त प्रमुख चाकरों में धाय भाई गहलोत मोटा, मुहणोत, व्यास, गोयन्द, भंडारी, कला भींवोत, ६ खवास, बीस दासियें, घोड़े पचास, घोड़ियें दस, रोकड़ रुपये एक हजार एक १००१) दिये थे। फिर जब इसे शाही दरबार में प्रस्तुत किया गया तो इसे पंच सदी मनसबदारों में रखा गया ग्रौर नैणवाय तथा खेजड़ली यह दो गाँव भी दिये। इसने ग्रागरा में हाथियों की लड़ाई में बड़ा वीरतापूर्ण चमत्कार बताया था, जिससे बादशाह ने खुश होकर इसका सम्मान बढाया ग्रौर फूलिया तथा केकड़ी का पट्टा दिया ग्रौर सोजत की जागीर भी दी। इस ग्रवसर पर उसे रावई का खिताब दिया गया। एक वर्ष बाद जब सोजत पुन: सूरसिंघजी को देदी गई तो सोजत में रावजी के प्रबन्धक राठौड मांण जैतमालोत ने सोजत का ग्रधिकार सौंपा ही नहीं ग्रौर जबरदस्ती करता रहा। फिर बाद में सोजत की एवज में जैतारण मिला। इसने पंवार भूपत को हराया था जिसकी साक्षी का यह दोहा है—

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गढ गिरवर गंजेह, पड़ै हवाई पाँच सौ।
ग्यौ भूपत माजेह, सगता आगळ साँग रौ॥

सगतसिंह के सात पुत्र थे—करण, हरीसिंह, प्रतापसिंह, मानसिंह, कानजी, देईदास और गिरधरदास। इन में करण डेढ हजारी शाही मनसबदार हुआ। गांव खरवा इसके पट्टे में था। अन्य भाई और उनके वंशज छोटे बड़े मनसबदार हुए।

अमर चम्पू ने राजाजी वेढ दी (९६/१५६)—बादशाह ने जब सूरसिंह को अमर चम्पू पर चढाई हेतु विदा किया तब उसने हरावल में रहकर रायसल दरबारी के पुत्र गिरधरदास और खानखाना के पुत्र ईरिज आदि साथियों सहित जबरदस्त युद्ध किया और विजय प्राप्त की। अमरचम्पू का लाल निशान सूरसिंघ ने छीन लिया। इस पर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ और सूरसिंघ को पुरस्कृत किया। मारवाड़ के झंडे में लाल रंग को तब से स्थान दिया गया।

जोशी चंडू, दामोदर (९८/१५९)—मूंदियाड़ की ख्यात में लिखा है कि जब मालदे पूंगल के भाटियों के यहाँ विवाह करने गया तब भाटियों ने अपना पुराना वैर लेने के लिये राव को मार डालने का षडयंत्र रचा। मालदे की नव-विवाहिता भटियाणी राणी को इसका पता लग गया। तब उसने अपने राजगुरु पुष्करणा पुरोहित राघव से विनती की कि वह किसी तरह मालदे को इस खतरे की सूचना देकर उपकृत करे। राघव ने ऐसा ही किया और एक बड़ा अनिष्ट होते-होते बच गया। राणी ने राघव की भावी सुरक्षा को ध्यान में रखकर उसे अपने माता-पिता से दहेज में माँग लिया और अपने साथ जोधपुर ले आई। राघव के दो पुत्र चंडू और दामोदर थे। ये दोनों ही ज्योतिष-विद्या के प्रकाण्ड पण्डित हुए। ये और इनके वंशज जोधपुर राज्य के जोशी वेदिया रहे और राजकीय पंचांग (चण्डू पंचांग) का निर्माण इन्हीं के द्वारा होता रहा है।[1]

राणी सौभागदे (९९/१७९)—यह शेखावत दुरजनसाल की पुत्री थी। इसका

१. मूंदियाड़ की ख्यात, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ सं० ७२-७३।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विवाह १६४४ में हुआ था। इसके पुत्र गजसिंह का जन्म १६५२ में लाहौर में हुआ। संवत् १६६६ में बुरहानपुर में इसकी मृत्यु हुई। इसे महाराजा सूरसिंघ ने संवत् १६५२ की माहसुद ५ को राणीपदा दिया। दस्तूर की विगत—

पटो १ भावी, गागांणी १, देवातड़ो १, बासणी १, बामसणो १, बीलावस १, बोडुंदो १, थवूकड़ो १, चोखां १, औ पटो पावतां गाँव ६ रो।

२०२६) रुपीया मांणसां रै कणोता रा पावता, इतरी मोहरां पावै तिण री विगत—

१)) लूण उतारण री	१)) गैणा रा कोठार वाळा री
१)) रतनजी पोसाल वाला	१)) पोळियो पावै
६)) पीरोयतजी पावै	१)) माळी पावै
१)) वेदीयो पावै	१)) फरासां नु
१)) गांछा नुं	।।)) सांणी नुं
१)) बारीया नुं	१)) कंदोई नुं
।।)) हाथी रा मावत नुं।	।।)) कहार सुखपाळ रा नुं।

बड़ा उमरावां री बहुवां ने भारी वागा ने मोर १)) अतलस १ परकाळो २ नाळेर दीजैं।

उणांसु छोटा उमरावां री बहुवां ने बागो ५) रोकड़ नै मीसरु १ परकाळो १ नाळेर १।

उणांसुं छोटा उमरावां री बहुवां नै बागो २) रोकड़, मीसरु १।

सासुवां नणदां नै पगै लागणी देवै तिण री विगत १)) मोर परकाळो लाल अतलस रो जणी दीठ राणीजी देवै।

सासवां, बायां, खवासां, पातरियां, पहैरावणी करैं तरै बागा सासुवां नुं नणद नुं बेटियां नुं तथा कडूंबै सुखमैल हुवै तठै मेलै।

धाय बडारण नु सांपट बागा देवै।

मोटा कामदारां नु दुसाला थीरमा मीसरु दिरीजै नै बीजा सगळा मुसद्दी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खवास पासवान नै साड़ी दीजै, पोल नुं सांपट ग्रौछाडीजै, पोळीया नुं साड़ो, पाग दीरीजै, ढोल दमाम दरग्राई सु ग्रौछाड़ीजं, इतरी मोर परत ७)) लेखै माया री दीवी।

६००) श्रीजी दिराया रांणीजी नुं ।
७) पारचा जबांन सांबा ।
७) जोसो पोकरणा सीरीमाळी समसतां नुं ।
७) वेदैग राय नै तिलक रा ।
७) पटवां नुं ७) सुथार नुं।[1]

सुरतांण मानावत(६६/१६०-६१)—यह भाटी गोयंददास का भाई था। महाराजा सूरसिंह की दक्षिण की चढाई में यह भी साथ था। वहाँ से इसने मारवाड़ में ग्राकर मुहता केसा को मार डाला। इस कसूर के बदले गोयंददास ने उसे देश से निकाल दिया। सुरतांण राणा सगर के पास जाकर उसका चाकर हुग्रा। गोपाळदास राठौड़ ग्रादि ने बाद में इस पर चढ़ाई करके इसे मार डाला। इसके बदले में गोयंददास ग्रौर कुंवर गजसिंह ने गोपाळदास को भी मार डाला। गोपाळदास किसनसिंह उदयसिंहोत का भतीज होता था। इसलिये वह ग्रपने भतीजे का बैर लेने का मौका देखता रहता था। ग्रजमेर में जब उसे यह ग्रवसर मिला तो उसने गोयंददास को मार डाला, ग्रौर स्वयं भी ग्रनेक ग्रादमियों सहित मारा गया। मारवाड़ की ख्यात में इस विषय में लिखा है कि उस समय बादशाह भी ग्रजमेर में था इसलिये किसनसिंह ग्रादि ने जाकर ग्रर्ज की कि गोयंददास ने गोपाळदास को मार डालने का ग्रपराध किया है। इस पर बादशाह ने कहा कि तुम इसे मार डालो। किन्तु ग्रोझाजी ने जहाँगीरनामा में से इस संदर्भ का उल्लेख करते हुए मारवाड़ की ख्यात के कथन को ठीक नहीं माना है।[2]

राजसिंह खीमावत (१००/१६१)—राजसिंह खीमावत ग्रासोप का स्वामी था। इसका जन्म संवत् १६४३ में हुग्रा। महाराजा सूरसिंह ने इसके बड़े भाई

---

१. रीत किरियावर री बही जोधपुर री, पृष्ठ सं० ६६।
२. जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ३८१।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कानसिंह से जागीर जब्त कर इसे अधिकार दिया। इसने महाराजा के प्रधान भाटी गोयंददास की देखरेख में रियासत की जानकारी प्राप्त की। महाराजा ने इसकी सेवाओं से खुश होकर मेड़ते का गाँव ईडवा इसे जागीर में दे दिया। महाराजकुमार गजसिंह ने जब जालोर पर चढाई की तब यह भी साथ था। इसको आसोप का अधिकार संवत् १६७६ में मिला था। खुर्रम के साथ होने वाले युद्ध में यह भी गजसिंह के साथ हरावल में था। इस युद्ध में अच्छी वीरता दिखाने के कारण रड़ोद इसे जागीर में मिला। इस प्रकार अनेक युद्धों में भाग लेकर उसने राज्य में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। महाराजा जसवन्तसिंह जब गद्दी पर बैठे तब उनकी आयु लगभग १२ वर्ष की थी। अतः बादशाह की आज्ञानुसार राजसिंघ कूंपावत प्रधान के तौर पर मारवाड़ का कार्य देखने लगा और उसे शाही मनसब मिला। यह बड़ा स्वामीभक्त सेवक था। ख्यातों में लिखा है कि एक बार महाराजा जसवन्तसिंह जब रात को शहर में गश्त लगा रहे थे तो तापी बावड़ी में प्रवेश करने के कारण एक प्रेत उनके शरीर में प्रवेश कर गया और वे मूर्छित हो गये। जब अनेक मंत्र तंत्रादि का उपचार करने पर भी वे स्वस्थ न हुए तब वह प्रेत स्वयं बोला कि महाराजा के समान अधिकार वाला व्यक्ति हो अपनी जान देने को तैयार हो तो मैं इस शरीर से निकल सकता हूँ। तदनुसार एक जल का पात्र लाया गया और महाराजा के सर पर वार कर राजसिंह को दिया गया, क्योंकि वही महाराजा के समान अधिकार प्राप्त व्यक्ति था। कहते हैं कि पात्र का जल पीकर हवेली पर आते ही उनका प्राणान्त हो गया, और महाराजा जसवन्तसिंह स्वस्थ हो गये। राजसिंह का प्राणोत्सर्ग एक दोहे में इस प्रकार व्यंजित हुआ है :—

भल जसवन्त बचावियो, भड़ निज तन कर भंग।
दुनियां सारी दाखवे, राजड़ तोने रंग ॥१॥

आसोप की हवेली में राजसिंह के महल में अब भी पूजा होती है। इसने आसोप में अनेक भवन-निर्माण आदि कार्य करवाये। इसके आठ ठकुरानियों से ६ पुत्र और २ लड़कियां पैदा हुई थी[1]।

---

१. कूंपावतों का इतिहास, पृष्ठ २२०।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुंवर गजसिंह जालोर फतै की (१०२/१६६)—कुंवर गजसिंह के कुंवरपदे में किये गये सैनिक अभियानों में यह सब से महत्वपूर्ण है। गजसिंह की इस विजय के विषय में एक प्राचीन दोहा उल्लेखनीय है—

बारे वरसां अल्लाउदी, खप खूटो पतसाह।
चढिया घोड़ां सांहनगढ़, थें लीधो गजसाह॥१॥

भाटो गोपाळदास आसावत (१०५/१७)—यह पहले बादशाही चाकर था परन्तु १६७१ में मारवाड़ के शासक की ओर से गाँव दूधोड़ कई गांवों सहित इसे मिला। यह १६७७ में जालोर का हाकिम नियुक्त किया गया था[1], खेजड़ला ग्राम इसको बादशाह के आदेश के अनुसार सूरसिंह ने दिया, क्योंकि इसने खीमकरण मांडणोत तथा चाँपावत महेशदास आदि के साथ बादशाही खजाना लूटनेवाली मेवाड़ की सेना को भाटी गोयंददास की अध्यक्षता में पराजित किया था।

सीसोदिया भीम अमरावत (१०६/१७१)—यह राणा अमरसिंह का पुत्र था। खुर्रम ने संवत् १६७६ में इसे जालोर का परगना दिया था। और बाद में इसे मेड़ता भी दिया गया था। खुरम जब बादशाह के विरूद्ध बागी हुआ तब टूस नदी पर यह खुर्रम की ओर से संवत् १६८१ में राजा गजसिंह के हाथ से मारा गया। यद्यपि यहां गजसिंह का हरावल में नियुक्त होना लिखा गया है परन्तु ख्यातों में यह प्रकट किया गया है कि इस युद्ध में गजसिंह को हरावल में न रखकर जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह को हरावल में रखा गया था। इस कारण से गजसिंह रुष्ट होकर अपने पाँच हजार सैनिकों सहित एक तरफ खड़ा रहा। पर जब परवेज हारने लगा और भीम सीसोदिया ने अपनी विजय के गुमान में इसे ललकारा तब यह अपनी सेना सहित खुर्रम की फौज पर पिल पड़ा। भीम सीसोदिया ने इस युद्ध में अद्भुत पराक्रम बताया पर वह गजसिंह के हाथ से मारा गया। 'गज गुण रूपक' नामक ग्रन्थ में इन दोनों की वीरता का अच्छा वर्णन किया गया है। भीम की प्रशंसा में प्राचीन

---

१ बांकीदास ने इसके पुत्र दयालदास को भी जालोर का हाकिम नियुक्त करना लिखा है, बांकीदास री ख्यात पृ० १७७।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डिंगल गीत भी उपलब्ध होते हैं।[१] गजसिंह के चाँदावत राठौड़ रामदास, राठौड़ किसनसिंह खीमावत, राठौड़ नारायणदास कलावत, राठौड़ माधोदास रतनसिहोत आदि प्रमुख योद्धा काम आये।

मनभावती बाई (१०८/१७४)—यह कछवाही राणी सोभागदे की पुत्री और गजसिंह की सगी बहिन थी। इसका जन्म संवत १६५५ में हुआ था।

कछवाही राणी सूरजदे (१११/१८२)—यह आमेर के राजा भावसिंह की पुत्री थी। इसका विवाह मिर्जा राजा जयसिंह ने किया था। यह आगरे में महाराजा गजसिंह के साथ सती हुई थी। इसके एक पुत्री हुई थी जो अल्प अवस्था में मर गई थी।

राठौड़ किसनसिंह खीमावत (११३/१८२)—यह आसोप के ठाकुर खीमकरण का तीसरा पुत्र था। नाहड़सर व बड़लू इसकी जागीर में थे।

राणी प्रतापदे (१२३/१६६)—इसका पीहर का नाम रुकमावती बाई था। इसके नाना केसवदास ने महाराजा से इसका विवाह किया। संवत् १६६० जेठ सुदी १३ को लाहोर में इसका देहान्त हुआ। महाराजा ने संवत् १६७६ में इसको राणीपदा दिया था।

महेसदास सूरजमलोत (१२५/२०३)—महाराजा के प्रधान राजसिंह खीमावत की मृत्यु के पश्चात् संवत १६६७ में महेशदास को प्रधान बनाया गया।

रतन महेसदासोत (१२६/२०८)—यह बादशाह शाहजहाँ के प्रसिद्ध मनसबदारों में था। मालवा में रतलाम का राज्य इसी ने स्थापित किया था। बादशाह शाहजहाँ के पुत्रों के बीच गद्दी के लिए जो युद्ध हुआ, उसमें बादशाह की फौज में जसवन्तसिंह के अधीनस्थ शामिल होने वाले मनसबदारों में यह भी था। जसवन्तसिंह के युद्ध-भूमि त्यागने पर यह बड़ी वीरता के साथ लड़ता हुआ काम आया था। इस पर 'राठौड़ श्री रतनसिंह री वचनिका' और 'रतनरासो' नामक डिंगल के प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे गये हैं।

---

१ एक गीत की दो पंक्तियें यहाँ उल्लेखनीय हैं—
खादी मीम अठारे खोयण,
सो मीमो खादो गजसिंघ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिया फरासत (१२६/२०८)—यह महाराजा जसवन्तसिंह का बड़ा विश्वासपात्र अधिकारी था। कई परगनों की हाकमी करने के अतिरिक्त यह मारवाड़ का दीवान और मुसाहिब भी रह चुका था। जोधपुर की रीत किरिया-वर की बही से पता लगता है कि विशिष्ट घरेलू अवसरों पर जो दस्तूर बड़े से बड़े उमरावों का होता था वह इसे भी दिया जाता था।[1] यह महाराजकुमार का अभिभावक रहा।

पातसाही बहोर लूटी (१३५/२१३)—इतिहास-ग्रन्थों में लिखा है कि यह बड़ी विचित्र घटना थी। इस अवसर पर औरंगजेब की फौज का मनोबल एकदम गिर गया था। परन्तु औरंगजेब ने धैर्य नहीं खोया और वह खुदा को याद करता रहा। बाँकीदास की ख्यात में लिखा है कि इस अवसर पर २१ वाहन भरकर जसवन्तसिंह हुरम की लूट का सामान अपने साथ मारवाड़ ले गया था।[2]

राठौड़ नाहरखां (१३६/२१५)—यह आसोप का मालिक और राजसिंह का पुत्र था। नाहरखां इसका नाम कैसे पड़ा इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा ख्यातों में वर्णित है। बादशाह से किसी ने इसको शारीरिक शक्ति की बड़ी प्रशंसा की तब उसने महाराजा से कहा कि आपके शेर की मेरे शेर से कुश्ती होनी चाहिए। भरे दरबार में इसने शेर से कुश्ती की और उसे चीर कर रख दिया। बादशाह ने प्रसन्न होकर नाहरखां की उपाधि से इसे सम्मानित किया। वैसे इसका मूल नाम मुकन्ददास था और संवत् १६६८ में इसका जन्म हुआ था। यह महाराजा जसवन्तसिंह के प्रमुख सरदारों में से था। महाराजा ने जब कन्धार पर चढ़ाई की तब यह भी साथ था। राडधड़ा में महेचों के उपद्रव को दबाने के लिये मुहणोत जयमल के साथ यह भी चढ़कर गया था। सबलसिंह को जब जैसलमेर का अधिकार प्राप्त हुआ तब उसे जैसलमेर पर कब्जा दिलाने के लिये जो सेना गई, उसमें यह भी प्रमुख सेनाधिकारी था। उज्जैन के प्रसिद्ध युद्ध में यह वीरता से लड़ता हुआ घायल हुआ। इसने महाराजा की खूब सेवा की। इसकी मृत्यु विक्रमी संवत् १७१५ में हुई। आसोप में इसके स्मारक स्वरूप विशाल छत्री बनी हुई है।

---

१. मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २) परिशिष्ट ३, पृष्ठ ४५१।
२. बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ ३२।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

श्रोजो परणोजण नुं सिरोही पधारिया (१३८/२१९)—सिरोही में राव अखेराज की पुत्री अतिसुखदे देवड़ी से महाराजा की शादी हुई थी। जसवन्तसिंह की व्यस्तता के कारण से इस राणी को जोधपुर न ला सके। सिरोही के गाँव कालन्द्री में जब बालक अजीतसिंह मुकन्ददास खीची की देख-रेख में जग्गू पुरोहित के घर पाला-पोसा जा रहा था तब अप्रत्यक्ष रूप में इस राणी का संरक्षण उन्हें प्राप्त था, मूंदियाड़ की ख्यात में लिखा है कि जब अजीतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार किया तब उन्होंने इस राणी को जोधपुर बुलाया। यहाँ सूरसागर में उसने सोने चाँदी का तुला-दान किया व ब्रह्म भोज दिया तथा दान-पुण्य किया। सूरसागर के बाग में स्थित कीर्तिस्तम्भ में यह वर्णन अंकित किया गया है।[1]

देवी सांगवियां (१४०/२२३)—यह भाटियों को कुलदेवी मानी जाती है। किशोरसिंहजी बारठ के अनुसार काठियावाड़ के बल्लभीपुर (बला) नगर में सांउवा शाखा के चारण मम्मट के घर इनका जन्म हुआ था। यह अपनी पाँच छोटी बहिनों सहित अपने पिता के साथ सिंध में आकर रहने लगी। वहाँ के शासक उमर सूमरा ने उनके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की, जिस पर आवड़ ने अपने आपको महा शक्ति का स्वरूप घोषित कर उस राजा को कहलवाया कि अब तेरा अन्त निश्चय है। इसके पश्चात ये लोग जैसलमेर राज्य के अन्तर्गत तेमड़ा पर्वत की गुफा में आकर रहे। और उसने अपनी सांग (शस्त्र विशेष) के चमत्कार से उमर सूमरा का विध्वंश किया तथा सम्मा यादवों के राज्य की वहाँ स्थापना करवाई। सांग धारण करने के कारण ही इनका नाम सांगियां पड़ा।

कहते हैं कि सतलज नदी की एक शाखा उस समय सिंध में होकर बहती थी, जिससे वह प्रान्त बहुत-हरा भरा था। उमर सूमरा पर क्रुद्ध होने के कारण इस देवी के चमत्कार से उस नदी के पानी का रुख बदल गया और वह मुल्तान की ओर बहने लगा। तभी से यह कहावत प्रचलित हुई कि 'वह पानी मुलतान गया'। जैसलमेर इलाके

---

१. मूंदियाड़ की ख्यात, पृ० १३९।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

के तणोट स्थान के संस्थापक राव तणु ने इस देवी की बड़ी भक्ति की और एक मन्दिर बनवाया। राव तणु के पुत्र विजयराज की भक्ति से प्रसन्न होकर देवी ने अपने हाथ की सोने की चूड़ (चूड़ी) विजयराज को दी और उसे वरदान दिया कि अपने दाहिने हाथ में यह चूंड़ पहन कर लड़ेगा वहाँ तेरी विजय होगी। इसीलिये विजयराज चूड़ाला कहलाया और उसने भटिंडा पर विजय प्राप्त की।[1]

कुंवरजी गौड़ों रै परणीया (१५०/२३३)—कुँवर पृथ्वीसिंह का विवाह गौड़ों के यहाँ संवत् १७२२ को हुआ। संवत् १७२३ में दिल्ली में रहते हुए इस कुँवर को मृत्यु हो गई थी। इसके पीछे गौड़जी सती हुई। बांकीदास की ख्यात में लिखा है कि सती होते समय गौड़जी ने कहा कि महाराजा से अर्ज करना कि हमारे पोछे यादगार में यहाँ स्मारक बनवा दें, जैसा कि उन्होंने महाराजा गजसिंहजी के ऊपर आगरे में बनवाया है। कुँवरजो के स्मारक को सेवा के लिये वहां व्यास सोभा रखा गया था।[2]

श्रीजो रामपुरे परणीया (१५०/२३३)—यहां संवत् १७२१ वैशाख सुदी ४ को जसवन्तसिंह ने रामपुरा के राव अमरसिंह की पुत्री जैसुखदे (चंद्रावती) से विवाह किया था। इस राणी के गर्भ से संवत् १७२३ में कुँवर जगतसिंह का जन्म हुआ था। संवत् १७३२ में जब बालक जगतसिंह अत्यधिक बीमार हुआ तब राजा-प्रजा में गम्भीर उदासी छा गई क्योंकि कुछ समय पहले कुँवर पृथ्वीसिंह की मृत्यु हुई ही थी। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि इस अवसर पर राजा और प्रजा की तरफ से जगतसिंह के स्वास्थ्य-लाभ के लिये खूब दान-पुण्य किया गया। दान-पुण्य की विगत उक्त ख्यात में इस प्रकार दी गई है—

५०१) पाँचसौ एक रुपया कोठार पुण्य के लिये भेजे गये।
३००१) तीन हजार एक का चाँदी का तुला दान किया गया।
१ कपड़े का तुला दान किया गया।
१ घृत का ,, ,, ,, ,,
१ लोहे का ,, ,, ,, ,,

---

१. द्रष्टव्य—चारण : भा० १ अंक ३-४ संपादक. किशोरसिंह बार्हस्पत्य।
२. बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ ३५।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१ तिलों का तुला दान किया गया ।
१ गुड़ का ,, ,, ,, ,,
१ लूण (नमक) का ,, ,,
१ कौहलों का ,, ,,
१ सप्तधान्य का । इस तरह कुल ८ तुला दान किये गये ।
१००) दादीजी ने पुण्य दिये ।
२०१) महाराणीजी ने पुण्यार्थ दिये ।
५०१) भीतर से पुण्य किये ।
२००१) उमरावों ने पुण्य किये ।
१०१) पंचोलियों ने पुण्यार्थ किये ।
२०१) प्रधानों ने पुण्यार्थ किये ।
२०१) राजपूतों ने पुण्य किये ।
१००) पंचोली केसरीसिंह ने पुण्य किये ।
१००) राठौड़ आसकरण ने पुण्य किये ।
१००) मियें फरासत व खोजों ने पुण्य किये ।
१०१) राठौड़ संगरामसिंह ने पुण्य किये ।
१००१) बनियें छींपे साबूगर वगेरों ने पुण्य किये ।
१०१) ईंदा रुघनाथदास ने पुण्यार्थ किये ।
८३११) इतना पुण्य तो यहाँ हुआ । और महाराज साहिब ने हजार मन अनाज गरीबों को दिलवाया । और जप दान अक्षय धारा-घट-सहस्र से पूजन आदि अनेक प्रकार से पुण्य किया गया और हाथी बहुत दान दिये गये[1] । फिर भी जगतसिंह का देहान्त हो गया ।

यादवों रे परणीया (१५०/२३३)—करोली के राजा छत्रसिंह की पुत्री जसकुंवरी से उनका यह विवाह हुआ था । यह राणी काबुल में महाराजा की मृत्यु के समय जमरूद के थाने साथ थी । उसके गर्भ से अजीतसिंह का जन्म हुआ था ।

उज्जैन का युद्ध, शाही मनसबदार (१७०-१७५,२४२-२४३)—इस युद्ध में शामिल होने वाले मनसबदारों की जो सूची उनके सैनिकों सहित यहाँ दी गई है यह

१. मुरारीदान री ख्यात–२ पृ० २५३-२५४ ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुछ अपूर्ण है। डॉ० रघुवीरसिंहजी ने पंचोली व्रजलाल की जोधपुर हकूमत की वही से जो सूची प्रकाशित की है वह पूर्ण है। (मरु भारती भाग ६ अंक १) अतः इस ग्रन्थ में छूटे हुए मनसवदारों के नाम उक्त सूची के आधार पर यहाँ अंकित किये जाते हैं—

१६२ रा० गोरधन चंपावत आसामी ३ १२६ रा० गोरधन ३० हजारी-पाँचसौ असवार।

२५ रा० रूपसी गोरधनोत च्यार सदी पचास असवार।

११ रा० रतन गोरधनोत दोय सदी पचीस असवार।

[पृ० २४][1]

८१ मेहमंद मुराद ३१ हजारी पंचसै असवार गोड़।

१२६ गोड़ भींव ३२ बीठलदासोत हजारी पंच सौ असवार।

२२४ झालो दयालदास नरहरदासोत आसामी ५ १२६ दयालदास ३३ हजारी पंच सौ असवार।

६४ झालो राघोदास पंच सदी अढाई सौ असवार।

१६ झालो इन्द्रभांण तीन सदी असवार।

६ जगन्नाथ नरहरदासोत दोय सदी।

६ उदेभांण जगनाथोत दोई सदी तीस असवार।

६७ सैद असवार वेग आसामी २

८१ असवार वेग नव सदी च्यार सौ असवार।

१६ साह कुली असवार वगेरो।

१०१ सिसोदियो सुन्दरदास गोकलदासोत नव सदी च्यार सौ असवार।

४५७ राजा बरसिंघदे वगैरे आसामो १७।

२२६ वरसिंघदे ३६ द्वारकादासोत अठ सदी आठ सौ असवार, दोइ सो दोसपा सैसपा।

३६ विजेसिंघ द्वारकादासोत तीन सदी।

६४ जैचन्द दलपतोत पंच सदी अढाई सौ असवार।

११ स्यामचन्द बलभदोत दोई सदी चालीस असवार।

६ अभैचन्द भवनचंदोत सदी विस असवार।

५ अखैचन्द भवनचंदोत सदी पनरै असवार।

---

१. यह बही की पृष्ठ संख्या है।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७६ चौ० प्रतापसिंघ च्यार सदी तीन सौ असवार ।
२ चौ० मथुरादास प्रतापसिंघोत ।
६ चौ० किसनसिंघ प्रतापसिंघोत ।

[पृ० १५][1]

४ चौ० चन्द्रभंण बाघजी रौ ।
१७ चौ० प्रतापसिंघ सबलसिंघोत, आसामी ४ ।
१०१ हाडो मोहणसिंघ ३६ माधोसिंघोत आठसदी च्यार सौ असवार ।
६१ सैद टपंदगरम (?) ३७ अठ सदी तीन सौ असवार ।
६६ चौ० बलु सवंतसियोत आसामी ४—

७६ बलु ३८ सात सदी तीन सौ असवार ।
१६ चौ० तुलछीदास बलु रौ तीन सदी आठ असवार ।
७ चौ० नरहरदास बलुवोत दोय सदी तीस असवार ।
४ चौ० गौयंददास अचलदासोत सदी पनरे असवार ।

६६ सैद कुली सात सदी तीन सौ असवार ।
५१ सैफुदिन ३६ तरवीयतखां रो सात सदो दोय सो असवार ।
४८ मेहमंद मुकीम ४० बेगसाह रौ ।
६३ अबदर सुलैबेग रो हजारी तीन सौ असवार ।
४६ मेहमंद सैदबेग रो सात सदी सौ असवार ।
४१ बाहादरबेग ४१, सात सदो ।
२६ रहमबेग पंच सदी ।
७५ सुरतण नाजर ४२ बगैरो आसामी २६ ।
५१ हाडो केसौरसिंघ ४३ माधोसिंघोत छ सदी दोइ सौ असवार ।

[पृ० १६]

३६ खोजो हसन वदी (?) वगैरे आसामी ४ ।
६२ इनातुला वगैरो आसामी २ ।
६४ वरसौ झालौ ४४ पंचसदी अढाई सौ असवार ।
६७ मेहमंद शरीफ वगैरे आसामी ३ ।
५८ रा० श्याम [राम]सिंघ वगैरे आसामी २—

५१ रा०श्याम[राम] सिंघ ४६ बलुओत पंच सदी दोइ सौ असवार ।

---

१. यह बही की पृष्ठ संख्या है ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७ उदेसिंघ ४६ रामसिंघोत सदी तीस असवार।
५१ चौ० रुकमंगद प्रीथीराजोत पंच सदी दोय सौ असवार।
२१ अब्दुल्ला नबी ४७ खांन दौरा रो बेटो पंच सदी दोय सौ असवार।
३४ नाहर बैंग वगैरे आसामी ४।
२५ सुजा बैंग वगैरे आसामी ४।
१५ खौजा इसहाल वगैरा।
२०० रावत हरीसिंघ ४८ च्यार सदी च्यार सौ असवार। जमींदार देवलीया रो, आधा जाबता रा राखै।
६४ माधोसिंघ चन्द्रावत वगैरे।
५१ माधोसिंघ च्यार सदी दोय सौ असवार।
१४ जगतसिंघ माधोसिंघ रो भाई।

[पृ० १७]

४२ मिरक मैहमंद वगैरे।
५१ रा० कल्याणदास महेशदासोत ४९ च्यार सौ असवार च्यार सदी।
५१ रा० महासिंघ केशोदासोत ५० च्यार सदो दोइसौ असवार।
५१ कछवाहो पृथीसिंघ झुंझारसिंघोत ५१ च्यार सदी च्यार सौ असवार।
३९ शिशोदियो मंम (?) सिंघ ५२ मनसिंघोत च्यार सदी दोढ सौ असवार।

साथ श्री महाराजाजी रो कांम आयो[1] (१७६-१८५/२४५)—

१. रा० वीठलदास गोपालदासोत—यह पाली का ठाकुर था। इसके साथ इसके सैनिक पत्तौ वीनावत तथा भोजराज पातावत भी काम आये।

२. रा० गिरधरदास मनोहरदासोत—यह आउवा का स्वामी था। मूंदियाड की ख्यात में लिखा है कि काम आने से पहले इसने महाराजा से निवेदन किया कि मैं तो इस युद्ध में काम आऊँगा और आप आउवा महेशदास को दोगे परन्तु मेरे परिवार की इज्जत का भी खयाल रखना। महाराजा ने उसे कुछ आश्वस्त किया।

---

१. काम आने वाली कुछ आसामियों का संक्षिप्त परिचय मूंदियाड़ की ख्यात (रा० प्रा० वि० प्र०) में दिया गया है, उसी के आधार पर यहां इनका परिचय दिया जा रहा है।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३. रा० भीम गोपालदासोत - इसकी अवस्था उस समय १६ वर्ष की थी और यह महाराजा की चाकरी की उम्मीदवारी में था।
रा० बलराम (उदावत) दयालदासोत--इसके २५ गांव सहित बदनोर पट्टे में था और कुल छतीस हजार रुपये की जागीरी थी।
४. रा० कुम्भकरण बलरामोत—इसके १६ गाँव सहित रायपुर गाँव पट्टे था, जिसकी रेख इकसठ हजार रुपये थी।
५. रा० वीरमदे मुकनदासोत—इसके तेरह गाँव पट्टे में थे जिसकी रेख आठ हजार रुपये थी।
६. रा० सूरदास बेणीदासोत—इसके छः हजार की रेख के बारह गाँव का पट्टा था।
७. रा० आसकरण बलरामोत—इसके चार हजार की रेख के पांच गांव पट्टे में थे।
८. रा० करण सुजानसिंघोत (जैतावत)—इसके बीस हजार की रेख से बगड़ी गांव पट्टे था।
९. रा० जुगराज कुंभकरणोत—इसके १३ गांव सहित धनला पट्टे में था।
१०. रा० उदैभांन भगवानदासोत—इसके दस हजार की रेख के चौदह गाँव पट्टे में थे।
११. रा० काना गोयंददासोत, इसके चार हजार दो सौ की रेख के चार गाँव पट्टे में थे।
१२. रा० (जोधा) प्रतापसिंघ करमसिंघोत—पट्टे गाँव दो, रेख रुपया तीन हजार।
१३. रा० रतनसिंघ गोयंददासोत—पट्टे गाँव पाँच, रेख छ हजार रुपया।
१४. रा० ईसरदास महासिंघोत—पट्टे गाँव दो, रेख चार हजार रुपया।
१५. रा० (भदावत) पूरणमल जसावत—पट्टे गांव दो, रेख रुपया दो हजार दो सौ।
१६. रा० गोयंददास मानावत—पट्टे गांव एक, रेख रुपया एक हजार।
१७. रा० गोरधन भगवानदासोत--चाकरी की उम्मीदवारी में था।
१८. रा० विहारीदास केसवदासोत—चाकरी की उम्मीदवारी में था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१९. रा० (ऊहड़) मेघराज उरजनोत—इसके कोरणा आदि तेरह गाँव पट्टे में थे।

२०. रा० नारायणदास गोयंददासोत—पट्टे गाँव दो, रेख दो हजार सात सौ।

२१. रा० (पातावत) भगवानदास मांडणोत—इसके चोटीला गांव पट्टे में था।

२२. रा० नगो (तोगो) रामदासोत—इसके नौसर गाँव पट्टे में था।

२३. रा० जगनाथ चाँदावत—इसके पट्टे में करणू की जागीर थी।

२४. रा० (रूपावत) सबलसिंघ आसकरणोत—यह चाकरी की उम्मीद-वारी में था।

२५. रा० (बालावत) किसनदास वेणीदासोत—यह भगवानदास देवराज सहित काम आया।

२६. भा० महेशदास अचलदासोत—पट्टे गाँव वीकुंकोहर १५ गाँवों से त० ओसियाँ।

२७. भा० केसरीसिंघ अचलदासोत—पट्टे गाँव केलावा।

२८. भा० विसनसिंह रामचंदोत—पट्टे गाँव खारड़ा।

२९. भा० दुरगदास केसवदासोत– यह दुगोलिया (बंदूक) की लगने से मरा।

३०. भा० माधोदास केसवदासोत—पट्टे गाँव आवावस।

३१ भा० नरसिंघ भाणोत—पट्टे गाँव जाटिया वास।

३२. भा० मानसिंघ गोपालदासोत—पट्टे गाँव जालखो।

३३. भा० भाँण मनोहरदासोत—पट्टे गांव नांदिया बड़ा।

३४. भा० उदेसिंघ माधवदासोत तथा कुंभा सुलताणोत—चाकरी की उम्मीदवारी में थे।

३५. भा० रतनसिंह प्रागदासोत—पट्टे गाँव कोरणा।

३६. भा० भींव प्रागदासोत—पट्टे गाँव कीटनोद।

३७. भा० गोकलदास संकरदासोत—चाकरी की उम्मीदवारी में था।

३८. भा० केसरीसिंघ वीठलदासोत—पट्टे गाँव बिराई तथा तालोड़ो (जैतारण)

३९. भा० सुजाणसिंघ सुन्दरदासोत—चाकरी की उम्मीदवारी में था।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४०. इंदे सरदार छः गाँव बालेसर के काम आये ।

४१. पुरोहित दलपत मनोहरदासोत—इसकी अवस्था उस समय बाइस वर्ष की थी। उस समय यह नवविवाहित था। तिंवरी गाँव इसके पट्टे में था।

विशेष—ग्रंथ में दी हुई सूची के अतिरिक्त युद्ध में काम आने वाले कुछ प्रसिद्ध मनसबदारों व अन्य छोटी-बड़ी आसामियों की सूची मूंदियाड़ की ख्यात में इस प्रकार है—

१. रावराजा छत्रसाल बूंदी का स्वामी व कुंवर भारतसिंह छत्रसालोत, बाप बेटा दोनों काम आये जिनके पीछे चालीस सतियें हुईं—छः राणियें तथा चौतीस खवासें।

२. राजा रूपसिंह भारमलोत—किसनगढ़ का स्वामी।

३. राव रामसिंह चन्द्रसेणोत।

४. राजा शिवराम बलराम, गोपालदासोत—सरवाड़ का राजा।

५. गौड़ भीम विठलदासोत।

अन्य आसामियें—

१. राठौड केसरीसिंघ भगवानदासोत, जगरूप जगनाथोत।

२. राठौड़ सुजाणसिंघ गोपालदासोत मेड़तिया।

३. रा० रुघनाथसिंघ प्रतापसिंघोत मेड़तिया।

४. रा० हरीसिंघ प्रतापसिंघोत मेड़तिया।

५. रा० सूरजमल मनोहरदासोत मेड़तिया।

६. रा० मुकनदास किसनसिंघोत, गोकलदास वृन्दावनदासोत।

७. रा० किसनसिंघ दलपतोत मेड़तिया।

८. रा० किसोरदास सबलसिंघोत मेड़तिया।

९. रा० महासिंघ रुघनाथोत।

१०. रा० रेंवतसिंघ मानसिंघोत।

११. रा० करण जगनाथोत और काना दोनों सगे भाई।

१२. रा० उदेभांण वनमालीदासोत बिहारी।

१३. ठाकुरसी सादलोत मेड़तिया।

१४. रा० केसवदास मोहणदासोत।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१५. रा० भावसिंघ जगनाथोत ।

१६. रा० रुघनाथ भोजराजोत करमसोत ।

१७. रा० शुभकरण व मनोहरदास श्रासकरणोत करमसोत, दोनों भाई ।

१८. रा० माधोदास चतुरभुजोत ।

१९. कलांणदास जसवन्तोत ।

२०. रा० रूपो, तोशाखाना पर था ।

२१. रा० किसनसिंघ अचलावत वगैरे आसामी एक सौ पेंतालोस ।

बाग कागो (१८९/२४६)—यहाँ के कुँए का पानी बड़ा उत्तम और स्वास्थ्य-वर्द्धक माना जाता है। महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने यहाँ पर बाहर से मंगवा कर अनेक पेड़ लगवाये थे। वर्तमान में शीतला माता का मेला यहां लगता है तथा कई सामंतों की छतरियें बनी हुई हैं। किंवदंती है कि यहाँ किसी समय काकभुषंड ऋषि ने तपस्या की थी।

बहूजी सेखावत रौ तळाव (१८९/२४६)—यह तालाब महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम) की रानी अंतरंगदेजी (खंडेला की) ने बनवाया।[1]

बहूजी सरूपदे रौ तळाव (१८८/२४६)—यह तालाब मालदे की झालीरानी सरूपदे ने संवत् १५९७ में बनवाया। नाम स्वरूपसागर है।[2]

राईको हाडोजी रौ बाग (१८९/२४६)—यह बाग महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की हाडी रानी जसरंगदे ने संवत् १७३० में लगवाया।[3] पहले इस स्थान को रातानाडा कहते थे।

सूर सागर (१८९/२४६)—यह स्थान महाराजा सूरसिंह ने संवत् १६६४ में भाटी गोयंददास की देखरेख में बनवाया। ८ वर्ष में कार्य पूरा हुआ। पास ही अनेक सामंतों ने भी छोटे-बड़े बाग बनवाये।[4]

बालसमंद (१८९/२४६)—इसे नाहड़ागव पड़िहार के भाई बालाराव ने बंधवाया था। यह बाँध मंडोर के पास है।

---

१. द्रष्टव्य—इसी ग्रंथ का परिशिष्ट (ख) पृष्ठ ५८३

२. ,, ,, ,, ,, ,, ५८२

३. ,, ,, ,, ,, ,, ५८२

४. ,, ,, ,, ,, ,, ५८३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डाँगिया वास (२१९/२५०)—बीकानेर से आकर डांगा शाखा के जाट यहां बसे जिससे इसका यह नाम पड़ा।

रांमपुरो बिसाइण बास ६ (२२५/२५०)—यह गाँव रांम कुंभावत भाटी के द्वारा बसाया गया था।[1]

तिंवरी (२३६/२५०)—यहाँ पर संवत् १५२२ में संस्थापित पार्श्वनाथजी का मन्दिर है।

चावंडवा (२३७/२५२)—यहां पहाड़ी पर चामुण्डा का प्राचीन मन्दिर है। यहां राव चूंडा ने चामुण्डा की तपस्या की थी।

वीठू मेहा (२४२/२५२)—इस कवि का लिखा हुआ "पाबूजी रा छंद" डिंगल का उत्तम काव्य है।

पीपाड़ (२४४/२५३)—यहाँ का पीपलाद माता का मन्दिर, एक कुण्ड तथा ९ वीं शताब्दी का विष्णु-मन्दिर दर्शनीय है।[2]

कापरड़ो (२४६/२५३)—यहाँ का प्राचीन जैन मन्दिर द्रष्टव्य है।

वेजड़लो (२४६/२५३)—यहाँ माताजी का प्राचीन मन्दिर पहाड़ पर बना हुआ है।

वाघोरियो (२५२/२५३)—यहाँ पर भी पहाड़ी पर देवी का प्राचीन मन्दिर हैं।

बड़लू (२५५/२५५)—यह गांव बड़ला जाति के जाटों ने बसाया। भूतेश्वर पहाड़ में देवस्थान है जहाँ नंदावाणे सेवा करते हैं[3]।

बीलाड़ो (२५६/२५६)—यह लूनी नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर है। यहाँ शाहजहाँ का लगाया हुआ एक प्राचीन बगीचा (मारा-मोरा) प्रसिद्ध रहा है। यह स्थान सीरवी सम्प्रदाय के लोगों का प्रमुख स्थान है। यहाँ पर संवत् १५२१ में आईजी प्रगटी थीं और तभी से वहाँ अखंड ज्योति जलती है। इस सम्प्रदाय का प्रधान आईजी का दीवान है, उसके बड़े महल बने हुए हैं। दीवान लोग किसी समय में बड़े सम्पन्न

---

१. बांकीदास री ख्यात: सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १२०।
२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ. ३१।
३. बांकीदास री ख्यात: सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० २०१।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माने जाते थे। उनके वहाँ ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेजों का भी महत्वपूर्ण संग्रह रहा है।[1]

किसना दुरसावत (आढा) (२६२/२५९)—यह प्रसिद्ध कवि दुरसा आढा का पुत्र था। इसे दुरसा के जीवन-काल में ही पर्याप्त ख्याति मिल गई थी। इसकी स्फुट गीत-रचना भी उपलब्ध होती हैं।

पाली (२६२/२६०)—यहाँ प्रारम्भ में पलीवाल ब्राह्मण रहते थे। ये उदयपुर राणा के गुरु थे। खेड़ पर अधिकार कर लेने के पश्चात् राठौड़ों ने पलीवालों को हटाकर यहाँ अपना कब्जा कर लिया। राठौड़ों के आगमन के पहले जोधपुर के आस-पास पलीवालों की अच्छी बस्ती होनी चाहिए क्यों कि यहाँ के अनेक गाँवों में उन पर बनी छतरियें विद्यमान हैं। यह उस समय यहाँ की प्रमुख व्यौपारी कौम होनी चाहिए।

मानसिंघ अखैराजोत सोनिगरा (२६८/२६२)—यह मालदे के प्रसिद्ध सामंत अखैराज सोनीगरा का पुत्र था और राणा की ओर से लड़ता हुआ हल्दीघाटी के युद्ध में काम आया था।

भाद्राजण (२७३/२६५)—यह ग्राम पहाड़ी की ढाल में बसा हुआ है। राव मालदे के समय से यह राठौड़ों के अधिकार में आया।

कोढणो (२९३/२७३)—भारमल जोधावत की बैठक यहाँ थी। फिर उसका पुत्र जैसिंघदे यहाँ रहता था, पर उससे इस जागीर का बन्दोवस्त नहीं हुआ तब राव गांगा ने महेवा से ऊहडों को बुलाकर १२ गांवों सहित यह जागीर उन्हें दी।

बाघावास (२९७/२९३)—चहुवान प्रथुराव के पुत्र वाघ ने यह गाँव बसाया।[2] बाद में दुर्गादास आसकरणोत के वंशजों की जागीर यहाँ रही।

नागाणो (२९९/२९३)—राठौड़ों की कुलदेवी नागणेचियाँजी की मूर्ति यहां पर स्थापित है।

---

१. राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज, (डा० हरप्रसाद शास्त्री) पृ० ७०-७९, रा. शो सं. जोधपुर।

२. बांकीदास री ख्यात, पृ० १६३।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डूदा आसिया (३०३/२७६)—इस कवि को बीकानेर के राजा रायसिंघ ने भी एक हाथी अपने विवाह के अवसर पर प्रदान किया था।[1]

बहळवो (३०५/२७८)—ईंदा सरदारों का मुख्य स्थान है। यहाँ के जागीरदार को राणा की उपाधि थी।

घटीयाळो (३१०/२८०)—यहाँ पर प्राचीन शिला लेख हैं।

सेतरावौ (३१२/२८२)—यहां पर वीरम ने अपने पुत्र देवराज को महाजनों की बस्ती के साथ बसाया था। फिर लूणा का अधिकार यहाँ हुआ और तत्पश्चात् भाटियों का अधिकार रहा।

केतू गोगादेवां रौ वास (३१५/२८४)—यह गोगादे वीरमदेवोत का मुख्य स्थान रहा।

सेखाळो बडौ बास (३१६/२८४)—यहां पर गुसांईजी प्रगटे थे। यहाँ से फिर खिरजाँ में प्रगटे। गुसांईजी की घोड़े पर सवार मूर्ति गोगादे पूजते हैं।

देछू (३१८/२८७)—देवराज के पुत्र चाहड़दे के वंशज जैमल धनराज आदि स्थायी तौर पर यहाँ रहने लगे थे।[2]

ओसियाँ (३१६/२८६)—ओसवाल महाजनों की उत्पत्ति यहां से हुई। यह नगर बहुत प्राचीन है। यहाँ पर प्राचीन कलात्मक मन्दिर विद्यमान है तथा कई शिलालेख महत्व के हैं।

हरभुसर (३३२/२८६)—प्रसिद्ध पीर हरभुजी का बसाया हुआ ग्राम।

लवेरो (३४१/२६३)—महाराजा सूरसिंह के प्रसिद्ध प्रधान भाटी गोयन्ददास की जागीर का ग्राम।

बावड़ी (३४१/२६३)—यहाँ की बावली में दलथंभन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शिलालेख है।

खेड़ापो (३४६/२६४)—यहाँ रामस्नेही सम्प्रदाय की गद्दी है।

---

१. डॉ० टेसीटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण : सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं चोपासनी; जोधपुर।

२. मुरारीदान की ख्यात, पृ० ३५१।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सांदू माला (३४६/२६४)—इस कवि द्वारा रचित 'रायसिंघ री वेलि' प्रसिद्ध काव्य-रचना है। इसमें ४३ छंद हैं।[1]

गाडण चोला (३४६/२६४)—३१ छंदों में रचित 'सूरसिंघ री वेलि' इसकी सुन्दर काव्य-कृति है।[2]

महेवा (३५३/२६६)--प्रारम्भ में रावळ मलीनाथजी की जागीर का स्थान रहा। रावळ मेघराज हापावत को संवत् १६४० में मोटाराजा ने यह गांव दिया और वह उनके साथ गुजरात चढ़ाई में गया। बाद में मेघराज ने यह जागीर वीरमदे कलावत को दी। संवत् १६६८ में मोटा राजा ने यह दूदा तथा पता को देदी। महेवा के तीसरे हिस्से के गांव आगे जाकर महेसदास पतावत की जागीर में आये। संवत् १६६३ में महेवा के गांव आधो-आध भारमल और महेसदास को आपस में बाँट दिये।[3]

तलवाड़ो (३५६/२६६)—महेवा का प्रसिद्ध ग्राम। यहाँ बहुत वड़ा पशु-मेला लगता है।

षेड़ (३५६/२६६)—राठौड़ों ने प्रारम्भ में यहीं पर कब्जा किया था इसीलिये इन्हें षेड़ेचा कहते हैं।

परगना सोझत

सोझत (३८३/१)—सोझत अच्छा कस्बा है। प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम सुद्धदंती मिलता है। इसे त्रंबावती नगरी भी कहते थे। यहाँ पर ताँबे की खान थी।[4] यहाँ की अजवायन तथा महंदी प्रसिद्ध है। राव रिड़मल को सोजत राणा की ओर से दी गई थी पर बाद में राणा का पुनः अधिकार हो गया। जब राव जोधा ने मण्डोर पर अधिकार करके जोधपुर बसाया तब उसने सोझत पर भी अधिकार कर लिया।

सोझत नांवे बेटी (३८३/१)—कई ग्रन्थों में इसका नाम सेझल अथवा सोजल भी मिलता है।[4] इसका स्थान सोझत में अब भी पूजा जाता है। सोझत

१. परम्परा—भाग १४ पृ. १११।
२. ,, ,, ,, ,, ११३।
३. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ३१५-२३।
३. परम्परा भा० ११ पृ० १०५।
४. वही।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

के शाप से त्रंबसेन का राज्य गया तथा हुलों का राज्य यहाँ हुआ अतः उसी समय से इसका नाम सोझत पड़ा होगा।

चारणी करणी (३८३/४)—चारण जाति में उत्पन्न देवियों में करणीजी का प्रमुख स्थान है। ख्यातों के वृत्तांतों से पता लगता है कि राव बीका और कांधलजी को बीकानेर राज्य की स्थापना करने में करणीजी ने बड़ी सहायता पहुँचाई थी। तभी से बीकानेर के राठौड़ इन्हें अपनी इष्ट देवी मानते हैं। देशनोक गांव में इनका बड़ा भव्य मन्दिर बना हुआ है। बारहट किशोरसिंहजी ने इनका समय वि० सं० १४४४ से १५९५ माना है।[1]

राव सता (३८६/५)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि राव शराब बहुत पीता था इसलिये राज्य का सारा कार्य-भार रणधीर पर था।[2]
इसकी साक्षी का एक गीत अवलोकनीय है—

रायांगुर रौद्र कळोधर रावण
बेठक वींद कळोधर वीर।
सतो मंडोवर राख न सकियो
रावत तो पाखे रिणधीर॥

हींगोला री बासण (४२०/४०)—यह गांव हींगोला पीपाड़ा का बसाया हुआ होना चाहिए।

हींगोला पीपाड़ा (४२३/४२)—यह राठौड़ पृथीराज का चाकर था। पृथीराज ने इसे एक तलवार बक्सी थी इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा ख्यातों में है।[3]

रामदास बैरावत (४२६/४४)—यह बड़ा दानी था। इसकी अखाड़ियाँ राजस्थानी साहित्य की सुन्दर रचना है।

सहेबाज खांन (४३१/४४)—यह अकबर का सेनापति था। राव चन्द्रसेन जब सिवाने में था तब बीकानेर के राजा रायसिंघ के साथ यह बादशाह की ओर से उस पर चढ़कर आया था।

---

१. चारण, खण्ड १, अंक ३-४।
२. मुरारीदान की ख्यात २, पृ० ५९।
३. देखें, मुहता नैणसी री ख्यात भा. २, पृ० १२०।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव रांम (४६७/४४)—यह राव मालदे का बड़ा पुत्र था। इसे यह आभास हो गया था कि मालदे के पश्चात् गद्दी उसे नहीं मिलेगी। अतः जब मालदे अधिक बीमार हुआ तो कुछ सरदारों से मिलकर उसने यह षड़यंत्र रचा कि मालदे को नजरवन्द कर स्वयं गद्दी पर बैठ जाय। पर भेद खुलजाने से ऐसा न हो सका और उसे देश छोड़कर जाना पड़ा। वह ऊमादे भटियाणी के पास जाकर रहा।

डीघोड़ (४६७/४४)--राव राम के पश्चात् यह स्थान कला के अधिकार में रहा। यहाँ के गुढे में रहते हुए उसने मुगलों से मुकाबला किया।[1]

सींचोयाई (४६९/४४)—ख्यातों में इसका नाम सचियाय मिलता है। यहाँ सचियाय माता का स्थान है। यहाँ की पहाड़ियों में (सचियाय री गाळ) राव चन्द्रसेन का देहान्त हुआ था।[2]

भाटी वेणीदास (४७३/४५)—यह भाटी गोयंददास मानावत का ५ वां पुत्र था।[3]

राधा री बासणी (४७९/४६)—यह गांव १७०९ में जसवंतसिंह के कुंवर पृथ्वीसिंह के जन्म की वधाई के उपलक्ष में ब्राह्मणों को दिया गया होगा।

पांचेटियौ (४८३/४७)—यह गांव महाराज गजसिंह द्वारा संवत् १६७७ में आढा दुरसा तथा किसना दुरसावत को दिया गया। अर्थात् इसके पहले यह गाँव इनके सांसण में नहीं था।

सांकर बाहरेट (४८४/४७)—"दातर सूर रौ संवाद" इसकी प्रसिद्ध रचना है। ऐसी प्रसिद्धि है कि बीकानेर के राजा रायसिंह ने इसे सवा करोड़ का पुरस्कार दिया था। इसके रचे हुए अनेक गीत भी हैं।[4]

बारहट लखा नांदणोत (४८५/४७)—यह बड़ा प्रभावशालो व्यक्ति था। इसकी पहुँच मुगल दरबार तक में थी। दुरसा आढा जैसे कवियों को भी ऊपर उठाने और मुगल दरबार तक ले जाने का श्रेय इसे प्राप्त है। इसने

---

१. ऐतिहासिक बात्तां (परम्परा) पृ० ८३।

२. वही, पृ० ८५।

३. बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० ११९।

४. राजस्थानी सबदकोस, प्रथम भाग पृ० १३५।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पाबूजी की प्रशंसा में सुन्दर काव्य लिखा है, तथा इसकी अनेक स्फुट रचनाएं भी प्राप्त होती हैं।

गाडण केसोदास सांदुवोत (४८६/४७)—महाराजा गजसिंह ने सं. १६८३ में यह गांव लाखपसाव में इस कवि को दिया था। इस कवि की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त "गज गुण रूपक बंध"[1] नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ मिलता है जिसमें मुख्य रूप से भीम अमरावत के साथ हुए गजसिंह के युद्ध का बड़ी ओजस्वी शैली में वर्णन किया गया है। "नीसाणी विवेक वार" भी इसकी महत्वपूर्ण कृति है। यह भक्त कवियों में भी अपना स्थान रखता है।

रामा सांदु (४८७/४७)—इसने संवत् १६१६ के लगभग उदयसिंह री वेलि नामक सुन्दर साहित्यिक कृति का सर्जन किया। इसकी स्फुट रचनाएँ भी मिलती हैं।[2]

माधवदास दधवाड़िया (४८७/४७)—यह प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज का समकालीन था।[3] इसका ग्रन्थ "राम रासो" डिंगल की उत्तम कृतिय में गिना जाता है।

परगना जैतारण

जैतारण (४९२/१)—यह शहर १५२५ में राव जोधा के समय में बसा। यह मारवाड़ का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जोधा के वंशजों में यह ऊदावत राठौड़ों का मुख्य परगना रहा है। इसमें ऊदावतों के बड़े ठिकाने थे तथा यहां के ऊदावत जैतारणिया कहलाये।

रूण (४९२/१)—यह स्थान सांखला राजपूतों का प्रमुख स्थान रहा है। अपने अस्तित्व के लिये सांखलों ने यहाँ रहकर बड़े संघर्ष किये हैं। यह नगर पहले सम्पन्न था पर अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुए युद्ध-संघर्ष में नष्ट हो गया।

---

१. सं सीताराम लालस, प्र: रा. प्रा. वि. प्र० जोधपुर।

२. परम्परा, भाग १४ पृ ११०।

३ पृथ्वीराज ने इसके बारे में यह दोहा कहा है—

चूंडे चत्रभुज सेवियो, तत फल लागो तास।
चारण जीवो चार जुग, मरो न माधवदास॥

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊदा सूजावत (४६२/१)—यह सूजा की रानी सवरंगदे मांगलियाणी का पुत्र था। इसके वंशज ऊदावत कहलाये।[1]

गळणियो (५११/१२)—यह गाँव अखैराज सोनीगरा के वंशज मुकंददास के १६०००) की रेख से पट्टे में रहा।[2]

लोटीधरी (५१३/१२)—हाजीखां और राणा उदयसिंह के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मालदे ने हाजीखाँ की सहायता की थी, तत्पश्चात हाजीखां इस गांव में आकर रहा था। नैणसी की ख्यात में लिखा है कि इसी समय जब अकबर ने रुष्ट होकर अपनी फौज उस पर भेजी, तो वह वहाँ से भाग गया और फिर जैतारण पर रतनसिंह खींवावत से उस फौज की मुटभेड़ हुई।[3]

मालपुरियौ (५२२/१२)—यह गाँव राव मालदे का बसाया हुआ है।

रतनपुरो (५२३/१२)—यह गाँव प्रसिद्ध वीर राठौड़ रतनसिंह खींवावत का बसाया हुआ है।

पृथ्वीपुरो (५२३/१२)—यह गाँव महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के राजकुमार पृथ्वीसिंह के नाम पर बसाया गया।

महेसियो (५२७/१२)—यह गाँव भाटी सुरजन आसावत को संवत् १६७४ में जागीर में दिया गया था।[4]

हाजीवास (५२७/१२)—यह गाँव सूबेदार हाजीखां के नाम पर बसा होना चाहिए।

काणूजो (५३६/१२)—यहाँ पर राव चन्द्रसेन ने अपने संकट का समय निकाला था।

लाखावासणी (५५१/२४)—राठौड़ रतनसिंह खींवावत ने गांव गळणिया के खेत चारण लाखा दासावत को दान दिये थे, वहीं पर बस्ती बस गई, जिसका नाम लाखावासणी पड़ा।

---

१. मुरारीदान की ख्यात २ पृ० १०३।
२. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १ पृ० २११।
३. मुंहता नैणसी री ख्यात भा. १ पृ० ६२।
४. मुंहता नैणसी री ख्यात भा. २ पृ० १४९।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तेजा री वासणी (५५१/२४)—चारण तेजा यहाँ बसा था, उसी के नाम इस गाँव का नाम यह पड़ा।

मांनपुरौ (५५२/२४)—मेर माना का बसाया हुआ गाँव।

लालपुरौ (५५३/२४)—यह गांव मेर लाला का बसाया हुआ है।

परगना फलोधी
(भाग २)

फलोधी (१/१)—इसका प्राचीन नाम फलवर्द्धिका है। इस स्थान पर अनेक शिलालेख महत्त्व के हैं, जिनमें कल्याणरायजी के मन्दिर का शिलालेख वि० सं० १२३६, तथा महाराजा जसवन्तसिंह के समय का लेख १६६६ का है, जिसमें मुंहणोत नैणसी तथा वहाँ की जनता द्वारा रंगमंडप बनवाये जाने का उल्लेख है। शान्तिनाथ के प्राचीन मन्दिर को दीवार पर महाराजा गजसिंह (जोधपुर) के समय के दो लेख—सं० १६८९ के हैं, जिनमें उक्त मन्दिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। यहां के गढ़ में भी ५ शिलालेख महत्व के हैं, जिनमें एक शिलालेख सूजा के पुत्र नरा द्वारा सं० १५३२ में गढ़ की पोल के निर्माण करवाने से सम्बन्धित है।[1]

नरा सूजावत (१/१)—प्राचीन ख्यातों में इसका नाम नरसा भी मिलता है। यह भाटियों का भानजा था।[2] डॉ० ओझा ने जोधपुर राज्य के इतिहास (भा० २) में इसका पूरा नाम नरसिंह तथा नरसिंहदेव लिखा है।[3] इस ने सातलमेर के नाम से पोकरण की राजधानी बसाई, दुर्ग बनवाया तथा नरासर तालाब का निर्माण करवाया। इस तालाब पर उसकी छतरी बनी हुई है। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि सूजा ने इसे गुजरात के बादशाह की सेवा में भी भेजा था। यह रानी लक्ष्मी का पुत्र था।[4]

जगमाल मालावत (२/२)—यह महेवे के स्वामी मल्लीनाथ का पुत्र था। यह बड़ा वीर योद्धा था। इसके वंशज जो पोकरण में हैं, पोकरणा कहलाये।

---

१. विस्तृत वृत्तांत के लिये देखें—जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ० ४३-४५

२. बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी पृ० ८।

३. जोधपुर राज्य का इतिहास पृ० ४४।

४. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ६७०।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इसके सम्बन्ध में अनेक प्राचीन बातें प्रचलित हैं। राजस्थानो बात साहित्य में 'गणगोर में गींदोली गाई जै तिणरी बात' प्रसिद्ध है। इसका नायक जगमाल है। यह गींदोली महमूद बेगड़े की लड़की थी। बेगड़े का एक सेनापति हाथीखाँ जगमाल के राज्य में से १४० स्त्रियाँ हरण करके ले गया, जिसके बदले में जगमाल बेगड़े की लड़की गींदोली को उठा लाया। फिर युद्ध हुआ, जिसमें बेगड़े की पराजय हुई। इस युद्ध में जगमाल ने बड़ा पराक्रम दिखाया, जिसकी साक्षी का यह दोहा बड़ा प्रसिद्ध है—

पग पग नेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी पूछे खान नै, जग केता जगमाल॥

गींदोली जगमाल से प्रेम करती थी, इसलिये उसे उसने नहीं लौटाया।[1] जगमाल ने एक विवाह सोलंकियों के यहाँ किया था। सोलंकणी से कुंभा नाम का बड़ा प्रतापी पुत्र हुआ। उसने जगमाल से द्वेष रखने वाले वीर हेमा को मारा था और इसी द्वन्द्व युद्ध में उसकी भी मृत्यु हुई। साक्षी का दोहा—

डसै अहर जमदूत, मछर छिलंते मेलियो।
कूंभै वाळो कूंत, हेमे वप सांसर हुवौ॥[2]

राव हमीर (३/३)—यह नरा का भाई था।

खीचो हद्दो (६/७)—यह केल्हण का पुत्र था और इसी युद्ध में मारा गया।[3]

मुंहतो जैमल (७/६)—यह मुंहणोत नणसी का पिता था। जालोर आदि कई स्थानों की हाकमी करने का अवसर इसको मिला। यह जसवंतसिंहजी के समय में कुछ समय के लिये दीवान भी रहा।

जालावाडो (१४/२८)—इस स्थान पर जैसिंघ वोरमदेओत की बैठक थी।[4]

---

१. राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज (हरप्रसाद शास्त्री) सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा शो. सं चौपासनी जोधपुर पृ० ६०।
२. मुहणोत नैणसी री ख्यात (भा० २) रा. प्रा. वि. प्र, पृ० २६८।
३. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० १५६।
४. वही पृ० ३५६।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरजांगसर (१८/२८)—यह स्थान खींवा के पिता वरजांग के नाम पर बसा।

जांभेळाव (२३/२८)—यह स्थान विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक जांभोजी के नाम पर बसा।

कोळ (२८/२८)—यहाँ प्रसिद्ध लोक देवता पाबूजी धाँधल का देवस्थान है।

परगना मेड़ता

मेड़तो (३७/१)—संस्कृत लेखादि में इसका प्राचीन नाम मेडतंक मिलता है। मण्डोर के प्रतिहार सामन्त बाउक के वि० सं० ८६४ के लेख में उसके ८ वें पूर्व पुरुष नागभट्ट का मेडतंक को राजधानी बनाने का उल्लेख है। यहाँ के मन्दिरों आदि में विद्यमान प्राचीन शिलालेखों का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है।[1]

राजा मानधाता (३७/१)—पौराणिक युग में यह राठौड़ों का मूल पुरुष माना जाता है। जवनसत राजा के कोई सन्तान नहीं थी, अतः वह तपस्या के लिये अपनी रानियों सहित तपोवन की ओर चला। जब वह हरिद्वार पहुँचा, तो गौतम ऋषि ने कृपा कर उसे वरदान दिया, जिससे उसके एक पुत्र हुआ, उसका नाम उसने मानधाता रखा। यह लड़का बड़ा पराक्रमी हुआ और इसका राज्य बहुत दूर-दूर तक फैला। इसने मेहपाठ नामक स्थान को अपनी राजधानी बनाया जो बाद में मेड़ता कहलाया।[2]

कान्हड़दे (३७/१)—यह सोनगरा जाति का इतिहास प्रसिद्ध योद्धा जालोर का स्वामी था जिसने आलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध बड़ा संघर्ष किया था। इसका विस्तृत वर्णन कवि पद्मनाभ ने डिंगल भाषा में लिखित 'कान्हड़दे प्रबन्ध' में बड़े सुन्दर ढंग से किया है।

वरसिंघ, दूदो (३७/२)—ओझाजी ने इन्हें जोधा की रानी सोनगरी चम्पा का ही पुत्र माना है। मुरारीदान की ख्यात में इस रानी के पिता का नाम

---

१. विस्तार के लिये देखें—जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा, पृष्ठ ३३-३५।

२. राठौड़ वंश री विगत एवं राठौड़ां री वंशावली, सं० मुनि जिनविजयजी, रा. प्रा. वि. प्र. पृष्ठ १-२।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खींवा सतावत (नारलोर) लिखा है।[1] दूदा ने अपने भाई वरसिंघ के साथ मेड़ता बसाया था और उसके वंशज मेड़तिये कहलाये। दूदा का परिचय देते हुए ओझाजी ने लिखा है कि नरसिंघ सींधल के पुत्र को द्वन्द्वयुद्ध में मारकर दूदा ने महत्वपूर्ण कार्य जोधा के संकेत पर किया था और इस प्रकार राठौड़ों का पुराना बैर लिया।[2] नैणसी की ख्यात में लिखा है कि जोधा का राज्य जब मारवाड़ पर कायम हो गया, तो किसी ने ताना मारा कि नरबद तो नरसिंघ की एक स्त्री सुप्यारदे को लाया था पर नरसिंघ के साथी सींधल लोग बदले में यहां की १४० औरतों को ले गये और फिर विनय करने पर बइज्जत उन्हें लौटाया, अतः तब भी उनका पासा ऊपर रहा। इस अपमान का बदला लेने का बीड़ा दूदा ने उठाया[3] और उसने नरसिंघ के पुत्र मेघा को घेर कर मारा।

सवाळख (३९/५)—नागौर के आस पास के छोटे से इलाके का प्राचीन नाम सपादलक्ष था, उसी का अपभ्रंश सवाळख हुआ। यहाँ पहले चौहानों का राज्य था, इसलिये उन्हें 'सपादलक्षीय नृपति' कहा गया है। ओझाजी ने इस प्रसंग पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि आधुनिक समय में उसे सवाजक या स्वाजक कहते हैं[4], परन्तु उनका यह मत भ्रामक लगता है। वास्तव में उसे आजकल सवाळख या स्वाळख ही कहा जाता है।

जायल (३९/५)—यह स्थान चौहान राजपूतों की एक शाखा खीचियों का प्रमुख स्थान रहा है।[5] यहाँ के खीची जींदराव का पाबूजी के पवाड़ों में उल्लेख आता है, जिसके हाथ से पाबूजी राठौड़ की मृत्यु हुई थी।

घड़ूको (४४/१५)—यह मुगलों का सेनापति था। राजस्थानी ख्यातों में इसका नाम घड़ूला मिलता है। इसके सम्बन्ध में यहाँ किस्सा प्रसिद्ध है[6]

---

१. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ९९।
२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २५२।
३. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३ पृ० ३८।
४. ओझा निबन्ध संग्रह (प्रथम भाग) पृ० २० की पाद-टिप्पणी।
५. मुहणोत नैणसी री ख्यात, भा० ३ पृ० १७४।
६ ओझाजी ने इसे मीर घड़ूला लिखा है—
जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २६१।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कि तृतीया का पर्व मनाती हुई कुछ लड़कियों को यह उठाकर ले गया था, जिस पर सातल ने उस पर चढ़ाई की। उसके मारे जाने पर तीरों से छिदा हुआ उसका सिर उन लड़कियों ने शहर में घुमाया। यह रस्म अब भी मनाई जाती है और घड़े में छेद करके उसमें दीपक रखे हुए लड़कियाँ घुड़ला गीत गाती हैं।

अखैराज भादावत (४६/२३)—नैणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है कि जब जैमल मेड़ता की गद्दी पर बैठा तो एक बार अखैराज को मालदे के दरबार में यह आशय प्रकट करने को भेजा कि आप हमें क्यों तंग करते हैं आप मेड़ता सदा के लिए हमें दे दें, हम भी दूसरों की तरह आपकी चाकरी करेंगे। परन्तु राव मालदे और उसके सामंतों ने अखैराज के इस निवेदन को हँसी में उड़ा दिया तब अखैराज गुस्से में आकर वहाँ से उठ कर चला आया और मालदे से कहा—हमें 'मेड़ता कौन दे और हमारे से कौन ले, तुम्हें जिसने जोधपुर दिया उसीने हमें भी मेड़ता दिया है'।

इसने जैमल की अनेक युद्धों में सहायता की और मालदे के प्रसिद्ध सामंत पृथ्वीराज को मारा था।[1]

पंवार पंचायण (५०/२३)—यह करमचंद का पुत्र था। बांकीदास ने इसे मान कछवाहा का नाना लिखा है। संवत् १५८६ में विक्रमादित्य से चित्तौड़ छूटा तब यह काम आया।[2] मालदे को छोड़ कर यह राणा उदयसिंह के पास चला गया था। इसकी जागीर में जाजपुर था।

भेदो पंचायणोत (५२/२६)—ये लोग उस समय रड़ोद के थाने पर थे। वहाँ से सूचना मिलते ही सहसा की मदद को लिए आये थे। राव वीरमदे को जीवित युद्ध से निकालने वालों में यह भी था। इसने इस युद्ध में बड़ा पराक्रम दिखाया। उसकी साक्षी का यह दोहा प्रसिद्ध है—

> **भिड़ते मादिज भांजिया, वीरत राइ विभाड़।**
> **बीजड़ा वीसरसी नहीं, रींयां वाळी राड़॥**[3]

---

१. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ० ११७, ११८, १२१।
२ बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी पृ० १३८।
३ ऐतिहासिक बातां : (परम्परा) भा० ११ पृ० ४१।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीरमदे नुं अजमेर था ही परो काढियो (५४/२७)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि अजमेर से निकलने पर जैता की अध्यक्षता में मालदे की फौज ने वीरम का बहुत पीछा किया। अन्त में वीरमदे मारने मरने को तैयार हो गया। युद्ध की स्थिति बनती देख जैता ने कहा कि वीरम बड़ा राजपूत है, इसको इस प्रकार मारना उचित नहीं, यह कभी बड़ा नाम करेगा। अतः वे लौट आए।[1]

रणथंभोर री सोबादार (५४/२८)—नैणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है कि वीरमदे की मुलाकात रणथंभोर के सूबादार से मलारणे के थानेदार ने करवाई।[2] मुरारीदान की ख्यात में वीरम का मांडव के सूबेदार से मिलना लिखा है और उसके मारफ़त शेरशाह से।[3]

समेळ री नदी रै परै वेढ हुई (५७/३१)—विगत के प्रथम भाग में इस युद्ध में काम आने वाले कुछ ही वीरों के नाम इस घटना के प्रसंग में दिये गये हैं। मुरारीदान की ख्यात में ऐसे सरदारों की न केवल विस्तृत सूची ही मिलती है, अपितु प्रत्येक सरदार के अधीनस्थ योद्धाओं में से काम आने वाले योद्धाओं की संख्या भी अंकित की गई है। यह सूची निम्न प्रकार है[4]—

१. राठौड़ जैता पंचाइणोत—१०
२. ,, कूंपा महराजोत—२०
३. ,, उदैसिंघ जैतावत—१०१
४. ,, खींवा ऊदावत—११
५. ,, जोगा रावळ अखैराजोत का—११
६. ,, पंचाइण करमसीयोत—५१
७. ,, जैतसी ऊदावत—११
८. ,, सुरतांण गांगाउत—५१

---

१. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ११७।
२. मुहणोत नैणसी की ख्यात, भा० २ पृ० १५७।
३. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ११७।
४. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० १२०-१२२।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

९. राठौड़ पत्तो कान्हावत (हाथी रै दांत वढ़ियो) ७
१०. ,, वैरसी राणावत—२१
११. ,, वीदो भारमलोत बाला—११
१२. ,, कला भींवोत सुरजनोत—२१
१३. ,, हापा सीहावत—११
१४. ,, रायमल अखैराजोत रिणमल—११
१५. ,, भोजराज पंचाइणोत अखैराजोत—१
१६. ,, भद्दा पंचाइणोत—५१
१७. ,, जंमल बीदा परबतोत का—१
१८. ,, नींबा अणंदोत—११
१९. ,, भोजा पंचाइणात—११
२०. ,, भानीदास सूरा अखैराजोत का—३१
२१. ,, महेश देदावत—५१
२२. ,, जैतसो राघाउत—५१
२३. ,, हरपाल जोधाउत—५१
२४. ,, हरदास खंगारोत—१
२५. सोनगरा अखैराज रिणधोरोत—१
२६. ,, भोजराज अखैराजोत—२१
२७. भाटी पंचाइण जोधावत—११
२८. ,, मेरा अचळावत—६१
२९. ,, गांगा वरजांगोत—८१
३०. ,, केल्हण आसमल हमीरोत का—११
३१. ,, हमीर लाखाउत—२१
३२. ,, सूरा पाताउत—११
३३. ,, माधोदास राघोदासोत—२१
३४. ,, सूरा परबतोत—७१
३५. ,, नींबा पतावत—५१
३६. सोढा नाथा देदावत—३१
३७ देवड़ा अखैराज वनावत—११
३८. ऊहड़ वीरा लखावत—१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३९. ऊहड़ सुरजन नरहरदासोत—११
४०. सांखला डूंगरसी धामावत—११
४१. मांगळिया हेमा नींबावत—१
४२. ईन्दा किसना।
४३. चारण भानो खेतावत दधवाड़ियो—१
४४. पठाण अलेदादखां—१
४५. जैमल वीदावत डूंगरेत, राठौड़ खींवा ऊदावत का नौकर।

इसी ख्यात में आगे लिखा है कि उपरोक्त सरदारों के आदमी व घोड़े वगैरा १००० काम आये तथा राव की (निजी फौज के) २००० आदमी खेत रहे।

रा० प्रथीराज जैतावत (५९/३८)—यह प्रसिद्ध वीर जैता का पुत्र था। जैसा भैंरवदासोत ने सिफारिश करके राव मालदे से इसे बगड़ी का पट्टा दिलवाया।[1] इसने मालदे के लिये अनेक युद्धों में भाग लिया। मेड़ता के युद्ध में इसने बड़ी बहादुरी दिखाई थी, जिसकी साक्षी का दोहा उल्लेखनीय है—

कुळ कमंध तेथाह, हुवा नर केई मळे।
न को गहीर गुणेह, पैं सारीखो पीथला॥

वीदास जैतावत (५९/४०)—यह मालदे के प्रसिद्ध सामंतों में से था। यह प्रारम्भ में ऊदावत रतनसिंह खींवावत का सरदार था। इसके बांभाकुड़ी ग्राम उस समय पट्टे था। राठौड़ पृथ्वीराज के काम आजाने के बाद राव मालदे उसकी पूर्ति के लिये किसी ऐसे ही वीर की खोज में था, अतः उसने देवीदास का अपने सामंतों में स्थान दिया। इसने हाजीखाँ और राणा उदयसिंह के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें हाजीखां की ओर से लड़कर बड़ी वीरता दिखाई। राव ने प्रसन्न होकर इसे बगड़ी का पट्टा ८० गाँवों सहित दिया। इसके ऊपर राव ने मेड़ता की सुरक्षा का प्रबन्ध सौपा था, जिसे उसने भली भाँति निभाया और अंततः उसके रक्षार्थ ही काम आया।[2]

---

१. ऐतिहासिक बातां (परम्परा) पृ० ४६।
२ ,, ,, ,, पृ० ५५।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इसके वीरोचित कार्यों की प्रशंसा में अखा भाणेत ने वीर रसात्मक रचना 'देवीदास जैतावत री वेल' डिंगल भाषा में लिखी है।[1]

तेजसी डूंगरसियोत (६०/४०)—यह भी अपने समय का बड़ा वीर हुआ। प्राचीन बातों में इसके लिये 'असंख प्रवाड़े जैतवादी' विरूद प्रयोग में लिया गया है। इसने चाटसू के पँवारों को लूट कर अपना बैर लिया था। इसने राव मालदे की ओर से सिवाने की रक्षा का प्रबन्ध भी किया था। इस अवसर पर खर्च के लिये एक लाख फदिया राव ने तेजसी को देना स्वीकारा था, परन्तु हुजदारों ने यह रकम कई दिनों तक नहीं दी। एक दिन जब राव भोजन कर रहा था और राव का कामदार अभा उससे मिलने को डचोढ़ी में जाने लगा, तो तेजसी ने उसे रोक लिया और कहा—मेरी रकम देकर अन्दर जाओ। अभा ने जैसे-तैसे करके पीछा छुड़ाया और वह मालदे से मिलने अन्दर गया। जब मालदे ने उसे विलम्ब से आने का कारण पूछा, तो उसने तेजसी द्वारा किये गये तकाजे की बात की। राव ने तेजसी को अन्दर बुलवा कर पूछा तो उसने वही तकाजा राव के सामने भी किया। राव ने गुस्से में आकर भोजन का थाल (सोने का) पटका, तेजसी अपनी रकम की पूर्ति के बदले वह थाल उठा कर अपने डेरे पर चला आया। तब से यह कहावत प्रचलित हुई कि 'बंटाव में थाली तेजसी ली'।

इसने सिरोही को महमूद के आक्रमण से बचाया—'माडे राखी महमदे सरणे सिरोही' बाद में राव मालदे ने इसे अपनी सेवा से मुक्त कर दिया था, तब यह कुछ समय तक गुजरात के बादशाह की सेवा में भी रहा। फिर राणा उदयसिंह की सेवा में रहा। गाँव धूलोप इसके पट्टे में था। हाजीखाँ के विरुद्ध यह बहुत वीरता से लड़ा था।[2] साक्षी का दोहा—

झाल्यां ताक्या झाड़, सीसोद्यां सेरी करी।
माणस नै मेवाड़, तनै ॰मळाया तेजसी॥

१परम्परा (भा० १४) पृ० १०६।
२ ऐतिहासिक बातां (परम्परा) भा० ११, पृ० ६१-६८।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जगमाल (६३/४२)—यह राव वीरम का पुत्र था। यह राव मालदे की चाकरी करता था। प्रारम्भ में इसे राव ने खेरवा का पट्टा दिया था, फिर आधा मेड़ता दिया। जब अकबर बादशाह ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया, तब यह बादशाह से जा मिला और जब जैमल चित्तौड़ को चला गया तब बादशाह ने फिर आधा मेड़ता इसे दे दिया।[1] इसके वंशज मसूदा के जागीरदार हैं।[2]

राव रौ साथ काम आयौ (६५/४७)—सरफुदीन ने जब मेड़ता पर चढ़ाई की तब राव के आसामो ३४ सरदार और राजपूत चाकर ६६ काम आये।[3]

वीठलदास जैमलोत (६७/४८)—इसके पट्टे में गाँव आल्हणियावास और केकींद थे। फिर यह राणाजी के आश्रय में चला गया तथा हल्दीघाटी के युद्ध में अपने भाई रामदास के साथ काम आया।

सादूल जैमलोत (६७/५०)—इसको जैमलजी ने जागीर में कुड़की ग्राम दे रखा था। इसके तीन पुत्र थे—परशुराम, राघोदास और चतुर्भुज।[4]

सुरतांण जैमलोत (६९/५४)—यह सोलंकियों का भानजा था। जब चित्तौड़ के साके में जैमलजी काम आये, तब बादशाह ने इन्हें शाही सेवा में उपस्थित हो जाने की सूचना राजा मान कछवाहे के मारफत इसके पास भेजी। तब सुरतांण ने यह उत्तर दिया कि संकट के समय अभी तो राणा को नहीं छोड़ेंगे। बाद में यह अकबर की सेवा में उपस्थित हुआ, तब आधा मेड़ता इसे दे दिया गया। एक बार मेड़ता के एवजाने में सोभत भी इसके पट्टे में रहा। यह जब राजा मानसिंह के साथ पूर्व की ओर चढ़ाई में गया, तब गोकुल में संवत् १६४६ में इसका स्वर्गवास हुआ। यह कट्टर राजपूत था। इसके चरित्र पर निम्न दोहे से प्रकाश पड़ता है—

सुरताण ग्राखं पतसाह सूं, दो बातां न बणेह।[5]
धी दे धरा न भोगवां, महळ न देखण देह॥

---

१. मुरारीदान री ख्यात, पृ० ५२०-२१।
२. वही, पृ० ५२२।
३. वही, भा० ३, पृ० १९६।
४. मुरारीदान री ख्यात २. पृ० ४७०।
५. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ४६२-६४।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केसोदास (६६/५४)—यह सोलंकियों का भानजा था। जैमलजी के काम आने पर यह अकबर के पास उपस्थित हुआ, तब बादशाह ने इसे आधा मेड़ता दिया। संवत् १६५५ में दक्षिण की लड़ाई में गोपालदास सुरताणोत के साथ काम आया।

जगनाथ गोपालदासोत (७२/६०)—मुरारीदान की ख्यात में इसे राणा प्रताप का दोहीत्र लिखा है। संवत् १६५७ में जब आधा मेड़ता बादशाह ने इससे ले लिया तो नागौर की रूण की पट्टी इसे जागीर में दी। संवत् १६६६ में यह अहमदाबाद में काल-कवलित हुआ।[1]

कान्ह केसोदासोत (७२/६०)—केसोदास की मृत्यु के बाद वह आधे मेड़ते का हकदार हुआ। संवत् १६५८ में दक्षिण में रहते हुए इसका स्वर्गवास हुआ।

इन्द्रभाण (७३/६२)—यह कान्हदास का पुत्र था। इसे बादशाह ने इसके पिता को जगीर न देकर केकीद का पट्टा २२ गाँवों से दिया था। बाद में यह जागीर भी उससे लेली गई और जोधपुर के राजा को देदी गई।[2]

अबू (७३/६३)—इसका पूरा नाम अबुमुहम्मद था। इसके साथ बलूंदा के ठाकुर रामदास सूरसिंघोत ने मुगदड़ा में युद्ध किया था इसका वृत्तांत विगत के प्रथम भाग में आया है।[3] इस सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त जानकारी बलूंदा ठिकाने की तवारीख में मिली है। उसमें लिखा है कि नंदवाणे बोहरों को पकड़ कर अबू ले जाने लगा, तो उन्होंने बोलूंदा के ठाकुर रामदासजी से फरियाद की, इस पर रामदासजी ने मुगदड़े में आकर लड़ाई की। पंचोली राघोदास बलुओत (जैतारण का अधिकारी) राठौड़ जैतसिंह कछावत (२१ आदमियों सहित) मुगदड़े का ठाकुर तथा माधवदास दधवाड़िया आदि ५२ आदमी काम आये। राठौड़ गोपालदास सुंदरदासोत (रीयाँ का ठाकुर) के घायल होने का उल्लेख इसमें है

---

१. मुरारीदान की ख्यात २, पृ० ५६५।

२. वही, पृ० ४७२।

३. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग १ पृ० ११३।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रामदास इस युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ा था[1] और उसके काम आने पर उसकी ठकुरानी रंभादे उसके पीछे संवत् १६७६, जेठ सुदो ६ को सती हुई, जिसका स्मारक (छत्री) श्रीमालियों की बगीचे में संवत् १६६४ को जेठ सुदि १३ को बनाया गया।[2]

इस प्रसंग पर रामदास और माधवदास दधवाड़िया की कर्त्तव्यपरायणता को अमर करने वाला एक गीत महाकवि राठौड़ पृथ्वीराज विरचित उपलब्ध हैं। गीत इस प्रकार है—

वडो एक रजपूत नै एक चारण वडो।
बहु जां जलम लग होत बाधो।
महा गजसिंह छळ सूर रामो मरै।
मरै राम सुछळ म रै माधो॥ ॥
सांसह मुरधरा काम खोसोजतो।
मुरधरां तणी जुहरे भुजां मढ।
सूर सुत छळ जुड़ मरे रण चंद सुत।
चंद-सुत सुछळ जुड़ मरै सुत चंद॥२॥
हेत अमीज सध उबे सत्रवां जंत हर।
परठिया वीन वासक कमळ पाव।
राव कमधज तणी चाड कमधज रहै।
रहे बिहु चाड दधवाड़ियो राव॥३॥
पल खड़ खेत जल चाड कुल आपरै।
राम मघकर दिन सार रसिया।
कंवारी घड़ा वर चंद नांवो करै।
वीरहर मयंकहर स्वर्ग बसीया॥४॥[3]

कान्ह षींवावत (७५/६७)—यह आसोप के ठाकुर खींवकर्ण का पाटवी पुत्र था। यह जोधपुर के महाराजा सूरसिंह की सेवा में था। कुँवर

---

१. विप्र बचावण कारणे बजे जुंझारू ढोल।
चढ चांदा रा पारधी, बंदी जाय निबोल॥
रामदास जद रांम भज, चढियो तुरकां लार।
तुरकां रा तंडल करे, विप्र छुडावण वार॥
२. बलूंदा कुँवर भवानीसिंहजी के सौजन्य से प्राप्त।
३. शोध विद्यार्थी माधवप्रसाद सोनी के सौजन्य से प्राप्त।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गजसिंह के साथ इसने भी खुर्रम की सहायतार्थ मेवाड़ के घेरे में भाग लिया था।[1]

अजमेर में जब किशनसिंह राठौड़ आदि ने भाटी गोयंददास को मारा, तब इसने किशनसिंह का पक्ष लिया, जिससे राजा सूरसिंह नाराज हो गये और आसोप का अधिकार इससे लेकर इसके भाई राजसिंह को दिया। सूरसिंह की मृत्यु होने पर यह गजसिंह की सेवा में उपस्थित हुआ। गजसिंह इसकी काबलियत से परिचित था, अतः उसने इसे मेड़ता के प्रबन्ध के लिये भंडारी लूणा के साथ भेजा।[2] इसके ७ पुत्र थे, जिनमें से रामचन्द्र महाराजा जसवंतसिंह की सेवा में काबुल इलाके के ग्राम सुरखाब में काम आया।[3]

पडुखां री वासणी (११७/९२)—यहाँ के एक प्राचीन कुंए पर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय का वि० सं० १३५८ का एक शिला-लेख है, जिसमें मेड़ता में उक्त सुल्तान द्वार अपना फौजदार नियुक्त किये जाने का उल्लेख है।[4]

रांमा चारणां री वासणी (११९/९२)—यहाँ का स्थान रामा चारण ने बसाया, अतः इसी के नाम पर इस गाँव का नाम पड़ा।

केकीदर (१२०/९३)—इसका संस्कृत लेखों में किस्कन्धा नाम मिलता है यह स्थान मेड़ता से १४ मील दक्षिण में है। यहाँ ११ वीं शताब्दी का एक शिव मन्दिर है, जिसके सभा-मण्डप में ४ शिला-लेख हैं। दूसरा मन्दिर पार्श्वनाथ का है, यह मूलतः १३ वीं शताब्दी के आस-पास का बना हुआ है, परन्तु अधिकांश भाग बाद का है जैसा कि महाराजा गजसिंह के समय के एक लेख से प्रतीत होता है।[5]

भवाळ (१२१/९३)—यह मेड़ता से १२ मील दक्षिण में है। यहाँ महाकाली का

---

१. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ४७२।
२. कूंपावत राठौड़ों का इतिहास, राव शिवनाथ, पृ० १९२।
३ खींवसर ठिकाने की ख्यात।
४ जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा, पृ० ३३।
५. वही पृ० ३४-३५।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राचीन मंदिर है, जिसमें ११७१ संवत् का लेख है।[१] यह ग्राम आसकरण मानसिंघोत मेड़तिया की जागीर में था।[२]

नीलियाँ (१२१/९३)—यह ग्राम मेड़तिया जैमल के पौत्र विहारीदास वीठलदासोत को संवत् १६६७ में मिला।[३] यहाँ ऊदाजी और वीरम के वीच घोड़ियों के सम्बन्ध में युद्ध हुआ था। ऊदा ने वीरम की कटार खुलवादी, तबसे मेड़तिये कटार नहीं बाँधते।

सेहरियो (१२३/९३)—यह गाँव जोधपुर के राजा की ओर से संवत् १६६६ में कल्याणदास जैमलोत के पुत्र विहारीदास को मिला और १६६६ में जब्त हुआ।[४] बाद में इस स्थान को संवत् १६६५ में चांपावत केहरखान ने आवाद किया।[५]

वेहरियो (१२८/९३)—यह गाँव ३ अन्य गाँवों सहित प्रयागदास हरीसिंघोत के पट्टे में था। इसके बाद वीराणी और रलावता उसके पट्टे में रहे।[६]

रुंदो (१३१/९५)—यह गाँव साँवळ कल्याणदासोत मेड़तिया को संवत् १६६४ में सात गाँवों से मिला।[७] वाद में संवत् १६८४ में गोपीनाथ गोकुलदासोत को मिला। यह उज्जैन की लड़ाई में काम आने वाले योद्धाओं में से था।[८]

खुवासपुरो (१३३/९५)—शेरशाह के सामंत खवासखाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहां खवासखां की कब्र व उसके महलों के खण्डहर हैं।

सिरसलो (१४२/९७)—यह गांव संवत् १६६६ में सांवळदास गोयंददासोत मेड़तिया को जागीर में मिला।[९]

---

१. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ० ३६।

२. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ५१५।

३. मुरारीदान की ख्यात, २ पृ० ४८९।

४. वही पृ० ४८०-८१।

५. फुटकर ख्यात पृ० ६९।

६. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ५४५।

७. वही ० ४८९।

८. वही ० ४७७।

९. वही, २ पृ० ५०१।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राहण (खास) (१५३/१००)—यह गाँव दूदा ने सीहा को जागीर में देकर मेड़ता अपने अधिकार में कर लिया था। रायमल दूदावत के पट्टे में भी कुछ समय तक रहा। फिर सुरताण जैमलोत की ओर से कल्याणदास जैमलोत के पट्टे में रहा। संवत् १६५७ में ४५ गांवों से उदैसिंघ भगवानदासोत मेड़तिया को मिला।[1]

छापरी बडी (१५६/१००)—सं० १६७२ में मोहणदास तेजसिंहोत के पट्टे में थी।[2]

ईडवो (१६७/१०४)—यह गाँव अर्जुन रायमलोत मेड़तिया के पट्टे में था। जब अर्जुन चित्तौड़ के युद्ध में राणा की ओर से लड़कर काम आ गया, तो उसके पुत्र नरबद को मिला।[3]

पालड़ो बड़ो (१०८/१०४)—चतुर्भुज मनोहरदासोत मेड़तिया के पट्टे में थी।[4]

सीरासणो (१०८/१०४)—संवत् १६६० में १३ गाँवों से हरीसिंह चाँदावत मेड़तिया को जागीर में मिला था।[5]

डूंगरवास (१७३/१०४)—यह गाँव संवत् १६८३ में अमरा रायसिंघोत मेड़तिया को दो अन्य गाँवों सहित जागीर में मिला।[6]

फरासतपुरो (१७३/१०४)—इस गाँव का नाम महाराजा जसवंतसिंह के हाकिम मिया फरासत के नाम पर पड़ा।

अलतवो (१७६/१०५)—संवत् १६८३ में रणछोड़ गोपालदासोत को यह गाँव मिला था। फिर वनमालीदास बिहारीदासोत को सं० १६८८ में १३ गाँवों से दिया गया। संवत् १६९६ में महासिंह जगनाथोत को दिया गया।[7]

---

१. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ५५५, ४७३, ५६१।
२. वही पृ ५२३।
३. वही पृ० ५५६।
४. वही २, पृ० ४८७।
५. वही. पृ ५४४।
६. वही पृ० ५३३।
७. वही पृ० ४८९, ५८०।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मदीयांन (१७६/१०५)—संवत् १६८० में ३ गाँवों सहित भगवानदास परसरामोत मेड़तिये के पट्टे में था।[1]

भयो बडो (१७७/१०५)—संवत् १६८० में ५ गाँवों सहित हरीदास गोयंददासोत मेड़तिया को मिला था। तत्पश्चात् संवत् १६८२ में सबलसिंह सेखाउत को मिला।[2]

डोभड़ी बड़ी (१७६/१०५)—संवत् १६०० में यह मनोहरदास सुन्दरदासोत की जागीर में ४ गाँवों सहित थी। संवत् १६६० में सिंघ हरीदासोत को मिली।[3]

रतनसी दूदावत (१८५/१०६)—प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मेड़तणी मीरां का पिता। यह राणा सांगा की ओर से लड़ता हुआ खनवा के युद्ध में काम आया।

जालसू बडो (१८८/१०७)—संवत् १६८० में उग्रसेन सुन्दरदासोत मेड़तिया को मिली। सं० १६८६ में अजबसिंह रामदासोत को ७ गाँवों सहित दी गई।[4]

तांबड़ोली (१८६/१०७)—संवत् १६८४ में यह ग्राम मुरारीदास गोयंददासोत को ७ गाँवों से जागीर में मिला था।[5]

रेवंत (१६१)—संवत् १६८० में सुजाणसिंह उग्रसेनोत मेड़तिया के पट्टे में थी।[6]

रेयां (१६६/१०६)—माधोदास जैमलोत का वतन था। उसके बाद सुन्दरदास और उसके पुत्र गोपालदास की जागीर में रहा। संवत् १७२४ में आणंदसिंह भींवसिंघोत को मिला।[7]

कुड़की (२००/१०६)—भोज सीहावत से छुड़वाकर यह ग्राम वीरमदे ने रतनसी दूदावत को दिया था।[8] यह स्थान मीरांबाई का जन्म-स्थान माना जाता है।

---

१. मुरारीदान री ख्यात, पृ० ५०३।
२. वही, २, पृ० ५३६, ५४१।
३. वही, पृ० ४८६, ५६८।
४. वही, पृ० ५६१।
५. वही, पृ० ५३८।
६. वही, पृ० ५६१।
७. वही पृ० ४८३-४८४।
८. वही, पृ० ५७३-५७४।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लाडपुरौ (२०२/१०६)—सं० १६६७ में यह ग्राम हरीराम कलाउत को मिला। संवत् १६७१ में उसका पुत्र रामचन्द्र अधिकारी हुआ।[1]

केरियो (२०४/१०६)—रामचन्द्र रघुनाथोत को संवत् १६७५ में मिला था।

नरसिंघवासणी (२११/१०६)—नरसिंघदास रायमलोत मेड़तिया की बसाई हुई।

परगना सिवाना

सीवाणो (२१६/१)—सीवाने का गढ़ वीरनारायण पँवार द्वारा बनवाया हुआ माना जाता है। ख्यातों में इसे कुंभटा भी कहा गया है। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि यह किला सिंह-लंका होने से कड़तोड़ियल (जिसकी कटि टूटी हुई है) माना जाता है, अतः यह राजधानी बनाने योग्य नहीं है,[2] यहाँ पर कोई भी शासक पनप नहीं सकता।

तीडो छाडावत (२१६/२)—इसकी उपलब्धियों पर लिखा हुआ एक प्राचीन गीत इस प्रकार है—

> पिड़ सांचोर सोनगिर पासै।
> सीहाहरै चढै रिण सीक।
> मातंगपुर मझ्झ कटक मरावै।
> मुंह भंजाइ गयो मछरीक ॥१॥
> गोतमपुर हूंता ग्रह गांजै।
> भिड़ सेन वळियो बंक भाळ।
> खांडा बळ जीतो खेड़ेचे।
> राव जाळोरो रिणताळ ॥२॥
> छोडवियो मछरी छाड़ावत।
> मुणस घणा ग्रहै कमाण।
> भागो राव राठौड़ भिड़ंते।
> चोरंग सांवतसी चहुवाण ॥३॥[3]

जैतमाल सलखावत (२१६/३)—यह सलखा की पड़िहारी रानी (राणा रूपड़ा की लड़की) का पुत्र था। इसके १२ पुत्र थे। इनमें से खींवकर्ण बड़ा प्रतापी हुआ। इसने अपने पुत्रों को मृत्यु के समय यह निर्देश दिया

---

१. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ५२५।
२. वही, पृ० ६३०।
३. वही, पृ० ५४।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कि सिवाना हापा के अधिकार में रहने देना और तुम सभी विदेशों में अपने-अपने ठिकाने कायम करना ।[1] इसके वंशज जैतमालोत कहलाये ।

रायमल मालदेओत (२१९/७)—यह मालदे की झाली रानी हीरांदे का पुत्र था । संवत् १६२७ में बादशाह अकबर जब नागौर आया, तब मोटाराजा उदयसिंह के साथ यह भी बादशाह से मिला । इसे शाही नौकरी में रख लिया गया । इसके ५ पुत्र थे- कल्याणदास, प्रतापसी, कान्ह, बलभद्र तथा सांवलदास ।[2]

राजा रायसिंघ भुरटियो (२१९/८)—बीकानेर का प्रसिद्ध शासक था । इसका नाम भुरटिया कैसे पड़ा, इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा है । मुगलों की ओर से फरमान लेकर जो अहदी वगैरह आते थे, उन्हें मरुप्रदेश का लंबा रास्ता पार करना होता था । रास्ते में कांटेदार भरूंट घास बहुत होने से यात्रा कष्टदायक होती थी, फिर बीकानेर पहुँचने पर उनकी आवभगत न होकर उपेक्षा-सी होती थी, इसलिये उन लोगों ने राजा के नाम के साथ 'भरूटियों' शब्द कहना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार यह नाम प्रचलित हो गया ।

थोभ बडोबास (२३६/१९)—यह प्राचीन नगर है । किसी समय में यहाँ जैनियों की अच्छी बस्ती थी । इस स्थान पर लिपिवद्ध अनेक जैन-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं ।

सूरपुरौ (२४१/१९)—महाराजा सूरसिंह के राज्य-काल में बसा, इसलिये इसका यह नाम पड़ा ।

बालोतरो (२४६/१९)—यह बड़ा गाँव लूनी नदी के पास बसा हुआ है तथा यहाँ की जमीन सरसब्ज है ।

पचपदरो (२४७/१९)—नमक की खानों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध है । यहाँ नमक की खानों पर पुश्तैनी तौर से कार्य करने वाले खारवालों की बड़ी बस्ती है ।

---

१. बांकीदास री ख्यात, पृ० ५ ।
२. वही, पृ० १९ ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोपड़ी (२४८/१६)—यहाँ रावळ मलीनाथजी का प्राचीन स्थान है।

नेवाई (२४८/२१)—यह ग्राम सं० १६७६ में सोनगरा भाखरसी जसवंतोत के पट्टे में आया।[1]

पाटोधी (२५०/१६)—मारवाड़ में बढ़िया नश्ल की घोड़ियों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध रहा हैं। यह राठौड़ महेसदास मालदेग्रोत को पट्टे में मिला था।[2]

गुघरट (२५५/१६)—हेमा सीमालोत के साथ जगमाल की जब अनबन हो गई, तो यहाँ के पहाड़ों पर रह कर हेमा ने महेवा की धरती में खूब नुक्सान किया था।[3] बिखे के समय मालदे भी यहाँ कुछ समय तक रहा।

नाईली (२६२/१६)—नाइलो नामक पहाड़ो के पास बसा हुआ होने से इसका यह नाम पड़ा।

परगना पोहकरण

पोहकरण (२८६/१)—यह स्थान पुष्कर ऋषि द्वारा बसाया हुआ माना जाता है। पूरा परगना मरुस्थलो है, पर जहां पोकरण शहर बसा है, वहाँ पानी की कमी नहीं है। जैसलमेर को सीमा पर होने के कारण इस स्थान का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ जैसलमेर वालों का भी अधिकार रह चुका है। उनके द्वारा किले में करवाये हुए कार्य तथा याचकों को सांसण में दिये हुए गाँवों का उल्लेख इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। यहाँ पर बसने वाले राठौड़ पोकरणा राठौड़ कहलाते हैं।

रांमदे पीर (२६१/५)—मारवाड़ के प्रसिद्ध पाँच पीरों में इनका स्थान है। रांमदे ने जनता के कष्ट निवारणार्थ अनेक कार्य किये थे, जिसके कारण आज दिन भी राजस्थान और गुजरात के लोग उनमें श्रद्धा रखते हैं; तथा बहुत दूर-दूर से मनौती के लिए लोग आते हैं। संत हरजी भाटी की लिखी 'रांमदे री वेल'[4] में इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। वैसे

१: मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० २५६।
२ वही, पृ० २५२।
३. मुंहता नेणसी री ख्यात भा० २, पृ० २८८।
४. परम्परा भा० १४ पृ० १०५।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

इनके गीत मेघवाल जाति में अत्यधिक प्रचलित हैं ।

नरै आपरो आँण फेरी (२६२/६)—मुंहता नैणसी ने अपनी ख्यात में इस प्रसंग का बड़ा दिलचस्प किस्सा लिखा है । पोकरण पर खींवा का अधिकार था और नरा फलोधी पर शासन कर रहा था। एक दिन जब नरा अपनी माँ लक्ष्मीबाई के पास बैठा भोजन कर रहा था, तो पोकरण पर बिजली चमकती हुई दिखाई दी। लक्ष्मीबाई ने उस ओर देख कर निश्वास लिया। नरा ने इसका कारण पूछा तो अधिक आग्रह करने पर उसने बताया कि खींवा ने किस तरह निंदात्मक भाव से किसी समय उसके साथ शादी करने के प्रस्ताव को ठुकरा कर एक कुंआरी लड़की का अपमान किया था। इस पर नरा ने इसका बैर लेने का निश्चय किया और अपने पुरोहित को गुप्तचर के तौर पर पोकरण भेजा। उसने कई दिनों तक वहाँ रहकर सारी स्थिति का पता लगाया और एक दिन खींवा की अनुपस्थिति में उपयुक्त अवसर समझकर नरा को सूचना दी, जिससे नरा ने आकार सहज ही में गढ़ पर अधिकार कर लिया।[1]

नरौ बाहर चढियौ (२६२/६)—बारह वर्ष बाद नरा से बैर लेने के लिये खींवा और उसका पुत्र लूंका अपने सैनिकों सहित पोकरण पर चढ़ आए और वहाँ की गायों को घेर कर ले गये। नरा ने उनका पीछा किया और पोकरण से ५ कोस दूर नादणहाई ग्राम के पास युद्ध हुआ, जिसमें लूंका के हाथ से नरा काम आया। वहाँ एक जाल के पास उसका सिर कट कर पड़ा।[2]

पोकरण रा दुय बांट किया (२६३/७)—खींवा के वंशज गोयंद के राज्य में बराबर लूट-पाट करते रहे, जिससे तंग आकर उसने लूंका को ३० गाँवों का बंट दिया[3] और जिस जाल के पास नरा का सिर कट कर गिरा था, वहाँ सीमा कायम करदी। लूंका ने अपनी राजधानी भुणियाणा ग्राम में कायम की।

---

१ मुहणोत नैणसी री ख्यात, भा० ३ पृ० १०३-१२।
२. वही, पृ० ११४।
३. वही।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव बरजांग (३११/३)—यह पोकरण का शासक और खींवा का पिता था।

बाळनाथजी (३११/३)—खींवा के शासन-काल में यहाँ यह योगी रहता था। फिर वह रुष्ट होकर वहाँ से चला गया। जाते समय उसने शाप दिया, जिससे खींवा को राज्य खोना पड़ा।[1]

देढीयां रौ बास (३३०/३९)—यहाँ बसने वाले राठौड़ दोढिया राठौड़ कहलाये।

चांदसमो (३३५/३९)—यहाँ के राठौड़ चांदसमेचा कहलाये।

ढंढ री सरेह (३३९/३९)—ढंढ पड़िहार अड़बाल[2] का खुदवाया हुआ यहाँ तालाब है, अतः उसीके पीछे इस गाँव का यह नाम पुकारा जाता है।

साकड़ो (३४०/४०)—यह पोकरण के प्रसिद्ध गाँवों में से है। भूमितल में अब भी पानी ८-१० पुरस पर खूब उपलब्ध होता है।

पड़िहार राणो रूपड़ो (३४३/४०)—यह रूपड़ा मारवाड़ी गीतों में गाया जाता है। इसके १२ पुत्रियें थीं। इसने प्रण कर रखा था कि बारह ही लडकियाँ वह रावों (राव की पदवी वालों) को ब्याहेगा। ११ लड़कियाँ तो उसने रावों को ब्याह दी पर १२ वीं के लिये वर न मिलने पर उसनें भाटी राव केलण को ब्याही। तब से केलणों और पड़िहारों के सम्बन्ध होने लगे।[3]

भुणियांणो (३४४/४१)—लूंका पोकरणा पोकरण के आधे गाँव ३० की ठकुराई यहां रहकर करता था। इसके खंडहरों से ज्ञात होता है कि यह गाँव प्राचीन समय में सम्पन्न था।

बांभणू (३४६/४५)—यहां के राठौड़ बांमणुंवा कहलाये।

रांमदेहरो (३४९/४२)—रामदेवजी ने जब पोकरण हमीर जगमालोत को दे दी, तब वे यहाँ आकर रहे। यह पोकरण का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि

---

१. मुहणोत नैणसी री ख्यात ३, पृ० १०७।

२. यह अड़बाल कोई प्रसिद्ध व्यक्ति होना चाहिए। सालोड़ी ग्राम के पास अड़बाल नामक बड़ा पहाड़ है। संभव है, इसी के नाम पर इस पहाड़ का नाम भी रखा गया हो।

३. मुरारीदान की ख्यात ३ पृ० १७५।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्ष में दो बार यहां रामदे पीर का मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग आते हैं।

म्हडू जीवण रौ वास (३५१/४३)—महडू जीवण ने पोकरणों और गोयंदोतों का वैरभाव प्रयत्न करके समाप्त करवाया, तब पोकरणों ने उसे यहाँ जमीन दी। उसकी बसी का यही नाम पड़ गया।

रतनू रूपसी रौ बास (३५२/४३)—यह ग्राम रतनूं रूपसी को जैसलमेर के रावळ भींव द्वारा उस समय दिया गया जब पोकरण जैसलमेर के अधिकार में थी।

म्हडू षीदा रौ बास (३५२/४३)—यह ग्राम जैसलमेर के रावळ मनोहरदास द्वारा महडू षीदा को संवत् १६८८ में दिया गया। यहाँ पर म्हडू खीदा की बसी थी इसलिये उक्त स्थान का नाम यह पड़ा।

रतनू भारमल रौ बास (३५३/४३)—इस स्थान का अन्य नाम कीलांणपुर शायद जैसलमेर के रावळ कल्याणदास के नाम पर पड़ा हो। कल्याणमल ने यह गाँव रतनू भारमल को दत्त में दिया तब पोकरण के अधिकारियों ने आकर शासक के आदेशानुसार इसकी सीमा निश्चित करदी। अतः इससे ज्ञात होता है कि पूरा ग्राम दत्त में न देकर उसका कुछ भाग ही उक्त चारण को दिया गया होगा और उसकी बसी उक्त नाम से प्रसिद्ध हुई।

नांदणहाई रो बास (३५४/४३)—यह ग्राम लूंका के पुत्रों द्वारा चारण लूंभा और सादा मेघावत को दिया गया। इससे पता चलता है कि कभी-कभी शासक के पुत्रों द्वारा सामूहिक रूप से भी ग्राम दत्त में दिये जाते थे।

गाँव केलावौ आथौ (३५५/४३)—यह ग्राम राव गोयंद नरावत द्वारा चारण नाल्हा को इस उपकार के बदले में दिया गया कि जब षींवा बरजांगोत गायें घेर कर लेजाने लगा तब नरा उसके पीछे बाहर चढा और नरा ने युद्ध करके वीरगति प्राप्त की परन्तु उसके बहुत से साथी बुरी तरह घायल हुए, इनकी सेवा सुश्रुसा चारण नाल्हा ने खूब अच्छी तरह की।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

केलावा ग्राम उस समय सूना पड़ा था उसका आधा हिस्सा उक्त चारण को और आधा भाटी वीरम जोधावत को दिया गया तभी से इसके दो बास अलग-अलग बसे ।

बाकी २५ गाँव मांडणा (३५५/४३)—लेखक ने पोकरण के पूरे गाँवों की विगत प्रस्तुत न करके ६१ गाँवों की ही विगत प्रस्तुत की है। संभवतः उसने यह विगत पोकरण परगने की हाकिमी करते समय तैयार की[1] परन्तु शीघ्र ही उसका स्थानान्तरण हो जाने से इसे वह पूरी नहीं कर पाया।

१, द्रष्टव्य—मारवाड़ रा परगनां री विगत भा० २ पृ० ३०५-६।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विगत में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों का अर्थ

अडांणी—रहन रखना

अफीण—अफीम पर कर।

अणी—फौज की टुकड़ी, फौज का एक भाग।

अमीन—मुगल साम्राज्य का वड़ा राजस्व अधिकारी जिसको पशुधन आदि सम्पत्ति कुड़क करके भी वसूली करने का अधिकार होता था।

अनड़—वड़ा पहाड़, ऐसा पहाड़ जो किसी के कब्जे में न आ सके।

अरट—रहट।

अवल ऊनाळी—प्रथम दर्जे की रवी की फसल।

असुष—वैमनस्य, मनमुटाव।

अहधी—वह मुगल राज्य-कर्मचारी जो विशेष संदेश लेकर राजा आदि के यहां पहुंचता था।

आंण दांण—शासक के नाम की दुहाई।

आईठांण—निशान, शेष चिन्ह।

आषा—अक्षत।

आषारिया—वह कुंआ जिसमें से एक बार पानी निकालने के वाद कुछ समय के लिये ठहर कर पानी निकाला जा सकता है।

आध बंटाई—जमीन की पैदावार का आधा हिस्सा बांट कर लगान स्वरूप लेना।

आरण—रणस्थल, युद्ध भूमि।

आवदांन—आवाद।

ओठी—सुतर सवार, ऊंट पर चढ़ कर संदेश ले जाने वाला व्यक्ति।

ओढ़ी ठौड़—विकट जगह।

ओळगण—प्रेमिका, गायिका।

औनाड़—किसी के वन्धन में न आने वाला। वीर प्रकृति का पुरुष।

इजाफो—अधिक, अतिरिक्त।

उछाह—उत्सव, किसी विशेष उपलब्धि के निमित्त प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए किया जाने वाला आयोजन।

उदक—चारण अथवा ब्राह्मण आदि को जमीन आदि दान में देने का संकल्प।

उधरांणो—पहले की सालों का उधार (बकाया) रहा हुआ कर।

ऊतन—वतन, जन्म स्थान।

ऊनवा—वह स्थल जहां आसपास का पानी बह कर भर जाता है और सूखने पर उसमें गेहूँ चने आदि की फसल होती है।

ऊनाळी—रवी की फसल।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ऊरी ताली—हल्की ताली, वह खलिहान जिसमें बहुत कम या नहीं के बराबर अनाज निकला हो।

एका—भाटियों की एक शाखा।

कंवल्-पूजा—देवी अथवा महादेव की तुष्टि हेतु शीश समर्पण करके पूजा करना।

कड़ब घास—पशुओं के लिए विशेष प्रकार की घास पर लगान।

कटक—फौज।

कणवारिया—वह अधिकारी जो गांव की सीमा में खेतों तथा वृक्षों आदि की रखवाली करता है।

कमठौ— भवन-निर्माण कार्य। दुर्ग महल आदि बनवाने का कार्य।

कमेत घोड़ो—गहरे तम्बाखू रंग का घोड़ा।

करवरे बरस—फसल के हिसाब से हल्का वर्ष।

कांकड़—सीमा।

कांठै—किनारे पर, सीमा पर।

कुंवरपदौ—राजा अथवा ठाकुर के जीतेजी समाज में उसके कुंवर के लिये मान्य पद, जिसके अधीन उसे कुछ अधिकार प्राप्त होते थे।

कुकाऊ—पुकार करने वाला व्यक्ति जो किसी संकट की सूचना देने पहुंता था।

कुमया—वैर भाव।

कोरत-थंम—कीर्ति-स्तंभ।

कीरोड़ी—करोड़ रुपये तक की वसूली करने का अधिकार रखने वाला राजस्व अधिकारी।

कोसीटा—वह कुंआ जिसका पानी ज्यादा गहराई पर न हो और हाथी की सूंड के आकार के चरस (सूंडिया) से पानी निकाला जाता है।

कोहर—गहरा कुंआ।

षरड़ो—उस व्यक्ति से वसूल किया जाने वाला कर जो गांव में घर वसा कर रहता था।

षडचर लोग—जानवर चराने वाले लोग।

षडीण—वह जमीन जो वोई जाती हो।

षरक कूण—वायव्य उत्तर और पश्चिम के बीच की दिशा।

षांनाजंगी—झगड़ा, युद्ध।

षारचिया—विशेष किस्म के गेहूं जो साधारण खारे पाने से पकाये जाते हैं।

षाटी—जीती हुई, कब्जे में की हुई।

षारोल्—इनका पेशा नमक बनाना रहा है। मारवाड़ में जहां नमक की खाने है वहां प्रायः ये पाये जाते हैं। ये शाक्त मत को मानते हैं।

षालसै—वह भूमि जो किसी जागीरदार के अधिकार में नहीं है।

षासी दोढ़ी—उस महल का मुख्य द्वार जहां शासक विश्राम करता था।

षिजमत—नोकरी, सेवा।

षोचड़ो—मृत्यु-भोज पर लिया जाने वाला कर।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खोहल—गोद, पुत्र के अभाव में अपने गोत्र के नजदीक रिश्तेदार के लड़के को दत्तक पुत्र बनाना।

गढ़ री रांग—किले की नींव।

गलत कोढ़—गलित कुष्ठ।

गांवेती—गांव में बसने वाले लोग।

ग्रासी वेध—जीवन यापन के लिये जमीन प्राप्त करने को किया जाने वाला संघर्ष।

गुढ़ो—पहाड़ आदि में रहने का सुरक्षित स्थान।

गुमट—गुंवजदार स्मारक।

गूघरी—कुंओं पर वंधे हुए रुप में निश्चित माप में लिया जाने वाला लगान।

गोढ़वाड़—पाली व कुछ जालोर परगने का इलका।

गोसवारो—सार रुप में हिसाव।

गोरां—कब्रे।

गोवली—ग्वाले।

गोरवौ—गांव के नजदीक का वह स्थान जहां गायें आदि रखी जाती हैं।

घांणी—तेल या सरसों की घाणी निकालने वालों से लिया जाने वाला कर।

घासमारी—पशुओं की गिनती के अनुसार उन पर लिया जाने वाला कर।

घीआई—जिसके घर में गायें भैंसें होती थी उससे घी के रुप में लिया जाने वाला कर।

घूघरी—फसल में से लिया जाने वाला (कर के तौर पर) विशेष हिस्सा।

चंवरी—चौंरी। विवाह की विधिवत रश्म सम्पन्न करने के लिये जहां वर वधू को वैठाकर ब्राह्मण द्वारा मंत्र आदि बोले जाते हैं।

चक—जमीन का एक बड़ा हिस्सा।

चांच—साधारण कच्चा कुंआ, जिसमें से पानी निकालने के लिये एक लंबे लट्ठे के पीछे पत्थर वांध कर अगले हिस्से में बरतन लटका कर हाथों से उसको ऊपर नीचे करने पर पानी निकाला जा सकता है।

चोढो—कम पानी।

चोतरो—परगने का मुख्य स्थान जहां परगने का हाकिम या बड़ा अधिकारी रहता था।

चौरासी—चौरासी गांवों का समूह।

छतीस पवन जात—प्राचीन ग्रंथों में इनके नाम इस प्रकार हैं—
सीसगर, दरजी, तंबोली, रंग्वाल, गवाल, वाढेई, सिणगतरा, सु तेली, धोबी, धूनिया, कंदोई, कहार, काछी, कुलाल, कलाल, माली, कुंदीगर, कागदी, किसान, पटवूनिया, चतेरा, बंधे रेवारी, लपेरा, ठठेरा, राजपटवा, छपरवंध, नाई, भरभूनिया, सोनार, लोहार, सकलीगर, हवाइगर, धीवर, चमार,—ऐ छतीस पवनीया।

छाली—बकरी।

छोरू—वंशज। छोकरा। बड़े आदमी के अधीन व्यक्ति।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जमीयत—जमा सामान।
जात—जाति। धर्म-लाभ के निमित्त की जाने वाली किसी स्थान की यात्रा।
जाव—कुंए के पास की वह भूमि जिसमें सिंचाई करके फसल ली जाती है।
जुग्रारी—फसल के सिट्टो की कटाई प्रारंभ करते समय लिया जाने वाला कर।
जीव सिलै—युद्ध के समय अंगों की रक्षा के लिए पहिना जाने वासा लोहे का अंग-त्राण।
टीकायत—राज्यतिलक का अधिकारी, वड़ा लड़का।
टीको—राज्य-रोहण के दस्तूर की रश्म, जिसके अनुसार ललाट पर तिलक किया जाता है। मगनी का प्रस्ताव। मगनी के प्रस्ताव के समय किया जाने वाला तिलक।
ठरड़ो—कठोर जमीन।
डाक चौकी—राज्य की डाक आगे पहुंचाने के लिये नियत चौकी।
डायजो—दहेज। प्रचीन प्रथानुसार कपड़े व गहनो के अतिरिक्त हाथी घोड़े, दास - दासियां पुरोहित व अन्य नौकर आदि भी दहेज में दिये जाते थे। इन्हें दायजवाल कहा जाता था।
डावड़ा—लड़का।
डोळौ—वह रश्म जिसके अनुसार लड़की को शादी के लिये उसके (होने वाले) पति के घर अथवा निश्चित स्थान पर पहुंचाया जाता था।
डोहळी—ब्राह्मण, साधु, भाट आदि को दी गई दान की भूमि।
ढ़ंढ—वह नीचा स्थल जहां स्वतः पानी शामिल हो जाता हो।
ढ़ीमड़ा—एक प्रकार का कुंआ।
ढ़ोवा—छापामार हमले।
तहवारी—विशेष अवसरों पर दी जाने वाली लाग।
तळहटी—पहाड़ी आदि पर वने दुर्ग के नीचे का स्थान।
तळा—गहरा कुंआ।
तकिया—सन्यासी के समाधि-स्थल पर बना चवूतरा।
तागीर—जब्त।
तागीरात—जागीरदार से गांव जब्त होने पर लिए जाने वाला कर।
ताती बाहर—शीघ्रता से, उसी घड़ी चढ़ने वाली बाहर।
ताली—खलिहान बुहारा जाता है उस समय लिया जाने वाला कर।
तीरवा—तीर की मार पहुंचे उतनी दूरी।
तुरकांण राज—मुसलिम राज्य।
थड़ो—सम्माननीय व्यक्ति का स्मारका।
थळ—रेतीली भूमि। स्थल।
थांणो—वह स्थल अथवा दुर्ग, कोटड़ी आदि जहां राज्य की ओर से सुरक्षात्मक प्रबन्ध के लिए सिपाही आदि रखे जाते हैं।
थांणेदार—थानेदार, परगने की सुरक्षा का जिम्मा रखने वाला अधिकारी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दत्त—दान में दिया हुआ गांव या भूमि।

दरगाह—मुगल दरबार, वह स्थान जहां बादशाह बैठकर आदेश देता है।

दइब—दैव।

दांण—बिसाती (मनिहारा) आदि से माल का अनुमान करके एक साथ लिया जाने वाला कर।

द्राव—पशु।

दांती—सिट्टे काटने के लिये दांत (काटने का औजार) लेकर जाने पर कर।

परसंग—सम्बन्ध। रिश्तेदारी।

परकोटो—शहरपना।

पटी—जमीन का चक विशेष।

पलीवाल—पाली के मूल निवासी होने से पलीवाल कहलाये। ये लोग उदयपुर के राणा के गुरु रहे हैं और किसी समय में व्योपार आदि भी करते थे तथा सम्पन्न थे।

पगवाय—वह बावली जिसमें सीढ़ियों के द्वारा उतर कर पानी भरा जा सकता है।

पटैल—एक खेतीहर जाति।

पसायता—निम्न जाति के लोगों को दिये गये खत जो राजा की सेवा-टहल करते थे। जैसे नाई, दर्जी, ढोली, कुम्हा आदि, इनसे कोई कर नहीं लिया जाता था।

परधांन—राज्य का प्रधान मत्री, प्रमुख अधिकारी, प्रमुख प्रतिनिधि (देखो-प्रथम भाग की भूमिका)

प्रतसही—प्रति सैकड़ा।

प्रवाड़ा—वीरता पूर्ण कार्य।

पाही—जागीरदार को कुछ चाकरी देकर उसकी एवज में खेत बोना।

पायगा—अस्तबल।

पाठा कागल—राजस्व आदि का हिसाब लिखने के लिये खर्च होने वाली लेखन-सामग्री के निमित लिया जाने वाला कर।

पालेज दूध रा—दूध पर रोकड़ पैसों में लिया जाने वाले कर। मुफ्त में आये हुय जानवरों पर लिया जाने वाला कर।

पातसाही मारग—शाही मार्ग। वह मार्ग जिससे होकर शाही सामान जाता हो।

पारका धाड़ा—बहुत दूर तक लूट पाट करना, लुटेरों को भी लूट लेना।

पानचराई—ऊंटो की चाराई के निमित्त लिया जाने वाला कर।

पितर—पित्र योनि।

पीरोजी—एक मुगल कालीन छोटा सिक्का।

पीछ रौ बेरो—वह कुंआ जिसमें से केवल पीने के लिये पानी निकाला जाता है।

पीयल—वह फसल जो सिंचाई द्वारा होती है।

पुकारु—पुकार करने वाले, फरियादी।

पेंडौ—यात्रा।

पेटवाणी—केवल पीने लायक पानी।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पेसकसो – सरकार को दी जाने वाली वेगार ग्रादि, चाकरी ।
पेटिग्रौ – घर के नौकरों को निर्वाह के लिये दी जाने वाली खाने-पीने की निश्चित सामग्री ।
पोतरा—पौत्र, वंशज ।
पौल् रा चाकर—राज्य विशेष की रक्षार्थ नियुक्त नौकर ।
फदिया – मुगल समय का सिक्का विशेष ।
फलसो—ग्राम का मुख्य द्वारा, मकान ग्रादि को रक्षित करने के लिये बनाई गई वाड़ या दीवार का मुख्य द्वार ।
दावै—बदले में ।
द्राह—गहरा गढ्ढा जिसमें वर्षा का पानी कई दिनों तक रहता है ।
दीवांण—उदयपुर के राणा की पदवी । राज्य का प्रमुख राजस्व ग्रधिकारी (देखो प्रथम भाग की भूमिका पृ० १४)
दीवांनगी—मुगल राज्य-व्यवस्था में सबसे बड़े राजस्व ग्रधिकारी का पद, देखो दीवांण ।
दीवांण खांनों—वह स्थान जहाँ दीवान ग्रपना दरवार लगता है ।
दुकाल्—ग्रकाल । दूसरे वर्ष फिर पड़ने वाला ग्रकाल ।
दुगाणी—मुगल कालीन छोटा सिक्का ।
देवचो—देवता के ग्रागे वचन-निर्वाह की शपथ ग्रहण करना ।
देहरो—मंदिर ।
देसौत—देशपति, राजा ।
दोढ़ी—राजा के निजी निवास स्थान का मुख्य द्वार ।
दोत पूजा—दवात-पूजा के निमित्त लिया जाने वाला लगान ।
दोहीता—दुहिता का लड़का, दोहित्र ।
देसोटो—देश निकाला, किसी व्यक्ति द्वारा बड़ा ग्रपराध किये जाने पर उसे देश से वहार चले जाने की सजा ।
दौम—दोयम, दूसरे दर्जे की जमीन ।
धरणो—चारणों ग्रादि की जागीर जब्त करने पर ग्रथवा किसी ग्रधिकार को समाप्त करने पर उनके द्वारा सम्वन्धित शासक के द्वारा या जागीर के मुख्य स्थान पर ग्रसंतोष व्यक्त करने के लिये धरना देकर वैठना ।
धरमदुग्रार—धर्मद्वार । युद्ध के समय चारों ग्रोर से घिर जाने पर प्राणों की भिक्षा मांगकर निकलने वालों के लिये कहा जाता था कि वे धर्मद्वार से निकले ।
धुमालो—कर विशेष ।
धोंकल्—झगड़ा, फिसाद ।
धोरावंध खेत—वह खेत जिसके किनारे पर रेत की पाल वांध कर पानी खेत में रोका जाता है ।
नंदवाणा बोहरा—वोहरों की एक शाखा ।
नटघुट—नट ग्रादि जातियें ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नाल़—संकरा कुंआ।
नाल़—विशेष प्रकार की तोपे।
नाल़-बंदी—कर विशेष।
नाल़ेर—नालियर। नालियर का फल भेज कर लड़की की मंगनी का प्रस्ताव किसी योग्य व्यक्ति को भेजने का रिवाज राजस्थान में रहा है। नालियर का लौट जाना दोनों पक्षों के लिये अपमान-जनक समझा जाता था।
पंडव—घोड़ों का सेवक।
पांतया—पंक्तिबद्ध करके अतिथियों को भोजन कराने की व्यवस्था।
फारकती—कुल हिसाब का निपटारा।
बड़ी नेपै—खूब उपज।
बंधवौ कोहर—वह कुंआ जो अन्दर से पत्थर आदि द्वारा पक्का बंधा हुआ होता है।
बधारा—किसी की सेवा को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से उसकी जागीरी में विस्तार करने के लिये अतिरिक्त गांव या जमीन आदि देना।
बरसोंदियो—वह तलाव जिसमें वर्ष भर के लिये पानी रहता है।
बरठो—भैंसा।
बसीटाल़ा—बीच बचाव करने वाले। संदेश वाहक।
बापोती—पुरखों द्वारा अधिकृत स्थान- राज्य, जमीन आदि।
बाब—रेशमी कपड़ा व किनार गोटे आदि पर लिया जाने वाला कर।
बावसु—गुप्त रूप से खबर लाने वाला व्यक्ति।
बाहर—चोर अथवा डाकू का पीछा करने का कार्य। प्राचीन समय में गायों की बाहर के लिये चढ़ना बड़ा पुण्य-कार्य समझा जाता था।
बित—गायें आदि पशु-धन।
बिश्नोई—इस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक पंवार राजपूत जांभाजी थे। इनके अनुयायी जाटों को इन्होंने २६ (बीस तथा नौ) प्रकार के नियमों का पालन कर वाया, इसलिये यह विश्नोई कहलाये। इनका मुख्य पेशा खेती करना रहा है।
बीछाहीत—बिसाती।
बेठ—जागीरदार अथवा शासक द्वारा बेगार में लिया जाने वाला कार्य अथवा वस्तु।
बोह सींवो—बड़ी सीमा वाला।
भरोती—कर भरने के पश्चात रसीद करते समय लिया जाने वाला कर।
भरेत रा षेत—वह खेत जिनमें वर्षा का पानी भर जाता हो।
भांणेज—भानजा, बहिन का लड़का।
भाई बांटे—सम्पत्ति को भाईयों में बांटने की क्रिया। वह सम्पनि जो भाइयों में बांटी जाने पर किसी एक भाई को प्राप्त होती है।
भाखर री षुड़े—पहाड़ की मोड़दार ढाल।
भाखर री गाल़—दो पहाड़ों के बीच का संकरा गहरा स्थान।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भाषरी री षांभ – पहाड़ी की मोड़ में।

भुंजाई—भुना हुआ खाना। वड़े ठाकुर अथवा शासक के यहां नोकरों तथा आने जाने वाले लोगों के लिये तैयार किया जाने वाला पुष्टिदायक भोजन ।

भोग – राज्य द्वारा जमीन की उपज से लिया जाने वाला लगान।

भोगल़ावै – खेत को इस हिसाव से रहन रखना कि उसके पेटे ली गई रकम का व्याज खेत के मालिक को नहीं देना पड़ता और खेत का कोई लगान वह रकम देने वाले से वसूल नहीं कर सकता।

भोगसील—भोगिशैल। ऐसी किंवदंती है कि यहां सर्प बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते थे इस लिये इस शैल का यह नाम पड़ा।

भोमिया—शासक से जिसे चौकसी रखने के लिये जमीन मिली हो वह व्यक्ति।

मांणो – बारह मन के बरावर का माप।

मापो—गांव से खरीद कर जो चीज वाहर ले जाई जाती थी उस पर यह कर लगता था।

मिलणो—भेंट के निमित्त (सम्मान स्वरूप) लिया जाने वाला लगान।

मिरजो—उच्च मुगल अधिकारी को मिलने वाली एक उपाधि।

मुकाती—रुपयों के रूप में प्राप्त होने वाला जमीन का लगान।

मुसला – मुसलमान लोग।

मुहम—सैनिक अभियान।

मूक – एक दिशा का नाम।

मेर—मारवाड़ की एक प्राचीन जाति।

मैहरेलण – महि को रेलने वाला। द्रव्य-दान द्वारा समस्त लोगों को तुष्ट करने वाला।

रसत – फौज की खुराक के लिये लिया जाने वाला लगान।

राजलोग – राजा के परिवार के लोग।

रातीबाहो – रात के समय किया जाने वाला हमला।

राह वेधी—हरएक समस्या की उलझनों को बारीकी से समझने वाला। भविष्य की गति विधि का सही अनुमान लगा लेने वाला।

रिण – अनउंपजाऊ भूमि, वह भूमि जहां खारा पानी शामिल होता हो।

रोड़ी – छोटी पहाड़ी, पठार।

रेल—दूर से बहकर आने वाला पानी जो खेतों में फैल जाता हो।

रैत – प्रजा।

लिखावणी – हिसाब किताव लिखने के पारिश्रमिक स्वरूप लिया जाने वाला लगान।

लूण रौ दरीबो – नमक की पैदावार का स्थान।

वडो रजपूत—प्रसिद्ध राजपूत। अनेक गुणों से सम्पन्न अपने समय का जाना-माना वीर राजपूत।

वणी—रुई की खेती।

वदावणो—वन्दना करना।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वहतीयांण—मार्ग चलने वाले । वे व्यक्ति जो किसी शासक की सीमा में से गुजरते समय सीमा पार करने के लिये कर देते हैं ।
वाका दाखल – पूरे वाकियात से परिचित करना ।
वागो—पुरुष की पोशाक ।
वार—समय, राज्य-काल ।
विसवो—प्रति अंक ।
संचो – संचित सामान ।
सगा—वह व्यक्ति जिसकी संतति के साथ इस शब्द का सम्बोधन करने वाला व्यक्ति अपनी संतान की शादी कर सकता है ।
सदामद से – परम्परा ।
सरेह – सर, जलाशय ।
सहलड़ी – गन्ना ।
सांमधरमी – स्वामिधर्म का निर्वाह करने वाला व्यक्ति ।
सांवणी – शकुन जानने वाला ।
सांसण—चारणों को दान में दी हुई भूमि अथवा इस प्रकार की भूमि पर उन लोगों का अधिकार ।
साष – साक्षी, वह काव्य जो किसी व्यक्ति की उपलब्धियों को व्यक्त करता हो अथवा प्रमाण स्वरुप प्रस्तुत किया जा सकता हो ।
सादवो—आवाज सुनाई दे उतनी दूरी ।
साला कटारी—शादी के अवसर पर अदा की जाने वाली एक रश्म जिसके अनुसार बहनोई साले को कीमती वस्तु या जमीन आदि देता है ।
साहौ—वह तिथी जिस पर विवाह होना निश्चित हो ।
साहीबी – हकूमत, राज्याधिकार की शक्ति ।
सिकदारी – सिकदार का ओहदा ।
सिषर बंध – शिखर युक्त मंदिर ।
सीयालू साख—खरीफ की फसल ।
सीर बंधी—अनिश्चित आमदनी में से बांट खाने वाले सहकारी लोग ।
सीरवी—इनका मुख्य स्थान बिलाड़ा है जहां इनकी धर्म-प्रर्वतक आईजी का स्थान है । यह अच्छी खेतीहर कौम है ।
सीवणी—शकुन का जानने वाला ।
सेझो—पृथ्वीतल में समाया हुआ वर्षा का पानी ।
सेंवज—वर्षा का पानी भर जाने से वाद में उस स्थान पर गेहूँ चना आदि होता है उसे सेंवज कहते है ।
सेरीणो—प्रतिमन पर सेरों के हिसाब में लिया जाने वाला लगान ।
सेवण घास—एक तरह का बड़ा घास जो काटने पर पुनः पनप जाता है ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सेसू—गुसच
सोबादार– सूबेदार, सूबे का प्रमुख अधिकारी ।
सैदाना—वाद्य विशेष ।
हल़भल़ कर—समझा बुझा कर ।
हल़ाहल़—भरपूर गुस्से में ।
हरोल़—फौज के आगे का हिस्सा ।
हाकम—हाकिम, परगने का प्रमुख प्रशासन अधिकारी ।
हासल—लगान । अनाज का वह भाग जो लगान के रुप में जागीरदार अथवा शासक द्वारा लिया जाता हो ।
हाडां बैर—वह बैर जिसका बदला अपराधी अथवा उसके वंशजो को मारकर ही लिया जा सके ।
हिंदवाणी—हिन्दू स्त्री, हिन्दू राज्य ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नामानुक्रमणिकाएँ :

पुरुष व स्त्री नामानुक्रमणिकाएँ

अ

अंबाल श्रीमाली व्यास २५७
अंवौ मालावत भाटी ६४
अकतयार खांन १७६
अकबर पातसाह ६९, ७१, ७६, ७७, ८७, ८८, ९७, १६३, ३८९, ३९०, ४९५, ४९६, दो. ६८, ७३, २९७
अखा बारहट ७९
अखीया सोढावत सींढायचा चारण दो. ३५१
अखैराज आसकरनोत जैतमाल राठौड़ १८४
अखैराज ऊदैसिंघोत राठौड़ ८८
अखैराज कूंपावत राठौड़ ८६
अखैराज खींची ८८
अखैराज चरडा ३८
अखराज दलपतोत २३६
अखैराज दलपतोत प्रोहित ३३४
अखैराज पंचाइणोत सींधल १४२
अखैराज मादावत राठौड़ ६०, ६५, दो.४९, ५०, ५२, ५४, ५९
अखैराज राठौड़ १५३ दो. ५४, ५५
अखैराज रिणधिरोत सोनगरा ५६, ८२, २६९, दो. ५७
अखौ गोईंद रो चारण दो. २७५
अखौ जगमालोत राठौड़ ६२
अखौ देकांणी हरबू रो राठौड़ दो. ३४३
अखौ भांण बारहट ७८
अखौ भाणावत बारहट ८२
अखौ वणवीर रौ ३१४
अड़वाल ढंढ पड़ीहार दो. ३३९
अड़सी नरावत जगहट ३५०
अचलदास खींची भोजावत २८, ८, ३८७
अचलदास बीकामाइतोत राठौड़ दो. ८
अचलदास भगवानदासोत पातो राठौड़ दौ. ३०६
अचला रायमलोत दो. १६५
अचलदास राईसलोत प्रोहित ५४३
अचसदास सुरतांणोत भाटी ११९, दो. ८
अचला चंदरीया बारहठ ३६६
अचला धणपालोत रोहड़ीया बारठ दो.३५०
अचला पीथानोत पेथड़ दो. ३३२
अचला लालावत चारण दो. २७४
अचलो वीकावत राठौड़ २६३
अचलो पेथड़ दो. ३०१
अचलो चांदावत २४०
अचलो धरमावत गहलोत ८९
अचलो धांधल दो. ३४६
अचलो पंचायणोत राठौड़ ४६, ५५
अचलो भांणोत राठौड़ ६२, ६५
अचलो भाटी ९६
अचलो लखसेण रो चौहांण १८५
अचलो सिवराजोत राठौड़ दो. ५७, ५८, ६५
अचलो हृदावत सांखलो १८५
अज ८, १०, ११, १२
अजगंध २

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अजवौ गिरधरदास रो बारठ दो. १४०
अजा झाला ६५
अजैपाल २
अजैराज राठौड़ दो. ३४१
अजेसी तुंवर दो २९१
अजो नरभामोत सेहलोत चदुवांण दो-४५
अणंदराम दवारकादासोत राठौड ५१७
अणंदीदास दो. ८७
अमंत रीखावत श्रीमाली ४८०
अनंत श्रीमाली ७९
अनरुध गौड़ १७०
अपटौ ७६
अवदुला खांन ९६
अब्दुला खांन ईदलखांन रो १७४
अबु अमीन १०६,११४ दो-७३,७४
अबु री वेटो ११५
अभा पांचोली १५,५४
अभो झाझावत ५९
अमौ दुरजणसाल रो राठौड़ दो-३४०
अमौ पा. दो-५९
अमर दुदावत रोहीड़ा बाहरट २३९, २५८
अमरा सोढा ३६०
अमरा हीरावत मेर ४६८
अमरौ आसकरनोत मेर ४६७
अमरौ आसकरणोत राठौड़ ११८ दो. ३०२
अमरौ पुंजावत दो. १७६
अमरो भींवोत राठौड़ दो. ३०७
अमरौ भोजावत सोढौ ३५५
अमरौ मंडलावत राठौड़ ४१
अमरौ रांमावत राठौड़ ६२ दो. ६५
अमरौ सुरजणोत राठौड़ दो. ३०५
अमरौ सूजावत भींवोत राठौड़ १८०
अमरौ हरीदासोत कूंपावत राठौड़ १७६
अयलफतै १४९
अरड़कमल चूंडावत राठौड़ ८०
अरजन अमरावत सीसोदीया १०४
अरजन वीठलदासोत गौड़ १७४
अरधां झाली ५२, ५५
अलावदी पातसाह दो. २१५
अल्ह पड़ीहार ३
अल्हपाल १
अवलमकारम ईफतयाखां रौ १७२
असपखांन १०२

आ

आंबौ मालावत भाटी ५५
आईदान जगावत दो. १८५
आईदान भैंरुदासोत खिड़ीया दो. १०७, १२९
आको सीसोदीया ३२, ३४, ३८८
आधोली़यौ आसौ १३६
आपमल किसना री प्रोहित दो. २६७
आपमल भाद्राजण सींधल दो. २१६,२१७, २१८
आबा तेजावत वीठू दो. १६५
आबौ खींवावत सोपाड बांमण २८६
आमो (भारमल री बहिन) दो. २१९
आलावदी पातसाह १५
आलु बावट रोहड़ीया बारहट ३१८
आल्हौ रोहड़ीयो चांदण २१
आसकरण दो. २९७
आसकरण खींवराजोत दधवाड़या ४८६
आसकरण गिरधरदासोत बारेट ४८५, १४०
आसकरन देवीदासोत राठौड़ ७१, ७२, ७३, ७८, ८२, ९०, ११२, दो. २२०
आसकरण नींबावत राठौड़ ११६, १३९
आसकरण प्रिथीराजोत गिरधरदासोत ब्रा. दो. ११३
आसकरण बलरांमोत ऊदावत राठौड़ १७७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आसकरण मानसिंघोत राठौड़ ११५ दो. ७
आसकरण माला रौ सांदु दो ११३
आसकरण मुंहता १२८
आसकरण राव्जी राठौड़ ८९
आसकरन सतावत राठौड़ ४६४
आसथांत ८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५
आसलो हृटदेधरोत श्रीमाली ४७८
आसा डूंगरसीहोत राठोड़ दो. ३३४
आसा देदावत प्रोहित दो. २९
आसौ ५३
आसौ ६४
आसौ जैमलोत राठोड़ दो. ३४२
आसौ जोधावत भाटी ६६
आसौ दीतावत वारट ५३
आसौ नींवावत राठोड़ १४३
आसौ पीथावत खिड़ीया ५४९
आसौ वारट ५४
आसौ महेसोत राठोड़ दो. ३४७
आसौ लखमणोत भाटी १४१
आसौ वीरभांणोत राठोड़ दो. ३४३
आसौ सांवतसी सांदु ३४९
आहड़ा प्रीथीराज गांगावत ५५

इ

इन्दरभांण दो. ७३
इन्द्रभांण सवलसिंघोत करमसीयोत
राठोड़ १७८
इसमाईल कुली ६८
ईकतयारखांन अवदुला जखमी
रौ भतीजो १७२
इन्द्रमणि सुजांणसिंघ रौ १७३

ई

ईद्रभाण सुन्दरदासोत राठोड़ दो. २०९
ईसरदास अमरावत मांडणोत राठोड़ ८४
ईसरदास आसदेवोत मंडलौ राठोड़ ८१
ईसर काना रौ प्रोहित दो. २६८
ईसर घड़सीयोत ६२
ईसर घड़सीहोत राठोड़ दो. ६६
ईसरदास चहूवाण ३, ४
ईसर ढोलकीया ७९
ईसर दहीयौ १८५
ईसर सुरावत बारट ५३
ईसरदास किलांणदासोत राठोड़ दो. ७४
ईसरदास नींवावत करनोत राठोड़ ९८
ईसरदास नेतसीयोत राठोड़ ७६ दो. २२१
ईसरदास नेतावत सोढो दो. ३०८
ईसरदास १२६
ईसरदास माला रो सांदु दो. ११३
ईसरदास माहासिंघोत राठोड़ १७९
इसरदास मुंहता १२६
ईसर मेहाजल रो चारण दो. २७७
ईसरदास राणा अखैराज रो
राठौड़ ६१ दो. ६५
ईसरदास रामसिंघोत राठोड़ ११९ दो. ८
ईसरदास हरदासोत भाटी ९४
ईसर बणीर रौ पींडत दो. ३४९
ईहड़ राठोड़ ३०२

उ

उगरसेन दो. २९७
उगरौ सांवलदासोत ४२२
उछत श्रीमाली ८१
उजल सिंढाइच दो. ३५३
उदा चहुवाण ४१
उदौ दो. २६९
उदैकरण कुंभकरणोत राठोड़ ११६
उदैकरण भोजराज गाडण ४८६
उदैभांण गौड़ १७२
उदैभांण भगवानदासोत जैतावत राठोड़
१७८
उदैभांण भगवानदासोत राठोड़ १८५
उदैसिंघ ६६, ८६
उदैसिंघ कूंपावत राठौड़ ५७
उदैसिंघ जैतावत अखैराजोत राठोड़ ५७
उदैसिंघ नरहरदासोत प्रोहित १४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उदैसिंघ बाजखानोत राठोड़ १७९
उदैसिंघ मानदासोत भाटी १८०
ऊदैसिंघ राठोड़ ८४ दो. ३७
ऊदैसिंघ सावड़ा दो. ८
उदो रामा रो चारण दो. २७४
उमादे भटियाणी (रावल लूणकरण री बेटी) ४७, ५४ ५५
उमरो उदावत बीठल दो. १११
ऊरजन केसो रो राठोड़ दो. ३४७
ऊरजन भाचावढां रो मह्वीया दो. २७४
उरजन भींमराजोत वाघेला ३९
ऊरजन वीठलदासोत राठौड़ १७५
उरजन वीरावत राठौड़ ३१७
उरजन हमीरकरन राठौड़ दो. ३४१

ऊ

ऊगो वरसिंघ रो राठौड़ ६३
ऊदा मीसण दो. १८५
ऊदा दामावत प्रोहित ३३४
ऊदा सूजावत राठोड़ ४९५, ४९७, ५४३, ५४८
ऊदा सांखला १९
ऊदा सीसोदीया ४४४
ऊदेसी केसा रो प्रोहित दो. २७३
ऊदो ११९
ऊदो अणदोत मीसण चारण दो. १०९
ऊदो अमरावत वीठू दो. १६५
ऊदो किसना रो २९२
ऊदो पातावत राठौड़ १००
ऊदो कान्हड़देओत राठोड़ दो.३७, ३८, ३९
ऊदो परवतोत बारठ दो. १०८
ऊदो भैरवदासोत राठौड़ १००
ऊदो मेर गोडात ५३७
ऊदो हमीर रो चारण दो. ३५५
ऊधव मुंहता दो. ३०२, ३५२
ऊमदे १७१
ऊरजो मांना रो २३७
ऊहड़ नैतसी कौजावत राठोड़ ५७

ए

एबक मुगल २३, २४
एका रूपसी भाटी दो. ३०१
ओरंगजेब पातसाह १३०, १३२, १७६
साहजादा ओरंगजेब १७०
औरंगसाह १३६

क

कंचनमाला (नाहड़राव री बेटी) २
कड़वो धायभाई ७६ दो. २२०
कचरा भीमा रो बांमण दो. ११९
कचरो दामोदर रो जोशी ४८१
कचरो दामोदर ब्रीहामण २५४
कचरो देईदासोत प्रोहित २५४
कचरो नेतसीयोत २३८, ५४३
कचरो सिवराजोत राठौड़ ९८
कनीया गेहा जगहठ दो. १५२
कनीया बीका ४८८
कनीयो उदैसिंघोत दो. १०७
कमो सुंदर रो खिड़ीया दो. १७६
कमो अखेरोजोत सांहाणी १८३
करण नाथावत राठोड़ दो. ३०८
करण रतनसीहोत दो. ३५१
करण सुजांणसिंघोत जैतावत राठौड़ १७८ दो. ३०२
करणी चारणी ३८५
करण वीसनसिंघोत राठौड़ ५४२
करन गोयंददासोत राठौड़ १८५
करन तारावत प्रोहित दो. १०६, १०७, ११०, १५२, १६३
करन देवीदास वीजावत दो. २१६
करन नारावत दो. १३९
करन भीवादासोत राठौड़ ११७
करन माधावत पंवार १८३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

करन राठौड़ १३८
करन सकतसिंघोत राठौड़ ६६, १०१
करन सुखावत रतनुं दो. १०६, १८५
करन सुजाणसिंघोत राठौड़ १८४
करमचन्द खोखर दो. ३४५
करमचन्द गंगाराम कानुंगो दो. ८७
करमचन्द महेसोत राठौड़ दो. ३३६
करमचन्द संगावत मुंहता दो. ७
करमसी आसीया ८२
करमसी जोधावत ४०
करमसी देवडा ११८
करमा पुनावत रतनुं रीछड़ा २४२
करमसी महेस रो चारण दो. ३५३
करमसी मालावत ७३
करमसी मूलावत प्रोहित ५२३, ५४६
करमसी सहसा रो चारण दो. २७४
करमसुन्दर २४२
करमसेन १०१, ४१८
करमसेण उग्रसेणोत राठोड़ ६६, ४८८
करमाणंद ३६५
करमैतीबाई ६६
करमो हवा रौ, बाहादर रो पोतो मेर ५५३
करमौ जाट १५१
करोड़ी खोजौ हाजी १०६
कलाणदास ७६
कलांणदास महेसोत करमसियोत राठोड़ ८१
कलाखांन ६६
कलीया दो. १०७
कलु अणंदा रो प्रोहित दो. २७१
कलु कांन्होत भाटी १००
कलु कामदार दो. ३५१
कलौ चूंडावत ईंदो ८७
कलो जेसावत राठोड़ ७६ दो. २२०, २२१
कलौ जेसावत हरीदासोत ३१०
कलौ दुरजणसाल रो राठोड़ दो ३४०
कलौ नरबद रो राठोड़ दो. ३४७
कलौ नेतसोत ३०२
कलौ प्रोहित ५२३ दो. २६६
कलौ भींवोत सुरजनोत ५७
कलौ माधोदासोत ४८१
कलौ म्हेकरन रौ प्रोहित दो २७२
कलौ रांमदासोत २६३
कलौ बरसलोत राठोड़ ७६
कलौ वैरसलोत राठोड़ दो. २२१
कलौ लाखा रौ ३५०
कवरे रौ भांण रावतोत राठोड़ दो. ३४५

का

कांधल दहीयौ १००
कांधल भोजावत सीवड़ प्रोहित ५४३
कांधल रिड़मलोत ३५
कांन नरसिंघदासोत झावरीयौ पंचोली १८३
कांन लिखमीदास २८७
कांना उदारायोत प्रोहित दो. १३६
कांना खिड़या दो. १७६
कांना जासवंत भिवाड़ी श्रीमाली ४७६
कांना मीसण चारण दो. १८५
काना रंगावत पोकरण देरासरी ७६, ८१,
२३८, ४५६, ४८१
कांनड़ राजसीहोत बारठ दो. १४१, १५२
कांनीराम हाडौ १७३
कांनु राजसिंघोत २५५
कांनौ किसनावत भाटी ८८
कांनौ गोबंददासोत जैतावत राठौड़ १७८
कांनौ धा० १३६ दो. ८
कांनौ मेर ४६६
कांनौ सादुल राठौड़ ४२३
कांवो अबुं ११२, ११३
कांमखांनी ४६५
काछेसा नाये सुर दुबड़ौ २८६
काजो सुराणा दो. ११६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कानड़दास जोगावत राठौड़ दो. २६४
काना राठौड़ ४७७
काना सिवराजोत राठौड़ २५४
कानौ ३१०
कानौ खांन ५३५
कान्ह (चौ. डूंगरजी रो बेटो) ४२
कान्ह खींवावत राठौड़ १०८, दो. ७५
कान्हड़ केलावत प्रोहित दो. २७२
कान्हड़दे छाडावत १५, १६
कान्हड़ राव १५
कान्हर चहुवाण ३
कान्हा उत्तमसीयोत लालस ३११
कान्हा चूंडावत ६२
कान्हा दुजणसलोत पींपाड़ो दो. २२१
कान्हा दुदाइत सीवड़ प्रोहित दो. १०६
कान्हा वालावत वांकुलीया प्रोहित दो.२६८
कान्हा मोहलांणी २६
कान्ह राजसीहोत बारठ दो. ११४
कान्हा रूपावत प्रोहित ७९
कान्हीदास केसोदासोत राठौड़ दो. ७२, ७३, ११२,
कान्हौ चारण दो. ३५१
कान्हौ चूंडावत ३८५
कान्हौ चूंडावत राव २६
कान्हौ चूंडावत रो पोतरी राठौड़ ५७
कांन्हौ चौ० १०१
कान्हौ तेजसोत राठौड़ ९६
कान्हौ दुरजणसालोत पींपाड़ौ ७५
कान्हो मुलपसाव भाटी दो. ३०४
कापड़ीया जाट ५१६
काबौ अमीन दो. ७३
कालर ११९
काला संमरावत रौ बारठ दो. १०८
काला सांमराव जगहथ चारण दो. १७५
कानड़दास केसोदासोत राठौड़ दो. १८५
कालु रूघनाथ दो. १२८
कासमखांन १७१, १७६

कि

किरतौ खंवेरांमोत रौ राठौड़ १८५
किलांणदास महेसोत करमसोत राठौड़ ८४
किलांणदास मांनावत राठौड़ १०४
किलांणदास मोहणदासोत मेड़तीया राठौड़ १७८
किलांणदास रतनसी रौ राठौड़ ४६५
किल्यांणदास राजसिंघोत २५५
किलांणदास राजसीघोत बारठ दो. १५२
किलांणदास राठौड़ ७०
किलांणदास राठौड़ ७६
किलांणदास रूपसोत २५८
किलांणदास वैरीसालोत कूंपावत राठौड़ १७७
किल्याणसिह वीठलदासोत १७४
किसन कल्हणोत ५५
किसन प्रोहित ३६५
किसनदास केसोदासोत खिड़ीया दो. ११०, १२८, १२९
किसनदास गांगावत करनोत राठौड़ ६८, ७०
किसनदास जसवंतोत दो. २६५
किसनदास जसवंतोत राठौड़ दो. २२९
किसनदास जोगावत राठौड़ दो. २९६
किसनदास दयालदासोत चौरांणं १८१
किसनदास देदावत २४१
किसनदास वैणीदासोत बलावत १८०
किसनदास म्होजलोत राठौड़ ९८
किसनदास सिंघोत मुंहता १८२
किसनसिंह उदैसिंघोत राठौड़ ९९, ४७६
किसनसिंघ खींवावत राठौड़ ११३, ११४
किसनसिंघ जसवंतोत राठौड़ ११६, ११७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

किसनसिंघ किलांणदासोत राठौड़ दो. ३०६

किसनसिंघ राणावत राठौड़ १००

किसनसिंघ राठौड़ ९५, ९६, ११७, ११८, २५८

किसना खिड़ीयो दो. १०७

किसना दुरसावत आढ़ा २६२, ४८३

किसना भाटी दो. ३३२

किसना ईसरदासोत राठौड़ १२१, १४१

किसनो कलावत चारण दो. १११, ११९

किसनो नींबावत भाटी ५४

किसना नींबावत अणदोत भाटी ६४

किसनो म्हेरावत राठौड़ दो. ३४४

किसनो रांसावत भाटी ६३

किसनो रायमलोत राठौड़ दो. २८६, २८७

किसनो रायमलोत देवीदासोत राठोड़ दो. २७१

किसनो रुपसीहोत रतनूं दो. ३५२

किसनौ वाघावत भाटी ८५

किसनौ वाघावत भाटी खारवरौ ८४

किसनौ सगतावत चांपावत ४१

किसनौ सावरीज बांमण दो. ३३५

किसनौ हुल १०१

किसोरदास किल्यांणदास जैमलोत १०१

किसोरदास रांमोत राठोड़ दो. २२०

की

कीतु चहुवांण दो. २१५

कीरतसिंघ मांनसिंघोत चांपावत राठोड़ १७७

कीरोडी सेख दो. ७४

कीला चांचावत भोपा दो. २९

कीलांणदास दो. ७

कीलांणदास ईसरदासोत सलोत दो. ३०६

कीलांणदास परतापसी राठोड़ दो. २१९, २२०

कीलांणदास राजसीहोत बारहठ दो. ११४, १४१

कीलांणदास राठोड़ दो. ३३६

कीलांणदास रायमलोत राठोड़ दो २२०

कीलांण रायपालोत राठोड़ ३०५

कीलांण रायपालोत धुहड़ोत राठोड दो. २६९

कीसनौ ३१०

कुं

कुंभकरण वलरांमोत ऊदावत राठोड़ १७७

कुंभकरण वाघोत राठोड़ ९६

कुंभो गोईंदोत चौहाण ९८

कुंभो नराईण रौ दो. ३४९

कुंभो नाथावत राठोड़ दो. ३०७

कुंभो पातावत भाटी ९९

कुंभो मनोहरदास रौ सांदू ४८७

कुंभो सुरतांणोत भाटी १८१

कुंभौ ईसरदासोत ३४९

कुंभौ ईसरदासोत दो. १९७

कुंवर अमरसिंघ ९९, १०७, ११०

कुंवर उगरसैन रायसिंघ दो. ६९

कुंवर उदैसिंघ मालदेवोत दो. ३१, ३२

कुंवर उरजन अमरसिंघोत १०३

कुंवर किसनसिंघ भींवोत ११४

कुंवर गजसिंघ ९९, १०१, १०२, १०३, ४८७ दो. ७, २९७

कुंवर चन्द्रसेन ५३, ६१, ६४, ६७ दो. ६२, ६३, ६४

कुंवर जगतसिंघ ५४, १११

कुंवर जसवंतसिंघ ११०, ४८६

कुंवर जोधौ ३८७, ३८८

कुंवर दलपत ६८

कुंवर नरौ सातल रो दो. ३५४

कुंवर प्रथीसिंघ ४८४, ४८६, ५२३

कुंवर वाघा सूजावत १६२, ३६२

कुंवर भींव दो. २९६, २९७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुंवर भींवराज जैतसीयोत दो. ५६
कुंवर भोपतसिंघ ७३, ७५, ८२
दो. २२०, २२१
कुंवर रांम ५४
कुंवर रांमा ४७
कुंवर रायमल ६४
कुंवर सबलसिंघ ६५
कुंवर सातल दो. ३५४
कुंवर सूरजसिंघ ७७, ९०
कुंवर हरराज ६३ दो. ४, ५
कुतबखांन १७३
कुसलचंद समेचो राठोड़ दो. ३०४

कूं

कूंपा रंगावत देरासरी पोकरण ४८२
कूंपा राठोड़ ४३, ४४, ६५, ४६२,
दो. ४८, ४९, ५१, ५३, ५७, ६३
कूंपो केसव रो प्रोहित दो. २७१
कूंपा जोगावत देईदासोत राठोड़ दो. २७६
२८६, २८७
कूंपो पंचाईणोत वीठल दो. १११
कूंपो पंचाईणोत वीठू दो. १६५
कूंपो मेहराजोत अखैराजोत राठोड़
५६, ५७
कूंपो महेराजोत राठौड़ ६२, दो. ५२
५४, ५७

के

केराच सातलतोत दो. २१६
केलण चुतरे रो पोकरणा दो. १६३
केलण नारणोत २५८
केलण भाटी ८४
केसर जीवाउत रोहड़ीया बारंट २५८
केसर धायभाई ८७
केसरखांन नाहरखोनोत राठोड़ दो. १२३
केसरीसिंघ अमरावत राठोड़ १३८
केसरीसिंघ अचलदासोत भाटी १८०
दो. ३०६
केसरीसिंघ वीठलदासोत भाटी १८०
केसरो जोगा रौ दो १४०
केसवदास जोगीदासोत राठोड़ दो. ३३३
केसव हमीरोत भाटी दो. ३०१
केसा कूंपावत प्रोहित ३१०
केसोदास ७३
केसोदास अचलदासोत भाटी ११९
केसो जजाण २४०
केसोदास जैसलोत राठौड़ दो. ६९, ७०,
७२
केसोदास जोगावत मांडणोत ७३
केसोदास पूनौ सांखलौ १००
केसोराय मलुक चंदोत पंचोली १८३
केसोदास भाखरसीयोत राठौड़ दो. २६८,
२८६, २८८
केसोदास राठौड़ ७३
केसोदास सांदुवोत गाडण ४८७
केसोदास सांवतदासोत राठौड़ ९९
केसोदास सुरहेज रौ राठौड़ दो. २६८
केसो पंवार १००
कैवास दाहीमौ ३
कैसौ जीवावत बाहरट ८२
कोड़ भाद्रेसो ५३
कोड़मदे (राव रिणमल री बैर) ३८
कोल्हण चतरा पोकरणा प्रोहित दो. ११०

ख

खंगार चांपावत रायगुरु प्रो० २६७
खंगार जोगावत राठौड़ दो. ४८
खंगार जोधावत राठौड़ दो. ४८
खंगार मेहडू ३६७
खंगार रामदासोत प्रोहित दो. २६८, २७०
खमीदास मेघराजोत मुगलां रौ २४२

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खीं

खींवड़ देईदास रौ प्रोहित दो. २६६

खींवराज दो. ४१

खींवराज खंगार ३३५

खींवराज आभमलोत थाथरीयौ राठोड़ ८१, ८३

खींवराज जैमलोत दधवाड़ीया ४८६

खींवराज सादुलोत सीसोदियो १८४

खींवसी अखावत दो. २६४

खींवा देवाकर आचारज प्रोहित २५४

खींवा मांडणोत राठोड़ १०५

खींवा राठोड़ ५१८

खींवा वेणीदासोत जगहट दो. १८५

खींवा सतावत सोनगरा ३६

खींवौ वेणीदासोत जगहट दो. ११२

खींवो ११६

खींवो उदावत राठोड़ ४६८, ५४६

खींवो जोगा रौ दो. १४०

खींवो मुंहता दो. ५४.

खींवो राठोड़ दो. ४८

खींवो लुंको दो. २

खींवौ ऊदावत राठोड़ ४६७

खींवौ ऊदा सुजावत राठोड़ ५६

खींवौ केसोदास प्रोहित दो. १०७

खींवौ मांडणोत राठोड़ ८६

खींवौ राठोड़ दो. ५७

खींवौ लाला रौ मुंहतो दो. ५५

खींची हदौ ८३

खींवा अणंदोत महेड्ड चारण दो. ३५२

खींवा कान्हावत प्रोहित दो. १०७, १०६, १५५, १६३

खीदो भायल दो. २२६, २६३

खीदौ दीवान ४६४

खीमा भारमलोत ७८

खीवाणंद वीठु २५५

खु

खुढा मंडलक आसीया २४०

खुरम साहजादा १०५, १०६, १०७, १०८, ११२ दो. ७३, ७४, ७५

खुरासांण १०६ दो ७६

खुसरू साहजादा १०७

खे

खेचरखांन नीरमलवन रा चेला जोगी ४८६

खेतसी ३६, २४१

खेतसी गोपालदासोत राठोड़ १००

खेतसी चुतरावत मीसण दो. १८५

खेतसी परवत रो ३०४

खेतसी महराजोत खिड़या ५५१

खेतसी पीथा रो दो. ३५५

खेतसी बेणावत बारठ दो. १८४

खेतसी बलुवोत कूंपावत राठोड़ १७७

खेतसी भाटी १४३

खेंतसी भींवावत ३६६

खेता ५४२

खेता सीढावत आचारज प्रोहित २३८

खेतौ सूरा रौ प्रोहित दो. २६६

खेतौ खानावत चांपावत राठोड़ १७७

खेतौ भगवांनोत धायभाई १८५

खेतौ भाटी ८८

खेतौ वीलावत उजागरवाल बांमण २८६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खेमो ईसर रौ वीठू दो. १६४
खेमौ सेखा रौ कछेला ५५१
खेलु १३५

खो

खोजो अइय १७२
खोजो अबदलहसन दो. ७६
खोजो अवलहुसेन १०६
खोजो ईनाइतुला अवदुलखांन रौ जवांई १७५
खोजो ईलास खोजा खिदर रौ १७२

गं

गंगादास ३६७
गंगादास ऊधरण ३६६
गंगादास टीकम रौ ब्रा० ४८२
गंगादास पं १५०
गंगादास मांडण रो प्रोहित दो. २६६
गंगादास सोहड़ दो. ३०५

ग

गजधर खेता रौ भाटी दो. ३०१
गजनी ३
गजमल १
गजसिंघ देवसिंघ रौ जेवाई १७४
गजसिंघ मेघराजोत भाटी दो. ३०१
गजसिंघ लखा भानीदासोत भाटी १८१
गजसी नरावत बारेट ४८५
गदाधर ओझा श्रीमाली ८१
गदाधर जीवावत प्रोहित दो. २१२
गरबदास दूदा रौ बारठ ५४६

गां

गांगदास मुंहता ६७
गांगदेव ईंदा २५
गांगा साझा रौ ४३५
गांगो चारण दो. ५८
गांगौ नींबावत भाटी ६६
गांगौ सीहावत राठौड़ दो. ४६, ५०

गा

गाजण कालर दो. ३३७
गाधा श्रीमाली ३६३
गाधौ मेवाहरोत बारेट ४८५

गि

गिरधर गुणराय खवास २२७
गिरधर जीपावत सीवड प्रोहित दो. ११२
गिरधर तुलसीदासोत प्रोहित दो. १०, १६३
गिरधरदास मनोहरदासोत चांपावत राठोड़ १७७
गिरधरदास माधोदासोत करमसीयोत राठोड़ १७८
गिरधरदास लखावत बारठ दो. १४०
गिरधरदास वाघोत भाटी १४३
गिरधर धायभाई ४५१
गिरबदास सुजांणसिंघोत मेड़तिया राठोड़ १७८

गु

गुणधर सुराणा दो. ११६
गुदवचा बांभण ८१
गुवर ६३३
गूजमल कानुगो दो. ८८

गे

गेई रतनावत खिड़ियौ ५४६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गेरू तवाव ईसर रा वेटा दो. ८५
गेहा कविया ५५०
गेहा खिड़या ५४९
गेहलांणंद देवावत सांदु २५५

गो

गोईंद उदैसी रो प्रोहित दो. २७२
गोईंद नरावत ४१
गोईंद पंवार दो. ३०५
गोईंद भायल दो. २२०
गोईंद राणा अखैराजोत रौ ६१ दो. ६५
गोईंद रामदासोत खींची ११६
गोईंददास गोपालदासोत राठोड दो. ८
गोईंददास जसावत भाटी १००
गोईंददास मांनावत भाटी ८९
गोकल़ भाटी दो. ३०१
गोकल़चंद द्वारकानाथोत भाटी दो. १९८
गोकल़चंद भट्ट दो. ११४
गोकल़दास पातावत भाटी दो. ३०४
गोकल़दास भाखसीयोत सोनगरा १८१
गोकल़दास सांकरदासोत भाटी १८०
गोकल़दास हरीदासोत भाटी १४२
गोकुल़ माधावत सोहड़ दो. ३३४
गोकुल़ विसनदासोत राठोड़ ११६
गोगादे दो. २९९
गोडात मेरा ५५३
गोतम ग्येनसर व्यास दो. १३९
गोदा कोहावत वांमण ३०१
गोदा गेलां रौ कछेला ५५१
गोदो नेतलोत ३४०
गोदो मेघराजोत दो. ३५१
गोदो सांगावत राठौड़ दो. ३४१
गोधो हेमावत दो. २२०
गोधौ भादौ हेमावत ७६
गोपाल़ झांझणोत चां० दो. २२०
गोपाल़ बालमुकंदोत भट्ट ४८३
गोपाल़ मनावत चारण दो. २७५
गोल़पा रामदासोत बरसड़ा २४०
गोपाल़ लखावत पारीख व्यास दो. २११
गोपाल़ वेला री आचरज ब्रांमण २९२
गोपाल़ सुंदरदासोत राठौड़ ११५
गोपाल़दास आसावत भाटी १०२. १०५, १०७,
गोपाल़दास आसावत राठौड़ ११४
गोपाल़दास ईडरीयौ राठौड़ ९८
गोपाल़दास उदैसिंघोत राठौड़ २८१
गोपाल़दास कलांणदास रतनसोत राठौड़ ८३
गोपाल़दास झांझणोत चहुवाण ७६
गोपाल़दास प्रीथीराजोत राठौड़ ८०
गोपाल़दास भगवानदासोत राठौड़ ९९
गोपाल़दास भाटी ४२१
गोपाल़दास भींवोत राठौड़ ७६ दो. २२०
गोपाल़दास मांडणोत जेसावत राठौड़ ९८
गोपाल़दास मांडणोत राठौड़ ९६
गोपाल़दास रतनसीयोत राठौड़ ८४
गोपाल़दास रतनसीवोत राठौड़ ४९५, ४९६
गोपाल़दास रांणावत भाटी ८९
गोपाल़दास राणावत रूपसोत भाटी ७८
गोपाल़दास राठौड़ ७०, ९७, ९९
गोपाल़दास राठौड़ दो. ३०२, ३०३, ३०५
गोपाल़दास वाघोत जेसावत राठौड़ १०१
गोपाल़दास वैरसलोत राठौड़ ४७५
गोपाल़दास सहेसमलोत राठौड़ दो. ३४१
गोपाल़दास सुंदरदासोत राठौड़ ११४ दो. १९९, २०२, २९९
गोपाल़दास सुरताणोत राठौड़ दो. ७२
गोपी परबतोत सांखलौ ११७
गोपीनाथ गोकल़दासोत मेड़तीया राठौड़

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोपीनाथ रांमचंदोत ४७६
गोपौ मेर ४६२
गोपो दुरजणसाल रौ राठोड़ दो. ३४०
गोमो मेर ४६६
गोयंद उदैसिंघोत राठोड़ ४१६ ४७२
गोयंद चोला रो २५५
गोयंद भाखरसीयीत राठोड़ दो. ३४६
गोयंद संढायच २४३
गोयंद गोपाल् जगहट दो. १५२
गोयंददास चांपावत मांगलीया ५४८
गोयंददास भाटी ७८, ९२, ९३, ९९
गोयंददास मांनावत भाटी
७७, ९६, ९७, १०३, १०४
गोयंददास मांनावत रावलोत भादावत
राठोड़ १७६
गोयंददास राणावत पातावत राठोड़ ९६
गोयंददास राघावत सांदू ४८७
गोयंददास सांमदासोत २३७
गोरखदास मेघराज रौ बारठ ५४६
गोरधन जगतौ राठोड़ ३२४
गोरधन माघावत राठोड़ १८५
गोरधन माघोदासोत करमसीयोत राठोड़
१७८
गोरधन सादूल् रौ प्रोहित ४७६
गोरधनसिंघ चांदासोत भीवांणी पंचोली
१८३
गोरी पातसाह ४२४, ४७६
गोवरधन चांदावत राठोड़ १७६
गोवरधन जगनाथोत राठोड़ १४१
गोवरधन भगवांनदासोत भदावत
राठोड १७६
गोवल मेहावत रतनु दो. २८
गोसल सुराणा दो. ११६
गोहलणी (आसथांन री वहु) १४
ग्यंनसर मयारीव गोवाल वाल ११०

घ

घड़सी भारमलोत राठोड ४४
घड़सी हेमा रौ सिंढायच चारण दो. ३५१
घदुको मुगल दो. ४४
घमट खेतपाली आ. दो. ३३६
घीढा सोढा बांमण ३०२
घेरू ११६

च

चंडीदास जोशी २३७
चंडु दमोदर जोशी ९८
चंद ढाढी ३६
चंदण मुंहता दो. ३०२
चंदरसेन सारण ८३
चंदो अभरा रो चारण दो. ३५३
चंदो खंगरोत २४१
चंदो भोजराजोत दो. ३४६
चंदो वीरमोत राठोड़ ६४
चांदो वीरमदेओत राठोड़ ४७, दो. ६३
चंद्रसेन राठोड़ १३६
चंद्राव जोघा रौ राठौड़ दो. ५६
चकोर अमरावत थेहड़ २४१
चक्रपांण वीठलोत प्रोहित दो. ११०
चतरभुज कानावत बकुलीया प्रोहित
दो. २७३
चतरो चारण दो. ५८
चतरो जैता रो चारण दो. २७५
चतुरा जैमलोत बारहठ दो. १०६
चत्रभुज भगवांन रौ व्यास ५४८
चरड़ो अरड़कमल चूंडा री ५८
चवंडदास कलावत २४०
चवंडदास मेहराजोत २३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चवंडदास हरराजोत चारण दो. १०८
चवड़ी मांडणोत धधवाड़ीया दो. ११२
चवड़ौ पंचाईणोत बारट १०८

चां

चांगवाला मेर २
चांडीदास जोसी ७७
चांदण खिड़िया ८२
चांदण खड़ीयो लुंवट चारण ३७
चांदण लुंणावत खिड़ीया २६२
चांदबीबी दो. ७२
चांदराव अरड़कमल चूंडावत ३१
चांदा सीसोदणी ७०
चांदसिंघ रांमचंदोत राठोड़
दो. २१०, २११
चांदौ देवड़ौ ११८
चांदो अचलावत ईंदो १८२
चांदौ ईसरदासोत ७७
चांदौ प्रिथीराजोत देवड़ो ११७
चांदौ रतनुं मेर ४६८
चांद्राराव जोधावत राठोड़ ६०
चांद्रीयौ वीदावत १५
चांपा अणदोत गाडण ३५०
चांपा खींवावत सोनगरा दो. ३७
चांपा चूंडावत प्रोहित ३३४
चांपा मैणावत सींधल २८६
चांपा सोनगरा ३९
चांपो गेला ३०४
चांपौ सुराणा दो. ११६
चांपौ करमसी रौ दो. ७१

चा

चागौ ५३
चाचग कन्हड़ लोलावत ५५, ६४
चाचा सीसोदिया २७, २८, २९, ३८७
चाचा हाडा ४४५
चाचा बांमण दो. ३५६
चाडा मांडणोत धधवाड़ीया दो. १६५
चांवडदास किलांणदासोत बारट ४८४,
४८८
चावंडदास देईदास रौ ५४९
चावडै मेघराजोत मोटोआ ईसरोत ३१२
चाहड़ मांडणोत खिड़ीया दो. १७६

चि

चिरमखांन ८९

ची

चीत काठोत मेर ५३६
चीत गोडात मेर ५३७
चीता किसनात ५३५
चीता गोडात मेर ५२७
चीता मेर ४१६, ४७२
चीता मेहरा ५३५
चीता मेहरात ५३५
चीताखांन मेर ४६६, ४६७
चीतौ कांठोत मेर ५५२, ५५३
चीतौ मेर ४७०, ५३६
चीवौ ७८
चीलीयात महेस मेर ४६१
चीवा देवड़ा ११८

चु

चुतरंग चंद्रमण रौ बुंदेलो १७३
चुतरभुज दुवारकादासोत दसुंधी दो. ११४
१७८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चुतरभुज भावसिंघोत ६४
चुतरभुज मनोहरदासोत राठोड़ दो. १८३
चुतरभुज लखमणसेन रौ पोतौ चौहाण १७५
चुतरभुज विहारीदासोत दसौंधी दो. १६८
चुतरा जैमलोत बारठ दो. १८५
चुतरौ आलेचो १८४
चुतरौ साजनोत पंवार १८२
चुवंडदास कलावत बारट ४८४
चुहलै सुतरार ४५०

चूं

चूंडा २६, ३०
चूंडौ अखावत बारेट ४८५
चूंडौ लखावत सीसोदीया ३८७

चू

चूडां हरभु पांचाउत तोला रो पोतरो २३
चूहड़ कालर दो. ३३७

चे

चेराई आस रा चारण दो. ३५०
चेहथ अडवल वाघावत राठोड़ ४१
चेहरा खीवड़ प्रोहित २३८

चो

चोखौ धायमाई ७२
चोला मेहावत गाडण ३४६
चोलो खेतसी रो सिंढायच चारण
दो. ३५१
चोलो बारठ ६२ दो. ६६
चोसंघ बीजावत संढाईच दो. २७६

छ

छतरसिंघ दो. ८७
छाजु दो. ४१
छाडी १५

छी

छीतर दो. ४१
छीतर सा० ४४०

ज

जगत गोपाल रौ पींडत दो. ३५०
जगतसिंघ अमरसिंघोत कछवाहो १७५
जगतसिंघ देईदासोत जोधा राठोड़ १७८
जगतसिंघ राठोड़ ११५
जगदे रांमदेव रौ व्यास श्रीमाली
दो. १६४
जगदेव नरहरदास रौ १७३
जगनाथ ३६५
जगनाथ किल्यांणदासोत राठोड़ १००, ५४०
जगनाथ गोपालदासोत राठोड़
दो. ७२, ७३
जगनाथ गोपीदासोत ब्रा० ४८२
जगनाथ चांदावत राठोड़ १७६ दो. ३०७
जगनाथ चांपावत प्रोहित दो. १०६
जगनाथ चापावत ब्रा० दो. १७५
जगनाथ जसवंतोत सोनीगरा दो. ७
जगनाथ ठाकुर गोपी ३१०
जगनाथ दलपतोत टाक १४२
जगनाथ धारावत सांखलौ ११७
जगनाथ ब्रमदे रौ श्रीमाली व्यास दो. १०६
जगनाथ भाटी ११७
दो. २६६, ३०१, ३०५
जगनाथ भैरूदासोत भाटी १८०
जगनाथ मनोहरदासोत धधवाड़िया
दो. ११२, १४०
जगनाथ मु० ११६
जगनाथ लिखमीदासोत प्रोहित दो. २७१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जगनाथ लुणावत भाटी ११६
जगनाथ वाघोत राठौड़ ४२१, ४७४
जननाथ सदाफलोत श्रीमाली दवे दो. २१२
जगनाथ सादूल् रौ प्रोहित ४७९
जगन्नाथ ऊ० १३८
जगपाल मालावत राठौड़ दो. २९१
जगमल पोकरणा जोसी ८१
जगमाल १७, १८, ३५३
जगमाल अखावत ३६७
जगमाल आसावत भाटी ६६
जगमाल उदैकरणोत राठौड़ ५९ दो. ५९
जगमाल खिड़ीयो १८४
जगमाल डूंगा रौ मेर ५५४
जगमाल पंचायणोत भाटी ५५,
जगमाल पंचायणोत जोधावत भाटी ६४
जगमाल पंवार दो. ५०
जगमाल मालवैस रौ दो. ३०५
जगमाल मालावत पोहोकरणा
दो. २, ३४०
जगमाल मालावत राठौड़ दो. ३२४,
३४०, ३४४
कदीय जगमाल मालावत रौ पोत रौ दो.
२३
जगमाल मेड़तीया ६२
जगमाल राठौड़ १३९ दो. ३५७
जगमाल वरसलोत राठौड़ दो. ३०६
जगमाल वीरमदेवोत राठौड़ ६०, ६५
दो. ५९, ६१, ६३, ११०, १३८,
२१२
जगमाल वेसा १८३
जगमाल सभोबी मेर ५५४
जगमाल सुरावत ५६
जगमाल सूजावत चारण दो. ३५४
जगराज कुंभकरनोत राठौड़ १८५
जगरूपरांम सादुलोत राठौड़ २८२
जगसी दो. ४१
जगसी छाजु रौ जाट दो. ४१
जगहथ दीपावत दो. ३, ४, ५
जगीया सीवराज बांमण दो. ३१२
जगो खेतसी रो रतनूं दो. ३५२
जगौ ३६६
जगौ जाडेचौ दो. ७०, ७१
जगौ दूदावत दो. २९
जगौ पिरागोत आसायच १८४
जतमाल भैरूदासोत भाटी १८०
जवदलखां ९३
जमन टांकणी (किसन कल्हणोत
री बेटी) ५५
जमना हुलणी ३९
जसकरण अमरावत राठोड़ दो. ३०७
जसड़ (मालदे री बेर) ५६
जसमादे हाडी राणी ३९
जसवंत ४७१
जसवंत अखैराजोत राठोड़ १०२, २३९
जसवंत ईसरदास रौ धांधल १८२
जसवंत ऊगरावत सीसोदिया ५५४
जसवंत कला जेसावत रौ राठोड़ ९८
जसवंत जोगावत मांडणोत राठोड़ ७३
जसवंत डूंगरसीयोत राठोड़ ८०, ८३,
४९८, ४९९, ५४७
जसड़ देवड़ौ १४१
जसवंत मानसिंघोत सोनगरौ ९३
जसवंत राठोड़ ११८, ५३७
जसवंत सादुलोत राठोड़ ११८
जसवंत सूरजमलोत भाटी ११९
जसहड़ भाटी दो. ३०१
जसवंतसिंघ डूंगरसोत राठोड़ ४९५
जसा कलावत राठोड़ ४७७
जसा गोइंदोत बारठ दो. २७५
जसा मेहर ५३५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जसो करमसी रो प्रोहित दो. २७१
जसौ कलावत राठोड़ ४२३
जसौ जाडो २६२
जसौ नराईणोत खिड़ीया दो. १२६
जसौ पीथौ आसीयो २८७
जसौ भाटी दो. ३०४
जसौ भोजराजोत दो. १०६
जसौ भोजराजोत रतनु दो. १८६
जसौ मांनावत २४३, ५३६, ५३६
जसौ मेर ४६६
जसौ रूपौ २७२
जसौ लुणयांण २०
जहांगीर पातसाह ६३, ६७, १०६,
१०७, ११०, १११
दो. ७४, ७५, ७६

जा

जागेसर किसनदासोत जागेसर व्यास
२६२
जाजा दो. २६०
जाझो सुजा रौ गाडण ३५०
जादम (मालदे री वेर) ५६
जादवदास दो. ८७
जानीवेग १७१
जांमणी मांणकपुर पुरवीयौ चंदोत ८६
जामवाली (जगमाल सुरावत री वेटी) ५६
जाममवेग ८०
जालप दो. ४१
जालप बारठ ६३ दो. ६६
जालमसिंघ राठोड़ ८१
जालर नरबद रो राठोड़ दो. ३४७
जालोरी रौ बिहारी दो. ५३
जाल्हण १५

जि

जिणु हुल ४७६

जी

जीएां बंध २
जीमौ हरावत ३०३
जीवण करमसीहोत म्हेडु चारण
दो. ३५१, ३५२
जोवण जसावत ब्रामण ४८२
जीवण भोजावत दो. ३५१
जीवण सांवल ४८१
जीवराज कानुगो दो. ८८
जीवराज रूपसीयोत मुंहता दो ३०७
जीवराज सारणोत पंचोली १०४
जीवा नेहलड़ा दो. २५०
जीवा नेतावत मीसण २४१
जीवा सीहड़ भाटी दो. ३३३
जीवौ किसनावत २६८
जीवौ खंगार दो. ३०
जीवौ टीकम रौ प्रोहित दो. २६८
जीवौ बारठ ६२ दो. ६६
जीवौ भाटी १०० दो. ३०१
जीवौ सुरतांणोत प्रोहित दो. १०६, १७५

जु

जुगत १

जूं

जूंझारसिंघ हररांमोत राठोड़ दो. ३०७

जे

जेठो ठाकुर रौ पींडत दो. ३५०
जेतमाल राठोड़ ४४
जेता ५५ दो. २२६
जेतौ प्रिथमराव रौ हुल दो. ४५
जेतौ राठोड़ दो. ५७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जेतौ ७८
जेतौ खीमां रौ ८०
जेतौ जसावत २६६
जेतौ पंचाइणोत राठोड़ दो. ५७
जेतौ पंचाइणोत अखैराजोत राठोड़ ५६
जेतौ राठोड़ ६५
जेसंधर राठोड़ दो. २७
जेसगां दो. २६
जेसा परबतोत दो. १०७
जेसा सीहावत राठोड़ दो. १४१
जेसिंघदे करमसीयोत बीकावत राठोड़ ६७
जेसी भैंरूदासोत राठोड़ दो. ५३
जेसो राठोड़ दो. ५३
जेसो जगमालोत राठोड़ दो. २२१
जेसो राहड़ भाटी दो. ३३५
जेसो सीहावत वरसिंघदेवोत राठोड़
दो. ११२
जेसौ ६४
जेसौ जगमालोत राठोड़ ७६
जेसौ चहुवांण ३८८
जेसौ पीवौ मानावत २८६
जेसौ भैंरवदासौत राठोड़ ६३ दो. ४,
५, ५२
जेसौ सींधल ३६
जेहली डाभी परधांन १२, १३, १४

जै

जैचंद भाटी दो. ३, १
जैचंद राजा ४
जैत झालौ ४७, ४८
जैतमल जैमल रो ऊहड़ ७३
जैतमाल २८५ दो. ४१, २६६
जैतमाल ऊदा रा राठोड़ ५६
जैतमाल खाखावत राठोड़ ३०४
जैतमाल चांपो दो. २६३
जैतमाल जसवंतोत राठोड़ ८०
जैतमाल चेसावत राठौड़ ६०, ६७
दो. ५६
जैतमाल पंचाइणोत दो. ६३
जैतमाल पंचाइणोत दूदावत राठोड़
दो. ६६
जैतमाल राठोड़ ६३, ८०, दो. ३७, ६८
जैतमाल सलखावत राठोड़ १६ दो. २६८
जैतमाल सिंघवी दो. ८
जैतसिंघ ८२
जैतसिंह राजावत राठोड़ दो. ७
जैतसिंघ राठौड़ ४२३, ४७७
जैतसिंघ रामदासोत राठोड़ ११४
जैतसी ईसरोत रूपावत ४७७
जैतसी ऊदावत राठोड़ ४४, ४६७,
४६८, ५४३, ५४४ दो. ५७
जैतसी उदैसिंघोत राठोड़ २४३, ४७७
जैतसी नगावत राठोड़ दो. २५५
जैतसी वाघावत राठोड़ ५७, ४५५
जैतसी भाटी ५६
जैतसी मुकंददासोत करमसीयोत राठोड़
१८८
जैतसी राठोड़ ७६
जैतसी बीदावत दो. २२१
जैतसी सेहसमलोत चौवांण १८१
जैता मनणा सोहड़ प्रोहित दो. २७१
जैता राऊ दो. ३११
जैता राठोड़ ४६, ६३ दो. ३,४८, ४६, ५१
जैतु गूजर ४६३
जैतौ चो० दो. २६५
जैतो माहर दो. ३३७
जैतौ सदावत मांडणोत राठोड़ ८३
जैता रामावत श्रीमाली व्यास ५४७
जैपाल दो. ३३६
जैमल ४३, ५२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जैमल ऊदावत ४६
जैमल ऊहड़ ५०
जैमल एका रो भाटी दो. ३३७
जैमल कछवाहो दो. ३०४
जैमल चारण दो. ५८
जैमल जेसावत मुंहता ६४
जैमल जेसावत राठोड़ ८३
जैमल तिलोकसी भाटी ८४
जैमल तेजसीयोत राठोड़ ६२ दो. ६५
जैमल तीलोकसोत परवतोत राठोड़ ८१
जैमल नैतसोत ऊहड़ ७३, ३०३
जैमल नैतसीहोत ऊदावत ७० दो. २१६
जैमल पंचाइणोत राठोड़ ६२
जैमल भांणोत दो. ६
जैमल भांणोत राठोड़ ८४
जैमल मनावत भाटी ६४
जैमल मुंहता १०७, ११० दो. ७
जैमल राघवोत बारट ५४
जैमल राठौड़ ५६, ६०, ६१
जैमल रामदासोत चारण दो. ३५४
जैमल वीदा परवतोत डूंगरोत राठोड़ ५७
जैमल वीरमदेवोत राठोड़ दो. ५६, ६५, ४६५ ५८, ५६, ६०, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ११०, ११६, १६३, १६४
जैमल सी० १३६
जैसल खेमणोत राठोड़ ४६८
जैसिंघ सोलंकी १८५
जैसो भैरूदासोत चांपावत राठोड़ ५७

जो

जोग भाणोत रूपावत राठोड़ ८८
जोम सीहड़ दो. ३३४
जोयराज १
जोगराज कुंभकरणोत जैतावत राठोड़ १७८
जोगाइत टीकायत राठोड़ दो. ३४७
जोगाइत देवीदासोत राठोड़ दो. २७२
जोगाइत हमीर जगमालोत राठोड़ २, ३४७
जोगी कलेवचां भाटी दो. ३०१
जोगीदास दो. ८७
जोगीदास कलावत खीची १८४
जोगीदास कालर दो. ३३७
जोगीदास गुणेसोत प्रोहित दो. १०७ ११०, १३८, १३६,
जोगीदास भैरूदासोत भाटी १२०
जोगीदास सोनगरा दो. ३०५
जोगी वना रौ दो. २६
जोगौ दासावत मांडणोत राठोड़ ८३
जोगौ भांणोत रूपावत राठोड़ ८४
जोगौ रावलोत अखैराजोत ५७
जोगो सादावत राठोड़ ५५
जोगौ सादावत मांडणोत राठोड़ ८०
जोगो सेसमलोत २६३
जोधा सारंगोत मेहडु ५५०
जोधौ आसावत भाटी ६६
जोधो मुंहता ६४
जोधौ रेणीयो ३४

झां

झांझण कांना रो बांमण दो. ३२६
झांझण खीची ५१२
झांझण चौ० दो. ६२
झांझण पुंजा रौ दो. ३०
झांझण महेराजोत प्रोहित दो. २३७

झा

झाली सरूपदे ६६, ८३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झुं

झुंजारसिंह हाडौ १६३
झुंझारसिंह महेसदासोत राठोड़ १७५
झुठा बीकावत आसीया २४२

टी

टीकम गीथावत कवीया ३११ ३१२
टीलौ ८६
टीलौ सिवदास ३११

टो

टोहा खेतावत पालीवाल् प्रोहित ३०३
टोहौ राणो २४

ठा

ठाकुरसी चतरावत कनीया ४८८
ठाकुरसी डाहा रो चारण दो. २७४
ठाकुरसी बारट ३६७
ठाकुरसी राईसलोत प्रोहित ५४३
ठाकुरसी रामदासोत साहाणी ६८
ठाकुरसी रिणधीरोत राठोड़ ७०
ठाकुरसी वीठल २६७

डा

डागा कठोती रो, दो. ३६
डाहो खींवा रो प्रोहित दो. २७१

डुं

डुंगर दो. ४१
डुगा बागलणीया रा ५४८

डूं

डूंगर खालत दो. ३३८
डूंगर दयाल रौ ब्रा. ५४४
डूंगर नाथावत विरांमण ४८२
डूंगर पदमावत राजगुर ब्रांमण ५४४
डूंगर वीणसोत वांचल १८५
डूंगरसी ६३
डूंगरसी चौं. ४२
डूंगरसीजी दो. ५.
डूंगरसी ऊदावत राठोड़ ४६५, ४६७, ४६८, ५४७, ५५०
डूंगरसी करमसीहोत राठौड़ दो. २७२
डूंगरसी खिड़िया ८२
डूंगरसी जसावत प्रोहित २३८
डूंगरसी दुजणसलोत राठौड़ ८४
डूंगरसी देईदासोत राठौड़ दो. १६२
डूंगरसी नेतावत प्रोहित दो. २७२
डूंगरसी नेतावत भाटी ८५
डूंगरसी बारीयो ४२
डूंगरसी मालावत राठोड़ ७३
डूंगरसी भाटी ८६
डूंगरसी राठोड़ ४४, ५६
डूंगरसी सादुलोत आढा दो. २१२
डूंगरसी सीसोदीया ४४० दो. ५६
डूंगरसी हमीर रौ दो. ३, ४
डूंगरसी हेमावत पींडत दो. ३५०
डूंगौ पातलोत मेर ४६६

ढो

ढोली ऊदा रो बेटौ ७२

त

तगो ४४३
तणवर ११८
तरबीयतखांन १७१

तां

तांबल दुरजणसाल रो राठोड़ दो. ३४०
ताजु अछु रौ ६३
ताराईत ब्रांमण ३०१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ताराचंद नाराणोत भाटी दो. २४०
ताराचद नाराणोत भाटी भूपेलाव रा ४५७
ताराचंद भाटी १८४

ति

तिजली मांकरोत चारण दो. १०८
तिलोक सिवराजोत राठोड़ दो. ५७
तिलोकसी कूंपावत राठोड़ ६८, ८०, ८३
तिलोकसी गांगावत प्रोहित दो. २७२
तिलोकसी भाटी दो. ६६
तिलोकसी म्हेसोत राठोड़ ६८
तिलोकसी बरजांगोत राठोड़ ६५
तिलोकसी बरज्यंगोत उदावत राठोड़ ५८

तीकम सांढायची ३३५
तीडो १५
तीलोकसी परबत अणदोत भाटी ६२
तीलोकसी सूजावत राठोड़ १००
तीलोकी कांन्हावत ७०

तु

तुलछी किसनदासोत श्रीमाली दवे दो. २१२

ते

तेजमाल नाराईण रो प्रोहित दो. २७०
तेजसी ईसरोत राठोड़ ४७७
तेजसी दुरजन पंचाणोत राठोड़ ६१ दो. ६५
तेजसी डूंगरसियोत राठोड़ ६०, ४६५ दो. ६०
तेजसी पोमा ३०३
तेजसी बणवीरोत भाटी ४४
तेजसी भोजुवोत ६२
तेजसी मोकलोत प्रोहित दो. २७२
तेजसी वरसिंघोत राठोड़ दो. ५२
तेजसी वीरसलोत बारट ४१८
तेजसी वीसलोत रोहड़ीया बारहट ४८८
तेजसी सांकर रौ रतनू दो. १३५
तेजसी सा. दो. ६६
तेजा करमसीयोत आसीया चारण ५५१
तेजा खींवा प्रोहित ३३५
तेजा चाहड़ोत बारट ४८५
तेजा मेर ५५४
तेजा राढवत पांचलोड़ा अचारण २३७
तेजो आसकरनोत मेर ४६७
तेजौ किसने उदावत रौ मेर ४६६
तेजो नरसावत ४६६
तेजो पांचावत गोडात मेर ५५४
तेजौ रतनु मेर ४६८

तो

तोगौ रांमदासोत राठोड़ १७६
तोगौ सांवतसोत ८०
तोगो सिवदान रो चारण दो. ३५५
तोडर गोरावत ११६
तोलो सुराणा दो. ११६

थ

थका भोपा ५४२
थलौ उदावत ४७८

था

थाढा गुदवच प्रोहित २८५
थान रावल जोगी ५५२

थी

थीरराज दो. ३९, ४१
थीरा दुदावत रोहड़ीया बारहठ २४०
थीरा वरसंघोत मादा चारण ३५०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थीरो सेहलोत १०१
थीरौ रांमा री सांदू ४८७

द

दईदास रांमदासोत २४०
दमां रावत रा ५५२
दमां हरपाल प्रोहित ४०
दमा राठोड़ ३६०
दमान रूपसीयोत दसौंधी दो. १६८
दमोदर बांमण ३०१
दयाल मांनसिंघोत २३६
दयालदास १०२
दयालदास गोपालदासोत राठोड़ १०२
दयालदास जगनांथोत इंदों १८१
दयालदास जसवंतोन राठौड़ ११६
दयालदास नराणदासोत राठोड़ २८०
दयालदास भोपतोत राठोड़ १४१
दयालदास राघोदासोत झाला १७६
दयालदास राठोड़ ४७२
दयालदास लाडखांनोत राठोड़ ४६१
दयालदास लिखमीदास गोवंददासोत भाटी १८०
दयालदास लिखमीदासोत चौवांण १८१
दयालदास सूरजमलोत चंगावत राठोड़ १७७
दलथंभण १०७
दलपत आसकरणोत राठोड़ दो. ३०५
दलपत उदैसिंघोत राठोड़ ७४, ४६८, ५५१
दलपत भोजराजोत राठोड़ २६६
दलपत मनोहरदासोत सिवड़ प्रोहित १८४
दलपत सुजावत भाटी १८५
दला चोभावत आसीया २६२
दलेलखांन पठाण १७०
दलेल हीमत बड़ा महवतखांन रौ १७२
दलो जोया २०
दलो सेहसा रौ २५५
दवारकादास गोयंददासोत ३४६
दवारकादास जगनाथोत सींधल १४१
दवारकेसर २३८
दहीयो दो. २२०

दा

दाऊंदखांन कुरेसी १३५
दांनसाह साहजादा १०३
दाना किसनावत चारण दो. २७७
दाना गांगावत मीसण दो. १८५
दाना मोकल रा रतनु चारण २६३
दाना रतनू वाहरठ ८२
दाना हरदासोत रतनु दो. ११३
दाना हरराजोत रतनु दो. १६४
दांनो ईसरोत २४१
दांनौ सादुलोत प्रोहित ३३४
दांमा हरपालोत प्रोहित २३६, ३४०
दांमो हरखावत रोहड़ीया २७२
दारासाह साहजादा १३२, १३६, १५८, १७०
दासा ५२
दासा राठोड़ ५२
दासौ राठौड़ दो. २५२
दासौ पातलौत राठौड़ ४६, ५० दो. २४६, २६८
दासौ पातलौत राजावत राठौड़ दो. २७२

दि

दिल दलेल १७२

दु

दुजणसाल ४४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दुजणसाल मालावत राठौड़ दो. ३४०
दुणलौ बारहट आढा ७८
दुदा वीदावत वीठु २५५
दुदो गोरधनदासोत चौवांण १८१
दुदौ डूंगरोत ३०४
दुनीचंद पंडित दो. १७४
दुपौ जसपाल ३०३
दुपौ जीवावत ३०२
दुरगदास केसोदासोत भाटी १८०
दो. २६
दुरगदास भाटी दो. ३५२
दुरगासीं. ४७५
दुरगो नादावत दो. १७६
दुरगो सुरतांणोत चारण दो. १०८
दुरगो सोलंकी दो. ३०५
दुरजन गुडालो १८२
दुरजण जोधावत भाटी ५५
दुरजनसाल बीजावत प्रोहित ३३४
दुरजणसाल राठौड़ दो. ३४०
दुरजनसिंघ गोयंददासोत राठौड़ १८२
दुरसा मेहावत आढा ७८, ८२, ४८३,
५५० दो. १११, ११२
दुलेहराव दो. ४१
दुवारकादास केसा रौ प्रोहित दो. २६८
दुवारकादास जैमलोत दो. ७२
दुवारकादास लाडखांनोत कूंपावत राठौड़
१७७
दुह कचरावत १००

दू

दूदा अमरावत आसीया ३०३
दूदा कांनावत ३०१
दूदो भायल दो. २६४
दूदो मुंहता ६८

दे

देईदान जगमालोत आढो दो. १११, २१२
देईदान डूंगर रौ सिंढायच चारण
दो. ३५१
देईदांन सांवलोत पोकरणो व्यास १८४
देईदान हापावत चारण दो. ३५४
देईदास देवराजोत राठोड़ दो. ३१
देईदास नरांणदासोत राठौड़ दो. ३३३
देईदास प्रतापमलोत बारहठ दो. ११३
देईदास रामदासोत बारट दो. १६४
देईदास सगतसिंघोत राठौड़ १४१
देदा बीजावा सोढा प्रोहित दो. २७१
देदा चारण ७९
देदो खेता रौ भाटी दो. ३०१
देदो भैंरउत सोहड़ दो. २६६
देदो मां. दो. ६६
देदो सांवलोत सांवल रो भायल १८२
देदो सिंघवौ गोपी रो बेटो १८२
देदो मांगलीयौ ६२
देदौ सीहड़ १५२
देपाल जोया १६, १७, १८
देपाल लुणयांण १६, २०
देपू ५३, ५४
देलू दो. ४१
देवकरण गोईदोत पींडत दो. ३४९
देव जगनाथ सदाफलोत श्रीमाली
दो ११०
देवदत जोसी पोकरणा ६४, १०३
देवदत्त सुराणा दो. ११६
देव पंवार दो. १
देवराज १९ दो. २९०, २९९
देवाराज गोगादे १४
देवराज थलेचो दो. २९५
देवराज भारमालोत करमां रो २४२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवराजोत सींधल ७७
देवराज सुराणा दो. ११६
देवलिगा आढी (वेरा आसीया री वेर) ४८८
देव वीणो श्रीमाली ३४१
देवसी भोपा ३०४, ३०५
देवसेन बैंस ८६
देवा करमावत मेर ४६६
देवा केलण राजगरबाल प्रोहित ३०३
देवा गाडण ३३६
देवाणंद वीठु २५५
देवा मेहरोत मेर रावत ५५२
देवीदान गुणावत बारठ दो. २७६
देवीदान गोयंदोत भाटी १२३
देवीदास १८०
देवीदास कुलधरात रौ दो. ६३, ६४
देवीदास जीवण रौ म्हेडु चारण
दो. ३५२
देवीदास जैतावत राठौड़ ५२, ६०, ६१,
६४, ६५, ४६७, ४७६ दो. ५६, ६०
६१, ६३, ६४, ६५, ६६
देवीदास भादावत राठौड़ ८८
देवीदास भैंरवोत ब्रा. ४१८
देवीदास भैंरवोत बारहठ ४८५
देवीदास राठोड़ ४७, ६०, ६१, ६७
देवीदास रामदासोत बारट ४८४, दो. ११३
देवीदास सुराणा दो. ११६
देवीदास ऊदावत राठोड़ १७७
देवो सूजावत सींधल १०४
देवौ मेहरावत ४६८
देवौ मेहरोत मेहरावत ४६६
देवो मेहाजल रो चारण दो. २८
देस पातलोत राठोड़ ६६

दो

दोलतसा. जलेबदार १८४
दोलीया १७
दोलीयौ गेहन रौ गेहलोत १६, २०
दोवो करमावत गोड़ात मेर ४६७

दौ

दौलतखांन १७५
दौलतसिंघ सुजांणसिंघोत सीसोदीयो १७४
दौलतीया दो. ४६, ५०

घ

घनराज तिलोकसी प्रोहित ४८०
घनराज भणसाली ७१
घनराज भारमलोत राठोड़ ५६
घनाबाई ८६
घनौ आसावत भाटी ५४, ६४
घनौ किसनावत प्रोहित ४८०
घनौ पीतावत ब्रा. ५४४
घनौ भाटी ६६, १०१
घनौ भारमलोत राठोड़ ४६, ५०, ५२,
दो. ५६
घनौ रतनावत पंवार १८३
घनौ लाला रौ दो २८
घनौ सीरवी ४७२
घरणीवराह पंवार दो. २१५
घरणीवाराह राजा १
घरमघोषसूरि दो. ६६, ११५
घरमा खाती दो. २६
घरमा चांदणोत खिड़ीया ३०, दो १०७
१२८
घरमा सांद्रू ८२
घरमो लाला रौ ३०३
घांधल करमसी भोपा ३३५
घारबाई (भाटी प्रीथीराज री बेटी) ५६

घो

घीरण माला कचरावत रो ३०३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बीरांणा किसना जीजावत ८२
बुघली माल दबटीयो दो. २५३

धु

धुहड़ १५, २६१
धुहड़ आसथांनोत राठोड़ दो. २६७, २८६

न

नगराज खेतोसी २४१
नगा राठोड़ ४६, ५०
नगो गोपाळ रो चारण दो. २७६
नगौ भारमलोत ५१, ५२, ५६, ६५
नगौ मु. दो. ५६
नणराज नराईणदासोत देवड़ौ २७६
नरदेव दो. ११६
नरपत सांकरोत जोसी श्रीमाली २३७
नरवद (सता रो बेटौ) २६, ३७, ३८६, ४६३, ४६४
नरबद ३८७, ४६३
नरबद जोगाइत रो राठोड़ दो. ३४७
नरसंघदास पा. १६४, दो. ३५६
नरसा चीता रौ मेर ५३६
नरसिंघ ४६३, ४६४
नरसिंघ चोथोत सीवड़ प्रोहित ४८०
नरसिंघ भाणोंत भाटी १८०
नरसिंघ सिंढाइच २४१
नरसिंघदास सुरजनौत चांपावत राठोड़ १७७
नरसिंघदास किल्याणदालोत राठोड़ ६६
नरसिंघदास जगावत आसीयो ४८८
नरसिंघदास मोपतोत राठोड़ ११२
नरसिंघदास रामदासोत प्रोहित ५४६
नरसिंघदास लिखमीदासोत चौवांण १८१
नरहर पिरागोत चौहाण ६६
नरहट भोजराजोत खिड़ीया दो. १६७
नरहर सुजावत खिड़ीया दो. १०६, १११ १६७
नरहरसांन राजसिंघोत राठोड़ १२८
नरहरदास ईसरोत राठोड़ दो. ६६, ११२ २११
नरहरदास कलावत राठोड़ ११६
नरहददास गोयंददासोत जैसावत रो भाटी १००
नरहरदास जगावत आसीयो ४८८
नरहरदास भांनीदासोत भाटी ११६
नरहरदास भैरूंदासोत भाटी दो. ३०६
नरहरदास राठोड़ ७०
नरहरदास लखावत बारट ५४८, दो. २०३
नरा दो. ४, ५
नरा सूजावत राठोड़ दो. २६२, ३१२
नराईण अखावत खिड़ीया दो. १६८
नराइण अखावत पंवार दो. २६४
नराईण खेता रो चारण दो. २७७
नराईण जैराजोत दो. ११६
नराईण पंवार दो. २६५
नराईण पतावत १००
नराइणदास कलावत राठौड़ ११४
नराइणदास चांदराव रौ दो. ५६
नराईणदास राघोदासोत राठोड़ दो. ३०६
नराईणदास श्रीवातरौ ४८१
नरो अजावत हमीर रो भाटी दो. ३०१
नरौ गोयंद रौ राठोड़ ५७
नरो चतरभुज रौ चारण दो. २८
नरौ जैतमालोत दो. २६
नरौ मालावत पलांणीयौ १८४
नरौ मेर ५५३
नरो वछा रौ व्यास ५४७
नवसेरीखांन खांनदोरा रौ १७२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नवाव ग्रासफखांन दो. ७६, ७७
नवाव खांनखाना ७७, ७८, १०७, ११० ३६०, ४८७, दो ७०
नवाव वाहादरखांन १३६, १३७
नवाव महावतखांन ६६, १०७. १०८, १०६, ११०, १७१, १७२ दो. ७४ . ७५, ७६

नां

नांदी ८६
नागाग्ररजन पड़ीहार २,४
नाढा दामावत प्रोहित ३०२
नाढो चांदा रो प्रोहित दो. २८७
नाथा ग्रखावत सांदु ४८६
नाथा कानड़ रो दो. १६५
नाथा रतनसीयोत रोहड़ीया बरिट ४८४
नाथू सुराणा दो. ११६
नाथो गोगादे राठोड़ दो. ३०१
नाथो भाटी दो. ३०१
नाथो लिखमीदासोत भाटी दो. ३०६
नाथो सांकर रौ रतनूं दो. १६५
नाथौ ७१, ८६
नाथौ ग्रखावत सांदू ४८७
नाथौ चहुवांण ५८
नाथो जैतावत ईंदो १८१
नाथौ टीकम रौ प्रोहित ३०२
नाथौ दासावत २४२
नाथौ मालावत भाटी ५८
नाथौ रतनसिंघोत २३६
नाथौ रूपावत २५४
नाथौ सादूळोत पिड़िहार १४२
नादो करनोत २४२
नानग दो. २६०, २६१
नांना रोहड़ीयोत राजगुर प्रोहित दो. २६६
नापौ दहीयौ १०१
नापौ मांणकरावउत ३१
नायक खांन मेहमद फुल रौ ६४
नारंगदे सांखली, (बीका बीदा री मां) ३१, ३६
नारण ग्रखावत खिड़ीया दो. १७६
नाराण वाधावत १८०
नारण सिवराज रौ राठोड़ दो. ३१
नारणदास चांद्रावत रौ राठोड़ ६०
नाराइण तिलंगा रौ मट्ट ४६३
नाराइण मुंहता दो. ३५१, ३५२, ३५३
नारायण राघोदासोत राठोड़ दो. ३०५
नारायणदास ग्रखावत खिड़िया दो. १०८
नारायणदास गोयंददासोत ऊहड़ १७६
नालो सुराणा दो. १२६
नाल्हा वद्धायत रतनूं चारण दो. ३५५
नास नाराईण तेजावत ग्राचारज २३७
नासीरदी मुगल ८७
नाहडराव नागारजन रौ बेटौ २, ३, ४, ५
नाहड़राव पंवार ३८६
नाहड़राव पड़ीहार २४१
नाहरखांन ईसरोत ग्रासायच १८२
नाहरखांन गजसिंघोत राठोड़ दो. २६६
नाहरखां भाखरसीयोत सोनगरा १८१
नाहरखांन राजसिंघोत राठोड़ १३६ दो. २६६
नाहरखांन राठोड़ १३६ दो. ३०२, ३०३, ३०५

नीं

नींबा करमावत चारण दो. २७७
नींबा खेतावत कविया चारण ५४६
नींबा जोधावत राठोड़ ३६०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नींबा राठोड़ ८६
नींबा राघावत राठोड़ ३६३
नींबो अरणदोत जेसो राठोड़ ५७
नींवो जोधावत ३६
नींबो दुरजणसालोत राठोड़ ८७
नींबो दुजणसालोत मांडणोत ८४

नी

नीजरवली दो. ११६
नीलकंठ किसनदासोत २३६
नीलकंठ गिरधर रौ २३७

ने

नेता मानावत चंवडीया ३३५
नेतौ ३६७
नेतौ कोठारी १८४
नेतौ धनौ भारमलोत वालाउत राठौड़ ५६
नेतौ पा० दो. ५६, ६३
नेतौ पातावत ८६
नेतो पेथड़ दो. ३०१
नेतौ प्रोहित ६४
नेतौ बींजावत भाटी ८५, ८६
नेहमास महावतखांन रौ १७२

नै

नैणसी जैमलोत मुंहणोत दो. ३२३
११६, १२०, १२१, १२३,
१२७, १३६, १३७, १३८, १४२,
१४३, १४४, १५७; १६४
दो. १, ८, ८३, ६२, ६४,
६५, १३२, २६६, ३०२, ३०३,
३०५, ३०६, ३५६
नैतसी काजावत ऊहड़ ३०४
नैतसी जसावत २५५
नैतसी जैसिंघोत ८८
नैतसी सहेसमलोत राठोड़ दो. ३४१
नैतसी सीहावत राठोड़ दो. ६५
नैतसी सीहावत अखैराज राठोड़ ६२

नो

नोखो ऊजलोत सिंढाइच चारण दो.३५४
नोरंगदे (कनकावती) ५२, ५५

पं

पंचाईण अखैराजोत राठोड़ ७६, २४३
पंचाइण ऊदावत ६२
पंचाईण करमचंद रौ पंवार दो. ५०
पंचाईण करमसीयोत राठोड़ ४८, ५७ दो. ५७
पंचाइण जोधावत भाटी ५७
पंचाईण टोहावत थाथरीयो राठोड़ ८० ८४
पंचाईण भटारक सीसोदीयो ११३
पंचाईण वरसंघोत राठोड़ दो. २८६, २८८
पंचाईण वरसिंघोत महेवचा राठोड़ दो. २७५
पंचाईण वीसावत भाटी ७६ दो. २२०
पंचायण ४३
पंचायण पंवार दो. ४६

प

पतौ उरजनोत मुंहता ७० दो. २१६
पतौ कलावता देवड़ी १०४
पतौ कान्हावत अखैराजोत राठोड़ ५७
पतौ गांगावत राठोड़ २८५ दो. २७५
पतौ गांगावत डूंगरोत राठोड़ दो. २७४
पतौ दुरजणसालोत राठोड़ ५८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पतौ देवाइत बारठ दो. १८४
पता देवाईचोत रोहड़ीया बारठ दो. १०८
पतौ नगावत राठोड़ ६८, ७०, ८०, २९२ दो. २१९
पतौ नेतावत ६७
पतौ भादावत हुल ९९
पतौ महेराजोत रौ राठोड़ ६२
पतौ मुंहता ६७, ७०
पतौ राठोड़ ८०
पतौ रायमलोत चारण दो. ३४६
पतौ वरसावत रतनूं चारण दो. ३५०
पतौ सुरतांणोत भाटी दो. ३३६
पदमा देवड़ी ४२, ७६
पदमा पोकरणा ब्रामण २३९
परतापमल नांदणोत बारठ दो. ११३
परतापमल सिंघवी दो. ३०५, ३०६
परतापसिंघ करमसींवोत जोधा राठोड़ १७८
परतापसिंघ नांदणोत बारट दो. १५२
परतापसिंघ सुरतांणोत भाटी दो. ३०३, ३०४
परतापसी भाटी दो. ३५३
परबत किसनाणी राठोड़ दो. ३४१
परबत कुसलावत राठोड़ दो. ३३५
परवत देवराज रो पोकरण दो. ३२४
परव्रत देवराजोत राठोड़ दो. ३४८
परवत सादावत लूणोत प्रोहित दो २७३
परबतसिंघ चंदमण रौ १७३
परबतसिंघ मेहाजलोत दाहवौ ७६ दो. २२१
परबतसिंघ सीसोदीया ११८
परवत मेर २
परवेज साहजादा १०६, १०७, १०८, १०९, ११० दो. ७४, ७५, ७६
परसराम गौड़ १७३
परसु १३५
परसोजी दिखणी १७३
परसोतम जोसी ७७

पां

पांचु वीरमदेयोत मांगलीयो ४१
पांचो नंदावत साहाणी ९८

पा

पातल ५२
पातल राजावत राठोड़ दो. २५१
पातलौ मेर ४६५
पातसाह री बाई दो. ७०
पातु गू ्र ५२२
पातो कूंपो मेहराजोत राठौड़ दो. ३५
पातो बारट दो. ५७, ५८
पाला ऊदावत रतनूं दो. १६५
रतनुं पालीह उदावत दो. १०८
पाहड़खांन ९३

पि

पिरथीराज कानुगो दो. ८८
पिरथीराज दलपतोत करमसीयोत राठोड़ १७८
पिरथीराज सुंदरदासोत बघवाड़ीया दो. ११२, १४०
पिराग ईसर रौ ब्रा. ५४४
पिराग बाघावत सोहड़ दो. ३०१
पिराग भाटी ८७
पिराग भारमलोत भाटी ६२ दो. ६६
पिराग मुकदोत व्यास ५४८
पिरागदास चांपावत धायभाई १८३
पिरागदास सुरतांणरामोत राठोड़ १००

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पिरागदास हरिसिंघोत राठोड़ दो. ३०७

पी

पीजल बीवल रा प्रोहित २३६
पीतांबर पिरागोत ४८२
पीतांवर वागदे श्रीमाली २३८
पीथड़ प्रोहित ३०२
पीथौ ८६
पीथौ अणदोत भाटी ६२
पीथौ खेतसीयोत पातावत राठोड़ १४१ दो. ३०७
पीथौ जगावत सौहड़ ५६
पीथौ जेसावत सोहड़ दो. ५६
पीथौ टोहावत रतनुं चारण दो. २७७
पीथौ देदावत केसरीया प्रोहित ३०२
पीथौ नरसंघ रौ वीठु दो. १११, १६४
पीथौ नरा रो प्रोहित दो. २७३
पीथौ नाराईंण रो प्रोहित दो. २७३
पीथौ भाटी दो. ६६
पीथौ माणावत गाडण ३०४
पीथौ रूपसीहोत रतनूं दो. ३५२
पीथोड़ सोढावत सोढा प्रोहित दो. २६७
पीपलीयौ वीढा रौ ५२७
पीपो पड़िहार ३
पीर जमजेद दो. २१५
पीरजादा दो. ११४
पीरजादा खुजमहममद नी म दो. ११६
पीरजादा नीजरवली निजाम दो. ११४
पीरसेद मारू दो. २१५
पीरोज खांन पातसा रो बेटो ३८८

पुं

पुंजो सुराणा दो. ११६
पुनराव आसीया २४०
पुनौ आहेड़ी २०

पूं

पूंजौ चाहड़ हरभू रौ दो. ३०
पूना अखावत रायगुर प्रोहित २६७
पूना दोलीयां रौ गहलोत २६
पूनौ वीसलदे रौ ३२
पूरण जीवावत २४१
पूरणमल जसावत रावलोत भादावत राठोड़ १७६
पूरणमल प्रीथीराज जैतावत राठोड़ ६१ दो. ६५
पूरो भांण रौ दो. ३४६
पूरां भटीयांणी ४०
पूरां सोनगरी (सोनगरा अखैराज री बेटी) ५६

पे

पेथड़ राजौ दो. २९५, २९६

पो

पोकरणो इंदो ३१
पोटल सामराव दो. १७५
पोटलो समरावत रौ बारठ दो. १०८
पोहकरण रथीसर दो. २८६, २६०
पोहकरण बांभण दो. २८६
पोहपावती (मालदे री बेटी)

प्र

प्रतापमल करमसीयोत पातावत राठोड़ दो. २६६
प्रतापसी गोहल १२, १३
प्रतापसी सुरतांणोत रावलोत भाटी दो. ३०१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्रि

प्रिथीमल सीसोदीया १२६
प्रीग मांडणोत राठोड़ ८६
प्रिथीराज करनोत भाटी ६६
प्रिथीराज करमसोत दो. १३४
प्रिथीराज कूंपावत राठोड़ ६१, ७१, ८०, ८२, ८३, ४१८, ४८५, ४८७, ४८६, ४६२ दो. ६३
प्रिथीराज खींवराजोत दधवाड़ीयो ४८६
प्रिथीराज गिरधरदासोत बारेट ४८५ दो. १४०
प्रिथीराज गोईंदोत नरावत राठोड़ दो. ३५३
प्रिथीराज जेतसियोत केल्हण भाटी ३४
प्रिथीराज जैतावत ५६, ६४, ६५ दो. ४, ५, ५६
प्रिथीराज दयालदासोत चौवांण १८१
प्रिथीराज दलपतोत राठोड़ १८५
प्रिथीराज देवलीया राठोड़ ४२३
प्रिथीराज देवीदासोत राठोड़ ४६६
प्रिथीराज बलुवोत राठोड़ १११ दो. ७४
प्रिथीराज भाटी ४३
प्रिथीराज राठोड़ ४७५
प्रिथीराज सीधण अखैराजोत राठोड़ ६३
प्रिथीराज सूजावत देवड़ो १०२
प्रीथीराज चहुवांण सोमेसर रो बेटो २, ३, ४

फ

फते अली ११६
फतेखांन बलोच १२२
फतैसिंघ दो. ३०४
फतैसिंघ कां० १३६
फतैसिंघ नरहरखांनोत राठोड़ १५६
फतैसिंघ महेसदासोत राठोड़ १७४
फतैसिंघ सुजांणसिंघोत सीसोदीयो १७४
फतैसिंघ हाडो १७३
फदर ८२
फदाईखांन दो. ७६ १०६ दो. ७३
फरसरांम कचरावत सारंगसमजी रो व्यास दो. १६४
फरसो धनराजोत चौहाण १८४
फरीद हुसेन १७१
फलू बांभण दो. १
फलूधी (फलू बांभण री बेटी) दो. १
फलो सींधू दो. १

फा

फाजल मुहमद ११५

फु

फुलनायक ५८

फू

फूल विणजारो ४७०

फो

फोकट दो. ४१

ब

बछा गुगली बांभण २६०
बणवीर ११८
बणवीर धारावल देवल ११७, ११८
बणवीर पुनावत भाटी ३२
बणवीर भाटी ३४
बणवीर भोजावत हुल ३६
बना बाघेली ३६
बरजांग भींवोत राठोड़ ३१, ४०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बरसल पातलोत राठोड़ ६८
बरसल पातावत राठोड़ ६६
बरसल प्रीथीराजोत राठोड़ ८०
बलराम दयालदासोत ऊदावत राठोड़ ११७
बलभदाम सुरतांणोत राठोड़ दो. ११२
बलभद्र सुरतांणोत राठोड़ दो. ७२, १४०
बलु ईसरदासोत राठोड़ ५१६
बलु गोरधन रौ प्रोहित दो. ११२
बलु गोरधन रौ व्यास दो. २१२
बलु जगनाथोत राठोड़ दो. ३०८
बलू परतापोत राठोड़ ५२४
बलु पा० ११६
बलु पांचलो २१५
बलु बीकावत राठोड़ ५२५
बलु बीजावत लूंका रौ दो. ३४४
बलु सहेलावत रौ सींधल २८५
बहुजी अहाड़ी (राजा सूरजसिंघ री रांणी) ९५
बहूजी सेखावत २८६

बां

बांघरौ हुल ३८३, ३८४

बा

बाई लीग (राय गोयंद री बेटी) दो. ३२२
बाई श्री मनभावतीजी दो. २९८
बाखल चांदणोत जगहर दो. १५२
बाघो अबदार २३४
बाघौ नेतसोत ३०२
बाबट आलावत रौ लाधा रोहड़ीया ३०४
बाबर हीड़ागर दो. ४२
बाबल चांदणोत दो. १०७
बारू हींगोला २४०
बालनाथजी दो. ३१५
बालाह बाई (मालदे री बेटी) ५२
बालीसो सूजो सांवतोत दो. ६०
बाहादर पातसाह ९७

बीं

बींजा ५१
बींजा देवड़ा ७३
बींजौ जैतमालौ राठोड़ ५७
बींजौ भारमलोत राठोड़ ५०
बींजो बीकमादित राजगपाल ३०
बींजौ बीरमोत राठौड़ ६६

बी

बीकौ देईदांन रौ खिड़ीया ५४९
बींजा सिवराजोत राठोड़ २५४
बीजैराम हरीदासोत गोपालदासोत चांपावत राठोड़ १७७
बींजौ ८०
बीदो भारमलोत बालावत राठोड़ ५७
बीदौ राड़बरौ ८०

बु

बुढो सेहसा रौ २५५
बुरड़ ४६५

बे

बेगम-पातसाह री मां दो. ६८
बेगौ कूंपावत ४७१
बेठवासीयो हुल १०१

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वेणौ इंदौ ७३
वेणौ वरमावत इंदो ६६
वेणौ धायभाई ८६
वेणो सहेसो तेजसोत वरसिंघोत राठोड़ ४२
वेणीदास चोपड़ा ४७३
वेरसी जेसावत राठोड़ दो. ६
वेरौ सांईदासोत ४७१
वेत्रौ कोचर ८९

बो

बोचा चारण १३६
बोरीयौ मेर ४६६
बोहड़ीया (कठोती) दो. ४०
बोहीगुण मालावत खिड़ीया ५५१

भ

भगवान ईसर रौ खिड़ीया दो. १२६
भगवान कमावत सा० १८५
भगवान करमचंदोत दो. २२
भगवान गोपालदासोत दो. ११०
भगवांन जसावत खिड़ीया दो. १०८, २०६ १७६, १९८
भगवांन देईदासोत प्रोहित दो. ३५०
भगवान मांना रो राठोड़ दो. ३४७
भगवानरांमोत २८१
भगवान लिखमीदास राठोड़ दो. ३३२
भगवान सि० २२७
भगवांन सीरंग रो २३७
भगवानदास ८२
भगवांनदास मांडणोत राणावत राठोड़ १७९
भगवानदास मांनसिंघोत २३६
भगवांनदास रायमलोत भाटी १८१
भगवानदास वाघोत राठोड़ ११२, ११५, ११६
भगवानदास वीरमदोत भाटी ७३
भगवानदास सकतावत राठोड़ १७९
भगवानदास सुरतांणोत राठोड़ ११६
भगसिंघ रूपसीयोत ११०
भटीयांणी (अखैराज री बेर) ८८
भणकलावत भाटी ६८
भदो पंचायणोत राठोड़ दो. ५२, ५३
भरमा रूपावत रतनु दो. ११२, १४१
भलौ चांदा रो प्रोहित दो. २७०
भवणौ रांभावत जेतसेपाउ आचारज प्रोहित ३१०
भवानीदास तेजसीहोत सीवड़ दो. १३८
भवानीदास राठौड़ ५५१
भवानीदास सुरावत अखैराजोत राठोड़ ५७

भां

भांण १
भांण (मालदे री रांणी) ५६
भांण भोजराज सादा रूपावत री राठोड़ ६१ दो. २६५
भांण मनोहरदासोत भाटी १८०
भांण राठोड़ ६६
भांण संसारचंदोत राठोड़ ६६
भांण सकतावत सीसोदीया १२३
भांण सैहसमलोत मा० १४२

भा

भाइ पंज जैपाल दो. २६०
भाखरसी कूंपावत भाटी ७६ दो. २२०
भाखरसी जैतावत राठोड़ ६१ दो. ६५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भाखरसी डूंगरसीहोत राठोड़ ६२ दो. ६५
भाखरसी दासावत राठोड़ दो. २६८
भाखर नरहरोत श्रीमाली व्यास ५४८
भाखर बारट ३६६
भाखर मांगलीया ५२४
भाखर सादूल रो. प्रोहित दो. २७३
भाखर सीहेडा रो धांधल दो. २६
भाखरसी हरराजोत भाटी ८८ दो. ७,
२६६
भागचंद करमचंदोत रो दो. ७
भागां (करमसी जोधावत री बहन) ४०
भाडी सूजा जागरवाला ब्रांमण ८१
भाणौ ८७
भादो नराइणदासोत भाटी १००
भादो मोकलोत राठोड़ दो. ४८
भादो लाखा रौ ३५०
भादो हेमावत दो. २२०
भाना जैतसिहोत खिड़ीया ७६
भाना नेतसीयोत खिड़ीया ८२
भाना नेतावत खिड़ीया ८२
भानो भारमल रो चारण दो. ३५५
भानो माडण रो प्रोहित दो. २७३
भानो सिवराज रौ राठोड़ दो. ३१
भानो सुजावत बरकंदाज चौहांण १८३
भांनीदास (राव डूंगरसी रौ भाई)
दो. ६
भांनीदास ईसरदासोत भाटी ११६
भांनीदास खींवावत राठोड़ ४६८,
४६६, ५५१
भांनीदास चंडीदास रौ २३७
भांनीदास तेजसीहोत सीवड़ दो. ११०
भानीदास दुजणसालोत भाटी ८४
भानीदास प्रोहित दो. ६३
भांनीदास सुतहार ६२ दो. ६६
भारमल दो. २८६
भारमल कानुगो दो. ८८
भारमल किसनावत प्रोहित ३३४
भारमल जोधावत राठोड़ ३०२, ३०४
भारमल दलपतोत राठोड़ ५८८
भारमल देवीदासोत राठोड़ ५६
भारमल धारावत रतनूं चारण दो. ३५३
भारमल मना रो चारण दो. २७७
भारमल सांखला ८०८
भावसिंघ किसोरदासोत कूंपावत राठोड़
१७७ भींव ६८

भीं

भींव ऊदावत बालौ राठोड़ ६३
भींव किल्याणदासोत राठोड़ १००, १०४,
१११, १२४, ४६६, ५४० दो. ७४
भींव गोपालदासोत राठोड़
१३८, १४१, १५६
भींव केसोदासोत गाडण ४८६
भींव चूंडावत ३१
भींव पड़ीहार ४४१
भींव पिराघदासोत भाटी १८०
भींव बरसलोत राठोड़ दो. ३०६
भींव बाघावत सुजावत राठौड
२३८, २४२
भींव बीठलदासोत गोड़ १७६
भींव बीठलदासोत गोपाळदासोत चांपावत
राठोड़ १७७
भींवा लहुवो दो. १७
भींव बैरसलोत आसीया ३६६
भींवो भोजो दो. ३५६
भींवोत बलु मेघराजोत ११६
भींवो मुंहता ६७
भींवो रावत ६३
भींवराज पेथड़ दो. ३०१
भींवसिंघ हाडा १३५
भीखण चहुवांण ५८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भींवा थाहरोत प्रोहित दो. २७०
भींवां बांभण दो. २७०
भीमदे ३
भीमा ८६

भुं

भुंणकमल दो. ३०१
भुणकमल ८६
भुणकमल देपौ गांगावत ८८

भू

भूधर कांना रौ बांमण दो. १५२
भूधर कान्हावत प्रोहित दो. १०८
भूधर गोईद रौ व्यास दो. २१२

भैं

भैंरव रासद दो. २६०, २६१
भैंरव ६५
भैंरव नींबावत ब्रा. ४१८
भैंरव नींबावत रोहड़ीया बारेट ४८५
भैंरव भाटी ६६
भैंरव भींवराज सीहावत सोहड़ ५८
भैंरव हरखावत खिड़ीया २४१
भैंरवदास कीतावत मुंहता १२८
भैंरवदास जाडो २६२
भैंरवदास मादावत राठौड़ दो. ५०
भैंरू भींवराज राजप्रोत २६८
भैंरूदास जोसी ७७

भो

भोजराज १
भोजराज ५५
भोजराज २८६
भोजराज कलुटा राठौड़ ७३
भोजराज चांपावत राठौड़ १७७
भोजराज पातावत राठौड़ दो. ३०५
भोजा कूंपावत सीवड़ प्रोहित ५४३
भोजा जेसावत मीसण २४३
भोजु पोहकरण मा. दो. ७
भोजु भाटी ७०
भोजु मांगलीयौ दो. २६७
भोजो मुंहता दो. ३५१
भोजौ जसवंतोत पंवार १८३
भोजौ जोधावत भाटी ५८
भोजौ पंचाईणोत अखैराजोत राठौड़ ५७
भोजौ मंडलावत राठौड़ ६३
भोपत उदैसिंघोत राठौड़ ७५, ९६
भोपत जोगावत रावळोत राठौड़
१००
भोपत कांना रौ पंडित दो. ३४६
भोपत गुणेस भारमलोत प्रोहित २३८,२८५
भोपत जैसिंघोत राठौड़ दो. ३०५
भोपत देवीदासोत राठौड़ १०२
भोपत मांडणोत पींडत दो. ३४६
भोपत मानसिंघोत मोहता ६८
भोपत राठौड़ ६७
भोपत रांणावत राठौड़ ६८
भोपत व्यास दो. ३१४
भोपत हींगोलावोत राठौड़ ६८
भोपा आसायच ३३५
भोपो नाई २१, २२, २३

मं

मंड हुल १८५
मंदोदर दईत १
मंदोदर री बेटी १
मकवांणो हुल १०१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मदन जात सोथड़ं प्रोहित ३१०
मदा श्रीमाली दवे २४३
मदौ ११९
मदौ फतैग्रली बलोच दो. ८
मदौ मेरावत राठौड़ दो. २१६
मदौ लुणयांण २०
मधुदेव पंवार दो. ११५
मधो लहर ३८९
मनभावती बाई १०८
मनरूप राजा जगन्नाथ रौ कछवाहा
दो. ७२
मनौ पटेल मा. दो. २३७
मनोहर ग्रणंदोत ४७९
मनोहर ईंदो १८४
मनोहर जैमल रौ प्रोहित दो. २९७
मनोहर पीथावत २४०
मनोहर भाटी १८२
मनोहर रांभावत ९८२
मनोहर सादुलोत चौहाण दो. ३०७
मनोहरदास उकील १४४, १५७, १५८
दो. ९३, ९५
मनोहरदास केसोदासोत मुहेचा राडौड़
१८०
मनोहर गुणेसोत ईंदो १८२
मनोहरदास जसवंतोत वीदो राठोड़
दो. ३०६
मनोहरदास पंचोली १२८
मनोहरदास पंडित १५३
मनौ रूपसोत भाट २५५
मन्हौर ५२
ममारक खांन ५८
मलकग्रली सेर ५२
मलूखांन ४०, दो. ४२, ४३, ४४, ४६
मवेला १०२
महणसी २
महणसी ग्रल्ह ३
महरात मेर ५३५
महरवलीखांन पातसाह १८, १९
माहावतखांन साहजादा ११०
महीधवल दो २९०, २९१
महेपौ पंवार ३०
महेस ग्रखावत चारण दो. २७४
महेस ईंदो १०१
महेस कूंपावत राठोड़ ७१
महेस घडसीहोत राठोड़ ४३, ५७, ६२,
२५५ दो. ५४, ६६
महेस चारण दो. ५८
महेस चुतरावत बारठ दो. १८४
महेस चुतरावत मीसण दो. १८५
महेस चुतरावत मेड़तीया दो. ४७
महेस दुदावत रोहड़ीया बारहट २३९
महेस नाथोत ३३५
महेस पंचाइणोत राठोड़ ६२, ३३६
दो. ६५
महेस मोहलोत २३९
महेस सांगावत राठोड़ दो. ३४१
महेस सांदू ४८७
महेसदास २६२
महेसदासजी १३५
महेसदास ग्रचलदासोत भाटी १८०
दो. ३०५
महेसदास कानुंगो १६४
महेसदास किसनावत ग्राढा ४८३, ४८४
महेसदास चुतरावत बारठ दो. १०८, १०९
महेसदास दलपतोत राठोड़ दो. ७४
महेसदास राठोड़ १३७ दो. २६५
महेसदास सूरजमलोत राठोड़ ११५, १२५
१७५, १७६, ४३४
महैराज खुंमाणोत राठोड़ दो. ३४०
महैराज टोकरी २६७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महैराज भोजा री प्रोहित दो. २६६
महैराज सीहावत बांमण ३०१
महो जगहथोत पातौ ६३

मां

मांगलीयांणी (वीरम री बैर) १६. २०, २१,
मांगलीयौ सरणावत ६३
मांडण करन प्रोहित ४७७
मांडण खींवसरा दो. १०६, १६८
मांडण खेतावत प्रोहित ८१
मांडण गोपालदासोत ऊहड़ ३०३
मांडण हरदासोत ३०२
माटलप दो. २३०
मांडा सीहावत बांमण ३०१
मांडा हुल १८४
मांणो दो. ३३४
मांनसिंघ सोनगरा ६८, ८० ८१. दो. ६३
मांनो मांगलीयं ६७
मांनो डावगोत भंडारी १०१
मांनो देवराजोत भाटी दो. ३३८
मांनो परबत मेर ५४१
मांनो भडारी ९६, १०१, १०२, दो. २६७
मांनो भाटी ७०, ७३, ९६, ११२, ११३ दो. २४३
मांनो मनोहरदास गोमंददासोत भाटी १००

मा

मागा बुध रोहड़ीयो चारण १५
माजबी लाडखां १०१
माडी जसा री ५५३
माणक हरीयो गेहलोत १६, २०,
माणोत अचलौ सूजावत ७३
माधवदास गोपालदासोत राठौड़ ९८
माधवदास चूंडावत दधवाड़ीया ११३, ११४, ४८७
माधोदास ३४६
माधोदास केसोदासोत भाटी १८०
माधोदास केसवदासोत सोनगरा १८१
माधोदास गाउण ३४६
माधोदास जसवंतोत राठोड़ दो. ३०८
माधोदास पूरणमलोत राठोड़ १०४, ११०
माधोदास मोहणसोत ३४६
माधोदास रांमदासोत राठोड़ १००
माधोदास सादुलोत मांगलीयो ९८
माधोदास सोनगरो दो. ३०२
माधोसिंघ ऊदैसिंघोत राठोड़ ७५
माधोसिंघ भोज रो राठोड़ दो. २१०
माधोसिंघ सीसोदीया (राणा ऊदैसिंघ रै) १०४
माधौ धायभाई गोड़ १००
माधौ तेजा रौ कछेला ५५१
याधौ रांमदासोत ३१६
माधौ रांमावत प्रोहित दो. २६८
मान खिजमतीया राठोड़ १०५
मानधाता चक्रवती दो. ११५
मान रांमावत आसीया २४३, २८७
मानसिंघ अखैराजोत सोनगरा ६१, २६८
मानसिंघ किल्यांणदासोत जैमलोत भाटी १०१
मानसिंघ गोपालदासोत भाटी १८०
मानसिंघ ठाकुरसोत भादावत राठोड़ १८५
मानसिघ मुरारदास राठोड़ दो. १४६ १५०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मानसिंघ राजावत राठोड़ दो. २६५
मानसिंघ रूपसिंघोत राठोड़ १५६, १५७
मानो मालावत मेर ५५२
मानो रायमल ३१८
मानो सिवदासोत हमीर भाटी दो. ३०१
मानो सुजावत बरकंदाज चौहांण १८३
माल १३५
मालदे वणवीरोत कांधल राठोड़ दो. ७
मालराव चूंडा २५
माल लखमणोत १०१
मालवदे दो. ११६
माला ऊदावत सांदु ८२, ३४६ दो. १६७
माला चारण ४३६
माला चांदावत मेर ४७१
माला तेजावत वीठू दो. १६४
माला नेजावत नुं दो. १११
माला परवत देवराजोत राठोड़ दो. ३५१
मालुजी १७२
मालो जगमाल १६,७
मालो देवराज रो (पोकरण) दो. ३२४
मालो नरवद रौ राठोड़ दो. ३४७
मालो समुरता रौ बारठ दो. ३५०
मांलो दो. २३०
मालो उदेसोत सांदू चारण १०५
मालो जोधावत भाटी ५८
मालो दिदावत २६८
मालो देवराज राठौड़ दो. ३४८
मालो सलखावत १६
माहव आसा री सिंढ़ायच चारण
दो. ३५१
माहाव राजगुर प्रोहित २६८
माहसिंघ वीहारीदासोत राठोड़
दो. १८४
माहारीख दो. ४१
माहासिंघ जगनाथोत राठोड़ दो. १८०

मी

मीरजा दो. ५५
मीढो रांदो १६, २०
मीयां फरासत १२६, १३६, दो. ६२
मीर आसावत भाटी ८८
मीर इसमाल १७२
मीरजा मुहमद अमी १३०
मीरजी मेहमद अमीमीया १५०
मीर सकार दो. ७३
मीरसफा १०६

मु

मुकंददास किसनसिंघोत राठौड़
दो. ३०२
मुकंददास भांणोत राठौड़ दो. ३०७
मुकुंदसिंघ माधोसिंघोत हाडो १७३,
१७६
मुकंदसी किसनसिंघोत राठोड़ २७७
मुकलस खांन १७४
मुगराजसी ६३
मुगल लखणीयां २४२
मुगल खांन १२१, १२२, १३
मुगलखांन बलोच दो. ८
मुगलखांन समांयलखांन बलोच ११८
मुगलखांन सरोई १२०
मुथरादास राठौड़ दो. २०६
मुदफरखां पातसाह ४२, ७७, ७८, ८६
मुदफरखांन मदा री बलोच ११६
मुदफर हुसेन १७१
मुरादबगस साहजादा १७०, १७६
मुरार खेतावत जोसी श्रीमाली ४८१
मुरार राठी दो. ३११
मुरारदास गोयंददासोत मेड़तीया राठौड़
१७८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुलवाणी सोढी ३३
मुहड़ ठाकुर सोनावत चारण ३६७
मुहमद अमी मुगल १३०
मुहमदखां विहारी ७३
मुलराज सोलंकी ५, ६, ७, ८

मू

मूला कूंपावत सींवड़ प्रोहित ३३४, ३४६, ४७६, ४८०, ५४६
मूला प्रोहित ५२३
मूलो हुल ५३६
मूलो नींबावत राठौड़ ५५
मूलो नींबावत भाटी ६४

मे

मेणराज चंड ३११
मेघराज ७३
मेघराज उरजनोत ऊहड़ १७६
मेघराज किसनावत आढा ४८४
मेघराज केवल रौ ब्रा. ४८२
मेघराज गेहावत रतनुं २४२
मेघराज डूंगरसी २४२
मेघराज देवल ११८
मेघराज भाटी दो. ३५१, ३५२
मेघो सांगावत राठौड़ दो ३४१
मेघो सीवराजोत लहुवा दो. २२
मेघो चौहाण दो. ५६
मेघौ पतावत चारण दो. ३५१
मेघौ भैरूदासोत ५६
मेरो आपा ४६६
मेरो देवीदास रौ राठौड़ दो. २१६
मेरो सीसोदीयो २७, २८, २६, ३८७
मेहका सोलावत सिंढाइच दो. ३५३
मेहमद मुदाद उमराव ११२
मेहर १८२
मेहरात मेर ५३३
मेहराता चीता मेर ५३६
मेहा ६४
मेहा ऊहड़ ४३६
मेहा दुसलोत वीठु २४२
मेहा रोहड़ीया बारट ३६६
मेहाजल ५३
मेहो रूपा रौ प्रोहित दो. २६७
मेहौ रावजी ४७
मेहौ डूंगरसोत खिड़िया ८२
मेहौ सुरजनोत चु० १८५
म्हेमंद पातसाह ५२
म्हैरा कुंमार दो. ३१२

मैं

मैंहद झाला ८
मैंहद कालर दो. ३३७

मो

मोकल कचरोत रौ प्रोहित दो. २७२
मोकल गंगादासोत थाथीया राठौड़ ८४
मोकल बारट ३६६
मोका मांडणोत धधवाड़ीया दो. ११२, १४०
मोटस सारंगोत मीसण २३६
मोटाल मांडणोत खिड़ीया दो. १११, १६७
मोटौ जोगं रौ राठौड़ ५६, ६०
मोटौ तेजावत आसीया ५५१
मोणदास जैंतसीयोत ४७८
मोणदास जैंतसीयोत प्रोहित ४८०
मोलण पंवार दो. ११५
मोहण किसनदासोत प्रोहित दो. ११०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोहणदास उदैसिंघोत राठौड़ ७५
मोहण नाई १८५
मोहणदास पीपाड़ो दो. ३०५
मोहणदास माधोदासोत घघवाड़ीया
४८७ दो. ११२, १६४
मोहणदास सूजावत प्रोहित दो. २७१
मोहणदास हरदासोत भाटी दो. ३०७
मोहणसी पड़ीहार ३
मोहिलांणी (राव चूंडारी बेर) २५,
३८५
मोहील उडीट ३८५
मोहैप पवार ३८७

र

रंभावती हाड़ी (हाडा सूरजमल री बेटी)
५३, ५५
रजु बाहदर १११
रणधीर कोभावत २६३
रणधीर सुराणा दो. ११६
रणमल अणदोत पुरणायचा आचारज
प्रोहित ३०२
रणमल सुराणा दो. ११६
रणवीर दो. ११६
रतन केसरीसिंघोत भाटी १४२
रतन गोपालदासोत राठौड़ १७८
रतन पिराथदासोत भाटी १८०
रतन महेसदासोत राठौड़ १२६., ३७१
१७५
रतन रायमलोत राठौड़ दो. १११
रतनसी ५५
रतनसी ८७, २३१
रतनसी ऊदावत राठौड़ ५२३
रतनसी करमां रावल री राठौड़ ५५२
रतनसी चो० १३६
रतनसी खींवावत राठौड़ ५६, ६३, ६६,
७०, ४६५, ४६८, ४६६, ५४३,
५५१, ५५२
रतनसी डूंगसीयोत आढा ५५०,
दो. १११
रतनसी दूदावत राठौड़ दो. १०६, १८५
रतनसी देदू री सांदू ४८७
रतनसी पीथा री भाटी ८८
रतनसी प्रीथीराज री बेटी) ३, ४
रतनसी भाटी दो. ६४
रतनसी म्हैकरणोत चांपावत ८४, ८७
रतनसी राठौड़ ४६५, ५४२
रतनसी सेखावत ५५
रतनसी स्यामदासोत भाटी १८१
रतना चाचावत संढायच २५४
रतना चीता री ५३६
रतना मेरडत ४६५
रतनावती बाई (मालदे री बेटी) ५२
रतनु रामसिंघ दो. १११
रतनो गांगावत सोहड़ दो. २६५
रतनौ जगौ दो. ७१
रतनौ डाहाखत मीसण चारण दो. १०६,
१८५
रतनौ रावलोत प्रोहित दो. २६६
रतो अभै री ५६
रतो पा० दो. ५६
जगहटरला गोयंदोत २४२

रा

राइचंद सुरतांणोत प्रोहित १०७, ११०,
१५२, १६३
राइमल खेतावत प्रोहित २८५
राइसल राठौड़ दो. ५२
राईसल राजावत प्रोहित ३१०
राईसिंघ २८६
राघाईच (मूलराज री भाई) ८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रागो सेहलोत १०१
राघव ५३
राघवदास पा. ११३
राघवदे वरसलोत ऊदावत राठौड़ ५६
राघो केसोदासोत साहाणी १८३
राघो कोभावत जैतमालोत दो. २७२
राघो नरणोत प्रोहित दो. २७१
राघो महेस री दो. १३८
राघोदास ३०४
राघोदास किसनावत प्रोहित ४८०
राघोदास पंचोली ११४
राघोदास महेसोत दो. ११०
राघोदास सादुलोत अबदार चौहांण १८३
राघोदास सुरतांणोत भाटी १४१
राघोदास हुल दो. १८१
राघोसिंघ मोजौतेज राठौड़ दो. २०७
राजकंवर (मालदे री बेटी) ५३
राज डंगो दो. ३६
राजधर सीहावत सोहड़ दो. २६५
राजसिंघजी १०८
राजसिंघ खींवावत राठौड़ १०१, १२४, १२५, ४६६ दो. ७४, ७५, ७६
राजसिंघ घड़सीहोत राठौड़ ६२ दो. ६६
राजसिंघ दयालदासोत भाटी दो. ३०७
राजसी परतापमलोत रोहड़ीया बारठ दो. ११४
राजसिंघ भगवानोत राठौड़ १८५
राजसिंघ महेसदास राठौड़ १११
राजसिंघ राघोदासोत राठौड़ २७८
राजसिंघ राठौड़ १०६, ११०, १४४
राजसिंघ विसनदासोत राठौड़ ११५
राजसिंघ वेणीदासोत भाटी दो. ३०६
राजसिंघ सांवलदासोत राठौड़ ११४
राजसिंघ सादुलोत दो. ११०
राजसिंघ सूरजमलोत राठौड़ १३२, १३८, १४३
राजसी अखावत राठौड़ ४१८
राजसी अखावत रोहड़ीया बारहठ २६८, ४८८
राजसी परतापमलोत बारहठ २५४
राजसी प्रिथीमलोत रोहड़ीया वारठ दो. १४१
राजसी भाटी दो. ६४
राजसी सादुल री दो. १३८
राजसी सूजावत भाटी दो. ६३
राजसींघ सुराणा दो. ११६
राजा उदीत प्रोहित ५४४
राजा चोहथोत सीवड़ प्रोहित ४७८, ५४३
राजा देला दो. ३६
राजा सीवड़ प्रोहित २३६
राजौ अखई री सींढायच चारण दो. ३५१
राजौ उदावत ३३४
राजो देवराजोत राजावत ३३
राजौ पातावत भाटी ५४४
राजौ वालवतां प्रोहित ७८
राजौ मांनौ री सोहड़ दो. २७४
राजा अमरसिंघ कछवाही १७४
राजा आसकरण भारमलोत ६२
राजा उदैसिंघ ७६, ८३, ६२. १०२, १६३. २३७, २३६, २४०, २४१, २५८, २८७, ४८१, ४८३, ४८७, ४८८, ५२४ दो. ३१, २२१, २७४
राजा करन बीकानेरीयौ १४३, १४४
राजा काछेला ४६४
राजा गजसिंघ ६५, १०३, १०५, ११०, १११, ११५, ११६, १२४, १६३, २५४, २६२, २६८, ३०४, ३८६,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३६०, ४००, ४८३, ४८६, ४८६, ४६१, ४६६ दो. ७, १०, ७३, ७४, ७७, ८८, ६२, ६५, ११४, १४१, २२१, २६५
राजा जगनाथ कछवाहा ४७८
राजा जसवंतसिंघ १२३, १६३, १७०, १७१, १७५, ३३५, ३४१. ३८६, ४००, ४७६, ४८४, ४८६, ४८६. ४६२, ४६६, ५४८ दो. ७, ७७, ८६, ६२, ६५. ११४, १६६, १६८, २२१, २६८, ३१४, ३२२,
राजा जैंसिंघ १२६, १३०, १३५, १३६, १३७, १३६, १४६, १५०, १७०
राजा दशरथ २
राजा देवसिंघ बुंदेलौ १७४
राजा देवसिंघ भारथसाह रौ १७४
राजा पुरूरवा दो. २६०
राजा प्रथीराज चहुवांण ३८६
राजा भींव ६५, १०८
राजा भींवदे सोलंकी ३८६
राजा भीम अमरावत सीसोदीया १०६, ११२ दो. ७३
राजा भोज दो. २१५
राजा मानधाता दो. ३७, ४१
राजा रथ २
राजा राजसिंघ १२८
राजा रांमदास उदावत कछवाहा दो. ७३
राजा रायसिंघ बीकानेरीयो ६७, ६८, १६३, १७१, २१६, दो. ७, २८, ३१, ३२
राजा रायसिंघ भींवोत सीसोदीयो १७२, १७६
राजा रुघनाथ १७०
राजा रुघनाथ दीवांन दो. ६४, ६५
राजा रूपसिंघ दो. ३००
राजा वरसिंघ १७३
राजा वामदेव दो. १५
राजा विक्रमादीत बांमण १०७ दो. ७४
राजा वीकमादीत १७५
राजा सिवारांम १७३
राजा सुजांणसिंघ बुंदेला १७३
राजा सुरजांणसिंघ १७६
राजा सूरसिंघ ७७, ११०, १६३, दो. १२५
राजा सूरजसिंघ ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ६६, १०२, १०३, १०५, १०६, १०८, ११०, २४१, २८७, २६२, २६३, ३३५. ३८६, ३६०. ४००, ४१८, ४३६, ४८५, ४८७, ४८८, ४८६. ४६१, ४६६, ४६८, ४६६, ५४४, ५४८, ५५४,
राजा सूरजसिंघ दो. ७, १०, ७३, ७५, ११३, १३६, १४०, १५२, १६४, १६७, १६८, २२१, २४२, २६६, २६७,
राजा अमरसिंघ १०३
राणा आसकरण ५२
राणा उदयसिंघ ४८, ४६, ५२, ६०, ६६, ७०, ६५ दो. ५६, ६०, ६६
राणा करण १११
रांणा करमसी जोगा रौ दो. २१६, २१८
राणा किलग्राणदास ७७ दो. २२०
राणा कुंभा २६, २६, ३१, ३२, ३५, ३६, ३७, ३८७, ३८८, ४६४
पड़िहार जेराल राणा ३८
रांणा जैमल लूंकावत दो. ३४८
रांणा जोगो देवीदास रौ दो. २१३, २१८
राणा टोहू ईंदा ३११
रांणा डूंगरसी करमसी रौ दो. २१६, २१८, २१६, २७२, २८६, २८७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणा डूंगरसोत ४३
राणा देवीदास ३९
रांणा देवीदास बींजावत ३०१, दो. २१६, २१७, २१८, २६७, २६८, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७६, २७७, २८६.
राणा देवीदास विज्ञैपालोत ३०३
राणा पीथा ३१
राणा मडा जेतसोत ३९
राणो मालावत राठोड़ दो. २२१
राणा मोकल २६, २७, २८, २९, ३७, ३८५, ३८७
राणा सांगा ४२
राणी प्रतापदे १२३
राणी मनरंगदे कछवाई ९२
राणी लिखमी दो. ३१५
राणौ अखैराजोत राठोड़ दो. ५२, ५३
राणो चौहाण ४४३
राणौ जगनाथोत ६२, ६६
राणो भारमलोत रतनूं चारण दो. ३५३
राणो रूपोड़ पड़िहार दो. ३४२
राणो सुंदर पेमोत सींधल २८१
राणौ पंचायण ४४
राणौ मालावत राठोड़ ७५
रांणौ वीरमदेवोत राठोड़ ६६, ५८
राम अचलदासोत प्रोहित ५४३
राम खेडा रो दो. ६०
राम गढावत दो. ३०
राम चांदसीवोत भाटी दो. २९८
राम टीलावत ईंदो १८२
राम डूंगरावत जागरावल प्रोहित दो. १०९, २७५
राम टीलावत गूजरगोड़ दो. १५२
राम दासावत दो. २६८
राम धरमावत जगहठ दो. १११, ११९
राम पूनावत प्रोह्ति दो. २७१
राम माधोदासोत ४८१
राम मालदेवोत ७१ दो. ६
राम मुंहता ९४
राम मुरार श्रीमाली ब्रांहामण २५४
राम पींपाड़ो रजपूत दो. ३०५
राम रतनसी रौ राठौड़ ४९५
राम लेहावत गूजरगौड़ दो. १०८
राम सारदुलोत आढा ५५०
राम सांदु ८२, ४८६
राम हमीर रौ दो. ३
रामजी हरनाथोत ४७९
रामकरण रावत चहुवाण ४१
रामचंद गोईंद रो बारठ दो. २७६
रामचंद गोपाल्दासोत राठोड़ १४१
रामचंद गोपाल्ोत २५८
रामचंद डांवरोत दो. १९३
रामचंद डाबर रौ प्रोहित दो. ११०
रामचंद नरहरदासोत चांपावत राठोड़ १७७
रामचंद भगवानदासोत राठोड़ दो. २३
रामचंद्र मुंधड़ा १८८
रामचंद रायचंदोत भाटी दो. ३२३
रामचंद सांवल्ोत व्यास ५४७
रामचंद सादुल्ोत भाटी १८१
रामचंद सुजांणसिंघोत सीसोदीयो १७४
रामचंद सुरतांणोत दो. १३९
रामचंद सेखावत वालावत राठोड़ १८२
रामदास करन रौ बारठ दो. १८४
रामदास खेतावत प्रोहित ७८
रामदास गुंगो १८४
रामादास चांदावत राठोड़ ९६, ११३
रामदास चांपावत राठोड़ ९८
रामदास पांचावत अवदान चौहांण १८३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रामदास पीथा रो चारण दो. २७५
रामदास वैरावत ४२६
रामदास बांमण दो. ३३५
रामदास मांडण कविया ५४६
रामदास राठोड़ ११३
रामदे अजैसिंहोत तुवर दो. ६१, ३१२, ३१५, ३४८
रामपोरा कचरावत व्यास दो. ११४
रामसिंघ कचरावत मुठल भायल १८२
रामसिंघ गोपालदासोत प्रोहित ५४६
रामसिंघ जैमलोत राठोड़ दो. ३४२
रामसिंघ दलपतोत राठोड़ २७८
रामसिंघ पंचाईणोत भाटी १४२ दो. ८
रामसिंघ भाटी १४४
रामसिंघ राठोड़ १३०, १८५
रामसिंघ वीरमोत भाटी दो. ३२२
रामसिंघ सांवलोत मुंडा १८२
रामसिंघ सादुलोत दो. ११२, १४१, १६५
रामसिंघ सुजांणसिंघोत राठोड़ दो. १८७
रामो जैतमलोत उदावत ८२
रामो झांझणोत चहुवाण दो. २६४, २६५
रामो किसनावत मु० ११४
रामो खींवाड़ी ५६
रामो धरमसीयोत सांदू ४८७
रामो बरसलोत गौड़ दो. ३०४
रामो भैरवदासोत राठोड़ ६२ दो. ६५
रामो भैरवोत देवड़ा ११८
रामो मांगलीयो ८८
रामो मु० ११०
रामो रतनसीयोत राठोड़ ८४
रामो राठोड़ ७६
राय परमाणंद १२७
राय रिणधीरा २७
रायचंद जोधावत भाटी ८८
रायधवल नगवद्धावत २४
रायपाल १५
रायपाल जोधावत ४०
रायपाल सेवी दो. ३०
रायमल ८७
रायमल अखैराजोत राठोड़ ५७
रायमल खेतावत ४२, ३८६
रायमल जसवंतोत नरावत राठोड़ दो. ३३१
रायमल दूदावत राठोड़ दो. ११०
रायमल प्रोहित ६४
रायमल भाटी ६६
रायमल मांडणोत राठोड़ ४४
रायमल मालदेवोत राठोड़ दो. २१६
रायमल राजावत प्रोहित ४७८
रायमल सिंघवी १३०
रायसल दुजणसलोत राठोड़ ८७
रायसल महेकरण री चांपावत ८७
रायसल राजावत प्रोहित ४७८, ४८०
रायसिंघ १०२
रायसिंघ अमरसिंघोत १३०
रायसिंघ ईसरदासोत राठौड़ ६८
रायसिंघ चंद्रसेनोत ७८, ८६, १०१
रायसिंघ जेसावत भाटी ६८
रायसिंघ झाला ५५
रायसिंघ भरनीदासोत चांपावत राठौड़ ७३
रायसिंघ राठौड़ ८६
रावण दईत १
राव अखैराज ११७
राव अखैराज राजसिंघोत ११७
राव अखैराज रिणमलोत ३८
राव अमरसिंघ चंद्रावत १७५
राव अमरसिंघ हरीसिंघोत चंद्रावत १७४
राव उदयसिंघ दो. २७६
राव उदैसिंघ दो. ६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव उदैसिंघ जोधावत ३७
राव उदैसिंह (झाली सरुपदे रौ बेटा) ४८९, ४९१ दो. ५
राव ऊदौ सूजावत ४९८
राव कंवरो माणकराव रौ दो. ३५१
राव करन ७१
राव करण रिणमलोत ३८
राव करमसेन उगरसेनोत ३९०
राव कलौ ७१, ७२, ७८, ३८९
राव कल्यांणमल ६० ६५ दो. ५८
राव किलाणदास रायमलोत ७५
राव कीलांण दो. ६०
राव कानड़दे सोनगरा २६६, २६७ दो ३७
राव कांन्हा चूंडावत ३८५, ३८६
राव केलण २६
राव खींवो वरजांगोत राठौड़ २९२, ३४५, ३५५
राव गांगौ वाघावत ४१, ४२, ४३, ७६, ८१, १९२, २३८, २४१. २५४, ३१०, ३११, ३३४, ४१८, ४७७, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४८९, ४९० दो. २८, ३१, ३२, ४७. ४८, ३५०
राव गोईंद दो. २, ३, २९२, २९३, ३१५, ३४४, ३४५, ३४८, ३५०, ३५३, ३५४, ३५५
राव गोपाळदास मांडणोत ७७
राव चंद्रसेण ५२, ५५, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७२, ७३, ७६, ८०, ८३, ८७, १९२, २९२, ३८९, ४९५. ५३६ दो. ५, ६, ६६, २१५ २१९, २९९, २७६, २८६, २८८, २९४, २९५, २९६, २९७
राव चंद्रसेन सबलसिंघोत दो. ३५६
राव चरड़ो ३१
राव चांपो रिणमलोत ३८
राव चांवंडो लूंका रौ दो. ३५४
राव चूंडा २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७ ३८, २३६, २३७, ३०१, ३०३, ३०४, ३११, ३१२, ३१८, ३३५, ३८४, ३८५, ३८६ दो. १
राव जगमाल ७६
राव जगमाल रिणमलोत ३९
राव जगमाल लखणोत ४२
राव जगमाल लूंकावत दो. ३४८
राव जसौ दो. ४८
राव जैतामाल गोईंदोत दो. ३, ४, २९३, २९४, ३४९
राव जैमल दो. ३५४
राव जैमल वीरमदेवोत दो. १३९, १७६, १९७
राव जैसो दो. ४७
राव जेसी पुंगलीयो भाटी ५४, ६४
राव जोगाइत हमीरोत दो. ३५१
राव जोगो जोधावत ३९
राव जोधा ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४२, ६४, ७९, ८१, ८२, १९२, २३६, २३९, २४०, २४२, २९२, ३१०, ३११, ३३४, ३३५, ३४०, ३८९, ४१७. ४४८, ४६४, ४७८, ४८१, ४८५, ४८८, ४८९, ४९०, ४९३, ४९५ दो. १, २९, ३०, ३१, ३२, ३७, ११६, २१६, २१७, २१८, ३५४
राव डूंगरसी ८५, ८६, ८८, दो. ६
राव डूंगर रिणमलोत ३८
राव दूदौ जोधा रौ ३९, ४०, दो. ३७, ३८, ३९, ४१, ४५, ४६, ४७, १०८, १५२, १६५, १७५, १८४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव दुरगौ दो. ६०
राव दुरजणसाल ५८, १०५
राव दुरजणसाल हमीर रौ दो. २६२
राव नरबद सतावत ३२
राव नराणदास पातावत ६३
राव नरायणदास दो. ६०
राव नरौ सूजावत ४० ४१, ८५ दो. १, २, २६३, ३३३, ३३७, ३४४, ३५४, ३५५
राव पतौ घड़सीयोत २७२
राव पतौ नगावत ८३
राव पतौ बालौ ६४
राव पाता रिणमलोत ३८
राव बलु तेजसोत ६३
राव बाला भाखर ३८
राव बीका जोधावत ३६ दो. ४५, ४६
राव भांण कूंपावत ७७
राव भारमल जोधावत ३६
राव भोजो दो. ४७
राव मंडलीक ८६, ८८ दो. ६
राव मंडला रिणमलोत ३८
राव मनोहरदास १२१
राव माधोसिंघ हाडा ११५
राव मालदे ३७, ४२, ४३, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५६, ६०, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ७२, ७६, ८१, ८३, ८४, १६२, २३७, २३८, २४२, २४३, २५४, २५७, २८५, २८६, ३०३, ३१०, ३३४, ३४६, ३८६, ४७८, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२, ४८४, ४८७, ४८६, ४६१, ४६५, ४६८, ४६६, ५२२, ५४६, ५४७
राव मालदे दो. ३, ५, ४७, ४८, ४६, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६४, ६५, ६६ ११०, १२६, २१६ २५१, २५२, २५३, २६५, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २८६, २८८, २६४, ३०६, ३४८,
राव मोहणदास १२०, १२१
राव रतन हाडा ११५
राव रतनसी खींवावत ५४६
राव राघवदे सिहसमलोत ३२
राव राजसिंघ सुरतांणोत १०२
राव राणगदे ३८
राव राम ५५, ६७, ६८, ७०, ७१, ७८, ८२, ३८६, ४६७, ४७८, ४८६, ४६१
राव रामसिंघ ८२
राव रामदास ऊदावत ६३
राव रायमल मालेवोत ५५
राव रायसिंघ ८१, ८२, १०१, १३०
राद रायसिंघ चंद्रसेनोत ३८६, ४७८
राव रिणधीर सुरावत ३०
राव रिणमल (रिड़मल) २५, २६, २७, २८, २६, ३०, ३१, ३२, ३६, ३७, ३८, ८२, १४०, २४०, २४१, २५८, २६७, २६८, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३६२, ४३३, ४८४, ४६५ दो. १
राव रूपौ रिणमलोत ३८
राव लूंको खींवावत दो. ३४५, ३४८
राव बरजांग दुरजणसाल रौ दो. २६२
राव बरजांग पोकरणा दो. ३११
राव वरजांग भींवोत दो. ४३, ४४
राव वरसल प्रीथीराजोत ७८
राव वरसिंघ जोधावत ३६, ४०, ७६ दो. ३७, ३८, ३६, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७. १०६, १२८, १२६, १३६, १५१, १५४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव वीरमदे दूदावत ४२ दो. ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, १६४, १७५, १८५, १६८
राव वीरमदे वाघावत ३८६, ४८६, ४६१
राव वैंरसील चाचावत भाटी ४०
राव वैरा रिणमलोत ३६
राव सकतसिंघ १११, ११२, ४५०, ५३६
राव सगतसिंघ उदैसिंघोत ४६६
राव सतौ चूंडावत २५, २६, २७, २३६, ३८५, ३८७
राव सवलसिंघ प्रागदासोत दो. ३५६
राव सांगा लूंकावत दो. ३४८
राव सांगो दो. ३५४
राव सातल जोधा रो ३६, ४०, १६२, २४३। दो. ४२, ४३, ४४, ४६, ४७, २६२, ३५४
राव सारण दो. २६७
राव सिवराज जोधावत दो. २१८
राव सिंघ जेतसीयोत ६३
राव सीहो वरसिंघोत दो. १०८
राव सीहो सेतरांमोत ३७
राव सुरजन दो. ६०
राव सुरताण ६२, ६८, ६६। दो. ७०
राव सूजो ३६, ४०, ४१, ४३, १६२, ३४६, ३५०, ३८६, ४६५, ५१३, दो. १, २, ३२, ४३, ४४, ४६, २६२, २६३, २५४
राव सूरजसिंघ ३४६। दो. ७
राव सेखो सूजावत ४१
राव हमीर दो. ३
राव हमीर जगपालोत दो. २६१, २६२
राव हमीर जगमालोत दो. ३५१
राव हमीर नरावत दो. ३०, ३१, ३२
रावत अभीअड़ भींवड़ रौ ६३
रावत अभीयड़ भीमोत देवराजोत दो. ३५०
रावत करन हापावत दो. २१६
रावत किलांणदास हरदासोत दो. ३५०
रावत खींवौ वरजांगोत पोहोकरणा दो. २
रावत गोईंद रतनावत दो. ३४८
रावत चाचा ४७१
रावत जीव थलेचो दो. २६५
रावत जैतमाल दो. ५३
रावत डूंगो ४७०
रावत तीहणो करनोत दो. २१६
रावत तेजो दो. ६०
रावत नराईणदास ५३६
रावत पंचायण ७०
रावत पिंडत दो. ३४८
रावत भींवौ दो. ४, ५
रावत भोजौ गांगा रौ दो. ५३
रावत मांडणोत पींडत दो. ३४६
रावत माला दो. ३५१
रावत राघवदास सहससलोत ३४, ३८८
रावत रासौ ३१६
रावत राठोड़ रायबदे सहसमलोत ३२
रावत रिणधीर २७
रावत रिणधीर चूंडावत ३८५, ३८७
रावत लूणो ३३, ३४
रावत वीजो तीहणोत दो. २१६
रावत सगतौ सांगावत ६०, ६५। दो. ५६
रावत हापो जैतमालोत दो. २१६, २३७, २६६, २८६
राव तीडो छाडावत दो. २१६
रावल आपौ वरसिंघोत ६३
रावल आसकरण दो. ६०
रावत कला ३३६
रावत कानड़दे ३८८
रावल कांनड़दे दो. २१५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रावळ किलांणदास हरदासोत भाटी
दो. ३०६, ३५२, ३५३
रावळ गोईंद नरावत दो. ३५४
रावळ जगमाल मालावत ३६५, ३६६, ३६७। दो. ३४२
रावळ जैतमाल सलखावत दो. २१६
रावळ तेजसी दूदावत १०३
रावळ पता ३६५, ३६६
रावळ परताप दो. ६०
रावळ बलराम दयालदास दो. ३०२, ३०३
रावल् भारमल १३६, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५६, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३७१
रावल् भारमल जगमालोत १५३ ३६६,
रावल् भींव ५२। दो. ३०६, ३३३, ३३७, ३३८ दो. ३५२
रावल् मलीनाथ ३६६
रावल् मनोहरदास किलाणोत भाटी
दो. ८, २६८, ३००, २४, ३३२, ३५२
रावल् मालदे दो. ४, २६३
रावल् माला १६, १८, २१, २३, २४, ३६६। दो. २१६, २५३, २६१, ३४२
रावल् महेसदास १३६, ३५३, ३५४ ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५६, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६६
रावल् महेसदास पतावत ३५३
रावल् महेसदास भारमलोत १४२
रावल् मेघराज ५४, ६०, ८०, ८३, ३६७ दो. ५६, २२०, २६६, २७५
रावल् रामचन्द्र दो. २६८, ३००
रावल् रामचंद सोलंकी दो. ६०
रावल् लूणकरण ५५
रावल् वरसी दो. ३३६
रावल् वीदो ३५३
रावल् सबलसिंघ १४४। दो. ३००, ३०३, ३०४
रावल् समरसी १७५
रावल् सातल सोम दो. २१५, २१६
रावल् हरराज ५२, ८३, दो. ७, ८२६
रावल् हाण ६३
रावल् हापा ३६७
रावल् हापो नरसिंघोत ६३
रासधर 'धनेश्वर' सुराणा दो. ११६
रासल प्रीथीराजोत राठौड़ ७३
रासौ कंवरावत राठौड़ दो. ३१३
रासौ जगावत ईंदो ६६

रि

रिड़मल पेथड़ दो. ३३२
रिणछोड़ नीलकंठ २६२
रिणछोड़ बिहारीदास भाट २५५
दो. १६८
रिणछोड़दास बिहारीदासोत दसुंधी
दो. ११४
रिणधीर चूंडावत २६
रिणधीर राईसींघोत राठोड़ दो. ६६
रिणमल ४६, ६७, ७३, ८३, दो. ६६
रिणरायसलोत राठोड़ ६२

रु

रुग बारट ३६७
रुघनाथ भांणावत १४४
रुघनाथ भाटी १४४
रुघनाथ लिखमीदासोत राठोड़ १४१
रुघनाथ सादुलोत दो. ११०
रुघनाथ सुंदरदासोत राठोड़ १३६
रुघनाथ सुरतांणोत भाटी दो. ३०५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रूपचंद हरवंस कांनुगो दो. ७७
रूपा पूनावत पुरोहित दो. २७१
रूपा बांमण दो. ३२८
रूपा सांवलदासोत प्रोहित ४८०
रूपसी आसकरणोत राठोड़ दो. ३०६
रुपसी कवरावत रतनू दो. ३५२
रूपसी केलणोत भाट दो. २७७
रूपसी गोपालोत २६७
रूपसी चतरावत कनीया ४८८
रूपसी जगनाथ मु० ११६
रूपसी जगावत भाटी दो. ३०४
रुपसी बलदलोत कूंपावत राठोड़ दो ३०६
रुपसी सूजावत भींवोत राठोड़ १८०
रुपसोत भाटी ८६
रुपो राजा रो चारण दो. २७६
रुपो सांकर रो चारण दो. २७४
रुपो हमीरोत भाटी दो. ३०१
रूपौ ८४
रुपौ तोगावत प्रोहित दो. १०६
रुपौ सुजावत रतनु दो. १०६, १८६

रे

रेखो पीतांबर रौ प्रोहित दो. ११२
रेखो पीतांबर रौ व्यास दो. २१२
रेणायर मुहतां ३२, ३४, ३८८
रेप चाहैडोत रोहड़ीया बारेट ४८५

रो

रोहीतास वीदा रौ प्रोहित दो. २६८
रोहीतास सदारग समदड़ीयो मुहता ८६

ल

लखधीर वीठलदासोत राठोड़ १३८
लखमण केसव रो प्रोहित दो. २७२
लखमण नारणोत राठोड़ १०४
लखमण भादावत राठोड़ ६०, ६८ दो. ५६
लखमण भींवोत राठोड़ ८०
लखमण सांवलदासोत ‹ांमोत राठोड़ ६८
लखमण सादुलोत राठोड़ २८२
लखमणदास गोपालोत पिड़ीयार १४२
लखा जैतमालोत राठोड़ दो. २६५
लखा नांदणोत रोहड़ीया बारट ४८५ दो. १४०
लखावत सीसोदीयो ३०
लखौ ऊदा रो ३६६
लखौ ऊदैसिंघोत दो. १०७, १५२
लखौ चहुवांण दो. ३०१, ३०४
लखौ दुरजणसाल रो राठोड़ दो. ३४०
लखौ नाटणोत रोहड़ीया बारठ दो. ११३
लखौ नरा रौ प्रोहित दो. २७१

ला

लाखा करमसीयोत कनीया चारण दो. २८
लाखा दासावत काछेला चारण ५५१
लाखा नांदणोत रोहड़ीया बारठ ५४८
लाखौ फूलांणी जाड़ेचौ ५, ६, ७, ८
लाछां आहाड़ी (आहड़ा प्रीथीराज गांगावत री बेटी) ५५
लाछळदे कछवाही (रतनसी सेखावत री बेटी) ५५
लाडखांन चुतरावत मीसण दो. १८५
लाडखांन जैसिंघोत कूंपावत राठोड़ १७७
लाडखांन भैरुदासोत मा० १४२
लाडखांन मेघराजोत हुल १८५
लाडखांन रायसिंघोत सींघल १४२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लाडखांन सुरतांणोत देवीदासोत राठोड़ ४६१
लाडू सालत दो. ३३८
लाछो उदावत प्रोहित ४८०
लाछो किसनदासोत २५८
लाल परवत रो ३०४
लालचन्द भाटी १३६, १४२
लाला ७६
लाला पुंनसरोत रोहड़ीया बारठ दो. २७५
लालो भायल दो. २२०
लालो सुरतांण सुजावत ३११
लालो सुराणा दो. ११६
लालो ८६
लालो पातलोत मेर ४७१
लालो भाईल ७६
लालो मूलपसाव भाटी दो. ३०४
लालो मेर ५५३
लाहापा रसरीयां री जाट ५२४
लाहोरीगर ससतरो १७२

लि

लिखमा प्रोहित दो. ३३३
लिखमीदास ३६५
लिखमीदास इन्दरदासोत भाटी १८१
लिखमीदास कानुगो दो. ८८
लिखमीदास जसावत दो. १६४
लिखमीदास जोगीदासोत चांपावत राठोड़ १७७
लिखमीदास देवीदास री प्रोहित दो. २६६
लिखमीदाम भैरूंदासोत खिड़ीया दो. १११, १६७, १६८
लिखमीदास मेघराजोत २६३
लिखमीदास वीठलोत ब्रा० ५४४

ली

लीखमी रांणी (राव गोइन्द री दादी) दो. ३
लीला (वडावत री बेटी) २५
लीला मनांणी प्रोहित ३६५
लीलावती बाई (राव सकतसिंघ री बेटी) १११

लु

लुंका ४१
लुणकरण सेखावत ५२
लुणा १६
लुंभा चांदणोत खड़ीया ३७ दो. १०७, १२६
लुंभा रबारी ५२५

लूं

लूंका दो. ३५१
लूंको खींवावत दो. २६२, २६३
लूंभा मेघावत वीठू चारण दो. ३५४
लूणा १०१
लूणा भाटी १०५
लूणो दासावत राठोड़ ६४
लूणो भंडारी १०८ दो. ७५

लो

लोदीखां बाहावदी रो बेटो ११४
लोला भायल ४५७
लोंलो नोखावत सिंढाइच चारण दो. ३५४
लोहटां ७६
लोहरास खांन १७१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

व

वछराज दलपतोत राठोड़ १८५
वडोवेण २
वणवीर देवराजोत ३१३, ३१४
वणवीर धारावत देवल ११६
वरसल थलेचौ राठोड़ १२१
वरसल प्रिथीराजोत जैतावत राठोड़ दो. २७४, २८६, २८८
वरसल सांकरोत राठोड़ ८१
वरसल सांवलोत वांकुलीया प्रोहित दो. २७०
वरसल सिवराज रौ राठोड़ दो. ३१
वरसिंघ नेतावत राठोड़ ८६
वरसिंघ पीथावत राजगुर ब्रा. ५४४
वरसिंघ सोढा ५२
वसड़ो हरावत लाधौ ३०३
वसत बुकण भाटी वेरसीयोत २०
वसता भाखरोत बारट ३६६
वसतौ ग्रणंदा रो प्रोहित दो. २६६
वाकुलीयो बांभण २२८
वाघ जगमलोत राठोड़ दो. ६३
वाघ प्रिथीराजोत राठोड़ ७७, १०२
वाघ वीदावत सींघल १२६
वाघा राठोड़ ४३८
वाघा सीसोदीया ४३७
वाघौ ग्राघोलीयौ कानावत १८४
वाघौ को० १०१
वाघौ खेतसीयोत राठोड १०१
वाघौ सुरतांण रौ मेहडु ५५०
वाणोपाल लखावत पारीख दो. ११२
वांमदास पा० ३६१
वालीयो दो. ४१
वाहड़ सुराणा दो. ११६

वि

विक्रमदीत झालौ ३८८
विणो भाटी दो. ३०१
विजैपाल २
विजै वीरमोत राठोड़ दो. ३३५
विमलसी पटणी ७०
विसनदास मथुरादासोत ४८१
विसनसिंघ रामचंदोत भाटी १८०
विसनदास सांमदासोत दधवाड़ीयो ४८७ दो. ११२
विसनो केसा रौ प्रोहित दो ११०
विहारीदास ईसरदासोत राठोड़ १३८
विहारीदास किसनसिंघोत दो. १८१
विहारीदास कुसलसिंघोत २७६
विहारीदास केसोदासोत भादावत राठोड़ १७६
विहारीदास दयालदासोत भाटी १४२ दो. ८
विहारीदास राघोदासोत राठोड़ दो. २६८
विहारीदासजी राठोड़ १३८, १४३, १४४

वी

वींजो गदाधार रो श्रीमाली व्यास ५४७
वींजो भारमलोत राठोड़ ५२
वींजो मांडणराज दो. २१७
वींजो राठोड़ ४६
वीकमादीत ५५
वीको दो. ४१
वीको किलांणदासोत राठोड़ दो. ३०७
वीको नरावत प्रोहित दो. २१२
वीकौ मेर ४७०
वीजड़ वीमलां रा प्रोहित ३१६
वीजेरांम पिराग रौ व्यास ५४८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीठल गोपदोत भाटी १००
वीठल बांणदार १८४
वीठल भाटी दो. ३०१
वीठलदास गोपालदासोत राठोड़ १७७ दो. २९९, ३०५
वीठलदास सीघल राठोड़ दो. ७१, ७२
वीठलदास जैमलोत राठोड़ दो. ६७, ६८, ७०
वीठलदास भगवानदासोत राठोड़ दो. ३०६
वीठलदास भाखरसीवोत हुल १८४
वीठलदास भोगलावत दो. ११९
वीठलदास भाटी दो. ३३७
वीठलदास राठोड़ दो. ३०२, ३०३, ३०४, ३०५
गोडाता वीठो परवत रो ५३७
वीदा जोधावत ३९
वीदा वी० ४३१
वीदाधर किसनदासोत २५८
वीदो भारमलोत राठौड़ ४८
वीर सीघल २८६
वीरदास महेसोत २६७
वीरनाराइण पंवार दो. २१५
वीरम ३०४
वीरम ऊदावत चहुवांण ६३
वीरम कलावत राठोड़ ३१९
वीरम गौड़ ५४०
वीरम जोधावत भाटी दो. ३५५
वीरम देवावत मांगलीयो ६२
वीरम मांगलीयो दो. ६२, ६३, ६६
वीरम सलखावत १६, १७, १८, १९, २०, २१
वीरमदे ४३
वीरमदे उदांवत ५६
वीरमदे तुंवर दो. २९१
वीरमदे मुकंददासोत ऊदावत राठोड़ १७७
वीरमदे मोहणदासोत राठोड़ १७९
वीरमदे रामावत भाटी ७०
वीरमदे वाघावत राठोड़ ४१, ३९०, ४८०,
वीरा अमरावत रो दो. २६८
वीरा नरवद रो चारण दो. २७५
वीरा हेमावत ३०१
वीरा आखा तेजावत दो. १११
वीरो ४५
वीरो खेतसी रो ब्रामण ५४४
वीरो भारमलोत राठोड़ दो. ५७
वीसलदे रायल दुदा रो ३२
वीसलदे वीरावत सींधल २८६
वीसा दुरजणसाल रो राठोड़ दो. ३४०
वीसा मांडणोत थेहड़ २४१
वीसो वणविरोत भाटी ६३

वू

वूलो महतो दो. २६५

वे

वेणीदास कलावत भाटी दो. ३०४
वेणीदास चुतरा रो खिड़ीया दो. १२९
वेणीदास चोपड़ा ४२०
वेणो मांडण रो चारण दो. २७६
वेरा करमसीयोत आसीया ४८७
वेरो जसावत राठोड़ ८४
वेलां मुंहता दो. ७४
वेलो खेतसी रो प्रोहित दो. २७२

वै

वैंकुठ जोसी दो. ३१५
वैरसल प्रीथीराजोत राठोड़ दो. २१९

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वैरसल प्रीथीराज जैंतावत राठोड़ २५५
वैरसी राणावत राठोड़ दो. ५२
वैरसी राणावत अखैराजोत राठोड़ ५७
वैरसी रायमलोत भाटी ६६
वैरसोल संकरोत भाटी ८३
वैरी जसावत चांपावत ८७
व्रिदावन राठोड़ १५३

श्री

श्रीदेव आचारज २५८
श्रीनिध सुराणा दो. ११५
श्रीमल साह जारोडै दो. ३६

सं

संकर गोपालोत प्रोहित दो. १०८, १५२
संकर तेजशीहोत बारठ दो. ११३, १६४
संकर दुरजनसलोत भाटी ८१, ८३
रतनूं संकर मैरावत ३३५
जोसी संकरदास ७७
संतो हमीरोत भाटी दो. ३०१
संम दो. ४१
संसारचन्द ३२१

स

सआर खंगार ११४
सकतसिंघ ऊदैसिंघोत राठोड़ ७३, ६५, ६६, ३६०, ४६८, ५५०
सकतसिंघ खेतसीयोत भाटी ११६ दो. ८
सकता उतरावत नारणदास री सीसोदीया १७६
सकतो राड़बरो ८०
सगता ताराचन्द सुराणा १८४
सगतावत बाकुलीया ऊजल ७६
सगतो धारावत दो. ३५१
सजनां (रावल हरराजजी वेर) ५२
सता लूणकरणोत भाटी ३०
सतीदास २५८
सतो चूंडावत ३२
सतो भानावत सोहड़ १८५
सदमन रूपसीहोत भाट दो. ११३
सदा ऊछतोत श्रीमाल ४८१
सदारांम गौड़ १७३
सपरसको (दारा गे बेटो) १३६
सबरंगदे मांगळीयांणी (कुंवर बाघो सूजावत री मां) ४१
सबरात मेर ४७१
सबलसिंघ दो. ३००
सबलसिंघ आसकरण पूरावत रो रूपावत १७६
सबलसिंघ उदैसिंघोत रोहणीयो मेड़तियो राठोड़ १७८
सबलसिंघ कांनावत राठोड़ दो. ३०७
सबलसिंघ किसनसिंघोत राठोड़ दो. ३०५
सबलसिंघ दयालदासोत भाटी दो. ३००
सबलसिंघ नापो राठोड़ १०६
सबलसिंघ प्रागदासोत राठोड़ १३८, १४१
सबलसिंघ बाघचन्द सीसोदिया १७३
सबलसिंघ राठोड़ ६५, १०८ दो. ३२३
सबलसिंघ सूरजसिंघोत राठोड़ ६४
समुरतो पता रो बारट दो. २७६
समुरसो ३११
सरणो सारंग रो दो. ३०
सरफदीन मुगल ६०, ६१, ६५ दो. ६३, ६४, ६५, ६७, ६८, ६६
सरूपदे झाली (झालै जेता री बेटी) ४७, ४८, ५५, ६५
सरुपदे झाली दो ५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सलखा १५
सलेम दो ५७
सलेमखांन २६
सलेमास साहजादा १७०
सल्हैखान ४०
सहपाल बाघउत ४२
सहवाजखांन कांबोलीयौ ६७
सहलो हरीदासोत दो. ३०७
सहसकरण ७१
सहसो अखावत चारण दो. २७४
सहसौ तेजसीयोत राठोड़ दो. ५२, ५३,
११२, २१२
सहेसमल चूंडावत ३२
सहेसा सीनल कुतब वा: २८५
सहैवाज खांन तुरक ४३१

सां

सांईदास कांधलोत सोलंको १८५
सांईदास कीसनै रौ दो. २९
सांकर बारट ४१८
सांकर नेतसीयोत बारट ४८४
सांकर भैरावत नरबदोत वोकसी
चारण २९३
सांकर रांमसिंघ रौ प्रोहित दो. ११३
सांकर सुरावत भाटी ४४, ४८, ५७
सांकर हरहरा रायगुर ब्रा० २६६
सांकर हींगोलखत रतनुं दो १११, १६५
सांकरदास माणोत राठोड़ १०५
सांगा दूदावत प्रोहित दो. २६७
सांगा सूजावत राठोड ४२७
सांगो उरजनोत राठोड़ ७३
सांगो भोजावत राठोड़ ६० दो ५९
सांगो रणधीरोत राठोड ६२ दो. ६६
सांगो हरखावत दो. १०७
सांदु दूदावत लाधौ गाडण ३४९
सांधो मोकलोत दो. ४८
सांमसिंघ गोईन्ददासोत राठोड़ दो. ३०७
सांमीदास हुल दो. २०६
सांमो कुंभावत भाटी दो. ३०७
सांमो जोगा रौ प्रोहित दो. १०७, ११३,
१४०, २१२
सांवत १
सांवत देदा रो चारण दो. २७४
सांवत मुंहता ३९३
सांवतसिंध पतौ तोगौ सूरावत देवड़ो ७८
सांवतसिंघ माला रौ सांदु दो. ११३
सांवतसी आसकरणोत सांदू दो. १९७
सांवतसी नारायणदासोत सोनगरो १०४
सांवतसी नाहरखांनोत दो. १८१
सांवतसी प्रोहित ८१
सांवल १०२
सांवल झांझणोत भैरुदास दो. १२८
सांवल तूंवर १८५
सांवल नंदावत चारण दो. ११३
सांवल पंवार दो. ११५
सांवल भाटी १०२
सांवलदास २६० दो. १३९
सांवलदास उदैसिंध राठोड दो. ६४
सांवलदास कांनावत दो. १४१
सांवलदास कान्हडदासोत दो. ११२
सांवलदास किलाणदासोत राठोड़ ९४
सांवलदास दानावत दो. १६४
सांवलदास भाटी ५४५
सांवलदास मांनावत सींधल
सांवलदास राणावत राठोड़ ९८
साँवलदास रासावत राठोड़ १०१
सांवलदास लिखमीदासोत प्रोहित
दो. १०७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सा

साजण ३६५
साजण भींव रौ २४३
साजण मेरावत रोहड़ीया बारठ ५४८
साजण सीवावत चौहाण १००
सातल रांमदरसोत ३३४
सातल सोम १५
साढा सुमाणोत राठोड़ दो. ३४०
सादत बेग दो. ७४
सादा मेघावत बीठु चारण दो. ३५४
सादूल १२३, १८२
सादूल आसावत प्रोहित दो. २६८
सादूल गोपालदासोत राठोड़ दो. २९८
सादूल चकरपांण व्यास दो. १३९
सादूल जैमलोत राठोड़ दो. ६७, ६८
सादूल पंवार ११४
सादूल बैरसालोत थलेचो राठोड़
दो. ३०१, ३०४
सादूल महेसोत राठोड़ ७२
सादूल मानावव भाटी ७८
सादूल मालदेवोत पंवार ११२
सादूल राठोड़ ४७७
सादूल रामसीहोत सुलसीहोत राठोड़ ६९
सादूल रायसलोत डूंगरोत राठोड़ ७२
सादूल रूपा रौ ३०३
सादूल सूजावत राठोड़ दो. ३०८
सादूल सोर भाटी ८९
सादूल हमीर रौ प्रोहित दो. २७३
सादूलसिंघ मालदेवोत पंवार ९६
सादो अमराबत केलण भाटी दो. ३०४
सादो भींवा नांदावत रौ सांहाणी १८३
सारंग ईसर रौ दो. ३०
सारंग गिरधर रौ प्रोहित दो. १०९
सारंग जैतमालोत २५८
सारंग ढुंढा ४६६
सारंग नरहरदासोत ईंदो १८२
सारंग सोनावत सोहड़ चारण दो. २७४
सारंग हींगोलावत धांधल १८२
सारंगधर २३८
सारण ६९
सायर (राव रिड़मल रो बेटो) ३८७
सालण सुरांणा दो. ११५
साहजहां पातसाह ११०, १११, ११५,
१२३, १२६, १२८, १३०, १३३,
१४४, १५७, १७० दो. ७७
साहण खालत दो. ३३७
साहणी ८९
साहणी करमो जेसावत रौ ८१
साहणी रायसी पांचावत ९३
साहबखांन केसोदासोत राठोड़ ११६
साहबखांन मनोहरदासोत राठोड़ दो. १९८
साह राणौ दो. २६३
साहिबदी पातसाहि ३

सिं

सिंघ रूपसीवोत भाटी १०८
सिंघ १
सिखरो चौ० दो. ७
सिवदास सोभावत वणसूर २८७
सिवराज जोधावत ३९, ५८
सिवराज सुराणा दो. ११६
सिवराम गौड़ १७६
सिवराव जोधावत री बहू ४५८
सींधराव बोडाणां ८६
सींधल ४९३, ४९४
सींधल हुलां ४५५
सीधां बांमण पोकरणा दो. ३१२, ३१४
सीधण खेतसीयोत राठोड़ ५८ दो. ५७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीधप जोसी दो. २७२
सीवो मोकलोत राठोड़ दो. ५२. ५३
सीवदे सांकरराय रायगुर ब्रा० २६७
सीवराज ३१
सीवराज देवराजोत राठोड़ दो ३१
सीवराज मुंहता दो. ३०२
सीवा कलावत राठोड़ दो. ३४८
सीवाघो अमरावत १०४
सीवो नरवद रो राठोड़ दो ३४७
सीलारखां ६३
सीहा आचारण ब्रा० ३६५ दो. ३०
सीहा चादणोत खड़ीया ३७ दो. १०८
सीहे रामदासोत भाटी दो. ३३८
सीहो गोईंदोत सांवतसी भाटी दो ३०१
सीहो चंदरावत दो. १७६
सीहो पीथावत प्रोहित ४८०
सीहो वरसिंघ री दो. ४६, ४७, ४८, १७६
सीहो सेतरांमोत राठोड़ ५, ६, ७, ८, ६,

सुं

सुंदर खींवावत जगहट दो. ११२, १८५
सुंदर गुणेस री २४३
सुंदर भाटी १२८
सुंदरदास जैमलोत मुंहता १२६, १५६ दो. ३२३
सुंदरदास नराइणदासोत राठोड़ ११६ १४१
सुंदरदास प्रथीराजोत राठोड़ २८२
सुंदरदास प्रोहित ३४४
सुंदरदास माधोदासोत धधवाड़ीया दो. ११२, १६५
सुंदरदास राठोड़ ११५
सुंदरदास सूरसिंघ नरसिंघदासोत राठोड़ ६६
सुंदरदास सूरसिंघ रामदासोत राठोड़ ६६
सुंदरा २८६

सु

सुकरात १५०
सुखमल सा० ११०
सुखमल सी० ११८
सुजानसिंघ केसरीसिंघोत राठोड़ १८२ दो. ३०५
सुजाणसिंघ भगवांनदासोत राठोड़ ४६८, ४८६
सुजाणसिंघ रायसिंघोत राठोड़ ११५ दो. ३०७
सुजाणसिंघ वीठलदासोत चंद्रावत १७४
सुजाणसिंघ सुंदरदासोत भाटी १८१
सुजाणसिंघ सूरजमलोत सीसोदीयो १७४ १७५
सुजो सांवल री पंवार १८३
सुपीयारी सांखली (नरसिंघ री बेर) ४६३, ४६४
सुबरत मेर ४७०
सुरतांण गांगावत डूंगरोत राठोड़ ५७
सुरतांण केसवदासोत राठोड़ दो. ६६ ७०
सुरतांण खेतसीयोत राठोड़ ३१२
सुरतांण जालप री बारठ दो. ३५०
सुरतांण जैतसीयोत राठोड़ ४६८, ४६६, ५४८
सुरतांण जैमलोत मेड़तीया राठोड़ ३८६ दो. ६६, ७०, ७१, ७२, १०६, १११, १६५, १८५, २१२
सुरतांण दुरजणोत भाटी ८७, ८८
सुरतांण देवीदास रो प्रोहित दो. २७०
सुरतांण नेतावत भाटी ८८
सुरतांण बेग १३६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरतांण भाटी ३१०
सुरतांण भींवोत राठोड़ १८०
सुरतांण मानावत भाटी ९६, ९९
सुरतांण सौ. दो. ३०५
सुरतांण हाडा ५३
सुरदेव पंवार दो. ११५
सुरनर नोरतोत को० १००
सुरा अचलावत खिड़ीया चारण
दो. ११०
सुराचद ३७
सुरो कलावत दो. १६५
सुलतांन म्हेमद १३४, १३५

सू

सूजा धना रो प्रोहित दो. २७३
सूजा प्रोहित दो. २७१
सूजा मांडणोत राठोड़ दो. ७
सूजा साहजादा १३५, १७०
सूजा हाडा ५४४
सूजौ कलेवचां भाटी दो. ३०१
सूजौ गंगादासोत प्रोहित ७९
सूजौ तेजसीहोत राठोड़ दो. ६०
सूजौ बालीसौ ४८, ४९, ५०, ५१, ५२,
६०, ६५
सूजौ भैरवदासोत भाटी ९९
सूजौ माधा री प्रोहित दो. २७१
सूजौ मेर ४६५
सूजौ वरजांगोत ईंदो ६६
सूजौ हरदासोत सिवराजोत राठोड़ ११४
सूरजदे कछवाई (राजा गजसिंघरी बेर)
१११
सूरजमल किसनावत भाटी ८८
सूरजमल केलणोत भाटी दो. २९५, २९६
सूरजमल खींवसोत सोनगरा १०५
सूरजमल खींवावत राठोड़ ८९
सूरजमल जैतमालोत राठोड़ ९७
सूरजमल जैमालोत चांपावत राठोड़ ९७
सूरजमल प्रीथीराजोत राठोड़ ७१
सूरजमल सिवराम गौड़ १७३
सूरजमल हाड़ा ५५
सूरदास दधवाड़ीयो ४८७
सूरदास वैणीदासोत ऊदावत राठोड़ १७७
सूरसाह पातसाह ५८, ६३, ६५, दो. ५८
२५२
सूरसिंघ गौड़ १७४
सूरा अचलावत खिड़ीया ३७ दो. १२९
सूरा धायभाई ४४९
सूरा मालावत राठोड़ दो ३४४
सूरा राठोड़ दो ३४६
सूरै नादावत भाटी दो ३३९
सूरो ३०४
सूरो गांगावत राठौड़ ६६
सूरौ गोंइदासोत प्रोहित ५४३
सूरौ चारण ५४१
सूरौ नरसौ रौ मेर ५२७
सूरौ प्रोहित दो. २६८
सूरौ माना री राठौड़ दो. ३४७
सूरौ रतनावत बरकंदाज सोलंकी १८३

से

सेख इमरायम ७२
सेखु साहजादो दो. २२०
सेखौ मेहावत प्रोहित दो. २७२
सेखौ परतापोत सीसोदीयो १०४
सेखौ सेहलोत १०१
सेयरौ दो. २२०
सेरखांन पातसाह दो. ११५
सेरखांन दो. ७२
सेरसा पातसाह पठाण ५६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सेखौ परतापोत १०४
सेहब्राजखां कन्हो दो. २१६
सेहलोत ५१
सेहसमल सुराणा दो. ११६
सेहसो उरजन पचाईणोत ६१
सेहसो रतनावत पेस १८४
सेहसो रांमावत राठौड ६२
सेहसो सांवलदास पंचाईणोत रो वांधल १८२

सै

सैद दो. ७५
सैद ग्रहमद १७१
सैद महमद वेग चांदवेग १७५
सैद मेहमद १७१
सैद मुदफरखांन सुजायतखांन रो १७५
सैद सीलार १७५
सैद सेरखांन १७३
सैद हासम कासम दो. ५७

सो

सो तीकम रो थाहादु रा पोतरा दो. २६
सोझल (भंवसेन री वेटी) ३८३, ३८४
सोढा बांमण ८१,३०५,३६६
सोढी (मालदे री राणी) ५६
सोढो दासावत जगहट ३५०
सोढो भाटी ११३
सोनगरी (राव जोधा री राणी) दो. ३७
सोमागदे रांणी ६६
सोभागदे रांणी कछवाही (गजसिंहजी री मां) १०५
सोम जैतमालोत सलखावत राठौड़ दो. २७१,२८६
सोम साहिबखांनोत राठौड़ १३८
सोमाईत ब्रामण ३६५
सोमो सोथड़ै लाघो प्रोहित ३१०
सोलंकणी ८,६

सौ

सौकर चाहौड़ोत प्रोहित दो. २७१
सौनग ८,१०,११,१२

स्

स्यामदास सुन्दरदासोत राठौड़ १४१
स्यामसिंघ गोयंददासोत राठौड़ १३८
स्यामसिंघ जसवन्तोत राठौड़ ११६

ह

हंसाबाई (पड़िहारां री वेटी) ३८
हंसांबाई (मालदे री वेटी) ५२
हदु बुरहड़ोत प्रोहित दो. २७०
हदौ कान्हावत दो. ३५१
हदौ केलणोत खीची ८०, ८३
हदौ खीची ८६ दो. ६
हदौ चरवादार सोलंकी १८३
हदौ चौथ रो बीठू दो. १६५
हदौ बागड़ीयो १८२
हमजौ तुरक ६२ दो. ६६
हमीर ३६६ दो. २६१
हमीर ऊदावत वालावत ६२
हमीर कुंभावत राड़वरो ८०
हमीर देईदासोत राठौड़ १४१
हमीर नरावत ४१
हमीर पुनावत ग्रासीया ३०४
हमीर मांना रो राठौड़ दो. ३४७
हमीर मालावत राठौड़ दो. ३४०,३४४
हमीर राहड़ दो. ३००
हमीर संकर रो भाटी ८७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हमीर सीहावत अखैंराजोत राठौड़ ५७
हरकिसन पा० १८६, १८८
हरखवन खेचखन जोगी ४८९
हरखा रतनावत खिड़या ५४९
हरखा सीरवी ३९४
हरखो गांगावत प्रोहित दो. २७२
हरचन्द मुंहता १३९ दो. ३२३
हरचंद राजसिंघोत राठोड़ दो. ३०२
हरचंद सी० ३९३
हरजां कलावत २३९
हरजी किसनोत ४७९
हरजी जनावत व्यास ५४७
हरदास खीदावत म्हैड्डु चारण दो. ३५३
हरदास राघोदास री ४८१
हरभा माला लखमणोत आचारज प्रोहित २६८
हरमों सींधल ३८८
हरभु महैराजोत सांखलो ३३
हरम पीर सांखला दो १२, ३०
हरभूम मेहरजोत दो. ३०
हरराज रांणोत राठौड़ ११९ दो. ८
हरराजीयौ मेणौ ८९
हररांम गवाल री व्यास ५४७
हररांम गोइंददासोत राठौड़ दो. १४८
हररांम दमनोत दसुंधी दो. ११४
हररांम मदमन दौ दसोंधी दो. १९८
हररांम रूघनाथोत प्रोहित दो. १०९, १६४
हरराम सीरंग रा २३७
हरवंस दमा रौ ४८२
हरवंस मांणक भंडारी दो. ८७
हरी पाठक बीरांमण १८४
हरीदास गोपालदासोत राठौड़ १४१
हरीदास ठाकुरसीयोत कान्होत राठौड़ ५४६
हरीदास नरहरदासोत राठौड़ दो. ३०७
हरीदास नरा री प्रोहित ५४३
हरीदास नाहरखांनोत राठौड़ दो. १७२
हरीदास रांणावत मोहता १००
हरीदास राघवदासोत राठौड़ १२८
हरीदास लुणावत मेहडु ५५०
हरीभांण गौड़ १७२
हरीया माली ३९४
हरीसिंघ चांदावत राठौड़ ९८
हरीसिंघ बलुवोत राठौड़ १०४
हरीसिंघ रामचंदोत राठौड़ दो. ३०७
हरीसिंघ सकतसिंघोत भाटी १२०, १४२
हलसर राठौड़ ३३९
हसनकुली ६७

हा

हांसा हाडा ४४९
हाजी आलीफतैखांन ६३
हाजी इतबारी दो. ७३
हाजीखांन ५२, ६०, ६५ दो. ५९, ६०
हाजो धोराणीयौ ३८८
हाडी (सुरजन री बेटी) ६९
हाथी आसीया ५५१
हापौ किसनावत ३०२
हाफज नासर दीवान दो. ९५
हालो सुराणा दो. ११६
हासु १
हासौ सींघल ४२३, ४७५

हीं

हींगोलो अहाड़ो ३२, ३४, ३८८
हींगोलो नींबावत पातावत राठौड़ ८३
हींगोलो नेतावत राठौड़ ८१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हींगोलो राठौड़ ७२
हींगोलो वरसोत राठौड़ ८८
हींगोलो वैरसियोत राठौड़ ८४
हींगोलो सेहलोत १०१

ही

हीरवा जैतमलोत राठौड़ ३०२
हीरां झाली (झाला रायसिंघ री वेटी) ५५
हीरामणि किरपाराम गौड़ १७३
हीला काजावत रौ सीहा प्रोहित दो. ३०
हीसा रौ वीरम रौ दो. ४८

हे

हेमदास ऊगरो सुंदरदासोत मेड़तीया राठौड़ १७८
हेमराज अंणगो माटी दो. ३०१
हेमराज खींवा रौ बारठ दो. ३५०
हेमराज गोईंददासोत राठौड़ १४२, ३२५
हेमराज गोईंददासोत राठौड़ दो. ३०६
हेमराज गोगली दो. ३०२
हेमराज देवराज रौ सुराणा दो. ३६, ४१, ११६
हेमराज सूरा रौ प्रोहित दो. २६६
हेमा किसनाणी राठौड़ दो ३४१
हेमा सीरवी ४५४
हेमो दो. ४१
हेमो चौमावत रोहड़ीया चारण दो. २७५
हेमो मेहरजोत पंचोला रौ प्रोहित दो. २६८

है

हैईयानखांन अहैदी १०१
हैदरअली ११६
हैदरअली समीयांणी दो. ८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नामानुक्रमणिकाएं :

ग्राम, नगर, देश आदि

अं

अंगदवास ४०८, ४१८, १८१, ४६१
अंतरगढो दो. ३२०, ३२१
अंबहाड़ी ३५७, ३७०
अंबा री वाड़ी ३७८
अंबावास ४६ दो. २२२

अ

अईसा १६४
अखावास ८२, २४३, ३३७, ४०४
अखांबास दुधवर री ४६४
अखावास रूधोर री ४१४
अखीयां री वास ३१४
अघासर दो. ३२१
अचला जसड़ री वास १४१
अचला री खेत दो. १११, १६५
अजमेर १, २, ३, ४, २६, ३५, ४०, ४३, ४५, ५६, ५८, ६६, १०१, १०६, १०७, १०८, ११०, १११, ११२, ११४, १२७, १३२, १५४, १५६, १५७, ३८३, ४६६, ५०५, ५०८, ५०६, ५५४, ५५५, दो. ४१, ४२, ४४, ४५, ४६, ५१, ५२, ५३, ५४, ५७, ६०, ७४, ७५, १०२, ११६, १८४, ३५३.
अजासर ३३१ दो. ६, ३३
अटवड़ी ६१, ३७४, ४०५, ४०६, ४२६, ४४०, ५५६
अठखेड़ी १५२, १५५
अणंद पढीयां री वास १४१
अणंदपुर ३७, ३७२, ५५५ दो. ७३, ७४, ७८, ७६, ८७, १०१, १०२, १०७, ११०, १२०, १२६, २१३.
अणगरो ३३८
अणदोरो १०३
अणवाडो ६०
अणवाणी ३४३
अणहल वाड़ पाटण ५
अणीयालो दो. ४०
अनतवासणी ४०७, ४१६
अनहल २००
अनावास २५०
अबदार राधारी वासणी २२८
अमरकोट ५२
अमरचंपु ६६
अमरपुर ५५५
अमरपुरो दो. १०२, १२७,
अमरसर ५२
अरजीयांणो दो. २२२, २२७, २५५, २८३
अरटनड़ी २६२
अरटीयो २०१, २७०
अरटीयो खुरद १६६, २५१,
अरटीयो ब्रड़ो २५०
अरटीयो मोगड़ी ३७४
अरणीयालो १५६, २३५ दो. १६६
अरबद १
अरव ३७०
अरहटवाड़ो १०३
अरागीयालो २३६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अलतवो दो. ६१, ७४, ७८, ८०, ८१, ८३, १०८, १०९, ११२. १७६, २१३

अलहवास ४१०

अलुरै १४९

असमो दो. ३२०

असला ५.६

अहप १४०

अहमदनगर ४२, १४६, १४८, १५२

अहमदाबाद ७०, ९८, ९९, १०३, १४४, १४७, दो. ७०, ७१.

अहरोई १५२, १५५

अहनला चारणां री ३७७

अहीनला ३७७

आं

आंखल दो. २८०

आंगणवौबड़ौ २०६

आंत रा गुढौ दो. ३३

आंतरोली दो. १०३

आंतरोली सांगा दो. १७९

आंवझर ३६१, ३७०

आंवला दो. १०, ११, १७, २८

आंबा रो बाड़ौ दो. २२६, २३५, २४०, २७८, २८३

आंबावास ३३८

आंबेर १११ दो. ७०

आंवो ४०३, ४३४ दो. २८१

आ

आईची ९०

आईसां १६९

आऊ ३८०, दो. ९, १६

आऊवा १०४, ४२७

आकड़वास ७९

आकड़ावास २६५, ३७४

आकदड़ो ३७७

आकलड़ी (आकेलड़ी) २६७, २८४

आकलो खुरद ३३९

आकलो बड़ौ ३३७

आकहली (आकेहली) ५०३, दो १३३

आकीलो ३८२

आकेली ३००, ३७८, ५२१ दो. ६१, ९४ ९९, १००, २७८, २७९

आकोदीये दो. १२२

आकोधणी ३६६

आकोली खुरद दो. १७४

आकोली बड़ी दो. १६९

आखलावास दो. १४८

आखली बड़ी ४२२

आगरा १८, ५६, १०३, १११, ११५, १२६, १२८, १३०, १३२, १३३, १३४, १३५, दो. ५६, ५८, ७०,

आगेवो ७४, ५०१, ५१०

आगोलाई १०३, ३०८, ३१०

आचीणो ३३६

आचीणौ-मांडपुरीयौ ३८२

आछेजाई दो. १६७

आटरड़ १९८, २६३

आठेवाली ३८०

आणदपुर ५४९ दो. १२८

आथण २४३

आनोली दो. ६२

आबू ३८३ दो. २१५

आयची २६१

आलणीयावास दो. २०१ २०७, २०८

आलाहवस ४२८

आलेचड़ी दो. २३१, २८५, २८८

आलोपौ १०३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

आल्हावास ९२, ४०४
आवणीयो दो. ३१९
आवणेसो दो. ३१६, ३४५
आवलेज दो. २८०
आवो ४१०
आसणीकोट १४०, १४३ दो. १
आसरलाई ७०, ७४, ४९५, ५०२, ५०७, ५१८, ५४१
आसरवा री वास ३०४
आसरन डौ ३४५, ३८२
आसरांनडो २१७
आसरावौ २९८, ३०२, ३७८, दो. २३०, २६७, २७८, २८२, २८३, २८७,
आसरावो वांमाण ३७८, दो. २७८
आसादो ३५४, ३७१
आसा री वासणी ३४४
आसायचां री चौरासी २३
आसायचां री वासणी २३४
आसायचां री वास ३०९
आसोढौ दो २७९
आसोतरो दो. २२१, २२५, २३६, २७९, २८१, २८२
आसोप ४०, ७७, ७८, १०२, १४६, १५४, १६४, १६९, १९०, १९१, १९७, २०४, ३५०, ३५२, ३८२
आसोर ८७
आहू दो. १०, ३३
आहोर दो २८०

इ

इकडाणी खुरद दो. २३१, २८८
इकडांणी बड़ो दो २३१
इकडाणी रावास दो २८५
इकडाणी - आसीयां री वास दो २७७
इकडाणी- बड़ोवास दो २७५, २८८
इकडाणी- बारेट रोहड़ीयां री दो २७६
इकडाणी- संडाईचां रो वास दो २७६
इसदु ३२३ दो ३३
इसदु- खेता री वास ३२३
इसदु- मेरवा री वास ३२३
इसदु- वरजांग री वास ३२३

ई

ईटाले २८५
ईटावो दो ९१, १०४
ईटावो- खीचीयां री दो १९५
ईटावो- खींया री दो ९१
ईटावौ- बामणां दो १९१, १९५
ईटावा- मोजु दो १९१
ईटावो- लाखां दो १९२
ईटावो- लाडखांन दो १९३
ईडर १२, ४१ ४२, ६०, १११ दो ६०
ईडवो दो ४०, १६७
ईंदराणो दो. २२३, २२७, २५०, २८३
ईंदावट बहलवौ १४५
ईंदावटी बहलवो १६४
ईंदावटो १५४
ईंद्रोखो २१३
ईदाणों ११०
ईदावड दो १३२
ईलगार खड़ीया १११
ईसर नांवड़ौ ३४४
ईसरू ३८० दो ९
ईसाली ४०३, ४१०, ४१९

उ

उखलीयो ५०४, ५२९, ५५६
उचीया हेड़ो २०६
उटांवर ३०८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उछतरावास २१५
उजीण (ऊजीण, उजीणी, उजेण) १२८
१३०, १३१, १३२ १३३, १३४, १५७,
१७०, १७५, १७६ दो ११५
उदरा २७७
उदीवास ३०८
उदैपुर ३६, १०७, १११
उदैसी कुवौ (ऊदैसी कुवां) ५०४, ५२७
५५६
उधरासर दो ३३२
उधरासर- पेथड़ जीवौ अचला रो वास
दो ३३३
उधरावास–पेथड़ भलो नाथा रो बास
दो ३३३
उधरासर- हरदास कांलाणी रो वास
दो ३३३
उधरासर- हे सराज करमणंद रो वास
दो ३३३
उनाली दो ७३
उमकली २८४
उमरलाई (ऊमरलाई) दो २२३, २२६,
२४७, २८३
उमरलाई- खुरद दो २३१, २७१, २८४
२८८
उमरलाई बड़ी दो २७१
उमांदेसरीयो ३४५
उलढां दो ११
उगीवास ३७१

ऊ

ऊंचा हेड़ो दो ११३
ऊंची हेड़ो दो १४०
ऊंचीया हेड़ो २५६
ऊंचीया हेड़ो खुरद दो १३७
ऊजलां दो ३५३, ३५४
ऊजलीयो ७६, २२८
ऊंट वालिया दो ३२१
ऊंठवाला दो २८०
ऊंठवाली दो ३२१
ऊणागांव ३७५
ऊतवण २६३, ३७५
ऊदलीयावास २५८, ३६३, ५५५
ऊदारीनाई ५५३
ऊदा रौ वास ३०१
ऊदेपुरौ २५७
ऊदेही १२७, १३६, १७०
ऊदेही पंचवार रौ १२६
ऊधरास दो. २, २६२, २६६, ३१७,
३५६
ऊधीयावस दो. ६२, १७४
ऊनावस खुरद ५२१
ऊनावस वड़ौ ५२०
ऊपांधीया री बासणी २३६
ऊलटां दो. २५, ३३, ३४
ऊसतरां ३४३
ऊहड़ां ३६

ए

एका दो. ३५७
अेहलांणो दो. २८०

ऐ

ऐटो दो. ३२१
ऐढो दो ३२०
ऐदलां २७२

ओ

ओडुवास दो. १०२, १२५
ओलवी ६१, २६०, ३७५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ओलादणा दो. ९९, १००, १५९, १६१
ओलो दो. ३२०
ओसियां ७८, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९६. १९९, २०४, ३१९, ३२०

औ

औरंगाबाद १४९

क

कंकसी दो. २२३
कंजणाऊ वड़ी ३४२
कंटालीया ४०३, ४०६, ४१०, ४७०, ४७६
कठमोर ५५५
कंठमोटर दो. १०२, १२५
कंवारड़ो २८५
कड़वड़ ७९, २०१, २२७, २४३
कड़वड़ रौ वास ७९, २३५
कचुंबरो ३७
कचोलीया ४७५
कछवाहां री वासणी दो. १३४
कटारड़ो २३३
कटाहड़ो ५१४
कणीवाड़ो दो २२२, २२९
कदेही दो. ३३९
कनवज ४, ५, ६, ८
कनोज ३
कपूरीयौ ३३०
कबा ३७७
कबोड़ीयो दो. २०९
कमठाई ३६३, ३७०
कमा रौ वाड़ौ ३७८
कमेड़ीया दो. ४०
करजा ३७०
करणां री वासणी २०७
करणीयाली २०२
करण ३८, ३२४, ३८१
करण नगावत रौ बड़ौवास ३२४
करनाल ३३,११३४
करनो ५५५
करमां रौ बाड़ौ २०२ दो. २७८
करमा गूजर रौ वास २२७
करमावास ७४, ९१, ४०३, ४१२, ४४२, ४४६, ५०२, ५०६, ५१८, ५४१, ५५६ दो. २२२, २२५, २२९, २३९, २६४, २८१, २८२
करमावासणी दो. ११४, ११९
करमसीसर ३२६
करमसीसर खुरद ३२६
करलाई ४९९
करसा दो. १९४
करसा गांव ३९४
करहेड़ो दो. ६९
करहो दो. १००, १५४
करांणी ३०३
करोलीयो ४११, ४६४, ४९९
करणां रौ बास रतनु रौ दो. २७७
कलरो (कलरू) दो. ४०, ७८, ७९, ८७, १०७, १०८, १४१, २१३
कला पींपाड़ा रौ बास दो. १०४, १९२
कलाऊ ३१५, दो. ३२२
कलाऊ रा वास ३१३
कलाली २०१, ३७५
कलावसीयो ३७१
कलावास ३५४
कलु दो. ११३
कलोऊनो दो. ३४
कवलली ३६५ दो. २७९
कवला ३७६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कवलीयां दो. १०७
कसरणा दो. ४०
कसवौ जेठ ४२२
कसवारीयौ २३०

कां

कांकडखी दो. ४१, १३०
कांकरालो दो. २२३, २२७, २८४
कांकरी रौ तलाव १४९
कांकसी (काकसी) दो. २२६, २८०, २८५
कांकाणी १३७, २२४ दो. ३४
कागडी दो. २२२, २२४, २२८, २४५, २८३
कांटीयो ३३७
कांठद्रहो २६५
कांठाड़ी दो. २७९
कांढण दो. ३२६
कांढीहलो दो. २७९
कांढ, ४५३
कांघलां री तलाई दो. २७६
कांपलीयो दो. २७९
कांर ३६७
कांरो दो. २०५
कांवलीया ३७, दो. १२८
काकराली दो. २५९
कांकरेचा २४९

का

काकरेची २५२
काकसी दो. २६५
काकाला २२२
काकेलाव २९७
कागनडो २९२
कागल ९२
कागली २५३
काठणी २६४
काठघरो ३७६
काठाड़ी दो. २२६
काढलीयौ ४३०
काणवो ५०५
काणाणा (काणाणे, काणाणो) दो २२५, २२६, २३३, २६३, २६५, २७७, २८१, २८२
काणीवाड़ो दो. २६६, २८५
काणुजा (कणुजे, काणुजे, काणुजो) ६९, ४९५, ५०५, ५०७, ५३६, ५३७, ५४५
काणोचो ३७२, ५३४, ५५५, दो १०१, २०२, १२२
कादु ६९, ४०४
कानडवास २६५
काना गोधा रौ वास ३०२
काना रा वास ४०७
काना रौ बाड़ो दो. २८५
कानावास १९८, २३८, २५४, २६०, ३७३, ४१७, ४८१, ४९१, ५५६ दो. २०२
कानासर ३६४, ३६९ दो. २२
कानुसर दो. २६
कानुढीयो ३१९
कानौटीयौ ३१८
कापड़ीयो ५५६
कापरड़ा री बसणी २५३
कापरडो ३८, २९२, २४६, दो. ३४
काबरो ५३६, ५५७
कावल १७२
कामड़ौ १९६, ३३०
कारो दो. १०६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कामड़ी खुरद १६७
कामा रौ वाडी २६०
कामथवास दो. १३०
कायलांणा ३२, ४६३, ४६४
काराडी ३७५, ३७६, ४१०
कारू ४१४
कारो नीयो ४०६, ४४३, ५०७, ५४७
कालड गांव २०
कालकी कलानी २७०
कालभर ४६६, ४६७, ५५२
कालणा रो वास दो. २८७
कालणी दो. ६२, २०७
कालणो दो. २२२
कालणो कान्हानड़ो दो. २२२
कालणो-पीड़ा ढढ दो. २२२
कालणो-त्रादु रो वाड़ो दो. २२८
कालणो-रसोलाव दो. २२२
कालणो-वेदु रो बाड़ो दो. २२२
कालव ४१५, ४६७, ५०५, ५३५, ५५६
कालर १२० दो. ३३७
कालरू दो. १५१
कालां दो. ६१७, ३२६
कालां रौ पादर २७६
कालाऊ दो. ३२१, ३२२, ३५०
कालाऊना ९ , २४५, ३७३, ५५५
कालागुढा १३६
कालाड़ी ३७८
कालाणा (कालाणै, कालाणो) दो. २४२, २५६, २६०, २६४ २७८, २८३, ३७८, ३७९
कालाणा रो वास दो. २३१
कालाणा रौ वास रतनुंवा रौ दो. २८५
काला बांमण दो. ३२०, ३५७
कालीजाल २२६
कालीभर ५५७
कालीयाठड़ौ दो. २०५
कालीया वासणी दो. २३०, २६६, २८५, २८८
कालुवां रौ वास ३०७
कालू दो. १२, ३२
कालू वड़ी ३६५
कालोकोट ४०७, ४१६, ४७१
कालो बड़गांव दो. ४०
कावलीयो दो. १०७
कावाणा ३७९
कासड़ो दो. ३१९
कासणीया दो. ४०
कासमीर ९२, १२५
कासली ४४
कासवो ४०६
काहथवासणी दो. १३६
काहु (गांव) ३१
काहुनी ३८८

कि

कितलसर दो. १७८
किराडु १
किसनगढ़ दो. ३००
किसनपुरी दो.१८१

की

कीभरी ३३३
कीटणोद दो. २२१. २२४, २३३, २८१, २८२
कीतपाल ३६१, ३७१
कीतलसर १५७
कीरखंड री दो. ९
कीरड़ा (कीरड़, कीरड़ं, कीरड़ो) ११८, १२०, १४३, १४४, दो. ३, ३३, १९२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीराड़ी ६२, ४०३, ४३३
कीराड्ड ३८३
कीलांणपुर ३३७, ३४० दो. ३५३
कीलांणो दो. २२१
कीहुषां दो. २८५

कुं

कुंडल ४५, ५२, ६०, ८८, ११६, दो. ३, ६, ८, ६, २६, ५८, २२२, २२७, २३०, २५१, २५६, २६०, २६६, २६६. २८०, २८२
कुंडलीयौ २२७
कुंडा द्रहे २३४
कुंपड़ावस २५७
कुंपड़ावास दो. १००
कुंपावस दो. २२१
कुंभटो दो. २१६
कुंभलमेर ४८
कुंभारौ ३५१
कुंरणो २७२
कुंवड़ो २८६

कु

कुई रौ वास ३०६
कुलम्रांणो २७७
कुकड़दो ३८२
कुकड़ढो ३५२
कुकड़नड़ो २१७
कुड़की दो. २००, २११
कुड़छी ३४४
कुड़ाहड़ो ७४
कुड़ी दो. २७४
कुचील ५६, १३२
कुचेरौ १३०
कुजणाउ खुरद ३४५
कुटांणो ५०१
कुठली दो. २२७
कुडणो ३७६
कुडाणा १५०
कुडली २७६
कुडलीवा दो. ३४
कुतांणी दो. ६६, १००
कुलथांणो दो. २८१
कुवड़ी दो. २२३, २२८, २६६, २६६. २७६, २८५
कुभावास ३३८
कुरड़ा १२६, १३५
कुरड़े घाट १३५
कुरलाई ३७२ दो. ६१, २०१, १३०
कुरवाड़ो दो. १०४
कुरवाड़ो-बाहल रो दो. १०३
कुलत दो. १८३
कुलाज ४१५
कुवड़ी २०६, २५०
कुवरड़ो खुरद २८३
कुवलीयो ३०६
कुवौ रूंदीयौ ३४६
कुसमतरो ३५८
कुसमलो ३६६ दो. ३१६, ३४४
कुसमसरो ३६६
कुसलवै दो. ६
कुसलांणो ३७२
कुसलावो ३१६, ३८१ दो. ३३
कुसांणा (कुसांणै, कुसांणो) ४० दो. ४४, ४८, १०१, २४५
कुहड़ १६६
कुहीप दो. २२६
कुहीयप दो. २२३, २२७, २५०, २६३, २८३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कूं

कूंपड़ावास ५५५
कूंपड़ावास सुरद दो. १५०
कूंपड़ावास बड़ी दो. १४६
कूंपाखेड़ी ५१२
कूंपावास ३२२, ३७३, ५५४ दो. २२५, २४०, २८१
कूंपावास-संसारचंद री ३२१
कूंपावासणी दो. १०६

के

केकींद दो. १३७
केकीदड़ो दो. १२३
केकीदर दो. १२०
केकीदरी दो. १२२
केतु १६४, १६५, १६६, १६०, १६३, १६४, २६४, ३१५
केतु री वास ३१७
केथल १३४, १४७
केरलो २००, २३४ दो. ११, २४
केरां री खेड़ी ४१५
केरां री खेड़ी ४०७, ४६७
केराड़ी १४१
केरीयो ४३६ दो. ६२, १७१
केरूवास २११
केलणकोट ३००, ३७८ दो. २३१, २७३, २७६, २८४, २८७
केलणसर ३८० दो. ११, १६, ३३
केलणां री खरड़ दो. ६
केलरीयां री वासणी ३१०
केलवाल ४०४, ४११
केलाकोट ५
केलावास दो. १५१
केलवो (केलावा, केलावै) ४७, ५४, ७८, ३४४ दो. ४३, ३१७, ३३६, ३५५, ३५७
केलावो खुरद ३४३
केलावो वड़ी ३४७
केल्हण री खरड़ दो. २००
केल्हण सर ८६

को

कोड़वी ३७७
कोजा तलाव ३७०
कोजा री तलाई १३६, १४०
कोझव री गांव १४०
कोट १२१, १४१, १७०
कोटड़ी ६०, ५०५, ५५३ दो. ३८, ३६, २७८, २८१, ३४४
कोटड़ी चारण री १४०
कोटड़ो (कोटड़ा कोटड़ी) ४१, ४४, ६३, ७४, ७६, १५४, २१३, ४०६, ५५७, दो. २, ३२०
कोटड़ी खेड़ी ४२२
कोटड़ी सुरावसती ४७६
कोटणी ३०१
कोटा ७७
कोटेड़ी ५५३
कोठार दो. ६६
कोड दो. २०१
कोडारदेसर ३२
कोढणो (कोढणा, कोढणी) ३६, १४६, १६६, १८६, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६६, १६८, २०३, २०४, २६३, ३०१, दो. २६३, ३२०
कोणेडो ३५८
कोनरी ३०८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कोपीला १३५
कोबरो ५०५
कोरड़ा ५५४
कोरटा (कोरटै, कोरटौ) ७०, ९२. ९८, १०२, १०३
कोरणो २८२
कोरीयाठड़ी दो. २००
कोरीयो दो २०४
कोलर ३६०, ३७१
कोलीलाल ९७
कोलू ३१९, ३५८, ३८०, ३८१ दो. २८, ३२, ३२१
कोडुषा दो. २३१, २७४
कोसांणा ३४ दो. ३९
कोसीथल ४४
कोहड़ २५१
कोहड़ी ५३६
कोहर-दूदासर दो. २६
कोहरड़ा री वासणी ३४४

खं

खंडप ९१ दो. २७८
खंडप दहलो १३७
खंडाड़ी ३७
खंडु ३६८
खंडो १४७

ख

खड़हरी गांव २४
खड़हाड़ो ३७२, ५५५
खचीहाय दो. ३२०
खजवाणी ४६
खटु ३९२
खटोड़ौ ३३०
खडाला २२५
खणीया दो. २२८
खणीयो दो. २२३
खनवा ११५
खफाहड़ी दो. १०१
खरक दो. ६
खरड़ केलुणा री दो. ३३
खरड़ी ३७९
खरडो दो. ३३
खरहाड़ी दो. १०७
खरांटीयो ५०४
खरांटीयो खुरद ५०४
खवासपुरौ दो ५८

खां

खांखटी दो. १०१
खांखटो २४७, ३७२
खांडप ३७७
खांडो १५२, १५५
खांतोलाहा दो. ११४
खांनपुर दो. १०८, १७५
खांनवौ १३५
खांप सुमेल री ५५५
खांमल ४०४
खांमी २७८, ३७७

खा

खाखदरलाई दो. २२३, २२७, २४९ २८३
खाड़ी दो. १०२
खाड़ो १३४
खाचरोद १७६
खाट्ट ४४, १२९
खाट्ट रौ गढ ४५
खाडाला २४०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खाडी २०१
खाढाबस २४०
खातीवास ५०३, ५२६
खातेलाई दो. ६२
खातोलाई दो १६६
खामेल ४०६
खारखंदो १३२
खारड़ ४०३
खारडा ४०६
खारड़ी ३८, ४११, ४४३, दो. १२६, २२७, २५७, २६८, २६६, २७६, २८२
खारड़ीवास दो. २२२
खारड़ो २३३, ३०६, ३२६, ३५८
खारड़ो टांपर में ३६६
खारड़ो रिणधीर री २०८
खारची ८१, ४०४, ४१४, ४२४ दो. १२४
खारची प्रोहतां री ४०६, ४७७
खारचीयौ ४५२
खारटीयो ५०७ दो. २७८
खारल १४५
खारला (खारलो) १५४, १६४, १६८, २७१ दो. ३५
खारवाहो दो. २२३, २२६, २४४, २८३
खारा दो. ३००
खारी ३४७ दो. २
खारी खुरद ३५०
खारी चारणां री ३७४
खारी थीरावस २४०
खारीबास २३६
खारीया री वासणी दो. १०१, १४८
खारीयो (खारीया) ८१, ८२, ६२, २४६, ४७६, ५५५ दो. १२, ३४, १४३, १५१
खारीयो खंगार ३७२ दो. १०१, १४५
खारीयो खुरद दो. १६२
खारीयो जगहथ री दो. २३
खारीयो नीबा री ४०३, ४१०, ४२७
खारीयो फदरा री ४१२, ४४६
खारीयो फदारी ४०४
खारीयो बड़ी ४०४ दो. १५८
खारीयो भांणा री २५६, ३७३
खारीयो सीढां री ४१४
खारीयो सोढां री ४५३
खारो दो. ३२१, ३५७
खारो डाहीभर ३६१, ३७२
खारी बेरी (खारा बेरा) २३८ दो. ३५
खारी बेरो खेड़ा २३१
खारी बेरी बड़ी १६७
खारी बेरी भींवोतां री १६७
खारी लुणावी १६५
खारी लुणाहो (मांगलीयां री कदीम गांव) २२५
खारी बीसनोयां री दो ३१७
खारोवास दो ३३३
खारोवास-खीमा री सरेह दो. ३३३
खारोवास-बीसनोयां रो वास दो. ३३३
खारोवास-सातलमेरीयां रो वास दो. ३३३
खारोवास-सीहड़ां रो वास दो. ३३४
खालतसर दो. ३३७
खालत सरवण री सरेह दो. ३५७
खालावासणी २१८
खावाणीयो ३४७
खासो वोलाड़ो दो. ३४

खि

खिनावड़ी ५२३, ५४८
खिनावडी चारणां री वास ५४८
खिवल ५४१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खीं

खींपलो ३००
खींवावास ३४० दो. १५८
खींवलाणो दो. ३१६, ३२०, ३४२
खींवसर ४०, ५६, १४६, १५४, १६४, १६६, १८६, १६०, १६१, १६३, २०४, ३३६, ३३७, ३३८, ३३६, ३४०, दो. ३२७

खी

खीचवंद १२०, १७० दो. १, ११, १२, २१, २५, ३०
खीचवंद-थांनकां दो. ३१
खीचवंद रा वास दो. ३२
खीडालो २०१
खीदावड़ो दो. ६१, २२३, २२६, २६३, २८५
खीदावास दो. ६२, १०६, १७५, २११
खीदासर दो. ३४
खीदाकोहर १६६, ३३३
खीनारड़ो ४६६
खीनावड़ी ५०३
खीनावड़ो ३०३
खीमल ४१२
खीरड़ौ दो. ३३
खीरज रौ वास-बेढिया रौ ३१७
खीरजांवास ३१६
खीरणी खेड़ी ४०७, ४१६, ४६८
खीरणेहटी ५०६
खीरवा ८५
खीरवो ८५
खीरहटी ५३७
खीराटीयो २०३, २८८, ३७१, ३७८
खीराटीयो भाखर ३५७
खीवल ५०७

खु

खुड़द बूटेळाव रौ खेड़ौ ४७५
खुटल ४०६
खुटली ४०५, ४१३, ४५०
खुटांणी २०२, २७
खुडीयाला (खुडीयालो) ३०७, ३०६, ३२६
खुढालो ३४६
खुतावटीद ो. ६६
खुरदवास भींवोतां रौ २३१
खुरहल दो. २८०
खुवासपुरौ दो. १३३
खुसी ३७६
खुहड़ी दो. ६२
खुहड़ी खुरद दो १५४
खुहड़ी बड़ी दो. १५४
खुहड़ौ दो. ३२०, ३४१

खे

खेड़ १२, १३, १४, ३५६, ३६८, दो. २८२
खेडा २८३
खेड़ी २३०, २४२
खेड़ी अखैराज दो. १८१
खेड़ी चांपा दो. १०६
खेड़ी ललीया दो. १८०
खेड़ी सीलां दो. १८२
खेड़ो अखैराज दो. १०३
खेड़ो मोजासर रौ दो. २०
खेजड़ली ६१, २२०
खेजड़ली खुरद २२३
खेजड़ली बड़ी १६५, २२१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खेजड़लौ २४६
खेजड़ीयौ १०३
खेजड़ीयाळी २०३, २९१
खेजड़ीयाली रा वास २९२
खेड़ापौ ३४८, ३४९
खेडुलीयो ३५९
खेडुली दो १४४, १५६
खेतपाळीयां री सरेह दो. ३१८, ३३९, ३५७
खेतावास ७४, २६५, ५०६, ५४२
खेतावास सापौ ३७४
खेतासर ३२२, ३२९
खेतासर री वासणी ३२३
खेतासर वास १९६
खेनावास ४१०
खेपाली २४७
खेरला ३८
खेरालु ९३, ९४
खेरवै थळी दो. १९३
खेरवो (खेरवा, खेरवौ) ३७, ४७, ४८, ४९, ७१. ९०, १०२, १४६, १५४, १६४, १६८, १६९, १८९, १९२, १९३, १९४, २००, २०४, २६०, २६१, ३७६, ५१४, ५३०, दो. ३५ १००

खो

खोखरसर ३६०
खोखरां ४२०
खोखरी २१२
खोखरीयौ २५३
खोखरौ ४०३, ४१०, ४३२, दो. ३५
खोडीयौ ४१५, ४६६
खोनावड़ी ५०८
खोहड़ासौ ४१२
खोहरी १३२

गं

गंगादास रौ वास दो. १०६
गंठीयो दो. १४५
गंधाणो २१०

ग

गगड़ाणौ १५७
गगराड़ौ दो. १५०
गगराणो दो. ३७, १३३
गड़ौ ३१७ दो. २२२ २२७, २८३
गजणाई ४०६, ४६८
गजणाई दाघी ४०७, ४१५, ४७०
गजणाई वड़ी ४१५, ४६६
गजणाई रा० कनीयारी ४०७
गजणांई-सारंग खाती वाली ४१६
गजसिंघपुरो (गजसिंघपुर) १०२, १२५, १३१, १४६, १५१, १५५, १६४, ३८२ दो. १२८
गडसुरीयो दो. १०२, ११२
गढी दो. २५३
गलणी ५०६
गलणीयो (गलणीया) ७४, ३७३, ५०३, ५११, ५१२, ५२३, ५४२, ५४२, ५५१
गलता री सरेह दो. ३१८
गलरां री सरेह दो. ३५७
गलीयौकोट ७२
गवारड़ी खुरद दो. १०६
गहेढो वड़ौ दो. १०२

गां

गांगादास रौ वास दो. १३९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांगा पड़िहार रौ वास दो. २२४
गांगावासणी ३४१
गांगारड़ी दो. १४६
गांगारड़ो दो. १५०
गांगाह रौ वास-वाहालो रौ ३०१
गांठीयां दो. १५२
गागुरड़ ९२
गागुरड़ो ४०३, ४१०, ४३१ दो. १००
गाजण कालर री सरेह दो. ३५६
गाजण री सरेह दो. ३१८, ३३७
गाढपुर दो. ७५
गादसरो ३६३, ३७०,
गादाहलो ४०३
गादेहरी ३४३
गाघांणी बड़ो २१७
गाघी दो. ११
गारावासणी ४६
गालां री सरेह दो. ३३९, ३४०

गि

गिरवरीयो २८२
गिररी ७३, ५०६, ५०७, ५१७, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३८, ५३९, ५४४, ५५० दो. ५७
गिरी ५०२

गी

गीगाथल २३४
गीगावड़ी ४६९
गीगाहो १९८, २९७
गीघालो ३३३
गीड़ागड़ो ३७९
गीड़ाघड़ो २६३
गीड़मुंरीयो ३७३
गीराबसणी ३८२
गीराबड़ी ४६, ३८२
गीलांकोहर ३१९

गु

गुगड़ी ३६२, ३६८
गुगली ३७१
गुघरट दो २२३, २२७, २५५, २८३
गुड़ली ३६७
गुड़ी दो. ३१९, ३४४
गुड़ौ दो. ३१९, ३४३
गुजरवास ३७४
गुजरात १०, १८,
गुजरावस २०५, २२०
गुजरावास ८२, ४०४, ४१२, ४५८
गुजरावास वीराहमी रौ १९७
गुढा २२९, ५५१
गुढां रा वास गुसांई रौ २३६
गुदरड़ो (गुदरड़े, गुदरड़ो) ७५, ५०७, ५३७, ५४५
गुदवच (गुदोच, गुंदोच) ३६, १४६, १५४, १६४, १६८, १६९, १९०, १९१, १९२, २००, २०४, २७२, ४५३
गुदवो ४५
गुदी २२९
गुदीसर खुरद दो. १००, १९७
गुदीसर बड़ो दो. १९२
गुदुवो १९३
गुदेसर दो. ११३
गुरलाई २६४
गुलछरो ३७
गुलली ३५५
गुवरडी दो. २१०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गुवारड़ी खुरद दो. २११
गुवारडी बड़ी दो. २०१
गुवालेर ७७

गू

गूजरां रौ वास २२७
गूलर–बाहल रौ दो. १०३

गे

गेनरड़ी दो. १९४
गेमावास दो. १६४
गेमलीयावास दो १२२
गेलावास २०२ २७४, २९२
गेहड़ो खुरद दो. १०९, १८५
गेहड़ो बड़ी दो. १८०
गेहडांणो दो. १०५
गेहावास ३७३, ४९९, ५०८, ५४६,
५५५, ५५६ दो. १०२
गेहावासणी ४९८, ५०८, ५४९

गो

गोश्रांण ३७०
गोगटी दो. ३१६, ३४३
गोगादेवां री वास ३०५, ३१५
गोगारड़ो दो. १४४
गोघेळाव ८२
गोड़गड़ी ८१
गोड़ां री वास दो. २२३, २२९, २६३
२८५
गोड़ां री वासणी ३४०
गोझारो ३९९
गोठण ३७२ दो. ६२, ९८, १४५
गोठड़ो २८४ दो. ८१, १०४, १८६
गोडगडी ४०३ दो. ३१९
गोडगड़ो दो. ३२२
गोडागड़ी ४१२, ४५५
गोड़ागड़ो ३६४ ३६९ दो. ३४२
गोढवाड़ ३६, ३७६
गोदमांवास दो. ११३
गोदारो दो. ४०
गोधणली दो. ११, २१, २३
गोवणीलां दो. ३६
गोधावाल ८१
गोधां रो वाड़ौ २८९
गोधावास (गोधावस) २२७, २८४,
३७४, ३७५, ३७६, ४०८, ४१७,
४७७, ४८४, ४९२ दो. २८१
गोधावासण २७७
गोधेळाव ३७, ४०५, ४१२, ४४८,
४७६ दो. ३५
गोनरड़ो दो. ६१, १८७
गोपड़ी दो. २२२, २३६, २४८,
२७९, २८२
गोपालपुरो दो. १०५, २१०, २११
गोपालवस (मांढा री वास) ४६१
गोपालसर ३०७, ३०९
गोपावास ४०४, ४१३
गोपावास सांडीयां री ४०५
गोपावासणी २९६, ४२२, ४७४
गोपासरीयौ ३३३
गोमट दो. ३१८
गोमटीया मोहर कालर दो. ३५७
गोमढ दो. ३३७
गोयंदपुर (गोइंदपुर) ३४२, ३५२,
४०५, ४१९, ४२७, २४७
गोयंद री वाड़ौ २८९
गोयंदलाव (गोईंदलाव) २०२, २८०,
२८४
गोरडीयौ ३९८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गोरमी दो. २२२
गोरवी दो. २३०, २६६, २८५
गोरहरी दो. ६२
गोरा दो. ४१
गोरेहरी करणां दो. १६४
गोरेहरी चांचा दो. १६५
गोलकुंडा १०३
गोवंदगढ दो. १०५, १०६
गोवल ३८६ दो. १०४, २८०
गोवलवास ३६२
गोवलियो २१६, ३७५
गोहड़ा बड़ा दो. १८४
गोहला वसणी २११

घ

घघड़णो दो ६१
घड़ोई दो. २३१, २७७, २८५, २८७
घड़ोई कालाणां री वास दो. २७७
घड़ोई–धरमदास रो वास-दो. २७८, ३६६
घड़सी री वाड़ो दो. २२३, २२८, २६१
घडसी री बास ३०९ दो. २८४
घडाय २१६
घटटी री घाटी ५३८
घटीयाली ११६, ४०५, ४७२
दो. ८, ९, १०, १५, २३
घटीयाली (सुरांइता मांहे) ४१६
घटीयाळो ३१०
घणांणा दो. २७९
घणोडी १०२
घनहड़ी ३९५
घवलरीयो बंडो २०२
घवलेहरो ४४४६
घबेलरीयो २७६

घां

घांघाणी दो. ५, ३५, २१७
घांघाणो दो. २२२
घांणा २७९, २८१ दो. १८५
घांणेरो दो. २८१

घा

घाघरि दो. २३
घाघावड़ी १९९, ३२४
घाटमपुर १२६
घाणांणा दो. २२७, २३०, २३७, २६६
घाणा मगरो २४८
घाणोराव ३६
घातरठ १५५
घातरठ १५२
घीगांणो २८०

घी

घीघालो दो. १०४

घु

घुघरट दो. २१८
घुघरा री घाटी ५६
घुघरीयाळी ५३
घुघरोट दो. २१८

घे

घेवड़ी प्रोहतां री १३८
घेवड़ी वड़ी ३३४

घो

घोड़कंपी दो. ९
घोड़ारड़ ३७२, ३७३, ३७४ दो. १०१
घोड़ारड़ी २५९
घोड़ारट ५५६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घोड़वल ५४६
घोड़ाहट दो. १३७
घोठारीयां दो. १०४
घोसारीयौ २८३

घौ

घौसू १६६

चं

चंगावड़ो ग्रादु ३११
चंगावड़ो खुरद २१५
चंगावड़ो तीजौ २४१
चंचळाव ३११
चंटासीयौ ३४२
चंडा २८५
चंडाळीयौ ३२६
चंडावळ ६१, ४१०, ४३६, ५३६
चंडावस ४०३
चंत ५५७
चंदरोही ३००
चंदलरौ ३७२
चंदसमौ ३७६
चंदसरौ ३८०
चंदावड़ ४०६
चंद्रासर ३३१
चंपा १०२
चंपा खेड़ी दो. १७५
चंपला वेरो दो. २७६
चंपला वेरौ सूनौ ३७१
चंपासर ३८१
चंबड़ीयाक ४११
चंवडाय २९६
चंवाघा घीया २०१

च

चड़ीयाहारौ ७३
चमारी ७७
चखड़ ४७
चरड़ावस दो. १००, १९६
चरचड़ो ३७७
चरडीयो २६१
चरपटीयौ ४४६
चवडवा २३७
चवांनड़ी ४१२
चवा घांघीयां २२३ दो. ३४
चवावड़ा २२२
चवावड़ी २०१, ४०४
चहुवाणां री वासणी २०५

चां

चांखवास २२७
चांग ५०५, ५०६, ५३३, ५३६, ५३६, ५४५, ५५२, ५५३
चांग मांनपुरा ११३
चांगल २००
चांच दो. ३२८
चांचळवा ३११
चांचा दो. ३१७
चांचोड़ी दो. २८१
चांठला २७५
चांणदो दो. २८१
चांदण खुरद दो. १९६
चांदणी दो. ३१६, ३२०. ३४१
चांदणी खुरद दो. ६६
चांदणी बड़ी दो. १००, १९५
चांदरख ३४७
चांदसमो दो. ३१७, ३२१, ३३५, ३५७
चांदसमो-ब्रांमणां रो वास दो. ३३५
चांदसरो ३५६
चांदा री घाटी ८८, ११२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चांदारूण दो. ६१. ६४, १७७
चांदा रौ वास २६६, ३७८, दो. २७८
चांदाळाव २४७
चांदावासणी ४०५, ४०६, ४१२, ४५७
चांदेलीयां चुरो दो. ४०
चांधण १४०
चांपलां बेरौ ३६१
चांपावसणी २०६, २४२
चांपासर ३३१
चांवंडीयो ४७२
चांवंडीयो आघौ दो. १३८
चांवड १०२
चांवडीया १३६, ५५० दो. ११०
चांवडीयो गिररी रो ५०४, ५३१
चांवडीयो बडौ ५०१
चांवडीयो वीठा रौ ५३१

चा

चाखु दो. ८, ११, १७
चाचा रौ पांनौ ३२१
चाटसु ४४, १०७, १३६ दो. ५४, ७४
चाडाल ३८
चाडी ३२८, ३८० दो. ६, ३३
चाणु ११६
चाणोद ३७६, ३७७
चापुड़ी ५४१
चावड़ीयाक ३९५, ४०३, ४७६
चावौ ३१५
चामु दो. ६, ३३
चामुं-किसन रौ ३२०
चामु-जाटां रौ ३२०
चामु-डूंगरसी-रौ ३२०
चामु-बड़ोवास ३२०
चामू री वासणी ३२६
चारणथल १३६
चारण महीया रौ वास दो. २७४
चारण रौ वाड़ी २०३
चारणवसणी २३४
चारणां री वासणी १३६, २४१
चावडीयो ७४
चावडीयौ वड़ौ ५१६
चाहड़वास ४०८, ४१६, ४७६, ४८०, ४९०
चाहली वड़ी ७४

चि

चिड़वाइ खुडीयालौ १६६
चिड़वाई मेली ३०७
चिड़ीयावास ४२२
चिरडाणी २४६
चिरपटिया ४०३, ४१२, ४२१, ४७४

चीं

चींचड़ली २६५, ३०१

ची

चीखी ३६७
चीड़ीयो ३५६, ३६८
चीड़ीयाहेरा ५३६
चीड़ीयोहेरो ५०७
चीतार ७५, ५०५, ५३३, ५५४
चीतावी दो. १०३
चीतावो दो. १०३
चीभाली ३०८, ३१०
चीभाली–आगोलाई ३१०
चीतोड़ २६, ३१, ३६, ३८७ दो. ६८, ६६
चीनड़ी ४६
चीनड़ो ३४५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चीमड़ावो दो. १०, १८
चीराई दो. ६
चीहणणी ४२८
चीहाली दो. २२३, २२५, २४२, २४५, २७८, २८३

चुं

चुंधीयां दो. ६२, १३३, १३८

चु

चुलटलाई ४०६
चुलेलाई ४५०
चुल्हलाई (चुल्हैलाई) ४०५, ४१२
चुहड़ीयावास दो. १५४

चूं

चूंडा री कोरड़ी १४१

चे

चेचीयावास दो. १७१, १७३, १७६
चेनईचो ३७१
चेराई १३८, १४४, १६६
दो. ३३, २६६
चेराई-ग्रासायचां री ३२०
चेराई-खींचीयां री ३२०
चेराई-गेसीया री ३२०
चेराई-नाहरवो ३२०
चेदाई-वडोवास ३२०
चेराई-भोजां री ३२०
चेराई-रजपूतां री ३२०
चेलावास ४०३, ४१२, ४२७, ४८४
चेलेलाई ३०१
चेहड़ो २०२, २७६
चेहनडी ४३१

चैं

चैंनपुरा १३८, १४३, २२६

चो

चोइथ री वास वणसीसर रौ १६६
चोक दो. ३१६, ३४१
चोकड़ी खुरद दो. १३२
चोकड़ी बड़ी दो. १३४
चोकी ११७
चोखां वासणी दो. ११८
चोड़ी सिकारपुर २२३
चोचीयावास दो. ६२
चोटीले झांवर (सींवला री चौरासी) २३
चोटीलो २०१, २६६
चोढो २१६
चोपड़ो १३६, ४०५, ४११
दो. ३५

चौं

चौमुं ३८१

चो

चोलण ४८८
चोहथ री वास ३०६
चोहलांवास दो. १५५
चोहौला संवो दो. ४१

चौ

चौचावड़ी ४६२
चौवबड़ी ६१
चौसली दो. ६६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छ

छंडाणी दो. २२६, २४७, २८३
छड़ी २८४
छछां री वास दो. १३९
छडणी दो. २२३
छतरीयो ४११
छयण दो. ३३५, ३३६

छां

छांछा री वास दो. १०७
छांवणी-नवी हवेली १४९
छांहण दो. ३२१, ३३६
छांहण दो. ३१७

छा

छाछेलाई ३७९, २७३, २९४
छाछोलाई १९९ दो. २७८
छाढीयो ३१८
छापरी दो. ६२, ९९
छापरी खुरद दो. १६०
छापरी वड़ी दो. १५९
छापलो ९६, ३५१
छापण दो. ३५६
छालावारो १५२
छाहली २४३

छीं

छींकणवास (छीवणवास) ४६, ३०९
दो. १६
छींतरीयौ (छीतरीयो) ९१, ४०४,
४४०, ५५६
छींपीयो ७४
छींपीयो मुस्याल ५०२
छींपीयो खुस्यालपुर ५१०

छी

छीडीयो ३४९
छीला दो. ११, २५

छै

छैतसमंद ६४

छो

छोडौ (देवड़ों री गांव) १४०
छोभ ३३४

ज

जइतरौ ७९
जगड़वास दो. १८९
जगनाथपुर दो. ११०, २१२
जगमाल री वाड़ी २९२
जगसा ३६८
जगहट दो. १०७, १०८
जगहथीयो ५०६, ५३८, ५५५
दो. १२, १०२
जगा सींघल री वासणी दो. २१०
जगीया १४३
जगीसां दो. २७८
जगीसा कोटड़ी ३७८ दो. २२२
२२५, २३५, २४०, २८१, २८२
जणीयाणो दो. २३७
जमालपुर १५२, १५५
जलगांव ११०
जलगांव-खेराड़ री १०६
जलगांव-बरड़ री १०८
जलाघरी दो. ३३७
जवड़ी २९३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जवरणादेसर २६३
जवावासणी बांमणां ७५
जसवंतपुरो ४६४ दो ३१७, ३३३, ३५७
जसवंतावाद दो. १२२
जसोल (जसवल ३५४, ३६८ दो. २७६, २८२
जसहरडां री उतन १४०

जां

जांगलु १६, ३१, ३८, ३६, ३८५
जांणीयांणो दो. २६२, २६३, २८१, २८२
जांणीवाणी दो. २२१
जांनोदो ४०३, ४१२
जांमलावो दो. २३
जांभेलाव दो. २७, २८, ३३

जा

जाईल दो. १०३
जाक ३०३
जाखण १६७, ३२४
जाखण-काना वास ३२४
जाखण-जेता तोगा री वास ३२४
जाखण-सांईदास री ३२४
जाखणसर २६४
जाखणसर री वास ३०२
जाखोड़ो ११०
जागसवास ३६०
जागसी दो. २७६
जाजपुर ४४ दो. ६०
जाजवो ३५६, ३६८
जाजीवाल ७६, २३१
जाजीवाल ईदां री २३२
जाजीवाल कोटेचां री २३२
जाजीवाल खींवा री २३५
जाजीवाल जोलुवां री २३२
जाजीवाल नाथु री १६७, २३२
जाजीवाल नींबां री २३२
जाजीवाल पीथा री २३५
जाजीवाल बांणीयां री २३१
जाजीवाल भींवा री नादारी २३२
जाजीवाल भींवा वाली ३७
जाजीवाल राजघर री २३५
जाजीवाल राठौड़ां री २३१
जाजीवाल सांकर री ३३१
जाजीवाल सोलंकीयां री २३१
जाजोत १५७
जाटसु नांनग दो. १७३
जाटीया बसणी २३३
जाटीयावास बड़ो २२१
जाडोतरी दो. २८१
जानावासणी ५०७
जानोदो ८१
जायल ४६
जारोड़ो खुरद दो. १६०
जारोड़ो गुजरां दो. १५६
जारोड़ो वेणां दो. ११२, १६५
जासेडो बड़ो दो. १५६
जालंधर १
जालको २५०
जालवाड़ी दो. १४
जालसु खुरद दो. १६१
जालसु बड़ी दो. १८८
जालीड़ो दो. ३२४
जालीवाड़ो १३६, ३८१ दो. १२, २५, २६६, ३१६, ३२०, ३२४, ३४२, ३४८
जालीवाड़ो खुरद २५४
जालीवाड़ो बड़ो २५१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जालेलाव ५०८
जालेली २३०
जालेली खुरद २०८
जालेली बड़ी २०६
जालोर १८, ४३, ६४, ६७, ९३, ९४, १०२, १०५, १०६, १०७, ११६, १२४, १२७, १२६, १३१, १३४, १३६, १३७, १३८, १४६, १५१, १५४, १६४, ३७७, ४४३ दो. २१५ २१८, २२८, २२६, २३०, २४६, २५१, २६०, २६३, २६५, २६६, २७६
जांवतो दो. १०५
जावतरी ३४३
जावली दो. ६२, १५६
जावलो दो १०३, १०४, १०५
जावो सीसोदीयां रौ दो. ३५, १६०
जासती २०३, २६४
जाहड़वास ३४५
जाहानाबाद १२८, १३०, १३३, १३४, १३५, १५६, १५७, १७० दो. २६८

जी

जीड़ोलरी दो. २२५, २३६
जीड़ोतरी दो. २२१
जीणपुर दो. २२२, २२८, २५२, २६०, २६६, २८४
जीणयाणो दो. २३७, २२५
जीणीयांणा दो. २२६
जीद १५२, १५५
जीनीदो ४४४
जीमलाव दो. ११
जीवंद १४०
जीवांणो दो. २८०
जीवासी ३७०
जीवै री वास ३०५

जु

जुझाव आरी घाटी १७६
जुढ ३७६, १९६
जुठो ५०२, ५१६
जुठो रायपुर ५१३, ५१४
जुढि २१३
जुढियो आदु ३११
जुनेर ११०, १११
जुलांणो दो. ६२, १६८, १६६

जे

जेठाणीयो ३१४
जेठा रौ वास ४१४
जेतावतां रौ वास ३०५
जेतावास दो. १६१
जेलोतरो दो. २८२
जेथोवस ३७४
जेरलां ३६८ दो. २७६, २८२
जेरलाव ३५४
जेलु रँ तलाव १४२
जेसलमेर १४, ४७, ५५, ६३, ६४, ६६, ८६, १३६, १४०, १४३, १४४ दो. १, ४, ६, १२, २७३, २६३, २६४, २६७, २६८, ३००, ३१५, ३२०, ३३८, ३३६, ३५१, ३५२
जेसलवस २५७, ३७५
जेसला दो. ११, २०, २४, ३३
जेसलावासणी २०६
जेसावास ३०६, ४०६, ४२१, ४७४ दो २०८
जेसावास अखैराज दो. १५६, १६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जेसावास तोगा दो. १५६, १६३
जेसावास मेणा दो. १६३
जेसावास री खेड़ौ ४३६
जेमुरणौ १४०
जेह री तलाई दो. ११
जेहां री तलाई दो. २०

जै

जैचन्द रौ वास ३३८
जैतपुर २०२, २८०, ५०७, २४२
जैतसी री वासणी ४०६ ४२३ ४७७
जैतसी रौ थांनौ ३२१
जैतारण ३६, ३८, ४१, ४३, ६०, ६५, ६७, ७३, ८३, ६५, ६७, १०५, ११२, ११३, ११४, १२४, १२५, १२७, १३१, १३३, १३६, १४६, १५१, १५४, १६०, १६३, २४३, ३७३ ४७२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ५००, ५०१, ५०८, ५०६, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१६, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२६, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३६, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४६, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५ दो. ३५, ६०, १०२
जैतावास ३४५
जैतीवास २५६ दो. ६६
जैतावासणी ५४७
जैमलोत रौ वास ३२४
जैमलोतां एकां री गांव दो. ३३६
जैलुवास ३२३
जैलु-वींजासर ३२३
जैसिंघ रौ गांव ३१८, ३३६, ३५७

जो

जोगण ३७७, ३७८
जोगणीहेत १४०
जोगरांवास ८२, ४०४, ४६३
जोगीया वासणी २३४
जोजावर ४८
जोधड़ावास ४०५, ४२०, ४७३ दो. ६२, १५७
जोधड़ावास खुरद दो. १६४, २०६
जोधड़ावास दुधवड़ ८२
जोधड़ावास बड़ी दो. २०५
जोधपुर ३२, ३६, ३७, ३८, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४५, ४७, ४८, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५६, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ७०, ७१, ७६, ७७, ७८, ८३, ८७, ८६, ६०, ६२, ६३, ६५, ६७, ६८, ६६, १०२, १०३, १०५, १०७, १०६, १११, ११८, ११६, १२०, १२४, १२५, १२७, १३१, १३२, १३३, १३६, १३७, १३८ १४२, १४३, १४५, १४७, १५०, १५४, १५६, १५७, १५८, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६८, १८६, १८६, १६५, २०३, २०४, ३५३, ३७२, ३७३, ३७४, ३७६, ३७७, ३७८, ३७६, ३८०, ३८१, ३६३, ३६४, ४२५, ४६३, ४६५, ५०६, ५४३, ५५१, ५५५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दो. १, २, ३, ५, ६, ७, ६, ६, ३२, ३४, ३७, ४२, ४३, ४६, ५५, ५६, ५७ ५८, ६४, ७७, १००, १५१, २१५, २१६, २१७, २१६, २२०, २३२, २७८, २६२, २६४, २६७, २६६, ३००, ३०५, ३०६ ३१६, ३२०, ३२१, ३२७, ३५०, ३५४

जोघावास ४६८, ५०८, ५५०

जोघावास खुरद दो. १११

जोयावस २५०

जोराकुवो ३५६, ३७२

जोलीयाली १६६, २६४

जोलुवां री वासणी २२५

जोलीवाड़ी १४३

झं

झंझणवास ३७३, ५५६

झंवर २२५ दो. २१८

झ

झड़ाऊ दो. ४०, १६६, २०८

झलारीयो दो. ३५३

झलारीया रा वास दो. ३५२

झलेलाई १४३

झलोड़ी दो. ३४६

झां

झांक ५५५, ५५६

झांझणवास ५०१, ५१२

झांझणीवालो ३०६

झांझीलो दो. १०३, १०४

झांवर ५४

झा

झाक २४५

झाड़ढंढ ४०३, ४११, ४३५

झाड़ाकोतू ६७

झाझुण वासणी दो. २०२

झाबरो ३७६, ३८० दो. ३१६, ३२१, ३४३

झायल १३६

झालरीयो ३७६ दो. ३१७, ३३१, ३५०, ३५७

झालरीयो–कालरां रो वास दो. ३३१

झालरीयो–वड़ो वास दो. ३३१

झालरीया रो वास दो. ३१८

झालाड़ो दो. ३१६

झालामल २०६, ३७२ दो. ३४१

झालामलीयो २५२ दो. ३१६

झालावार वारम १४८

झावरवास २०१

झीं

झींका वासणी २२८

झींझणीयाळो ३०५

झींझारड़ो ४१५

झींका रो पाद्र दो. २२८, २६४, २८५

झीथड़ो ३७४, ३७५, ४०४, ४०६, ४११, ४४३

झी

झीथीया दो. ४०, २०३

झीलला ५५७

झीलेलाव ४६६, ५३६, ५३६, ५५२

झीलसीली ३५६

झुं

झुंझणदो ५०१, ५१२, ५५०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

झुंझणदो खुरद ५०७, ५३६
झुंझणदो वड़ी ५३६
झुंड ३५८
झुंपेलाव ४०५, ४०६, ४११, ४३५

झु

झुड़ली २५२
झुठा रो वासणी २४२
झुढि ३६६
झुलीयो मांढा री ४०५

झे

झेर वड़ो दो. ३१६
झेरावड़ दो. ३४२

झो

झोटांणो २८४

टां

टांकड़ी ५०६
टांकु ३५७, ३७०
टांटीया री वास २०२
टांपरा ३५४

टा

टावरीयाले १२१
टायरा ३६८

टी

टीकड़ी ७४, ५३६
टीकी ५३
टीवड़ी ३१६ दो. १२६

टु

टुक ४४
टुकड़ी १५१
टुकड़ो ५०४, ५३०
टुकलो ३८२
टुफली दो. १०७

टू

टूंकड़ो ७४

टे

टेटो दो. ३२१

टै

टैहलो दो. १०६, २०३

टो

टोटी दो. ३२०
टोहणो १५२, १५५

ठ

ठहीयावड़ी दो. १०५

ठा

ठाकुरला ३७६
ठाकुरवास ७५, २८४, ४०४, ४६०, ५०३, ५२२

ठी

ठीहली दो. १०५

डं

डंडाली ३६३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डंवचो २३५

ड

डहरा १११
डहूकीयौ दो. १३१

डां

डांगावास दो. ३९, ४०, ११७
डांगीयावास २१९, ३५७, ३७०
डांवरै री वासणी ३३६
डांवरो १९७, ३२९

डा

डागसूरीयो दो. १४०
डागोळाई दो. ६७
डाबड़ी ३७१
डामड़ी बड़ी दो. ९९. १०२
डामणी-सोवलदास री दो. ९९
डामली २०३, २९०, ३७९ दो. २७८
डायटौ ५५४
डाहां रौ वास ३६६
डाहावासणी ३०१
डाहीझर दो. २७९

डी

डीगरांणो ३७२, दो. १०१, १३६
डीगा दो. ३९
डीघड़ी ३७६
डीधाड़ ४६७
डीघाड़ी खुरद २०६
डीघाड़ी तीजी २०७
डीघाड़ी बड़ी २०६
डीघोड़ ७२, ४०७, ४६७
डीडवाणो २५, ४३, ५६ दो. ५४
डीडेल दो. ४०
डीरी २८४
डीहड़ो ३७६, ३७७

डुं

डुंगर १९९
डुंगरवास दो. १७३

डु

डुगर अचला दो. १९७
डुगर छीकणवास दो. १९७
डुवरखीयौ ३८२
डुमांणी दो. ६२, १७०
डुलीयो ४७२

डूं

डूंगरपुर ६०, ७२, २०१, २७०, ३८९
दो. ६०, २१९, २९७
डूंगरसर १४३ दो. ३००
डूंगरसी री वासणी ४०९, ४३७
डूंगरसी रौ वास २५५

डे

डेघांणो (देघाणो) दो. ७४, ७८, ८१, ८३, ८७, १०९, १११, ११३, ११४ १८६, २१३
डेहड़ो ३७६
डेहरीयौ ३०६

डो

डोडीयांणो दो. १८७
डोडीयाल ३४१
डोडीयो दो १०३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डोमड़ी खुरद दो. १००, १८३
डोमड़ी वड़ी दो. १७६
डोमड़ी संढ री दो. १८१
डोभड़ी सांवलदास री दो. १८१, १८३
डोयनडी (डोईनडी) ६१, ४०४, ४१२, ४४६, ५५६
डोलासर १४०
डोहली १६६, २२३, २६४, ३७८, ४५१, ५४२
डोहली खुरद ३०१
डोहली २००

ढं

ढंढ दो. ३५७
ढंढकाव ३७७
ढंढणीयौ ४७३
ढंढ री सरेह् दो. ३१८, ३३६, ३५६
ढंढु १३६
ढंढुवास दो. ३३१
ढंढोरीयौ ३४६

ढ

ढढरवालौ दो. ११
ढसुरो ५०६, ५४५
ढही वावड़ी दो. २१०

ढां

ढांढणीयां रौ वास-कुलरीया रौ ३०१
ढांढणीयौ २६६
ढांढणीयो खुरद ३०३
ढांढरवाल दो. २२, ३३

ढा

ढाढीयां रौ वास २८६

ढां

ढांढीया वासणी दो. १४३
ढांणी २३०, ५५७

ढा

ढाढोलाई दो. १५६
ढावर ३७५
ढाबरवास २६७
ढाहो दो. ६६, १४४

ढीं

ढींकाई २१४

ढी

ढीढस २०३, २८८
ढीलंणो दो. १२
ढीहलीयो २१८

ढुं

ढुंढड़ी (ढुढड़ी) १६८, २७१
ढुंढाड़ दो. ६०
ढुंढो ४०३, ४१२

ढूं

ढूंढ दो. ३७१

ढे

ढेलांणीयो दो. ३२
ढेलांणो दो. ३१

ढो

ढोला वासणी २२६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ढोलावासणी गुढर रौ वास १६५

त

तंणावडौ ७६
तखतगढ ६७
तणवड़ो बड़ो २०६
तपा ३७७
तरली ३५८, ३६६
तलवड़ी २०
तलवाड़ो ३५६, ३६८ दो. २८२
तलसर दो. ३१६

तां

तांतीतलाई ३७१
तांबड़ीयो खुरद २३६
तांवड़ियो बड़ौ १६६, २१५
तांबडोली दो. ४१, १८६

ता

ताठीयौ दो. ३३
ताडावास ३३८, ३३६, ३८२
तातुंवास ३३२, ३८१
तापु ३२४
तापु-खेपाली ३२४
तापु-घड़सी रो वास ३२४
तापु-भलड़ा रो वास ३२४
तारावसणी २१५
तालकीयो ४१६, ४८२, ४६८, ५०७, ५४३
तालणपुर ५४३
तालोड़ो खुरद दो. १४६
तालोड़ो बड़ो दो. १४७

ति

तिंवरी ४०, २३६, ४७८ दो. २६६
तिणवासणी २४७
तिलवासणी १६६
तिला पुंवार री मेड़ी ५३७

ती

तीघरी २०१ दो. १७०
तीघरीयो २४१ दो. ६२
तीघरो २६६ दो. १२६
तीडीया वास दो. २८७
तीणावड़ो खुरद २०८
तीतरगड़ी ३७८
तीतरी दो. ४०
तीमरणी १०७
तीरजाली २६२
तीरवां १२०
तीलवाणी ६१
तीलांगेस दो. १८८
तीवण दो. १३५, १४२
तीसंगड़ी (तिसींगड़ा, तीसींगड़ी) ३७८, ३७६ दो. २३०, २७८
तीसमारीयौ ४७६

तुं

तुंवर दो. ३४८

ते

तेजा भाखरी दो ११, २८
तेजावासणी ४६६, ५०८, ५५१
तेतरवाल दो. ४०
तेनावास ३१६
तेमावास ३६०, ३६८, दो. २८२
तेखाड़ौ ६४, १०५, १४८, १५२
तेलवाड़ो दो. २२२, २२७, २५८, २८०, २८४

T	CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

तेहरीयो १६८

तो

तोगावास २७३
तोडडी दो. ६०
तोडवी २७६
तोडीयांणौ ३४८
तोलीसर १६८, २६८
तोलीसर खुरद ३०२
तौडी ४४

त्र

त्रंबावती नगरी ३८३
त्रापु १६६

त्रि

त्रिगठी दो. २२३, २२६, २४४
त्रिभटै दो. २८१

त्री

त्रीझारड़ी ४०७
त्रीपमारीयो (त्रिसमारीयो) ४०६
त्रीसींगड़ी २११ दो. २२७; २८२, २८३, २८६
त्रीसींगडी-बल्ही रौ वास दो. २३०
त्रीसमारीयौ ४२२

थ

थंपणी दो. २२३
थटोहण दो. २६२
थबूकड़ो २१७
थल ४१५, ४६६, ४७०
थलुड़ो दो. २८०
थहीया वासणी २०८

थां

थांणा री बड़ी ३४७
थांपण (थापण) १८०, २८३ दो. २२७ २५६, २८४
थांवला १३२ दो. १०५, १०६

था

थाट दो. २०४, २६०, २६१, ३३६, ३५६
थाटि दो. ६२
थाठो दो. १०५
थाढीयो ३८०
थानकी रौ वास दो. ३२
थारावासणी ४०४, ४०६, ४१२
थावर ५५७
थाहरवासणी ३७४, ३७५, ४१८, ४५० दो. ६२

थी

थीरोदा दो. ४१
थीरोदाथीरो दो. ४०

थु

थुवली३०४

थो

थोभ ३७६ दो. २३०, २७६
थोभ-कान्हा रौ बाड़ौ दो. २२८
थोभ-कांना रौ वास दो. २६२
थोभ-केलणकोट दो. २६६
थोभ-चौ. जैंतावस रो दो. २२२
थोभ-चौहाणां रौ वास दो. २२८, २८४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

थोभ–तिसीगड़ी दो. २२२
थोभ–तिसींगड़ी वाल्ही री दो. २६७
थोभ रो तिसींगड़ी बड़ो वास दो. २५७
थोभ–बड़ोवास दो. २२२, २२५, २३६
थोभ–वरसिंघ रौ वास दो. २२२, २२७, २५८
थोभ–वाल्ही रो वास दो. २८६

द

दंताला दो. २६५
दड़ीयो दो १२
दताला दो. २२९
दताली दो. २२९
दत्तणी दो. १६०
दत्ताल ३७९
दमोई खुरद दो. १८१
दमोई बड़ी दो १८१, १८२
दयालपुरो ५३८ दो. १०२
दरगाह दो. ६७, ६८, ६९, ७३, ७६, ९३, २१९, ३५६
दसोर १९५ दो. ३४
दसोर वडौ वास २०५
दहणोक (देहणोक) दो. १०, १४, ३३
दहावडी ३८२
दहीपुड़ो २०१, ३७९ दो. २२१, २२५, २४२, २७८, २८१, २८२
दहीपुड़ौ चौहांणा रौ २२६
दहीपुड़ौ जोर रौ २२९
दहोपुड़ौ वाघा रौ वास ३७९
दहीबड़ी दो. २३७
दहीयां दो. २४९
दहीयां री वाड़ी २९२
दहीयाकोहर ३८१ दो. ९, ११, १३, ३२

दां

दांतणीयौ ३२७
दांतल दो. ३१९, ३४६
दांतालो दो. २२३, २२७, २५४, २८३
दांता सुई दो. ३१६
दांतीणौ ३८२
दांतीवाड़ो ९०, २१७, २१८, २५३

दा

दागड़ी दो. ९९
दागड़ो दो. ९९, १००
दागुलो ७४, ५०८, ५५०
दाघी दो. २७०
दाड़मी ३५२, ३८२
दाती २८३
दातीलो दो. ३२१
दातौ २०२
दाधी गजणाई ४६८
दाधीयो ४०३, ४११, ४३९, ४४०
दावड़ीयांणी दो. ६२, १५६, १६२, १७३
दावड़ीयाणी खुरद दो. ११०, १६३
दाबड़ीयो दो १०३
दावड़ीयौ चौरासी रौ दो. १०२
दामा धांधल री वासणी ४०४, ४१३, ४४७
दासावास २६६ दो. २०३
दासांणीयो दो. ३२२
दासालीयो ३१५
दासोड़ी दो. ३४

दि

दिल्लीं (दिली) २, ३, १३४, १५० दो. ७४
दिहुरीयो २२९

दी

दीगावड़ी दो. १२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दीपावास ५४५

दु

दुगर ग्रचला दो १५७
दुगरां ३०८
दुगरावास ३०९
दुगसता दो. ४०
दुगोर ग्रवल दो. १००
दुगोर-छींकणवास दो. ९९
दुगोरदास दो. ९९
दुघली २७०
दुणलो ४०३, ४१०, ४३२
दुदड़ावास दो. ९९, १५७
दुदां १४९
दुदा ग्रोलगण री वासणी २३४
दुदां रो वाड़ो २०२, २८८
दुदावास ५५५
दुदाविरौ ३००
दुदीयौ ४०५
दुधली २०१
दुधवड़ ३९, ४०३, ४१०, ४२०, ४२६, ४६२, ४६५. ४७३, ४८८
दुधवड़ी ४०९
दुधव रा वास ४०५
दुधवो ३६१, ३६८
दुनाड़ो (दुनाड़ा) ३९ ४१, ४५, १०३, १३७, १३८, १४६, १५४, १६४, १६८, १६९, १९०, १९१, १९३, १९४, २०२, २०४, २८७, ३२८ दो. २१८
दुपली ३६०
दुपावास २६८
दुमरौ २८२
दुरगादास थली दो. १५४
दुरगावस ४०६, ४२३, ४६१ दो ३१
दुरगावासणी ३४०
दुरजणसल रौ वास ३१३
दुसताऊ दो ४०
दुहड़ीया वासणी ३७५

दू

दूणपुर ३९
दूधीयो (दुधीवयो) ९२, २०३, २८१, २८९, ३७५, ३७७, ४०५, ४०९, ४१३, ४५९ दो. ३१८, ३१९, ३२०, ३३८, ३५६ दो. ३४३
दूदासर ५९

दे

देऊ ३८१
देग १४० १४१
देगावड़ी दो. २७, ३३
दूधांणो (देखो डेवाणो) दो. १८६
देछु १३७, १६४, १६५, १६९, १९०, १९३, १९४, २०४, ३१८, ३७९, ३८० दो. ३२
देणो २६२
देदा मायल रौ वास दो. २२४
देधड़ो दो. ३१९, ३४३
देपालपुर १२९, १३०, १३१, १३२, १३४
देपालसर दो. ३१६, ३२७
देपासर ३३२, ३८१
देभला दो. २२२, २२८, २६४, २८५
देभावतां रौ वास ३०५
देमावस ३७७, ३७८
देराणीयो ३१५
देरावर दो. ९, ३२०
देवड़ा रौ वास २३४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

देवढो २४०, २२२, २२४, २३२, २८३
देवतसर दो. ९९
देवराजां वाली थल़ २०
देवराणीयो दो. ३३
देवलमाधा दो. १७२
देवला दो. २८१
देवलाई दो. ३४६
देवली ४२३, ४२७, ५०७, ५४५,
५५०, ५५६
देवली अखा री ४०३
देवली आंवा री ४१०, ४३२
देवली पिराग री ५०१, ५१३
देवली पीरां ७४
देवली मांडा दो. १७२
देवली हुलां री ७३, ४०४, ४११,
५०५, ५३३
देवलीया (देवलीयो) ११०, २०७,
२७३, ४७५ दो. ६०
देवलीया री नाडी दो. ३५५
देवलीयाल़ी ४७४ दो २२२, २२५,
२३८, २८२
देवलीयावास ४०५, ४२०
देसाल दो. ३२०
देसवाल दो. ९९
देवाणंदी २०२
देवातड़ो २१६
देवातु ३०७
देवाध दो. २२२, २२७, २५४, २८३,
३३७
देवाय ५०७
देवावास दो. १६२
देवा वासणी ३३४
देवासण दो. २२३, २२८, २६२,
२८४, २८५
देवासणदी २७३
देवीखेड़ा रा वास २३५
देवीखेड़ो २३०
देवीझर १३८, १४३, २०५
दो. २९९
देसुं दो. ३२१
देहणोक ३८०
देहरा दो. ३००, ३०२, ३०३,
३३९, ३४०
देहु ३३२
देहूरीयो (देहूरीया) ७५, ३००, ४९९,
५९१, ५०७, ५१३, ५१५, ५४३,
५५५ दो. १०२
देहूरीयो जाटां रौ दो. १२६
देहूरीयौ प्रोहतां रौ ३७४, ५५६
देहूरीयौ रजपूतां रौ ५५५ दो. १२८
देहूरौ १४४ दो. ३०४

दो

दोतड़ीयो २६३, ३७०
दोलू ४५
दोसीड़ी दो २७
दोहालाई दो. १७३
दौलताबाद १०३, १५०
द्राखां दो. २७९
द्वारकाजी ५, ६, ८,

धं

धंधुको १५२
धंगड़वास ४१४
धंणरी २८५
धंणलो (धणलै) २६, २७, ३५, ३८६,
३८७, ४०३, ४१०, ४३३
धंणां दो. ११२

ध

धणांणो दो. २४९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धधवाड़ो दो. ६९
धनवो १४०, ३६१, ३६८
धनाज ४०६, ४२२
धनाज रौ खेड़ौ ४७५
धनापौ दो. ६१
धनावासणी गुढा री १९५
धनेड़ी ४११ दो. १३८
धनेरीयो नील दो. १२२, १३२, १३८,
धनेरीयो सुक दो. १२३
धनेहड़ ४०३
धनेहड़ी ४४०
धमणीयो दो. १०५
धरणौ ४७८
धरघाट १
धरमदवारी २६८
धरमलणो ३७१
धरमातपुरी १७६
धरमावासणी ३४१, ४६०
धरमावासणी-अनंत री वासणी ४८०
धरीया ४६९
धवलसर दो. ११, १९
धवलहरो ४०४, ४१२
धबलेरा दो. ३५
धवां-देवड़ां री २३५
धवां रा वास २३५
धवां २२९
धवारौ दो. २७८
धवलेरीयो २८५

धां

धांण २०२
धांधलवास दो. ६२
धांधलवास ऊदां दो. १७४
धांधलवास जालप दो. १७४
धांधलां दो. ३३१
धांधुकौ १४८
धांनीयो दो. १४७
धांमणीयो दो. ६२, १७०, १७१, २०६
धांमपुरी ५०७
धांमल ३७६
धांमली ९०, २६०, २६१

धा

धाकड़ी ४३१
धाकड़ो ४१०
धाकली ४०३
धाखा ३७०
धागडवास ४०५, ४५२
धागड़ावास ८२
धाणाणो दो. २८३
धाणारी खुरद ३४४
धाय री बावड़ी १५७
धायल दो. ३२०
धायसर १४० दो. ३२०, ३२१
धारणवाय ४६
धारावासणी दो. २२१
धारीयावासणी दो. २२९, २६२, २८५
धावो २०१

धीं

धींगांणो २०२, २२२ दो. २८१
धींगावास ४६

धी

धीरां दो. २२२, २२७, २२८, २५९, २६०, २६१, २६४, २८०
धीरावास दो. २८४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धु

धुंधको १४६
धुड़हाया वासणी ४०८
धुलपुरीयौ ५४५
धुवलीयो दो. ११४
धुहड़सर दो. ३१६, ३१७, ३३?, ३५६
धुहड़ीया वासणी ४१६, ४७६, ४८०, ४६० दो. ३६
धूलकोट ५०४, ५३१

घे

घेनावास ३६३, ३६५, ४०३, ४२८

घो

घोकेलाव खुरद दो. २०५
घोरू २४६
घोलीयो दो. १६८
घोलेलाव बड़ी दो. १६६

धौ

धौलपुर १३२
धौलपुरीयौ ५०६
ध्राखां ३५५

नं

नंदवाण ५४, २२४
नंमी १०३

न

नगा री वास ३६५
नडांणो दो. ३२०
नथावड़ी दो. १७२
नथावड़ो दो. ६१
नथावेड़ी दो. १६६
ननेऊ ११६
नवेरी दो. ११, २५
नरवदे रौ वास ३०५
नरभुवास ३३८
नरमो-हरसोर रौ दो. १०४
नरसिंघवासणी ४०७, ४१७, ४८१, ४६० दो. १०६, १५०, २११
नराईणगांव १७६
नराणो ४४
नरारी जाल ८५
नरावस २२२
नलीयाद १४६
नवाई दो. २२६
नवेनगरीयो २१७
नवोनगर दो. ६३
नवोगुरौ १४६
नवसर ६६, ७६, ३२५, ३६२, ३६६, ३६८, ३७७, ३८० दो. ३४४
नवसर-गोगावास ३२५
नवसर-जाटावास ३२५
नवसर-जैमलवास ३२५
नवसर-तुवरवास ३२५
नवसर-भींवावास ३२५
नवसर-मालुणां ३२५
नवसर-बीसलवास ३२५
नवसर-सारंगवास ३२५
नवसर-सुरावास ३२५
नवसर-सैंसमल ३२५
नवसर-सोभा रो ३२५
नवसरो २०२, २७६
नहरवो २१२
नहवर दो. ३२०
नहवाई दो. २२५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नहवाहि दो. २२२
नहारणी दो. ५४
नहुदड़ो दो. १००
नहेड़वो ५४
नहेरवो २८४
नहेरवो बड़ो २८५

नां

नांदण २४७, ५३३
नांदणहाई दो. २, ३४०
नांदणहाई रो वास दो. ३५४
नांदणी गिररी रो ५०५
नांदीयो ३४८
नांदीयो बड़ो २१६
नांदीयो माहर रो ३४८
नांबरो ४७१
नांवद १२६

ना

नाखरो ४०६, ४१५
नाई ऊदारी ५३६, ५३७, ५५७
नाईली दो. २२८, २६२, २८५
नाई सूजा री ५३६, ५५७
नाकोड़ो ३६३, ३७०
नागड़ी ३३६
नागलवाय ३४६
नागेलाव दो. ७०
नागणा रो वास ३०२, ३०५
नागाणी १५, २६६
नागोर २४, २५, २६, २६, ४०, ४१, ४३, ४५, ४६, ४७, ५२, ५३, ५४, ५५, ६६, ८७, ८६, १०२, ११०, १२६, १३०, १३१, १३२, १३४, १५५, ३३२, ३८१. ३८४, ३८७, दो. ३७, ३६, ४०, ४१, ४६, ६७, ६८, १४६, १५०, १६१, १६५, १६६, ३२०
नाडीयां ८६
नाडुल ४५, ४६, ५०, ७२
नाडोल ४८
नाडोलाई ४४
नाथड़ाउ ३१२, ३८० दो ३३
नाथ रो वास १४०
नाथल कुड़ी (नाथलकुंडी) ८२, ६२, ४०७, ४१७, ४२०. ४७४, ४८३ ४६१,
नाथु री वासणी दो. २०७
नाधु रो पानो ३२२
नादणी ७४
नादीयां ३४८
नादीया बड़ो ३४५
नादीवड़ो १६५
नापावास ४०८, ४१७, ४८७, ४६१,
नावरा ४७६
नारनड़ी २०१
नारनोल १३४, १४७
नारायणो १०३
नालवो ४१
नालावास ३३६, ३३८, ३४०
नाहड़सर ४, ३५२
नाहटो ४१६, ४६८
नाहनड़ो खुरद २०८
नाहरनड़ी २२४
नाहरसो २१२
नाहरसुवा ३३७, ३३८
नाहरसुवा रो वास ३४०
नाहाड़ो ४०७
नाहाढसर ४०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नीं

नींबलांणो दो. २८०
नींबाड़ी काला १५६
नींवाज (नीबाज) ५०१, ५०६, ५०९, ५४०
नींवा रौ वास ३०५

नी

नीनाउ दो. १३
नीनेउ दो. ११, २३
नीवड़ी (नींवडी) ४१५, ४६५ दो. ६१ ९९, १०४
नीवड़ी कलां दो १०५ १०८
नीवड़ी कोठारीयां री दो. १९०
नीवड़ौ ४०६
नीबली (नींबली) ८६, ८७, १९८, २७० ३७७
नीवली ऊहड़ांगी ४११, ४३९
नींवली मंढा री ४०३, ४२९
नीवली मांढा ४१०, ४६१
नीवली रो वास २०१
नीवलीयां ८६
नीवले ५०६
नीवलो (नींवलो) ७९, २२४, २६६, २७८, ५११, ५५५, ५५६ दो. ३,
नीवलो ऊहड़ां ४०४
नीवहड़ ५५१
नीवहडी ५०६
नीवहलो गंगादास रो दो. १०९, १६३
नीवहेड़ो गीरधर रो ५०४, ५२८
नीवलां रो तलाव ३८०
नीवाहरी ५३८
नीवाहेड़ो ४०५, ५१४
नीवीयाहेड़ी २६४
नीवीया हेड़ो १९८, ४१९, ४७३
नीबोड़ो ७४
नीबोल (नींबोल) ७४, ११३, ३७३, ५०२, ५४६ दो. १०२
नीबोली ५५१
नीवोहलो खुरद दो. १६०
नीवोहलो बड़ो दो १५३
नीलकंठ २०२, २७४
नीलवो खारी दो. २९२
नीलावो ७५, ५०४, ५२७, ५४०
नीलावास ३९१
नीलीया दो. ४१, ६१, १२१
नीवाई ११५

नु

नुडुल १०३

नुं

नुंहन खुरद दो. १९४
नुंहन तीजो दो. १९६
नुहन बड़ी-१९६

ने

नेखेड़ा दो. १०
नेडणा रा वास १४१
नेडाणो १४० दो. ३२१
नेढली १९८, २९६, ३७८ दो. २७८
नेणांवास दो. १६२
नेतड़ा ३९, ३४७
नेतड़ी दो. २०१
नेतड़ौ ७९
नेता री तलाई १४१
नेता री वासणी दो. १००, १११, १६५
नेवरी १९८, २९७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नेसडो २८६
नेहड़ री सरेह दो. ३५७
नेहवाई (नैहवाई) दो. २४८, २६६, २८२
नेहडी नडी री सरेह दो. ३१८
नैणी पुरीयो दो. १०६
नैणपुरो दो. २०७
नैहड़ी री सरेह दो. ३३८
नैहवर १२३
नोखड़ो ग्राहू रो दो. २१
नोखड़ो जेसलां रो दो ११, १६, ३३
नोखड़ो भोजासर रो दो. ११
नोखा ८५, १२०, १२१, १३०
नोजावत २००
नोसर दो. ३३, १००
नोहदड़ो दो. ९९
नोहन दो. ९९,
पंचनडा ४२०, ४७३
पंचनडो ३९५
पंचनडो टाक ४०४
पंचनडो दुनारो ४१२
पंचनडो लाला ४०४
पंचायणपुरो (पंचाईणपुरो) ५०५, ५३५, ५५६
पंचायणसर ३३१
पंचीयाक दो. ३५
पंचेटीयो ४१७, ४८३
पंवारा री गढी ११६

प

पगथारी २७८
पगधारी २०२
पडबालो दो. १६०
पड़ीयाल दो. ११, २६
पचपदरो (पचपदरा, पांचपदरो) २०२ दो. ३६, २२१, २२६, २४७, २४८, २७५, २७६, २८२, ३१७, ३२१, ३२८, ३५७
पचरंडो दो. १०४
पचीपली दो. १०२
पचीपलो दो. ६२
पचीयाक २५७
पचुना ११८
पटलाद १४६, १४८, १५१
पटाऊ दो. २२७, २६६, २७०, २७६
पटाऊ खुरद दो. २२३
पटाऊ-देवड़ां रो वास दो. २५८
पटाउ बड़ी दो. २२३
पटाऊ-बड़ो वास दो. २५८
पटाऊ रा वास दो. २३१, २८४
पटाऊ रो वास तीजो दो. २८७
पटाऊ रो वास मनणां री दो. २७१
पटावा देवली ५४८
पटेलां री वासणी २३५, २६६
पटवी रो वास दो. २८७
पडुपां री वासणी दो. ११७
पतासर १६८, २६७
पथरांणो ३६४, ३६६
पदमावती खुरद दो. २०२
पदमावती बड़ी दो. १९९
पद्राड़ो दो. ३१६
पद्रोड़ो ३७९ दो. ३२९
पपिलीयो ७५
परड़ोद ११०, १२९
परवत रा खेत दो. १०८
परबतवास दो. २०८
परबतसर दो. १०३, १०४
परबतसर रा खेत दो. १६५
पलालीयो ३६५

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पलासलो ८२, ४१६, ४७३, ४६२
पलासलो आसा रौ ४६०
पलासलो खुरद ३७६, ४०४, ४१३, ४८१
पलासलो चासरे ४०७
पलासलो बड़ौ ३७५, ४०४, ४१३, ४४८
पलासलो बांमणां री ३७४
पलासलो वासा रौ ४१६, ४८१
पलासलो रांमा रौ ३७४, ४०८, ४१८, ४८६
पली ३८०
पलीणो दो. ११, १७
पलीयावास ५५५
पलीवाल दो. २२५
पलीवाल-गांगा रौ दो. ३३०
पलीवाल-डूंगरे रो वास दो. ३३०
पल्ही दो. ११

पां

पांचड़ोली छांछा दो. १४०
पांचड़ोली भांना दो. १३६
पांचड़ोली रा वास दो. १०६
पांचनडो टांक रौ ४१३, ४५६
पांचनडो लाला रौ ४५६
पांचनडो हुलां रौ ४०४, ४४७
पांचरूड़ो दो. १६४
पांचलो ३४४
पांचलो खुरद ३२६
पांचलो सीधा रौ ३३८
पांचवो ४०५, ४१२, ४८०, ४६१
पांचवो खुरद ४५०
पांचवो बड़ो ४०७, ४१६
पांचा अवदार री वासणी २०७
पांचीयावस दो. ६२
पांचोहियो ४०८, ४६१
पांचोड़ी ३२५, ३८१
पांचोड़ी-रायसल री ३२५
पांचोड़ी-वैरा रौ वास ३२५
पांचोड़ी-सिवराज रौ ३२५
पांचोड़ोली दो १३६
पांचोटौ १२६
पांडो रौ दो. ४०
पांणाऊ ३६६
पांसु (पासु) दो. २२८, २६३, २८०, २८५
पांसु सुनो दो. २२२

पा

पाईतखतगढ १०५
पाटण ३, ६, ७, ८, ६, ७०, ११२
पाटमोगढ ४०६, ४२३, ४७६
पाटलीयो ४०६
पाटवो ७४, १४६, ३७३, ५०१, ५१५, ५५६
पाटाऊ दो. २२८
पाटेलीयौ ४०४
पाटोधी ३७६ दो. २२२, २२७. २५०. २६८, २७३, २७४, २७६, २८३
पाटोधी रो वास दो. २३१, २८५
पाटोधी रो वास सीधीपा रौ दो २७२
पाडलाऊ दो. २२३, २२६, २८२
पाडली ४०७
पाडसाऊ दो. २४३
पाडुबड़ी दो. ६२
पाडुणी दो. २८८
पातां रौ वाड़ौ २०३, २६०
पातावास २७३
पातावास डूनावासणी २७२
पातीवास २८०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पातुवास ७४, २८३, ४०५, ४७३, ५०३, ५२२
पातुवास जोड मैं ४२०
पादड़ी बड़ी दो २२३
पादरड़ी खुरद दो. २२२, २२८, २६१. २८४
पादरड़ी बड़ी दो. २२७, २५४, २८३
पादरड़ो दो ३२२
पादरलां २७३
पादरू दो २२७, २२६, २६३, २८३
पादरू खेड़ो दो. २२६
पादरूजु दो. २४६
पाद्र दो. २६८, २८०
पाद्रड़ो दो. ३३७
पाद्रोड़ो दो ३४७
पादु दो. २२२
पादुब्रड़ी दो. ४१
पानड़ो लाला री ४१३
पारकर १
पाल २०८
पालड़ी १०३, ३५१, ३७२, ४६८ दो. १४, ६१,
पालड़ी खुरद २११
पालड़ी तीजी २१०
पालड़ी बड़ी २१०, दो. १६८
पालड़ी महेस दो. १८०
पालड़ी राजा दो. १७६
पालड़ी रौ खेडो ४१६
पालड़ी वजी री वासणी २११
पालड़ीसिघ दो. १०१, १४३
पालड़ी सींघले दो. ६१
पालड़ीयां २६५
पालड़ीयावास दो. १६६
पालणपुर राध ३६५
पालयाबास ५३० दो. १०२
पालाड़ीयो १६८
पालावासणी ६०, १३७, १६६, २१८
पाली ६, १०, ११, ३५, ७६, १४५, १५४, १६४, १६८ १६६, १८६. १६०, १६१, १६२, १६३, १६५, १६८, २००, २०१, २०४, २६२ दो. ३३
पालीताणे १४
पालीवाल दो. २२६
पालीयावास रासे रौ ५०४
पालीहवासेणी १३६
पासा कोलर २८३
पाही दो. ११
पिरथीपुरौ दो. ११६

पीं

पींपली २८८
पींपलोदो ५५४
पींडतां रौ वास ३३६
पींपाड़ ४५, ६१, १३७, १४५, १५४, १६४, १६८, १६६, १८६, १६०, १६१, १६२, १६४, १६२, १६६, २०३, २४४, २५४, ४७५, दो. ४३, ४८

पी

पीचाक २००
पीछोलो ३६
पीड़ढंढ कलाणो रो दो. २२७
पीड़ाढंढ दो. २५६, २८४
पीथलपुरो ४०६, ४२३, ४७५
पीथलवास १६६
पीथावास २२१ दो. ६२, ११४, १४१
पीपलण ६३ दो. ५८, २२३, २२७, २८३, २६५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीपलली २०३
पीपला दो. ३५
पीपलाउ ४११
पीपलाज ४०३
पीपलाणो दो. २५१
पीपलीयो ५५६ दो. १०६, २०६
पीपलीयो काडीया ३७३
पीपलीयो कापड़िया रौ ५१६
पीपलीयो काबड़ीयां री ५०१
पीपलीयो वीठा रौ ५०३
पीलवण ४७
पीलवो (पीलवा) ३१४, ३८१ दो. ३२, २६६
पीलायथा ८४
पीसांगण ६३, ६४, १०१ दो. १०५, १०६

पुं

पुंगल (गढ) १, ३१, ३८, ३८३
पुंगलीयो (पूंगलीयो) ३१३, ३८० दो. ३२१, ३२२
पुंदलीवास २०४

पु

पुडीयाल दो. ६
पुचीपलो दो. १७७
पुनड़ाऊ ३६६
पुनलतो दो. ३५
पुनलां री वासणी २६८
पुनलो दो. १३१
पुनलोतो दो. १८८
पुनाईता २६७
पुनाकर ४६०
पुनाखर २६८, ४४८, ४६१
पुनावटी दो. ६८
पुनावडी ३६५
पुनासर (पुनेसर) ३२७, ४८२, ५३६, ५५७
पुनासर-अरड़कमल रौ ३२७
पुनासर-गोपाल रौ ३२७
पुनासर-पाहुवां रौ ३२७
पुनासर-भाटीयां बुधां रौ ३२७
पुनासर-सांखलां रौ ३२७
पुनीयावास दो. १४६, १५५, १६१, १७१
पूना १४६, १५०

पे

पेड ३६०
पेसावस २२२
पेणाऊ ३५६

पो

पोऊ जसोल रा ३६६
पोकर ४५
पोकरजी १३२
पोकरण (पोहकरण) ४१, ४४, ४५, ६३, ६७, ७०, ७७, ८६, ६४, १२७, १३१, १३३, १३७, १३८, १३६, १४१, १४२, १४३, १४४, १४६, १६४, ३७६ दो. २, ३, ४, ५, ७, ६, ३०, ३६, २८६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, ३००, ३०२, ३०५, ३०६, ३०८, ३१०, ३११, ३१२, ३१५, ३१६, ३२०, ३२१, ३२२, ३२४, ३२५, ३२७, ३२८, ३२६, ३३१, ३३२,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६

पोटलीयो ४१२, ४५६, ४७९

पोपावास २९८, ३०८

पोलावास ४६५ दो. १५८, १६२

पोसांणी १०३

प्र

प्रथीपुरी ५०३, ५५६

प्रिथीपुरी ३७३, ५२३

प्रव्रतसर दो. १००, १०२

फ

फतैपुर ७६, १३५

फरासतपुरी दो. ११४, १७३

फलदु दो. ७३

फलसूंड १०३, ३७९ दो. २७९, ३२०, ३२१, ३२२, ३४२

फलोधी १८, ३३, ४१, ४४, ४५, ६३, ६४, ६६, ८०, ८३, ८४, ८५, ८८, ९२, ९३, ९४, ९५, १०६, १०८, ११८, ११९, १२०, १२१, १२४, १२५, १२७, १३१, १३३, १३९, १४२, १४३, १४४, १४६, १५१, १५४, १६१, १६४, १९९, ३८० दो. १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १३, १४, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३६, ७५, १४२, १४९, १५९, १६१, २९२, २९६, ३००, ३२०, ३२१, ३५०, ३५४

फलोधी पारसनाथ दो. ३९

फा

फारोलीयो ४०३

फालकी दो. १२२

फालको ३७२ दो. ६१, १०१

फालको आकोधींया री दो. १२७, १३१

फालको पींपाड़ री दो. १२७

फालको बड़ौ दो. १२४

फासाणीयो ३८०

फी

फीच १९५, २२३

फीटका वासणी १९५. २२२

फु

फुलण दो. २२२, २२७, २५३

फुलाज ४७०

फुलाद ४०७

फेकारीयो २७६

बं

बंधवो दो. ३२०

बंबसेण दो. २२५

बंवाल् (बवाल्) १५३, १५६ दो. १०५, १०६

बंसवाल ६०

बहगठी दो. ३२१

ब

बकरालादी ५५५

बगड़ी ३८, ११२, २५१, ४०३, ४०६,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

४०९, ४१०, ४२२, ४३०, ४३१, ४५९, ४६१, ४६६, ४६७, ४७४, ४७५, ४८९
वघीयाहेड़ौ खुरद ५३९
वघेवो दो. ३१९
वड़गूजर ११०
वड़नगर ९३, ९४, १४६, १४८, १५२
वड़नावो ३७९ दो. २७८, २७९, २९५
वड़ री वासणी ४०४. ४१३
वड़ली २३६ दो. ३२७, ३५७
वड़ली डूंगरां री दो. ३२७
वड़ली पीथलां री दो. ३२७
वड़ली मांडा री दो. ३२७, ३२८
वड़लू २४७, २५५
वड़लौ ३२६
वड़लौ-सांदु गेंहलोता नुं ३२६
वड़हड़ी ५५५
वड़ा नींवला ५०६
वड़ीं ४४१
वड़ीयाली ४१७
वड़ीयालो ४९१
वड़ोवास २२९, २३१
वड़ोवास माला रौ ३०७
वड़ोवास माळीयां रौ २२७
वड़ोवास वसीयांवालौ ४३७
वचीहाय १३९
वछवाय दो. ११३
वछवारी दो ९९, १००
वडगांव दो. १३२
वडरी वासणी २२७
वडाली दो. ७४
वडालो दो. १२३
वणली २९५
वणलीयौ २४२
वणाड़ ३८
वतो ३७६
वनसी ५५५
वनाड़वास २०७
वनेवड़ो दो. २२९, २६४, २८५
वरड़ाणो दो ३१८
वरजांगसर दो. २४
वरणवोथली दो. १९१
वरणाऊ दो. ९
वरणायो दो. ९९
वरणोल दो. १०३
वरणो ९२, ३७४, ४१० दो. ६१
वरनोल-वाहल रो दो. १०२
वरवड़ा री वासणी २४०
वरवटो ३४८
वरवां दो. २८१
वराड़ ११०
वरांटीयो ५४२
वरांटीयो खुरद ५२६, ५४२, ५५७
वरांटीयो बड़ो ५२६
वरि (वर) ५०४, ५०६, ५२७, ५४१, ५४२
वरीयां ७९
वरीयो ३६०
वलड़ी खुरद ५०६
वलदमारां री वासणी ३४८
वलाड़ ५४६
वलायड़ो दो. १०२
वलाहड़ो (वलाहड़ा) ७४, ३७३, ५०२, ५०६, ५१९, ५५५, ५५६
वलुपुरो ५०३, ५२५, दो. १०२, १८४
वलूंदो (वलुंदो, वलुंदा) १०२, ११३, १९९, २५९, ३७२, ३७४, ५५६, दो १०१
वलुंदो वाहलौ १६४
ववलले दो. १८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बवली ४२ दो. ५५
बवलै दो. १७१
बवलो दो. १०६
बसतवा ३०६
बसराल-बड़ीथवस दो. १४
बसराल-लेहूवी री वास दो. १४
बसीयो ७४
बहगटी सोवरज दो. ६
बहगटी हरभम ८७
बहड़ो दो. ३१६
बही कामड़ी री ३३५
बहुगुणां री वासणी ३७३
बहेड ३७३, ५१५, ५५५
बहेड़ो ५०२
बहेलवा (बहलवो) १६६, १८६, १६०, १६३, १६४, १६६, २०४, ३०५, ३०६
बहेलाव (ईंदा री चौरासी) २३

बां

बांकली दो. २८१
बांकीबाहो ३७६ दो. २७८
बांघणी ५०४
बांघाणी ५३२
बांझाकुड़ी ३७४, ५०२, ५११, ५२१, ५५५, ५५६ दो. ५०, १०२
बांणीया दो. ३२८
बांणीयां बांमण दो. ३५७
बांणीयामालो ४७०
बांणीयावास १६७, २२०, ३०६
बांणीयावास खारोलां री ४७४
बांदु रो वाड़ो दो. २३१, २६४, २७७, २८५, २८७
बांघड़ो २१५
बांनेवड़ो दो. २२२
बांमण दो. ३३
बांमणवालो ३३२
बांमणवास ३२०, दो. १०८, १५२
बांमणायो दो. १००
बांमणीयो दो. ६६, १००
बांमणू दो. ३१७, ३१६, ३२१, ३३४, ३४६ ३५६
बांमणू - बड़ोवास दो. ३३४
बांमणू- बांमणां मनाणां रो दो. ३३४
बांमसेण दो. २२१, २२८, २३५, २६२, २८१, २८२
बांवल ४३
बांसीयो ५०१, ५१४
बांहगढी दो. १२

बा

बाईड दो. १३५
बाकरा लालपुर ५३३
बाकरो ३१३
बाकीवाहो खुरद ३०३
बागाकुडा ७५
बागावास दो. २२३, २२८, २६२, २८५
बाघबसीयो ३७४
बाघल दो २४३
बाघलप दो. २२३, २७७
बाघलवस दो. २२६
बाघावास २६०, २६५, २६६, ३७६, ४०६, ४११, ४३८, ४६२ दो, २७६
बाघीयाहेड़ो ५१५
बाघीयाहेड़ो खुरद ५०६
बाघु ४६
बाघेवो दो. ३४२
बाघोर २८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बाघोरीया १६६
बाड़ल दो. ६६
बाजोली चारणां री दो १८४
बाजोली जाटां दो. १७८
बाटारू ३६६
बाडवा दो. ३४७
बाडालौ १६२
बाणासर दो. १०
बातौ बाडीयौ ४०३
बादलीयांणो दो. २५१
बादलु दो. २२४
बापड़तरो दो. २८०
बाप (वाप) १२०, १२१, १२३ दो. ६
११, १२, २३, २७, ३३
बापी ३८७
बापुनी ६०, २६१, ३७६, ३७७
बावरा (बाबरो) ५०२, ५०६, ५१६,
५३३, ५४५
बाबरी ५५५
बाभरवासणी ४६८
बाय दो. २३३, ३२०
बाये दो. २२२, २२४
बारणाउ दो. १५
बारणी खुरद ३५१
बारणी बड़ी ३५१
बारर ५३४
बारीयो ५५६
बालपुरी ५५५
बालवस ५२१
बालरवो (वालरवा, बालरवै) १३८
१४२, १६६, २१३
बालसर दो. १२
बालसमन्द ३४, १३६
बाला ३०४
बालाकुवो २१४
बालाबारी १४६
बालासर दो २८.
बालाहेड़ा ५४६, ५४६
बालुवास २६८, ५०७
बालोतरा ३६५ दो. २२१, २२६, २४७,
२७०, २७६, २८२
बालौ ३७८
बालौ धुलेट री ५१०
बालौ भाखरां री ५११
बाल्हरवा केलंण कोट (कौटेचां री चौरासी)
२३
बावड़ी २०२, २८१, ३४१, ८७८, दो.
२, ६, १२, २६
बावड़ी- कचरा री वासणी ३४२
बावड़ी- कछवाहां री वासणी ३४२
बावड़ी- जगनाथ री वासणी ३४२
बावड़ी- जैता री वासणी ३४२
बावड़ी-थाहारू आंसावत री दो. २६
बावड़ी- वना आसावत री दो. २६
बावड़ी- रा वास दो. ३२
बावड़ी-गैवारियों रो वास ३४२
बावडी सुमेल गी ५५५
बावड़ी - हेली ३४२
बावलली ५४, १६८, २६७, ३०८
बावलली दो. ६४, १७२,
१७५
बावलवी २१८
बावली (बांवली) दो. ५४ ५६
बावलु दो २२३, २२६, २३३, २६४
बाविद २०२
बावीसेरा ३५३, ३७०
बास चोथी २३८
बास पांचमो २३८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बासड़ो १०३
बासणी ६२
बाहड़सो (बाहड़सा) ८१, ३७५, ४०३, ४३८, ४६४, ४७७
बाहडमेर १ १५, १६ ४१, ४५, ६३. २१५ ३२०, ३५६, ३५७, ३५८, ३६५ ३६३, ३६४, ३६६ दो १, २
बाहरी ५५७
बाहल १५६
बाहलगांव १५३
बाहला दो २३६
बाहली ४०५, ४१३, ४६४
बाहली खुरद ७४
बाहलीयाणो दो. २२२, २२७. २८३
बाहाला ६१
बाहालो (बाहलो) ६१, १६८, १६६ १६०, १६१, २००, २०४, २५६, ३७४, ४४६, ४६५, ५५२ दो ३५
बाहालो खीवल री ५३२
बाहालौ वलुंदी १४५, १५४
बाहालो सुरायत रौ ४५७

बि

बिरहानपुर ६५
बिराई १४३

बीं

बींजवाडीयो ५५६
बींजा रो वास २५५
बींजीयावासणी ६१
बींझवाडीयो ५५६

बी

बीकमपुर दो. ६
बीकरलाई ७४, ३७३, दो. १०२
बीकानेर १८, १६, ३१. ३८, ३६ ४४, ४५. ८४, १०२, ३२७, ३८१ दो. ६, ७, ८, १५, २५, २६, २७, ३३, ४०, ४१. ४५, ४७, ५६, ५८, ६०, ३२०
बीचपुडी ४०५, ४०६, ४१३, ४५३, ५०४, ५०६, ५०७, ५३२, ५४१, ५५६ दो. १५८
बीजलीयावास ४८७, ४६१
बीजलीयावास सहे ४०८
बीजलीयो दो. २२२, २२८, २५५
बीजलो २७६
बीजाथल दो. २०१
बीजापुर १०३, १०७, १४८, १५२, दो. ७६
बीजायावासणी ३७५
बीजारूण दो. १८२
बीजावास ३५५
बीजोली दो. १०८
बीझा २०२
बीटण दो. १३४
बीटवस ५२८
बीठावास दो. १७८
बीठोरी खुरद ३७, ८२, ४१३,
बीठौजो दो. २८१, २८२
बीड सहर दो. ७२
बीबाहलो ७५
बीबौवंध ३४५
बीरड़ावास १६७, २२०
बीरणी १६७
बीरलोखो ७८
बीरांटीयां ५३८
बीसनपुर दो. ७६
बीरावास ६२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बीरोल ५२२
बीलणवास ४०७, ४१६
बीलाड़ा ७७, ६१, १३६, १४५, १५४, १६४. १६८, १६६, १८६. १६०, १६१, १६२, १६३, १६५, २००, २०३, २५६ दो. ३४
बीलावास ३६३, ४३०
बीलीयावास ४०४
बोल्हीयो दो ३१८
बीसलनगर १४७, १४८
बीसलपुर २१७
बीसांण रा वास २३५
बीसीयावास ५०६
बीसीयावास खुरद ५०६,
बीहड़नड़ौ बडौ २२४
बीहार ५५७
बीहू नीबा रौ तलाव दो. ३३

बु

बुगड़ी ३३२, ३८०, ३८१ दो. ४०
बुड़कीयो दो. ३२१
बुड़ीवड़ो ३७१
बुचकलो १५७, २४६
बुजावड़ २१२
बुटीवास ५३८
बुठीकीयो ३१२
बुढांबाई २८०
बुतावाटी दो ६८, ६६, १००
बुघवास ३३८
बुघ री वासणी दो. १००, १५१
बुघा रौ वास २३५
बुघवाड़ा (बुघवाड़ो) ६०, ११४, २६१
बुघावाड़ २००
बुरछा १६६, २४८
बुरीवाडो ३५६
बुसीयाथल ३७८
बुसीयाथली २०२
बुहरानपुर ६६

बू

बूंदी ३६, ५३, ६० दो. ६०
बूटेलाव ८२, ४०६, ४०८, ४१८, ४५?, ४७५, ४८८, ५०४
बूटेलाव वड़ो वास कान्हीयावालो ४१३
बूटेलाव रौ वास ४६०

बे

बेगड़ीयो ३२८
बेड़ीयो ३७७, ३७८
बेणीयावास ८१
बेदरलाई ३५५
बेदु दो. ३३
बेदु रौ बास दो. ३३
बेघण २१६
बेमगलौ ७७
बेराई ३८०
बेराव खुरद ३८२
बेरावास ३८२
बेरावास बड़ौ ३३७
बेरावास भटेरारी ४६
बेराही २१४ दो. २६७
बेरी २७३
बेरी तीवड़कीया री २०६
बेरू ३८०
बेसरोली दो. १०३
बेहड़ावास दो. १७०
बेहडावास खुरद दो. १७१
बेहड़ो ७४

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बेहुगटी दो. ३३
बेहेलवा ३०६

बै

बैरसलपुर दो. ६, ८
बैराथल खुरद ३३६

बो

बोघांणी ७४
बोड़वी खुरद २१६
बोडां री वासंणी ३४०
बोडीया ४०६
बोरगढ दो. ६६
बोरडी ५०६
बोरनाडी (बोरनडी) ८५, ४०३, ४११
बोरवात ११२
बोराड़ ५३७, ५४२, ५४५
बोराड़ा री केर ५५२
बोरानाड़ो दो. २७६
बोरीमादा (बोरीमादो) ४१५, ४१६, ४६६, ४७१
बोरूंदो ३७२ दो. १०१, १३१
बेरूवास २१०
बोल ८२, ६२, २४५
बोलमारीयौ ४३६
बोलमाला ४०३
बोललो दो. ६१
बोलो १४०
बोहड़ानडी ४८०
बोहड़ा नडौ तीजो २२५
बोहरावास (बोहोरावास) ६८, २०५, ३०६, ३५३, ३६८, दो. २८२
बोहोगटी दो. ३०
बोहोगटी—ईसर रायपालोत रौ दो. ३०
बोहोगटी—किसना झांझणोत रौ दो. ३०
बोहोगटी रा वास दो. ३२
बोहोगुण री वासणी ७४, ४६६, ५०८, ५५०, ५५६
बोहोड़ा नडौ ७६

बौ

बौलबी २००

ब्र

ब्रंहमी २२०
ब्रहमी सींघा वासणी ३७४
ब्रह्मपुर पाटण दो. २५३

ब्रा

ब्रामूपुरी ५४४

ब्री

ब्रीमावासणी २०६
ब्रीहानपुर (ब्रीहनपुर) १०७, १०८, १०६, ११०, १११
ब्रह्मापुरी ४६८

भं

भंवरी २०२, २७७
भंवराणी १३७, ३७७, ३७८ दो. २७६, २८०

भ

भईयो दो. ६२
भईयो खुरद दो १७८
भईयो वडौ दो. १००, १७७
भगतां वासणी २२१
भगया दो. २२३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भगवा दो. २२७
भड़ौचे १४६
भटकोहरीयो ३४६
भटनडै रा वास ४०६
भटेरो ४६
भणीयो ३७४
भदाणौ १३०
भदोणो ११०
भदोरौ ३८२
भरहड़ दो. २२३

भरहावास ४०४, ४१४
भलड़ा रौ वाड़ौ २६०, ३७८
दो. २७८
भवरड़ा रौ वास २३६
भवाद ३४७
भवाल दो. १२१
भवाली दो. १०६
भवि १०३

भां

भांडतलाव २०२
भांडवली २७४
भांडवी २७१
भांडावै रो वास ३०५
भांडीयावास दो. २३१, २८३
भांडुवास २६६
भांडु रौ वास ३१८
भांडेवी १६८
भांणीयो ३७५, ४०४, ४०६,
४१३, ४५८
भांनावास दो. १३८
भांना रौ वास दो. १०७
भांना रौ पानौ ३२२
भांना रौ वाड़ौ २०३, २६१, ३७६
दो. २७८
भांभीतलाई ३५८
भांभेलाई १६८
भांवडा ४६
भांवली चारणोंरी दो. १६८

भा

भाखरवास ५०३, ५२४
भाखर वासणी ७४, २०७, ५०७, ५४७
भाखरी १५६, २०३, २८३ दो. ३५,
३५०
भाखरी हरसोर री दो. १०४
भागवा दो. २८०
भागवौ दो. २६०, २८४
भागावसणी २५३
भागेसर ६३, ३७५, ४०५, ४०६, ४११,
४२१, ४३६
भाचरणो २६०
भाचराणो २०३
भाट री वास २३६
भाटां ३२६
भाटां री खुरद ३२७
भाटी गोपालदास री वास ४०६
भाटीयां री वासणी २०६
भाटीवास २२८
भाटेलाई खुरद ३०१
भाटेलाई बड़ी ३०४
भाटेलाव ४५७
भाटो ३५५, ३७१ दो. २७६
भाडली दो. १६३
भादल ३८१
भादलौ ३८१
भादवो दो. १०३
भादावस खारलां री २०५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भादावासीयो २०५
भादु दो. ४०
भादुकुवो दो २८२
भादुवसणी दो. ६२
भादुवसी दो. १५८
भादेडी ४३९
भाद्रवो दो. ३२०
भाद्रसा ५४९
भाद्राजण (भादराजण) ३८, ४५, ६७, ६८, ६९, ७९, ८७, १३८, १४५, १५४, १६४, १६८, १६९, १९०, १९२, १९३, १९४, १९५, १९९, २००, २ २, २०४, २७३, २८४, ३७६ दो. २१८, २४१, २९४
भाभुवासणी ३३०
भाभेलाई २६३, २७५
भायल लावी १९८
भारमल रो वास २६७
भारमलसर १२१, १२२ दो. ८
भालसरीयो ३२९
भालु ३०६
भालु जैता रौ वास ३१०
भालेलाव २६४
भाल्हीयौ ८२
भावी ४०, १३६, २४४ दो. ३४, ४३
भावी-लटण ११३
भावीवास १९९

भि

भिड़खाली २१४
भींगोड़ी ५५७
भींडर २८२
भींवड़ीया ३२८
भींवरलाई ३५५, ३७०
भींव रो गुढोदो. २२९
भींव रो गोडो दो. २६३
भींवा दो. ३२९
भींवा भोजा दो. ३१७
भींवालीयौ ३७५, ३७६, ४०५, ४१२, ४४१
भींवासर दो. ११, १२, १६, १९, २८
भींवासीयो ९२

भी

भीखोला ३७९
भींचरड़ी ५०६
भीचराड़ी ५४१
भीछालो ३०१
भीडाय २३५
भीणाय ४४
भीदाकुवो दो. २३१, २८७
भीदाकुवो-कीटणोद रो वास दो. २७०
भीनमाल ११६. ११७, १३७
भीमलीयो दो. ६१
भीरड़ाकोट ३५९, ३६९
भीरड़ा रौ वास ३४८
भीलमाल १५
भीला वास दो. ११३, १५२
भीवरड़ी पहली वीरसल रौ वासणी २०७

भुं

भुंकौ ३५४
भुंगरौ ३१६
भुंडु खुरद २३३
भुंडु बड़ोवास २३३
भुंडु रौ वास ३०४
भुंडुवास २३३
भुंडेल ३८२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भुंमादड़ौ २६६

:भु

भुकां ३७१
भुगड़ां रौ वास ३१७
भुड़हड़ दो. २८१
भुजनगर ५
भुडांणौ २४६
भुणीयांणी दो. ३५१
भुणीयाणो दो. ३१९, ३२४, ३४२, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७
भुतवो दो. १८०
भुती दो. २२३, २२५, २३८, २४१, २८२
भुपेलाव ९१
भुमलीयो दो. १२७
भुभ्रदड़ो ३७५
भुयालो दो. ९९
भुरड़ दो. २२६, २४०, २४४, २८२
भुरहर दो. २८१
भुरावासणी दो. १३७
भुरीयावासणी २६५, ३७५
भुहरी १४२, २२६

भें

भेंसड़ेचरी १४०
भेंसड़ो दो. ३२०, ३२१, ३५५
भेंसड़ो खुरद दो. २०८
भेंसड़ो बड़ो दो. २०८
भेंसेणो ४१२

भे

भेड़ ३८०, ३८२ दो. १३, ३३
भेड़ री तळाई १४३
भेटनड़ो ३७५, ४०५, ४०६, ४१०, ४२३, ४३७, ४७७
भेरीया वासणी दो. ११८
भेलावस २१६
भेलु ३८१ दो. ७, ६, २५, ३३
भेलु नाथूसर ३८१
भेवली ६१, ४०३, ४१०, ४३४
भेवलीयौ ८१
भेसलांणं १३२

भैं

भैंरूवास दो. १५१
भैंसांणौ ९१, ४०४, ४४६
भैंसेर ३३४
भैंसेर खुरद ३३४
भैंसेरवास ३३५

भै

भैरूदा ३५
भैसापो ५५४
भैसावौ ५५७

भो

भोऊड़ा ३८२
भोजक रौतलाव १४०
भोजग रो वास ३२०
भोजहरो ३६३, ३६९
भोजाकोहर ३१४, ३८१ दो. ३२
भोजावाद ५६
भोजावास २८५, ३२७, ३८१, ४०४, ४१४, ४५३
भोजासर ३८० दो. ११, १८, ३३
भोपतवास दो. १२
भोपी री सरेह दो. ३१८, ३३९ ३५६

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भोरड़ी ३७५, ४११
भोरड़ो ४०४
भोरूंदा १२८, १३६ दो. १०४
भोवादि २१६
भोवाली दो. ४०

मं

मंगला दो. २२८
मंगलो दो. २२५
मंगलीयावास दो. ६६
मंगरीयौ ३८२
मंचाल १०३
मंडलावस ४७४
मंडांपड़ो १०३
मंडायाही ३३३
मंडाव २६
मंडोवर १, २, ३, ४, ५, २२, २३, २४, २५, २६, २७, ३१, ३२, ३४, ३५, ३६, ५६, ६४, ६८, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९ दो. १, ५१, ५८
मंढली २९५, ३४२, ३८०
मढलीखुरद ४०४
मंढली वड़ी १९८
मंढली बीकां री २०२, २६४, ३७४
मंढलो ३७९, ४१२, दो. ३२१, ३५७
मंढलो खुरद ४४४
मंढलो बड़ो ४०३, ४११, ४४०
मंढो दो. ४६, ४७
मंढीयो २६५, ३१४

म

मकड़ाणो १५७
मकल री ढांणी २९८
मगेरीयो ३४५
मजल २०३, २८७, ३७९ दो. २७८, २८१
मघावलो दो. ३५०
मडावरो दो. ६२
मडोवरो दो. १०५
मणोहरं १३७
मतोड़ो १९७, ३३२ दो. ३३
मथाणीयौ ४०, २३९, दो. २०८
मथुरा १७०
मदनसोर ११०
मदा दवे री वासणी २४३
मदारीयौ ४४
मदासर दो. ३२०, ३२१
मदीयांन दो. १७७
मनाणो दो. २७०
मनावड़ो दो. ६९
ममुराबाद १५२
मराजर ४०७
मलसा बावड़ी ४०३, ४१२, ४४५
मलाणौ ४२
मलार २५०
मलारण १२९
मलारणा दो. ६९
मलारणो १२७
मलावस ४३७
मसजरो भाखर रो ४१६
मसूदा ११२
महांगड़ो दो. २४८
महड़ासी ४०४
महरावस ४५४
महलणी ५३४
महीलावाई खुरद २८६
महेड़ावाम दो १२४
महेवारी दो. २६८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महेमदाबाद १४६
महेरावण री वास ३०६
महेलड़ा दो. २२३
महेलड़ी दो. २२६, २६५, २८५
महेलवो ७४, २२६
महेलाणो ३४६, ३५०
महेलाण ४०४, ४५४
महेली ६६ दो. २२३, २२६, २८३
महेव ४०४, ४०६, ४१२, ४५७, ४७५
दो. ३५
महेवडो ४०६, ४२१, ४७६, दो. ४०,
१६७, १७०
महेवरीये दो. २४४
महेवा (महेवो) १५, १६, १८, २१, ५४,
६३, १४५, १५४, १६४, १६६,
२०४, ३५३, ३५७, ३६२, ३६८,
३७४, दो २१५ २४६, २४७,
२५३, २६३, २६६, २७६, २६१,
३२०, ३४४
महेसपुरो ३३६, ३४०
महेस रो वाड़ो २८६
महेसीयो ५०४, ५२६
महैकर ६५, ६७
महैकर रो वास-रोहाड़ा रो दो २७२
महैकरना ३५७, दो. २८४
महैकरना-रोहाड़ा रो दो. २३०
महैरीयो ३०८

मां

मांकड़वाली ५०५, ५३४
मांगल दो. २१७
मांगला दो २६२
मांगलीयावास दो. १४३, १५२
मांगलो दो. २२१, २३४, २८१, २८२
मांगीया दो. २७५
मांगीयो दो. २७४
मांझी दो. ६६
मांझेवलो ५५३
मांडणसर ८४
मांडणो ३६४
मांडपुरो ३८२
मांडरो दो. ७३
मांडलप दो. २५७
मांडल जोधा दो. १६०
मांडल देवां दो. १८६
मांडलावास ४०५, ४२०
मांडव २८, ३०, ४०, ६७, १७६, ३८७
दो. ४२ ४४
मांडवा १०६
मांडवै १०७, ११५
मांडवो दो. ३४७, ३५१
मांडवो-नरवद जोगाइत रो वास दो. ३४७
मांडवो-राठोड़ उरजन रो वास दो. ३४७
मांडहाई २१२
मांडाली ३७०
मांडावास ३६०, ३७० दो. २८२
मांडी दो ६६
मांडीयो दो. ३१६
मांडूगढ ५८
मांढलो दो. ३१७
मांढा दुधवर ४६४
मांढो ४०६, ४१०, ४३०
मांणपुरो देरांसरीयां रो ४१७
मांसुराबाद १४६
मांहगड़ै दो २७६
मांहगी दो. २२२, २६०, २८४
मांहीगी दो. २२७

मा

माऊडे ३६६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माडपुरीयो ३३८, ३८२, ४०४, ४०६, ४१३, ४५१ दो. १४७
माडापड़ा दो. २७६
माडापड़ी दो. २४६
माडापुरो दो. २८२
माडापो दो. २२६
माडावरी दो. २०५
माडाहाई २३६
माणकपुर ३८२
माणकलाव २१२, २३५
माणकीयावास दो ६२
माणकीयावास बड़ी दो. २०७, २०६
माणवो दो. १०३, १०४
माणेवां २२६
माणेवडी १६६, ३२८
मादड़ी २६६, ३७६
मादलीयो ३७३ दो. ३६, १०१
मादसीयो २४८
मानपुरा (मानपुरो) ३४०, ५०५, ५३०, ५३६, ५५२, ५५४
मानसिंघ री वासणी ४०४, ४१३
मामावास ४०४, ४१३, ४५१
मामुरावाद १४८
मालको ४२१ ४७४
मालकोट ६० ६१, ११४, दो. ६३, ६४, ७२, ७३
मालकोसणी २५६, ३७५
मालगढ ४५, ६५, ११३, ११४, २८३, ३७७ दो. ६१
मालगो ३२६
मालणा ७५
मालपुरीयो ३७३, ३७४, ४०७, ४५०, ४८२, ४६० ४६१, ५०३, ५२२, ५५६
मालपुरीयो (प्रोहतां री) ४६३
मालपुरा ४३, ६५, ३६०
मालपुरी प्रोहतां री ४१७
मालावस २४८, ४०६
मालवी ३६६
मालांसरीयो १६७
माली ३८१
माल्हणी ५०५
माल्हको ४०५
माहगड़ो दो. २२३, २२६, २८३
माहरोठ १५७
माहल बावड़ी २८२
माहव दो. ३१७, ३५७
माहवां दो. ३२६
माहवारी दो. २८५, २८८
माहवारी—पाचलोर दो. २३०
माहाजन १६
माटावां दो. ३३६, ३४०
माटीढंढ खुरद दो. १५६
माटीढंढ वड़ो दो. १५६

मी

मीठड़ीयो दो. ११, ६६, २०६, ३१६, ३४३
मीठड़ो ३६४, ३६६ दो. २२२, २५३
मीठवालीयो दो, १०३
मीठीयो दो. २२
मीठीयो (मीठड़यो) दो. १८२
मीठोड़ा दो २७६
मीठोड़ो दो. २२७, २८३
मीठो डाहीझर ३५५, ३६८
मीठोली ३४६
मीणीयारी ३७७

मुं

मुंगलो २६६
मुंडावाय २७३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुंता रूपसी री वासणी ३६३
मुंहता मानसिंघ री वासणी ४५५

मु

मुखेरी दो. ११
मुगदड़ो दो. १३१
मुगल री सराय १३६
मुगलो १६८
मुड़ीयारडौ २००
मुजासर दो. ११, १८, २१
मुटालीयो ४१०
मुठली दो. २२३, २५७, २७६, २८४
मुडलोई दो. ३३
मुडाड़ो ६७, ७०
मुडावाई २०२
मुडेलाई दो ३३
मुडेलोई मांगलीया री ३८०
मुढलौ बांमण पलीवाला रो वास
दो. ३३५
मुढलौ सोहडां रौ वास दो. ३३४
मुरकावसणी २५३, ३७३, ५५६
मुरड़ाहो ७४, ४०५, ४१२, ५०३, ५५६
मुरड़ीयो २०२, २७४
मुरडाहा ४७५
मुरढावो ४४५
मुरढाहो ५२५
मुरहाड़ो ३७३
मुराडे दो. २६६
मुरीयारड़ौ २५७
मुलड़ो १४१
मुलतान २६, १३४
मुलांपूरीयो ६२
मुलीयावास २६६, ४०८, ४१८, ४८८,
४६०
मुलेव २८३, ३७६, ३७८
मुलेव माथा री ३७७
मुसताबाद १३२
मुहमजु १३४
मुहाड़ीयो दो. १८६
मुहालीयो ४०३, ४२५
मुहीम १४७, १५२, १५५

मे

मेढली १६८
मेघांढेढ दो. ११८
मेघलावास २६६
मेघलावास खेड़र ३४०
मेघावास ३०२
मेड़ता ३५, ३७, ३८, ३६, ४०, ४३,
४५, ५६, ६०, ६५, ६६, ६७,
१०१, १०६, १०८, १०६, ११२,
११३, ११४, १२४, १२५, १२७,
१२८, १३१, १३२, १३३, १३६,
१३८, १४६, १५१, १५५, १५६,
१५७, १५६, १६३, ३७२, ३६४,
५५५
दो. ६, ३५, ३७, ३८, ३६, ४३,
४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०
५१, ५२ ५४, ५५, ५६, ५७, ५८,
६०, ६१, ६३, ६४, ६६, ६७, ६८,
६६, ७०, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६
७७, ७८, ८३, ८६, ८८, ६२, ६३,
६५, ६८, १०६, ११४, ११५, ११६,
११७, ११८, ११६, १२०, १२२,
१२३, १२४, १२७, १३३, १३५,
१३७, १३६, १४१, १५२, १६३,
१६६, १६७, १६८, १७५, १७६,
२११, २१३, २२६
मेड़ता री कोटड़ी ४५
मेरठ ११४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मेरवाड़ौ १४८, १५२
मेरी ३७७
मेरी वास दो. २२४
मेरीयावास दो. १४७
मेरो वावड़ी ५४३
मेलावास ४०३, ४११, ४३८
मेवरो ३४४
मेहकर ९२, १०५
मेहकरना ३७०
मेहड़ासी ४४५
मेहडांणो दो १९०
मेहरीयावास दो. १८९
मेहली दो २४४
मेहाकोहर दो. ११, २६, ३३, ३४
मेहाकोहर कसबै रौ दो. ११
मेहावसणी २२०

मो

मांल्दा दो. १०६
मोकलनडी ४७९ दो. २२३,२२५, २४१, २८३
मोकलवासणी ४५४
मोकलावस २१०
मोकलावासणी ९१, ४१२ दो. ३५
मोकलावेरो दो. २८५
मोकलीया वेरो दो. २२९, २६३, २६४
मोकाले दो. ४०, ११०, ११२, ११३, ११४, २१३
मोकालो दो. ७४, ७८, ७९, ८८
मोकालो वास दो. १३०
मोखेरी दो. १६
मोखो दो. २६
मोगड़ो २०१, २२३
मोगढो खुरद २४१
मोगावास दो. ११३, १९८
मोजावाद १३६ दो. ५७
मोटुवास दो. ९८, १४९
मोटेही दो. ११, १९
मोढड़ा दो. २७९
मोडरड़ी ३६९
मोडरा दो. १०८ १७३
मोडरीयो ३७, ५०५, ५३५ दो. १०८, १७६
मोडरै ३७ दो. १०८, १०९
मोडरो ७४ ५०३ दो. ४१, ७८, ८०, ८१, ८३, ११४, १६६, २१३, २२९, २६५, २८५
मोडरो गोड़ां रौ दो. १७४
मोडी ७७ दो. २२२, २२७, २५२, २८३,
मोडी खुरद २३७
मोडी चारणां री-चौरासी रो दो. १०३
मोडी बड़ी २३७
मोडी बांमण री दो. ३४
मोडी मेटनड़ो ३७४
मोडी वीकां दो १०३, १८३
मोडीथली खुटीथली २९७
मोढो ४०३
मोतां री वासणी ३९५
मोतीपुरा २८०
मोतीसरी २८७
मोतीसरी चारणां री ३७८
मोतीसरो ३७९ दो २२१, २२५, २३९, २७८, २७९, २८२
मोदवो दो. ११
मोरड़ी ३७४
मोरटहुको ३७४, ३७५, ४०८, ४१७, ४८४, ४९२
मोरढंढ २७१
मोरना बड़ी ३४२
मोरवी ५५०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोरवी खुरद ४९८, ५०७, ५४४
मोरवी बड़ी ४९८, ५०७, ५४४
मोरीया वास ३७२ दो १०१
मोरेवी ५४४
मोलावास दो. ११७
मोहथल १७५
मोहणपुरी १९८
मोहलवास दो १२६
मोहलावास ३७ दो. ११०
मोहलां री वासणी ३४०
मोहलो १०७
मोहालीयौ ४१२
मोहेड़ा ८२
मोहौला १४४
मोरड़वी ३६४

म्हे

म्हेरासणी दो. ६१
म्हैडू खीदा री वास दो. ३५२
म्हैडू जीवण री वास दो. ३५१

रं

रंडवाल ५५६
रंतु ३६६
रंमलावास दो. १४१

र

रड़कुली २१६
रड़ोद ३५१, ३५२, ३८२
रजणी ६५
रजलांणी ३५०, ३७२, ३८२
रडुग्वाल रां तगो दो. ४०
रणवास ३३८
रतकूड़ीयो ६१, २४६, ३७२, दो. १०१,
१५१
रतनकुड़ीयौ ३३८
रतनपुरो १०५, ५०३, ५२०, ५२३
रतनां री पानी ३२२
रतना री वास ३०६
रतनावास दो. १०६, १८५
रतनावासणी ३३८
रतनूं भारमल री वास दो. ३५३
रतनूं रूपसी री वास दो. ३५२
रतलाम ६३, ६४, १२६
रताऊरा दो. ४०
रता री तलाव दो ३३
रता री तलाव मांगलीयां री ३८०
रनीया कुवा ४१६
रनीयौ ३३०
रबारीयां री वास २२७
रबारी वासणी ५०७
रयड़ा री वास ४०८
रयेड़ा री वास ४०८
रलावसे २४२
रलीग्रावतो चारणां री दो. १०५
रलीयाई तो दो. १७०
रलीयावतो खुरद दो. १११, १६७
रवणीयी दो. २२५
रसाड़ ४०७, ४१५, ४६६
रसीद २०८
रसीदौ १९६
रहचाड़ी १०३
रहाणो २०२
रहांमो २०२
रहेलड़ो (रहलड़ो) ७४, ५३२, ५३४
रहैनड़ी (रहानडी) ८१, २०३, २८६,
४१७, ४८५

रां

रांकणी ४०४, ४१३, ४६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रांगपुर ५०२
रांमदेरे १६१ दो. ३३६
रांमदेहूरो दो. २६१, २६३, ३२३, ३४६, ३५०

रा

राकसी दो. २२५, २७८
राखड़ायथो ७५
राखसी दो. २२२, २३५, २८२
राखांणो २७८, २८१
राघेलाव ४२८
राघोड़ो ४१५
राजगीयावास ८२, ३७४, ४०८, ४१४, ४१७
राजगीयावास खुरद ४०४, ४६४
राजागीयावास बड़ी ४८६, ४६१
राजपींपले ७७, ८६
राजपुर (राजपुरा, राजपुरो) ४४, ४५, २२६, ३१७, ५१६
राजपुरो गुढा रो १६७
राजलवो ६१
राजलवो तेजा ४०३, ४४१
राजलवो बड़ो ४०५, ४४३
राजलवो बड़ो चोपड़ो ४११
राजलोतो दो १०५
राजवो (राजवां, राजवै) २६६, २६८, २६६, ३०१
राजा ढंढ ५२०
राजाढंढी ५०३
राजावसणी २३८
राजोद दो. १००, १५५
राजो रो ६५
राजोरीया ४६७
राठोड़ जसा रो वास ४०६
राढीयो ३८० दो. ६, १०, २५, ३३
राणसर ३७०
राणावास ३३६, ४०३, ४०७, ४१२, ४२१, ४४२, ४७१, ४७४
राणावास रो खेड़ो ४१६
राणीवाल ५०१, ५१७
राणीवाला ७५
राणीसर ६८ दो. ८, २४
रातड़ी २०३
रातड़ीयो (रातड़ीया) ७४, ३७६, ३८०, ५०५, ५३३, ५३४, ५५५, दो. ३१६, ३२२, ३४७, ३४८
रातानाडा खेत २३५
राता रो तलाव दो. ११, २४
रादुसी ३७६
राधणपुर ४४
राधा री वासणी ४०७, ४१७, ४७६, ४६२
रानीयो ३१७
रावड़ी २६६
राबड़ीयाक १३६, ५०१, ५१०, ५४६ दो १०२
रावड़ीयो २३५
रामलावास दो. ११२
रामड़ावास २१८
रामड़ावास खुरद १६६
रामड़ावास बड़ी १६६, २४८
रामचंद रो वास २५८
रामपुर (रामपुरा, रामपुरो) ७४, ६१, १५०, २३५, ३५२, ४०५, ४२०, ५०२, ५१६, ५५१ ५५६ दो. ६० १०५, २११
रामपुरो-कालाऊना रो २५२
रामपुरो रांमासड़ी रो २००

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रामपुरो-रावासड़ी रौ २५२
रामपुरो बिसाईण २२५
रामसरी दो. १७१
रामसरी ढढसरी दो. १४३
रामसेण दो. २२२, २२६, २४६, २७६, २८२
रामसीयो दो. १०२, १०३
रामसीसर-कोहर ३१७
रामसीसर-नीलवा रौ वास ३१७
रामा चारणा री वासणी दो. ११६
रामावट ७६, २३४
रामावास ७३, ७४, २६६ ५३८
रामावास खुरद ५०३, ५२१
रामावास बड़ो ७४, ५०२
रामा री वासणी ४०८, ४८७, ४९२ दो. १११
रामावासणी ८२, ९२, ३९३, ३९५, ४०३, ४१०, ४१७, ४२६, ५०७
राय कोहरीयौ ३४४
रायथल दो. २७९, २८०
रायधनपुर ४३
रायपुर ४५, ४७३, ५०६, ५०७, ५१७, ५३ , ५३४, ५३५, ५४१, ५४५
रायमल वाडो ३३०
रायमल री वासणी ४०४, ४०६, ४२२, ४४८
रायमल री पानी ३२२
रायरी ४१५, ५५६
रायरी खुरद ४०७, ४६७
रायरी बड़ो ४१४, ४६१
रायसलवास ४६ दो. ४०, ६२, १४१, २०३
रायसल री वासणी ४१२
रायेसल दो. ५०
रावणसरी पलासलो ३३३
रावणा दो ४०
रावणीयो दो. २४२, २७९, २८२
रावणीयाणी २४७
रावर ९१
रावर हासलबड़ो ३७५
रावलवास २६७ दो. १८२
रावलवो जैत रौ ४११
रावली अल ९१
रावसीसर ३१७
रावासड़ी २४४, ३७५
रावीर २५९
रास ५०२, ५०६, ५०७, ५१८, ५२५, ५३०, ५३७, ५३८ दो. १०२
रासाणीयो ८२
रासेलाव दो. २६०, २८४
रासेलाव-कालाणां रौ दो. २२८
राहड़ री सरेह दो. ३२०, ३२१
राहड़ रो गांव दो. ३१७, ३५७
राहड़ रो वास दो. ३३५
राहड़ (राहेण, रेहण) २७३ दो. ४०, ४७, ४८, ६१, ७३, ७८, ८०, ८१, ८३, ८७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११८, १५३, २१३, २८१
राहयो दो. ३७७
राहांमो २७५
राहीण दो. ९४
राहेयो दो. ३१८

रि

रिडकली १९५
रिड़मलसर ३३१, दो. ३३
रिछमाली दो. १०६
रिण दो. ३६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रिणथंमोर (रणथंमोर, रीणथंभोर) ६६, १११, २६८, १२७, २६८ दो. ५४, ६६, २६८
रिणसी दो. १०१
रिणसी गांव २४४, ३७२
रिणीसर (रीणीसर) दो. ११, २०

री

रीछमासी दो. १०५
रीछोली (रीछोली) दो. २३१, २७४, २७५, २८३, २८८
रीणधीर रो पांनौ ३२२
रीछड़ी ४१४
रीयां दो. ६८, ११२
रीसांणीयौ ४०३, ४११

रु

रुणकीयौ २५१
रुदीयौ ४१२
रुलीयौ ४१६

रू

रूडाथल ३३६
रूणलो ८२
रुपसर दो. ६
रूपाराम ५३४
रुपा री तलाई १३६
रुपा री नागल १३२
रुपावास (रुपावस) ४०७, ४१७, ४१६, ४७६, ४७८, ४८८, ४६१ दो. २८२

रे

रेपड़ावास ४१७, ४१८, ४८५
रेपड़ावास खुरद ४८५, ४६०
रेपड़ावास तीजो ४८५, ४६२
रेपड़ावास वड़ो ४८५, ४६०
रेयां (रैयां) दो. ४०, ५२, ५३, ५४, ७४, ७८, ८१, ८३, ८७, ११०, १११, ११२, १६६, २१३, २४४
रेयां कोटड़ी ४५
रेयां खुरद दो. १४६
रेयां तीजी दो. १५१
रेवड़ा २८१, २८२
रेवड़ी ४०४, ४६२
रेवड़ीया दो. १४८
रेवंत दो १६१
रेवाड़ी १२६, १२६, १३१, १३४, १४७
रेवासौ ४४
रेहनडी (रैहनडी) ४०८, ४६१
रेहड़लो गिररी रौ ५०५

रै

रैबारियां री ढांणी ५५१
रैबारीयां री वासणी ४०५, ४१६, ४७२, ५३८, दो. ११६, १६२

रो

रोईचो २०३
रोहड़ा दो २३१
रोहड़ा–आसीयां री दो. २८३
रोहड़ा- महीयां री बास दो. २८३
रोहड़ा री वास दो. २७३
रोहड़ावास दो. २८८
रोहड़ा–संढायचा री दो. २८३
रोहड़ी रो वास दो. २८७
रोहड़ीयां रौ वास दो. २८८
रोहड़ीयौ दो. २८७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रोहड़े दो. २५७, २५८, २७६
रोहड़ो मेकरण रौ वास दो. २८८
रोजा री वासणी ७४
रोहट १४५
रोढवा १६८
रोढवा का वास ३०१
रोढवौ ३००
रोहणयौ ३३१
रोहणवो ३८०
रोहतक १२८, १२६, १३०, १४७, १५२, १५६
रोहल दो. ६८, ६६, १४६, १५०
रोहल केसो दो. १००
रोहलो खुरद २११
रोहलो वड़ौ २१०
रोहाड़ी—बारेटां रौ दो. २८५
रोहीचो जाटां रौ २६०
रोहीठ (रोहठ) १५४, १६४, १६५, १६८, १६६, १८६, १६१, १६२, १६३, १६८, २०१, २०४, २६६
रोहीणवो ३८१
रोहीयो दो. ४०, ३३८
रोहीसडो दो. १०४, १६५
रोहीसो दो ७४, १२१, २११
रोहैचो पटेलां रौ २८८

ल

लखमणी ११०
लखमणीयावास दो. १२६
लखा रौ वास २३५
लटीयाल दो ४१
ललांणो दो. १८४, २२६, २८३
ललांणो वड़ो दो १०३, १८०
लवादर दो. ३५, १०५, १८७
लवेरो (लवेरा, लवेरै) ७७, ७८, ६०, ६४, १६४, १६५, १६६, १८६, १६०, १६१, १६३, १६४, १६५, १६७, १६६, २०४, ३४१
लवेरो-खींचीयां रौ वास ३४१
लवेरो-गांगावासणी ३४१
लवेरो-जाटां रौ ३४१
लवेरो-धरमावासणी ३४१
लवेरो-धांधलां रौ ३४१
लवेरो-लहुवां रौ वास ३४१
लहरीहण हेडौ ४१७

लां

लांखीया ६०
लांगोड़ दो. १६४
लांपोलाई १११, १३६ दो. ४१, १६८
लांबड़ो २०२, २७६, ४१५
लांबा २६० दो. १४८
लांबी ३७६
लांबीयां २००, ५४६, ५५१ दो. ४०, १०२, १२०, १२५, १२७
लांबो ६१, १६६, २४५ दो. ६१
लांबो जाटां रौ दो. १४६
लांबोड़ी ४६६

ला

लाखणकोहर १३६, ३१४, ३८१
लाखण कुंभ २६२
लाखावासणी ४६६, ५५१
लाखुवास ५३८
लाखोड़ी सेहल ४०६
लाछां री वासणी २४३
लाटणहेडी ४०८
लाटावासणी ७४
लाठी १३६ दो. ३२०, ३२१

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लाडणु ३६, ११०, १३०
लाडपुरा (लाडपुर, लाडपुरो) ४१४, ४६१, ४७५ दो. १०५. २०२, २१०
लाडवो दो. १२१
लाणुवास ५०६
लातरयौ ५५५
लातरीयौ ७५
लापुनड़ो ३६६
लापुवास ५३८
लालकी १६८, २७०
लालपुरो ४०४, ५०५, ५५३
लालणा दो. २६३
लालणो दो. २२३
लालव ४०७
लालसोट १३६ दो. ५४
लालांणो दो. २४३, २८१
लालीयां ३७९ दो. २४०, २७८, २८१, २८२
लालीयो दो. २२३, २२५
लाहण हेड़ा ४५८, ४८८
लाहणहेड़ो ४४६, ४६१
लाहावासणी ५०३, ५२४
लाही दो. १४२
लाहीणहेड़ा ४१८
लाहोर २०, ७७, १०२, १२४, १२५, १३४, ४६६ दो. ७६, २९७
लातरोयो ५२४ दो. १०२

लुं

लुंगीयो (लूंगीयो) दो. ६२, २१२
लुंमड़ावास ७५, ५०३. ५२५
लुंभा री वास २३६
लुंभासर दो. ११, २२
लुंभासरीयो ३२४, ३३२

लु

लुगादेवत री वास २०७
लुगेयो दो. १११
लुढावास ४०, ३९५, ४०७, ४१६, ४७६, ४७८, ४९०
लुणसड़ी (लूणसड़ो) ३५८, ३६९
लुणावास ३८, २२५, २९२, २९७, ३३७ दो. १०५
लुणावास करनोतां री २२६
लुणावास घांघाणी री २१६
लुणावास तीजौ २४३
लुणावास बड़ो १९७
लुणीयावास दो. १३२, १३४, १४१
लुणो दो. २२
लुदरड़ो (लुईवा) ३८३ दो. २५६
लुद्रवौ १
लुद्रड़ो दो. २२२
लुद्रा दो. २७९
लुद्राड़ो दो. २२७, २८३
लुलकोट ७५
लुहारी ३५२

लू

लूणकरण री वासणी दो. ११२, २१२, ३९५
लूणसर ३६४
लूणा दो ११
लूणी ६९, ३१५, ४५६, ४८४
लूणीया दो. २९५
लूणीयाणो दो. २९३
लूणो दो. ३१९, ३२१, ३४०

ले

लेच ३५९, ३६९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लेयांणे ११८
लेलावासणी २९३
लेसवो दो. १०५

लो

लोटोघरी (लोटावरी) ७५, ३७३, ५०२, ५१३, ५४६, ५५१, ५५६
लोयांणो ११८
लोरड़ी २००, ३२४
लोरड़ी खुरद ३०३
लोरडी वडी १९८
लोलटां १४२, ३१३
लोलटां-देवड़ा रौ ३१४
लोलटां-पीथा रौ ३१४
लोलटां रौ वास ३१५
लोलां रो वास ३०६
लोलावास ८२, ३३६ ४८८ दो. २३१, २७०, २८५, २८७
लोलावास खुरद ४०४, ४१३, ४५२
लोलावास बड़ौ ४०५ ४०६, ४५६
लोलावास सलैदी रौ ४१३
लोहड़ी ३७१
लोहड़ोयाह दो. ४०
लोहचो ५०५, ५३४
लोहणहेड़ो ४८४
लोहरड़ी (लोटारड़ी) ९०, २१९, २९८, ३६१
लोहरड़ी वास ३०१
लोहरी घरती ३१३
लोहवा १४२, दो. ३३९, ३५७
लोहवा-ग्रासायचों रो वास दो. ३३०
लोहवा-देढीयां रो वास दो. ३३०
लोहामाली (लोहमाली) ७३, ५०४, ५३०
लोहामौ दो. ३१६, ३१७
लोहारी २४६, ३७२, दो. १०१
लोहावट (लोहीयावट) ८०, ८३, ३८१ दो. ६, ११, १३, ३१
लोहीड़ ३७०
लोहीयांण ११६
लोहीयांण री तलेहटी ११७
लोहीयावास दो. ५०

वं

वंणाडो दो. ३२०
वंभोर २९४
वंसवाल दो. ६०

व

वगड़ दो. ६१, १६७
वघीयाहेड़ौ ५०१
वड़ री वासणी ४६२
वड़ली दो. ३१७
वड़ो दौ १४९
वजनी वासणी ४९८
वड़ री वासणी ३९५
वड़ली रौ वास दो. ३१८
वड़लु रौ वास १९९
वडां खुरद २५४
वडाली दो. ४०
वडी ४०३, ४१२
वडीयालो ४०८, ४७८
वडीयालो प्रोहतां रौ दो. ३५
वडी रा वास २५८
वडीवारा दो. ४०
वडेरण गांव १९
वडोरी दो. १७०
वणासर दो. १८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वणीया १३९ दो. ३१७
वणीयामाल ४१५
वणीयामाली सोहल ४०६
वणीयावास ४१४
वधनोर (वघनोर) ४४, ६०, ६८, ६९, ७७, ११२, १२८, १३१, १३२, १३४, ५५३. ५५७
वरजांगसर (बरजांगसर) दो. ११, १८
वरडांणो दो. ३२०, ३५७
वरडांणो खालतां रौ दो. ३३८
वरणाऊ ३८० दो. ११
वरणेल १५३
वरणो ४०३, ४०९, ४३३, ५५६
वरमांकड़ ५४२
वरवा १३७, २०२, २७४
वरसंघ रो वास दो. २८४
वरसलपुर ८६, ८८
वरांटौ खुरद ७४
वरांटीयौ वड़ौ ७३
वरीयौ ३७१
वलदु १३०
वलहीयो दो. ३५६
वलीवड़ी ५०६
वसी २८७
वसीयावास खुरद ५४०
वसीयावास वड़ौ ५४०
वहणीवाल १५५

वां

वांकनेर दो. ३२७
वांकली २८१
वांकावास दो. १२४
वांकुली २०२, २५१
वांणाडो ३६९
वांणावास ४०५
वांदु नरहर रा खेत दो. ३३
वांसा ११४, १२०

वा

वाग्रेतम ३९९
वाकीबाहौ ३००
वाखलवस दो. ६२
वागड़ीयौ १९८
वागड़ीयौ नींवली ऊहड़ां री ३७४
वागोर ३८७
वाघरै १३७
वाघल ९०
वाघलय दो. २८२
वाघार १०३
वाघावतों रा वास ३०५
वाघावास ६१, २९७, ३००, ३९५, ४०४
वाघुंदो २७८
वाघोड़ी ३६६
वाघोरीयौ २५२
वाड़ीयो ४३७
वाडावास २४९
वाणए २०२
वातो ४१०
वातौ नैवाडीयौ ४३७
वानरसर ३६४, ३९९
वानरां रौ वास ३२०
वानसी दो. १०२, १२५
वापारी (वापरी) ४०३, ४१०, ४३२
वावड़ी प्रोहत री दो. ३३
वाय ८५, दो. २७९, २८३
वारणाऊ ३८१ दो. ३३
वाराथल ३८२
वालवारो १४८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वालसीसर ३०५
वालसीसर रौ वास गोगादेवां रौ ३१०
वालाउ २६४
वालु खुरद ५४२
वालुवास ५४६
वालूवाड़ी ५४०
वालेर दो. २८०
वालेरा (पालेरा) दो. २८०
वालेलाव २६४
वालै १३७, १३८
वालो २७२, २७५
वाल्हणवास ४६८
वाल्हरवा १४३
वावड़ी ८५
वावडी बड़ौ वास १६६
वावललो दो. ६१
वावलु दो. २८३
वावद्रि २७५
वासटकीये ४०७
वासण दो २८०
वासणपी दो. २८०
वासणपी पीर १४०
वासणी ७७, ३८२
वासणी मवाडी कान्हा री ३६३, ३६५
वासणी (राईमल री) ८१
वासणै ४०३
वासणो ४१०, ४२७
वासमकांपा दो. ६१
वासर १४६
वासलपुर ४८
वासीग्रो ५५६
वाहड़सो ४१०
वाहतखड़ ४४
वाहल दो. १०३, १०४, १०५
वाहलो दो. ३२१

वि

विघड़कुवौ ३३४
विजैनगरी दो. १
विरलोखौ ३२५
विरोल ५२१

वीं

वींजावस ३७०
वींजै रौ तलाव दो. ३४
वींझपै दो. २८१
वींझवाड़ीयौ २५७
वींझा २७५
वींझीयावसणी २५७
वींठोरा ४७३
वींठोरा बड़ो ४७२

वी

वीकड़ावास ३३८
वीकमपुर दो ३२०
वीकरलाई ५०३, ५०७, ५२२, ५२३, ५४६, ५५६
वीकुंपुर (वीकुपुर) ८४, ८५, ८६, १२१, १२२ दो. ८, २७, ३३
वीकुंकोहर ८८, ३८१ दो. ३३
वीकुकोहर रा वास १६६
वीकुंकोहर-कामड़ां रौ वास ३१२
वीकुंकोहर--गोपावासणी ३२१
वीकुंकोहर-जैसिंघ रौ वास ३२१
वीकुंकोहर--डामड़ी ३२१
वीकुंकोहर-देवराजां रौ ३२१
वीकुंकोहर--पंवार रौ १६६, ३२१
वीकुंकोहर-बड़ोवास ३२०, ३२१
वीकुंकोहर-भींवां भोजा री ३२१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीकुंकोहर–माधला री वास ३२१
वीकुंकोहर--वडलां री ३२१
वीकुंकोहर-विसनीयां री ३२१
वीकुंकोहर-सरमंढीयो ३२१
वीखरणीयो खुरद दो. १८८
वीखरणीयो वड़ो दो. १०४, १८७
वीगड़ १४४
वीगड़ी ३७६
वीछुवास दो १६४
वीजाथल दो. १०५
वीजली २०२
वीजलीया वास ४१७
वीजलीयो दो २८३
वीझवाड़ीयो २१३
वीझावड़ीयौ ३७३
वीटड़ीया दो. ३२१
वीठवालीयो ३१८
वीठुल २६९
वीठू २०१
वीठोजो दो. २२१, २२६. २४५, २७९
वीठोरो खुरद ४०४, ४६०
वीठोरो बड़ो ४०३, ४१०, ४२७
वीढावासणी २३७
वीणंण २८०
वीदरलाई दो. २७९
वीनाइकीयो २०८
वीनावस खुरद २५२
वीनावस बड़ो २५०
वीरगा ९५
वीरदास जसहड़ री वास १४१
वीरछवलपुर २०
वीरमदेहूरो दो. ३४९
वीरपुर १४६, १४८, १५१
वीरमगांव १४६, १५१
वीरमपुर नगर ३५३, ३६८
वीरम री वासणी ५४०
वीरम रौ वास २२८
वीरमवासणी ५०६
वीरलो ५०३
वीराणी ३४६
वीरावास ८१, ९०, २४९, ४०४, ४११, ४३५
वीराहमी १९७
वीरोल ५४६
वीलड़ीयो दो. ३३७
वीलावास ४०३, ४१०
वीलासर ३६५
वीसलनगर १५२
वीसलपुर ४४, ६८, २१९ दो. ४३
वीसालो दो. ३२०
वीसीयावस २४१
वीहाली ३७८, ३७९

वु

वुजड़ो २५५
वुढकीयौ ३८०
वुसियाछली २८१

वे

वेउडी १३७
वेरवुवास ३२१
वेगड़ीयौ १९६
वेठवास ३३३
वेदरलाई ३७१ दो. २७९
वेदावड़ी दो. १४२, १४३, १४४, १४६
वेदावड़ी खुरद दो १४५
वेदु ३२३
वेदु-कड़वा रो ३२३
वेदु-कलावतां रौ ३२३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वेदु-जोधां रो ३२३
वेदु-नीबा रो तलाव ३२३
वेदु-राणा रौ वास ३२३
वेदु-वापीणी ३२३
बेदु-सांवत रौ ३२३
वेदु-सुरजन रो वास ३२३
वेरांणीयौ ३८१
वेरावास खुरद ३४०
वेराही ३११
वेसरोली दो. १०२
वेहगठी दो. ३२१
वेहणीवाल १५२

वै

वैंणावास दो. १३६
वैरसलपुर ८६

वो

वोढणीयो दो. ३५०
वोरीमादो ४०७
वोलमाली ४११

वौ

वौड़वो ४६
वौल दो ३५

सं

संकर वासणी ३२४
संखड़ौ ३७
संखवाय ४६
संखवाली ३७७, ३७८
संखावास ६१
संगवणी १४०
संगा दो. १०३
संभाड़ो २२२, ३७५
संथाणो खुरद दो. २०४, २०५
संथाणो सारंगवा रा दो. २११
संथोड़ो खुरद ३०८
संथोड़ो वड़ो ३०७
संधांणो खुरद दो. ११२
संवरला दो. २२५

स

सखखर ५५५
सचीग्राय दो. २६७
सचीयाय ४१५
सडालो ११०
सषोधार १२
सलावतां रौ वास ३०६
सलोसण ३७८, ३७६
सतोसीण ३७६
सथांणो दो. ६२
सथलाणे १३७ दो. ४३
सथलांणो १६६, २२२
सनरूपा री तलाई १४१
सनावड़ो दो. ३२०
सनेही दुनाड़ें में २६२
समोगर १३५
समदड़ी दो. २२१, २२५, २२६, २३४, २६२, २६४, २८१, २८२
समदड़ौ दो. १२, ३४
समदड़ौ ईडीयौ दो. २७
समदोलाव खुरद दो. १३५
समदोलाव वड़ौ दो. १३७
समसावाद १५७
समावली ७७, ८६
समीसरी ३६२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

समुजो २०३, २६१
समुहाड़ीयौ २४८
समेल ५५५
समोरवी ५२६
सर ८५, २००, २२३
सरगीयौ ६१
सरगीयौ वड़ौ २५२
सरणवाड़ौ दो. १००
सरणु दो. ६२
सरनावड़ो दो. ६६
सरवड़ी दो. २७१, २८४
सरवड़ी-मनांणो दो. २३०
सरवड़ी सींधलांरी २६३
सरमहीयौ १६७
सरवण री सरेह दो. ३१८
सरवाड़ दो. ४६, ७०
सरसो १५२, १५५
सरेचां २००, २२४
सलणु ३७०
सलांणो खुरद दो. १०४
सलेमाबाद ४५, ५४, १३६
सवडाल १३८
सवराड़ दो. २६७
सवालख दो. ३६
सहलवौ खुरद २५३
सहवाज ४१०
सहसरांम दो. ५६
सहुपुरौ ४०६
सहेलड़ी २८४
सहेराबाद ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३६१, ३६२, २६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७
सहेसड़ो दो. ४०
सहैजा री वासणी दो. १४७
सहैदरी २०२
सहैदरीयो २७८
सहैबाज ४०३

सां

सांईदास रौ वास २६७
सांईसर दो. ३३
सांउपुरौ ४०३
सांकड़ीयौ ३७६
सांखड़ो ६०
सांखला रौ वास ३०६
सांखीड़ो २६२
सांगरीया २०७
सांगावसणी २२१
सांगावास ७५, ५०१, ५१२, ५४७
सांचोर ४३, ६४, १०६, १०७, १२४, ३८८ दो. २१८
सांझावास दो. १५७
सांझी २०१, २७१
सांझी याली ३६१, ३७१
सांडवास २६६
सांडावास दो. ६८
सांडी २६६
सांडीयो (सांडीया) ६२, ४०३, ४१०, ४२२, ४२६, ४७४
सांडीली १३०
सांदुड़ौ २६, ३८. ३२७
सांदुवां रौ वास २५५
सांपो ४०५, ४१३, ४६०
सांबरो ३६६
सांभर ४०, ४३, १२६, १३२ दो. ५४ ११५, ११६
सांमसीसर दो. ३५३, ३६८
सांवड़ाऊ ३८०, ३८१, दो. ६ ११, १५, ३३, २६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सांवणघी दो. १२
सांवतकुवौ ५२
सांवतकुवो खुरद ३४६
सांवतकुवौ बड़ौ ३४३
सांवत री वास १४१
सांवरलां दो २२३, २३८
सांवराज १४३
सांवरा री वासणी २३५
सांवलतो खुरद १९८, २६३
सांवलतौ वडो २०२, ३७५, दो. ३५
सांवलीयावास दो. १०९, १६२
सांवलीयावास खुरद दो. १६३
सांसर ३७७

सा

साकड़ीयो दो. ३२१, ३४८
साकड़ो (साकडै) १४१, दो. ३१९.
    ३४०, ३५४
साकदड़ो ३७६, ३७७
साजन गांव १४१
साडारड़ो ४०३, ४३५
साठीको खुरद ३३५
साठीको बडो ३३५
साढरो खारीयो ४०४
साणोसणी दो. २३१
सातलमेर ४१, ४५, ६३, ७७, ९४,
    १०५, १२४, १४६, १५१, १५४,
    १६४ दो. २, ४०, ६५, २९३,
    २९४, २९७, ३००, ३१२, ३४५,
    ३४९, ३५४, ३५६
सातलवास ६१ दो. १४४
सातसेण २४४
सातोसण दो. २७८, २८७
सातोसणी दो. २६८, २८४
सादड़ी दो २८१
सादां रौ वास दो. ३४९
सानेही २६१, ३७७
सापो ३७५ दो. ३५
सामोखी ५०४
सायरवस दो. ६२
सायेली दो. २२३
सारंग खांनीया री खेड़ौ ४६८
सारंग रौ बास २५८
सारंगवास ४०४, ४१४, ४५९, ५०६,
    ५३५ ५४५, दो. ११२
सारंगवासणी दो. ६२, ११७, ११९
सारगीयो तीजो २५४
सारण ४०६, ४१५, ४६५ दो. ६
सारसड़ दो. १५३
सारोड़ी पटाऊ दो. २६१
सासंडौ ३८१
सालबड़ी १९५, २१२
सालवो २३०
साला ४०
सालावास १३६, १३८, २२४, दो. २६७
सालेर मालेर १४९
सालोड़ी २२, २४, २५
सावराज ३८१
सावरीज दो. ११, १५, ३२
सावरीजी दो. ३२१
सावरेज दो. ३२
सासरदंद २८३
साहली ३८, २७२, ३७७
साहाबाद १५२, १५५
साहीवाग १४४, १४९

सिं

सिंढाइच मेहका रा वास दो. ३५३
सिंणगारी १९९, २७४

सि

सिकारपुर २००

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सिणघरी ३५७, ३६३, ३६६, ३७०
सिणली २३५, ३५३, ३६१, ३६८
सिणली पंवारां री २१४
सिणलो २४९, ३७२, ४०३, ४११, ४६३, ५५६, दो ३६, १०१
सिणेर दो. २५६
सिघपुर दो. २८९
सिरमालीयौ ३७१
सिरहारी ४५९
सिरीयारी ४०३, ४०७, ४११, ४५४, ४६७, ४७०
सिरीयारी महीली ४१५, ४७१
सिरीयारी-सोझत री दो. ६२
सिलारी २४६
सिवराज रौ वास दो. २२४
सींचणौ (सींचाणो) ४०४, ४१४, ४५९
सींचीयाई ४६९

सीं

सींघलां ३८ दो ४८
सींघला नडी ४९९, ५०८, ५४८
सींघलावटी दो. २३५. २३६, २३७. २३८, २४०, २४१
सींघवा ९४
सींहथली दो. २३०, २७३, २८४, २८७
सींहनद १३३, १३४

सी

सीकंदार ७६
सीकारपुर २७०
सीचीयाई ४०६
सीणतरौ ३५६
सीणपा ३६२
सीणला ३७३
सीघपुरौ ५५६
सीघसर ५३६
सीघा वासणी ३७५, ४०४, ४५५
सीनावड़ीयो दो. ३१९, ३४६
सीनावड़ो दो. ३१९, ३४१
सीपावास ३६८
सीमालीयौ ३५४, ३७१
सीयल मखरी दो. १०४, १८१
सीरगीयौ खुरद २५३
सीरड़ दो. ९
सीरढ दो. १२, ३३
सीरणी दो. २२५
सीरसलो दो. ९८, १४२
सीरहड़ ८५
सीरहढ दो. २७
सीराड़रो ४११
सीराणो दो. २२२, २३७, २८१, २८२
सीरावणो ५०५, ५५३
सीरासणो दो. १६८
सीरियारी वासणी ४७२
सीरीयावास दो. २०४
सीरेण दो. २२७
सीरोड़ी २१३
सीरोही ७०, ७८, ७९, ८९, १०१, १०२, ११७, ११८, १३७, १३८ दो. ८, ६९, ७०
सीलको ९२
सीलां रौ वाड़ौ २८३
सीली ३३३
सीलोर दो. २८१, २८२, २८६
सीलोर रा वास दो. २३०, २६६
सीवणीयो ३७३
सीवरखीयो २९६, ३७९, दो. २७८
सीवराड़ ७३, ४०३, ४०९, ४२५, ४५५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सीणली २०१
सीणेर दो. २२२, २२८, २८४
सीतरीयो ५०३
सीववाड ४०६
सीवाणागढ (सीवाणॅ सीवाणो) १५, १६, ४३, ४५, ६६, ६७ ६९ ७०, ७३, ७७, ८३, ९३, ९५, १०५, १२४, १२५, १३१, १३३, १४२, १४६, १५१, १५४, १६०, १६४, २६८, ३७८, दो. ३६, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२३, २२४, २३०, २३२, २३३, २३४, २३५, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६ २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१ २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८१, २८२, २८३, २८६, २९५, २९६
सीवाणीयो ४१३, १३५
सीवणो (जैतमाल वालो) ३९
सीवाली दो. २७८
सीसरवादो ४०४, ४११, ४३६
सीसवादो ९१
सीह दो. १२
सीहराणा २०२, २७९ दो. २८१
सीहा चारण री वासणी दो. १४७
सीहा री वासणी दो. १०७, १५२
सीहा री वास दो. ३२
सीहार ९१, ४०३, ४०९, ४२५
सीहाणीयां री वासणी ३७१
सीहारा दो. १०१
सीहारो ३७२
सीहारो खुरद १३६
सीहारो पाद्र ३७६
सीहारो वडो दो. १३४
सीहावास दो. १३६
सीहासड़ो दो. २००
सीहै रो पदर २८४
सीहू ४६
सीहू केमो दो. १००
सीहोणीग्रां री वासणी ३६२
सीहोर १४

सुं

सुंडा रो वास ३०६
सुंडावास दो. १५०
सुंतलो २१०
सुंदयो दो. २२३

सु

सुईयो दो. २६४, २८५
सुकनो खेड़ो दो. १२, २४
सुकमटीयो ३१८
सुकरलाई २८६
सुकालवो ९०
सुखावासणी दो. १६१
सुगालीयो ७९, २०२, २७७, ३७५
सुजा रो वास २३५
सुडां रो वास २२८
सुदवाड़ो दो. १०६
सुधदंती (सोभत) ३८३
सुमेर मांगलीयां रो दो. ११८
सुरढंढ दो. ११८
सुरसुरे १३२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुराणी खुरद ३१०
सुराणी बड़ी ३०८
सुराईतो (सुरायतो) ७१, ६१, ४०३, ४०६, ४१०, ४१६, ४२८, ४७२, ४८१
सुरातो ४४७
सुरावास ४२२ दो. १०४, १०५
सुरीयावास ५०७, ५४१
सुलीयो ३७७
सुवांणीयो दो. १०१
सुवेरी ३११
सुहरीया दो. २०७
सुहली (सुइली) दो. २४१
सुहीयो दो. २२६

सू

सूंडाथल ३८२
सूरजमल री वास २३८
सूरजवासणी २१७
सूरत १४६
सूरपुरो (सूरपुर, सूरपुरा) १६६, २०६, २३०, ३५०, ३५२, ३७८, ३७६ दो. १०४, १२५, १६३, २२३,२२५, २४१, २७८, २८३
सूरीयावासणी ४०५, ४१६

से

सेखसर दो ६, ३००
सेखालो ३१६
सेखालो- धावड़ास ३१७
सेखालो- देवड़ा ३१७
सेखावास ६५, ४०३, ४१०, ४३४
सेखावासणी दो. १३७, १४३
सेखास ८७, १४३ दो. ३३
सेणँ १३७, १३८
सेतरावा (सेतरावो) ३३, ३४, १६५, ३१२, दो. ३२०, ३५०
सेत्रावा (सेत्रावो) १६, १६४, १६६ १६०, १६३, १६४, २०४, ३१४ दो. ३२
सेभुंजो १४
सेपाउवां री वासणी ३१०
सेत्री ३६७
सेरड़ीयो ३३६
सेरड़ो ३१२
सेवकी ४१
सेवकी बड़ी २१५
सेवड़ो ८५
सेवरखीयो ३६०
सेवाउ ३६५, ३६६
सेवाली ३७८, दो. २२३, २२६, २४५
सेवालीयो ३१५
सेवालो २३० दो. २८३
सेहड़ी ३६४, ३६६
सेहवाज (सहैवाज) ४२२, ४३१
सेहरीयो (सेहरीया) दो. १२३, १२५, १२८
सेहरीयो वास दो. १८३
सेहलो दो. २२२, २२७, २५२, २८३
सेहवासी दो. १०३
सेहसरांम ५६
सेहूरियो दो. १०२
सैंमर दो. ४२, ४३
सैदा ७१

सो

सोउपुरो ४११
सोई ३१७
सोभत २, ३, २६, ३२, ३५, ३६, ३७, ३८, ३६, ४१, ४२, ४३, ४५, ६७, ६८, ७१, ७२, ७७, ७८, ८१, ८३,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८६, ६०, ६१, ६३, ६५, ६६, १०१, १०२, १०५, ११८, १२४, १२५, १२७, १३१, १३३, १३६, १४६, १५१, १५४, १५६, १६३, ३७४, ३८३, ३८४, ३८५, ३८७, ३८८, ३८६, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६७, ४००, ४०२, ४०३, ४०८, ४०६, ४१८, ४१६, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२६, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३६, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४६, ४५०, ४५१, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६ ४५७, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६६. ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७६, ४७७. ४७८, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८६, ४६५. ४६६, ५५६ दो ६, ३५, ६६, २६७

सोभ्रत री भाखरी ऊपरली कोट ३६

सोभ्रारो ३५८

सोढपुरो ५५७

सोढां कोहर दो. १२, २७, ३३

सोढां री सरेह दो. ३१८, ३३६, ३४०, ३५७

सोढा बांभण रो वास ३०२

सोढावास (सोढावस) ३७६, ३७७ दो. १४८, २०६

सोधावास दो ११७

सोधावासणी ४१२

सोनगरी २६६

सोनवस ३७१

सोफड़ो २१४

सोवलो ३४१

सोभड़ावास ४१८, ४८६, ४६२ दो. ३५

सोभा चांदर री सरेह १३२

सोभांणो ३८१

सोभावास ३५६, ३६८, ५०७

सोमड़ावस ४०८

सोमड़ी दो. ४०

सोमढंढ २६१

सोमड़वाल दो. ४०

सोमसीसर ३१६

सोमावास (सोमावस) २६६, ५०३, ५२०, ५२१, ५४६, ५४७

सोयंतरो २६६

सोयली दो. २२६

सोयालो ३४२, ३४५

सोग्ठ २४

सोरम १५७

सोरभजी १३५

सोरांणा १५२, १५५

सोलंकोया री कोहर ३१५

सोवणदी दो. ३२

सोवणीवो (सोवाणीयो) ३७२, ३७५, ४०४, ४०६, ४५७ दो. २८

सोवरलां दो. २८२

सोहण १६

सोहली दो २८२

सोहवी ३२६

सोनेवी ६०

ह

स्यावलेजी १५७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हं

हंसार १५१, १५५
हंसावस ४०६, ४७५

ह

हथुंडी ३४८
हमरलाई ५५४
हमावस दो. ३५
हमीरवास ४०४, ४१३, ४५८
हर्मीरसर दो. ३
हमीरांणो ३३६, ३८२
हमीरांणो खुरद ३४०
हरचंद री वासणी २३५
हरढाणी ३४३
हरढाणी ५५७
हरढावास ४०३, ४१२, ४४२
हरनालो–वाहल रो दो. १०४
हरनावो दो. १०३
हरनावो–बाहल रो दो. १०२, १०३
हरवाई री वासणी २५४
हरभु री वासणी दो. १३६
हरभुवासणी दो. ११०
हरभुसर ३३२
हरमाड़ा ५२, ६०, ६५, दो. ६०
हरयापुर ५३४
हरलाई ३३५ दो. ३३
हरस ६१, २५६
हरसवरणो ३७५
हरसाल ३८२
हरसाला ३८२ दो. ६८
हरसीयाहेड़ो ४०५, ४११, ४४४, ४७३ दो. ३५
हरसीयाहेड़ो खुरद ४०५, ४२०
हरसोर दो. १०४, १०५
हरसोलाव ४६
हरावास १६८, २७१
हरीयाडांणो २४५, ३७२ दो. १०१
हरियामाली ४०३, ४११, ४६८, ४७६
हलवद ५२, ५५
हवेली ७६, ६०, १२६, १४५, १५४, १६४, १६५, १६८, १६६, १८६, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६६, २००, २०३, २०४ २३६ दो. ७३, ७८, ७६, ८७, १११, ११४, ११६, २१३
हसलपुर ३७४, ३७५

हां

हांमावास २६२
हांसल खुरद ४१३
हांसावास दो. १५०

हा

हाई हारावास ५०६
हाजावास २८४, दो. २८१
हाजावासणी २८१
हाजीवाल ७४
हाजीवास ३५७, ३७०, ५०४ ५२७
हापत ८२, ४४७
हापाली दो. ३२१
हायत ४०५, ४१४
हारावासणी ४८५
हासलपुर दो. ३५
हासलपुर वडी ४०४, ४१२, ४४६
हासलपुर खुरद ३७४, ४०४, ४४७
हासावस ४२३ दो. ६२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हि

हिमार ७१
हिरणखुरी दो. १३०
हिरणपुरी दो. १३७

हीं

हींगाणीयो ५०६
हींगावास (हीगावास) ८१, ४०४,
४१२, ४४८
हींगोला ४७५
हींगोला री वासणी ४०५, ४२०, ४७३
हींगोली १९७, ३५०, ३५२
हींगोलो २००, २९९, ३७५
हींगोलो खुरद ९०, २९२, ३०१, ३७७
हींगोलो बड़ो ९०, २९१
हीगवाणियो (हींगवाणियो) १९६,
२५१, ५४६ दो. १०३, १२७, १८४

ही

हीडवांण १२६, १३५, १७० दो. ५६
हीदावास दो. ६२
हीदावास गुरड़ी री दो. २१०
हीदावास चोधरीयां री दो. २०६
हीमावास २०२
हीयादी रा वास ५४५
हीरकी री ढांणी ३९९
हीरकीसंणी ३६४
हीरादड़ो दो. ६१
हीरादेसर २१४
हीरावस ४१९, ४८९, ४९२
हीरावस जोगीयानु ४०८

हु

हुनावास खुरद २४३, ५०३
हुनावास वड़ा ५५०
हुनीयावास वेड़ा ५०२
हुपार्ला दो. ११
हुवा ३८

हू

हूणगांव ४११
हूणगांव खुरद ४०४, ४१२, ४४९
हूणगांव वड़ो ४०४, ४०९, ४५६

हे

हेमलीयावास ४५४
हेमलीयावास खुरद ४०४, ४१४, ४६४
हेमलीयावास बडो ४०४, ४१३
हेमावास २९७
होठलु दो. २२१, २२५, २२९, २३९
२८१, २८२

हो

होडु ३७१
होडु खेड़ा ३५७
होटलू दो. २६२, २६३
होपाली दो. १६

———

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

परिशिष्टों की नामानुक्रमणिकाएँ

स्त्री व पुरुष नामानुक्रमणिका :

[नोट—३५६ से ५०१ तक पृष्ठ सं० द्वितीय भाग की तथा ५५६ से ६०२ तक को प्रथम-भाग की है !]

अं

अंतरंगदे खंडेला री कछवाही (म जसवंतसिंघ री राणी) ५८३

अ

अकबर पातसाह ४२१, ४२२, ४३२, ४३३, ४७३, ४६०
अकबर साहजादा ४६६
अखेराज सि० ४५३
अखैराज राठोड़ ४१६, ४६८
अखैराज रिड़मलजी रा राठोड़ ४७५
अखैराज वीठलदासोत ४६६
अखैसिंघ अमरसिंघोत देवड़ा ३६५
अखैसिंघोत सिरदारसिंघोत चवांण ३८६
अखो जोसी ४४७
अगरा मुग ४२०
अड़मल 'अड़मलोत' रिड़मल रा राठोड़४७५
अचलदास राठोड़ ४६८
अचलसिंघ गुलाबसिंघोत चवांण ४०२
अचलसिंघ राठोड़ ४६५
अचलो दो. ४३३
अचलो राठोड़ ४७२
अजबसिंघ चवांण ४०६
अजबसी भंडारी ४७६
अजीतसिंघ राठोड़ ४७३
अजीतसिंघ वीठलदासोत ४६६
अजीतसिंघ सोमसिंघोत चवांण ४०४
अजीराय ४६४
अड़कमल चूंडाजी रो राठोड़ ४७६
अणदसिंघ दौलतसिंघोन चवांण ४०६
अणंदसिंघ राठोड़ ४७३
अतमाहात दौला ४१३
अनरुधसिंघ हाडो ४६८
अनाड़सिंघ पवार ५७७
अनाड़सिंघ राठोड़ ४६५
अनाड़सिंघ वीठलदासोत चांगावत ४६६
अनोपसिंघ किसनगढ़ रो ४६८
अनोपसिंघ सांवलदासोत चवाण ३६२
अनोपसी भडारी ४७६
अब्दुल कासम ४१३
अभा मानावत चारण ४०७
अभैकरण राठोड़ ४६६
अभैराज कानोजी रो राठोड़ ४७४
अभैराज राठोड़ ४७१
अभो भाखरसिंघोत चारण ४१०
अभो पंचोली ४७६
अमर केसवदास भाटी ३६२
अमरसिंघ चन्दरावत ४६७
अमरसिंघ दुरगादासोत चवांण ३६७
अमरसिंघ राठोड़ ४७१
अमरा राईसिंघोत रामदासोत रा राठोड़ ४४६
अमरो चौधरी ४१६
अमानसिंघ राठोड़ ४६६
अमीजी नूरमहेमद रोपड़ी ४१४
अरण रखेसुर ५६०
अलसिंघ भोजराजोत चवांण ३६७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

अलाउदीन पातसाह ३६०, ४१३, ५००
अलावगस ४५३
अलीबल मुरीद चुं ४५८
अलीसेर बिहारी ४०८
अलुखां ४१६

आ

आंजणदास खिड़िया चारण ३८६
आईदान दलपतजी रा राठोड़ ४७७
आईदान राठोड़ ४६५, ४६६
आईदान चारण ३६४
आईदान वीठलदास रा राठोड़ ४७५
आणदकवर बाई ४५०
आणंददे (राव अमरसिंघजी री बहू) ४५१
आणंदसिंघ ४२६
आतमारामजी बाबा ५७०
आतमारामजी महाराज ४७०
आयस देवनाथ ५७३
आयस भींवनाथ ५७४
आलमसा जलाल ४५७
आल्ह पाल्ह पंवार ५००
आसकरण बभूतसिंघोत चवांण ४०४
आसकरण भंडारी ४७६
आसकरण राठोड़ ४६६
आसकरण सूरतसिंघोत चवांण ४००
आसनाये री मां (पोहोकरणा बामण) ५६५
आसी छोकरी ४५२
आसो जैसावत भाटी ४३४
आसो गोड़ ४३३

इं

इंदरकरण राठोड़ ४६६
इंदरभांण राठोड़ ४७१
इंदरसिंघ राठोड़ ४६६, ४७०, ४७१

इ

इमरतराम नाजर ५४७

ईं

ईंदरकुंवर (राजा सूरसिंघ री बेटी) ५८७
ईंदरमणी जधेडा रो बूंदेलो ४६६
ईंदरसिंघ ४२२
ईंदरसिंघ अमरसिंघोत राठोड़ ४७३
ईंदरसिंघ राठोड़ ४६८, ४७३
ईंदरसिंघ सीसोदीयो ४६६

ई

ईदरदम उडीसा रो ४६२
ईनायतखां ५८४
ईसर चवांण ३८८
ईसरजी राठोड़ ४७२
ईसरदास कुसलसिंघ जोधावत चवांण ४०६
ईसरदास सोभावत ४४७
ईसरीसिंघ राठोड़ ४६८

उ

उत्तमचन्द कानूंगा ३७३
उदड़ो कूंता रो ३८५
उदैचन्द ब्यास ५६६
उदैभाण राठोड़ ४७१, ४६७
उदैभाण लखधीरोत ४६६
उदैभाण बीठलदासोत चांपावत ४६६
उदैराम दीवली ४६५
उदैसिंघ उरछी रो बूंदेलो ४६६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

उदैसिंघ कीलाणसिंघोत चवांण ३६६
उदैसिंघ राठोड़ ४७०, ४७३
उदोतसिंघ भदोरीयो ४६८
उमेदजी खींची ५७६
उरजणसिंघ राठोड़ ४६८

ऊं

ऊंड़ा ४७६

ऊ

ऊगरसेण ४४०
ऊजीरबगस नाजर ५७६
ऊदड़ीयो कूंतो ३८४
ऊदवमी सींभूजी रो ४६६
ऊदांबाई (राव वागा री वहू) ५६१
ऊदैभाण मुकनदासोत राठोड़ ४१६
ऊदैराज राठोड़ ४७१
ऊदो वोव ५६२
ऊमादे भटीयाणी (राव मालदे री राणी) ४८०
ऊमा भाट ४४६
ऊमेदकरण राठोड़ ४६६
ऊमेदसिंघ राठोड़ ४७१
ऊमो भाखरसिंघोत चवांण ४०६
ऊमो लालावत चवांण ४०६
ऊहड़ जोपसाजी रा ४७७

ओ

ओदुजी दिखणी ४६३
ओपसिंघ चवांण ४०६
ओरंगजेब पातसाह ५६२ दो. ३६१, ४१५, ४१६, ४२५, ४३७, ४५४, ४६६, ४६६

कं

कंवर अबुखां सिरदारसांनोत ४००
कंवर अभैसिंघ ४१२
कंवर अमरसिंघ ४२२
कंवर उदैसिंघ ५८२
कंवर करण उदैपुर रो सीसोदीयो ४६४
कंवर कीरतसिंघ ४८६
कवर गजसिंघ ४१४, ४१८, ४७८
कंवर चंद्रसेन ५८२, ४३८
कवर जगतसिंघ ४५२, ४५४
कंवर जगतसिंघ मानसिंघोत कछवाहा ४२२
कंकर जसवंतसिंघ ४४६
कंवर जैसिंघ ४४४
कंवर पिरथीसिंघ ५८३
कंवर प्रथीसिंघ जोधा ४७०
कंवर प्रीथीसिंघ ४४७
कंवर फतैसिंघ ५८५
कंवर वागा ५६०
कंवर भारतसिंघ ३६०
कंवर भोपत ४३५
कंवर रामसिंघ जैसिंघोत ४८६
कंवर वखतसिंघ ५६५
कंवर वेणीदास अरजणा ३७०
कंवर समरथसिंघ ४६६
कंवर सूरजसिंघ ४३५

क

कछवाई राणी (कल्याणदास राठोड़ री राणी) ४४३
कनीराम राठोड़ ४६८
कनीराम विजैसिंघोत चवांण ४०६
कमालखां ३६८, ३८६
कमालखां दीवाण ३६२, ३६३, ३६८, ४१४, ४१५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कमालखां विहारी ४२०
करण (धायभाई) ४५१, ४५२
करण राठोड़ ४६६
करणसिंध विजैसिंघोत राठोड़ ३६१
करणाजी ४५३
करणा धायभाई ४५७
करणायची खोजो ४५३
करणीदान बारठ ४८७
करणीदान राठोड़ ४६६
करणो सोलंकी ५८७
करणो राठोड़ ४७२
करणोजी 'करणोत' रिड़मलजी रा
राठोड़ ४७५
करता खुबदान नारखांनोत चारण ४०८
करता जमांवत चारण ४०७
करनीजी ५५६
करमसी जोधाजी रो राठोड़ ४७५
करमसी राठोड़ ४६२
कला रायमलोत ४७०
कलु ४५३
कलो कछवाहो ४६१
कलोजी 'कलावत' पंचाण रो राठोड़ ४७५
कल्याणमल राठोड़ बीकानेर ४६०
कसरी ५७६

कां

कांधल ईंदो ४३३
कांजमखांन नवाब ३६१
कांनड़दे सोनगरा चवांण ३६०. ४१३,
५००
कांनजी राठोड़ ४७१, ४७२
कांनसिंघ राठोड़ ४४०
कांनसिंघ रामसिंघोत चवांण ३६७
कांनसिंघ सूरजमलोत चवांण ४०२
काना त्रिवाड़ी ४५३
कानी माली ४०८
कानोजी चूंडाजी रा राठोड़ ४७६
कानो जैंतसीहोत राठोड़ ४३३
कानो मानावत चवांण ४१०
कानोजी रायमल रो राठोड़ ४७४
कामरेखा पातर ५८६
कालूजी दिखणी ४६८

कि

किलाणदास जोधा ४७०
किलांणदास राठोड़ ४४०, ४४१,
४४२, ४४३
किलाणसिंघ भदावा रो ४६६
किलाणसिंघ राठोड़ ४६५, ४७२
किलाणसिंघ सगतीदानोत चवांण ४००
किसनचन्द मूता ४१५
किसनदास जैतसीहोत राठोड़ ४३३
किसनदास तुंवर ४६१
किसनदास दुरजणसलोत राठोड़ ४३४
किसन रामसिंघ रो जैपुर कछवाहो ४६८
किसनसिंघ चांदा रो ४६६
किसनसिंघ तुंवर ४६७
किसनसिंघ मोटा राजा रो राठोड़ ४६३
किसनसिंघ राठोड़ ४६६, ४७०, ४७३
किसनसिंघ हाडो ४६८
किसना भांवर देवराजोत राठोड़ ५८६
किसोरदास मनोरदास गौड़ ४६६
किसोरसिंघ ५६३
किसोरसिंघ राठोड़ ४७३

की

कीकी चारणी मोरूंदा री ४५१
कीटक ऊना ४७६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कीरतसिंघ अनोपा रो ४०८
कीरतसिंघ जैंसिंघजी रो कछवाहो ४६७
कीलाण जोसी ४४७
कीलाणदास रायमलोत राठोड़ ४७४
कीसनां राठोड़ ४३४

कुं

कुंभकरण ३६६
कुंभकरण राठोड़ ४६८
कुंभो जैमलोत राठोड़ ४३२
कुंभोजी सोनगरा ३६०
कुंवरसिंघ कलवार कसमीरो ४६६

कु

कुतब मोरछल ४५३
कुमलराज सिंघवी ४६६
कुमलसिंघ ४२६
कुसलसिंघ जोधावत चवांण ४०६
कुसलसिंघ नारांणदासोत चवांण ३६८
कुंसलसिंघ राठोड़ ४६५, ४६८
कुसालसिंघ राठोड़ ४६५

कूं

कूंपोजी मैंराज रो 'कूंपावत' राठोड़ ४६६
४७५

के

केलण ४७६
केसरकंवर (म. रुघनाथसिंघ री मां) ४२५
केसरकरण राठोड़ ४६६
केसरखांन ४१४, ४१८
केसरखांन बाजखांनोत करबीया ५६५
केसर पूरबीयो ५६१
केसरीचन्द कानूंगा ३७३
केसरीसिंघ अखसिंघोत चवांण ४०८
केसरीसिंघ अमैंराजोत ४७०
केसरीसिंघ कबीरांमोत चवांण ४००
केसरीसिंघ जोधा ४७०
केसरीसिंघ नरसिंघदास रो राठोड़ ४७४
केसरीसिंघ प० ५८४
केसरीसिंघ भुरटीयो ४६६
केसरीसिंघ माधोदास रो राठोड़ ४७४
केसरीसिंघ राठोड़ ४६८, ४६६
केसव गोरावत मुंसी ५८३
केसव सुग ५६४
केसूसिंघ सवाईसिंघोत चवांण ४०२
केसोदास जैमल रो राठोड़ ४६१
केसोदास दफतरी मूता ४८०
केसोदास राठोड़ ४७२, ४६२
केसोदास राव कला रो बेटो ४६४
केसो पासवान (म. गजसिंघ री
पासवान) ५८६

कै

कैवास दायमा ४२१

खां

खांगार जोगावत राठोड़ ४७५
खानखांना नवाब ४१३
खांनजादा ४२१
खांन समसुखांन ४२१

खीं

खींवकरण राठोड़ ४६८
खींवलदे चारणी ४४६
खींवा भारमलोत ४३५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खी

खीमकरण राठोड़ ४१६
खीमे कुंभार ५८५
खीयो सींदल ४१८

खु

खुरम साहजादा ४१४
खुमा (राजा कीरपाल पवार री बेटी) ४४४

खू

खूबचन्द सिंघवी ४७०

खे

खेतसी नायक ४३३
खेतसी परवतोत राठोड़ ४३३
खेतसी राठोड़ ४७७
खेता वजा रै चारण ४०७
खेतो बांमण ५८६
खेंतो याचग करमसी रो पंवार ४४८
खेतो राठोड़ ४३३
खेमसिंघ चुतरसिंघोत जसोलियो ३६६

गं

गंगदास गदाधर साह ५६१
गंगादास महेसरी ५६२
गंगाराम जसरामोत भंडारी लूणावत ५६२
गंगाराम सीरवी ५८०
गंगाविसन जोसी ५८७
गंगोईदास भूपत चवांण ३७८

ग

गजमल पवार ५००
गजसिंह ४१०
गजसिंह चवांण ३८८
गजसिंघ बीठलदासोत ४६६
गजनीखां नवाब ४१३
गजनी खां विहारा ३६४
गजीयो केसरीसिंघोत ४०६
गजो डेडरीयो ४३३
गणपत ऊपादीया पोकरणा बीरामंण ४८०
गनीखां ४२०

गां

गांगो नींबावत भाटी ४३४
गांछा कुमार ४४६

गा

गाजी बरखुरदार ४५७

गि

गिरधरदास ४६६
गिरधरदास गौड़ ४६७
गिरधर रायसाल दरबारी रो ४६४
गिरधर व्यास ४३७
गिरधरसिंघ बलूजोत ४६६

गु

गुमनो समदड़ीया मूता ४७६
गुमानसिंघ राठोड़ ४६८
गुमानसिंघोत प्रेमसिंघ व्यारीदासोत चवांण ४०६
गुमानीखां सिरदारखांनोत ४००
गुलाबकंवर राणावत (म. जसवंतसिंघ री मां) ४८६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गुलावचंद मुणोयत ४१६
गुलावराय पासवान ५८४, ५८५, ४१६
गुलावसिंघ मूलसिंघोत चवांण ३९६

गो

गोकलदास मूता ५६९
गोकलदास सुंदरदासोत ५९५
गोगादे वीरमजी रो राठोड़ ४७६
गोपालदास ऊहड़ ४३५, ५६१
गोपालदास मांडलजी रा राठोड़ ४७७
गोपालदास राठोड़ ४६५, ४६७, ४७२, ४७४
गोपालदास रामदासोत ४४७
गोपालसिंघ जोधा ४७०
गोयंददास जैतसीयोत राठोड़ ४३२
गोयंददास जोधा राठोड़ ४७०
गोयंददास भाटी ५८६, ५६४, ५९४, ५८३
गोयंददास राठोड़ ४६९, ४७२
गोयंद सिरमाली ५८२
गोयंददासोत भगवानदास रा जोधा राठोड़ ४७३
गोयनदास सेरसिंघोत देरासरीया भाटी ५८५
गोरधनदास राठोड़ ४६८
गोरधन नरहरदासोत चवांण ३९२
गोरां राठोड़ (म. जसवंतसिंघ री धाय) ५८६
गोवंदचंद देवगढ़ रो ४९७
गोवा सुतरार ५८२

ग्य

ग्यानसिंघ राठोड़ ४६८, ४७०
ग्यानसिंघ वीठलदासोत ४६६

घ

घनस्यामकरण राठोड़ ४६९

घी

घीचना तोतापीर रो वेढो ५९१
घीरतसिंह राठोड़ ४६७

चं

चंडू दामोदर रो जोसी ४८१
चंदकवरबाई ४४९
चंदरसेण हलोद रो झालो ४९५
चंद्रजीत ४५९
चंद्रमती (रूपसिंघ राठोड़ री वेटी) ४५४
चंद्रसेण जोधा ४७०
चंद्रावत बाघेली ४५९
चंद्रावती बहूजी ४५२

च

चक्रपाण जोसी ४४७, ४५३
चतुरदास कानूंगा ३७३
चहुवांणजी रांणी ५८३

चां

चांदकंवरबाई ४४८
चांदबाई ४५०
चांदाजी राठोड़ ४७२
चांपाजी राठोड़ ४७७
चांपो रिड़मलोत राठोड़ ४६५, ४७५

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

चा

चाचक राठोड़ ४७७
चाहड़ दे देवराज़ रो राठोड़ ४७६

चि

चिड़ियानाथ जोगी ५६०
चिमनजी खड़गगढ रो मरेठो ४६८
चिमनसिंघ चवांण ३६८
चिमनसिंघ सगतीसिंघ ऊमावत चवांण ४०६

ची

चीवो मारमलोत ४३५

चु

चुतरभुज चहुवांण ४६७
चुतरसाल चवांण ३८६
चुतरसिंघ दुरजणसिंघोत चवांण ४०६
चुतरो पंचोली ४३३
चुहड़मल सिंघवी ५६५

चू

चूरण मानावत चारण ४०८

चे

चेला खिड़ीया ३६४

चौ

चैनसिंघ बूंदेलो ४६३
चैनसिंघ राठोड़ ४६८

छ

छत्रसाल हाडा ४६२

छा

छाडाजी राठोड़ ४७६

जं

जंगी धाय (भगवान कुसलावत री बहू) ४६१

ज

जगजी धायभाई ४३६
जग व्यास ४५३
जगतसिंघ करण रो बेटो सीसोदीयो ४६४
जगतसिंघ चवांण ४०६
जगतसिंघ मानसिंघ रो कछवाहो ४६०, ४६१
जगतसिंघ मेघसिंघोत चवांण ३६८
जगतसिंघ रामदासोत मेड़तीया चांदावत राठोड़ ५८६, ५६२
जगतसिंह हाडो ४६६
जगदेवराय जादुराय रो दिखणी ४६८
जगदेवसिंघ ४६३
जगनाथ नरहरदास रो राठोड़ ४७३
जगनाथ राजा भारमल रो कछवाहो ४६०
जगनाथ राठोड़ ४६५, ४७२
जगमाल कछवाहा ४२२
जगमाल कछवाहो (राजा भारमल रो भाई) ४६०
जगमाल पंवार ४६१
जगमाल राठोड़ ४७६
जगमाल मूता ४१३
जगा चारण ३६७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जगु ओसवाल ५८६
जगुनलवामी साह ५९२
जबदलखां ४१४, ४१७
जबदलखां बिहारी ४१८
जमालखां अेमदखां रो ४१८
जमालखां सायबखां रो ४००
जवानसिंघ अमरसिंघोत चवांण ३९७
जवानसिंघ उदैसिंघोत चवांण ४०९
जवानसिंघ जीवराजोत चवांण ३९८
जवानसिंघ दानसिंघोत चवांण ३९७
जवानसिंघ प्रथीराजोत चवांण ४०५
जसकरण प्रोहित ५७७
जस देवड़ा ३८५
जसरंगदे हाडी (म. जसवंतसिंघ री) ५८२
जसवंतदे हाडी (म. जसवतसिंघ री राणी) ४६२
जसवंतसिंघ बलूओत ४६६
जसवंतसिंघ बुन्देलो ४९८
जसवंतसिंघ राठोड़ ४६५
जसो भांड ४३३
जसो भादरसुर ५९४
जसोजी भैरूदासजी रा राठोड़ ४७७
जहांगीर पातसाह ४२२, ४७९, ४९२

जां

जांन मेहमद मोरछल ४५३
जांभाजी ४७१

जा

जाड़ेची राणी ५७७
जाडेची (महाराजा अजीतसिंघ री रांणी) ५६७
जाड़ेचीजी (म. तखतसिंघ री राणी) ५७३
जाड़ेजी (राणा भोजराज री वहू) ४१०
जादुराय दिखणी ४९६
जादे ऊमा रै चारण ४०७
जाफरखां ४१५
जाफरखां नवाब ४४५
जामवेग नवाव ४३४, ४३५
जालप मुता ५८७
जालमसिंघ ४९७
जालमसिंघ अजवसिंघोत चवांण ४०९
जालमसिंघ अजीतसिंघोत चवांण ४०३
जालमसिंघ जैतावत चवांण ४०६
जालमसिंघ बलूओत ४६६
जालमसिंघ राठोड़ ४७०, ४७१
जालमसिंघ रामसिंघोत चवांण ४०८
जावदीन पठांण ४२२
जीतमल पंचोली उकील ३९९
जीतमल मुणोयत ऊकील ३७३
जीवण केसरीसिंघोत चवांण ३९२
जीवदान राठोड़ ३८७
जीवसिंघ जोगराजोत चवांण ४०५
जीवा मालावत चारण ४०८
जीवो सोलंकी ४५७
जीवो चौधरी ३७४
जीवो सींभुदानोत चारण ४१०

जुं

जुंजारसिंघ राठोड़ ४६८

जु

जुगतसिंघ रामदासोत ५९५
जुगल किसनसिंघ रो राठोड़ ४९५

जूं

जूंझारसिंघ जोधा ७४०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जे

जेकां सींधल ४३८
जेठकरण कनीरामोत करणोत ३९९
जेठकरण जीवराज चवांण ४०४
जेठकरण रतनसिंघ रो चवांण ४०६
जेठा भूता रो बारठ ३९९
जेतेजी राठोड़ ४६८
जेतौ मुंहता ५९२
जेतै वदे मूंता ५८५
जेसल रावल ५०१
जेहु जोसपाजी रा राठोड़ ४७७

जै

जैतकरण राठोड़ ४६९
जैतमाल चवांण ३८८
जैतमाल जसोजी रा राठोड़ ४७७
जैतमाल सलखावत ४३८
जैतमाल सलखावत राठोड़ ४७६
जैतसिंघ ४३५
जैतसिंघ बून्देलो ४९६
जैतसिंघ राठोड़ ४५३, ४६५, ४६८
जैतसिंघ रूपसिंघोत चवांण ४०९
जैतो 'जैतावत' पंचायण रो राठोड़ ४७५
जैतो भारमलोत ४३५
जैतो राठोड़ ४६८
जैदेव ५८४
जैदेव व्यास ४५३
जैमल ५९५
जैमल आसावत भाटी ४३४
जैमल डेडरीयो ४३३
जैसाजी भाटी ४७९
जैसिंघदे रामसिंघोत चवांण ४०८
जैसिंघ वीरमजी रो राठोड़ ४७६
जैसेजी भैरूदासोत राठोड़ ४६८
जैसो राठोड़ ४६५

जो

जोगराज पंवार ५०१
जोगीदास राठोड़ ४६३
जोगो आसावत भाटी ४३४
जोगो आसावत राठोड़ ४७५
जोगो मु० ४३४
जोतंगराय जोसी ४५३
जोधसिंह राठोड ४६७
जोधा सुजांणसिंघ राठोड ३९२
जोधो पड़ियार ५७८
जोधो उपाधियो ४४७
जोधो भींवोत ४३३
जोपसाजी आसथांनजी रा ४७७
जोया चवांण ३८७
जोरावरमल सिंघवी ४१६
जोरावरसिंघ राठोड़ ४६८

झा

झाली राणी (बहूजी राव मालदे री) ५९१
झवहरदास ४५०

टो

टोहा दाई (जगा री वहू) ४४७

डां

डांगी ४७७
डांगो जाट ४३७

डूं

डूंगरसी रिड़मल रो राठोड़ ४७६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डे

डेडीयो ४४३

ढं

ढंढारराव ४१४

त

तगसिंघ धीरसिंघोत चवांण ४०५

ता

ताजुक सीयांनी ४१८
ताजुजी ४१४
ताजखां अजवानी ४१८
ताजो खवास ४५८
तापी तेजावत व्यास ५८३
ताराचन्द भण्डारी ५७६

ती

तीलोकसी ४२६
तीलोंकसी कूंपावत राठोड़ ४३४

तु

तुलछीदास जादु ४६१

तूं

तूंवरजी राणी (म. अजीतसिंघ री ५८४

ते

तेजमल भोजराजोत चवांण ३६७
तेजमाल दुरजणसिंघोत वावेचा चवांण ३८३
तेजसिंघ ५८४, ५८५
तेजसिंघ उदैसिंघोत राठोड़ ४७०
तेजसिंघ चांपावत राठोड़ ४१६
तेजसिंघ राठोड़ ४६५
तेजसिंघ हातीसिंघोत चवांण ४०३
तेजसी चूंडो ४३८
तेजो ४४३
तेबरबेग नवाब ५६२
तेलग सायब ५७८

तो

तोंगा री मां ४४३
तोगो सुरावत ४४५

त्रि

त्रिभवणदे (राव रिडमलजी री राणी) ४७८

था

थानसिंघ हींदूसिंघ सखावत चवांण ४०६
थासू राजा तोडरमल रो ४०६

थि

थिरराज ४२५

द

दमोदर सेठ ५६५
दलथांमणजी (दल थंभन) ४६८
दलपत ४३५
दलपत मोटा राजा रो राठौड़ ४६२
दलपत राठोड़ ४६५, ४६८, ४७७
दलपत रायसिंघ री राठोड़ ४६१, ४६३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दलसिंघोत चवांण ४०६

दा

दादी जादमजी ४५०
दादी भटीयाणीजी ४५०
दादी सोढीजी ४५०
दामोदर जोसी ४८१
दारासिकोह ४२५

दि

दिलीपसिंघ बूंदेलो ४६८
दीलावर खोजो ४४८

दु

दुर्ग रावत रो पींपाड़ो ५७६
दुदो वेद मुता ४४३
दुरगदास आसकरणोत राठौड़ ४४५,४६६
३६६, ४६६
दुरगावती बाई ४५०
दुरगो नाईक ४३३
दुरगो सींघी ताजु रो ४१८
दुरजणसिंघ राठोड़ ४६७
दुरजणसिंघ सबलसिंघोत जोधा ३६२
दुरजनसिंघ मानसिंघ रो कछवाहो ४६१
दुवारा सेवग ४४७

दू

दूदा डेडरीयो ४३३
दूदा सांखला ४३३

दे

देराव भटियाणी (मींवसिंघ री राणी)
५७२
देरासर पोकरण कोलाणी बीरामण ४८०
देवकरण राठोड़ ४६८
देवनाथ ५७३, ५७४
देवराज वीरमजी रो राठोड़ ४७६
देवराव भाटी ५६१
देवीचन्द गवां ४६५
देवीदास भाटी ३६३
देवीसिंघ राठोड़ ४६६, ४६७

दौ

दौलतखां अलखफखां कायमखानी ४२२
दौलतराम नाजर ५६७
दौलतसिंघ केसरीसिंघोत चवांण ३६७
दौलतसिंघ मांसिंघ रो भदोरीयो ४६८
दौलतसिंघ रांठोड़ ४६८, ४६६
द्वारकादास राठौड़ ४७२

ध

धनराज भंडारी ४७६
धनराज सिंघवी ४३७
धनो गदाधर मोहणदास साह ५६२
धनो पोरवाल ५६३
धरणीवाराह ५००

धां

धांतु ४७६
धांधल उदैकरण खवास ४६२

धी

धीरसिंघ चवांण ४०५
धीरा मानावत चारण ४०८
धीरो कोचर मूता ४७६
धीरो भगो गोयल ४०१
धूडां ४७७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

न

नगराज गांगावत राठोड़ ४३३
नथकरण राठौड़ ४६६
नथमल राजा किसन. रो राठौड़ ४६५
नपालखां माखुग्रोत ४१०
नबावखांन ४१३
नरसिंघदास किलाणदास रो राठौड़ ४७४
नरसिंघदास जोधा ४७०
नरसिंघदास पा० ४२८
नरसिंघदास राठोड़ ४७२
नरसिंघदेव बूंदेलो ४६२
नरहर सारण रो पंचोली ५७६
नराइणदास सांगावत राठौड़ ४३३
नराईण सादूल रो धोबी ४५८
नरांणदास कछवाहो ४६३
नरांणदास बोड़ो ४१४
नरायणदास राठौड़ ४७२
नरौजी ४६७
नवलराम मुनीम ४३२
नवलसिंघ वीठलदासोत ४६६
नवलसिंघ पत्रावत करणोत राठौड़ ४१०

ना

नागोजी गुसांई ४३६
नाथ पोकरणा व्यास ४८०
नाथा १४१
नाथा चारण ३७४
नाथाजी रिड़मल रा राठोड़ ४७६
नाथौ रोहड़ीयैं ४०७
नाथो तुरक ४४३
नाथो धनो गौड़ ४३३
नानजी मलार चांदा रो ४६७
नाभल (राव रिड़मल री बेर) ४७८
नारखां लाडखांनोत चवांण ३६२
नारखांन खेतसी गोपालदासोत रा राठोड़ ४४६
नारणदास अमावत चवांण ४१०
नारणसिंघ मलूसिंघ चवांण ३६४
नारद भोजग मुथरीयो ५६३
नारसिंघ राठोड़ ४६८
नाराईण ४३४
नारायणदास वागावत बोड़ा ४१८
नारायणदास बालोत ४१४
नारायण वेद मुता ४४३
नासिर ४५३
नाहड़राव पड़ियार ५६०
नाहरवेग नवाब ५६२, ५६३
नाहरखेद ५८७

नी

नीव रखेस्वर ५६०
नींवैं जोधावत ५६०
नीवैं गुजराती कारीगर ५८०
नीवैं सिरमाली ५८६
नीबोजी कछरो जाडेचो ४६७
नीबो राठोड़ ४६६
नीलकंठ ४६१
नीहालखां माखुखांनोत मेरडीया ४०७

नूं

नूंरमेल पातसाही ४१३, ४१४

ने

नेकापुरी गुसांई ४३७
नेवाजी सोनगरा ३६०

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

नै

नैणसी मुहणोत ५६५, ४२८, ५८८
नैना पंचोली ५८७

पं

पंचाण अखैराज रो राठोड़ ४७५
पंचाण वीरामण ३६०
पंचाण वींजेराजोत ४१०
पंचायण बालोत ४१४
पंचायण महारक ५६४
पंचायण राठोड़ ४६८

प

पडदनखां ४४४
पड़दायत मगराजनी ५७६, ५७७, ५७८
पड़दायत लछरायजो ५७६
पतौ नगावत ४३४
पतौ सूरावत दो. ४३५
पदमसिंह नायक सीकर रो ४६६
पदमनाम व्यास ४४७, ४४६
पदमानाम नाथौ व्यास ५८३
पदमसिंघ जोधा ४७०
पदमा देवड़ी (राव गांगा री राणी) ४८०
पदमोपारसोत सिंघी ५६२
पनुखां ४१६
परताप उरजनोत वेदमुता ४३८
परतापकंवर (तीजामांजी) ५८५
परतापसिंघ जोधा ४७०
परथीराज करमसोत ५६१
परदार पाड़खां ५८७
परमावती बाई ४५०
परभुलाल सिकदार पंचाऊ जोसी ५८७
परमाद खोजो ४१३
परमानंद खतरी ४६१
परसुजी दिखणी ४६७
पहाड़सिंघ राठोड़ ४६८

पा

पाड़खां ४१३
पाड़खांन ४१४
पाड़सिंघ गौड़ ४६६
पाड़सिंघ राठोड़ ४६८
पाताजी रिड़मल रा राठोड़ ४७६
पाबूसिंघ जीवसिंघोत चवांण ४०४
पामसी भंडारी (पेमसी) ४२०

पी

पीतांबरदास खतरी ४६२
पीरमेहमद ४५७

पू

पूनमचंद मूता ५७६
पूनाजी रिड़मलजी रा राठोड़ ४७६
पूरां (धाय भागां री वेन) ४५१, ४५२
पूरा देवदान रो चारण ४०८

पे

पेमकरण राठोड़ ४६६
पेमनारायण राजगढ रो ४६५
पेमसिंघ कीलाणदासोत देवड़ा ३६५
पेमसिंघ बीठलदासोत ४६६
पेमावती जाडेची (म गजसिंघ री) ५८४

पो

पोमसी भंडारी ४२२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्र

प्रतापदे राणी ४४६, ४५२
प्रतापसिंघ ५७१
प्रतापसिंघ ऊदावत ४६६
प्रतापसिंघ झालो ४६७
प्रतापसिंघ दासपां राठोड़ ४२०
प्रतापसिंघ देवड़ा ३६५
प्रतापसिंघ नवलसिंघोत चवांण ४०५
प्रतापसिंघ भगवान रो कछवाहो ४६१
प्रतापसिंघ राठोड़ ४४०, ४६८, ४६६, ४७२, ४७३
प्रतापसिंघ सूरजसिंघोत चवांण ३८८
प्रथमजी गौड़ ४६७
प्रथमादीत वाघेलो ४६३
प्रथीचंद मनोहर रो कछवाहो ४६४
प्रथीराज कवीरांमोत चवांण ४००
प्रथीराज केसरीसिंघोत चवांण ४०६
प्रथीराज चवांण ४२१
प्रथीराज जसराजोत चवांण ३६७
प्रथीराज देवड़ा ४३५
प्रथीराज भाटी ४६६
प्रथीराज राठोड़ ४६८, ४७२
प्रथीराज सुरताणसिंघोत चवांण ४०८
प्रथीसिंघ जंबू रो ४६८
प्रथीसिंघ जगतसिंघ रो कछवाहो ४६८
प्रथीसिंघ श्रीनगर रो ४६७
प्रवत सा. ४४८

प्री

प्रीथीराज दलपतोत राठौड़ ५६५
प्रीथीसिंघ राठौड़ ४६८
प्रेमसिंघ हेमराजोत चवांण ४०६

फ

फतसा ४५७
फतेखां ३६४
फतेखां जरड़ीया ३८५
फतेसिंह प्रथीराजोत ३७०
फतैकरण राठौड़ ४६६
फतैखां ४२०
फतैखां ऊसूखां सुजेरड़ी ४०१
फतैखांन जालोरी ३६१
फतैखांन दीवांण ३६२, ४१५, ४१६
फतैखां माखुखांनोत मेरडीया ४०७
फतैमेहमद सुरणायची ४५३
फतैसिंघ राठौड़ ४६८
फतैसिंघ विजैकरणोत भींवाणी पंचोली ५८७
फतो कोचर मूता ४७६
फरासत खोजा ५७६, ५८०, ५४८
फरो दहीयो ४५८

फा

फाजुलाखां खांजी ५६६

फू

फूलां भटियांणी राणी ५८२

ब

बखतसिंघ राठोड़ ४६८
बखतावरसिंघ ४६८, ४७१
बगतावरसिंह बलूश्रोत ४६६
बगतावरसिंघ ४६५
बड़ा राणावतजी (म. तखतसिंघ री राणी) ५६३, ५७३
बड़ा लालजी ५७६
बनेसिंघ नवलसिंघोत चवांण ४०५
बभूतसिंघ करणोत ३६६
बभूतसिंघ आंमसिंघोत चवांण ४०६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बभूतसिंघ सालमसिंघोत राठोड़ ४६६
बभूतसिंघ सूरतसिंघोत चवांण ४००
बलभदर राठोड़ ४४०
बलभद्र राठोड़ ४६१
बलू गोपालदासोत ४६६
बलु रागोदासोत पंचोली ५६१
बलूजो राठोड़ ४७७
बलू री बहू ४५२
बलू सांवलदासोत धावड ४५२
बहूजी चंदावतजी (म. गजसिंघजी री राणी) ५८२
बहूजी मनभावतीजी ४५०, ५८६
बहूजी सेखावतजी (म. जसवंतसिंघजी री) ४६०, ५८२

बां

बांकीदास चवांण ३८८
बांको कछवाहो ४६१

बा

बाई चांदजी ४५६
बाईजी भटियाणीजी ५७५
बाईजी सिरेकंवर ५७५
बाघसिंघ राठोड़ ४७१
बाघो दरजी ४५८, ४६०
बाजखां सेख ४५७
बादर ४६३
बादरखां हसनखांनोत मेर ४१०
बादरसिंघ गौड़ ४६६
बादरसिंघ भदेरीयो ४६६
बादरसिंघ राजसिंघोत सीसोदीयो ४६६
बाबू मंगलीराय ४६०
बारो रांणा सोनगरा ३६०
बालकिसन भंडारी ४७६
बालाराव पड़ीयार ५६०
बाला अखैराजजी राठौड़ ४१६
बाला भोपत ४४२
बाला भोपतोत ४४०
बाला मघसिंघ ३६६
बालो अमरदास कामदार ४१६
बालोजी भाखरसी रो राठोड़ ४७६
बालोलखां सेरांणी ३६२
बाहदरसिंघ राठोड़ ४६७
बाहादरसिंघ ठाकुर जोधा ४७०

बी

बीडी मुगल पातसाह ४१७
बीदो कनावत सेवड़ो प्रोहित ५६३
बीदो राठोड़ ४६६

बु

बुदसिंघ भवानसिंघोत चवांण ४०८
बुदसिंघ बखतसिंघोत चवांण ४०६

बे

बेणी तंबोल ४५८
बेणो तंबोली ४५६
बेलो कोचर मूता ४७६
बेलोलखां पठाण ४१५
बेजनाथ प्रोहित ४३६

बो

बोगरा पातसाह ३६०

भ

भग बाघो गोईदोत ४५८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भगवतसिंघ राठौड़ ४६५
भगवतसिंघ हाडो ४६७
भगवान कुसलावत ५८७
भगवानदास ४३५
भगवानदास उदैसिंघोत राठौड़ ४६६
भगवानदास कुसलावत सिकदार ५६२
भगवानदास चांपावत राठौड़ ४१६
भगवानदास जोगीदासोत राठौड़ ४२०
भगवानदास राठौड़ ४६६, ४६७
भगवानदास सोभावत ५८८
भगवानदास सोभावत सिकदार ५६५
भगवानपुरी ४०७
भयटिग्णी (कल्याणदास राठौड़ री बेर) ४४३
भदोजी भदावत पंचाण रो राठौड़ ४७५
भदोसिकदार ५७६
भभूतसिंघ मोड़सिंघोत चवांण ३६८
भभूतसिंघ राठौड़ ४६७
भवानीसिंघ फतैसिंघोत भाटी ५८०

भां

भांण ऊड़ ५८४
भांण पंवार ५०१

भा

भाखरसिंघ ४०७
भाखरसी रिड़मल रो राठौड़ ४७६
भागांधाय (बलू सांवलोत री बहू) ४५१, ४५२
भागीरथ राठी ५६२
भादर गोपनोत ४६१
भादो वणसूर चारण ४०७
भानसिंघ राठौड़ ४६८
भाना चारण ४०७
भाना भोजग ५७६
भानीदास खींवावत राठौड़ ४३२
भारतसिंघ जीवसिंघोत चवांण ४०३
भारथसिंघ जोधा ४७०
भारमल राठौड़ ४७५
भावसिंघ मानसिंघ रो पोतो कछवाहो ४६२

भीं

भींयां चारण ३६२
भींयां किलाणदास रो सीसोदीयो ४१४
भींव गोपालदासोत राठोड़ ४५३
भींव चूंडाजी रा राठोड़ ४७६
भींव सबलसिंघोत ४६७
भींवपुरी ४०७
भींवराज सींगवी ४३६, ४३७
भींवसिंघ राठोड़ ४६८

भी

भीम चूंडावत ४७८

भू

भूतसिंघ वीरमदेवोत चवांण ३६७
भूता जीवावत चारण ४०८
भूपतसिंघ कुसलसिंघोत चवांण ३६८

भैं

भैंरूदास चांपाजी रा राठोड़ ४७७
भैंरुदास राठोड़ ४६५
भैंरुंसिंघ सिरदारसिंघोत राठोड़ ३६६

भो

भोज पंवार ५००

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भोज विक्रमादीत रो भदोरीयो ४६५
भोजराज कछवाहो ४६६
भोजराज कीरतसिंघोत चवांण ४०६
भोजराज नवलसिंघोत चवांण ४०४
भोजराज परबतसिंघोत चवांण ३६०
भोजराज राठोड़ ४७४
भोपत गोपालदासोत राठोड़ ४६७
भोपत पतावत राठोड़ ४३५
भोपतजी राठोड़ ४७४, ४७७
भोपतराम ४११
भोपालसिंघ अजीतसिंघोत चवांण ४०३
भोपालसिंघ चवांण ४०१
भोपतसिंघ जांवतसिंघ चवांण ३६८
भोमजी सोनगरो ३६०
भोमसिंघ विजैसिंघोत चवांण ४०५

मं

मंगलसिंघ जोधा ४७०
मंगलसिंध प्रतापसिंघोत चवांण ४०३
मंगलो रिड़मल रो राठोड़ ४७६

म

मकरदसिंघ मरेठो ४६८
मजु फराम ४५८
मदनसिंघ पंचोली ४७८
मदनसिंघ सिंभूजी रो मरेठो ४६६
मदारक खोजा ४६३
मधु(धायभाई) चहुवांण ५६२
मनछाराम ४३७
मना पंवार ५८६
मना भंडारी ५८५, ४७६
मनोरदास ४६६
मनोर सतावत ३६०
मनोहर पीरोमत ४४७
मरदान अलीखां दीवाण ४७८
मलकअली सेरखां विहारी ४०७
मलकअली सेरदी ३८६
मलकखांन नवाव ४१३
मलकखांन बड़ा ४१८
मलुवो बीकमसिंघोत चवांण ३६०
मलू दफतरी मूता ४८०
महंमदरवान मीरधो ४५७
महाखांन दीवाण फतेखान विहारी रो ४१६
महासिंघ ४२०
महीगर बीरामण ४०८
महेस घडसियोत ५६२
महेस सिरीमाली ५८१
महेसदास ४३७
महेसदास आढा ५६१
महेसदास कानूगो ४२८, ४३०
महेसदास कूंपावत ४६८
महेसदास दलपतजी रो राठोड़ ४७४
महेसदास राठोड ४६८, ४७४
महेसदास रामदासोत ४४७

मां

मां चोहाणजी ४५०
मां जाड़ेची ४५०
मां भटीयाणीजी ४५०
मां वाघेलीजी ४५०
मांडण डेडरीयो ४३३
मांडण नायक ४३३
मांडण राठोड़ ४६५
मांडणजी रिड़मलजी रा राठोड़ ४७६
मांडल जसोजी रा राठोड़ ४७७
मांडलजी राठोड़ ४७७
मांडण कूंपावत ४६८
मांणक जोगी ५६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माधवसिंघ कलावत चवांण ४०९
माधो कछवाहो ४४८
माधो वेदीयो ४४७
माधोदास राठोड ४७५
माधोसिंघ भगवानदास रो कछवाहो ४९०
माधोसिंघ भगवानदासोत कछवाहा ४२२
माधोसिंघ मानसिंघ रो कछवाहो ४९२
माधोसिंघ राठोड़ ४६५, ४७२
मानखां मेगो डोसावत भेरडीया ३९२
मानधाता ४९९
मानसा पीर पसातमारी रा बेटा ४९४
मानसिंघ कछवाहो ४९१
मानसिंघ किसनगढ रो ४९८
मानसिंघ कीरतसिंघोत बाला राठोड ४१०
मानसिंघ नगराजोत राठोड़ ४३३
मानसिंघ मुकनसिंघोत फतैसिंघोत चवांण ३९१
मानसिंघ रावत सीकर रो सीसोदीयो ४९५
मानसिंघ सोनगरो ४३४
मानसिंघ हीमतसिंघोत चवांण ४०९
माना पसेरी ५८६
मांनो अमरावत भंडारी ५९४
मालमसिंघ जोधा ४७०
मालमसिंघ राठोड़ ४६८
मालूजी ४९७
मासिंघ ४९७
मासिंघ किसनगढ रो ४९८
मासिंघ मानसिंघ रो पोतो कछवाहो ४९४
माहसिंघ भगवानदासोत ४६७
महासिंघ राठोड़ ४६६
माहसिंघ रूपावत चवांण ४०९

मि

मिरघावती बाई ४५०

मी

मीठी ४५३
मीयां तालीमखां ४२०
मीयां फरासत ५८९, ४५१, ५८८, ५८९
मीयां मीदूखां मादुखांनोत ४०७
मीथां सवाईखां मादुखांनोत ४०७
मीयां सिरदारखां मादुखांनोत ४०७
मीर अव ४५३
मीरखांन ४६६
मीरखांन नवाव ३९१, ४१५, ४६७
मीरजाफर ५९१
मीरांबाई ४७१
मीरूखां नवाब ४१८

मु

मुकनदास खीची ४४४
मुकनदास चांपावत ४६६
मुकनदास राठोड़ ४६८, ४७१, ४७२, ४७३
मुकनसिंघ राठोड़ ४६८
मुकनो सोबो गंगादास चारण ४०८
मुकेसी किलेदार ४५६
मुतरादास ४९२
मुतरादास खतरी ४९१
मुदफरखांन ४३३
मुरलीधर गुसांई ५९३
मुरादबगस साहजादा ४२५
मुहु जोपसाजी रा ४७७

मू

मूणदास पंचोली ५९१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मूणसिंघ गिरधरदास चवांण ३६२
मूळौ प्रोहित ५६२

मे

मेकरजी सोनगरा ३६०
मेगु चारण ३६२
मेदनीराय चहुवांण ४६०
मेदनीसिंघ प्रथीसिंघ री ४६७
मेलतीखां जवदलखां रो ४१८
मेवो मुग ४२०
मेहमूद खांन ४५७
मेहमेद परदार ५८८

मै

मैराज अखैराज रो राठोढ़ ४७५
मैसदास ५६५
मैहकरण राठोड़ ४६६

मो

मोकमसिंघ ४६६
मोकमसिंघ ईंदरसिंघ रो राठोड़ ४७३
मोकमसिंघ लालसिंघोत सखावत चवांण ३८७
मोकलसिंघ बभूतसिंघ चवांण ४०२
मोघसिंघ लालसिंघोत चवांण ४०३
मोतीबाई (म. बखतसिंघ रे खवास री बेटी) ५८०
मोती भाट ३६६
मोतीसिंघ वीसा ५७१
मोबतसिंघ चवांण ४०१
मोबतसिंघ वागसिंघोत चवांण ४०६
मोबतसिंघ मेघसिंघोत राठोड़ ३६५
मोयणदास राठोड़ ४७३
मोवण ४७६
मोवणदास पंचोली ५६५
मोवणसिंघ राठोड़ ४७३
मोहणदास ४६३
मोहीणदास पंचोली ५८८

या

याकूब ४५३

र

रघुनाथसिंघ किलाणसिंघोत चवांण ४०५
रणधीर चूंडाजी रा राठोड़ ४७६
रणधीर महैकावत ईंदो ४३४
रणसिंघ मोखमसिंघोत ५८६
रतनकंवर बाई ४५६, ४६०, ४६१
रतनकरण राठोड़ ४६६
रतनराजजी सींगी ३७३
रतनसिंघ पाड़सिंघोत राठोड़ ४१०
रतनसिंघ मालदेसोत राठोड़ ४७१
रतनसिंघ महेसदास रो राठोड़ ४४७
रतनसिंघ राठोड़ ४६८, ४७०
रतनसिंघ हरीसिंघ रा जोधा राठोड़ ४७४
रतनसी ४५७
रतनसी खींवावत राठोड़ ४३२
रतनाजी ४६४
रतनावती बाई ४५१
रतनो खाती ४६०
रतनो डेडरीयो ४३३

रा

रागोदास सोमावत सिकदार ५८६
राघुजी चवांण ४१०
राघू परबतसिंघोत चवांण ३८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राघवदास राठोड़ ४७७
राघवदास सिकदार ४५०
राघोदास झालो ४६८
राघोदास राठोड़ ४७०
राज अभैराज मेरू ४११
राज खमन भदोरियो चहुवांण ४६१
राज श्री गिरधरदासजी ४१२
राज देवीदास ४११
राज रामसिंघ ४१५
राज सगतसिंघ ४११
राजसिंघजी ४१४
राजसिंघजी री बहू ४५०
राजसिंघ ईसरदासोत चवांण ३८६
राजसिंघ कूंपावत ५८५, ५८६, ५८६ ४६७
राजसिंघ खीमावत राठोड़ ४१७
राजसिंघ राठोड़ ४६५, ४६८
राजसी मु० ४१८
राजसी मूता ४१४
राजा अजीतसिंघ ५६५, ५६७, ५६६, ५७०, ५८४, ५६२, ३६३, ३६८, ३७०, ३६२, ३६५, ४०७, ४०८, ४११, ४१२, ४१५, ४१६, ४२०, ४४४, ४६५, ३६६, ४६७, ४६८, ४६६, ७४३, ४७८, ४७६
राजा अभैसिंघ ५६७, ५६८, ५६६, ५७१, ५८०, ५८१, ५८४, ५६३, ४१५, ४१६, ४२२, ४२३. ४३६, ४३७, ४६७
राजा उदैसिंघ ४४०, ४४३, ४७८, ४७६, ४८०, ४६०
राजा उदैसिंघ सेबा रो भाई दिखणी ४६६
राजा करण आसकरण रो कछवाहो ४६०
राजा किलाण ईडर रो राठोड़ ४६५
राजा किलांण बंगधारी ४६४
राजा किल्याण भाटी जेसलमेर रो ४६४
राजा किलाणसिंघ ४६४
राजा किसनचंद नगरकोट रो ४६४
राजा किसनराय ४६४
राजा कैलास तोडरमल रो खतरी ४६५
राजा गजसिंघ ५६३, ५६४, ५६६, ५८२, ५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५६१, ५६२, ५६४। ३६१, ३७८, ३८३, ४१४, ४१८, ४३०, ४३१, ४७३, ४७६, ४८०, ४६३, ४६४
रा. गजसिंघजी री पात्र ४५०
राजा चांपो प्रलवारो ४६५
राजा जगतसिंघ कछवाहो ४६३
राजा जगनाथ कछवाहो ४६२
राजा जगमल ४६४
राजा जगसिंघ वासु रो ४६५
राजा जसवन्तसिंघ ५६३, ५६५, ५६६, ६७०, ५७१, ५७२, ५७४, ५७५, ६८२, ५८३, ५८४, ५८६, ५८७, ५८८, ५६१। ३६१, ३६४, ४१५, ४१८, ४२२, ४३७, ४४६, ४६२, ४६७, ४७६, ४८१, ४६३
राजा जैसिंघ कछवाहो ४६३, ४६६, ४६५, ४८६, ४६३
राजा जेसिंघ विशनसिंघ रो कछवाहो ४६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजा जोगराज माराज नरसिंघ रो बूंदेलो ४६६
राजा टेकचन्द कुमांऊ रो ४६४
राजा टोडरमल वजीर ४६०
राजा टोडरमल ईटासी रो ४६७
राजा तखतसिंघ ५६०, ५६१, ५६३, ५६६, ५६८, ५६६, ५७२, ५७३, ५७५, ५७७, ५८२, ५८५, ५८७, ५८६
राजा दलपतरायसिंघोत ४२२
राजा देवीसिंघ बूंदेलो ४६७
राजा नथमल पंचोली बूंदेलो ४६२
राजा प्रताप बंगला रो ब्राह्मण ४६५
राजा प्रतापसिंघ ५७६
राजा फतैसिंघ ५७२
राजा वासु पंजावी ४६२
राजा बूंदेलो ४६६
राजा भगवानदास ४६०, ४६३
राजा भारत रामचंदर रो बूंदेलो ४६४
राजा भारमल कछवाहो ४६०
राजा भावसिंघ ४६३
राजा भींवसिंघ ५७२, ५८५
राजा भींव सीसोदिया ४१८
राजा भोजराज पंवार ४४४
राजा मनोर कछवाहो ४६१, ४६२
राजा महेसदास ३६१
राजा महेसदास रतनसिंघ रो ४१५
राजा मानसिंघ ५५६, ५६१, ५७१, ५७३, ५८१, ५८५ । ४१६, ४३७, ४५८, ४५६, ४६५, ४७०, ४६४
राजा मानसिंघ कछवाहो ४६०, ४६२
राजा राजरूप जंवू रो ४६६
राजा राजसिंघ कछवाहो ४६४
राजा रामचद उड़ीसा रो ४६१
राजा रामचंद बूंदेलो ४६२
राजा रामचंद वघेलो ४६०
राजा रामदास राजसिंघ रो कछवाहो ४६५
राजा रामसिंघ रतनसिंघोत ३६२
राजा रामसिंघ राठोड़ बीकानेर ४६०
राजा रामसिंघ हाडो ४६६
राजा रायसिंघ ४२२
राजा रायसिंघ नागौर ४६६
राजा रायसिंघ राठोड़ बीकानेरीयो ५८८
राजा रायसिंघ सीसोदीयो ४६६
राजा रुघनाथ ४६७
राजा रुघनाथसिंह ४२५, ४२६
राजा रूपचंद गुवालेर रो ४६५
राजा बखतसिंघ ५६०, ५६२. ५६३, ५६७, ५७०, ५८०, ५६२, ५६६, ५७० । ४१६, ५२३, ४७०
राजा विक्रमसी पगुवा ४६७
राजा वीरबर बिरामण ४६०
राजा विजैसिंघ ५६२, ५७०, ५७१, ५७२, ५८०, ५८५, ५८७, ५६०, ५६२ । ४१६, ४३६, ४६७ ४७०
राजा समरसी ऊदसिंघ विसवागरी सीसोदीयो ४६५
राजा सलेदीन भारमल रो कछवाहो ४६१
राजा सामसिंघ श्रीनगर रो ४६५
राजा सारंगदेव ४६५
राजा सुजाणसिंघ ४४४, ४४५
राजा सुरल वासुसल रो ४६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजा सूरसिंघ (सूरजसिंघ) ५६०, ५६२, ५६३, ५७९, ५८०, ५८३, ५८६, ५८७, ५८८, ५९४ । ३६१, ४१४, ४१७, ४१८, ४३६, ४४४, ४५०, ४७२, ४९३, ४३०, ४३१, ५६०
राजा सूरसिंघ बीकानेरीयो ४२२, ४९४
राजा हरजी ४४४
राजेश्वर जगतसिंघ ५७५
राजो लखो गोयल ४०१
राणा ऊधरण ३६९
राणा उमेदसिंघ सिरदारसिंघोत ३०७
राणा केसरीसिंघ सिरदारसिंघोत ३९६
राणा गणसीदे ३६९
राणा चंद ४१०
राणा चनणसिंघ सिरदारसिंघोत ३९७
राणा जीवण लख सा० ३६८
राणा जैसिंघ राजसिंघोत रो सीसोदीयो ४९८
राणो जोगराज ४१०
राणा ठाकुरसी ३६९, ४११, ४१२
राणा डूंगरसी ३६९
राणा तेजमाल ४१०
राणा दीपाली चवांण लखजी ३६९
राणा देपाल ३६९
राणा देवीदास वीजावत ४३८
राणा पंचाण ४११
राणा प्रगता वागावत चारण ४०७
राणा भीम राजसिंघ रो सीसोदीयो ४९८
राणा भोजराज ३६९, ४१०, ४११
राणा मलु सिरदारसिंघोत ३९६
राणा मानो ३९६
राणा राजसिंघ उदैपुर रो सीसोदीयो ४९८
राणा राजसिंघ सीसोदीया ४९३
राणा वीसल ३६९
राणा वीसलदे ३६९
राणा संकर राणा प्रताप रो भाई सीसोदीयो ४९२
राणा सा पठांखांन. गुढारा ३९०
राणा सादूल ३६९
राणा सारुद ३६८
राणा सिवराज ३७०, ३९५
राणा सुजाणसिंघ सिरदारसिंघोत ३९६
राणा सूजो ३६९
राणा सैंगर ऊदैसिंघ रा सीसोदीया ४२२
राणा सैसमल ३६९
राणा हापोजी चवांण ३६८, ३६९
राणी राणावत ५७६
राणो 'राणावत' पंचाण रो राठोड़ ४७५
राणो वीरमोत ऊदावत राठोड़ ४३४
रादा ४७६
रामकंवर (जसवंत दे हाड़ी) ४६२
रामकरण पंचोली ४१६
रामघण सुरदी दीला वालो ४९५
रामचंद ४९९
रामचंद कछवाहो ४९१
रामचंद पंचोली ४७८
रायसिंघ सीहाणोत राठोड़ ४२२
रायसिंघ विजैसिंघोत चवांण ४०९
रायसिंघ लाडूसिंघ चवांण ४०९
रायसल दरबारी सेखावत ४९०
राव अनोपकरण ४९७
राव अमरसिंघ ४२२, ४२३, ४५१
राव अमरसिंघ राठोड़ ५७०, ४७३, ४९३
राव आसथांन ४७७
राव इंदरसिंघ ४६६, ४९८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव उदैसिंघ ४७४
राव ऊदो सूजा रो ४७४
राव करण भुरटीयो ४६७
राव कानड़दे ५६३
राव गांगा ५६०, ५७६, ५८२, ५८४,
५९१, ५९२। ४८०
राव गांगा री राणी ५८१
राव चन्द्रसेन ५६२, ४३३, ४३४, ४३८,
४३९, ४४०, ४७४
राव चूंडा ४२१, ४७९, ५०१
राव छतरसाल ५८२
राव छत्रसाल बूंदेलो ४६३
राव जगदे केलण भाटी ५००
राव जगमाल ४७२
राव जालमसिंघ मोकमसिंघोत
३८६
राव जैमल राठोड़ ४७२, ४७३,
४७५
राव जैसिंघदे सोनगरा ३६०
राव जोधा ५५९, ५६०, ५६१, ५६४,
५७६, ५८१, ५८४, ६८१, ५८४,
५८५, ५८६, ५८८, ५८९, ५९१,
५९२, ४२५, ४७१, ४७८, ४७९,
४८०
राव दुरगो सीसोदियो ४६०, ४६३
राव दूदां ४३३, ४३७, ४७१, ४७४
राव धांधल ४७७
राव भारो जाड़ेचो ४६५
राव धूहड़ ४७७
राव पदमसिंघ अणदसिंघोत ४०६
राव पातोजी सोनगरा ३६०
राव पीताम्बरदास खतरी ४६०
रामचंद मधुकर रो बून्देलो ६६१
रामजसो जाडेचो ४६५
रामजी जैमलोत ऊहड़ ४३५
रामदास कछवाहो ४६१, ४६२
रामदास खवास सोभावत ४४६
रामदास दीवांण राठोड़ ४६१
रामदास रा० सू० तसिंघ रो ४६५
रामदास राठोड़ ४७२
रामपाल जोधाजी रो राठोड़ ४७५
राम मूंता ५८८
रामसिंघ ४६४, ४६६
रामसिंघ अनोपसिंघोत चवांण
४१०
रामसिंघ कछवाहो ४६६
रामसिंघ कुंभावत भाटी ५९२
रामसिंघ चुतरसिंघोत चवांण ४१०
रामसिंघ मोकलसिंघोत राठौड़
३६२
रामसिंघ राठोड़ ४१६, ४६८
रामसिंघ राठोड़ बीकानेर रो ४६२
रामा माली ५८७
रामा मुंहता ५८७
रामाराव तिलोकचंद चदरावत
४६६
रामेश्वर वेदीयो ४५२
रामोजी राठोड़ ४७४
रायसिंघ ४६३
रायसिंघ अमरसिंघोत ५२२
रायसिंघ कावा ४१८
रायसिंघ राठोड़ ४७३
रायसिंघ रिणमल रो जाडेचो ४६७
रामो वेद मुता ४४३
रायकरण दीवाण गुजरात ४६४
राय खींवसी भंडारी ४७६
रायपाल राठोड ४७६
रायमल ४४०
रायमल मालदेओत ४७१
रायमल सिंघवी ५८१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राय लालचन्द काबल रो ४९८
राव बलूजी सोनगरा चवांण
३६०, ३६१, ३६६, ३८४, ३८६, ४०८, ४१०, ४११
राव बागोजी ४७९
राव बीकोजी जोधाजी रो राठोड़ बीकानेर ४७५
राव भगवत भदोरीयो ४९४
राव भागधिस हाडो ४९६
राव भोजराय सुरजन रो हाडो बूंदी रो ४९०
राव मलीनाथ ४७६
राव मालदे ५५९, ५६०, ५६१, ५६३, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८४, ५८६ ५८७, ५८८। ४३६, ४३८, ४६७, ४७१, ४७२, ४७४, ४७९, ४८०, ४८१
राव मौकमसिंघ लालसिंघोत चवांण ३८९
राव मोतीसिंघ पदमसिंघोत ४००
राव रतनसिंघ महेसदासोत ४१८
राव रतनसिंघ राठौड़ ४७१
राव रतन हाडो बूंदी रो ४९३
राव राम ४३३, ४३४
राव रायमल ४७१
राब रिडमल ४७८
राव लालसिंघ अणंदसिंघोत ४०६
राव लालसिंघ पदमसिंघोत ४००
राव बनमालीदास मुसरफ ४९५
राव बजरंग सोनगरा ३६१
राव बरजांगसिंघ ४०७, ४०८
राव बरसल प्रथीराजोत ४३५
राव बरसिंघ ४३६, ४७१
राव बरसिंघ जोधा रो ४७४
राव बीदा जोधाजी रो राठोड़ ४७५
राव बीरम ४७१
राव बीरमदे मालदावोत चवांण ४०८
राव सगरामसिंघ सोनगरा ३६०
राव समैजा सा० बाहादुर ३७६
राव सलखाजी ४७६
राव सांवलदास ४१२
राव सातल ५६०, ५८२
राव सीहो ४१७, ४७१
राव सुंदरदास ४९४
राव सुजाणसिंघ ४१५
राव सुपुड ४९३
राव सुरेजन हाडो बूंदी रो ४९०
राव सुरताण ४३४, ४३५
राव सूजा ५६०। ४७४, ४७९
राव सैसमल ३६२, ३६३, ३९० ३९१
रावल भीम भाटी जेसलमेर रो ४९१
रावल भोजदे ५०१
रासो चहुवाण ५८८
रासो जोगावत ईंदो ४३४

रि

रिड़मल राठोड़ ४६८, ४६९
रिणछोड़दास गोयनदासोत राठोड़ ४५३
रिणछोड़दास पुसकरणो विरांमण ५६७
रिणछोड़दास राठोड़ ४६५, ४६९
रिणजीतसिंघ जोधा ४७०
रिणधीर डेडरीयो ४३३
रिणमल जामनगर रो जाडेचो ४९७
रिणमल नींबावत भाटी ४३३

रु

रुगनाथ भंडारी ५६७, ५६९। ४३७, ४७९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रुघनाथ वाघोत भाटी ४४६
रुघनाथ हकीम ४९५
रुघनाथदास सीसोदीयो ४९८
रुघपत पाचो ४४७
रुदरसिंघ मासिंघोत भदोरीयो ४९८
रुसतम मीयां ४५७

रू

रूपदे चारण ३९३
रूपसिंघ अमरसिंह देवड़ा ३९५
रूपसिंघ देवड़ा ३९५
रूपसी वैरागी कछवाहो (भारमल रो भाई) ४९०
रूपा देवड़ी (चांपा गेलोत री बहू) ५८६
रूपो वंचायत छींपो ५८४

रे

रेखो माली ५८५

रैं

रैंणायर मूला ४७९

ल

लखधीरसिंह जोधा ४७०
लछमीनारायण कछ रो ४९५

ला

लाखा ४५३
लाडा फरास ४५८
लालजी पंडित ४५७
लालदास सेखावत ४४७
लालसिंघ मेघसिंघोत चवांण ४०१
लालसिंह मोड़सिंघोत चवांण ४०६
लालसिंघ राजसिंघोत चवांण ४०९
लालसिंघ सिरदारसिंघो चवांण ४०२
लालू हलालखोर ६५८
लालो खोजे ५९१
लालो वीरसर रो ब्राह्मण ४९१

लि

लिखमीचन्द राजा कमा रो ४९५
लिखमी राणी (राव सूजा री पत्नी) ४७९
लिछमणसिंघ राठोड़ ४६८, ४७१

ली

लीखमीचन्द ४४३

लु

लुणकरण भंडारी ५८३, ५९४
लुणकरण वीरमदेवोत चवांण ४०९

लू

लूणो भंडारी ५९८। ४७८, ४७९
लूणो राठोड़ ४६९

लो

लोलो श्रीधर कानुंगो ३६९, ३७०

व

वछराज गोड़ ४२५
वछराज भंडारी ४७९
वनेसिंघ सगतीदानोत चवांण ४००

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वसुदेव चन्दनखेडा रो ४९९
वरजांग भीमोत ४७८
वरदीन खोज ४१३
वरसाल पातलोत राठोड ४३४
वसंत नाजर ५८८
वाला धवेचा ४४४
वालीगो रजपूत ४४३

वि

विक्रमादीत राजा वघेला ४९२
विजैसिंघ देवीया राठोड ३७६
विजैसिंह मूंता ५७६, ५८५
विठलदास राठोड ४७२
विठलराय गुसांई ५७१
विसनसिंघ किसनसिंघ रो कछवाहो ४९८
विसनसिंघ राठोड़ ४६७, ४६८
विहारीदास राठोड़ ४६५, ४७१

वी

वीकमसिंघ सोनगरा ३६०
वीकससिंघ चवांण ३६८, ३६९
वीजा दौ० ४३५
वीजोजी राठोड़ ४७२
वीजो वीरराजोत राठोड़ ४३
वीठल विणजारा ५६५
वीठलजी राठोड़ ४७७
वीठलदास कुसलायत ४५३
वीठलदास भंडारी ४०९
वीठलदास राठोड़ ४६६
वीदो खीची ४३३
वीदो सांकरोत राड़बरो ४३५
वीनाबाई ४४४
वीरदान केसु रो चारण ४०८
वीरनारायण पंवार ४३८
वीरमदे ५६१
वीरमदे जसराजोत धवेचो ३९९
वीरमदे देवड़ा ३८७
वीरमदे ववीचा चवांण ३७८
वीरमदे सोनगरा चवांण ३६०
वीरमदेव सीसोदीयो ४९६
वीरमसिंघ चवांण ३६८
वीसनदास हातीसिंघोत चवांण ४०९
वीहारीचद ४९३

वृ

वृंदावन संतोखीदास जोसी ४५३

वे

वेणा दवे सिरमाली ४५०
वेणीदास सिवराजोत चवांण ३९०
वेदंगराय व्यास ४५३
वेला मूंता ५८५

सं

संकर बारट ४२२
संकर व्यास ५८१
संकरपाण जोसी ५८४
संगराम ४२६
संगराम सुखदानोत चारण ४०८
संगरामसिंघ आईदांनोत धवेचा राठोड़ ४१०
संगरामसिंघ जंबू रो राजा ४९५
संगरामसिंघ राठोड़ ४६८, ४७१
संपत राजा ५९४, ५९५
संभोजी सेवाजी रो दिखणी ४९८
संवरसी सोनगरा चवांण ३६०

स

सईद कांसम ४१९

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सकतसिंस मानसिंघ रो कछवाहो ४६१
सगतसिंघ जोधा राठोड़ ४७४
सगतसिंघ मोटा राजा रो राठोड़ ४२२
सगतसिंघ राठोड़ ४६५
सगतसिंघ वेणीदासोत चुंग ३६१
सगतीदान देवीसिंघोत चवांण ४०६
सगतीदान मानावत चवांण ४०६
सगतीदान राठोड़ ४६५, ४६८
सगतीदान रायसिंघोत चवांण ४०७
सगर राणा प्रतापसिंघ रो भाई सीसोदीयो ४६१
सता भोजराजोत चवांण ४११
सतोजी चूंडाजी रा राठोड़ ४७६
सत्रुसाल रिणमल रो जाडेचो ४६७
सबलसिंघजी री बहू ४५०
सबलसिंघ ठाकुरसिंघोत देवड़ा ३६५
सबलसिंघ मानसिंघ रो कछवाहो ४६१
सबलसिंघ राठोड़ ४६६, ४६७, ४६८
सबलसिंघ सीसोदीयो ४६६
समन टाटीया ४६४
ससन टाटीया ५६४
समरो भंडारी ४७८
समावली मेहलीया (अखैराज जी री बहुवां) ४५१
सरदारसिंघ मालदेवोत ३६१
सरूपदे भाली (राव मालदे री) ५८२
सरूपी वायबेन ४४८
सलेमखां पातसाह ४२१
सलेमसा पातसाह ५६२
सवाई जैसिंघ ४२२
सवाई रैमतखां जेरड़ीयो ४१०
सवाईसिंघ पदमसिंघोत चवांण ४०२
सवाईसिंघ राठोड़ ४६६, ४६७, ४६९
सहदेव सोलंकी करण रो ५८८
सहेसो मांगलीयो ४३३

सां

सांकर जैसिंघोत राठोड ४३२
सांगो पंवार ४६२
सांभरण ४१०
सांमकरण राठोड़ ४६६
सांमदास कानूंगो ३७०
सांमी इन्दरपुरी ४०१
सांमी किसनपुरी ४०१
सांमी जैतपुरी नरपुरी रा चेला ३६२
सावत पवार ५०१
सांवतमल सिघवी ४१६
सांवतसिंघ मुणोयत ४१५
सांवतसिंघ राठोड ४४०, ४६८, ४६६, ४७०
सांवतसिंघ सोनगरा ३६०
सांवतसी दहीयो ४३४
सांवतसी सुरावत दो० ४३५
सांवलदास जादव ४६१
सांवलदास नरहरदासोत चवांण ३६२
सावल रो बेटो ४५२

सा

सातल देवडा ४३३
सादी कासम गुजराती ३६२
सादुल चौधरी ४४८
सादूस धा० ४४८
सादूलजी राठोड ४७२
सादूलसिंघ राठोड ४६८, ४७१
सादूलसिंघ वीठलदासोत चांपावत ४६६
सादूलसिंघ हींदूसिंघोत चवांण ४००, ४०६
सामदास राठोड ४७२
सामदास सुजावत देवडा ४३५
सामसिंघ ४६२

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सार धूहडजी रा ४७७
सारंगदे (राव रिडमल री वेर) ४७८
सारंगदे राठोड़ ४७२
सालगराम नाजर ५७७
सालमसिंघ चवांण ३६८
सालमसिंध राठोड़ ४६७, ४६८, ४६९
सालमसिंघ सोनगरा चुंग ३६०
सालवान ४६२
साहजहां पातसाह ४२५, ४९३, ३९१,
साहासू साहजादा ४२५
साहू दिखणी ४९३
साहूजी मरेठो ४९९

सिं

सिंभूसिघ जालमसिंघोत राठोड ४६६
सिंधकरण राठोड ४६९
सिंघ पंवार ५०१

सि

सिरदारसिंघ मालदेवोत चवांण ३८८, ३८९
सिरदारसिघ राठोड़ ४७०
सिरेमल साह संखवालेचा ५९२
सिवदान फतैसिंघोत चवांण ३९१
सिवदान हरावत चवांण ४१०
सिवदानसिंघ जोधा ४७०
सिवनाथसिंघ राठोड ४६८, ४६९, ४६०
सिवनारायण जोसी ५७५
सिववारायण पंवार ४३८
सिवपुरी ४०७
सिवराज चवांण ३६८
सिवसिंघ ४९९
सिवसिंघ इंदरसिंघोत चवांण ४०९
सिवसिंघ राठौड़ ४६५, ४६७

सीं

सींदल जोपसाजी रा ४७७
सींभुसिंह राठोड़ ४६८

सी

सीपां लालां ५९५
सीया रंगा ५७९
सीयो वेद मुता ४४३
सीलारखांन ४१४
सीलारखां ईसरखां रो ४१८
सीलु बोग व्यास पोकरण ४८०
सीवसिंघ राठोड़ ४६९

सुं

सुंदर उड़ीसा रो ४९२
सुंदर सिरमाली ४४५
सुंदरदास सीसोदीयो ४९७

सु

सुकनो भंडसाली मूता ४७९
सुखदेव जोसी ४४७
सुकदेव तीवाड़ी सिरमाली बीरामण ४८१
सुखदेव सिरीमाली त्रिवाड़ी ५६७, ५८४
सुखमल सिंघवी ४८०
सुगमन ५९५
सुग राजसिंघोत ५९४
सुगबे ५७९
सुजाणसिंघ केसरीसिंघोत जोधा राठोड़ ४७४
सुजाणसिंघ चवांण ३८७
सुजाणसिंघ नथसिंसोत चवांण ४०२
सुजाणघिंघ राठोड़ ४१९, ४६६

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुजातखां ५८७
सुजायत खां नीबायत ५७६
सुपरूदास ४६४
सुपलराव पंवार ५६४
सुभकरण बूंदेलो ४६६
सुरणायची ४५३
सुरतांण पंवार ४३३
सुरताणजी राठोड़ ४७२
सुरताणसिंघ दोलावत चवांण ४०१
सुरा री बैर ४३५
सुलताग माजम सायवजादा ४५४
सुखतानसिंघ चांपावत ५७६
सुलमखांन सोबादार ४२१
सुहड़ सेठ ५६४
सुजा पिरागदासोत भाटी ४६०

सू

सूजो वरजांगोत ईंदो ४३४
सुजो सूरतसिंघोत चवांण ३६१
सुरजमल गौड़ ४६६
सूरजमल चवांण ३६२
सूरजमल जेसा सादूलसिंघोत चवांण ४०४
सूरजमल देवीदास राणावत चवांण ३८८
सूरजमल राठोड़ ४७७
सूरजमल राव बलूजी रो चुंग ३६१
सूरजमल सगतसिंघोत चवांण ३६४
सूरतनाथ ५७३
सूरतसिंघ ओपसिंघोत चवांण ४०२
सूरतसिंघ चांपावत ३६१
सूरतसिंघ जवानसिंघोत चवांण ३६६
सूरतसिंघ नारखांनोत भाटी ३६१
सूरतसिंघ बलूओत ४६६
सूर सलेमसाह ४७१
सूरसा पातसाह ५८१
सूरसिंघ उदैसिंघ रो राठोड़ ४७३
सूरसिंघ चवांण ३६६
सूरसिंघ वेणीदासोत चवांण ३६१
सूरो गांगावत राठोड़ ४३४

से

सेऊ बोरा व्मास नाथावत ४८०
सेखोजी राठोड़ ४७२
सेरकरण पंवार ५६६, ५८७
सेरखां ५६१
सेरसिंघ ४१६
सेरसिंघ राठोड़ ४६८, ४७०, ४६७
सेरो जगलोत ४०६
सेसजी चारण ३८४
सयद मीर कासम खां ४१५

सै

सैसमल चवांण ३६२

सो

सोडो मई चारण ४०७
सोनसिंघ चवांण ३८८
सोभसिंघ जसराजोत धवेचो ३६६
सोभागदे राणी ४४६
सोभागदे राणी (म. सूरसिंघ री) ५८८, ४३५
सोभो भौरावत चवांण ३६२
सोभो सलखारो राठोड़ ४७६

स्

स्यामकंवर (राणीजी री बेन) ४५०

ह

हठीसिंघ दुरगदास मानावत चवांण ३६७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हब्रदी जामुवेग ४१३
हमीर कुंभावत राडबरो ४३५
हरकरण नाजर ५७६, ५७७
हरकांबाई ५६६
हरजी खांडा ४१४
हरदयालसिंघ मुनसी ५७८
हरबोला राजां उदैसिंघ री ओलगणी ५०१
हरवंसी बाई ६६२
हरसींघ ४०१
हरसुखदास हरराजोत पंचोली ५७६
हरी ईंदो ५६१
हरीदास आईदासोत पंचोली ४७८
हरीदास राठोड़ ४७२
हरीसिंघ छतरसिंघ रो ४६८
हरीसिंघ जैतसिंघ रो जोधा राठोड़ ४७४
हरीसिंघ बलूओत ४६६
हरीसिंघ राठोड़ ४६८, ४७०, ४७७
हसनकुली खां ४३३, ४३४
हसनकुली खां री मां ४३४

हां

हांसू पंवर ५००

हा

हाजी मैकदखां मुनसी ५७८
हाडीजी (किलाणदास राठोड़ री बेर) ४४२, ४४३
हाडीजी बहू ४५६
हाडी राणी ४४६
हाडी राणी (राव जोधारी) ५८१
हातीसिंघ चुतरसिंघोत चवांण ४०५
हातीसिंघ भोजराजोत चवांण ३६७
हाथीजी राठोड़ ४७७
हापोजी सोनगरा ३६०

हि

हिम्मतसिंघ रांठोड़ ४६६

हीं

हींगोलो अहाड़ो ४७६
हींगोलो आसा१च ४३३
हींदूसिंघ राठौड़ ४६८
हींदूसिंघ रामसिंघोत देवड़ा ३६५
हींदूसिंघ वनराज देवड़ा ३६५

ही

हीमतमल गेनीराम लोढा ४३७
हीमतसिंघ प्रथीराजोत चवांण ४०५
हीरदैनाराण हाडो ४६५

हु

हुकमसिंघ राठोड़ ४६७
हुमायु पातसाह ४२१

हे

हेतु सींघी (हतुसंदी) ४१८
हेमसिंघ लालसिंघोत चवांण ४०४

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ग्राम, नगर, देश आदि

नोटः—पृष्ठांक ५५९ से ६०० तक प्रथम भाग के परिशिष्टों के पृष्ठांक हैं और ३५९ से ५०१ तक के दूसरे भाग के परिशिष्टों के पृष्ठांक हैं।

अ

अकबराबाद ४८८
अगडावो ३७२, ३७४, ३९२, ४०७
अगराली ३७३
अगलोई ४३९
अगार ३७४, ३९०, ४०३
अड़वालेसर ३७१
अचलागढ ५००
अचलपुर ३७४, ३७९, ४०२
अचलपुर गुड़ो ३९०
अजमेर ५६२, ५६८, ४१४, ४१९, ४२२, ४२६, ४२८, ४३०, ४६७, ४७०, ४७१, ४७४, ४८७, ५०१
अजासर ४२३
अजोध्या ५८९
अटालीयो ४७३
अनववाड़ो ४८८
अरठी ३७१
अरठो ३७१
अरडुयो ३७४
अरणवो ४०९
अरणाय ३८७, ३९१, ३९४
अरणाव ३७४
अलेटी ३७४

आं

आंटली ३९३
आंतरोली ४७०
आंतरोली खुरद ४४६
आंतेरो ४८९
आंवझरो ४७१
आंवली ३७४, ३८८, ४१२
आंवलीयां ३९२
आंबेर ४२५, ४८७
आंमटकुई ३७१

आ

आऊओ ४६५, ४६७
आकली ३७१, ३७२,
आकोली ३७४, ३९१, ४२४
आखरीया वाव ३७०
आखो ३७०
आगरा ४२२
आबू ५००
आमली ४०३
आयो ४७७
आयोर ४७७
आलणीयास ४७५
आलेठो ३७२
आसणयो कोट ५७५
आसुझुपो ३७१
आसोप ४२९, ४३०, ४३१, ४३६, ४६७, ४६८
आहोरः४६५

इ

इदोड़ ४८८

ई

ईंदाणो ४२४
ईंदावटी ४२९, ४३०, ४३१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ई

ईडर ४७३
ईरावड़ी ३८६
ईसमालपुर ४८८
ईसलो ३७४
ईसरोघ ४१०
ईसरोल ३८७, २९२, ३९६

उ

उदैपुर ४७८

ऊं

ऊंचाहेड़ो ४३२

ऊ

ऊखावराणो ४७०
ऊणहड़ी ३७२
ऊणहड़ो ३७१
ऊदेही ४८६
ऊमरकोट ४७०, ५०१
ऊमाडा ४१८

अे

अेमदाबाद ४१९, ५६३, ५६८
अेवाद ४२३

अै

अैमदपुर ४७३

ओ

ओगाळो ३७१
ओसियां ४२८, ४२९

औ

औरंगाबाद ४६२

कं

कंटाळीयो ४६८

क

कटोल ३९५
कठमोर ४७४
कठोती ४२४
कडमेर ४८८
कडीयावास ३७०
कमालपुर ४०९
कमालपुरो ३८७, ३९४, ४००
करावड़ी ४०५, ४०९
करीयो ४१०
करोली ५७५, ३९१
कसूमी ४७०

कां

कांगोड़ा ३७२
कांटीयो ३७१
कांटेल २७५, ३८७, ३९०
कांणणो ४६६, ४७५
कांपलीकोट ३९३
कांमलीकोट ३६०
कांमा ४८८

का

काचेलो ३७५
कानावेरी ३६०
कापड़ीकोट ३७३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कापरड़ो ४६७
काबल ३६१
कायलाणा ५७७
कारणा ३६१
कारोलाई ४०२
कालवां ३६०
कालू ४६५

कि

किसनगढ ४४१, ४७३, ४७४
किसोरी ३७५

की

कीड़ ४१०
कीटणोद ४६६
कीरावड़ो ३७५
कीरोल ४०८
कीलबा ४१२, ३७५
कीलाणो ४८८
कीलीयोहर ३७१
कीसुंरी ३६१, ४०१

कुं

कुंडकुई ३७२
कुंडल ५६१, ५६२। ४३६
कुंभटीयो ३७३

कु

कुईप ४३६
कुड़की ४७१
कुड़कुई ३६३
कुड़ी ३६५, ४३२
कुड़ी देवड़ां री ३७५, ३६१
कुचांमण ४२७
कुतरकुवो ३७१
कुसीप ५८६

कूं

कूंभीयो ३७१, ३७२

के

केकड़ ३७२
केतू ४२८, ४२६
केराडू ५००
केरीयो ३७५, ३८७, ३६२, ३६३
केलावा ५६३

को

कोड़ कालमां री ३७५
कोचेलो ४१०
कोजो ३७२
कोटड़ो ४८८
कोटपुतली ४८६
कोटां ५७१, ५६३
कोठड़ी ४७०
कोड़मदेसर ४७८
कोढणा ४२६, ४३०, ४३१
कोणेचो ४२३
कोरणा ४३६
कोली ४०६
कोलीयांणो ३७२
कोट मुजाहद ४८८

ख

खटुकड़ी ५६५, ५६७
खजवाणो ४२४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खरथल ४८८
खरवो ४७४
खलहलीऊ ३७१

खां

खांमराई ३९६
खांभल ४६८

खा

खाखरलाई ४३९
खाजरड़ी ३८८
खाट्ट ४२३, ४६७, ४७७
खाट्ट खुरद ४२३
खाट्ट बड़ी ४२३, ४२४
खारडा ४६६
खारलां ४२८, ४३०, ४३१
खारी २७१, ४७४
खारी वाव ३७०
खारिया ४६७
खावड़लो ४०६
खासरवी ३७३, ४११

खीं

खींवसर ४२८, ४२९, ४३०, ४३१
खींवाडो ४६६
खींयास ४७३

खी

खीरुणी ४१४

खे

खेड़ ५९५
खेजडीया ३७०, ३६९, ४३९
खेतासर ५८०
खेरवा ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४७३
खेरवो ४६६
खेराट ४६९
खोखरो ४६८, ४६९
खोड़ीया रो गढ ४६ ९
खोहरी ४८८

गं

गंगाकूवो ३७१
गंगावस ३७८, ३९०
गंगावास ३७६, ३९३
गंगासर ३७०, ३७३
गंगासरो ३७१
गंघवा ४१२

ग

गड़ासो ३७६
गड़ी ४३९
गजीफोकी ३७६
गरढाली ३७६, ३८७, ३९४
गलीको ३९१
गलीफो ४००, ४०९

गां

गांगाणी ४२६
गांघरावास ३९९
गांणेतो ४०२
गांघव ३७६, ३८८

गा

गाडलीऊ ३७१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गी

गीघड़ कूवो ३७२
गीड़ां ३६६
गीड़ो ४३६

गु

गुगड़ी ३७३
गुड़ा ३६६, ३६६
गुढा ४६८
गुदरे ४१७
गुदवच ५६२ । ४२८, ४२६, ४३०, ४३१
गुदाहर ३७२
गुमठेट ४३६
गुरड़ ४३६

गू

गूदाऊ ५०१
गूदी ३७२
गूलर ४७५

गे

गेनाल ४०३
गेलासर ४७४

गै

गैनांणी ४७७

गो

गोऊं चारणां री ३७०
गोगावाला ४३६
गोडा ३७०
गोठो ३७०
गोधावासीयो ४३२
गोपी ४०७
गोमी ३७६, ३६२
गोयंदगढ ४७०
गोराऊ ४७०
गोलास ३६२
गोलासण ३७६, ३६३, ३६४
गोवां खुड़द ४२४
गोहली ३७१
गोहूवो ४३१

घ

घड़सो ३८७, ३८६, ३६६, ४१०, ४११, ४१२
घमांणो ३७६
घरणावस ३८०, ४०६
घसांणी ४०६

घा

घाटीयाद ४७०
घाणतो ३८०, ३७१
घाणेराव ४७३, ४७५
घाणो ४७५
घासण ४७१

घी

घीगाणो ३७०

घू

घुलेराव ४७३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

घू

घूढावो ३७१

घो

घोरीमनो ३७२

चं

चंडावल ४३६, ४६८

चंपावेरी ३७२

च

चजरायो ४०५
घजार ३९०
चजीरो ३७६
चडीवाव ३७०
चमली ३७२
चरटवो ३९१
चवां ४६६

चां

चांचवाडी ३८४

चांदसमो ४६९

चा

चाटसु ५६२ । ४८७
चाडी ४७६
चाणोद ४६५, ४७३, ४७५
चारणी ४०५
चारणीव ३७७, ४०९
चाल ४८८
चालकनी ३७१
चाहली ३७२

चि

चिढी ४७७

चिरपटीयो ४६७, ४७७

ची

चीणवी ३८९

चीतरड़ी ३७१

चीतलवांणी ३९१

चीतलवांणो ३७७, ४००, ४०७, ४०८, ४१२

चीतोड़ ४२२, ४७१, ४७३, ४७८

चीवड़े ४६९

चीभड़ो ३७२

चूं

चूंटीसर ४२३

चे

चेलानंडी ४३९

चेलावस ४६८

चो

चोकेलाव ५७३, ५७५

चोखां ५६८ । ३७०, ४३१

चोटील ३७१

चोढां ३९१

चोरण ३६९

चोरां ३७७, ३९३, ४०६

चोहरांणा ३८९

चौ

चौपड़मेड़ी ३७१

चौपासणी ५९३

छी

छीजर ५८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

छीपीया ४६६

छू

छूटाकुंई ३८६

छूं

छूंदाकेरी ३७२

ज

जड़फो ३७३
जलदरा ४०६
जलघरा ३६०
जलघरी ३८०
जलालपुर ४८८
जवघरा ४१०
जहांनावाद ४५४

जां

जांगोलड़ी ३८०
जांणठी ३८८
जांणवी ३७७, ३६०, ४०२

जा

जाखड़ ३७२, ३६३
जाखण ५८५
जाखल ४०२
जाखेल ३६१
जाडवो ३७८
जादण ४६८
जाव ३६१, ४०२
जालप ५८७
जालसु ४७५
जाले वेरी ३६६
जालोर ५६२, ५६५, ५७५, ५८६।
३६०, ३६१, ३६३, ३६८, ४०८, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१६, ४२०, ४३४, ४४४, ४४५, ४७८, ५००
जाव ४१०
जावलो ४७५
जावस ४७०

जी

जीखेल ३७७
जीजासण ३७७
जीजोसण ४०८
जीवणपुरी ३८६

जु

जुजाले ४२४

जू

जूडण ३७२

जे

जेजीयावाव ३७१
जेठंतरी ४६७
जेरोल ३६२
जेसलमेर ४४०, ४४१, ४७६, ४८१, ५००, ५०१

जै

जैतारण ४३२, ४६६

जो

जोड़ादर ३६८, ४१०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जोटड़ी ४०६, ४१२
जोटड़ो ३६२
जोडादर ३७८, ३८८, ३६०
जोतड़ो ४०६
जोधपुर ५५६, ५६०, ५६१, ५६२, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५७२, ५८०, ५८१, ५६०, ५६१, ५६२, ५६५ । ३६१, ३६६, ४१०, ४१५, ४१६, ४१७, ४२२, ४२३, ४२८, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३८, ४४१, ४४५, ४४६, ४५१, ४६०, ४६७, ४७३, ४७४, ४७८, ४८०
जोलवाड़ा ४७८

झं

झंवर ४६६

झा

झाड़खंड ५६०
झाड़ोद ४७३
झाफ ४८७
झालामंड ४३२
झाव ३७७

झीं

झींतड़ी ४११

झे

झेरोल ३७७, ३६४

टां

टांपी ३६६

टा

टालणीया ४७०
टालपुरा ४७०

टु

टुकछा ४२१

ठा

ठालड़ी ३८३

डं

डंडोसण ३७८
डंमाल ३७८, ३६१, ४०३, ४०६
डंसाल ४१२
डडोसण ४०४, ४०६

डां

डांगरा ३८७, ३६५
डांगरो ३७६
डांगावास ३८६, ४३७

डा

डाडोसण ३६२, ३७८
डाबली ३७०, ३६१
डाबाली ३७०
डावल ४०४, ४०६, ३७८

डी

डीघाड़ी ४३२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

डीघोप ३७८
डीडवाणा ४६६
डीडावाव ३७०
डीमोग ३६१, ४००,
डीसा ४१६

डु

डुगरोट ४४३

डूं

डूंगरी ३७१, ३६६
डूंगरीयाली ३७३

डे

डेडरो ३६१, ४००
डेडवो ३७८, ३६१, ४०२
डेढरो ३७८

डो

डोडीयाल ४१४, ५१०

ढू

ढूबी ३६७

ढे

ढेलड़ी ४८०

त

तड़लो ३७१
तणावड़ो खुरद ४३२
तणावड़ो बड़ो ४३२
तलाचार ३७०

तां

तांतड़ी ३८८, ३८६
तांतड़ो ४०८
तांवड़ो ३७६

ता

ताऊसर री गढी ४२३
तारीसरो ३७१
तावड ४८८

ती

तीखो ४३६
तीतरोल ३७६, ३८७, ३६५, ४०६
तीलांणी ३६७

तु

तुटड़ो ३७८

ते

तेजपुरी ३८६
तेजीयास ३७०

तो

तोडेठक ४८६
तोरांहन ४३६

थ

थटा ५०१

थीराद ४०६

दं

दंताला ४३८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

द

दघुड़ो ३७६
दघूड़ा ४०२
दयालपुरा ४७४

दां

दांतीया ३७९, ४०५, ४०६
दांरीयो ३८६

दा

दावलो ३७६
दादरी ४८८
दादलो ४०४, ४०६
दादलोत ३६२
दासपा ४६६, ४७७
दासीणीयो ४६६

दि

दिली ४२१, ४२५, ४३७, ४४०, ४४१, ४४२, ४८०

दी

दीलोदर ३७६, ३८८, ३६०
दीलोधर ३६८, ४११

दु

दुख ४८८
दुगवां ३८८
दुगावो ३६५
दुगोली ४२३, ४७०, ४७४
दुगोरे ४८६
दुघड़ ३६५
दुठवो ४११
दुनावो ३८७

दू

दूठवा ३७३, ३६७, ३६०
दूणीयो ४२४
दूदोड़ ४६६
दूनाड़ा ४२८, ४२६, ४३०, ४६७, ४३१

दे

देछू ४२८, ४२६
देरावर ५०१
देवदी ४३६
देवरालो ४३६
देवलीयाली ४४१
देवलीयो ४७४
देवीझर ५६०
देहरीयाली ३७३

दो

दोसा ४८८

ध

धर्माणो ३६१
धमीणा ४०६
धरणावस ३६२

धां

धांधीयां ४६६
धांमली ४६६
धांगड़वास ४४७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

धीं

धींगपुरो ४११
धींगपुरो वडो ३८८
धींगापुरो ३९८

धी

धीगांणो ४३२

धु

धुडवां ३८०
धुनाड़ो ५६२

धू

धूडवां ४०१, ४१२
धूडवो ३९०

न

नहार ४८८

नां

नांनड़ो ५७२

ना

नागोर ५७०, ५७४, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४६६, ४६७, ४७०, ४७३
नागोलड़ी ३९१, ४०३
नाडोल ५६२, ४७८
नाडोलाई ४७३
नाडीरगढ ५६२
नानोल ३९५
नारणोत ५७९
नाल ४३८

नि

निवाई ४८७

नी

नीगणांणी ३७१
नीवज ३७०, ३९६
नीबी ४७१, ४७४
नीवाई ४७४
नीवाली ४८८

ने

नेणवाई ४८७

नैं

नैंसहसो ४८८

नो

नोघड़ो खुरद ४३२
नोड़ी ३७०

प

पटेलड़ी ३७०
पडाले ४६९
पथूड़ा ३९३
पनोरीयो ३७१
परबतसर ४७१, ४७३
परावा ३८१, ३९२, ४१२
परावी ४०९
पलादर ३८८, ३८९, ४०६
पलाधर ३८०, ३८९

पां

पांचलो ३८७, ३९०, ३९७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांडखेरी ३७०
पांणाली ३७२
पांनलो ३८०
पांसरली ३७३

पा

पाड़पुरो ३८०, ३८७, ३८६, ३६६, ४१०
पाटवो ३६७
पाटोदी ४७४
पादरड़ी ३६७, ४०७, ४४३
पादरड़ो ३८१
पादरणी ३६२
पावूवेरी ३७२
पाबोलाव ४२४
पारकर ३६८, ३७०, ३७३, ५००
पारवाडीया ३६४
पारावा ४०६
पारीवासु ४११
पालड़ी ५६०, ३८७, ३६०, ४०१
पालड़ी खुरद ४४७
पालड़ी देवड़ां री ३८१, ३६५
पालड़ी सोलंकीयां री ३८१, ३६१
पालणपुर ४१४, ४१६
पाली ५६४, ४२८, ४२६, ४३०। ४३१, ४७७
पाहड़ी ४८८

पीं

पींपाड़ ५६२, ४२८, ४२६. ४३०, ४३१

पी

पीचलो : ६५
पीणाली ३६३
पीथबेरी ३७१
पीपलूण ४३८, ४३६, ४४४
पीलवौ ४६६
पीसांगण ४७४

पु

पुजाहर ३७२
पुर ३८०, ३६१, ४०३, ४०६
पुष्पमाल् ४१७

पूं

पूंगल् ५००

पू

पूरसां ३७२

पै

पैसावास ४३२

पो

पोकरजी ५६८
पोकरण ५६०, ५६१, ४२६, ४३०, ४६६, ४६७, ४७७

प्र

प्रतापपुरो ३६४

फ

फतैपुर ४२२
फरणो ४०१
फल्सूंड ४३०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

फलोधी ५६२, ५६४, ४२६, ४७६, ४८०

फा

फाग ४८७
फागलीयो ३७१
फारणो ३८१

फी

फीचेलो ४०८
फीरोजपुर ४८६
फीलवां ४०१
फीलवां खेड़ा ३६४

फु

फुलेलाव ५६१

फो

फोगरडवो ३६८
फोगरवो ३७०

ब

बगड़ी ४६८, ४६६
बगरु ४२५
बगसड़ी ३८१, ३८८, ३६०, ३६६
बड़सम ३८५
बड़ोद रांणा री ४८६
बड़ोदो मेवात रो ४८६
बड़ोद फतेखां ४८८
बरड़ीयो ३७३
बरी ४७१
बलाड़ो ४७०
बलांणो ३८४, ३६१, ४०७, ४०६
बलूंदो ४२८, ४३०, ४३१
बहलवो ४२६

बां

बांघूड़ी ३७०
बांझाकुड़ी ४७०
बांत ४६७, ४७७
बांभीणरु ३७२
बांभणलो ३७२
बांमणरु ३७१
बांकरी ४१४

बा

बाकरो ४६६ ४७७
बाकलीयो ४७०
बाखासर ३७१, ३७३
बागावेरी ३७२
बाघावास ४६६
बाघूड़ी ३७०
बाड़मेर ३६६
बाबरो ४७०
बामणावास ३७०
बालदडो ३७१
बालसमंद ५७२, ५७७, ५८०
बालेरा ३६२, ४१२
बाबड़ली ३८१
बावरलो ३८६, ४०६
बावल भोजा री ४८८
बासणी ४०६
बाहड़मेर ५००
बाहवर ४८८
बाहादरपुर ४८८

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बि

बिसनपुरा ५८०

बी

बीकानेर ४२२, ४२३, ४४१, ४७१, ४३८, ५००
बीजापुर ४२३
बीलाड़ा ४२८, ४२९ ४३०, ४३१, ४६६, ४६७

बु

बुगरडो ४२४
बुटी ४७०
बुढसु ४७५
बुरानपुर ४१३
बुहल ३७२

बूं

बूंदी ५८२, ४४१, ४४२, ४६२

बू

बूडसु ४६९

बे

बेडीयो ३९७
बेराई ४८०

बो

बोजी ३९७
बोठा ४०३
बोरूंदो ४७५
बोहली ३७१

भ

भड़वल ३९०, ३९४, ३९९
भड़ोद ४७४
भडाणो ४६७
भदसउ पालावास ३८२
भदांणा ४२३
भयोगेडो ४७५
भरकुवो ३९१, ४०४, ४०९
भरखोल ४८८
भरतपुर ५६८
भलगांव ३७२
भवातड़ो ३८२, ३८३, ३८८, ३९०, ३९८, ४१०, ४११

भां

भांदरूण वांमीयां री ३८२
भांमरो ४८९

भा

भाऊड़ी ३७२
भाकु ३७०
भाखरी ४६९
भाटवस ३७०
भाटावस ३९९
भादराजण ५६२, ४२८, ४२९, ४३० ४३१, ४७१, ४७४
भादरु ४०९
भादरुउ ३८८, ४०२
भादसड़ी ३९२, ४००
भादसुड़ ३९१
भामरलाई ४३९

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भि

भिडक ५७७

भी

भीणाय ४७४
भीतरोट ४३५
भीनमाल ५६६ । ४१७, ४१६, ४२०, ४६७

भु

भुगीयावाला ५७६

भू

भूटीश्रो ३७१
भूपार ३७१
भूहेरो ३७१

भे

भेखड़ी ३७२, ३६७
भेरांण ४८७

भो

भौजीयावेरी ३७१
भोड ४७३
भोणां ३६२
भोवांणो ४०८

मं

मंडारीयो ३७१
मंडाली ३८३, ३८८, ३६०, ३६७, ४११
मंडावर ४८६
मंडोर ५६०, ५६४, ५६५, ५६६, ५६८, ५७४, ५७६ । ४३१, ४३३, ५०१
मंडोवर ५७६, ५८६, ५६० । ४७८, ४७६

म

मख ४०६
मथानिणीया ५६४
मदावाव ३७०
गरटवो ४०४
मरठवो ३८३
मलांणी ३७२
मलारणो ४८७
महामिंदर ५७३, ५७४
महेवो ४२६, ४३०, ४३१, ४७६

मां

मांगलोद ४२३. ४२४
मांझी ४२४
मांद्रड़ी ३७१
मांडणावस ३७१
मांडपुरीयो ४२३
मांडव ४२१
मांडावस ४६६
मांघव ३६०

मा

माठा गुजर री ढांणी ४२५
माणकपुर ४२४
माणकी ३६७
मामोजावाद ४८७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मारोठ ४२५, ४२६, ४२७, ४७५, ४९३
५००
मालकोट ५६१ । ४३६, ४३७
मालगढ ५६२ । ४६६
मालपुरो ४८७
मालवाड़ो ३८२, ३९०, ४०३
मालसरो ३९६
मालाणी ३९७
मालोलाई ४१४
मासरवी ३८७
मासी ३७१
माहालांणी ३७२

मी

मीजल ४४२, ४६७
मीठड़ी ३७१
मीपल ३८२
मीपाल ३९४

मु

मुजी ३८२
मुणावेरी ३७१
मुदीयाड़ ४२४
मुलतान ४२१, ५००
मुली ४०९

मूं

मूंडवा ५७० । ४१३, ४२४, ४६९
मूंदयार ५८७

मू

मूणीयासर ३७३
मूदलुउ ३७१
मूली ४०५
मूली चवांणां री ३९१
मूलीयांणी ३७३

मे

मेगावौ ३७१
मेघावी ३९३
मेड़ता ५६१, ५६२, ५७२, ५८०, ५९४।
४२४, ४३६, ४३७, ४४४, ४४९,
४७१, ४७२, ४७३, ४७४
मेजापुर ४८९
मेठो ३८७
मेडो ३८३, ३९०
मेलाप ३८३
मेलावस ३७०, ३९१, ३९९, ४१०
मेहाजाजीऊ ३७१

मो

मोकलवास ५९०, ४३२
मोड़ी ४३९

म्ह

म्हेलीया ४१४

या

यावतलावडी ३९६

रं

रंगाऊली ३७१

र

रडवल ३८३, ३९०, ४११

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रणथंभोर ४८७
रणसीगांव ४६७
रणोदर ३८३, ३६०, ४००
रतनमाल ४१७
रतलाम ४७४
रताई ४८८
रतासरी ३७०
रतोड़ी ३८७, ३६२, ४००, ४०६
रतोड़ो ३८३

रां

रांणावास ३६४

रा

राईकाबाग ५७६, ५८२, ५८४
राऊवसर ३७२
राड़धड़ो ४१३
राडधरो ५०१
राजऊवो ३७२
राजगढ ४७३
राजपुरो ३६८
राजूडी ३७२
राणपुर ५६३, ३६८
राणासर ३७३
रातड़ीयो ४६६
राधणपुर ५००
रामपुरो ४००
रामसरी ४७३
रामसेण ५०६
रायण ४७१
रायपुर ३६६, ३६६
रायपुर सींधलां री ५६२
रायोतसर ३७२
रावड़ीयो ४७०

रि

रिणसी गांव ४६६

री

रीयां ५६२। ४३६

रे

रेवाडी ४८६
रेवारी हीरा वेरी ३७१

रो

रोएसो ४७०
रोडो ४७०
रोयट ४६५, ४७७
रोल़ ४७३
रोलयो ३७३
रोहठ ४२६, ४३०, ४३१
रोहलो ३७२
रोहलो मालांणी ३७२

ल

लवेरो ४२८, ४२६

लां

लांबो ४२६

ला

लाखावास ३७२
लाचडी ३६०, ४००, ४१०
लाडणूं ४२३, ४२४, ४७०, ४७१
लालावास ४२६

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

लासड़ी ३८७
लाहोर ४१३, ४३५, ४५२

ली

लीणरवाहु ३७२
लीपादड़ो ३९०
लीपादरो ३८३, ४०४
लीसांणो ४८८

लु

लुणसर ३७३, ४२४, ४७५

लू

लूणवा री देवली ४२६
लूणियावास ४०८
लूणा पाषण ३८४
लूणीयास ३९२

ले

लेडी ४७०

लो

लोटीसर ३७०
लोटोतो ४७०
लोहालीयो ५८४
लोहीयाणो ५०१
लोद्रवो ५०१

व

वडसम ३९२
वड़सस ४०७
वडु ४७५
वणपुरी ४१२
वणदेव ३९५
वदनोर ४७३, ४७५
वरडवल ३८८
वरडवाली ३९८
वरण गांव ४२४
वरणपुरी ३८५, ४०४
वरणवी ३८८
वरणवो ३८४, ४११
वरणावो ३९०, ३९७
वरणासर ३७२
वसवांणी ४२४
वसवो ४८८

वां

वांक ३७२, ३८४, ३८९; ४०५
वांमटीयो ३७१
वांसरलो ३७१
वाख ४१२
वागरी ४१४
वागास ४३९
वाचलो ३७२
वाटकी ३८२, ३८८, ३९०, ३९८, ४११
वाडसां ४६७
वाडीयो ४६७
वाराही ४८९
वालेर ३९५
वालेरा ३८१, ४०४
वासण ३८४, ३९५, ४००
वासणी ३९२
वासणी देवड़ां री ३८४, ३९०
वाहलो ४२८, ४३०, ४३१

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वीं

वींटली ५६२

वी

वीठोरी ४६७
वीरमपुरी ३८७
वीराऊ ३८५
वीराऊवो ३७२
वीरावो ३९३
वीरोल ३९१, ४०६, ४१०
वीसलकुवो ३७२
वीसलपुर ४३३, ४५१
वीसासर ३७२, ३७३
वीसीयांवेरी ३७०
वीहोल ३८४

वे

वेड़ीयो ३७०
वेचवाड़ी ४०१
वेचीपाड़ी ३९०
वेजपुरी ३८७
वेणपुरी ३९०
वेरी ३९३
वेसालको ४०१
वेसालां ३८४, ३९०

वो

वोडवो ४२४
वोड़ा ३८५

श्री

श्रीमाल ४१७

स

सगतीपुर ३५९
सगरवाव ३७१
सड़वल ३८१
सथलाणो ४६६, ४७७
समदड़ी ४७५
समदरड़ी ४६९
सखांणो ३८६
सरगोठ ४२७
सरचीणां ३९४
सरवांणो ३८६, ३९१
सराघणा ४७१
सवांण ३८२

सां

सांगड़वो ३८५
सांगानेर ४४९
सांचोर ३५९, ३६०, ३६१, ३६३, ३६४, ३६८, ३६९, ३७०, ३७३, ३८७, ३८९, ३९०, ३९१, ३९३, ३९४, ३९९, ४०८, ४१०, ४१२, ४१७, ४१९
सांतेरीयो ४०५
सांभर ४२५, ४२७
सांमी री वेरी ३७१
सांवरीडरी ४७१

सा

साऊ ३७२
साकरस ४८८
साकरीयो ३७०, ३९६
सागड़वो ४०४, ४०९
सातरीयो ३८५, ३९०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सातलमेर ५६०, ५६१, ४२६
सातो चारणां री ३७१
सादड़ी ४६५
सायली ३६६
सालावास ५६५
सालाहर ३७२
साहाऊ ३७२
साहारलो ३७२
साहली ५६३

सि

सिणला ४६६, ४७७
सिवपुर ३६०
सिनाई ४८६
सिरीयारी ४६८
सिव ४०६
सिवाणा ५६२, ४१४, ४७०

सीं

सींदवाड़ो ३७३
सींवसेड़ो ४३६

सी

सीकर ४२३
सीणाणीयो ३७१
सीदेपुर ३८५
सीधेसुर ४०१
सीमारड़ी ३७१
सीया ४७३
सीरोही ४१७, ४३४, ४३५, ४३८, ४३६, ४८०
सीलूं ३८६, ३६०
सीलूको ४०३
सीलोसण ३८६, ३६२, ४०८
सीवाणा ५८६, ४३०, ४३८, ४३६, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४५०, ४५६
सीहमूल ३७२

सुं

सुंतले ३६२

सु

सुटाकुई ३७२
सुतड़ी ३६७, ४११
सुनेर ४८८
सुनेहर ४८६
सुमेल ४२१, ४७१
सुरवो देवड़ां री ३६१
सुरावो ३६५
सुवागी चारणां री ३७१

सूं

सूंघाऊ ३८३
सूंटाकुई ३६३
सूंतड़ी ३८६, ३८८, ३६०
सूंरावों ३८५

सू

सूरपुरा ५७६
सूराचद ३६०, ३६८, ३६६, ३७०, ३७३, ३६५, ३६६, ४१५, ५००
सूराबंद (सूराचंद) ३६८
सूरावाव ३७१

सें

सेंसाऊवो ३७२

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

से

सेड़वो ३७१
सेतरावो ४२८, ४२९
सेमारड़ी ३९६
सेली ४०२
सेवाड़ी ३८५, ३९१, ४६६
सेवाड़ो ३६०, ३६८, ४०५
सेवावो ३९७
सेहणो ३७२
सेहेली ३८५, ३९१

सै

सैतांणो ४०१

सो

सोजत ५६०, ५६२ ५७२, ५९४, ४६०, ४७८, ४२९, ४३३
सोनारड़ी ३७२
सोनेली ४२४
सोहोतांणो ३९०

सौ

सौकड़ा ४८०

ह

हड़मताई गढ ३६२
हड़ीतर ४०२
हडेवर ३८६
हदवो ३७२
हरपालीयासर ३७२
हरसांणो ४८८
हरसोलाव ४६६, ४७७
हरीयाडांणो ४६६
हरीयाली ३८६, ३९१, ४०९
हरीयालो ४०३
हवेली ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२
हसतुड़ी ३७३
हसनपुर ४८८, ४८९
हसम ४१०

हा

हाडेचा ४०७
हातर ३९१
हातलो ३७३
हातीगांव ३८६
हारेचो ३८९, ३९२
हाली वावड़ी ३७२
हालीया वावड़ी ३९३
हालु ३७२

ही

हीगलो ४६९
हीड़वाड़ा ३९४
हीड़वाड़ी ३८७, ४१२
हीड़वाड़ी ३८९
हीरावसी ३७०

हु

हुतीगांव ४०१
हुवरणी ४८८

हे

हेकज ३७२
हेमावाव ३७१

हो

होटली ४४४
होतीगांव ३९१, ४०८

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पर्वत और पठार

अंबाई रौ भाखरा १०३
काणुंज रो भाखर ८७
खुमराड़ीयो भाखर ५५३
गीररी समेळ बीच भाखरी ५६
चिड़ीया टूंक भाखर ३८, १६२
झीकां रौ भाखर दो. २६४
तोडा रा भाखर ४६५
देवल रा भाखर १०२
देवीजी री भाखरी ३८३, ३८४, ३९३
पई रौ भाखर ३८७
पई रौ मगरै २७, २६
पीपलण रौ भाखर ४५, ६६, दो. ५८, २६४, २६५
भोगसील पर्वत १
मंसाजी रौ भाखर ४७१
माता री डूंगरी ५४४
मेर १
रूपजी रा भाखर दो. ६६
वांसंघौ भाखर ५५३
वोलीया रौ भाखर २८५
सेवली री भाखर्री ३०१

तीर्थ मंदिर मसजिद आदि

अजमेर खुवाजा ६६ दो. ११४
आदेसुर जैन देहरा दो. ३०६
आरांभा री थांन दो. २५०
इलगार दरगाह १०६
ऐकलिंगजी २७
कपालेसुर महादेव रो देहरौ ३६२
कल्पंणरायजी रौ देहरो दो. १
काजेसर माहादेव ७८
कीरतथम दो. २१५
कुबेजी रो असतल ४४३
कोटासण देवी रो थान ४८२
खीवजजी देवी रो देहरो दो. ३११
खोडीयाल रौ थांन ४२०
गया ३६ २३६, ३३४, ४७८, दो. ३५४
चतरभुंजजी रौ देहरे ३६०, ३६२ दो. ३१४, ६६, ११६
चतरभुजायजी रो देहरो दो. ३११
चांवडा देवी (स्थान) २२, २३
जानरायजी रो देवरो ४४३
जैन देहरो दो. १
जैन रा देहरा ३६२
जोगेसुर महादेव रो (देहरो) ३६२
झाली रौ बड़ ४८
तीलोकसी बरजांगोत उदावत राठोड़ री छतरी ५८
देवी रो थांन (भाखर कमल माल रा ऊपर) ५३६
देवीजी रो थांन ५४२, दो ३०६
द्वारकाजी ५४४
धारेस्वर महादेव ४७६
नरा राठोड़ री छत्री दो. ३१२
नीलकंठ महादेव ३६२
पातालेसुर महादेव ३६२
पाबू रौ थांन ३६३
पारसनाथ रौ देहरो दो. ३६
पीर रांमदे रो थांन दो. ३१५
पुनली देवी २६८
फलोधी महामाया रो देहरौ दो. ६२
फलोधी महामाया रौ देहरो दो. ४१, ११५, ११६
बालनाथ जोगी रो थांन दो. ३११, ३१६
बिंद्रावन-मदनमोहनजी दो. ११४
भद्रकाली देवी ५
भाटी सांकर सुरावत जेसी री छतरी ५८
मदनमोहनजी रो देहरो दो. १७३

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

महादेव रौ थांन ४७१
माडलेस्युर महादेव १
माता रौ थांन ४२२
मावादेवी ४७६
माहादेवजी रो थांन दो. २५४
माहादेवजी रो देहरो दो. ३११
माहावीरजी रा देहरा १८८
मुलनायकजी रो देवरो ३९२
मेड़ता चतुरभुजजी दो. ११४
रांमदेजी री छत्री दो. ३१२
रांमदेजी रो थांन दो. ३११
रांमदेजी रौ देहूरा दो. ३५७
रामदेव रौ १४४ दो. ३०८
रामेश्वर माहादेव ३३५
रिणछोड़जी ७, ८
लखमीनारायण रौ ठाकुरदवारौ ३८८
लखमीनाराइणजी रो देहरो ३२
लिखमीनारायणजी ३९२
लिछमीनारायणी रो देहरो दो. २९०
वाराहजी रौ देहरौ ५
संगवीयां री देवी १४०
संन्यासी गौतमगिर रो देहरो ३९१
सहेसलींग रौ कुंड ४६०
सांमी सूरजनाथ रो गुंमट दो. ३३०
सिव रा देहरा ३९२
सिवराज जोधावत री छतरी ५८
सुरेसुर महादेव रो (वाधेलाव) ३९२
सूरजजी रो देहरो दो. ३११
सूरसाह पातसाहा री मसीत ५८
सोझाली देवी ३९३
सोमेस्वरघाट ३१
हणवत रौ थांन ३९३

नदी तालाब कुंड आदि

अखरणी नाडी ४७२, ४७५
अखाईसर तलाव दो. ३५१
अजायब कोहर दो. १९
अबदेलाव तलाब ४५८
अहवाची नदी १२२
आपानडी तलाव ४५६
आसा रा तलाब ११९
ऊलावाय दो. ३१५
कुंडल तलाव दो. ६३
कुंडल वेजपो तलाव दो. ३८
कचोलड़ी नाडी ४२८
कचोलीया तलाब ४८८
कचोलीया नाडा ४१९
कांणुजा भाखररी नदी ५२१
कांणुजावाली नदी ५१५
कालंझर नदी ५५०
कालग वाली नदी ५४४
काकरीयौ तलाव ९८, ९९
कापड़ीयौ ३९३
कालाझरणा वाला री नदी ५१९
कालीझर नदी ५४३
कालीयानडी तलाई दो. २९९
किसनेलाव तलाब ४८३
कुंमारवाय (बावड़ी) दो. ३१३
कुंभालाव तलाब ४१९, ४७२
कुकसो तलाब (कील्यांणसर) दो ६३
कूंपासर तलाब ४८२
केरली नाडी ४१९, ४७२
कोहर-घीघालीयो दो. २२
कोहर-मींवासर दो. १७
कोहर-भोजासर दो. १८, २०
कोहर-लूणो दो. २२
कोहरीयो बावड़ी दो. ३१३
खांडीवाय बावड़ी दो. ३१३
खांखो री बाव दो. ३१४
गंगाजी ४, ३७, ४८७, ५४७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गंभीर नदी १७६
गीररी नदी ५२६
गीलड़ी नदी ३९४
गोपेलाव तलाव ४२१, ४७४
घड़ासर तलाव १२०
चांग नदी मानपुरा वाली ५१८
चांगवाली नदी ५३२, ५३३,
५३९, ५००
चूंडासर चरडावतां री तलाव ४३३
चोहथेलाव तलाव ४३८
जमना नदी १३५
जवणकां तलाव दो. ३२०
जवण री तलाई दो. ३००
जाखणनडी (तलाव) ५२१
जाजुसर तलाव दो. २९०
जुठावली नदी ५२७, ५४०
झलरखौ तलाव ४४९
झांझण नदी ५१२
झांझण री तलाई दो. ३३१
टुस नदी १०८
तापती नदी १४९
भीवाय कुंड दो. ३१६
थड़ी वाव दो. ३१४
दलपत वाली बावड़ी १२०
दारीयार नदी ४७५
दुधेलाव तलाव ४५०
देवनीमी झील दो. २५०
देवलीयाला गी नदी २६२
देहाऊपगवाय बावड़ी ३१४
धरणासर तलाव दो. ३१२
धवलेलाव तलाव ४४९
धाराजी । नदी ४६८
धरेसरी नदी ३९४
धूहडसर तलाव दो. २९१
नदणहाई सलाव दो. २९२
नरबदा १४९, १७६
नरासर तलाव दो. २९६, ३००, ३१२
नवासर री कोहर दो. २५
नागाद्रीह नदी १
नाथे री तलाई दो. ३२१
नीवली नाडी ३९३
नीबली बावड़ी दो. ३१३
पंचोल नडी ३९३
पड़ीहारां वालो तलाव ४७६
पदमसर १८६
परमेलाव ३९३
पाबू नडी ३९३
पाबूसर तलाव दो. २९
पोहोकरजी रो कुंड ५
फुलेसो तलाव ५४६
वहूजी सरूपदे री तलाव १८८
बावेलाव तालाव ३८४, ३९२, ४२८,
४३५, दो. २४३
बाली बावड़ी दो. ३१४
भलवाय बावड़ी दो. ३१४
भांडेलाव तलाव दो. २१५
भाखरवा बावड़ी दो. ३१३
भींवनडी तलाव ४४१
भैरव नदी ४८५
मंदागग बावड़ी दो. ३१३
मांडलप तलाव दो. २३०, २६८
मांणकरावसर तलाव दो. ३४९
मांनपुरा वाली नदी ५२६, ५२७, ५५०
मालदे री तलाव दो. ३५३
मेहावाय बावड़ी दो. ३१३
मैहरलाई तालाव दो. ३१२
मोखासर तलाव दो. ३१२
मोखासर बावड़ी दो. ३१४
मोडी री नाडी ४७७

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मोहणवाय बावड़ी दो. ३१३
मौरेई नदी ५२६
रखासर तलाव दो. १४
राणीसर तलाव १४३
राजू री तलाई दो. ३३२
रांमदेसर तलाव दो. ३१२, ३४६
रांमसर तलाव दो. ३
रांमेलाव तलाव ४२७
रामपुर वाली नदी ५२६, ५३५,
 ५३६, ५४५
रायलाव तलाव दो. २५२
रासेलाव तालाव दो. २६०
रावतसर तलाव दो. ३४६
रासगीर वाली नदी ५१३
रासवाली नदी ५२८, ५३१
रिड़मेलाव तलाव ३६२
रीछमाली तलाई दो. २७५
रूखी री तलाई दो. ३१२
रूपणीसर तलाव दो. ३३६
रूपा री तलाई दो. ३१५
लीगासर तलाव दो. ३१२
लूणी नदी ३५७, ३५६, ३६०, ४५५,
 ५११, ५१३, ५१६, ५२१, ५२२,
 ५२४, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६,
 ५४७, दो. २३३, २३५, २३७,
 २३६, २४०, २४३, २४६, २५६,
 २६२, २७०, २८१
लोलोलख तलाव ४५२
लोहावा री बावड़ी दो. ३३०
वछेसर बावडी दो. ३१३
वधनोर री नदी ५१२, ५४७
वीरावाय बावड़ी दो ३१३
वीसलमडी तलाव ४८५
संघरलाई तलाव दो. ३१२
समरवती नदी दो. ७१
सतलज नदी १३२
रातावाय बावड़ी दो. ३१४
समेल री नदी दो. ५७
सहसमेलाव तलाव ४७१
सहेजलाव तलाव ४२२
सांडेव तलाव ४८७
सांडेलाई तलाई ४३५
सादेलाव तलाव दो. २५६
सापेलाव तलाव ४६०
सारगवाय कुंओ दो. ३१३
साहणीयां वाली नाडी १८६
सिपराजी (नदी) १७६
सिधपुरा नदी ५२६
सुदाताघी री तलाई दो. ३१२
सूकड़ी नदी ४८४, ५२६, ५३८।
 दो २३५, २४०, २४१, २८१
सूजासर तलाव ५१३
सोहड़सर तलाव दो. ३३४
सोहाईवाय बावड़ी दो. ३१५
सौभोलाव तलाव दो. २५६
हणवंत नडी ३६३
हमारसर तलाव दो. २६१
हीरावाय बावड़ी दो. ३१३

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विविध नामानुक्रमणिकाएं (परिशिष्टों की)

नोट—३५९ से ५०१ तक पृष्ठ सं० द्वितीय भाग की तथा ५५९ से ६०२ तक प्रथम भाग की।

पर्वत, पठार

कागा री भाखरी ५६९
कैलास ३५९, ३६०
कोयला परबत ५८९
कोला रो भाखर ४४०
चांवडाजी री बुरज ५५९
चिड़ीया टूंक ५५९
दताला रा भाखर ४३८, ४३९
पीपलुणा रो भाखर ४३८
पींपलूद रा भाखर ५६२
भेखा भाखर ५७९
गांचीये भाखर ५७७
मावड़ीया री घाटी ५६८
सिध जलंधर बावजी रा भाखर ५००
सींगोरीया री भाकरी ५७३, ५७९
सोजत री भाखरी ५६०
हडुमांनजी री भाखरी ५६१
हरा भाखर ४३९

मन्दिर, छतरी, थान आदि

अचलेश्वर महादेवर ५००
अचलो सिरराजोत जोधवत
री छतरी ५८१
अरणो तीरथ ५९०
आणंदधनजी रो मिंदर ५६४, ५६५,
५६७, ५६९, ५९१, ४४८,
४५९, ४६३
आदेसुरजी रो देहरो ५९३
आयस देवनाथ री समाध ५७३
उदैमिंदर ५६७, ५७४
ओसियां महावीरजी रो देहरो ५९४
ओसियां सिचीयाजी माता रो देहरो ५९४
कालकाजी रो मिंदर ५७५
काणाणे पारसनाथजी रो देहरो ५९५
कापड़ी देवी ४३९
कापरड़ा पारसनाथ रो देहरो ५९४
कुंजबिहारीजी रो मिंदर ५७१
कुंतनाथजी रो देवरो ५९३
कुसालसिंघ ठाकुर आउवा री
छतरी ४३७
ख्वाजेजी री दरगाह ५०१
गंगस्यामजी रो मंदिर ५६६, ५७१,
५९१, ५९२
गढ री पाळ रा खेत्रपाळ ४४९
गांगाणी—अरजनपुरी पदमनाभजी रो
देहरो ५९४
गोपीनाथजी रो देवरो ५९२
चतुरभुजजी रो देहरो ५९१, ५९३
चतुरभुजराय रो मिन्दर ४३६
चांवडा माताजी ५५९
चांवडाजी रो मिंदर ५६६, ५७५
चांवडा देवी रो थान ५८७, ५९१
चौरासी सीधों रो मिंदर ५७४
जगनाथजी रो मिंदर ५९२
जालोर महावीरजी रो देहरो ५९५
जीणमाता रो मिंदर ५७९
जैतियां रो मिंदर ४३७
जोगीतीरथ ५९०

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

ठाकुरजी रो देहरो ५७९
तिंवरी पारसनाथ रो मिंदर ५९४
तिलोकसी सिवराज भींयोत राठोड़ री छतरी ५८१
दाऊजी रो मिंदर ५६७, ५७१
देवतावां री सालां ५६६, ६६८, ५७४
नटवरजी रो मिंदर ५७१
नरसिंघजी रो मिंदर ५७२
नवनाथों रो मिंदर ५७४
नागणेचीयांजी ५६०, ४४६, ४५५
नागणेचीयां रो मिंदर ५६३
जाडोलाई महावीसी रो देहरो ५९४
नाथजी रो मिंदर ५७४
नीवोतीरथ ५९०
पंचदेवरो ५६६
पंच मींदर ५७०
पारसनाथजी रो देहरो ५७९, ५९२, ५९४
पिरागदास री छतरी ५८६
पीर तारकीन री दरगा ४२४
बालकिसनजी रो मिंदर ५७१
भीड़भंजन रो थांन ४३९
भींव पांडव रो गोडो ५८९
भैंरूजी रो थान ५६०, ५६६, ५७३
मंडलेश्वर महादेव ५८७
मंडोवर खेत्रपाल ४५५
मदनमोहनजी रो मिंदर ५७१
ममसोव्रतजी रो देहरो ५९३
मलीनाथजी रो मंदिर ५६४
महादेवजी रो देहरो ५७९, ५८९
महादेवजी रो मिंदर ५७१, ५८१, ५८७
महादेव पतालेश्वर रो देहरो ४२४
महादेव पारवती री मूरत ५६५
महादेव रामेश्वर रो देवरो ५८७
महादेव वीरभंजन रो थान ४४४
महादेव साहलेसुर ५९३
महादेव हलदेश्वर रे भाखर ४३८
महाप्रभुजी रो मिंदर ५७१
महाराजा अजीतसिंघजी रो देवल ५६८
महाराजा गजसिंघजी रो देवल ५६५
महाराजा जसवंतसिंघजी रो देवल ५६६
महाराजा सूरसिंघजी रो देवल ५६४
महाराजा सुजाणसिंघ री छतरी ४४५
महावीरजी रो देवरो ५९३
महेसदास री छतरी ४३७
माताजी रो मिंदर ५६८। ४३७
माताजी हींगलाज री मूरत ५६५
माता हींगलाज रो देवरो ५८७
मीरांसाजी री दरगाह ५०१
मुरली मनोहरजी ठाकुर ५६५
मुरली मनोहरजी रो मिंदर ५७०
मूलनायकजी रो देहरो ५६६, ५९९
मूलनायकजी रो मिंदर ५९२
मेवा नगर-जैन देवरा ५९५
राजराजेश्वरी माता रो मिंदर ४३७
रामदेव रो थांन ५८४
रामेश्वर महादेव ४५०
रामेश्वर महादेवजी रो मिंदर ५६७
राव अमरसिंघ री छतरी ४२३
रावत री छत्री ५६८
रिणछोड़जी रो देहरो ५९१
लालबाबे रो मिंदर ५७४
लोड़ो मिंदर ४३७
वडजी रो मिंदर ५७४
वराह भगवान रो देवरो ५९३
वीठू-महादेवजी रो देहरो ५९५
वैजनाथ महादेव रो देवरो ५९०
श्री नाथजी रो मिंदर ५७३, ५७४
संकरदास सूरा भैरवदास जैसाउत रो भाटी री छतरी ५८१

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

संतनाथजी रो देवरो ५९२
सांमजी रो मिंदर ५७१
सांमी हरराम रो देहरो ५९२
सांवलाजी रो देवरो ५९२
सिंभूनाथ रो देवरो ५९३
सीताराम रो देवरो ५९१
सीतलां रो थांन ५९०
सूरजजी रो मिंदर ५७१
सेरसिंघ ठाकुर रीयांरा री छतरी ४३७
सोनाणा रा खेत्रपाळ ४४९
हरमिंदर ५८३
हरसती माता रो मिंदर ५८८
हींगळाज माता रो थान ४३९
हींगळाज रो मिंदर ५८०

तालाब, कुंड, नदी

अबतलाव तलाब ४४४
अभैसागर तलाब ५७८
आनासागर तलाब ५०१
ऊदेलाव तलाब ४३८
कसुमदेसर तलाब ५८४
कागो कुंड ५९०
किलांणसागर तलाब ५८२/४६२
गांगावास तलाब ४३७
गांगेलाव तलाब ५६०, ५८२
गुलाबसागर तलाब ५७२, ५७३, ५७४, ५७६, ५८५
चाकेलाव तलाब ५६१, ५८१
डांगोलाई तलाब ४३७
तेजसागर तलाब ५७२, ५८४, ५८५
दुधेलाव तलाब ५९४
दूदासर तलाब ४३६
देवकुंड ५६७, ५६९, ५८०
धंधू तलाब ४३९
धायसागर तलाब ५८०
नवसरो (मेलावाव) ५८१
नवलसागर ४३७
नागादड़ी ५६५, ५६६, ५८९
नाडेलाव तलाब ५७७, ५८४
नींबासर तलाब ५८०
पदमसर ५७४, ५८१, ५८२
फतैसागर तलाब ५७३, ५८४, ५८५
फरासत सागर ५८८
फलासर तलाब ५८४
फुलेलाव तलाब ५७४, ५८२
बगतसागर
बइजी रो तलाब—सरूपसागर ५८२
बालसमन्द तलाब ५६०, ५७४, ५९०
बीजोलाई तलाब ५७७
बेजपो तलाब ४३६
भवानीकुंड तलाब ५८०
भणिसर तलाब ५८४
मानसागर तलाब ५७४
मालासर तलाब ५६१, ५८४, ५८६
मीठीनाडी तलाब ५७७
मोतीकुंड तलाब ५८०
राणीसर तलाब ४३४, ५६१, ५७३, ५७५, ५८१, ५८२
रासोलाई तलाब ५८८
लालसागर तलाब ५७६
लूणी नदी ३७४, ३७६, ३७७, ३७८, ३८०, ३८२, ३८३, ३८४, ३८६,
वसंतसागर ५८८
वीरमकुंड ५८३
वोसोलाव तलाब ५८४
सरसती नदी ३५९
सूकड़ी नदी ३७७, ३८०
सूरजकुंड ५८३, ५८७, ५९२
सूरसागर तलाब ५६३, ५६४, ५६५, ५८३, ५८६, ५८९, ५९१
सेखावतजी रो तलाब—जानसागर ५८३
सोभागदेसर तलाब ५८८

—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव श्री जोधाजी री जन्मकुंडली

सम्वत १४७२ वैशाख सुदि ४ बुधे उदयात घटी १ मूल नक्षत्रे

राव श्री जोधाजी री जन्म

बु गु २   १२ रा

शु ३   सू १   ११

श ४ मं   १०

५   ७   ९ चं

६ के   ८

राव सूजाजी राठौड़ रो जन्मकुंडली

सम्वत १४९६ भादवा वदि ८ गुरो (रवि० अगस्त २, १४३९ ई०)

उदयात ३४/१५ राव सूजाजी जन्म सुत जोधाजी गृहे पुत्र ।

१२   १०

१   श ११   ९ रा

चं २ गु.   ८

३ के   ५ सू   ७

४ मं   बु ६ शु

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुं० बाघजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १५१४ पोह वद ऽऽ उदयात घटी २४/४४
(शुक्र., दिसम्बर १६, १४५७ ई०) राव सूजाजी गृहे वाघाजी जन्म

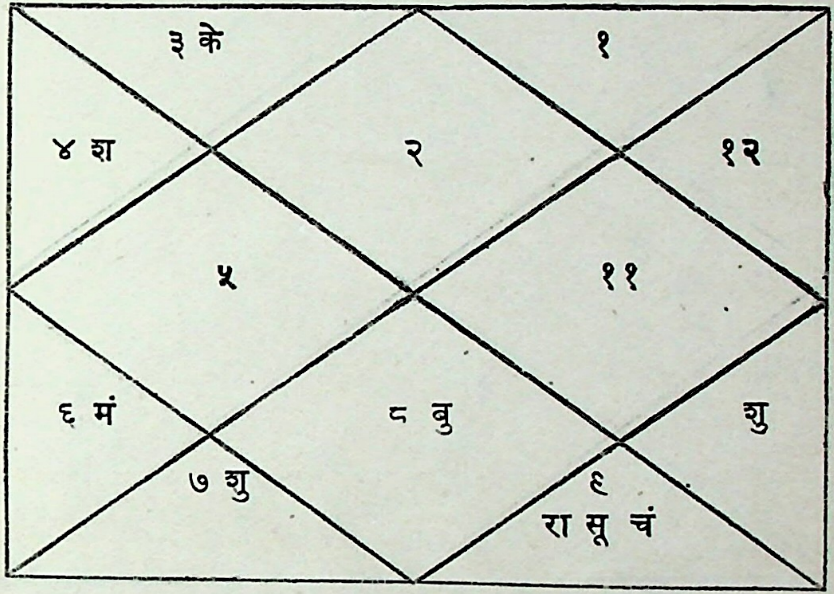

राव गांगाजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १५४० वैशाख सुदि १० गुरौ उदयात १५/१२ स.
(गुरु, अप्रैल १७, १४८३ ई०) राव गाँगाजी रो जन्म

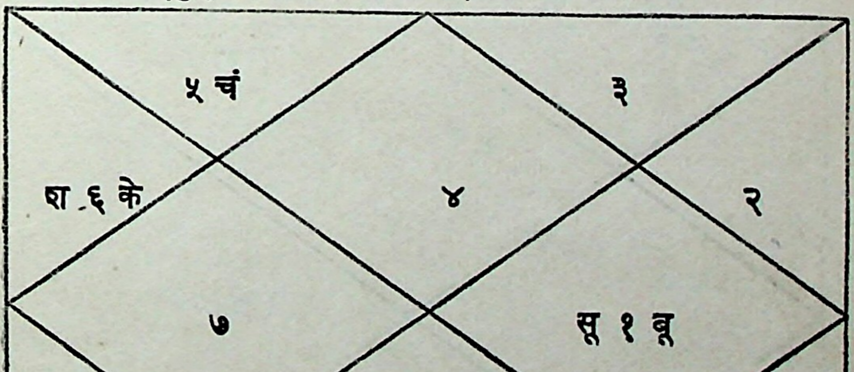

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव मालदेजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १५६८ पोह वद १ शुक्रे रात्रिगत घटि २४/२२
(शुक्र०, दिसम्बर ५, १५११ ई०) समये रावजी थी मालदेजी रौ जन्म

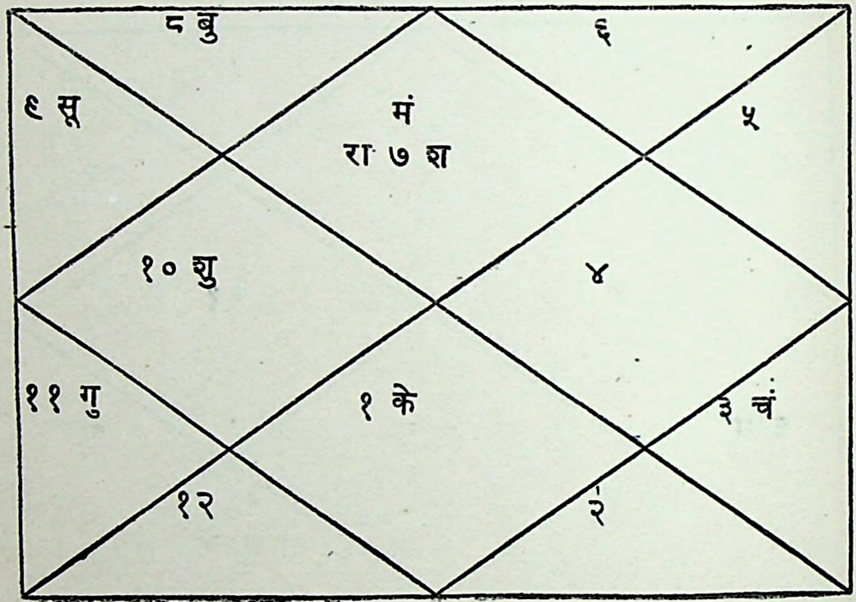

राजा उदयसिंह मालदेओत री जन्मकुंडली

सम्वत १५९४ माघ सुद १३ रवौ उदयात २१/३२ (रवि०, जनवरी १३, १५३८ ई०)
समये राजा उदैसिंह जन्म मालदे गृहे पुत्र

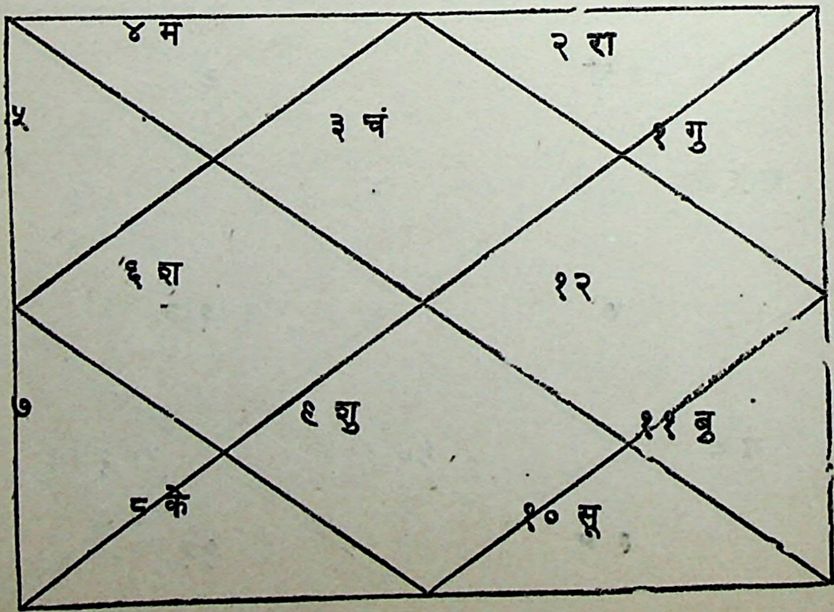

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव चन्द्रसेन री जन्मकुंडली

सम्वत १५९८ श्रावण सुद ८ रात्रि गत घटी १०/२६ (शनि०, जुलाई ३०, १५४१ ई०)
राव मालदेजी गृहे चन्द्रसेन रौ जन्म

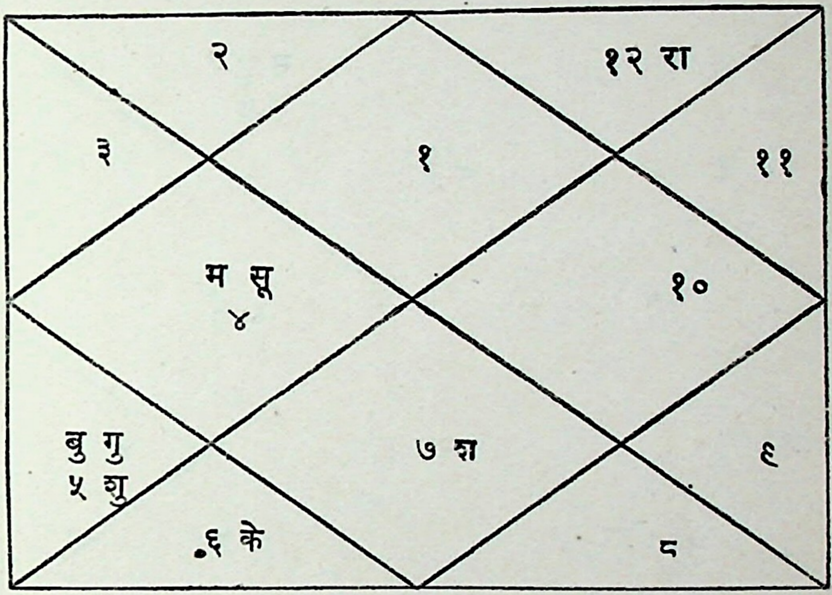

राजा सूरसिंह उदयसिंघोत री जन्मकुंडली

सम्वत १६२७ शाके १४९३. वैशाख वदि ऽऽ उदयात् ५०/३२ स. (मंगल०, अप्रेल २४, १५७१ ई०) राजा सूरसिंहजी उदैसिंघोत रो जन्म

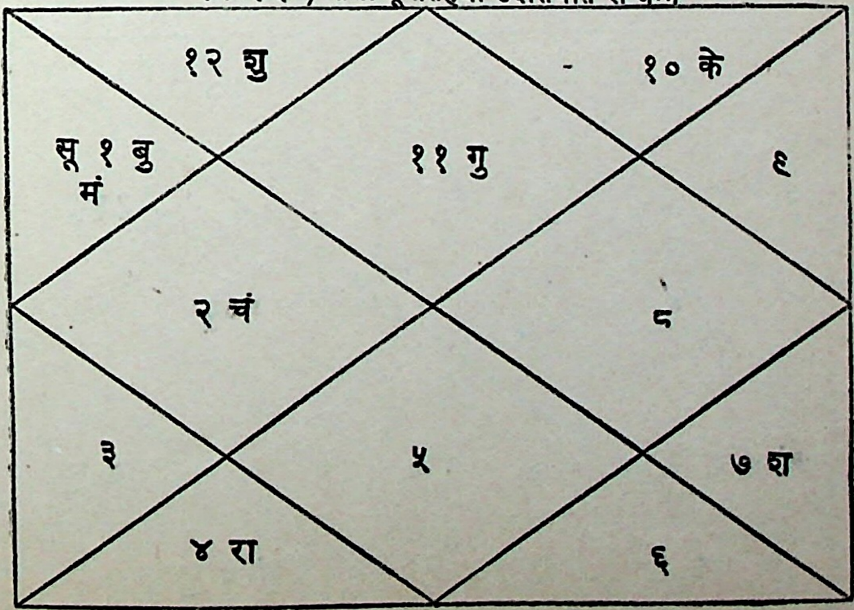

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजा गजसिंह राठौड़ री जनमकुंडली

सम्वत १६५२ शाके १५१७ काती सुद ८ गुरौ उदयात १/७ (गुरु०, अक्टूबर ३०, १५९५ ई०) समये महाराजा गजसिंहजी रो जन्म

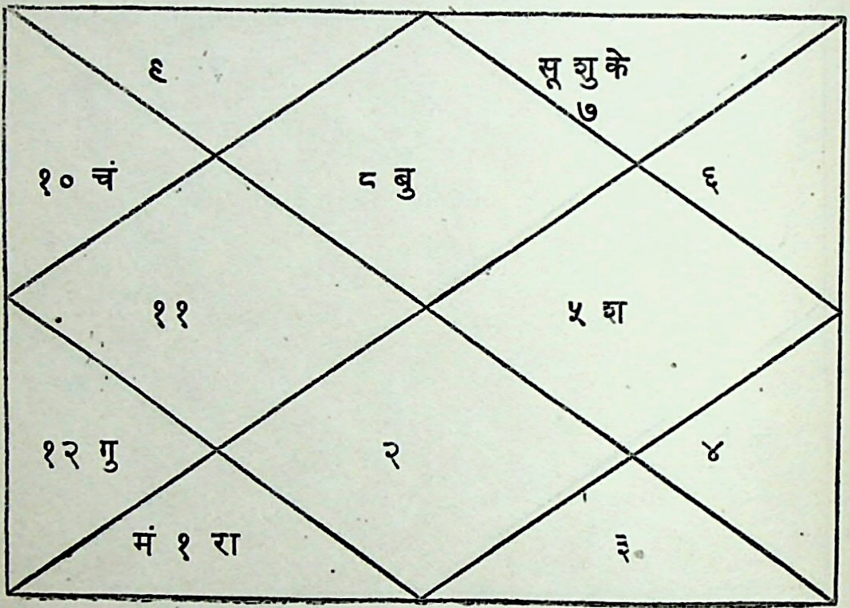

राजा जसवन्तसिंह राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १६८३ शाके १५४८ माघ वद ४ भौमे उदयात १३/३२ (मंगल०, दिसम्बर २६, १६२६ ई०) समये महाराजा जसवंतसिंहजी मघा नक्षत्रे सूर्य ८/२६/५०/१

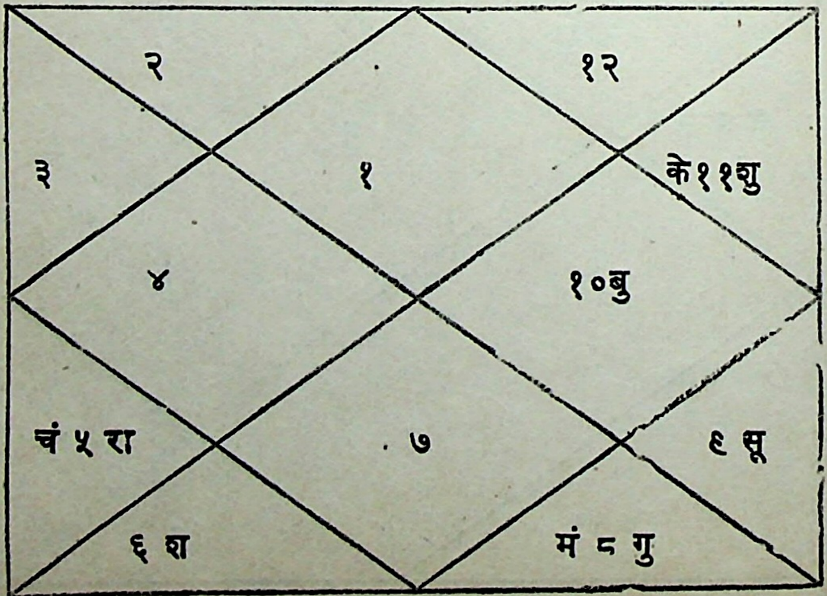

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कुं० पृथ्वीसिंह री जन्मकुंडली

सम्वत १७०६ आसाढ सुद ५ गुरौ (गुरु०, जुलाई १, १६५२ ई०) उदयात महाराज जसवन्तसिंहजी गृहे पृथ्वी..हजी जन्म

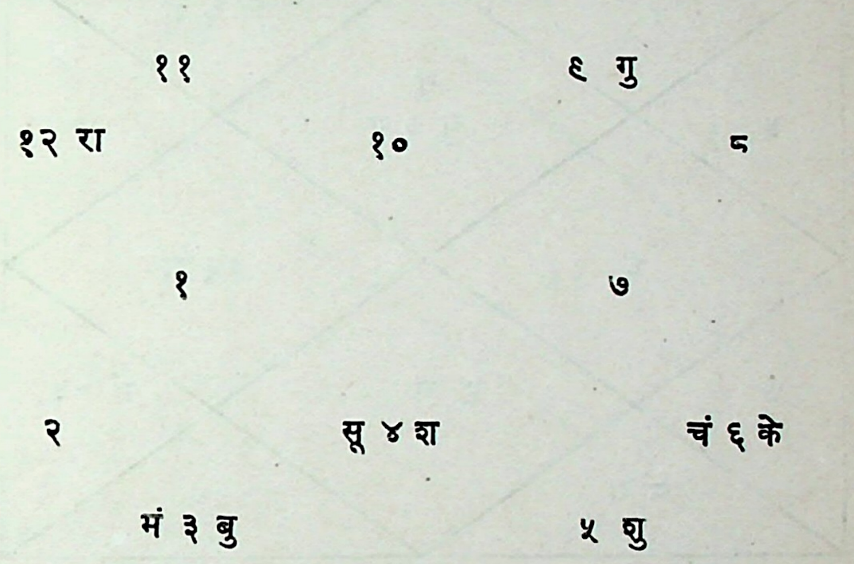

कुं० जगतसिंह राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १७२३ शाके १५८८ माघ वदि ३ गुरौ उदय १३/१२ (शनि०, मार्च ४, १६७६ ई०) कंवर जगतसिंहजी चन्द्रावत् कुक्षौ जन्म

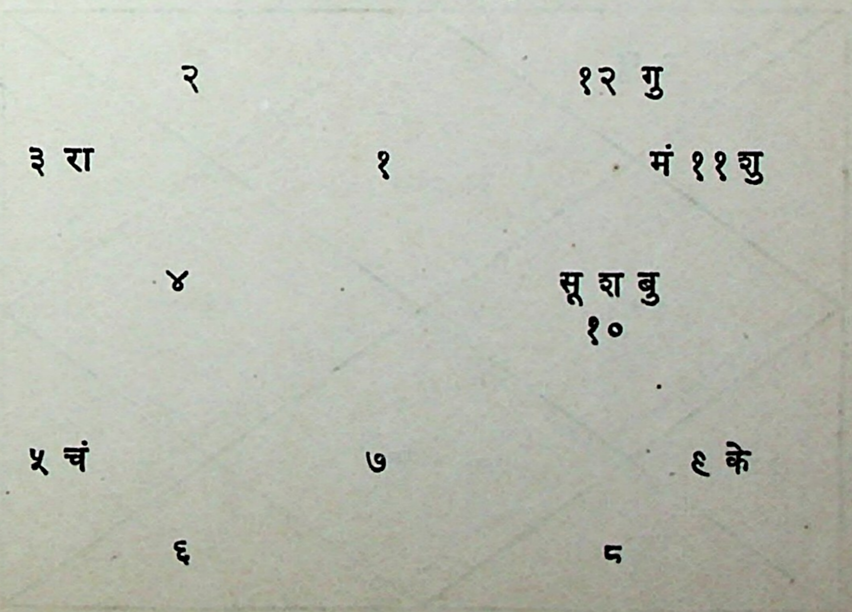

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दूदा मेड़तिया री जन्मकुंडली

सम्वत १४९७ आसाढ सुद १५ उदयात २/१३ सा (बुध०, जून १५, १४४० ई०)

राव जोधाजी गृहे दूदाजी मेड़तिया री जन्म

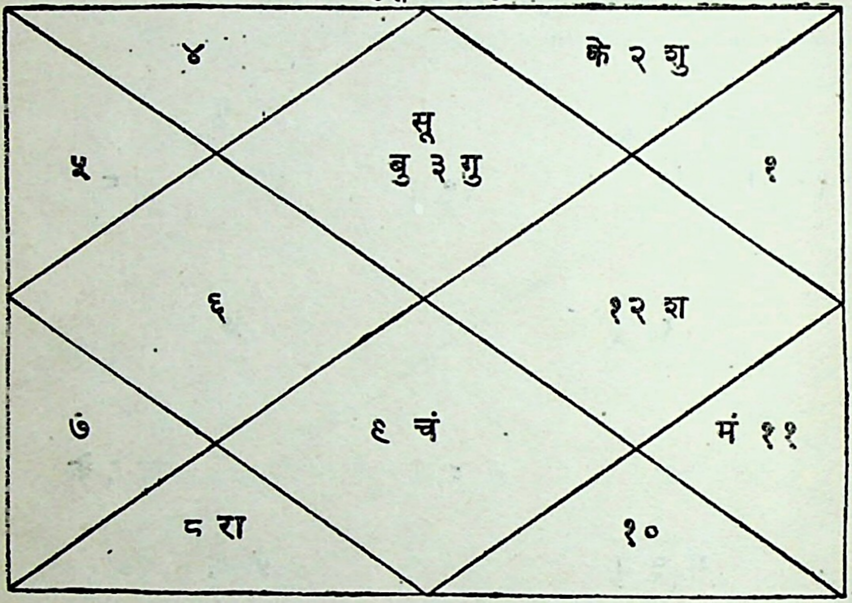

वीरमदेजी दूदावत रो जन्मकुंडलो

सम्वत १५३४ मिगसर सुद १४ (बुध०, नवम्बर १९, १४७७ ई०)

दूदाजी गृहे वीरमदेजी रो जन्म

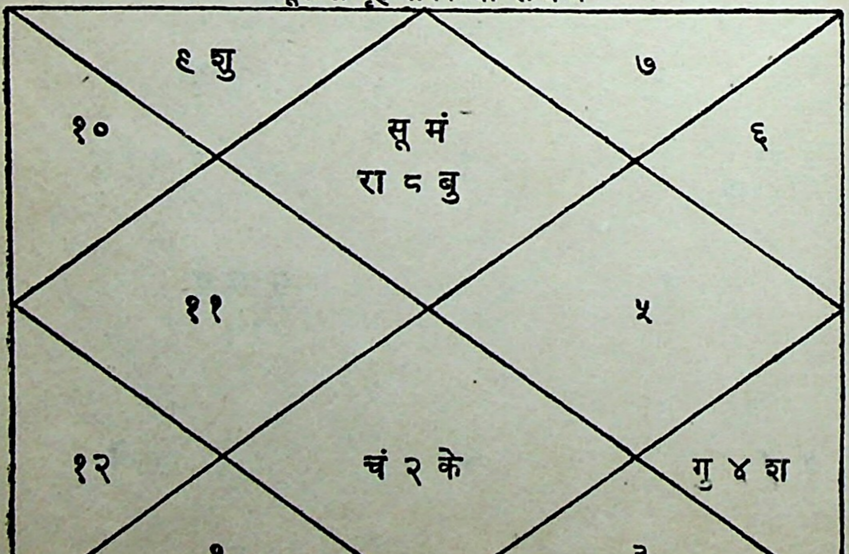

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जैमलजी मेड़तिया री जन्मकुंडली

सम्वत १५६४ आसोज सुद ११ (सितम्बर १७, १५६४ ई०)

वीरमदेव सुत जैमलजी मेड़तिया री जन्म

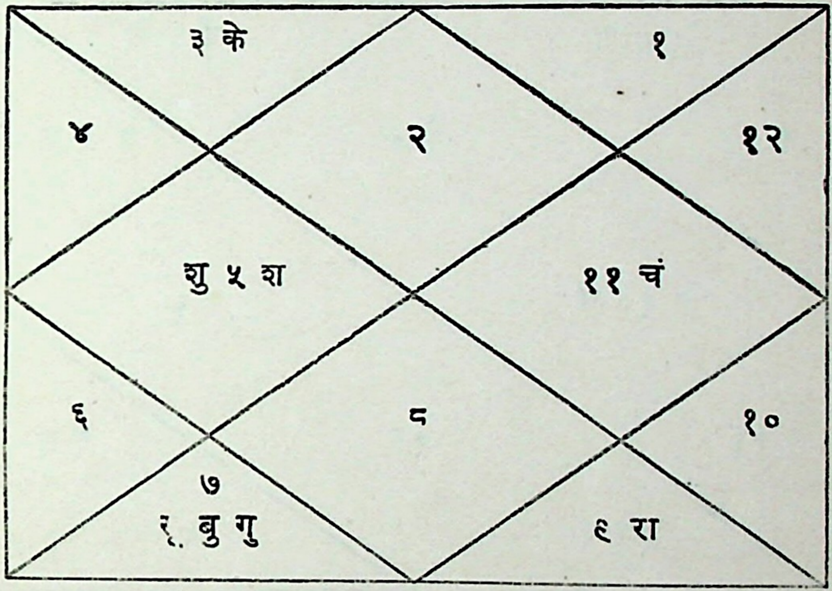

राव अमरसिंहजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १६७० शाके १५३५ पोह ५/५ सुद ११ रवौ ३ रात्रिगत घटी २८ (रवि०, दिसम्बर १२, १६१३ ई०) रावजी श्री अमरसिंहजी री जन्म

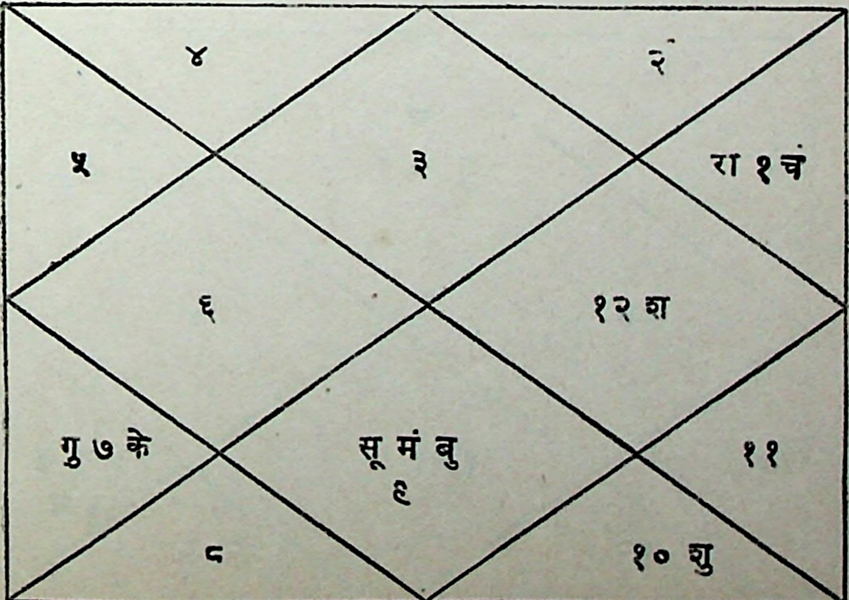

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव रार्यासघजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १६६० आसोज सुद १० बुध उदयात सू १/४१
(बुध०, अक्टूबर २, १६३३ ई०) समये राव रार्यसिहजी री जन्म

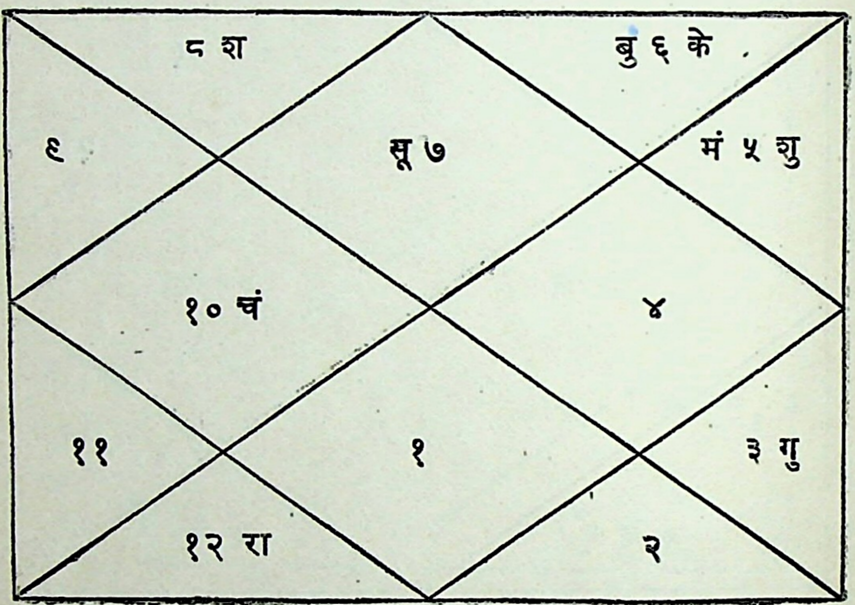

इन्द्रसिहजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १७०७ जैठ सुद १२ शनौ विशाखा ५३/८ उदयात २१/३८ (शनि०, जून १, १६५० ई०) समये रार्यसिहजी ग्रहे इन्द्रसिहजी जन्म सू २/३

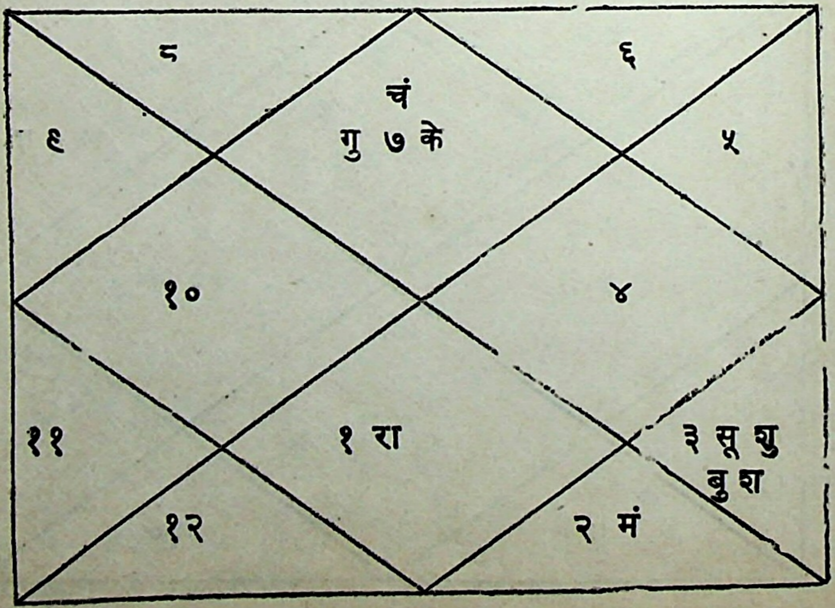

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

कु० रामसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६३० आसोज वदि २ उदयात ५२ (रवि०, सितम्बर १३, १५७३ ई०)

कर्मसेन पुत्र रामसिंह रो जन्म

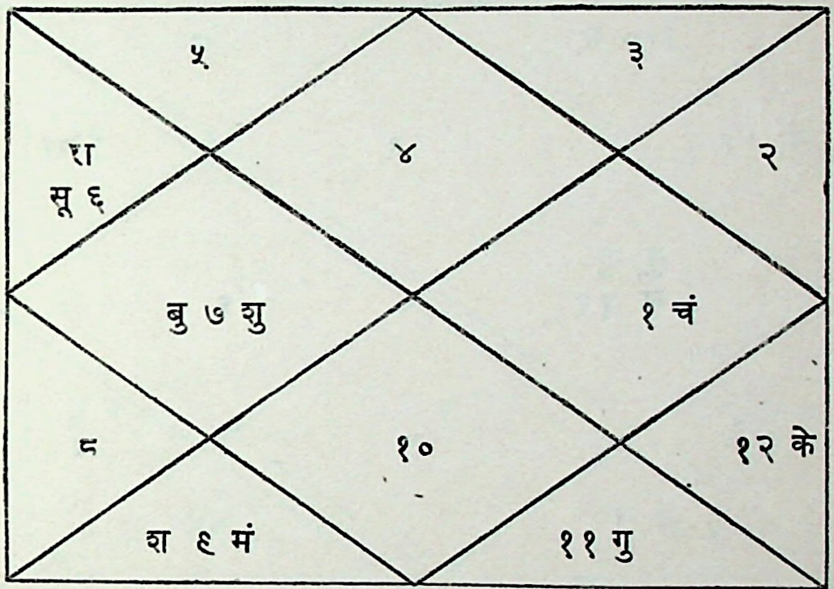

कु० सत्रुसाल री जन्मकुंडली

सम्वत १६६९ भादवा वद ५ उदयात् ५०/१२ अश्विनी (गुरु०, अगस्त ६, १६१२ ई०)

राजा सूरसिंहजी गृहे सत्रुसाल रो जन्म

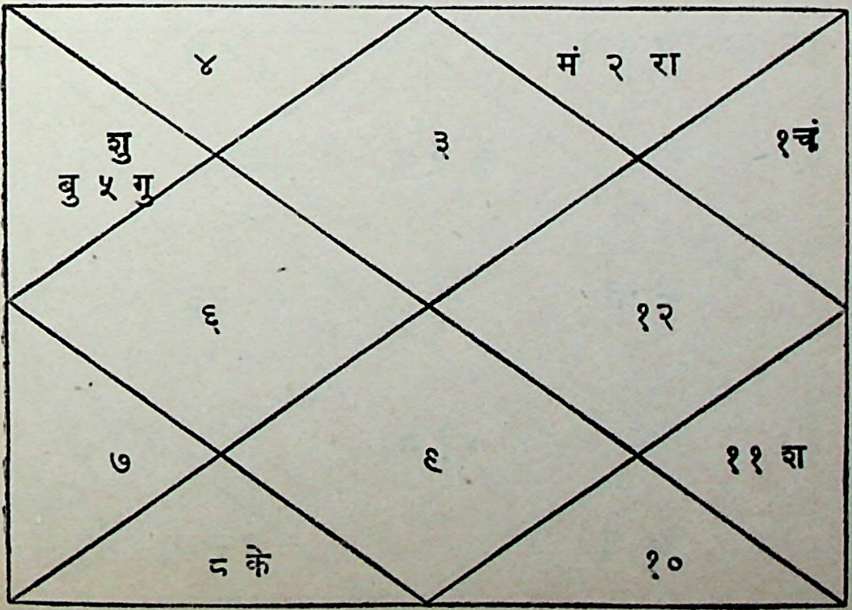

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वनमालीदास री जन्मकुंडली

सम्वत १६९९ चैत्र सुद ३ बुध घटी २ भरणी ७ आयुष्मान रात्रगत घटी (बुध०, मार्च २३, १६४२ई०) कु. वनमाली दास री जन्म

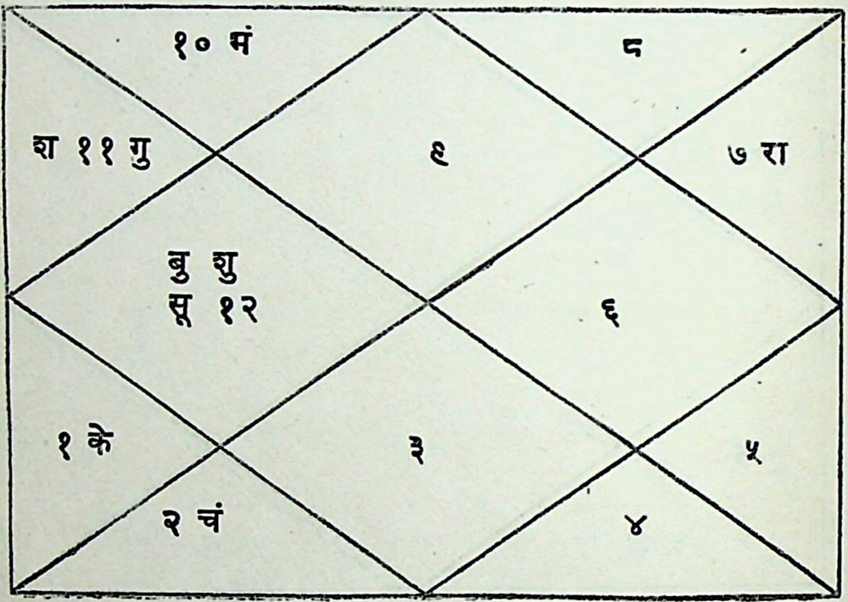

राणा उदयसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १५७८ भादवा सुद १२ बुधे सूर्योदयात (बुध., अगस्त १४, १५२१ ई०) राणा सांगा पुत्र उदैसिंह री जन्म

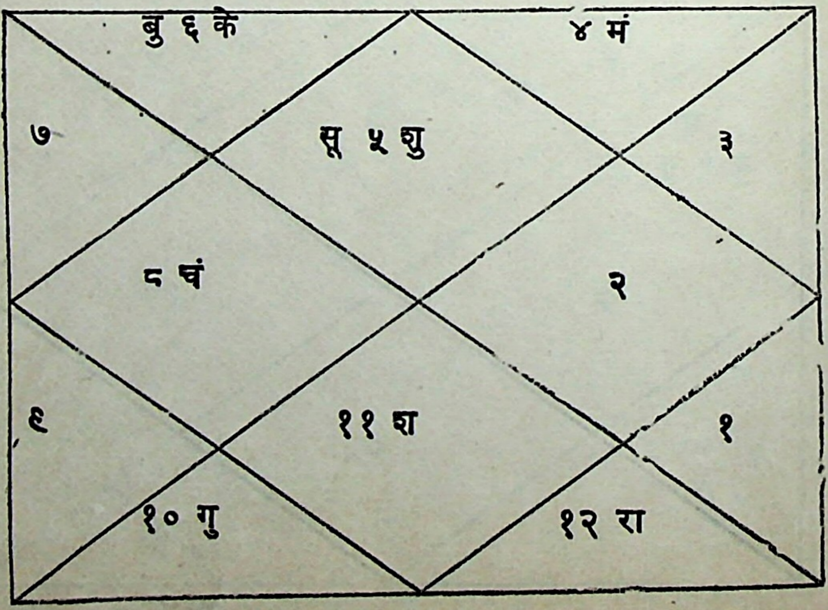

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणा प्रताप री जन्मकुंडली

सम्वत १५९७ जेठ सुद ३ रवि उदयात ४७/१३ (रवि०, मई ९, १५४० ई०)

राणा प्रताप री जन्म

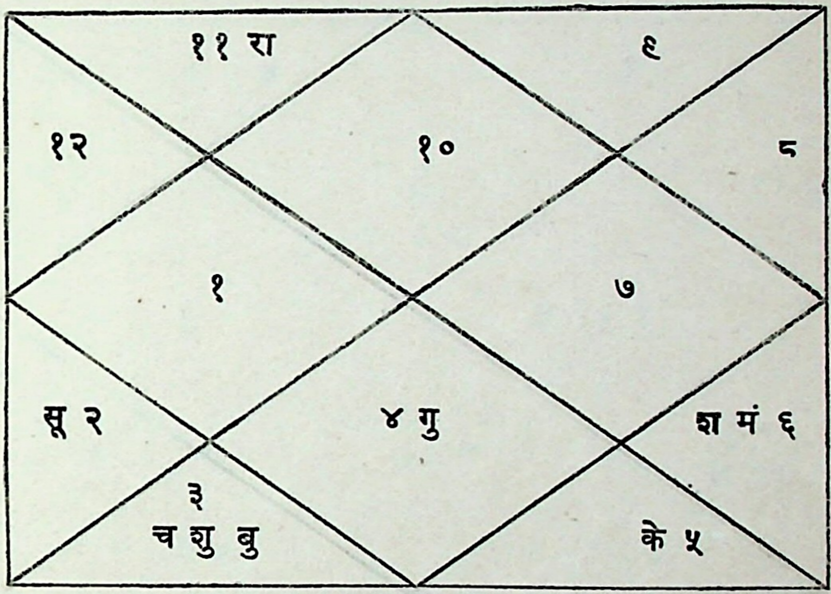

राणा सगर री जन्मकुंडली

सम्वत १६१३ भादवा वद २ शुक्रे उदयात ४७/३३ (शुक्र० जुलाई २४, १५५६ ई०)

राणा सगर री जन्म

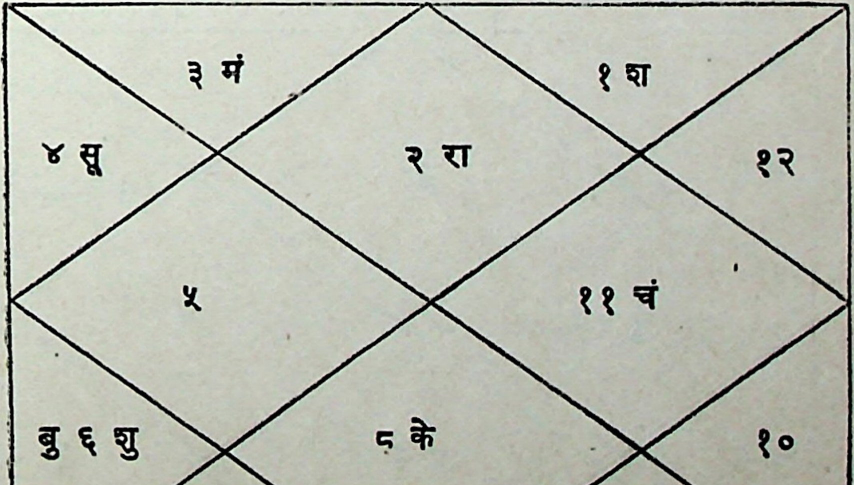

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणा अमरसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६१६ चैत्र सुद ७ (गुरु०, मार्च १६, १५५९ ई०)
राणा अमरसिंह री जन्म

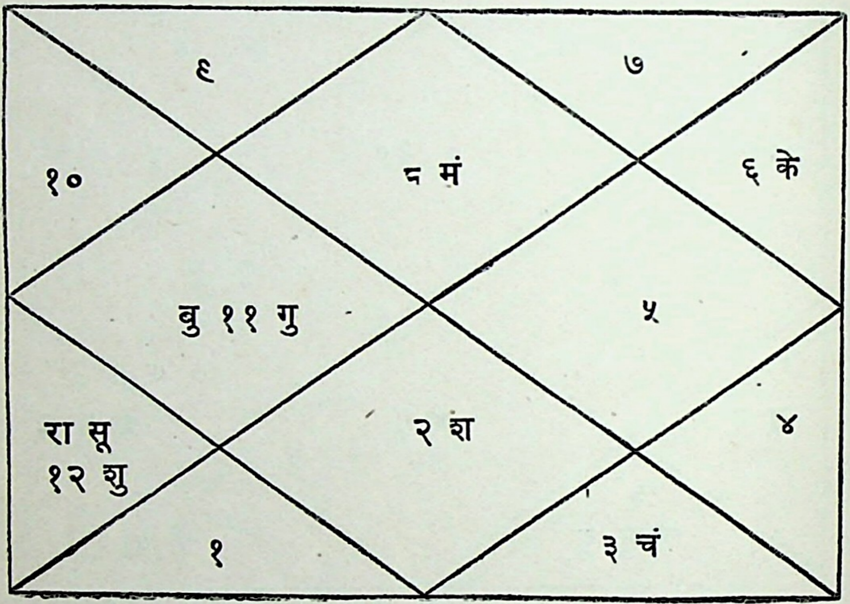

राणा करणसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६४० श्रावण सुदी १२, उदयात ४९ (रवि०, जुलाई २१, १५८३ ई०) राणा करण सिंघ री जन्म (मंगल०, जनवरी ७, १५८४ है।) वीर विनोद में माघ सु० ४

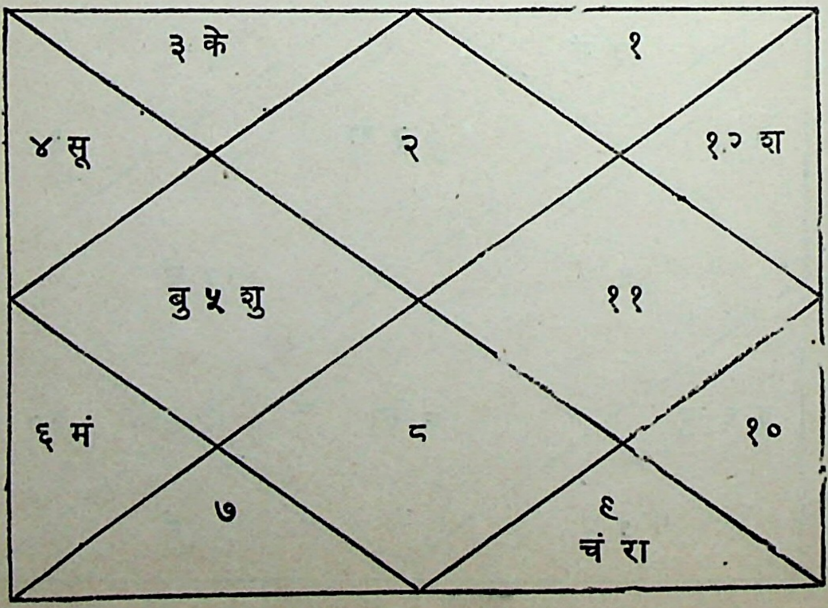

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राणा जगतसिंघ री जनमकुंडली

सम्वत १६६४ भादवा सुद२ शुक्रे हस्त नक्षत्र रात्र शेष घटी २ (शुक्र०, अगस्त १४, १६०७ ई०) राणा जगतसिंघ रो जन्म

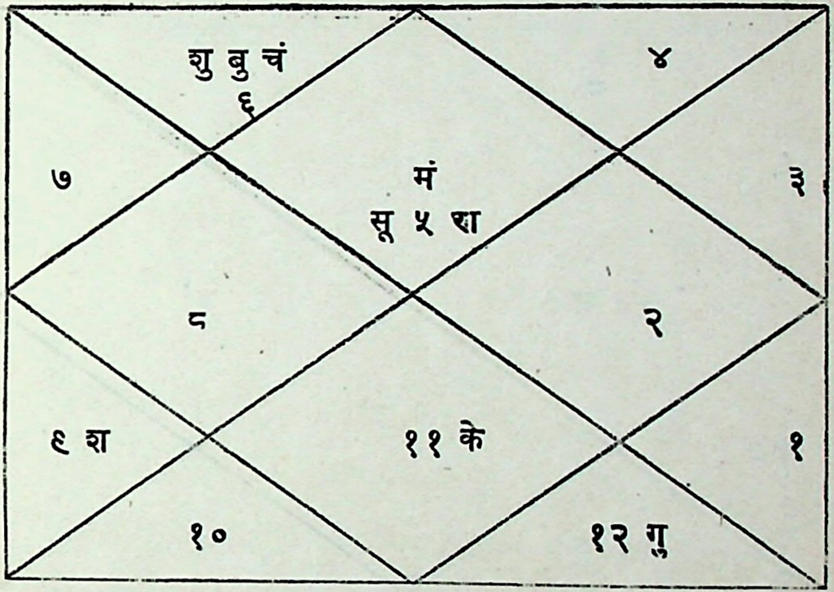

राणा राजसिंघ री जन्मकुंडलो

सम्वत १६६८ काती वदी २ गुरो उदयात २४ रात्रगत घटी २/५१ अ ७ हर्षण १२ (गुरु०, सितम्बर २४, १६२६ ई०) राणा राजसिंघ सा रो जन्म

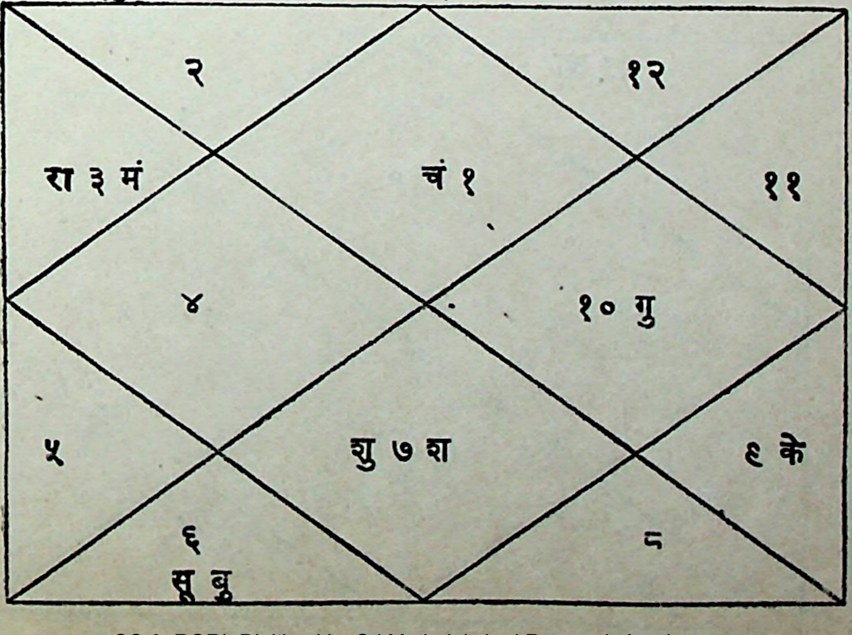

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजा मानसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६०७ पोह वदी १३ शनौ उ: ४८ (शनि०, दिसम्बर ६, १५५० ई०)

राजा मानसिंघ रौ जन्म

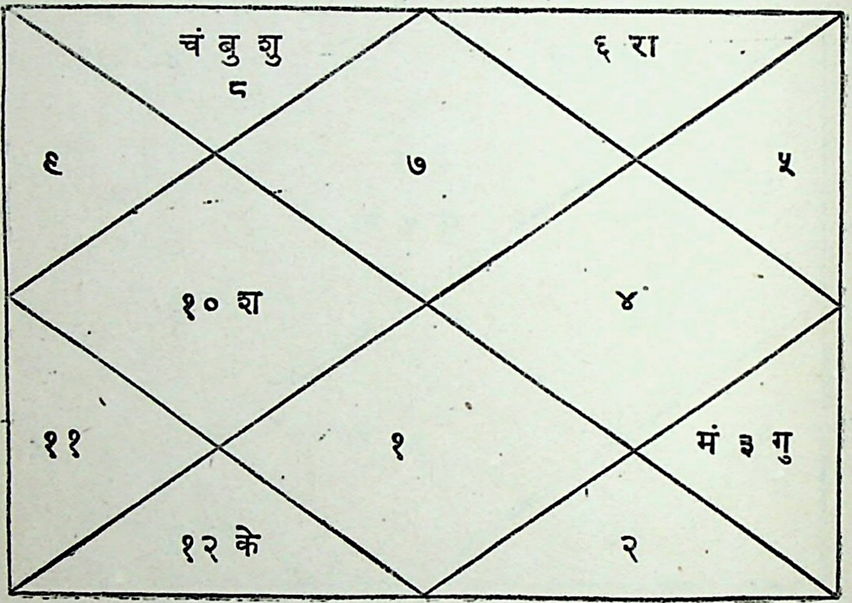

राजा माधोसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६१० आसोज सुद ५ (मंगल०, सितम्बर १२, १५५३ ई०)

माधोसिंघ सा रौ जन्म

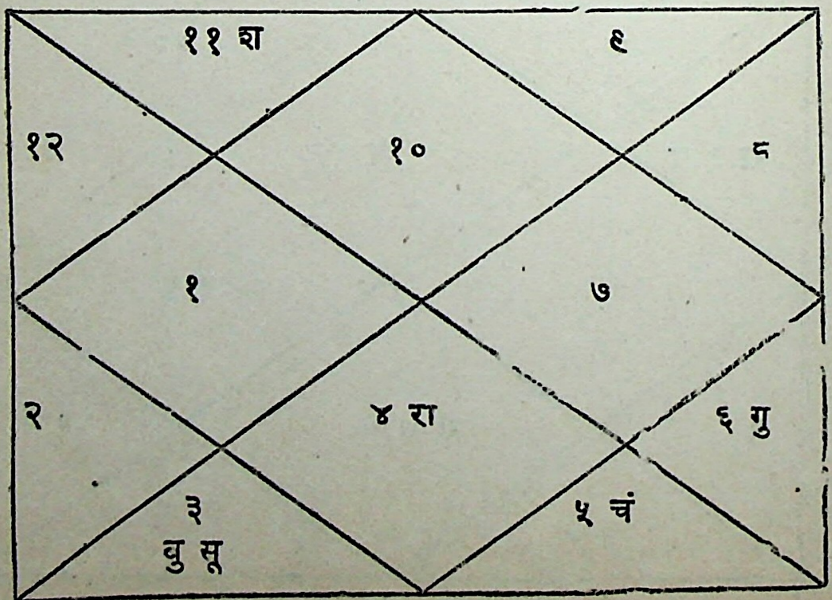

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राजा भावसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६२३ आसोज वद २ उदयात १३ (सोम०, सितम्बर १०, १५७६ ई०)
राजा भावसिंह री जन्म

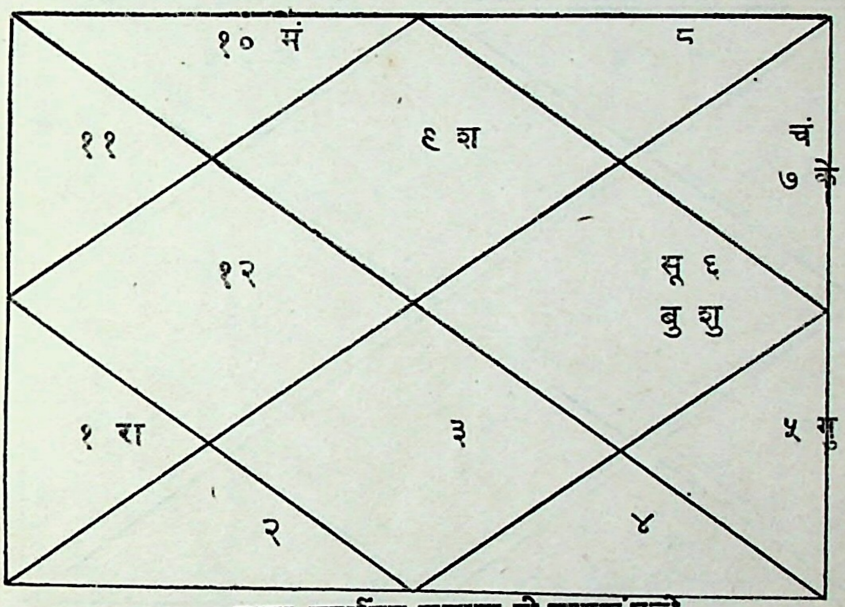

राजा महासिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६४२ आसोज वद १२ शनी उदयात ३५/४६ सू ५/१०/५२/५४ ल०/२७/१२/६
चं. ४/१६/४३/४५ (शनि०, सितम्बर ११, १५८५ ई०) राजा महासिंह री जन्म

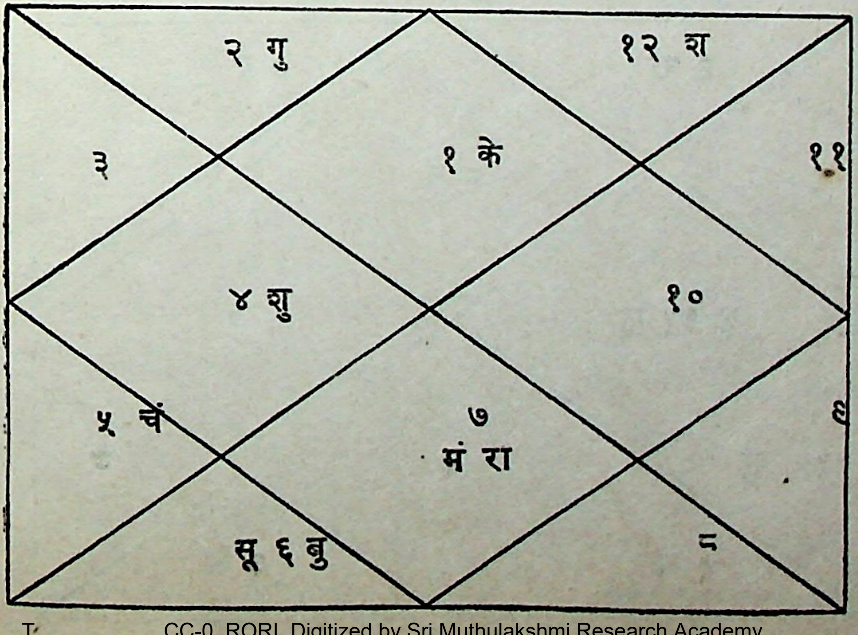

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मिरजा राजा जैसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६६८ प्रथम आषाढ वद १ शुक्रे ज्येष्ठा नक्षत्रे उदयात ३/२० सू १/१७/४०/३० ल २/७/२८/४ (शुक्र०, मई १७, १६११ ई०) राजा जैसिंघ री जन्म

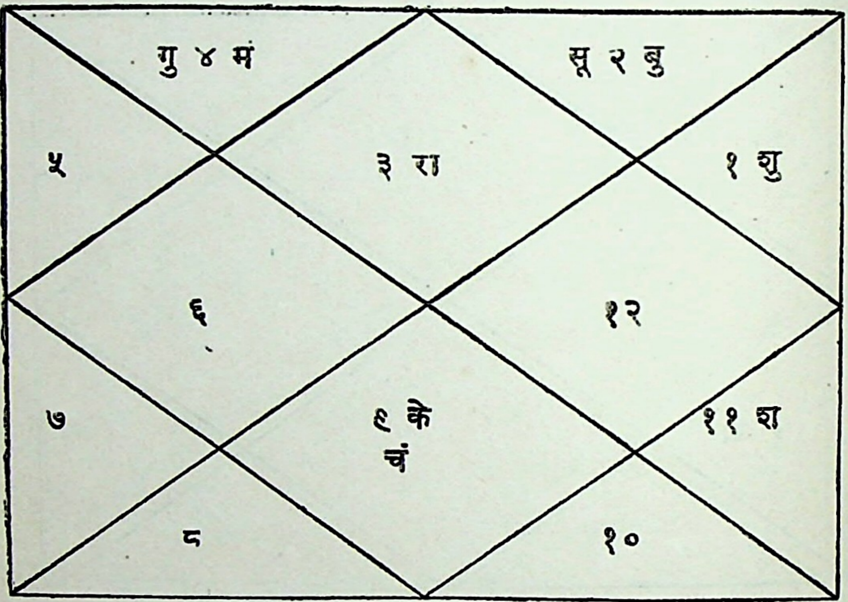

राजा कीरतसिंह री जन्मकुंडली

सम्वत १६९४ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रे उदयात ४५ (शुक्र०, फरवरी ९, १६३८ ई०) मिरजा राजा जयसिंह गृहे पुत्र कीरतसिंह री जन्म

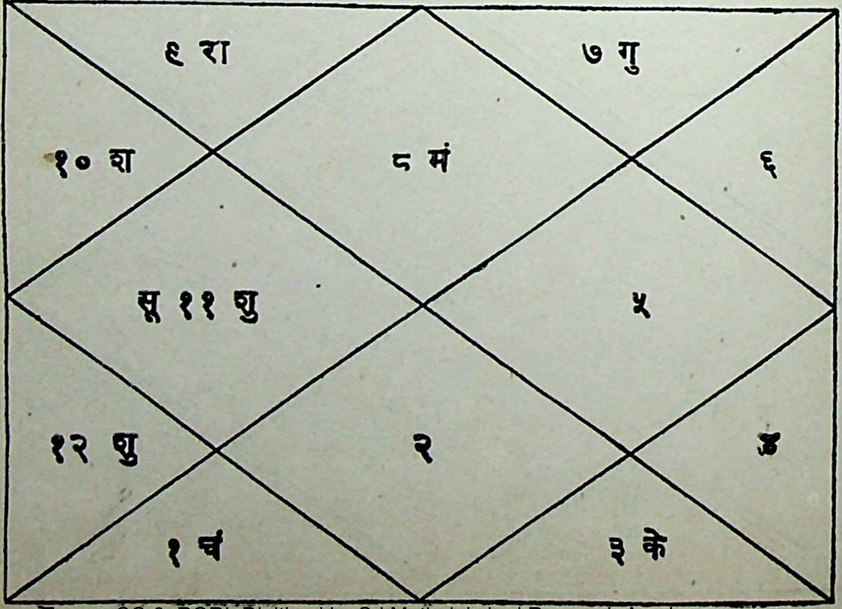

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

राव रतन हाड़ा री जन्मकुंडली

सम्वत १६२८ जेठ सुद १० रवौ उदयात ११ (रवि० जून ३, १५७१ ई०)
राव रतन रौ जन्म

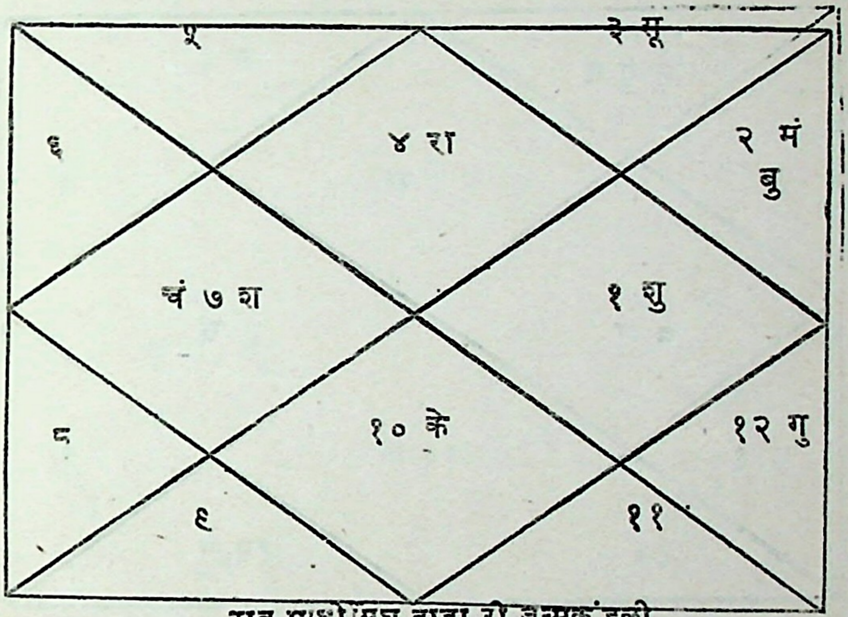

राव माधोसिंघ हाड़ा री जन्मकुंडली

सम्वत १६५६ जेठ वद ३ गुरौ उदयात ५५ (गुरु०, मई ३, १५९९ ई०) रावरत्न गृहे पुत्र माधोसिंघ हाड़ा रौ जन्म

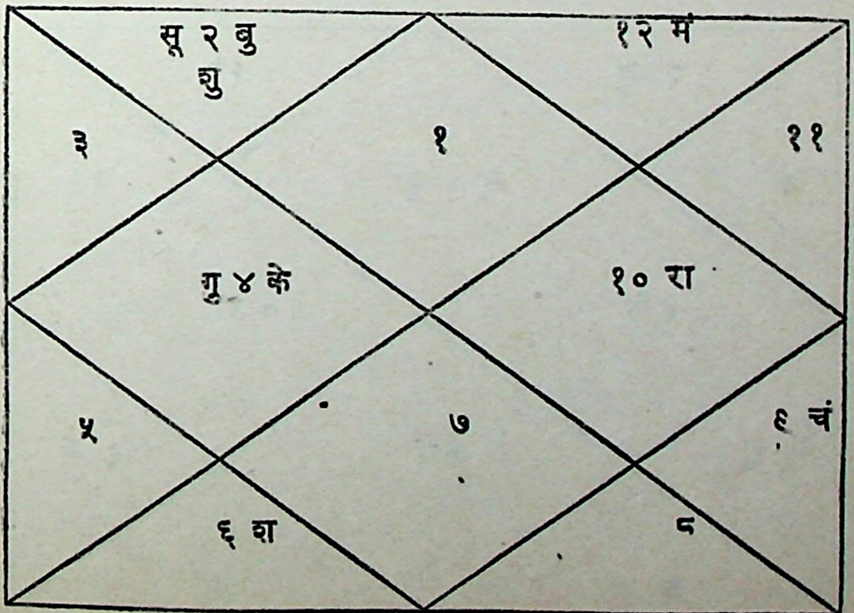

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

हाड़ा सत्रुसाल री जनमकुंडली

सम्वत १६६४ कातीवद ३ सोमे उदयात ५/५७ (सोम०, सितम्बर २८, १६०७ ई०)

राव सत्रुसाल हाड़ा री जन्म

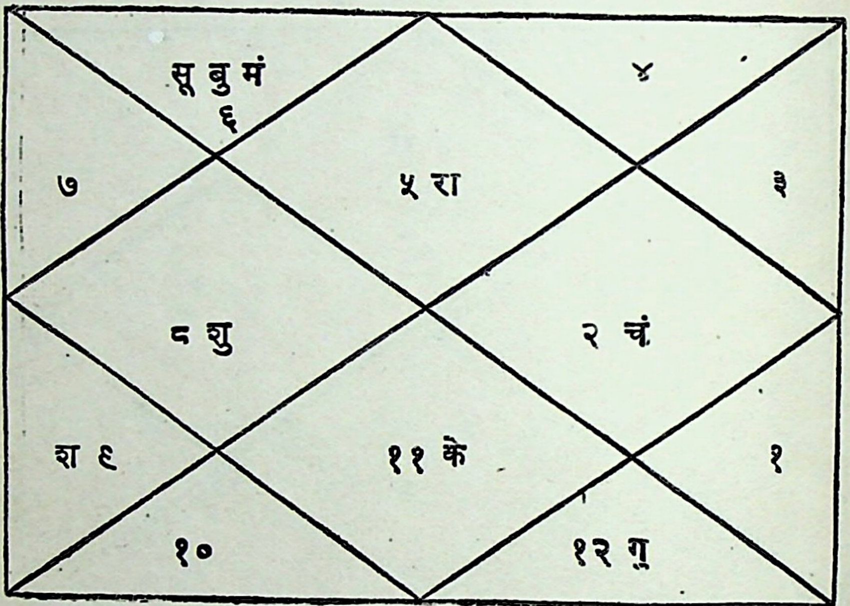

रावळ लूणकरण री जन्मकुंडली

सम्वत १५२४ वैशाख सुदी १४ (गुरु०, अप्रेल २८, १४८५ ई०)

रावळ लूणकरण भाटी (जैसलमेर) री जन्म

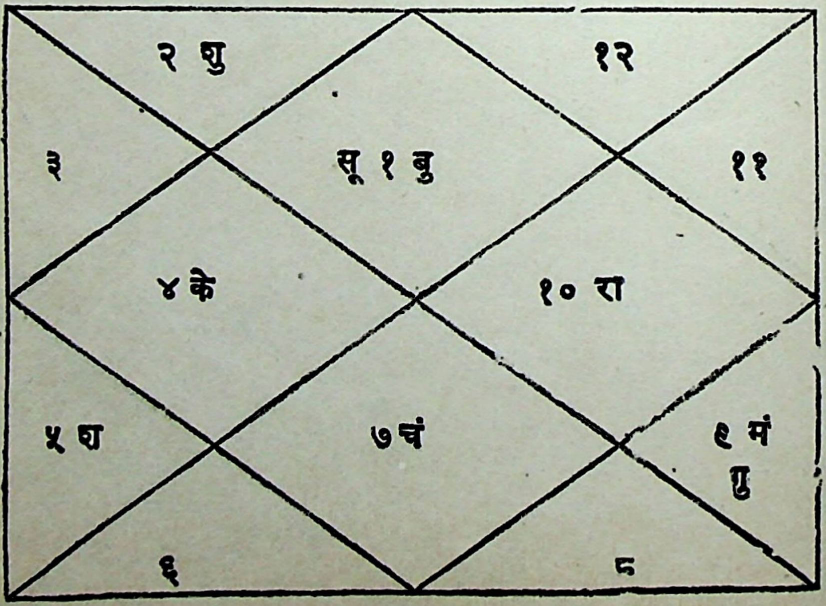

T   CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रावळ मालदे री जन्मकुंडली

सम्वत १५६८ माह् वद ७ रात्रिगत १७ रा (शनि०, जनवरी १०, १५१२ ई०)

मालदे री जन्म

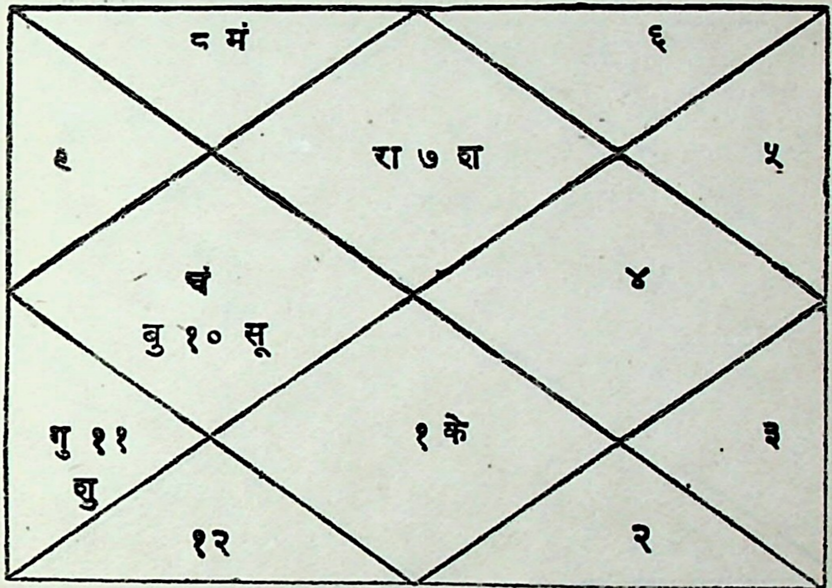

रावळ हरराज री जन्मकुंडली

सम्वत १५९८ आसोज सुद ८ (मंगल०, सितम्बर २७, १५४१ ई०)

रावळ हरराज भाटी री जन्म

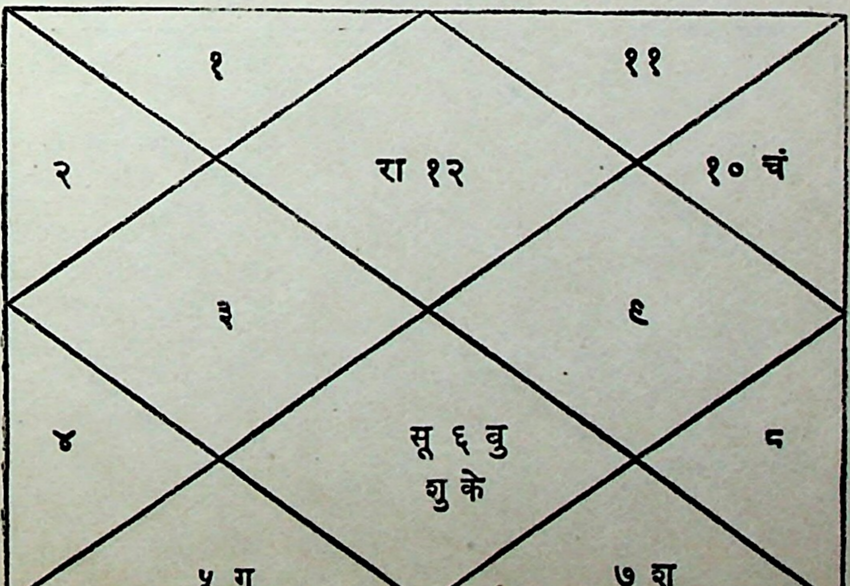

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

रावळ मनोहरदासरी जन्मकुंडली

सम्वत १६५१ चैत्र वद ६ बुधे (बुध०, फरवरी १९, १५९५ ई०)
रावळ मनोहरदास रौ जन्म

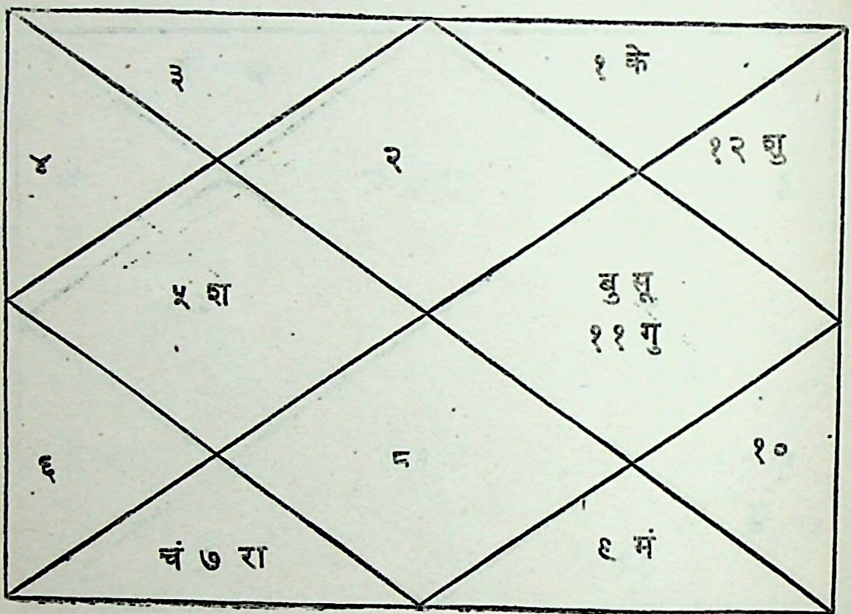

रावळ भीम भाटी री जन्मकुंडली

सम्वत १६१८ मार्गशीर्ष वदि ११ (सोम०, नवम्बर ३, १५६१ ई०) रावळ
भीम भाटी रौ जन्म

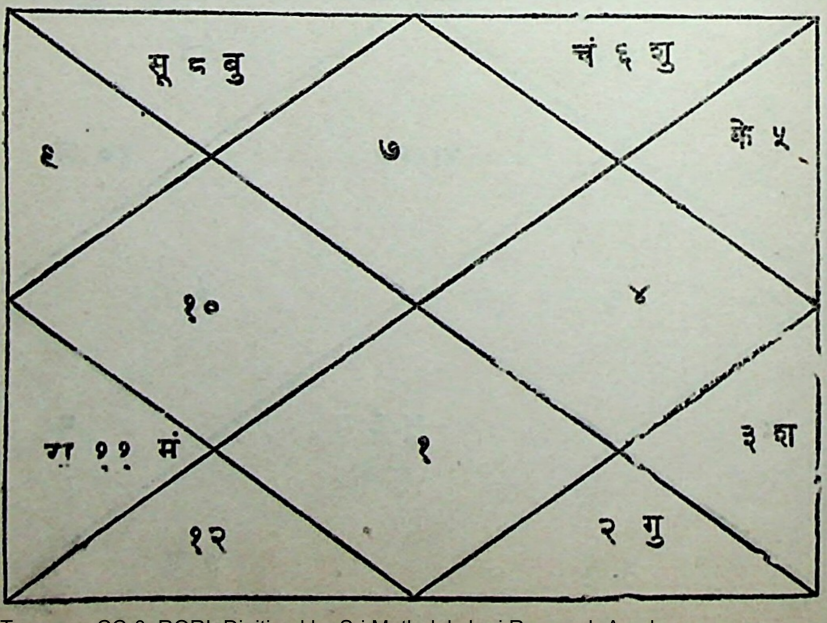

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

साहजी भोंसल री जन्मकुंडली

सम्वत १६५५ फाल्गुण वद १४ गुरु रात्रिगत २७ सूर्य ११/..................ल ११/०
(गुरुवार, मार्च १५, १५९९ ई०) साहजी भोंसला री जन्म

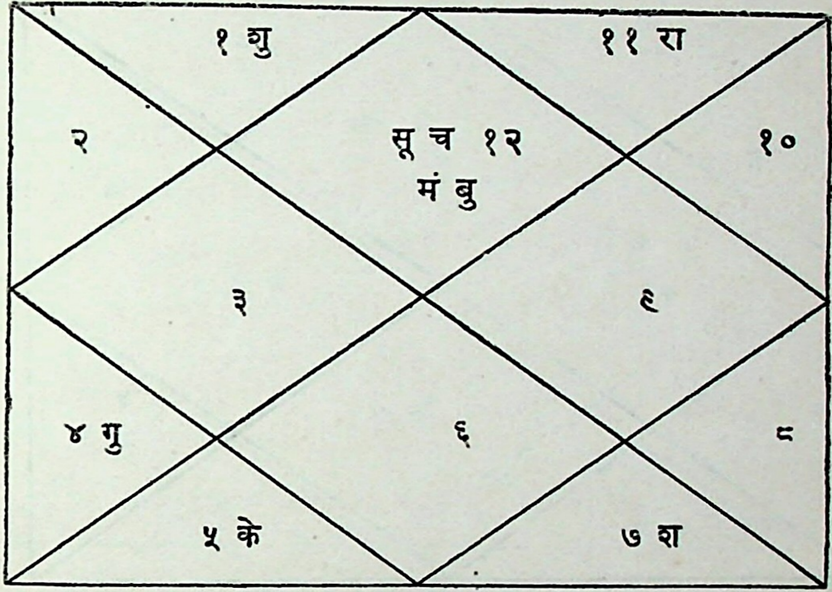

शिवाजी मराठे री जन्मकुंडली

सम्वत १६८६ फाल्गुण सुद ३ रात्रिगत घटी १ पल समये (शुक्र० फरवरी ५, १६३० ई०)
शिवाजी री जन्म

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बुंदेला जोगराज री जन्मकुंडली

सम्वत १६४५ आसोज सुद ७ उदयात (मंगल०, सितम्बर १७, १५८८ ई०)

बुंदेला जोगराज री जन्म

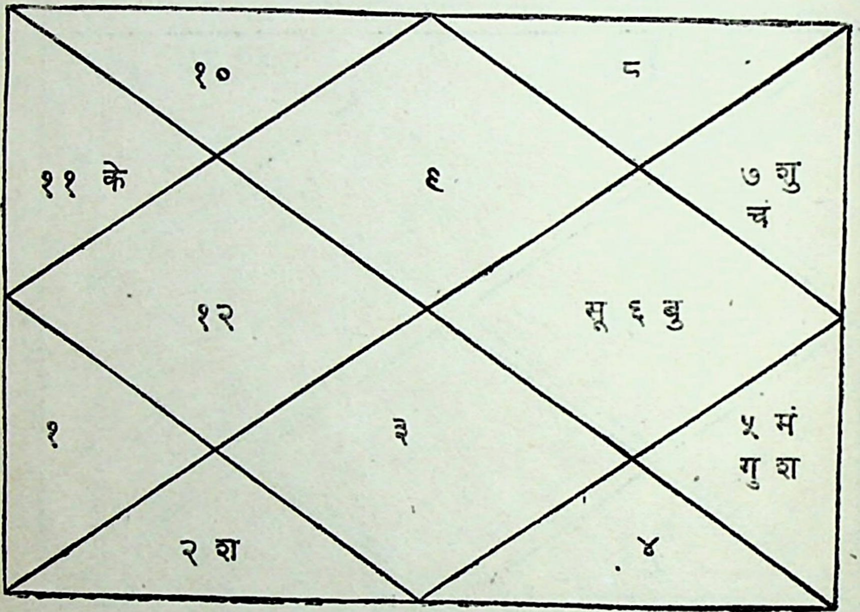

बादशाह अकबर री जन्मकुंडली

सम्वत १५९९ काती सुदी ६, शनी रात्रिगत घटी २१/९ सूर्यं (शनि०, अक्टूबर १४, १५४२ ई०)

बादशाह अकबर री जन्म

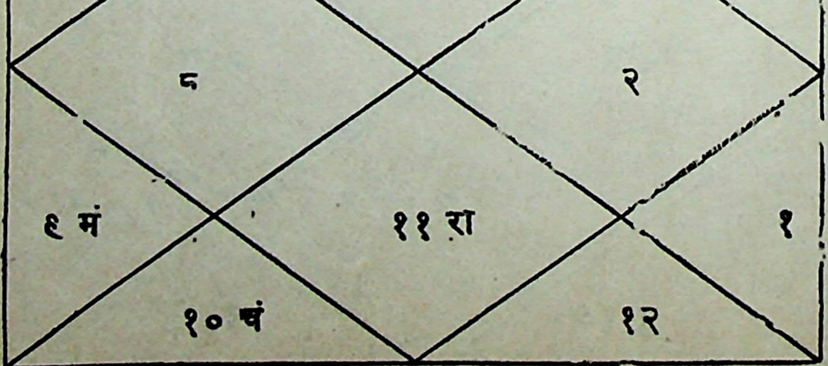

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

बादशाह जहांगीर री जन्मकुंडली

सम्वत १६२६ आश्विन वद ५ बुधे (बुध०, अगस्त ३१, १५६९ ई०)

पातसाह जहांगीर रौ जन्म

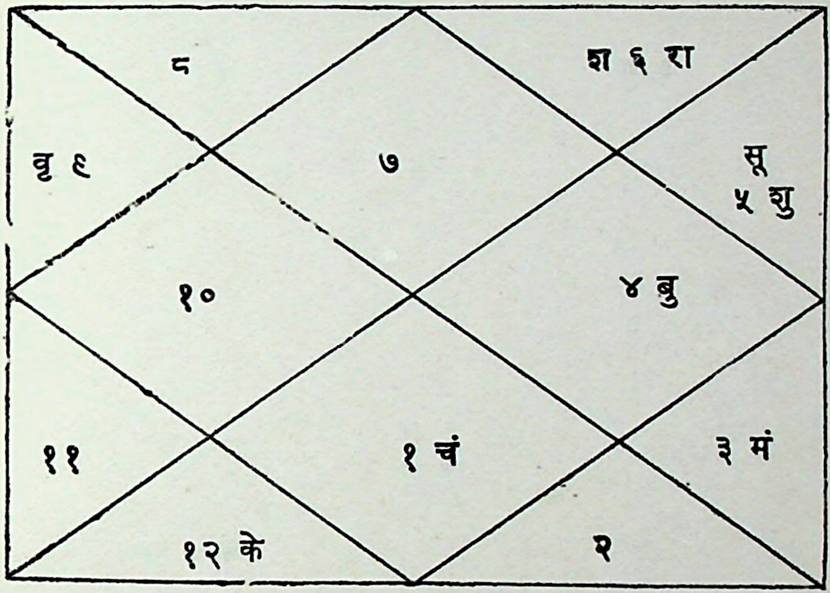

शाह मुर.द री जन्मकुंडली

सम्वत १६२७ आसाढ सुद ४ बुधे पुष्य नक्षत्रे उदयात (बुध०, जून ७, १५७० ई०)

शाह मुराद रौ जन्म

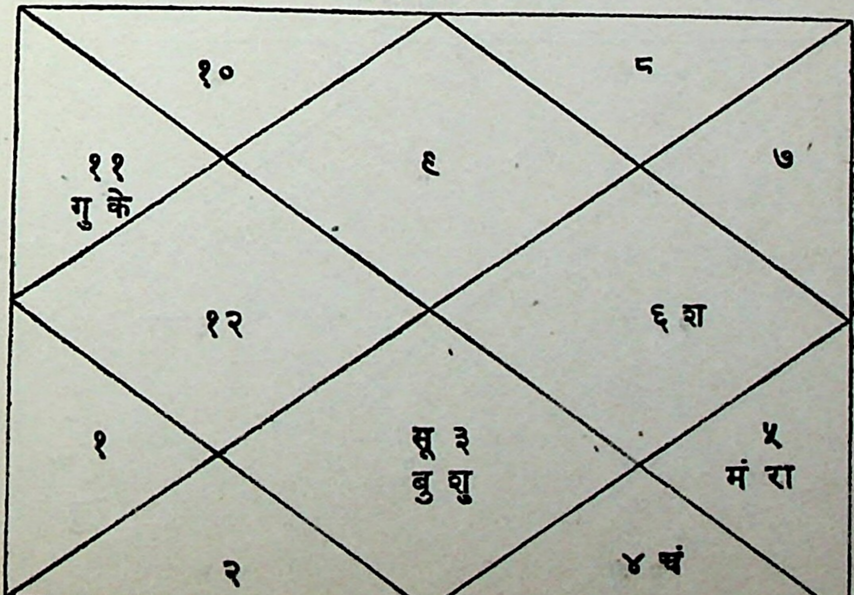

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दीनशाह री जन्मकुंडली

सम्वत १६२९ आश्विन सुद २ भौमे (मंगल०, सितम्बर ९, १५७२ ई०)

दीनशाह री जन्म

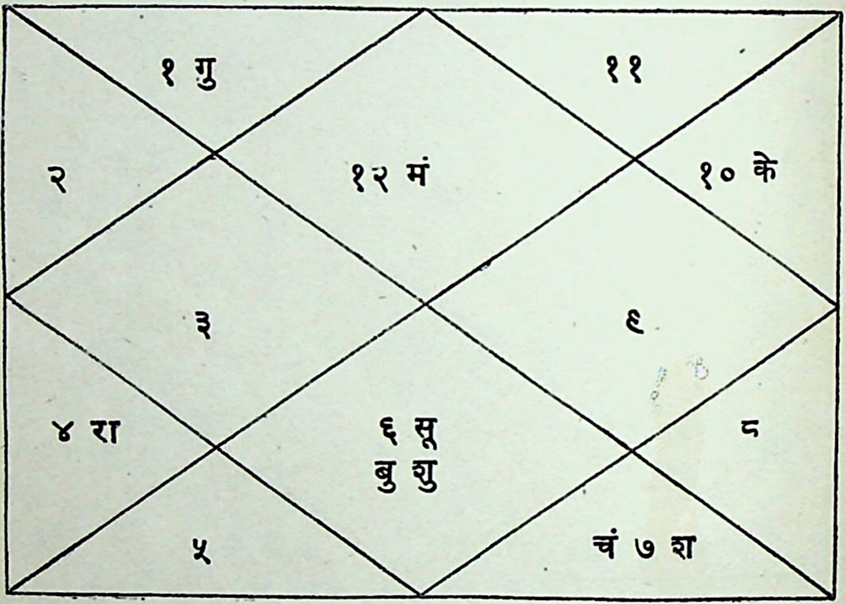

सुरतांण खुसरू री जन्मकुंडली

सम्वत १६४४ श्रावण सुद १३ (रवि०, अगस्त ६, १५८७ ई०)

खुसरू सुरतांण री जन्म

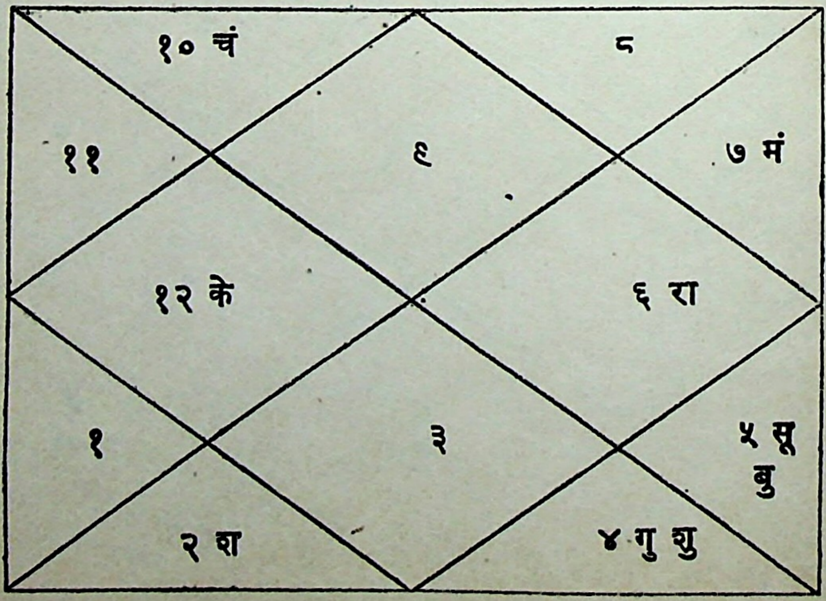

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

सुरतांण परवेज री जन्मकुंडली

सम्वत १६४६ काती सुद ४ (शनिवार, नवम्बर १, १५८९ ई०)
सुरतांण परवेज री जन्म

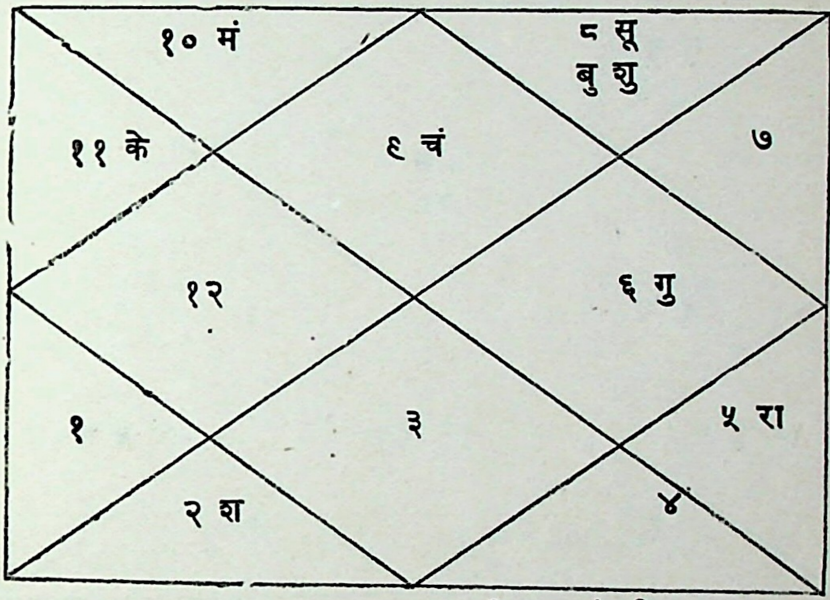

बादशाह शाहजहांन री जन्मकुंडली

सम्वत १६४८ माघ सुद १, ३७/५३ (बु०, जनवरी ५, १५९२ ई०) बादशाह शाहजहांन री जन्म (दयालदास, भाग २ सं०दशरथ शर्मा, पृ० १६१ में माघ सुद ३, इष्ट २८ दिया है)

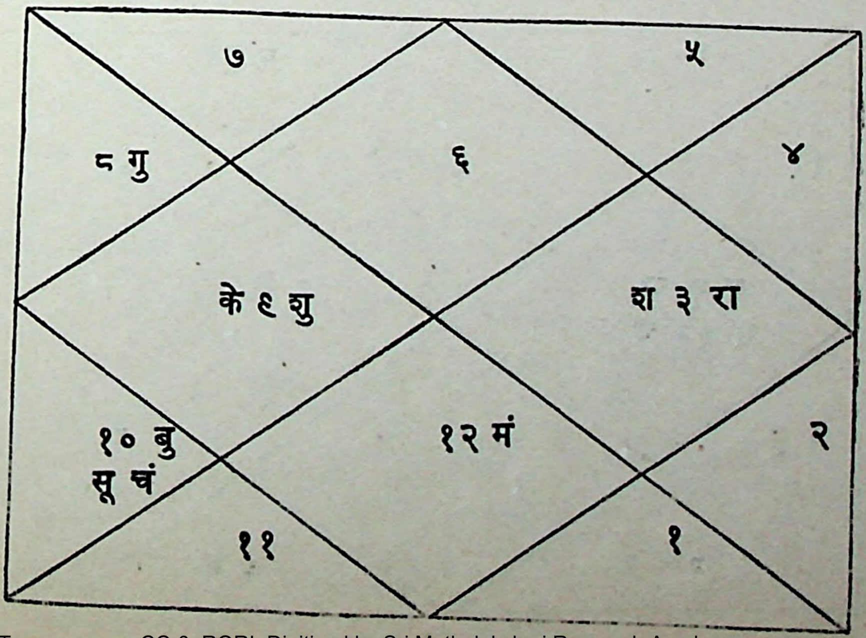

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शहरयार री जनमकुंडली

सम्वत १६६२ मार्गशीर्ष वद ३ शनै (१६०५ ई०) जहांगीर गृहे
सहरियार री जन्म

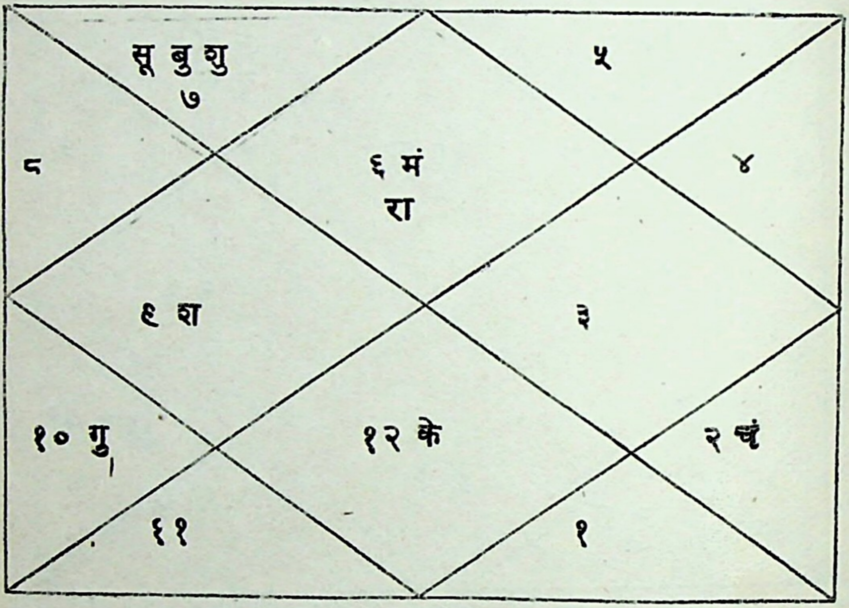

बादशाह दाराशिकोह री जन्मकुंडली

सम्वत १६७१ चैत्र वद अमा० रवौ (रवि०, मार्च १६, १६१५ ई०)
बादशाह दाराशिकोह री जन्म (उस दिन सूर्य ग्रहण हुआ था)

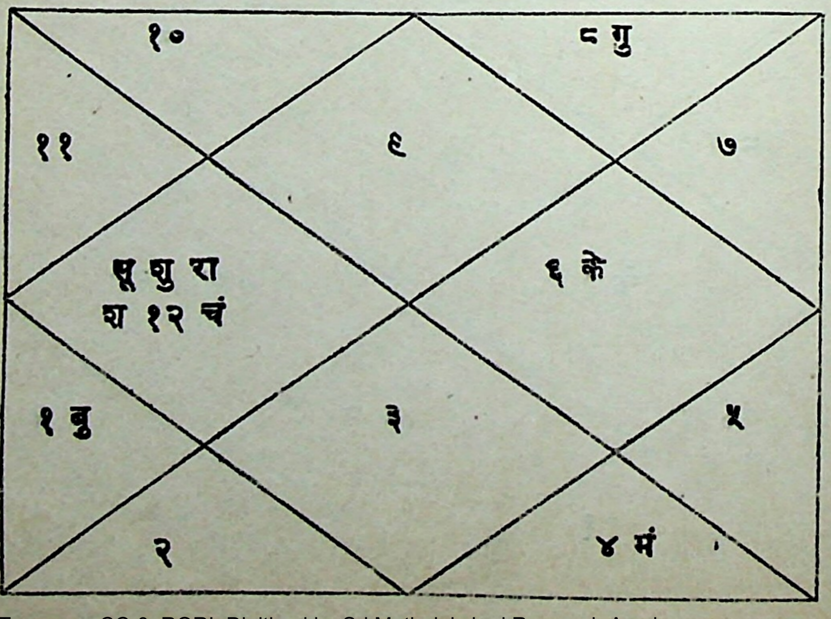

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शाह सूजा री जन्मकुंडली

सम्वत १६७३ श्रावण वद ३ शनो (शनि०, जून २२, १६१६ ई०)

शाह सूजा री जन्म

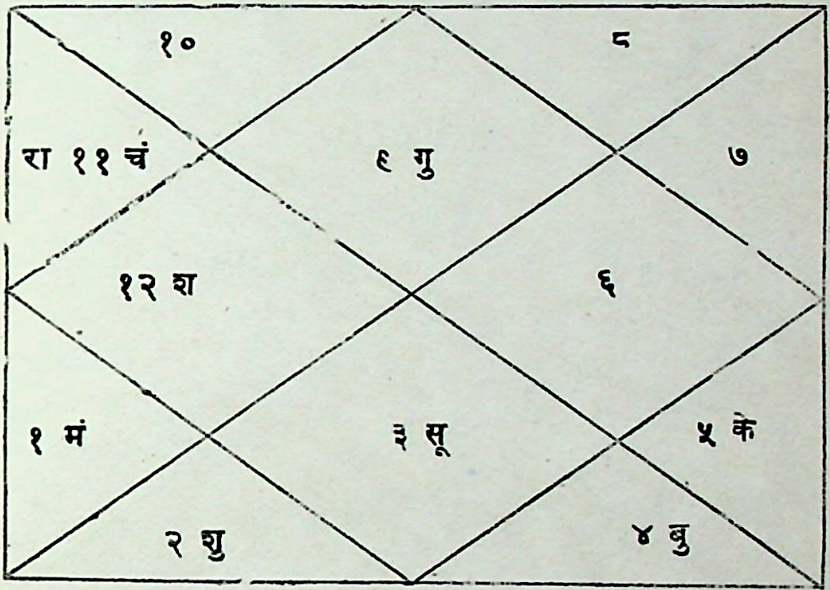

बादशाह औरंगजेब री जन्मकुंडली

सम्वत १६७५ मार्गशीर्ष वद १ शनो ५६/६ सू ६/२४ ल ६/१५/२०

(शनि०, अक्टूबर २४, १६१८ ई०) बादशाह औरंगजेब री जन्म

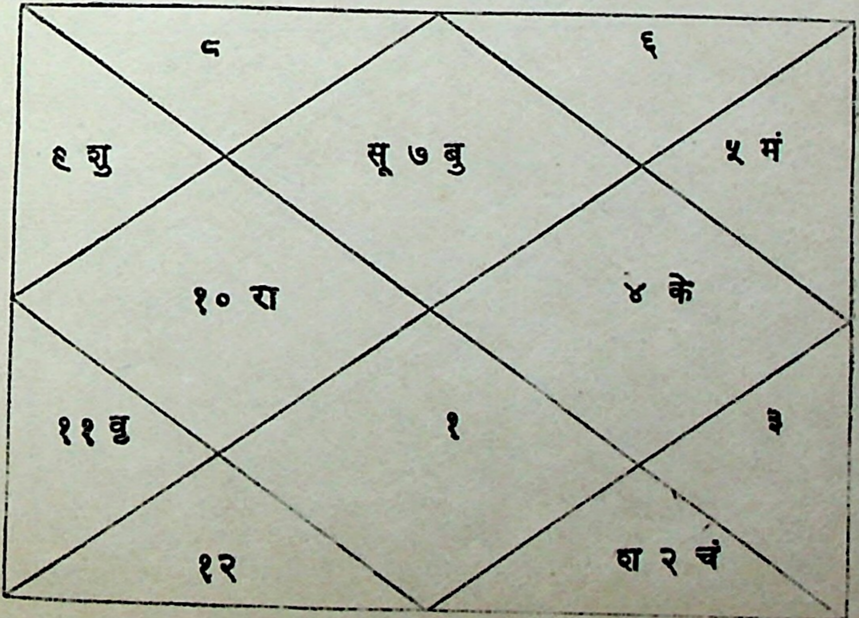

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मुरादबक्स री जन्मकुंडली

सम्वत १६८१ काती वद ११ भौमे रात्रिगत घटी २७ (मंगल०, सितम्बर २८, १६२४ ई०)

मुरादबक्स रौ जन्म

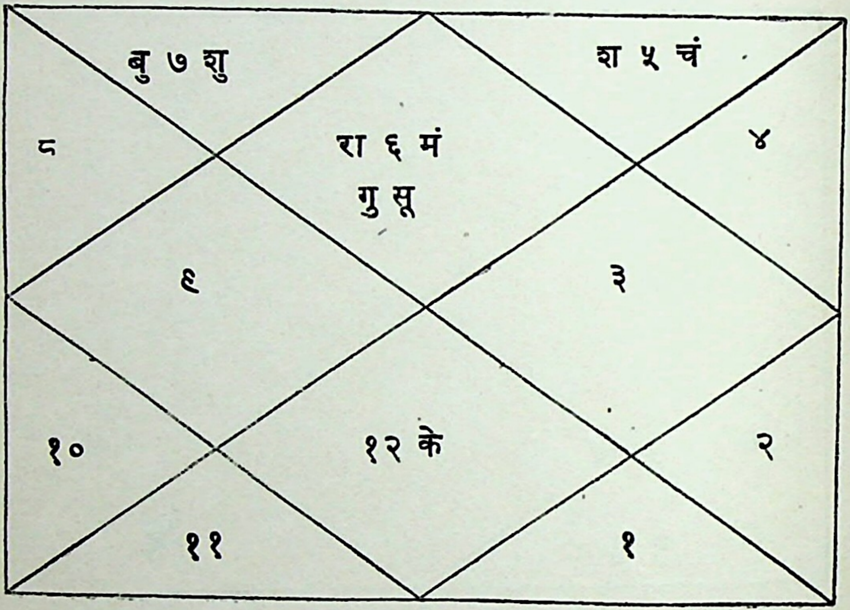

नवाब खानखाना री जन्मकुंडली

सम्वत १६१२ मार्गशीर्ष सुद १४ सोमे उदयात ३ (सोम०, नवम्बर १६, १५५६ ई०)

नवाब खानखाना रौ जन्म खानखाना नामा-में इष्ट घटी ३७/१७ दी है (पृ० १२६)

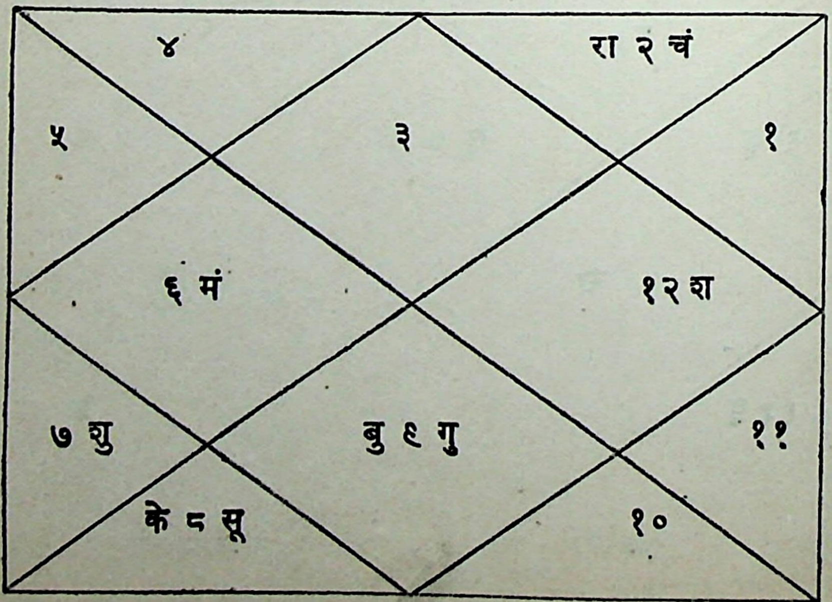

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खानेजहां पठाण री जन्मकुंडली

सम्वत १६३१ आश्विन सुद ३ शनौ उदयात घटी ४ सू ५/२१
(शनि०, सितम्बर १८, १५७४ ई०) खानेजहां पठाण री जन्म

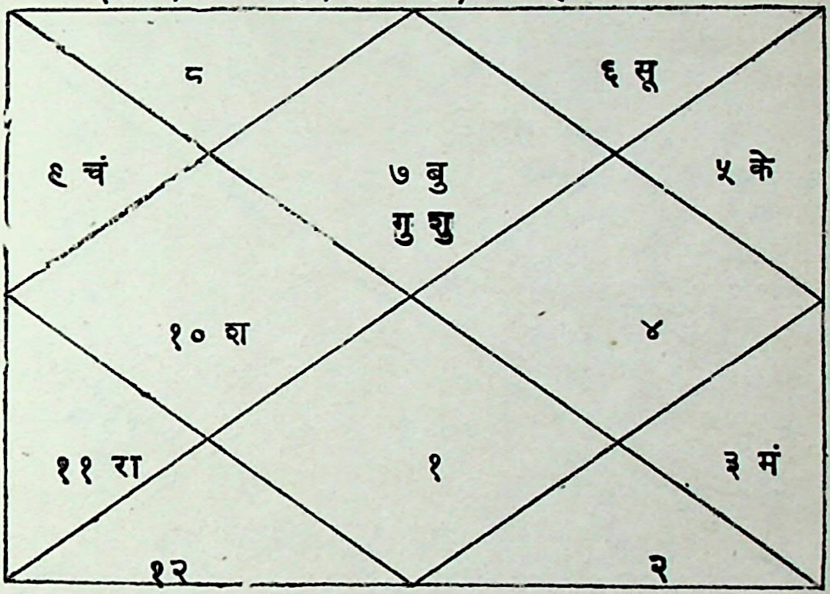

आसफ खां री जन्मकुंडली

सम्वत १६३१ पोह (पोष) सुद ६ गुरो (गुरु०, दिसम्बर ३०, १५७४ ई०)
आसफ खां री जन्म

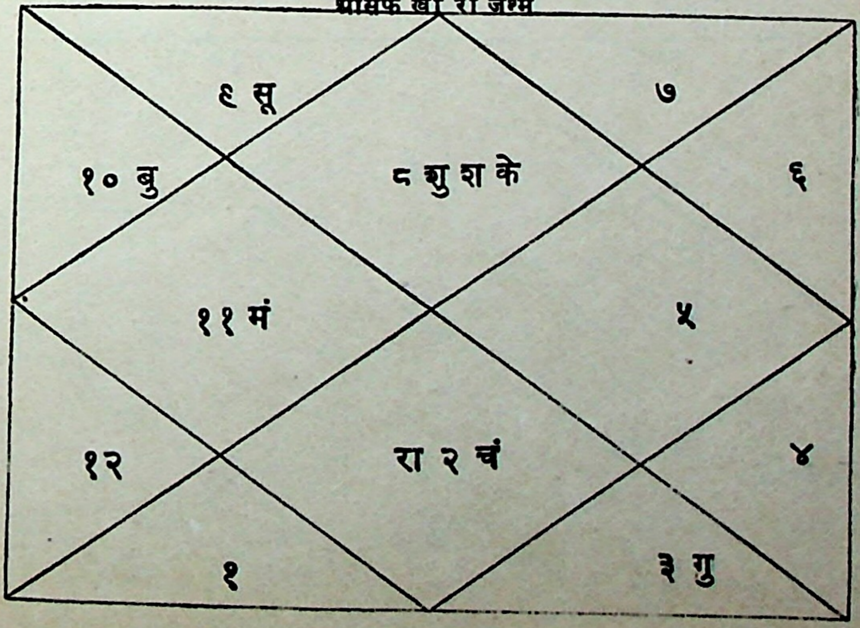

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शायस्ताखां री जन्मकुंडली

सम्वत १६६२ पोह सुद ७ (शुक्र०, दिसम्बर ६, १६०५ ई०)
शायस्ता खां री जन्म

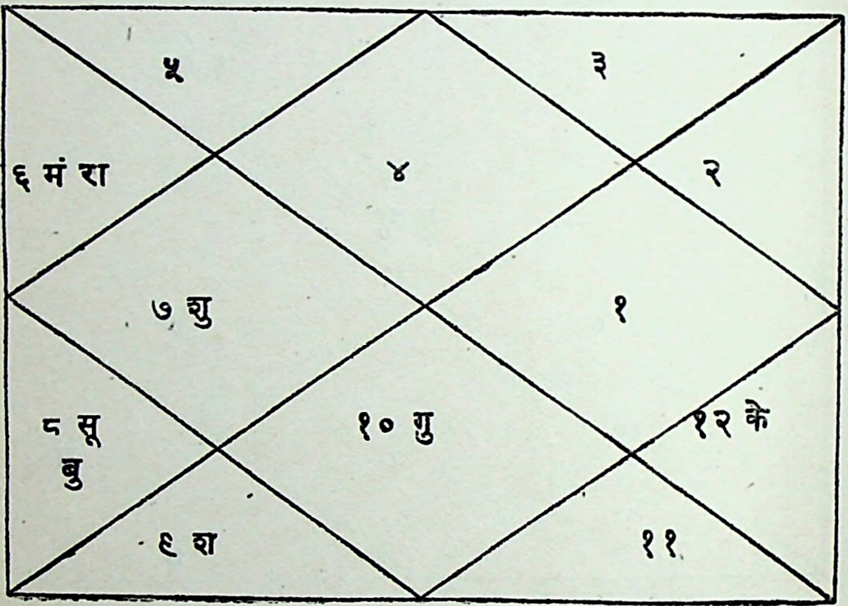

दुर्गादास आसकरनोत री जन्मकुंडली

सम्वत १६९५ द्वितीय श्रावण सुद १४, भौमे उदय ३१/३८ धनिष्ठा ६०/सूर्य ४/११/५३/
४७ लग्न १०/१३/५६/१ दुर्गादास आसकरनोत री जन्म

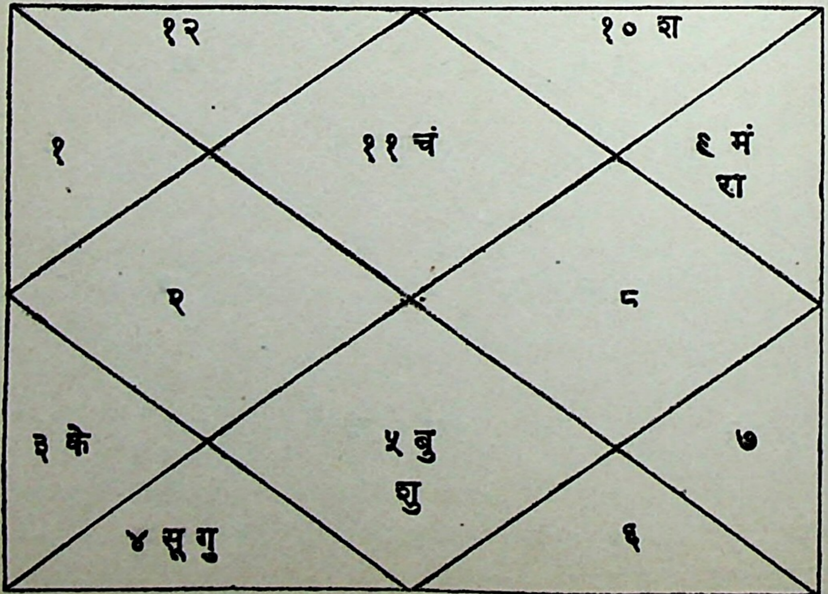

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांवों के पट्टों व जागीरदारों की पीढियों की विगत

[खाँप करमसोतां रै ठिकाणां री विगत]

गांव-खींवसर— (राव जोधा का पुत्र करमसी जिसके वंशज करमसोत)

पट्टे री विगत :-	रेख कदीम	रेख मोजूदा
खींवसर वास बड़ो (४)	४५००)	४५००)
लुणावास	१०००)	१०००)
ताडावास	१०००)	१०००)
अखावास	३००)	३००)
रतनावास	१५०)	०
काटीयो	१४००)	१४००)
अंबावास	२५०)	०
केलणसर	२००)	०
खींयावास	१५०)	०
निरभुवास	१५०)	०
विक्रणवास	३००)	०
बीरावास (खुर्द)	४५०)	०
माहलोवास	१५०)	०
महेसपुरो	५००)	५००)
नारसुभ्रो बडो (३)	६००)	६००)
नीलावास	६००)	६००)
हरनाथपुरो गुडो	२००)	२००)
बीरावासणी	१००)	१००)
जोरावरपुरो	६००)	६००)
रांणावास	३००)	०
आसावास	१०००)	०
गेमलियावास	४००)	०
गोदावास	२००)	०
छीकण	३००)	०
भलडां रो वास	२००)	०
बीरावास	१०५०)	१०५०)
	१६३५०)	१२१५०)

पीढियें:— ३. पंचायण करमसी रो (पट्टे खींवसर) ४. महेसदास ५. हरदास ६. दयालदास ७. भींवसिंघ ८. हरनाथसिंघ ७. ऊदैसिंघ १०. जोरा-

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वरसिंघ ११ करणसिंघ १२. वेरीसाल १३. .... १४. बख्तावरसिंघ १५. .... १६. सादूळसिंघ

गांव - भोजावास— रेख कदीम २०००) रेख मौजूदा २०००) प० जोधपुर

पीढियें:– (पांती आध में) ९. संभूसिंघ हरनाथसिंघोत[1] १०. अभेसिंघ ११. सेरसिंघ १२. पहाड़सिंघ १३. भारथसिंघ १४. मोतीसिंघ

पांती आध में:–११. बखतावरसिंघ अभेसिंघोत १२. रतनसिंघ १३. अमरसिंघ

गांव - घणारी बड़ी (आधी)—

पीढ़ियें:– १०. दोलतसिंघ सम्भुसिंघोत[2] ११. माधोसिंघ १२. बुधसिंघ १३. थानसिंघ १४. जोगीदास

गांव - पांचोड़ी— रेख कदीम ३०००) रेख मौजूदा ३०००) प० जोधपुर

गांव - बोंमणवाड़ो— रे. क. ६२५) रे. मौ. ६२५) प० जोधपुर

गांव - साठीको— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००) प० जोधपुर

पीढियें:– ९. उदेसिंघ, हरनाथसिंघोत[3] १०. जोरावरसिंघ ११. करणसिंघ १२. दुरजणसिंघ १३. रामसिंघ १४. लिछमणसिंघ

गांव - आचीणो — रे. क. १९००) रे. मौ. १९००) प० जोधपुर

गांव–हमीराणो (पट्टे) रे. क. ५००) रे. मौ. ० प० जोधपुर

पीढियें:– ८. हरीसिंघ, भींवसिंघोत[4] ९. जसकरण १०. पदमसिंघ ११. रायसिंघ १२. जवानसिंघ १३. इंदरसिंघ १४. लालसिंघ १५. हणवतसिंघ

गांव - देऊ — रे. क. १०००) रे. मौ. १०००) सिरकार नागोर

पीढियें– ८. फतेहसिंघ भींवसिंघोत[5] ९. लखधीरसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. कीरतसिंघ १२. सेरसिंघ १३. ग्यानसिंघ १४. बखतावरसिंघ

---

१. ठिकाने खींवसर के (८) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
२. ठिकाने भोजावास के (९) ठाकुर संभुसिंह का पुत्र।
३. ठि. खींवसर के (८) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
४. ठि. खींवसर के (७) ठाकुर भींवसिंह का पुत्र।
५. ठि. खींवसर के (७) ठाकुर भींवसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव - गोदण— रे. क. ५) रे. मौ. ५)
सिरकार नागोर

पीढियें:– (पांती आध में) ७. भगवानदास दयालदासोत[1] ८. मार्वसिंघ ९. जेतसिंघ
१०. अनोपसिंघ ११. दानसिंघ १२. सालमसिंघ १३. छतरसिंघ
१४. सुमेळसिंघ

गांव - टाळो माडपुरो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– (पांती आध में) ७. केसरसिंघ दयालदासोत[2] ८. मेगराज ९. सिरदारसिंघ
१०. जालमसिंघ ११. किलांणसिंघ १२. ऊरजणसिंघ १३. विजेराज

पांती आध में:– १०. हटीसिंघ सिरदारसिंघोत[3] ११. पनेसिंघ १२. दलेलसिंघ
१३. रावतसिंघ

गांव - चटाळियो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
प० जोधपुर

पीढ़ियें:– ६. दलपत हरदासोत[4] ७. पिरथीराज ८. प्रतापसिंघ ९..................
१०. रायसिंघ ११. जोरावरसिंघ

गांव - सोयलो— रे. क. १८७५) रे. मौ. १८७५)
प० जोधपुर

पीढियें:– १२. ईसरीसिंघ जोरावर सिंघोत[5] १३. भींवसिंघ १४. मंगलसिंघ
१५. विजेसिंघ

गांव - नागड़ो—

पीढियें:– ७. पीरथीराज दलपतोत[6] ८. महासिंघ ९. सिवसिंघ १०. सुलतानसिंघ
११. सेरसिंघ १२. रिधकरण १३. सांवतसिंघ

गांव - खारी — रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– ८. लिखमीदास पिरथीराजोत[7] ९. जेतसिंघ १०. भवानीसिंघ ११. चतरसिंघ
१२. बेरीसाल १३. प्रभुदांन १४. बभूतसिंघ

गांव - भदवासो (आधो) — रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

---

१. ठि. बींवसर के (६) ठाकुर दयालदास का पुत्र।
२. ठि. बींवसर के (६) ठाकुर दयालदास का पुत्र।
३. ठिकाने टालो माडपुरा के (९) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।
४. ठि. बींवसर के (५) ठाकुर हरदास का पुत्र।
५. ठि. चटालियो के (११) ठाकुर जोरावरसिंह का पुत्र।
६. ठि. ,, ,, (६) ठा० दलपत का पुत्र।
७. ठि. ,, ,, (७) ठा० पिरथीराज का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें:– ११. बखतसिंघ भवानीसिंघोत[1] १२. बुधसिंह १३. धनसिंह

गांव - गिरावड़ी— रे. क. २०००) रे. मौ. ६३७॥)

सिरकार नागोर

पीढियें:– ६. जगतसिंघ लिखमीदासोत[2] १०. सवाईसिंघ ११. हिमतसिंघ
१२. जालमसिंघ १३. गजसिंघ

गांव - हरीमो— रे. क. ३०००) रे. मौ. १५००)

सिरकार नागोर

पीढियें:– १०. सुरतसिंघ, जगतसिंघोत[3] ११. वाघसिंघ १२. अनांनसिंघ
१३. जगरांमसिंघ १४. देवीसिंघ

गांव - जिदास— रे. क. १०००) रे. मौ १०००)

सिरकार नागोर

पीढ़ियें:– १०. सिरदारसिंघ जगतसिंघोत[4] ११. हिंदुसिंघ १२. अनाडसिंघ
१३. माधोसिंघ

गाँव सीगड– रेख कदीम ४०००) रेख मौजूदा ४०००)

पीढियें– ५..................महेसदासोत[5] ६. द्वारकादास ७.............. ८. जगरूपसिंघ
६. हरभांण १०. सांवतसिंघ ११. तेजसिंघ १२. सालमसिंघ १३. अमांनसिंघ
१४. सूरसिंघ

गाँव कादर पुरो (आधो)– रे. क. १५००) रे. मौ. १५००)

सिरकार नागोर

पीढियें– ११. दलेलसिंघ सांवतसिंघोत[6] १२. मानसिंघ १३. चतुरसिंघ
१४. लिछमणसिघ

गांव थळाजू– रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)

सिरकार नागोर

पीढियें:– ८. अभेरांम कीरतसिंघोत ६. सतीदांन १०. सुजांणसिंघ ११. जेतसिंघ
१२. प्रतापसिंघ

गांव बुह (आध)– रे. क. ३०००) रे. मौ. ३०००)

सिरकार नागोर

पीढियें:– ३. मांनसिंघ पंचायणोत[7] ४. ईसरदास ६. केसरीसिंघ ७. ऊदेसिंघ

---

१. गांव खारी के (१०) ठाकुर भवानीसिंघ का पुत्र ।
२. गांव खारी के (८) ठाकुर लिखमीदास का पुत्र ।
३. ठि. गिरावड़ी के (६) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र ।
४. ठि० गिरावड़ी के (६) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र ।
५. ठि० खींवसर के (४) ठाकुर महेसदास का पुत्र ।
६. ठि० सीगड़ के (१०) ठाकुर सावतसिंघ का पुत्र ।
७. ठि० खींवसर के (३) ठाकुर पंचायण का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८. कुसलसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. चाँदसिंघ १२. सेरसिंघ
१३. सादूलसिंघ १४. बभूतसिंघ

पांती आध में:– ११. सालमसिंघ दोलतसिंघोत[1] १२. नाहरसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गांव - आसरनडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
प० जोधपुर

पीढियें:– ४……………………तेमाल पंचाणोत ५. ईसरदास ६…………………
७. रुगनाथसिंघ ८…………………… ९. जसकरण १०……………
११. करणसिंघ १२………………… १३. जसवंतसिंघ

गांव - ऊस्तरां— रे. क. ४०००) रे. मौ. ४०००)
प० जोधपुर

पीढियें:– ९. सिवदांनसिंघ साहबसिंघोत १०. बांकीदास ११. राजसिंघ
१२. रिडमलसिंघ १३. मंगलसिंघ

गांव सांवतकुम्रो — रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
प० जोधपुर

पीढियें:– १२. सरूपसिंघ राजसिंघोत[2] १३. ईसरीसिंघ

गांव ऊमरलाई (आधी)— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
प० सिवांणा

पीढियें:– ३. धनराज करमसिंघोत ४. नगराज ५. सांगो ६. प्रतापसिंघ ७. किसनसिंघ
८. संकरदास ९. गुमांनसिंघ १०. सुजांणसिंघ ११. सगतसिंघ १२. ग्यांनसिंघ

गांव - खारी — ....
सिरकार जालोर

पीढियें:– ५. गणेसदास नगराजोत ६. विठलदास ७. रांमसिंघ ८. रिणछोड़दास
९. सांवतसिंघ १०. किलांणसिंघ ११, मोकमसिंघ १२. संभुसिंघ
१३. गुलाबसिंघ

गांव - रंगालो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ८. चंपराज रांमसिंघोत[3] ९. विजेसिंघ १०. सुरतांणसिंघ ११. विसनसिंघ
१२. सेरसिंघ १३. अनाड़सिंघ १४. भारथसिंघ

गांव - सिराणी— रे. क. १२५०) रे. मौ. १२५०)
सिरकार जालोर

पीढियें:– १२. सेरसिंघ विसन दासोत[4] १३. अमांनसिंघ १४. आईदांन

---

१. ठि. बुड़ के (१०) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र।
२. ठि. उस्तरां के (११) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।
३. ठि. खारी के (७) ठा० रामसिंह का पुत्र।
४. ठि. रंगालो के (११) ठा० विसनसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव - छजालो—　　　　रे. क. १०००)　　रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ७. माधोदास विठलदासोत[१] ८. बलुंतसिंघ ९. धनसिंघ १०. जालमसिंघ ११. सूरजमल १२......................

गांव - सोमडावास—　　　　रे. क. ५००)　　रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ९. सूरतसिंघ बलुंतसिंघोत[२] १०. चेनसिंघ ११. सोनसिंघ

गांव - गीगालो—　　　　... ....　　........
प०　　जोधपुर

पीढियें:– ४. नेतसी धनराजोत ५. सुरतांणसिंघ ६. भोजराज ७. चुतरभुज ८. रिण-छोड़दास ९. जगरूपसिंघ १०. भारथसिंघ ११. भोमसिंघ १२. पेमसिंघ १३. छतरसिंघ

गांव - राजुवास—　　　　रे. क. ५००)　रे. मौ. ५००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– (पांती आध में) १२. अमरसिंघ भोमसिंघोत[३] १३ पीरथीसिंघ
पांती आध में:– १२. नरसिंघदास भोमसिंघोत[४] १३. नारसिंघ १४. राजसिंघ १५. महासिंघ

गांव - जाखणीयो—　　　　रे. क. १५००)　रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– ९. दीपसिंघ रिणछोड़दासोत[५] १०. भभुंतसिंघ ११. रुगनाथसिंघ १२. मूल-सिंघ १३. मोतीसिंघ १४. विजेसिंघ १५. मुकनसिंघ

गांव - बाळवो—　　　　रे. क. २०००)　रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– ७. खंगारसिंघ भोजराजोत[६] ८. विजेसिंघ ९. राजसिंघ १०. सबलसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. खुमांणसिंघ

गांव - डांवरो—　　　　...
प० जोधपुर

पीढियें:– ५. किलांणदास नेतसिंघोत ६. बीको ७. मोहणदास ८. विठलदास ९. सक्ती–

---

१. ठि. खारी के (६) ठाकुर विठलदास का पुत्र ।
२. ठि. छजालो के (८) ठाकुर बलुंतसिंघ का पुत्र ।
३. ठि. गीगालो के (११) ठाकुर भोमसिंघ का पुत्र ।
४. ठि. गीगालो के (११) ठाकुर भोमसिंह का पुत्र
५. ठि. गीगालो (८) ठाकुर रिणछोड़दास का पु[त्र]
६. ठि. गीगालो के (६) ठाकुर भोजराज का पुत्र ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

दांनसिंघ १०. प्रतापसिंघ ११. मानसिंघ १२. बुधसिंघ १३. पहाड़सिंघ
१४. जसवंतसिंघ १५. मोतीसिंघ

गांव - बाहारो बडो— रे. क. १५००) रे. मो. १५००)
प० जोधपुर

पीढियें:— (पांती आध में) ३. नरांणदास करमसी रो ४. सांईदास ५. सगतसिंघ
६. नरहरदास ७. रुगनाथसिंघ ८. ईसरीसिंघ ६. पदमसिंघ हठीसिंघोत
१०. सवाईसिंघ ११. जालमसिंघ १२. अभेसिंघ १३. जुहारसिंघ

पांती आध में:— १२. नाथुसिंघ जालमसिंघोत[१]

[खांप मांडणोतां रै ठिकाणां री विगत]

(राव रिड़मल का पुत्र मांडण जिसके वंशज मांडणोत)

गांव - अळाय— ....
सिरकार नागोर

पीढियें:— ३. सादो मांडणोत ४. जोगो ५. पुंजो ६. लिखमीदास ७. रुगनाथसिंघ
८. दुरजणसिंघ ६. जोधसिंघ १०. हरनाथसिंघ ११. रांमसिंघ १२. भेरूंसिंघ
१३. सोमसिंघ १४. दोलतसिंघ

गांव - गोरेरी— रे. क. २०००) रे. मो. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:-११.........हरनाथसिंघोत[२] १२. रावतसिंघ १३. बगसीरांम १४. बखतावरसिंघ

गांव - गडरीयो— रे. क. २०००) रे. मो. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:— ६. रूपसिंह दुरजणसिंघोत[३] १०. करणसिंघ ११. देवीसिंघ १२. प्रतापसिंघ
१३ अखेसिंघ

गांव - रोहीणो— रे. क. ३०००) रे. मो. ०
सिरकार नागोर

पीढियें:— (पांती आध में) ६. चंद्रसेण दुरजणसिंघोत[४] १०. दीपसिंघ ११. लालसिंघ
१२. इंदरसिंघ १३. केसरीसिंघ १४. भोपालसिंघ १५. रतनसिंघ
१६. माधोसिंघ

---

१. ठि. बाहारो (आधा) के (११) ठाकुर जालमसिंघ का पुत्र।
२. ठि. अलाय के (१०) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (८) ,, दुरजणसिंह का पुत्र।
४. ,, ; ,, (८) ,, ,, ,, ,,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में:—९. जेतसिंघ दुरजणसिंघोत[1] १०. इंद्रभांण ११. अमरसिंघ १२. भींवसिंघ
१३. बाघसिंघ १४. सिवसिंघ

गांव - ढीलासर— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:— (पांती दोय में ⅔) ५. सांवलदास जोगारो[2] ६. किलांणदास ७. गोयंददास
८. भारमल ९. अभेसिंघ १०. दलपत. ११. सिवदानसिंघ १२. रतनसिंघ
१३. बखतावरसिंघ

पांती तीजी में ⅓:— ११. रांमसिंघ दलपतोत १२. नाहरसिंघ १३.....................
१४. रावतसिंघ

गांव - हिंगवाणीयो— रे. क. ५००) रे.मौ. ०
सिरकार नागोर

पीढियें:— ३. सीघण मांडण रो ४. परवत ५. गोपालदास ६. नराणदास
७. चतुरभुज ८. अजु ९. दांनसिंघ १०. संभुसिंघ ११. बखतावरसिंघ

[खांप भदावतां रै ठिकाणाँ री विगत]

(राव रिडमल का अखेराज, अखेराज का पंचायण और पंचायण का भदा जिसके वंशज भदावत)

गांव - देछु— ....
सिरकार जालोर

पीढियें:— ५. लखमण भदावत[3] ६. जेसो ७. मनोहरदास ८. राजसिंघ ९. महासिंघ
१०. अखीसिंघ ११. पदमसिंघ १२. जगतसिंघ १३. बहादरसिंघ

गांव खांबल – रे. क. ३९०) रे. मौ. ३९०)
प० सोजत

पीढियें:— (पांनी चौथी) भगवांनदास, रुगनाथसिंघ, सिवसिंघ, नराणदास ।

गांव - भदावतां रो गुडो— रे. क. ११००) रे. मौ. ११००)
प० सोजत

पीढियें:— पेमसिंघ, रामसिंघ, बिजेसिंघ, देवीसिंघ, भगोतसिंघ, अजीतसिंघ

[खांप बालां रै ठिकाणाँ री विगत]

(राव रिडमल का भाखरसी और भाखरसी का बाला जिसके वंशज बाला)

गांव - मोकळसर— ७५०) गांव लोधराडो १५०)

---

१. ठि. अलाय के (८) ठाकुर दुरजणसिंह का पुत्र ।
२. अलाय के (४) ठाकुर जोगा का पुत्र ।
३. भदा का पुत्र लखमण ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव - फूलण— २००) गांव सुजरे ५०)
गांव - करमास— ५०) गांव मोतीसरो १८७५)
गांव - बालू— ४५०) गांव रमणीयो २५०)
प० सिवांणो

गांव - सिणली— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
प० जोधपुर

पीढियें:– ४. भारमल्ल बाला रो ५. नगराज[1] ६. जेतसी ७. केसोदास ८. माधवदास ९. अखेराज[2] १०. खींवराज ११. ऊदेराज १२. नाथुसिंघ १३. लालसिंघ १४.………… १५. बनेसिंघ १६. ………… १७. जुंझारसिंघ

पांती आध में:– १०. हिरदेरांम अखेराजोत[3] ११. जगतसिंघ १२. अभैसिंघ १३. सेरसिंघ १४. अमांनसिंघ १५. मूलराज १६. अजीतसिंघ

गांव - भुती— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
प० सिवांणो

पीढियें:– १३. संगरांमसिंघ अभेसिंघोत[4] १४. भवानीसिंघ १५. फतेसिंघ १६. खंगारसिंघ

गांव - पूजापुरो— रे. क. ५००) प० गोढवाळ

पीढियें:– १२. जालमसिंघ जगतसिंघोत[5] १३. चेनसिंघ १४. पेमसिंघ

गांव - देवड़ो— रे. क. ७००) रे. मौ. ७००)
प० सिवांणो

पीढियें– ११.…………हिरदयरामोत १२. सुरतसिंघ १३.…………१४. गुलाबसिंघ १५. सगतसिंघ १६. गुमांनसिंघ

गांव - बालवाड़ो - (आधी पांति) रे. क. २०००) रे. मौ. २०००) सिरकार जालोर
गांव - आवलज— रे. क. ७५०) रे. मौ. ७५०) ,, ,,
गांव - नारनडी— रे. क. ३०००) रे. मौ. ३०००) प० जोधपुर

पीढियें:– ८. सुरजमल[6] केसवदासोत[7] ९. तेजपाल[8] १०. रांमदास[9] ११. लालसिंघ

---

१. यह मेड़ते के युद्ध में काम आया था। २. नूरअली इनायतखां से युद्ध हुआ वहां पडदलखां को मार कांणांणे का थाणा उठाया इसका भाई रतन वहां काम आया।
३. ठि. सिणली के (९) ठाकुर अखैराज का पुत्र।
४. गांव सिणली (पांती आध) के (१२) ठाकुर अभैसिंह का पुत्र।
५. गांव सिणली के (११) ठाकुर जगतसिंघ का पुत्र।
६. अखेराज ने जब कांणाणे के थाणे पर पडदलखां को मारा तब यह भी युद्ध में उसके साथ था।
७. गांव सिणली के (७) केसवदास का पुत्र।
८. महाराजा अजीतसिंघ ने जब जोधपुर से मुगलों का थाणा उठाकर उस पर अधिकार किया उस चढ़ाई में यह शामिल था तथा इसका भाई गोपालदास युद्ध में काम आया।
९. इसने भी अजीतसिंघ के विखे के दिनों में उनका साथ दिया था।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२. रिणछोड़दास १३. किलांणसिंघ[1] १४. अचलसिंघ १५. जगतसिंघ[2]

गांव–आबळज— रे. क. ७५०) रे. मौ. ७५०)
सिरकार जालोर

पीढियें:- (पांती आधी) १५ सिरदारसिंघ अचलसिंघोत[3]

गांव–बुगरडो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागौर

पीढियें:— (पांती आध में) ११. फतेसिंघ रामदासोत[4] १२. अनोपसिंघ १३. जेतसिंघ १४. अखेसिंघ १५. उमेदसिंघ

(पांती पाव में):— १०००) (बाकी पाव पांती सांसण)

पीढियें:— ७. चाँदसिंघ जैतसिंघोत[5] ८. किलाणदास ९. भगवांनदास १०. लालसिंघ ११. किरतसिंघ १२. जसवंतसिंघ १३. पेमसिंघ १४. बहादरसिंघ ।

गांव–नरसांणो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
प. नागोर

पीढियें:— ९. रामचन्द सूरजमलोत[6] १०. नराणदास ११. पदमसिंघ १२: जोरावरसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. कानसिंघ १५. गजसिंघ १६. शिवनाथसिंघ ।

गाँव–मांडवलां— रे. क. ३०००) रे. मौ. ३०००)
सिरकार जालोर

गांव–सांवलतो खुरद— रे. क. १२५०) रे. मौ. १२५०)
प. जोधपुर

पीढियें:— ८. अमरदास केसवदासोत[7] ९. बरसल १०. करणसिंघ ११. जगरांम १२. रुगनाथसिंघ १३. प्रतापसिंघ १४. जेतसिंघ १५. गुमानसिंघ १६. बभुत-सिंघ १७. तेजसिंघ ।

गांव–काठेड़ी— रे. क. ७००) रे. मौ. ७००)
प. सिवाणों

पीढियें:– १४. कीरतसिंघ प्रतापसिंघोत १५. तखतसिंघ

---

१. यह सिरोही तथा धोरीमना के युद्धों में घायल हुआ था ।
२. आउवा पर संवत् १९१४ में जब अंग्रेजों की फौज चढकर आई तब यह वहां काम आया।
३. गांव सिणली के (१४) ठाकुर अचलसिंघ का पुत्र ।
४. ठि. बालवाड़ा के (१०) ठाकुर रामदास का पुत्र ।
५. ठि. सिणली के (६) जैतसिंघ का पुत्र ।
६. ठि. बालवाड़ा के (८) ठा. सूरजमल का पुत्र।
७. ठि. सिणली के (७) ठा. केसोदास का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव-जेसावो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– १४. जेतसिंघ प्रतापसिंघोत १५. सादूलसिंघ ।

गांव-पीसाणो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– १४. रतनसिंघ प्रतापसिंघोत १५. भोमसिंघ १६. लिछमणसिंघ ।

गांव-चुरां— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– १२. सिरदारसिंघ जगरांमोत[1] १३. सूरजमल १४. छतरसिंघ १५. अनाड़सिंघ १६. बभुतसिंघ १७. सबलसिंघ १८. जुझारसिंघ ।

गांव-थलुडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ८. धनराज केसवदासोत[2] ९. बलरांम १०. जसवंतसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. लालसिंघ १३. तखतसिंघ ।

***गांव-अेलांणो—** रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार जालोर

गांव-जोजावर री वासणी— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
प. गोढवाड़

गांव-गंगारडी— रे. क. २०००) रे. मौ. १०००)
प. मेड़ता

५०००) ४०००)

पीढियें:– १०. सुजाणसिंघ भगवानदासोत ११. ओपसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. जसवंतसिंघ १४. रतनसिंघ १५. जोधसिंघ ।

गांव-पीडीयो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

*पीढियें:– ११. देवीसिंघ सुजाणसिंघोत[3] १२. हीदुसिंघ १३. गिरधरदास १४. भेरुसिंघ १५. भोपालसिंघ १६. भूरसिंघ ।

---

१. ठि. मांडवला के (११) ठा. जगराम का पुत्र ।
२. ठि. सिणली के (७) ठा. केसवदास का पुत्र ।
३. ठि. अेलाणा के (१०) ठा. सुजाणसिंघ का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव-कलापुरो— रे. क. १०००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ८. ....चांदसिंघोत ९. लिखमीदास १०. .... ११. भावसिंघ १२. .... १३. केसरीसिंघ १४. नवलसिंघ १५. गुलाबसिंघ १६. सादुलसिंघ ।

गांव-बासरण— रे. क. ६२५) रे. मौ. ६२५)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ८. प्रिथीसिंघ चांदूसिंघोत[1] ९. फतेसिंघ १०. अजबसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. लखधीरसिंघ १३. जेतसिंघ १४. हरदानसिंघ ।

गांव-हठुजो— रे. क. १०००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ७- किसनदास जेतसिंघोत[2] ८. मनोरदास ९. नाडो १०. प्रेमसिंघ ११. रुघनाथसिंघ १२. रामसिंघ १३. जवानसिंघ १४. .... ।

गांव-देभावास— .. .. सिरकार जालोर

गांव-गुढो सांवलदास रो— ....

पीढियें:– ५. बीदो भारमलोत ६. जेमल ७. भवानीदास ८. अमरसिंघ ९. नरसिंगदास १०. जवांनसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. अभेसिंघ १३. सुरतसिंघ १४. जालमसिंघ १५. अनाड़सिंघ १६. सिवनाथसिंघ ।

गांव-ओडवाडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— १०. डुंगरसिंघ नरसिंघदासोत[3] ११. ओपसिंघ १२. लालसिंघ १३. भोमसिंघ १४. अचलसिंघ ।

गांव-कुहाडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– १०. जुगतसिंघ नरसिंगदासोत[4] ११. सिरदारसिंघ १२. हिंदुसिंघ १३. थानसिंघ ।

गांव-डाभली— रे. क. ७५०) रे. मौ. ७५०)
प. जोधपुर

---

१. ठि. वुगरडो (पाव पांती) के (७) ठाकुर चांदसिंघ का पुत्र ।
२. ठि. सिणली के (६) ठाकुर जैतसिंघ का पुत्र ।
३. ठि. देभावास के (९) ठाकुर नरसिंगदास का पुत्र ।
४. ठि. देभावास के (९) ठा. नरसिंघदास का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें:– ६. कलो बीदावत ७. भोजराज ८. जेतमाल ९. रामसिंघ १०. भींवसिंघ ११. प्रागदास १२. सिवदानसिंघ १३. नारायणदास १४. महासिंघ १५. जेतमाल ।

गांव-महेसरो बाडो— रे. क. ६२५) रे. मौ. ६२५)
प. जोधपुर

पीढियें:– ८. आसकरण भोजराजोत[1] ९. जोगीदास १०. हठीसिंघ ११. मांनसिंघ १२. चुतरसिंघ १३. खींवसिंघ १४. रुघनाथसिंघ ।

गांव-बाघणवाडो— रे. क. १५००) रे. मौ. १५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ५. दूदो भारमलोत[1] ६. महेसदास ७. राघवदास ८. सांवतसिंघ ९. गोरधनसिंघ १०. बाघसिंघ ११ जगतसिंघ १२. चेनसिंघ १३. अनाडसिंघ १४. ग्यानसिंघ ।

गांव-बारोला वासलो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ८.............केसवदासोत[2] ९. नरसिंगदास १०. बखतावरसिंघ ११. जोधसिंघ १२. सेरसिंघ १३. पदमसिंघ १४. धनसिंघ ।

गांव-बोकडां— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ११. तोखसिंघ बखतावरसिंघोत[3] १२. सरूपसिंघ १३. विजयसिंघ १४. दुलेहसिंघ ।

गांव-सापणी— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ११. रतनसिंघ बखतावरसिंघोत[4] १२. उमेदसिंघ १३. अणंदसिंघ १४. जेतसिंघ १५. हिमतसिंघ ।

गांव-सांवलीयास— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
प. भीनमाल

---

१. ठि. डाभली के (७) ठाकुर भोजराज का पुत्र ।
२. ठि. सिणली के (७) ठाकुर केसोदास का पुत्र ।
३. ठि. बारोला वांसलो के (१०) ठाकुर बखतावरसिंघ का पुत्र ।
४. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें:– ८. गोपालदास राघवदासोत[1] ९. छतरसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. भैरुदास १२. संभुसिंघ १३. माधोसिंघ ।

गांव–मेलावास— .... प. सांचोर

पीढियें:– १०. लालसिंघ भगवानदासोत[2] ११. कीरतसिंघ १२. मानसिंघ १३. अचलसिंघ १४. मेगराज ।

गांव–नीवलाणो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

गांव–डांगरो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

गांव–धांनपड — रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

गांव–रांमासनी— रे. क. ५०००) रे. मौ. ४०००)
प. सोजत

गांव–सुखवासणी ⅔ — रे. क. ६६७) रे. मौ. ६६७)
प. सोजत

[खांप ऊदावतां रे ठिकांणा री विगत]

(राव जोधा का पुत्र सूजा और सूजा का पुत्र ऊदा जिसके ऊदावत कहलाये)

गांव रायपुर—३९४७५)

पट्टे की विगत—

गांव	रेख	गांव	रेख
रायपुर खास	६०००)	जुटी	१७००)
सबलपुरो	१०००)	वाधीपडो	७०००)
भीचरड़ी	१०००)	चंडालियो	५००)
मालणी मालासणी	२००)	कालप	१५०)
मोडरियो	१५०)	देवली	४०)
धवलियो	४०)	देपावस	१५०)
पचाणपुरो	१५०)	कोलुजो	१५०)
जाजणडावास	४०००)	सारगपुरो	४०)

१. ठि. बांघणवाड़ा के (७) ठाकुर राघवदास का पुत्र ।
२. ठि. बुगरड़ो (पांती पाव) के (९) ठाकुर भगवानदास का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख	गांव	रेख
नीवेड़ो	६७५)	गिररी	३७५०)
रामावास	५००)	वानणो	३५०)
चांग	५०)	चीनार	५०)
हाजीवस	५००)	सायपुरो	५००)
कारोचो	२५०)	कोटड़ो	५००)
चैंनपुरो	२५०)	दवे·····	७५०)
सीपली पोकापड़ी	४०००)	·········	२५०)
रांमास खुर्द	२५००)	रहेलड़ो	७५०)
टोकलो	१२५०)		
परगने मेड़ता रो गांव—		लूणियावास	३७५०)
परगने सोजत रा गांव—			
करमावास	४०००)	कालप	२५०)
कालकोट	१०००)	सीधपुरो	३२५)

गाँव रामपुरो—

पीढ़ियें:– ११. पिरथीसिंघ भाकरसिंघोत १२. नाहरसिंघ १३. सबलसिंघ १४. वींरतसिंघ १५. भोमसिंध १६. सोनसिंघ १७. ······

गाँव नीलाबो— रे. क. ६००) रे. मौ. ०
प० जैतारण

पीढ़ियें:– १०. हरनाथसिंघ हिरदैनारायणोत ११. किलांणसिंघ १२. ग्यांनसिंघ १३. चुतरसिंघ १४. बाघसिंघ १५. तेजसिंघ।

गांव पालासणी— रे. क. ६०००) रे. मौ. ६०००)
प० जोधपुर

भेंरूंदो— रे. क. १५०००) रे. मौ. ५०००)
प० मेड़तो

——— ———
२४०००) १४०००)

पीढ़ियें:– ६. प्रतापसिंघ राजसिंघोत १०. जसकरण ११. भवानीसिंघ १२. जैतसिंह १३. अमरसिंघ १४. गजसिंघ १५. रिडमलसिंघ १६. सवाईसिंघ।

गाँव बांसियो— रे. क. ६०००) रे. मौ. ६०००)
प० जैतारण

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढ़ियें:– ११. भावसिंघ जसकरणोत[1] १२. सिभूसिंघ १३. जोधसिंघ १४. सुरजणसिंघ १५. प्रीथीसिंघ १६. रतनसिंघ ।

गांव देवली—	रे. क. ११०००)	रे. मौ. ११०००) प जैतारण
गांव अभैपुरो—	रे. क. २०००)	रे. मौ. २०००) प जैतारण
	१३०००)	१३०००)

पीढ़ियें:– १०. उमेदसिंघ प्रतापसिंघोत[2] ११. सिवसिंघ १२. नवलसिंघ १३. जुहारसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. विजैसिंघ १६. रुघनाथसिंघ ।

गांव आकेलो—	रे. क. २५००)	रे. मौ. २५००) प० जैतारण

पीढ़ियें:– १०. ······' प्रतापसिंघोत[3] ११. उमेदसिंघ १२. ········ १३. स्यांमसिंघ १४. विरदसिंघ १५. गोपालसिंघ १६. मूकनसिंघ ।

गांव नीबेड़ो बड़ो—	रे क. ५०००)	रे. मौ. ५०००) प० जैतारण

पीढ़ियें:– १०. उदैसिंघ प्रतापसिंघोत[4] ११. चैनसिंघ १२. ईंदसिंघ १३. वागसिंघ १४. अनाड़सिंघ १५. समरथसिंघ ।

गांव वीकरलाई (आधो)—	रे. क. ६००)	रे. मौ. ६००) प० जैतारण

पीढ़ियें:– ७. नरसिंगदास दयालदासोत ८. जुंभ रसिंघ ९. ईंदरसिंघ १० कीरतसिंघ ११. जैतसिंघ १२. अमरसिंघ १३. सुरजमल १४. किसनशिंघ १५. जालमसिंघ १६. सेरसिंघ १७. कुसलसिंघ १८. ········ १९. आईदान ।

गांव नीबाज—	रे. क. १३०००)	रे. मौ. १३०००)	प० जैतारण
बरांटियो बड़ो	१५००)	१५०००)	,,
वीसावास खुर्द	३००)	३००)	,,
सांगावास	४०००)	४०००)	,,
वीसावास बड़ो	५००)	५००)	,,

---

१. ठि॰ पालासणी के (१०) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।
२. ,, ,, ,, (९) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र ।
३. ,, ,, ,, (९) ,, ,, ,,
४. ,, ,, ,, (९) ,, ,, ,,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वोगासणी	२००)	२००)	प्र. जैतारण
वीरमवासणी	२००)	२००)	,,
पीपाड़ वडो	६१५०)	६१५०)	जोधपुर
खांगटो	६२५०)	६२५०)	,,
	३५१००)	३५१००)	

पीढियें—: ६. मुकनदास किळाणदासोत ७. विजैराम मुकनदासोत ८. जगरांमसिंघ ९. कुसलसिंघ १०. अमरसिंघ ११. किलाँणसिंघ १२. दोलतसिंघ १३. सिभूसिंघ १४. सुल्तानसिंघ १५. सांवतसिंघ १६. सवाईसिंघ १७. गुलावसिंघ १८. छतरसिंघ

गांव मोडरो —	४०००)	४०००)	प्र. जैतारण

पीढियें—: १६. सिवसिंघ सांवतसिंघोत[1] १७..............

गाँव भुंभलियो—	३६००)	३६००	प्र. मेड़तो
गाँव सेसड़ो —	७०००)	७०००)	प्र. ,,

पीढियें—: १३. सिरदारसिंघ दोलतसिंघोत[2] १४. समरथसिंघ १५. रणजीतसिंघ

गांव रास —

पट्टे री विगत—:

रास वडो २	३६००)	३६००)	प्र. जैतारण
वरडोटी	३००)	३००)	,,
रेवारियां री वासणी	१००)	१००)	,,
वलुपुरो	१०००)	१०००)	,,
समोथी	१५००)	१५००)	,,
राणीवाल	३०००)	३०००)	,,
नीवेटी	३००)	३००)	,,
पालीवास १	६००)	६००)	,,
म्हाराजपुरो	१३००)	१३००)	,,
पातुवास	१०००)	१०००)	,,
फुलमाल	८०००)	६०००)	,,
कनावस	२०००)	२०००)	,,

१. नीवाज के (१५) ठाकुर सांवतसिंघ का पुत्र।
२. ठि. नीबाज के (१२) ठाकुर दौलतसिंघ का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जगतियो	९००)	९००)	प्र. जैंतारण
	———	———	
	२४०००)	२२०००	
केकीदड़ो	६२५०)	६२५०)	प्र. मेड़तो
लखमणियावास	५००)	०	
	———	———	
	६७५०)	६२५०)	

भाखरोद— सिरकार नागोर री ।

पीढियें—: ९. सुभराम जगरामसिंघोत[1] १० बखतसिंघ ११. केसरीसिंघ १२. बनेसिंघ १३. जवानसिंघ १४. भोमसिंघ १५. भींवसिंह १६. प्रतापसिंघ

गाँव हुनावस वडो—	२५००)	२५००)	प्र. जैंतारण

पीढियें—: १५. हमीरसिंघ भोमसिंघोत

गाँव गरणियो—	९०००)	६०००)	प्र. जैंतारण

पीढियें—: ११. सुखसिंघ बखतसिंघोत[2] १२. जोरावरसिंघ १३. भैंरूसिंघ १४. नाथूसिंघ १५. उरजनसिंघ १६. मुकनदास

गाँव लांबियां—	१२०००)	९०००)	प्र. मेड़तो
गाघलियो	२५००)	२५००)	,,
अमरपुरो	१०००)	१०००)	,,
ओडूवास	२५००)	१२५०)	,,
	———	———	
	१९०००)	१२७५०)	
पींपलियो वडो	३७५०)	३७५०)	प्र. जैंतारण
कुसलपुरो	२०००)	२०००)	,,
	———	———	
	५७५०)	५७५०)	

पीढियें—: १०. पेमसिंघ सुभरांमोत[3] ११. भारथसिंघ १२. चांदसिंघ १३. भवानीसिंघ १४. अजीतसिंघ १५. वभूतसिंघ १६. गंभीरसिंह

गाँव पाटवो—	६०००)	६०००)	प्र. जैंतारण
गांव आगेवो	......	......	,,

१. ठि. नीवाज के (८) ठाकुर जगरामसिंघ का पुत्र ।

२. ठि. रास के (१०) ठाकुर बखतसिंघ का पुत्र ।

३. ठि. रास के (९) ठाकुर सुभराम का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: १०. तेजसिंघ सुभरांमोत[1] ११. वेरीसाल १२. म्हासिंघ १३. भोमसिंघ
१४. सूरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. वखतावरसिंघ

गाँव गेमलियावास— (आधो) २५००) २५००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: १०. चैनसिंघ सुभरांमोत[2] ११. फतैसिंघ १२. सिभूसिंघ १३. गजसिंघ
१४. वखतावरसिंघ १५. जुझारसिंघ

गाँव नीबोल— ६०००) ६०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ९. उदैसिंघ जगरांमोत[3] १०. जगतसिंघ ११. न्हारसिंघ १२. सरूपसिंघ
१३. सादूलसिंघ १४. बहादरसिंघ

गाँव वेहड़— ५०००) ५०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ९. रूपराम जगरांमोत[4] १०. रामसिंघ ११. सगतसिंघ १२. अभैसिंघ
१३. विसनसिंघ १४. अनाड़सिंघ १५. भगौतसिंघ

गाँव खीनावड़ी— २०००) २०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ७. मनीराम मुकनदासोत ८. गोरधनदास ९. सुरतराम १०. राजसिंघ
११. गजसिंघ १२. सबलसिंघ १३. नवलसिंघ १४. देवीसिंघ

गाँव विरोल— .... प्र. जैतारण

गांव वलुदास (आधो)

पीढियें—: ८. सादूलसिंघ मनीरामोत[5] ९. अभैसिंघ १०. हरीसिंघ ११. बनैसिंघ
१२. सोभासिंघ १३. सेरसिंह १४. सिवनाथसिंघ

गाँव रामावास बडो— ३०००) ३०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ९.········सादूलसिंघोत[6] १०. जीवणदास ११. भवानीसिंघ १२. स्यांमसिंघ
१३. हिंदूसिंघ १४. सांवतसिंघ १५. समरथसिंघ १६. रेवतसिंघ

गाँव जालीवाडो— १०००) ०) प्र. जोधपुर

पीढियें—: ७. नारायणदास मुकनदासोत ८. सांवलदास ९. पूरणमल १०. सिरदारसिंघ

---

१. ठि. रास के (९) ठाकुर सुभराम का पुत्र।
२. ठि. रास के (९) ठाकुर सुभरांम का पुत्र।
३. ठि. नीवाज के (८) ठाकुर जगरांम का पुत्र।
४. ,, ,, ,, ,,
५. ठि. खीनावड़ी के (७) ठाकुर मनीराम का पुत्र।
६. ठि. विरोल के (८) ठा. सादूलसिंघ का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

११. दुरजनसिंघ १२. मालमसिंघ १३. जसवंतसिंघ १४. हरीसिंघ १५. किसनसिंघ

गाँव बर—	९००)	९००)	प्र. जैतारण
खातीवास	१२५०)	१२५०)	"
माकड़ वाली	१६००)	१६००)	"
वली खुरद	५००)	५००)	"
	४२५०)	४२५०)	

पीढियें—: (पांती आध में) ६. जगनाथसिंघ किलाणदासोत ७. रूपसिंघ ८. सुभरांम ९. अभैंसिंघ १०. सगरामसिंघ ११. चाँदसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. वखता-वरसिंघ १४ सवाईसिंघ १५. सैतानसिंघ

पांती आध में—१२. विसनसिंघ चांदसिंघोत १३. किलिणसिंघ

गाँव डेह— .... सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. भींव किलांणदासोत ७. दलपतसिंघ ८. भारमल ९. सबलसिंघ १०. सिव-दांनसिंघ ११. दलकरण १२. सूरजमल १३. रतनसिंघ १४. सेरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाँव सांडीलो—	५०००)	४५००)	सिरकार नागोर
गाँव गुढो	१०००)	१०००)	"

पीढियें—: १०. संगरामसिंघ सबलसिंघोत[1] ११. देवीसिंघ १२. सरूपसिंघ १३. माधोसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. हरनाथसिंघ १६. दौलतसिंघ

गाँव बेदावड़ी— (पांती दो) १०००) १०००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: ९. देईदास भारमलोत[2] १०. सायबखांन ११. पेमसिंघ १२. जसकरण १३. विसनसिंघ १४. गुलाबसिंघ १५. गोरधनदास

गाँव करमावास— ५०००) ५०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ९. अजबसिंघ भारमलोत[3] १०. जोधसिंघ ११. सुभराम १२. सालमसिंघ १३. अमरसिंघ १४. विड़दसिंघ १५. दौलतसिंघ

गाँव बोयल— २०००) २०००) प्र. सोजत

१. ठि. डेह के (९) ठाकुर सबलसिंह का पुत्र।
२. ठि. " (८) " भारमल का पुत्र।
३. " " " "

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव मडलो २०००) २०००) प्र. सोजत

४०००) ४०००)

पीढियें —: १४. जोरावरसिंघ विसनसिंघोत[1] १५ हिमतसिंघ १६. लिछमणसिंघ

गांव डाभली— ५००) ५००) गढ़ जोधपुर

पीढियें —: ८. मनोहरदास दलपतोत[2] ९. रांमसिंघ १०.⋯⋯करण ११. हिन्दूसिंघ
१२.⋯⋯⋯ १३ उमेदसिंघ १४.⋯⋯⋯ १५ भारथसिंघ

गांव पीह ७०००) ७०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: ७ रुघनाथसिंघ भींवसिंघोत[3] ८ वंद्रावनदास ९ कनीराम १०. मांनसिंघ
११ चांदसिंघ १२ धीरतसिंघ १३. वखतावरसिंघ १४. रणजीतसिंघ
१५ रिड़मलसिंघ १६. गोपालसिंघ १७. चिमनसिंघ

गांव काल्यारडो ७०००) ७०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: १०. विजैसिंघ कनीरामोत[4] ११. उमेदसिंघ १२. देवीसिंघ १३. प्रतापसिंघ
१४. अरजनसिंघ

गांव मंडोवरी ३०००) ३०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: १० भिवसिंघ कनीरांमोत ११. वदनसिंघ १२ स्यांमसिंघ १३. सुरतांणसिंघ

गांव फूलियांणो— ३०००) ३०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: ९ अमरदास व्रंदावनदासोत[5] १०. किसनदास ११. उदैभांण
१२. सालमसिंघ १३. मालमसिंघ १४. सगरांमसिंघ १५. केसरीसिंघ

गांव बंवाल— १०००) ७००) प्र. परवतसर

पीढियें—: (पांती आध में) ८. गरीबदास रुघनाथसिंघोत[6] ९. जगमाल १०.⋯⋯⋯
११. सिरदारसिंघ १२.⋯⋯⋯ १३. अमानीसिंघ १४.⋯⋯⋯
१५ हमीरसिंघ

पांती आध में —११. सवाईसिंघ पदमसिंघोत १२. अजीतसिंघ १३. अमरसिंघ

---

१. ठि. वेहड के (१३) ठाकुर विसनसिंह का पुत्र ।
२. ठि. डेह के (७) ठा० दलपतसिंह का पुत्र ।
३. ठि. डेह के (६) ठाकुर भींवसिंह का पुत्र ।
४. ठि. पीह के (९) ठाकुर कनीराम का पुत्र ।
५. ठि. पीह के (८) ठाकुर व्रंद्रावनदास का पुत्र ।
६. ठि. पीह के (७) ठाकुर रुघनाथसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. सिवनाथसिंघ १५. मोतीसिंघ

गाँव रेवडा रो वास १०००) १०००) सिरकार नागौर

पीढियें —: ६. वेणीदास किलांणदासोत ७. सूरदास ८. सांवळदास ६. कुसलसिंघ १०. गुमानसिंघ ११. सिवसिंघ १२. खंगारसिंह १३. केसरसिंघ १४. छतरसिंह

गाँव धोलियो— २०००) २०००)

कानावास ०) ०)

गांव बावड़ी १०००) १०००)

——— ———

३०००) ३०००)

पीढियें—: ६. मोकमसिंघ सांवलदासोत[१] १०. हरीदास ११. सवाईसिंघ १२ सुरतांणसिंघ १३. चैनसिंघ १४. रतनसिंघ १५. लालसिंघ

गाँव रिड़मल रो वास २०००) २०००) सिरकार नागौर

पीढियें —: १३. भैरूंसिंघ सुरतांणसिंघोत[२] १४ जुंझारसिंघ।

गाँव सारड़ी .... सिरकार नागौर

पीढियें—: ८. तुलछीदास सुंदरदासोत ६. वखतावरसिंघ १०. दयारांम ११. वदनसिंघ १२. डूंगरसिंघ १३. पहाड़सिंघ १४. वभूतसिंघ १५. लिछमणसिंघ १६ सिवनाथसिंघ

गाँव चांदवासणी १५००) १५००) दरीवे डीडवाणे

पीढियें—: ८ ......सुंदरदासोत ६. रामसिंघ १०. सवाईसिंघ ११. सालमसिंघ १२. अमानसिंघ १३. वखतावरसिंघ।

गाँव कालाउना— ४२५०) ४२५०) गढ़ जोधपुर

पीढियें:— ५. गोपालदास रतनदासोत ६. माधोदास ७. अणंदराम ८. भावसिंघ ६. सिवदांनसिंघ १०. चैनसिंघ ११. सोभासिंघ १२. ईंदरसिंघ १३. सादूलसिंघ १४. करणसिंघ १५. तेजसिंघ १६. गुलावसिंघ

गाँव खडालो— ३१२५) २०००) गढ़ जोधपुर

पीढियें:— ६. माधोदास गोपालदासोत[३] ७. कनैयादास ८. हिरदैराम ६. अभैरांम १०. हरनाथसिंघ ११. उदेसिंघ १२. पिरथीसिंघ १३. थांनसिंघ

गाँव भुंडुवडी— ५००) ५००) गढ़ जोधपुर

---

१. ठि. रेवड़ा रो वास के (८) ठाकुर सांवलदास का पुत्र।

२. ठि. धोलिया के (१२) ठाकुर सुरतांणसिंह का पुत्र।

३. ठि. कलाउना के (५) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: १२. म्होकमसिंघ उदैसिंघोत[1] १३. सोभासिंघ १४. रतनसिंघ
१५. तेजसिंघ १६. फतैसिंघ

गाँव मोडावली— ३७५) ३७५) गढ़ जोधपुर

पीढियें— : १२. सूरजमल उदैसिंघोत १३. रूपसिंघ

गाँव स्याहृ रौ वडौ— १३००) १३००) प्र. मेड़तो

पीढियें— : ५. रामसिंघ रतनसिंघोत ६. किसोरदास ७. मनोहरदास ८. मुथरादास
९. जगतसिंघ १०. सांवतसिंघ ११. हिरदेरांम १२. बनेसिंघ
१३. म्होबतसिंघ १४. भोमसिंघ

गाँव कापड़ोद— ३०००) ३०००) प्र. कोलिया

पीढियें— : ११. म्होकमसिंघ सांवतसिंघोत[2] १२. धीरतसिंघ १३. मदमसिंघ
१४. बखतावरसिंघ १५. विड़दसिंघ १६. रांमनाथसिंघ

गाँव ठाकुरवास-- १५००) १२५०) प्र. जैतारण

पीढियें—: ४. भवानीदास खींवकरणोत ५. बाघसिंघ ६. किसनदास ७. मोहणदास
८. हिरदैरांम ९. नरांणदास १०. सांवतसिंघ ११. लखमीसिंघ
१२. केसरीसिंघ १३. नाथूसिंघ १४. अमरसिंघ १५. अखैसिंघ

गाँव वासड़ो भोजां रौ— ७००) ६२५) प्र. भीनमाल

पीढियें—: ११. हरीसिंघ सांवतसिंघोत[3] १२. जालमसिंघ १३. सादूलसिंघ
१४. वभूतसिंघ १५. लादूसिंघ

गाँव बालेरां— १०००) ७५०) प्र. जालोर

पीढियें— : १०. भाखरसिंघ नारायणदासोत[4] ११. सेरसिंघ १२. तखतसिंघ

गाँव देवरियो— ८०००) ८०००)

गांव लुंबडास १२००) १२००) प्र. जैतारण

———— ————

९२००) ९२००)

पीढियें— : ३. डूंगरसिंघ ऊदावत ४. तेजसिंघ ५. सीधो ६. दुरजनसाल ७. फरसरांम

---

१. ठि. खडाला के (११) ठाकुर उदैसिंघ का पुत्र।
२. ठि. स्याहरो के (१०) ठाकुर सांवतसिंह का पुत्र।
३. ठि. स्याहरो के (१०) ठाकुर सांवतसिंह का पुत्र।
४. ठाकुर वास (९) ठाकुर नरांणदास का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

८. गोरधनदास ९. नांहरखांन १०. हिंदूसिंघ ११. गुमानसिंघ
१२. उमेदसिंघ १३. लालसिंघ १४. सालमसिंघ १५. माधोसिंघ
१६. गुमांनसिंघ

गाँव राजाडंड— २५००) २५००) प्र. जैतारण

पीढियें—: १०. जोधसिंघ नारखाँनोत[१] ११. अखैसिंघ १२. रामसिंघ १३. हरीसिंघ
१४. सिरदारसिंघ १५. कुसलसिंघ १६. बखतावरसिंघ

गाँव लासणी— ३५००) २५००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ६. हिरदैरांम सिंघ रौ ७. गोरधन ८. उरजनसिंघ ९. सुजाणसिंघ
१०. जोरावरसिंघ ११. मालमसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. हमीरसिंघ

गाँव गुदवच —	६२५०)	६२५०)
पातुवास	१००)	१००)
बहेड़	१००)	१००)
देवलियो	१००)	१००)
गीगावास	४००)	४००)
गोदरलां	......	......
	६९५०)	६९५०)

पीढियें—: ५. कानसिंघ तेजसिंघोत ६. गोयंददास ७. रांमचंद ८. रूपसिंघ
९. जीवणदास १०. हरनाथसिंघ ११. सेरसिंघ १२. इंदरसिंघ
१३. माधोसिंघ १४. कुसालसिंघ १५. फतैसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गाँव रिखलियो (गुडो) ९००) ९००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ६. नाराणदास कांनसिंघोत ७. चतरभुज ८. स्यामसिंघ ९. पिरथीराज
१०. बछराज ११. अखैराज १२. भारथसिंघ १३. दौलतसिंघ
१४. हिमतसिंघ १५. सुरतांणसिंघ

गाँव सांमुजो — २५००) २५००) सिरकार जालोर

पीढियें—: ६. भेजराज कांनसिंघोत ७. भींवसिंघ ८. सुरजमल ९. सूरसिंघ
१०. जगतसिंघ ११. देवीसिंघ १२. लालसिंघ १३. गुमानसिंघ
१४. नवलसिंघ

गाँव लुणोदो— ३०००) १५४०) प्र. जालोर

---

१. ठि. देवरियां के (९) ठाकुर नारखांन का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भदवासियो	——	——	

पीढियें —: ७. बोरीदास भोजराजोत[1] ८. रायसिंघ ९. किलांणसिंघ १०. उदैसिंघ ११. भवानीसिंघ १२. सगतसिंघ १३. कुसलसिंघ

गाँव गोपड़ी —	१०००)	१०००)	प्र. सीवांणो

पीढियें —: ७. मोहणदास भोजराजोत[2] ८. करणसिंघ ९. अणंदसिंघ १०. सवाईसिंघ ११. संगरामसिंघ १२. बुदसिंघ १३. वेरीसाल

गाँव बरांटियो खुरद —	२५००)	२५००)	प्र. जैतारण
जैतपुर	७००)	७००)	,,
	——	——	
	३२००)	३२००)	

पीढियें —: ५. किसनसिंघ तेजसिंघोत ६. करणसिंघ ७. मनोहरदास ८. गोकलदास ९. महासिंघ १०. कीरतसिंघ ११. मदमसिंघ १२. स्यांमसिंघ १३. गुलावसिंघ १४. फतैसिंघ १५. भारथसिंघ १६. रांमसिंघ १७. अभैसिंघ

गाँव महेसियो —	२०००)	२०००)
चांवडियो	३००)	३००)
	———	———
	२३००)	२३००)

पीढियें —: ११. खींवकरण कीरतसिंघोत[3] १२. माधोसिंघ १३. सुखसिंघ १४. अजीतसिंघ १५ रुघनाथसिंघ १६. विजैसिंघ

गाँव खींवावास —	६२५)	६२५)	प्र. मेड़तो

पीढियें —: ९. हरीसिंघ गोकलदासोत[4] १०. जीवणदास ११. अचलसिंघ १२. भोमसिंघ १३. मोतीसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाँव धूलकोट —	१४९०)	१४९०)

पीढियें —: ८. गिरधरदास मनोहरदासोत[5] ९. बखतसिंघ १०. वभूतसिंघ ११. अणंदसिंघ

---

१. ठि. सांमूजो के (६) ठाकुर भोजराज का पुत्र ।
२. ठि. ,, ,, ,, ,, ,,
३. ठि बरांटियो खुरद के (१०) ठाकुर कीरतसिंह का पुत्र ।
४. ठि. बरांटियो खुरद के (८) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र ।
५. ,, ,, ,, (७) ,, मनोहरदास का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२. सुखसिंघ १३. संगरामसिंघ १४. केसरीसिंघ

गांव पिरलीपुरो—　　३०००)　　३०००)　　प्र. जैतारण

पीढियें—: (आध में) ६. पचांणदासकिसनदासोत[1] ७. राजसिंघ ८. स्यांमसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. सिरदारसिंघ ११. माधोसिंघ १२. रूपसिंघ १३. सिवसिंघ १४. रतनसिंघ

पांती आध में—९. हिमतसिंघ स्यामसिंघोत[2] १०. माँडण ११. अभैसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३. वहादरसिंघ

गांव पुनड़ाऊ—　　५००)　　५००)　　सिरकार जालोर

पीढियें—: ४. परतापसिंघ रूघनाथसिंघोत ५. नरांणदास ६. स्यांमदास ७. वीरमदे ८. अजवसिंघ ९. अमरसिंघ १०. लालसिंघ ११. सिवसिंघ १२. सुरतसिंघ १३. जीवराज १४. दौलतसिंघ

खांप मेड़तीयां री पीढ़ीयां

१. राव जोधाजी तिण रा बेटा—१ बरसिंग १ दूदो ।

तिणां नै राव जोधे मेड़तो दीयो सु मेड़तो सैर सूनो पड़ीयो थो तिण नै इणां आवा-दांन कीयो ।

२. दूदो तिण रां वंसरा मेड़तीया कहीजं ।

खांप रायमलोत मेड़तीयां

१. दूदो जोधावतं, २. रायमल दूदावत

रायमलोतां रा ठिकांणां री विगत

	रेख कदीम	रेख हमार भरे	परगना
गांव रांयण—	१४०००)	१४०००)	प्र० मेड़तो

पीढियें—: ४. अचलदास रायमलोत ५. भगवांनदास ६. ऊदैसिंघ ७. रांमसिंघ ८. अजवसिंघ ९. दलरांम १०. मुकनसिंघ ११. लालसिंघ १२. मालमसिंघ १३. स्यांमसिंघ १४. मेहतावसिंघ १५. हमीरसिंघ १६. जोरावरसिंघ

---

(१) ठि. बरांटियो खुरद के (५) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र ।

(२) ठि. पिरलीपुरो के (८) ठाकुर स्यांमसिंह का पुत्र ।

ꜝचित्तौड़ के रांणा सांगा रै बे पातसाह वाबर के बीच सीकरी में युद्ध हुआ वह रांणा की तरफ से कांम आया ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव ढावो— ४०००) ४०००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: १२. बुधसिंघ लालसिंघोत[1] १३. भगोतसिंघ १४. जुहारसिंघ

गाँव जारोड़ो वडो— (पांती २ में) २०००) २०००) प्र. मेड़ता

१२. नारसिंघ लालसिंघोत १३. बिडदसिंघ १४. वेसीसाल १५. रांमनाथसिंघ १६. भीवसिंघ।

गाँव जाजू वासणी— (आधी) ३१२५) १०००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: १२. सूरजमल लालसिंघोत[2] १३. भवानीसिंघ १४. अमांनसिंघ १५. अमरसिंघ १६. हरीसिंघ।

गाँव अग्यासणी— १०००) १०००) प्र. मेड़तो

पीढियें— १०. पीरथीसिंघ दलरांमोत[3] ११. प्रतापसिंघ १२. भैरूंसिंघ १३. हणवतसिंघ १४. सबलसिंघ।

गाँव बावरलो— ३२००) ३२००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: ८. विजेसिंघ*रामसिंघोत[4] ९. राजसिंघ १०. जोधसिंघ ११. फकीरदास १२. बखसीरांम १३. फतेसिंघ १४. वाघसिंघ १५. मंगलीसिंघ १६. वहादरसिंघ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव जेसावास—	५००)	५००)	प्र. मेड़तो

५. स्यांमदास अचलदासोत[5] ६. आसकरण ७. हठीसिंघ ८. रतनसिंघ ९. हींदुसिंघ १०. गुलावसिंघ ११. करणसिंघ १२. हुकमसिंघ १३. सुरताणसिंघ।

गाँव देवलोमासां— १२५०) १२५०) प्र. मेड़तो

४. उरजणसिंघ रायमलोत[6] ५. नरवदसिंघ ६. जसवंतसिंघ ७. सुरजमल ८. नेतसी ९. हींदुसिंघ १०. बखतसिंघ ११. अभैसिंघ १२फतेसिंघ

---

*उज्जैन के युद्ध में कांम आया, संवत् १७१५ में।

(१) ठि. रायण के (११) ठाकुर लालसिंह का पुत्र।

(२) " " " " " " "

(३) ठि. " " (९) ठाकुर दलराम का पुत्र।

(४) ठि. " " (७) " रामसिंह का पुत्र।

(५) ठि. रायण के (४) ठाकुर अचलदास का पुत्र।

(६) रायसल दूदावत का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३. मोतीसिंघ　१४. भोपालसिंह ।

गांव छींकरणा वास—　१०००)　१०००)　प्र. मेड़तो

४. सुरजनसिंघ रायमलोत　५. नाहर खान　६. प्रीथीराज　७. ऊदेभांण
८. चंद्रभांण　९. अखेसिंघ　१०. अनाडसिंघ　११ खुमांणसिंघ ।

गांव दुगोर अचलो—　५००)　५००)　प्र. मेड़तो

गांव दुगोर दासा　६५०)　६२५)　„

———　———

११५०)　११२५)

५. आसकरण सुरजनसिंघोत[1]　६. सींधो　७. डुंगरसिंघ　८. किसनसिंघ
९. सवाईसिंघ　१०. जालमसिंघ　११. गुलाबसिंघ　१२. भभुतसिंघ
१३. भैरूसिंघ ।

खांप जगमालोत मेड़तियां

२. दुदो जोधावत　३. वीरम दूदावत
४. जगमाल वीरमोत रा वंस रा जगमालोत कही जै ।

जगमालोत मेड़तियां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेखकदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव डसांणो वडो—	२०००)	२०००)	प्र. परवतसर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें:— ५. वाघसिंघ जगमालोत　६. सांवतसिंघ　७. भोपतसिंघ　८. रांमसिंघ
९. दीपसिंघ　१०. पूरणसिंघ　११. मुकनसिंघ　१२. विजैसिंघ ।

पांती आध में—

पीढियें:— ६. किसनसिंघ वाघसिंघोत　७. सुजांणसिंघ　८. ईसरदास　९. अमरसिंघ
१०. जोधसिंघ　११. धीरतसिंघ　१२. सुजांणसिंघ　१३. दलेलसिंघ
१४. बाघसिंघ　१५. मोतीसिंघ ।

गांव घिरडोदो जेसलां—　१०००)　१०००)　प्र. कोलियो

पीढियें:— ७. सुजाणसिंघ किसनदासोत[2]　८. मोकमसिंघ　९. हिमतसिंघ
१०. किलांणसिंघ　११. मयासिंघ　१२. मूथरादास　१३. सिंभूसिंघ
१४. गणेससिंघ ।

---

(१) ठि. छींकणावास के (४) ठाकुर सुरजणसिंह का पुत्र ।
(२) ठि. डसांणो बडो के (६) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव कुडलि— २०००) २०००) प्र. दोलतपुरो

पीढियें—: ७. अचलदास किसनदासोत[१] ८. विहारीदास ९. सिवरांम १०. जगतसिंघ ११. मोकमसिंघ १२. कनीरांम १३. वखतावरसिंघ १४. विजेसिंघ

गांव रेख कदीम हमार भरे परगना

गाँव छापरी बड़ी २०००) २०००) प्र. दौलतपुरो

पीढियें:— ९. इंदरभांण विहारी दासोत[२] १०. सांवतसिंघ ११. किसोरसिंघ १२. सलेसिंघ १३. चांदसिंघ १४. भूरसिंघ १५. केसरीसिंघ

गाँव राठील २०००) २०००) प्र. कोलियो

पीढियें:— १०. पिरथीराज ईंदरभाणोत[३] ११. मुकनसिंघ १२ सोभासिंघ १३. प्रतापसिंघ।

गाँव दाऊदसर— २०००) २०००) प्र. दौलतपुरो

पीढियें:— ९. घासीरांम विहारीदासोत[४] १०. जोरावरसिंघ ११. खड़गसिंघ १२. सुरतांणसिंघ १३. सुखसिंघ १४. पाहाड़सिंघ १५. भोपालसिंघ

गाँव वनवासो २०००) २०००) प्र. दोलतपुरो

पीढियें:— १०. जगतसिंघ घासीरांमोत[५] ११. मोहणसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. डुंगरसिंघ १४. चिमनसिंघ

गाँव भांडासर— १०००) १०००) प्र. दोलतपुरो

पीढियें:— ७. सगतसिंघ किसनदासोत[६] ८. खंगारसिंघ ९. सेखराज १०. जोरावरसिंघ १ . भगोतसिंघ १२. फकीरसिंघ १३. रूपसिंघ १४. माधोसिंघ

गांव रेख कदीम हमार भरे परगना

गाँव घिरडोदो— २०००) ११९२॥) प्र. कोलियो

घुंवो १०००) लार ९३) भरे

---

†संवत् १८४७ रा माग सुद २ मेड़ता में मराहठों से युद्ध हुआ उसमें काम आया।

(१) ठि. डसांणो बडो के (६) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

(२) ठि० कुडली के (८) ठाकुर विहारीदास का पुत्र।

(३) ठि० छापरी बडी के (९) ठाकुर इन्द्रमाण का पुत्र।

(४) ठि० कुडली के (८) ठाकुर विहारीदास का पुत्र।

(५) ठि० दाउदसर के (९) ठाकुर घासीराम का पुत्र।

(६) ठि० डसांणो बडो के (६) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१—पांती आध में—

पीढियें:— ५. आसकरण जगमालोत ६. मांनसिंघ ७. ऊदेभांण ८. हरकरण ९. किसनसिंघ १०. लालसिंघ ११. अजीतसिंघ १२. पुरणसिंघ १३. सालमसिंघ

२—पांती आध में—

११. सरूपसिंघ लालसिंघोत १२. हाथीसिंघ १३. वाहादरसिंघ

गांव घिरडोदो डुंडी— २०००) १२८७॥) प्र. कोलियो

धुंवो १०००) लार १०३) भरे

पीढियें:— १०. सायबसिंघ किसनसिंघोत[1] ११. हींदूसिंघ १२. सिवसिंघ १३. सिवदांनसिंघ १४. डुगरसिंघ १५. विजेसिंघ।

गांव मनारी ढांणी— .... सिरकार नागोर

पीढियें:— ७. महासिंघ मांनसिंघोत[2] ८. अमरसिंघ ९. अभैसिंघ १०. भगवतसिंघ ११. नवलसिंघ १२. चेनसिंघ १३. भींवसिंघ १४. पनसिंघ

खांप ईसरदासोत मेड़तीयां

२. दुदो ३. वीरमद्रेव ४. ईसरदास रा वंस रा ईसरदासोत कहीजै।

ईसरदासोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव सुमेल— १४०००) १४०००) प्र. मेड़ता

गांव ११ री रेख भेली भरै। मेड़ता रा गांव ११—

१. सुमेल १. खेडो १. प्रतापगढ़ १. सोडपुरो १. करणपुरो १. नारसुवो १. गांव मोडरी १. रांमपुरो १ गांव गुढो १. रांवणीयो १. करण पुरो खुर्द।

पीढियें:— ५. सांईदास ईसरदासोत ६ जसवंतसिंघ ७ विंदरावन दास ८. नारसिंघ ९. जगतसिंघ १०. पेमसिंघ ११ सुखसिंघ १२. थांनसिंघ १३. मुकनसिंघ १४. हुकमसिंघ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव खरवो—	१०००)	१०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: ५. संकरदास ईसरदासोत ६. जगनाथ ७ हरीरांम ८. सकतसिंघ ९. मुकनसिंघ १०. वाहादरसिंघ ११. विसनसिंघ १२. प्रभुदांन १३. चावंडसिंघ

---

(१) ठि० घिरडोदो के (९) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

(२) „ „ „ (६) „ मानसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांप चांवावत मेड़तीया

२. दुदो जोधावत ३. वीरम-दुदावत ४. चांदोजी† वीरमोत

चांदोजी रा वंस रा चांदावत कहीजें ।

चांदोजी रा ठिकाँणां री विगत

गाँव बलूंदो—	५०००)	५०००)	प्र. जोधपुर
„ घोड़ावड	३१२५)	३१२५)	„
„ भेरूवासी	८७५)	८७५)	प्र. मेड़ता
„ केरीयो रांवा	५०००)	५०००)	„
„ केरीयो माकड़ो	३७५०)	३७५०)	„
„ खारचीयां	२५००)	२५००)	„

पीढियें—: ५ रांमदास चांदावत* ६. जगतसिंघ ७. मोकमसिंघ ८. हरीसिंघ ९. विजेसिंघ १०. अभैसिंघ ११. स्यांमसिंघ§ १२. फतेसिंघ १३. सीवसिंघ १४. वागसिंघ १५. जीवणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव धनापो—	२०००)	२०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: १०. नरसिंगदास विजेसिंघोत[1] ११. जगरूपसिंघ १२. अखेसिंघ १३. प्रीथीसिंघ १४. सुमेलसिंघ

गाँव दुदड़ास—	१२५०)	१२५०)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: ७. नाथूसिंघ जगतसिंघोत[2] ८. हींदुसिंघ ९. लालसिंघ १०. अमानसिंघ ११. वेरीसाल १२. चीमनसिंघ

गाँव सुंदरी—	१२५०)	१२५०)	प्र. मेड़ता

---

†नागोर में सुबायत हसनअली ने संवत् १६२१ में चूक से मरवाया.

*मेड़ता के सूबायत के गांव नीबोद नंदवाणां को पकड़ा तब झगड़ा हुआ, वहां गाँव काखडकी—मुंगधडाके बीच में कांम आया ।

§श्री महाराज श्रीरांमसिंघजी व बखतसिंघजी के बीच संवत् १८०७ में झगड़ा हुआ उसमें काँम आया ।

(१) ठि० बलूंदा के (९) ठाकुर विजेसिंह का पुत्र ।

(२) „ „ „ (६) „ जगतसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ६. जसवंतसिंघ रांमदासोत[१] ७. जगरूपसिंघ ८. अभसिंघ ९. ऊदेसिंघ
१०. कोजूरांम ११. दुलेसिंघ १२. ग्यानसिंघ १३. रावतसिंघ
१४. बभूतसिंघ १५. पाबुदांन

गाँव तिगरो—	२५००)	२५००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: ७. वेणीदास जसवंतसिंघोत[२] ८. ऊदेसिंघ ९. रामसिंघ १०. सीवसिंघ
११. बनेसिंघ १२. जूंजारसिंघ १३. सुरतांणसिंघ

गाँव कुडकी खास—	८०००)	८०००)	प्र. मेड़ता
,, मोठां कोटड़ो	१२५०)	१२५०)	,,
,, खीदावास	७५०)	७५०)	,,
,, आलसर	१५००)	१५००)	प्र. दोलतपुरो
,, अलखपुर	३०००)	३०००)	,,
,, नांदोली	२०००)	२०००)	प्र. परबतसर
	१६५००)	१६५००)	

पीढियें—: ५. गोपालदास चांदावत ६. मुकनदास ७. सगतसिंघ ८ घासीरांम
९. पाहाड़सिंघ १०. देवसिंघ ११ बाहादरसिंघ १२. अमांनसिंघ
१३ लिछमणसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. बखतावरसिंघ ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव डाभड़ो—	४०००)	३०००)	प्र. दौलतपुरा

पीढियें—: १३. चिमनसिंघ अमांनसिंघोत[३] ।

गांव पालियास—	४५००)	४०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: ११. रांमसिंघ देवीसिंघोत[४] १२. हणवतसिंघ १३. रणजीतसिंघ ।

गाँव खाँनड़ी—	४०००)	४०००)	प्र दौलतपुर

पीढियें—: १२ जोधसिंघ रांमसिंघोत[५] १३. अजीतसिंघ ।

गाँव बडवालो—	३०००)	२०००)	प्र. परबतसर

पाँती आध में—

पीढियें—: ६. सुंदरदास गोपालदासोत[६] ७. ऊदेसिंघ ८. नरांणदास ९. हठीसिंघ
१०. लछीरांम ११. पाहाडसिंघ १२. मंगलसिंघ १३. गुमांनसिंघ ।

---

(१) ठि. बलूंदा के (५) ठाकुर रांमसिंह का पुत्र ।
(२) ठि० सुंदरी के (६) ,, जसवंतसिंह का पुत्र ।
(३ ठि. कुडली के (१२) ठाकुर अमांनसिंह का पुत्र ।
(४) ठि. कुडली के (१०) ठाकुर देवीसिंह का पुत्र ।
(५) ठि. पालियास के (११) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।
(६) ठि. कुडली के (५· ठाकुर गोपालदास का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना

पांती ग्राध में

पीढियें—: ८. प्रथीसिंघ-उदेसिंघोत[1] ९. प्रतापसिंघ १०. कुसलसिंघ ११. सलेसिंघ १२. कीलांणसिंघ १३. चतर साल १४. विजेसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव सेवरीयो—	७०००)	७०००)	प्र. मेड़तो
,, देवरीयो रजपुतां	१०००)	१०००)	,,
,, बानसी	१०००)	१०००)	,,
,, नेण पुरीयो	१८७५)	१८७५)	,,
	१०८७५)	१०८७५)	

पीढियें:—: ६. नारसिंघ-गोपालदासोत[2] ७. केसरखां ८. सांवलदास ९. ग्रचलसिंघ १०. फतेसिंघ ११. भवांनीसिंघ १२. दांनसिंघ १३. रतनसिंघ १४. रुगनाथसिंघ १५. देवीसिंघ

गाँव बनवाड़ो—	३७५०)	३७५०)	प्र. मेड़तो

पांती ग्राध में—:

पीढियें—: ६. दलपत गोपालदासोत[3] ७. भींवराज ८. सेखराज ९. बाहादरसिंघ १०. ऊमेदसिंघ ११. रिड़मलसिंघ १२. छतरसिंघ

पांती ग्राध में—:

पीढियें—: ६. जैतसिंघ-गोपालदासोत[4] ७. जोरावरसिंघ ८. किलांणसिंघ ९. नाहरसिंघ १०. पनेसिंघ ११. छतरसिंघ १२ विसालसिंघ

गाँव ग्राजडोलो—	२०००)	२०००)	प्र. परवतसर

पीढियें—: ६. रूपसिंघ-गोपालदासोत[5] ७. इंदरभांण ८. नरहरदास ९. माघोसिंघ १०. जतनसिंघ ११. सुजांणसिंघ १२. नाथूसिंघ १३. ग्रमांनसिंघ १४. भगवतसिंघ १५. रांमनाथ

गाँव लाडपुरो—	१०००)	१०००)	प्र. परवतसर

---

(१) ठि. बडवालो (आध) के (७) ठाकुर उदैसिंह का पुत्र ।

(२) ठि. कुडकी के (५) ठाकुर गोपालदास का पुत्र ।

(३) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

(४) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

(५) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

T. CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव रेख कदीम हमार भरे परगना विशेष

पीढियें—: ७. देवकीदास रूपसिंघोत[1] ८. कनीरांम ९. देवीसिंघ १०. बदनसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. भेरूंसिंघ १३. बखतावरसिंघ १४. खंगारसिंघ

गांव सूंथलि— २०००) २०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: ७. बलरांम रूपसिंघोत[2] ८. जसवंतसिंघ ९. नरसिंगदास १०. सांवतसिंघ ११. दांनसिंघ १२. किसनसिंघ १३. रीड़मलसिंघ १४. फतेसिंघ

गांव हासियास— १०००) १०००) प्र. मेड़ता आसांमी २ रे

पांती आध में—:

पीढियें—: ७. राजसिंघ रूपसिंघोत[3] ८. किलांणसिंघ ९. भोपतसिंघ १०. तेजसिंघ ११. जालमसिंघ १२. कीलांणसिंघ १३. चुतरसिंघ १४. पीरदांन

पांती आध में—: गोयंददास चांदावत रा वंस रा—

पीढियें—: ६. कीरतसिंघ गोयंददासोत ७. भगोतसिंघ ८. ऊमेदसिंघ ९. सीरदारसिंघ १०. रणजीतसिंघ ११. समनसिंघ १२. खींवकरण

गांव पूजीयास— १२५०) १२५०) प्र. मेड़ता

पीढियें—: ५. राघोदास चाँदावत ६. भोजराज ७. आसकरण ८. चतरसाल-राजसिंघोत ९. मानसिंघ १०. सोभासिंघ ११. बाहादरसिंघ १२. हुकम-सिंघ १३. मंगलसिंघ

गांव डीगरांणो— २५००) ०) प्र. मेड़ता रेख भरे नहीं

पीढियें —: गोयंद दास चांदावत रा वंस रा—

७. सुखसिंघ कीरतसिंघोत ८. दलेलसिंघ ९. सींभूसिंघ १०. भेरूंसिंघ ११. चीमनसिंघ १२. समरथसिंघ

गांव ऊंचाखेड़ो— २०००) २०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ७. पदमसिंघ-कीरतसिंघोत ८. देवीसिंघ ९. धीरनसिंघ १०. मोहकमसिंघ ११. हणवतसिंघ १२. कुसालसिंघ

गांव लाई— ३१२५) ३१२५) प्र. मेड़ता

„ कुंपडास २०००) २०००) „ खेडा २

(१) ठि. अजडोली के (६) ठाकुर रूपसिंह का पुत्र।

(२) ठि. „ „ „ „ „ „।

(३) ठि. „ „ „ „ „ „।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे		परगना
गांव ऊडास	७००)	७००)	,,	खेडो १ सूनो

पीढियें—: ६. मुरारदास-गोयंददासोत ७. ऊरजणसिंघ-मुरारदासोत ८. प्रतापसिंघ ९. सबलसिंघ १०. रतनसिंघ ११. लालसिंघ १२. देवीसिंघ १३. वखतावर सिंघ १४. ग्यानसिंघ

गांव मुगधड़ो—	३००००)	३०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—: ११. जालमसिंघ-रतनसिंघोत[1] १२. कीलांणसिंघ १३. सादूलसिंघ १४. मोहवतसिंघ

गांव देसवाल—	४०००)	४०००)	सिरकार नागोर

पांती आध में—:

पीढियें—: १०. वाहादरसिंघ-सबलसिंघोत[2] ११. भोमसिंघ १२. माधोसिंघ १३. सीरदारसिंघ

पांती आध में—: रणजीतसिंघ, फकीरदास, जैतसिंघ

गांव बाखलिया वास—	७००)	७००)	प्र. मेड़तो

पीढियें—: ७. सायव खान-मुरारदासोत[3] ८. अनोपसिंघ ९. कीसनसिंघ १०. ऊमेदसिंघ ११. सेरसिंघ १२ रणजीतसिंघ

गांव रेवत —	२५००)	२५००)	प्र. मेड़तो

पीढियें—: ७. बाघसिंघ-मुरारदासोत[4] ८. दोलतसिंघ ९ ऊदेसिंघ १०. जसवंतसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. अमांनसिंघ १३. विडदसिंघ

गांव रोंहल—	२०००)	२०००)	सिरकार नागोर

पीढियें —: १२. चेनसिंघ-तेजसिंघोत १३. सगरांमसिंघ १४. भवानीसिंघ १५. हरीसिंघ

गांव नोखो —	२०००)	२०००)	सिरकार नागोर
,, चीताणी	१०००)	१०००)	,, ,,
,, धीगावास	५००)	५००)	,, ,,

पीढियें—: ६. रुगनाथसिंघ-गोयंददासोत ७. कीलाणसिंघ ८. भावसिंघ ९. ऊदेसिंघ-

---

(१) ठि. लाई के (१०) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।
(२) ठि. ,, ,, (९) ,, सबलसिंह का पुत्र।
(३) ठि. लाई के (६) ठाकुर मुरारदास का पुत्र।
(४) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना

गगराणा री राड में कांम आया १०. जालसिंघ ११. बखसीरांम १२. अमरसिंघ १३. फकीरसिंघ १४. हिमतसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. विजेसिंघ

गांव नीबड़ी— ६०००) ६०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ९. हरीसिंघ भावसिंघोत † १०. सिरदारसिंघ ११. छतरसिंघ १२. रायसिंघ १३. नवलसिंघ १४. हुकमसिंघ

गांव ओलादण— ३०००) ३०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. विजेरांम-गोयनदासोत ७. बलरांम ८. कनीरांम ९. मोकमसिंघ १०. अभेसिंघ ११. समेलसिंघ १२. जेतसिंघ १३. हरीसिंघ

गांव गागुरडो— २०००) १०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. करमसेण-गोयंदासोत ७. जोदसिंघ ८. फतेसिंघ ९. अजबसिंघ १०. सीरदारसिंघ-कांम आयो मेड़ते गनीमारी राड में संवत १८११ में ११. अभेसिंघ १२. किसनसिंघ १३. गुलावसिंघ १४. सिवनाथसिंघ

गांव छापर वडी— १२५०) १२५०) प्र. मेड़तो

पीढियें—: ९. सिवदांनसिंघ-फतेसिंघोत[1] १०. सिरदारसिंघ ११. ईंदरसिंघ १२. मालमसिंघ १३. दांनसिंघ १४. भोपालसिंघ

गांव पीडियो (आधो) २०००) २०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. अभैराज-गोयंददासोत ७. मानसिंघ ८. जसकरण ९. ईंदर भांण १०. जूंजारसिंघ ११. सायबसिंघ १२. हणवतसिंघ १३. रांमसिंघ १४. चुतरसिंघ

गांव रोहिणो— (आधो) २०००) २०००) सि. नागोर

पीढियें—; १०. भावसिंघ-ईंदरभांणोत[2] ११. मदनसिंघ १२. गुलाबसिंघ १३. अजीतसिंघ

---

† संवत १७८७ में महाराजा अभयसिंह ने अहमदाबाद पर चढ़ाई की उसमें काम आया। यह नोखा के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र था।

(१) गांव गागुरडो के (८) ठाकुर सिवदांनसिंह का पुत्र।

(२) ठि० पीढियो के (८) ठाकुर इन्द्र भाण का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बसी—	१०००)	१०००)		प्र. परबतसर

पीढियें—: ७. ईसरदास अभैराजोत[1] ८. देवीसिंघ ९. मोहणसिंघ १०. मोबतसिंघ ११. सुंदरसिंघ १२. रूपसिंघ १३. नवलसिंघ १४. केसरीसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सीराधणो—:	१०००)	१०००)		सि. नागोर

पीढियें—: ७. कनीरांम-अभेराजोत[2] ८. अमरसिंघ ९. ऊदेसिंघ १०. हींदुसिंघ ११. रायसिंघ १२. मालमसिंघ १३. सादुलसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मांगलियास—:	१०००)	१०००)		प्र. मेडतो

पीढियें—: ६. हरीराम गोयंददासोत ७. भोजराज ८. बिहारीदास ९. छतरसिंघ सभासिंघ ११. भगवतसिंघ १२. जवांनसिंह १३. मदनसिंघ १४. लालसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
रीयां स्यांमदास री—	२५००)	२५००)	मेड़ता	आसांमीर

पांती आध में—:

पीढियें—: ७. जूंझारसिंघ-हरीरांमोत[3] ८. नाहरसिंघ ९. नाथुसिंघ १०. मालमसिंघ ११. केसरीसिंघ १२ अजीतसिंघ

पांती आध में:—

पीढियें—: ८. दोलतसिंघ-जूंजार सिंघोत† ९. देवीसिंघ १०. सवेसिंघ ११. खींवकरण १२. रणजीतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव चिवली—	५००)	५००)		प्र. परवतसर

पीढियें—: ५. हरिसिंघ चांदावत ६. प्रागदास ७. आसकरण ८. सलेसिंघ ९. अजबसिंघ १०. प्रतापसिंघ ११. सरदारसिंघ १२. मेहतावसिंघ १३. रतनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव पुजीयास—	१२५०)	१२५०)		प्र. मेड़तो

पीढियें—: ५. राघोदास चांदावत ६. भोजराज ७. आसकरण ८ महासिंघ ९. सभासिंघ १०. वहादरसिंघ ११. हुक्मसिंघ १२. मंगलसिंघ

खांप गोयनदासोत मेड़तिया—

२. दूदो जोधावत ३. वीरम उदावत ४. जंलम वीरमोत ५. गोयनदास

---

(१) ठि. पीढियों के (६) ठाकुर अभैराज का पुत्र।

(२) ,, ,, ,, ,, ,, ,,

(३) ठि. मांगलियास के (६) ठाकुर हरीरांम का पुत्र।

(†) यह महाराजा रामसिंह और बखतसिंह के संघर्ष में काम आया।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

जयमलोत तिण रा वंस रा जयमलोत कई जँ ।

गोयनदासोतां रा ठिकाणां री वीगत:—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव भावतो	१५००)	१५००)	मारोठ	आधो
„ केसरपुरो	—	—	मारोठ	„
„ नरसिंघपुरो	५००)	५००)	„	
„ अजितपुरो	१०००)	१०००)	„	
„ सुखियो	७५०)	७५०)	„	आधो
„ हरियोमी	७५०)	७५०)	„	पाव
„ रामपुरो	—	—	„	पाव
„ सुग्रोणो	५१२।।)	५१२।।)	„	„
„ कसारी	१७५०)	१७५०)	„	
„ छापरी	५८७।।)	५६२।।)	„	आधो
„ हरिपुरो	५६२।।)	५६२।।)	„	„
„ बाजणो	३३७।।)	३३७।।)	„	पाव
„ घाटवो	१५७५)	१५८१)	„	„
„ सिमरथपुरो	—	—	„	„
„ चितावो	८१२।।)	८१२।।)	„	„
„ भुणी	५५६।)	५५६।)	„	„
„ बरजण	४००)	४००)	„	
„ लालावास	२०००)	२०००)	„	
„ लोबो	२०००)	२०००)	„	
„ गवारीयो	५००)	५००)	„	
„ तोडरो (रूपपुरो)	११०)	१०६) दस आने	„	सवा आना पांती
„ इडाली	६३७)।।	६३७)।।	„	पाव
„ जीवणवार	२०००)	२०००)	„	
„ सोलवो	१०००)	१०००)	मारोठ	
„ उरलायो	—	—	„	
„ महाराज पुरो	७५०)	७५०)	„	आधो
„ रामपुरो	—	—	„	„
„ मिडो	१००००)	००)	नावा	
„ देदारो वास	—	—	„	
„ चोसली	४०००)	००)	„	
„ जवेलीयावास	१५००)	००)	परवतसर	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष

पीढियें:—: ९. सांवलदास-गोयनदासोत ७. रघुनाथसिंघ (मारोठ पाई तिण रा वंश रा रघुनाथ-सिघोत है) ८. सबलसिंघ ९. इन्द्रसिंघ १०. छत्रसाल ११. सालमसिंघ १२. महेशदास १३. देविसिंघ १४. सघतसिंघ १५. सपतसिंघ (खोले) १६. सुलतानसिंघ

गांव भावतो—	१५८७)।।	१५००)	मारोठ	आधो
,, केसरपुरो	—	—	,,	,,
,, हरियाणो	७५०)	७००)	,,	पाव
,, रामपुरो	—	—	,,	,,
,, छापरी	२९३)।।।	२८१)।	,,	,,
,, बाजणो	३३७)।।	३३७)।।	,,	,,
,, बरजण	२००)	२००)	,,	दो आने पांती
,, महाराज पुरो	३७५)	३७५)	,,	आधो
,, सुखियो	३७५)	३७५)	,,	तीन आने पांती
,, मोहाएड़ो	५१२)।।	५१२)।।	,,	पाव
,, हरिपुरो	२७५	२८१)।	,,	,,
,, भुजी	६६०)	६५६)।	,,	,,
,, इडोली	६३६)	६३७)।।	,,	

पीढियें—: १०. वैरीसाल-इन्द्रसिंघोत ११. सरुपसिंघ १२. हुक्मसिंघ काम आयो तुगारी रे राड़ सं.. १८४४ में १३. देविसिंघ १४. रिधसिंघ १५. अनाड़सिंघ

,, खरेस	४०००)	४०००)	परबतसर	

पीढियें—: ११. जगतसिंघ-छत्रसिंघोत १२. रूदरदान १३ भेरूसिंघ

गांव घाटवो—	१५७५)	१५८१)।	मारोठ	पाव पांती
,, समरतपुरो	—	—	,,	,,
,, छापरी	२९३)।।	२८१)।	,,	,,
,, चितावो	८१२)।।	८१२)।।	,,	,,
,, तोडरी रूपपुरो	११०)	१०९) छः आने	,,	दो आने पांती
,, गोयंदी	७२५)	७००)	,,	।-) पांती
,, सुखियो	५००)	३७५)	,,	।) ,
, हरिपुरो	२८१)	२८१)।	,,	।) ,,
,, वरजण	२००)	२००)	,,	दो आने ,,
,, महाराज पुरो	३७५)	३७५)	,,	।) ,,
,, रामपुरो	—	—	,,	।) ,,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष

पीढियें—: ११. समरथसिंघ-बैंरीसालोत १२. दुरजण साल १३. सभा सिंघ
१४. अभैसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
नारोण पुरो—	१३२५)	१३५०)	मारोठ	
,, हरियोणी	१४००)	१४००)	,,	
,, मुवाणो	१०२५)	१०२५)	,,	आधी पांती
,, बाजणो	३३७)।।	३३७)।।	,,	
,, घाटवो	३१५०)	३१६२)।।	,,	
,, सिमरथपुरो	—	—	,,	
,, वरजण	४००)	४००)	,,	पाव पांती
,, तोडरी (रूपपुरो)	२२०)	२१८)।।।	,,	दो पांती
,, इडोली	१०४३)	१०४३)	,,	साढ़े छ आने पांती
,, मोगलोदो	६७५)	६७५)	,,	आधो
,, सिरसी	९३७)।।	९३७)।।	,,	पाव पांती
,, डावली	१३२५)	१३५०)	,,	
,, इन्द्रोखो	५६८)।।	५६८)।।	,,	
,, काकरो रों वास	—	—	,,	
,, जावली	२०००)	००)	मेड़तो	
,, पुडी	१५००)	००)	,,	

पीढियें—: १०. हरिसिंघ-इन्द्रसिंघोत ११. अरजणसिंघ १२. अजीतसिंघ
१३. स्यामसिंघ १४. रतनसिंघ १५. राजसिंघ १६. रामसिंघ
१७. जुहारसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नडवो	५०००)	५०००)	दोलत पुरो	
,, मांगलोदो	३७५)	३३७)।।	मारोठ	। पांती
,, सिरसी	९५०)	९३७)।।	,,	। ,,
,, गोयदी	१०८७)।।	१०५०)	,,	छः आने ,,
,, माघा सुरतो	६५०)	६५०)	,,	आघो
,, फरडोद	१००००)	—	नागोर	

पीढियें—: १०. जोधसिंघ-इन्दरसिंघोत ११. मोतीसिंघ १२. नोनदसिंघ
१३.दुरजन साल १४. सिवदानसिंघ १५. प्रतापसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव वासां—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव वासां—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा	
,, मुडीयो	४०००)	४०००)	,,	
,, नोसर	१५००)	१५००)	,,	
,, मांगलोद	३२५)	३३७॥)	मारोठ	पाव पांती
,, सीरसी	६५०)	६३७॥)	,,	,, ,,
,, गोयंदी	१०५०)	१०५०)	,,	छः आने ,,
,, माथा सुतो	६५०)	६५०)	,,	आधी पांती

पीढियें—: ११. रणजीतसिंघ जोधसिंघोत[1] १२. सुरतांणसिंघ† १३. बखतावरसिंघ १४. देवीसिंघ १५. सुरजभांण

बंट अेक रे पेटे—

गांव मंगलाणो गुढो—	४०००)	३६००)	मारोठ	
,, भूणी	१३१२)	१३१२॥)	,,	
,, ईडोली	२६६)	२७०)	,,	
,, सीरसी	६४०)	६३७॥)		पाव पांती
,, राज्ञावास	१७५०)	१७५०)	,	
,, वाजणो	३४०)	३३७॥)	,,	पाव पांती
,, वरजण	४००)	४००)	,,	
, चीतावो	१६२५)	१६२५)	,,	आधी ,,
,, ईदोखो	५६२॥)	५६२॥)	,,	
,, सीडीयावास	१४००)	१४००)	,,	

पीढियें—: १०. बखतसिंघ ईंदरसिंघोत ११. सुजांणसिंघ १२ अमांनसिंघ १३ फतेसिंघ १३. सीरदारसिंघ १५ भेरूंसिंघ

बंट दूजो—

पीढियें -: ११. जीवणसिंघ* बखतसिंघोत[2] १२. हणवतसिंघ १३. विसालसिंघ १४. मिलापसिंघ १५. मंगलसिंघ १६. भारथसिंघ १७. हिमतसिंघ

---

† यह मरहठों से हुई मुठभेड़ में संवत् १८४४ में श्रावण सुद १३ को काम आया।

* मरहठा माधोराय से सं. १८४४ में युद्ध हुआ उसमें काम आया।

१ ठि. नइवो के (१०) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र।

२. ठि. मंगलाणो गुढ़ो के (१०) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांव झिलियो—	१३०५)	१३०५)	मारोठ	आसांमी ३ रे छः आने पांती
,, आसापुरो	४००)	४००)	,,	पाव पांती
,, बाटलीयो	८५०)	८५०)	,,	पाव पांती
,, हुडील	११२५)	११२५)	,,	छः आने पांती
,, परवेडी	६५२)	६५३)	,,	छः आने पांती
,, सीऊ	१३००)	१३००)	,,	आधी पांती
,, अणदपुर	४१७)	४१७)	,,	छः आने पांती
,, मूड घसोई	५८४।)	५०६।।।)	,,	तीन आने पांती
,, चारणवास	१८१।)	१८१)	,,	छः आने पांती
,, भीलाल	३७५)	३१८)	,,	छः आने पांती
,, खोसी (दलेलपुरो)	७६७।।।)	३२६।)	,,	साढे पांच आने पांती
,, सवाईपुरो	१०००)	१०००)	,,	—
,, अभेपुरीयो	१०००)	१०००)	,,	—
,, फोगालो	३०००)	३०००)	नावा	

बंट अेक में—

पीढियें—: ८. विजेसिंघ-रूघनाथसिंघोत ९. सांवतसिंघ १०जसवंतसिंघ ११. नवनदसिंघ १२. दुरजणसाल १३. चांदसिंघ १४. भगवतसिंघ

गांव झिलीयो	६५२।।)	०	मारोठ	तीन आने पांती
,, आसापुरो	२००)	०	,,	दो आने पांती
,, बाटलियो	४२५)	०	,,	दो आने पांती
,, हुडील	५६२।।)	०	,,	तीन आने पांती
,, परवेडी	३२६।।)	०	,,	तीन आने पांती
,, अणदपुरो	२०८।।)	०	,,	तीन आने पांतो
,, मुडगसोई	२५५)	०	,,	छः पैसे पांती
,, चारणावास	९७।।)	९०।।)	,,	तीन आने पांती
,, भीलाल	१८६)	१५९)	,,	तीन आने पांती
,, खोसी (दलेलपुरो)	१९५) पांच आने	१६३।)	,,	पांच पैसे पांती
,, सीऊ	६५०)	०	,,	पाव पांती

बंट दूजा री—

पीढियें—: सूरसिंघ सांवतसिंघोत[1] ११. ईसरीसिंघ १२. ऊदेभांण १३. बलवंतसिंघ १४. सिवसिंघ

---

१. पहली प्रांती (झिलियो ठि.) के (९) ठाकुर सांवतसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव झिलियो—	६५२॥)	०	मारोठ	तीन आने पांती
,, आसापुरो	२००)	०	,,	दो आने पाँती
,, बाटलियो	४२५)	०	,,	दो आने पांती
,, हुडील	५६२॥)	०	,,	तीन आने पांती
,, भीलाल	२२६॥)	१५६)	,,	तीन आने पांती
,, सीऊ	६५०)	०	,,	पाव ,,
,, अणद पुरो	२००॥)	२०८॥)	,,	तीन आने पांती
,, मुड गसोई	२५५)	०	,,	आधी पांती
,, चारणवास	६०॥)	६०॥)	,,	तीन आने पांती
,, खोसी (दलेल पुरो)	०	१६३।)	,,	पांच पैसे पांती
,, परवेडी	३२६।)	३२६॥)	,,	तीन आने पांती

बंट तीजा री—

पीढियें—: भवानीसिंघ-सांवतसिंघोत[1] ११. डुगरसिंघ १२. रांमप्रतापसिंघ १३. मोहनसिंघ १४. सवाईसिंघ

गांव सरगोठ—	५०००)	०	दरीवे नावा	खेडा ३
,, मुड गसोई	१४००)	१४०६)	मारोठ	आधो
,, हुडील	३५०)	०	,,	दो आने पांती
,, ढाणीया	२०००)	१५००)	,,	
,, गुगर गवाड	३०००)	२६००)	,,	
,, कुकडवाली	४७०)	०	,,	
,, अडकसर	१५५०)	१५२५)	,,	आधी पांती
,, बाटलीयो	१७५०)	१७००)	,,	आधी पांती
,, खोसी (दलेल पुरो)	८५०)	६४५)	,,	पांच आने पांती
,, विजेपुरो	१०००)	०	,,	
,, नोलासीयो	२०००)	१६७५)	,,	
,, कालोली	१२५०)	१२३८)	,,	
,, रुगनाथपुरो	६००)	६३७॥)	,,	

पीढियें—: ६. पदमसिंघ-विजेसिंघोत[2] १०. दौलतसिंघ ११. दीपसिंघ १२. माधोसिंघ

१. पहली पांती (झिलियां ठि.) के (६) ठाकुर सांवतसिंह का पुत्र।

२. ठि. झिलियो (पहला बंट) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

(कांम [आयो] झवर री राड़ में संवत् १८४६ चेत सुद ६) १३. जोरावरसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. बेरीसाल

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव कूकड़वाली—	६४०)	६४०)	मारोठ	
,, तोडरो (रूपपुरो)	३२८)	३२८)	,,	
,, रुगनाथपुरा	२६०)	२६०)	,,	
,, अड़कसर	७६२)	७६२।।)	,,	
,, तोडावास	१३००)	१३००)	,,	

पीढियें—: ६. मोहणसिंघ-विजेसिंघोत[1] १०. हींदुसिंघ ११. नवलसिंघ १२. हरनाथसिंघ १३. चतरसिंघ १४. पोपसिंघ

गांव लिचाणो—	१५००)	१४००)	मारोठ	आधो बंट
,, डुंगरपुरो	५५५)	४१२।।)	,,	आधो बट
,, खोसी (दलेल पुरो)	४३१)	३२६।)	,,	छः आने पांती
,, घोकलीयो	३५०)	३००)	,,	छः आने पांती
,, गोगोर	७६०)	६७०।)	,,	साढ़े तीन आने पांती
,, गुढो	१०००)	०	नांवा	—

बंट पेला में—

पीढियें—: ६. फतेसिंघ विजेसिंघोत[2] १०. नाहरसिंघ* ११. सुरतांणसिंघ १२. जवानसिंघ १३. सिवदांनसिंघ १४. अमांनसिंघ

गांव लीचाणो—:	१५००)	१४००)	मारोठ	आधो
,, डुंगर पुरो	४००)	४१२।।)	,,	सवा सात आने पांती
,, खोसी(दलेलपुरो	३४५)	३२६।)	,,	साढे सात आने पांती
,, घोकलीयो	३००)	३३७।।)	,,	साढे पांच आने पांती
,, गोगोर	४६०)	४०७।।)	,,	साढ़े तीन आने पांती
,, गुढो	१०००)	०	,,	नावा

बंट दूजा में—:

पीढियें—: १०. दुलेसिंघ फतेसिंघोत ११. जेतसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. भेरुसिंघ १४. भगोतसिंघ

---

* यह राजगढ में संवत् १८२३ में लड़कर काम आया ।

१ झिलियो (पहला बंट) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र ।

२. ठि. झिलियो (पहला बंट) के (८) ठाकुर विजैसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हबसपुरो—	१०००)	०	दरीबे सांभर	आधो

पीढियें—: १३. दीनसिंघ जवांनसिंघोत[1] १४. पिरथीसिंघ १५. रिड़मलसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नथावडी—	३०००)	३०००)	मेड़ता	पांती आध में

पांती आध में—

पीढियें—: ११. किसनसिंघ-नाहरसिंघोत[2] १२. वनेसिंघ १३. सोभासिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १२. प्रतापसिंघ किसनसिंघोत १३. बलवंतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जावदी नगर—	५००)	०	दरीबे नावा	पांती आधी
,, तोडरो रूपपुरो	१६५)	१६४।)	मारोठ	
,, कुकणवाल	४७०)	४७०)	,,	
,, अरडकसर	३९१)	३८१।)	,,	
,, रुगनाथपुरो	२९०)	२९०)	,,	
,, कारोली	२७५)	२७५)	,,	
,, तोडावास	६५०)	६५०)	,,	

पांती आध रो बंट (पहली)

पीढियें—: ९. बाहादरसिंघ-विजेसिंघोत[3] १०. अरजनसिंघ ११. मंगलसिंघ
१२. हणवतसिंघ १३. हीमतसिंघ १४. भेरूसिंघ १५. रांमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जावदी नगर—	१५००)	०	नावा	पांती आधी
,, तोडरो (रूपपुरो)	१६५)	१६४।)	मारोठ	,,
,, कुकणवाली	४७०)	४७०)	,,	,,
,, अरडकसर	३८०)	३८१।)	,,	,,
,, रुगनाथपुरो	२९०)	२९०)	,,	,,
,, कारोली	१३५)	१३७।।)	,,	,,
,, तोडावास	६५०)	६५०)	,,	,,

पांती दूजी आध री—

पीढियें—: १०. बक्सीराम-बहादुरसिंघोत[4] ११. कनीराम १२. शिवनाथसिंघ
१३. अमानसिंघ १४. केशुसिंघ

---

१. ठि. लिचाणा (पहला बंट) के (१२) ठाकुर जवानसिंह का पुत्र।

२. ठि. लिचाण (बंट पहला) के (१०) ठाकुर नाहरसिंह का पुत्र।

३. ठि. झिलियो (बंट पहला) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र।

४. ठि. जावदी नगर (पांत आध पहली) के (९) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
देवली—	३०००)	००)	नावा	

पीढियें—: १०. भारतसिंघ-बहादुरसिंघोत[1] ११. तेजसिंघ १२. जीवणसिंघ
१३. संकरसिंघ

गांव देवली बडी—	६०००)	६०००)	मारोठ	ग्रासामी दो रे
पांती ग्राध में रेख —	३०००)			

पीढियें—: ८. ग्रमरसिंघ-रघुनाथसिंघोत ९. रांमसिंघ १०. रायसिंघ ११. सूरसिंघ
१२. दलेलसिंघ १३. दुलेहसिंघ १४. लुणकरण १५. रिडमलसिंघ
१६. प्रतापसिंघ

पांती ग्राध में रेख— ३०००)

पीढियें—: ८. किशोरसिंघ-रघुनाथसिंघोत ९. सेरसिंघ (काम ग्रायो हिन्दोण री राड़ में
सं. १८०७ रा) १०. सवाईसिंघ ११. नाहारसिंघ १२. सिरदारसिंघ
१३. उत्तमसिंघ १४. किसनसिंघ १५ दानसिंघ १६. बलवंतसिंघ
१७. सलावतसिंघ

गांव मीठड़ी	५५००)	००)	नावा	रेख भरे नहीं
,, कासेड़ो	१०००)	००)	,,	,,
,, उलाणो	१५००)	००)	,,	,,
,, बावली खेड़ो	२५००)	००)	,,	,,
,, पलाडो	११००)	११००)	मारोठ	,,
,, बटाणो	१०००)	१०००)	,,	,,
,, गेलासर	३५००)	३०००)	परबतसर	,,
,, इन्द्रोको	२०००)	२०००)	,,	,,
,, भुभडो	३०००)	३०००)	नागोर	ग्रासामी दो रे
,, वासणी	३०००)	३०००)	,,	,,
,, खेडो लालीयो	८००)	८००)	मेड़ता	,,
,, बोकली	२५००)	२५००)	,,	,,
,, सातलास	५०००)	५०००)	,,	,,
,, सेखपुरो	१५००)	१५००)	,,	,,
,, नीबोलो	३०००)	३०००)	,,	,,

---

१. ठि जावदी नगर (पांत आध पहली) के (९) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती श्राध में—

पीढियें—: ९. सघतसिंघ-किसोरसिंघोत[1] १०. रिड़मलसिंघ ११. जवांनसिंघ
१२. बेरीसाल १३. नाथूसिंघ १४. प्रतापसिंघ

पांती श्राध में—

पीढियें—: १४. बहादरसिंघ-नाथूसिंघोत[2]

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव केराप—	५०००)	५०००)	कोलीयो	
,, वसीर सलो	२५००)	२५००)	मेड़ता	
,, सिरदारपुर	१०००)	१०००)	दोलतपुर	

पीढियें —: ११. फतेसिंघ-रिड़मलसिंघोत[3] १२. जोरावरसिंघ १३. उदयभांण

गांव खारडीयो—	२०००)	००)	नावा	श्रासामी ३ रे
,, मोहनपुरो	८००)	००)	,,	,,
पांती श्राध में— रेख	१४००)			

पीढियें—: १०. श्रगरसिंघ-सघतसिंघोत[4] ११. कनीरांम १२. विजयसिंघ

पांती चोथी में रेख— ७००)

पीढियें—: १०. नाहरसिंघ-सघतसिंघोत[5] ११. मोहबतसिंघ

पांती चोथी रेख में— ७००)

पीढियें—: ९. वनेसिंघ-किसोरसिंघोत[6] १०. श्रभयसिघ ११. दानसिंघ
१२. लिखमणसिंघ

गांव कुचामण—	५०००)	०	नावा	नादकार है
,, पालोडो	११००)	१०५०)	मारोठ	
,, पालडी	१४५०)	१४५०)	,,	
,, भगवानपुरो	६०००)	२०००)	,,	
,, मोलासर	६०००)	३०००)	दौलनपुरा	

---

१. ठि देवली बड़ी दूसरी पांती, के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।
२. ठि. मीठड़ी की पहली पांतो के (१३) ठाकुर नाथुसिंह का पुत्र ।
३. ,, ,, ,, ,, (१०) ,, रिड़मलसिंह का पुत्र ।
४. ,, ,, ,, ,, (९) ,, सघतसिंह का पुत्र ।
५. ,, ,, ,, ,, (९) ,, ,, ,, ।
६. ठि. देवली बड़ी (दूसरी पांती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, गांगवो	१००००)	७०००)	परबतसर	
,, जुसरी	४०००)	४०००)	,,	
,, भवाल	७५००)	३०००)	मेड़ता	
,, मोडी	५०००)	३०००)	,,	
,, खेड़ी दुजी	१०००)	५००)	,,	
,, सीतावट	४०००)	२०००)	,,	
,, डेगाणो	६२५०)	६२५०)	,,	
,, खेडी सीलग	२०००)	२०००)	,,	
,, ग्रोटीयाणो	३०००)	१५००)	,,	
,, खेड्रली	३०००)	३०००)	,,	
,, रीड़	६०००)	३०००)	,,	
	———	———		
कुल रेख—	५०००)	०	दरीवे नावा	
	८५५०)	४५००)	परगना मारोठ रा गांव	
	६०००)	३०००)	परगना दौलतपुरो रा गांव	
	१४०००)	११०००)	परगना परबतसर रा गांव	
	३७७५०)	२४२५०)	परगना मेड़ता रा गाव	
	———	———		
	७१३००)	४२७५०)		

पीढियें—: ९ जालमसिंघ§ किसोरसिंघोत[1] १०. सभासिंघ* ११. सुरजमल†
१२. सिवनाथसिंघ १३. रणजीतसिंघ १४. केसरीसिंघ

गांव चोलुखों—	३०००)	३०००)	दोलतपुरा
,, ग्रासावरी	१०००)	१०००)	नागोर सवा पांच ग्राने पांती

पीढियें—: १५. माधोसिंघ-केसरीसिंघोत[2] १६. सवलसिंघ

गांव बुखवास—	१०००)	१०००)	कोलिया

पीढियें—: १५. देवीसिंघ-केसरीसिंघोत[3]

§ जालमसिंह लुढावास नामक स्थान पर संवत् १८०७ में आसोज सुद ९ को युद्ध में काम आया इनके वंशज जालिमसिंघोत कहलाते हैं।

* सभासिंह मरहठा माधोराय से १८४४ श्रावण में युद्ध हुआ उसमें मारा गया।

† यह झंवर में संवत् १८४९ में चैत्र ६ को काम आया।

१. ठिकाना देवली बडी (दूसरी पांती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।

२. ठि. कुचामन के (१४) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।

३. ,, ,, (१४) ,, ,, ,, ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव ग्रासावरी—	१० ०)	१०००)	नागोर सवा पांच ग्राने पांती	

पीढियें—: १४. केसरीसिंघ-रणजीतसिंघोत[1] १५. वनेसिंघ

गाँव ग्रासावरी—	१०००)	१०००)	नागोर साढे पांच ग्राने पांती	

पीढियें—: १३. बलदेवसिंघ-सिवनाथसिंघोत[2] १४. बाहादरसिंघ १५. जसवंतसिंघ

गाँव फोगडी—	४०००)	२५००)	दौलतपुरा

पीढियें—: १२. ग्रमांनसिंघ-सुरजसिंघोत[3] १३. संपतसिंघ

गाँव लादडीयो—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा

पीढियें—; १३. सवाईसिंघ-ग्रमानसिंघोत[4]

गाँव पलाडो—	११००)	११००)	मारोठ

पीढियें—: १२. हरनाथसिंघ-सुरजमलोत[5] १३. सगतीदांन १४. दुरजणसाल

गाँव नीबी—	१५००)	१०००)	दौलतपुरा
,, डीगाल	१५००)	१५००)	,,
,, चुगनी	२०००)	२०००)	,,
,, साहवास	१०००)	१०००)	,,
,, खुडी	२०००)	२०००)	,,
,, पाथी	३०००)	३०००)	नागौर

पीढियें—: १२. लिछमणसिंघ-सुरजमलोत[6] १३. विडदसिंघ १४. सांवतसिंघ
१५. मेगसिंघ

गाँव ग्रलतवो	६२५०)	६२५०)	मेड़तो
,, पालड़ी	८३००)	८३००)	,,

पीढियें—: ११. जवानसिंघ†सभासिंघोत[7] १२. हणवतसिंघ १३. रामनाथसिंघ
१४. बखतावरसिंघ १५. सिवसिंघ

---

† सिंधिया माधोराय से संवत् १८४७ में मेड़ते में युद्ध हुआ वहां काम ग्राया ।

१. ठि. कुचामन के (१३) ठाकुर रणजीतसिंह का पुत्र ।
२. ,, ,, (१२) ,, सिवनाथसिंह का पुत्र ।
३. ,, ,, (११) ,, सुरजमल का पुत्र ।
४. ,, फोगड़ी के (१२) ,, अमानसिंह का पुत्र ।
५. ,, कुचामन के (११) ,, सुरजमल का पुत्र ।
६. ठि. कुचामन के (११) ठाकुर सुरजमल का पुत्र ।
७. ,, ,, ,, (१०) ,, सभासिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डोडीयांणो	८०००)	८०००)	मेड़तो	
,, लाडपुरो	६२५०)	६२५०)	,,	
,, धांमाणीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, मुंदीयाड	३०००)	३०००)	,,	
,, जसवंतपुरो	३०००)	३०००)	,	
,, मुडीयो	२५०)	२५०)	,,	
	२१५००)	२१५००)		
गाँव पीपलाद—	२५००)	२५००)	परवतसर	
,, नीवोलो	५०००)	५०००)	,,	
,, सांमपुरो	२५००)	२५००)	,,	
,, छीतरोली	५००)	५००)	,,	
	१०५००)	१०५००)		
कुल रेख—	३२०००)	३२०००)		

पीढियें—: १०. पाहाड़सिंघ-जालमसिंघोत[1] ११. रतनसिंघ १२. सादुलसिंघ १३. विसनसिंघ

गाँव कोडीयो—	१०००)	१०००)	मेड़ता	खवासवाल

पीढियें —: १४. रांमसिंघ-विसनसिंघोत[2] खवास रो

गाँव लापोलाई—	७५००)	७५००)	मेड़ता
,, मीडकीयो	२५००)	२५००)	परवतसर
,, पीडवो	३०००)	३०००)	,,

पीढियें —: ११. करणसिंघ-पहाड़सिंघोत[3] १२. अमरसिंघ १३. चतरसिंघ १४. नाथूसिंघ

गाँव रोहीसडो—	६२५)	६२५)	मेड़तो

---

१. ठि. कुचामन के (९) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र ।
२. ठि. पीपलाद के (१३) ठाकुर विसनसिंह का पुत्र ।
३. ठि. ,, ,, (१०) ठाकुर पहाड़सिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ११. गोकलदास-पाहाड़सिंघोत[1] १२. जसवंतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव भदलियो—	४०००)	३०००)	दौलतपुरो	
,, सारसंडो	३०००)	३०००)	मेड़ता	
,, मीडकीयो	२०००)	२०००)	परबतसर	
,, जवालियो	४०००)	४०००)	गोढवाड	
	——	——		
	१३०००)	१२०००)		

पीढियें—: १०. सरूपसिंघ-जालमसिंघोत[2] ११. जोरावरसिंघ १२. वीरतसिंघ
१३. बेरीसाल

गाँव जावो सीसोदीयो—	३२००)	३२००)	मेड़ता	

पीढियें—: ११. फतेसिंघ-सरूपसिंघोत[3] १२. मंगलसिंघ १३. मेघसिंघ
१४. सवाईसिंघ

गांव धणकोली—	७०००)	७०००)	दौलतपुरा	

पीढियें—: १०. सुरतांणसिंघ-जालमसिंघोत[4] ११. मालमसिंघ १२. सिवदांनसिंघ
१३. हुकमसिंघ १४. पिरथीसिंघ १५. सगतीदांत १६. पाबुदांन

गाँव सुदरासण—	६०००)	६०००)	दौलतपुरा	

पीढियें—: १०. वंनसिंघ-जालमसिंघोत[5] ११. सालमसिंघ १२. जीवणसिंघ
१३. बखतावरसिंघ

गाँव श्राछोजाई—	३०००)	३०००)	मेड़ता	
,, गीनरडो	४०००)	४०००)	,,	
,, सिरदारपुरो	२०००)	२०००)	,,	

पीढियें—: १०. दलसिंघ-जालमसिंघोत[6] ११. सिरदारसिंघ १२. लखधीरसिंघ
१३. केसरीसिंघ

---

१. ठि. पीपलाद के (१०) ठाकुर पहाड़सिंह का पुत्र।
२. ठि. कुचामन के (६) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।
३. ठि. भदलियो के (१०) ठाकुर सरूपसिंह का पुत्र।
४. ठि. कुचामन के (६) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।
५. ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,,।
६. ठि. ,, ,, (६) ,, ,, ,,।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती अेक—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव लूणवो—	२६६०)	२६६०)	मारोठ	आसांमी ५ रे ।– पांती
,, पीपराली	१७६७)	१७६६)	,,	॥ = ॥ पांती
,, सुरतपुरो	७५०)	११२५)	,,	
,, आभावास	२०००)	२१५०)	,,	
,, कांठीयो	१३५०)	१३५०)	,,	
,, ठीकरीयो	१०८०)	१०८०)	,,	॥)॥। पांती
,, नांनणो	१४५०)	१४५०)	,,	
,, रावां	१५००)	१५००)	,,	

पांती अेक—

पीढियें—: ६. सेरसिंघ-किसोरसिंवोत[1] १०. सुरतसिंघ ११. भारथसिंघ १२. मिलापसिंघ १३. देवीसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. जोरावरसिंघ १६. बखतावरसिंघ

पांती दूजी—

गाँव लुणवो—	२१३४)	११२१)	मारोठ
,, चाँवडीयो	१०००)	५००)	,,
,, घडवांणो	६००)	६००)	,,
,, नगवाडो	१०००)	१०००)	,,
,, पीपराली	१७६५)	१७६६)	,,
,, ठीकरियो	४८०)	४८०)	,,
,, सवाईपुरो	६७२)	६७२)	,,
,, गोगोर	८००)	८००)	,,

पीढियें—: १०. सवाईसिंघ-सेरसिंघोत[2] ११. गजसिंघ १२. रिदसिंघ १३. संकरदांन १४. सुरजभांण

पांती तीजी—

गाँव लुणवो—	६००)	६००)	मारोठ	= पांती
,, सुरतपुरो	३७५)	१८७॥)	,,	।)॥। ,,

---

१. ठि. देवली बड़ी (दूसरी पांती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।

२. ठि. लूणवो की (पहली पांती) के (६) ठाकुर सेरसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पीपराली	११७६)	११७६)	मारोठ	पाव पांती
, लोहराणो	१४१०)	१४१०)	,,	॥=॥। पांती
,, पोदी	२०००)	०)	सांभर	॥) ,,

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-सेरसिंघोत[1] ११. सुजांणसिंघ १२. भेरूसिंघ १३. दोलतसिंघ १४. समरथसिंघ १५. किसनसिंघ

पांती चौथी—

गाँव लुणवो—	५६४)	५६७)	मारोठ	छः पैसे पांती
,, सुरतपुरो	३७५)	१८७॥)	,,	॥)॥) ,,
,, पीपराली	५६०)	५६०)	,,	☰) ,,
,, लोहराणो	६४०)	६४०)	,,	।-)। ,,

पीढियें—: ११. सोभागसिंघ-सिरदारसिंघोत[2] १२. जगरांमसिंघ १३. किलयांणसिंघ १४. पदमसिंघ १५. प्रभूदांन १६ सिवनाथसिंघ

पांती पांचवी—

गाँव लुणवो—	११२१)	११२१)	मारोठ	पाव पांती
,, ठीकरियो	२४०)	२४०)	,,	=॥ पांती
,, सवाईपुरो	७५०)	६७५)	,,	पाव पांती
,, धणवाली	६००)	६००)	,,	आधी पांती
,, गोगोर	८०८)	८०८)	,,	,, ,,
,, चांवडीयो	५००)	५००)	,,	
,, नगवाडो	१०००)	१०००)	,,	आधी ,
गाँव कुणी—	३०००)	०)	दरीबे नांवा	पाव पांती
,, मिसरीपुरो	३०००)	०)	,,	,,
,, वेरी बडी	५०००)	५०००)	दौलतपुरा	,,
,, मोडीयाव	४०००)	४०००)	,,	,,
,, खाखलो	५०००)	५०००)	,,	,,
,, वेरी खुर्द	२०००)	२०००)	,,	,,
,, पावली	२०००)	२०००)	,,	,,

---

१. ठि. लूणवो (पहली पांती) के (६) ठाकुर सेरसिंह का पुत्र।

२. ठि. ,, ,, (तीसरी पांती) के (१०) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विगत पटा रा गाँवां री परगना वार आसांमी ५ री—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
	३१०८७)	३१०८७)	परगना मारोठ रा गांव	
	०	०	दरीबे सांभर रा गांव	
	६०००)	०	दरीबे नांवा रा गांव	
	१८०००)	१८०००)	अगना दोलतपुरा रा गांव	
	५५०८७)	४९०८७) कुल		
गाँव बावडी—	४०००)	४०००)	दौलतपुरो	

पीढियें—: ९. सेरसिंघ-किसोरसिंघोत[1] १०. जगतसिंघ ११. सगतसिंघ १२. दलेलसिंघ १३. जसवंतसिंघ १४. जोरावरसिंघ १५. हमीरसिंघ

गाँव मांडल देवां—	३१५०)	१०००)	मेड़तो	

पीढियें—: ११ संतोखसिंघ-जगतसिंघोत[2] १२. सोभासिंघ १३. मोवतसिंघ १४ अजीतसिंघ

गाँव पांचोतो—	२४००)	२४००)	मारोठ	।= पांती
,, राणासर	३७५०)	३७५०)	,,	
,, नालोट	२४००)	२४००)	,,	
,, पनवाडी	९७५)	९७५)	,,	
,, मडावरो	१५५०)	१५५८)	,,	॥≡॥ पांती
,, सीरोई	२६५०)	२६५०)	,,	२ आसांमी
,, सिंभूपुरो	१७००)	१७००)	,,	
,, खोरंडी	९५०)	९५०)	,,	आधो
,, खोरडो	११३०)	०	,,	,,
,, काखडकी	६०००)	०	दरीबे नांवा	,,

पांती अेक में— (मारोठ रा पांच मेहलां में)

पीढियें—: ८. हठीसिंघ-रुगनाथसिंघोत ९. सिंभुसिंघ १०. देवीसिंघ ११. बाघसिंघ १२. बिसनसिंघ १३. स्यांमसिंघ १४. फतेसिंघ १५. पनेसिंघ

गाँव पांचोतो—	२१५०)	१८००)	मारोठ	॥= पांती

---

१. ठि. देवली बड़ी (दूसरी पांती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।

२. ठि. बावड़ी के (१०) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, जींजोट	१९७५)	१९७५)	मारोठ	
,, खोरंडी	९५०)	९५०)	,,	आधी पाँती
,, रसाल	४०००)	४०००)	,,	
,, मडावरो	११५०)	११४२)	,,	–।)॥ पांती
,, खोरंडो	११६०)	११४२)		
,, कवरांसो	१५००)	०)	दरीबे सांभर	
,, रसुलपुरो		०)	,,	
,, रिणगीयो	५००)	०)	,,	

पांती दूजी रा—

पीढियें—: ९. सिवसिंघ-हठीसिंघोत[1] १०. भावसिंघ ११. कायमसिंघ १२. मंगलसिंघ १३. प्रतापसिंघ

गाँव चूदियां—	४०००)	२५००)	मेड़ता

पीढियें—: १०. भोपालसिंघ-सिवसिंघोत[2] ११. बुदसिंघ १२. मंगलसिंघ* १३. अखेसिंघ १४. माधोसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव पांचवां— (खेडा ४ सु)	८०००)	०	मारोठ
,, करकेडी	२५००)	०	,,
,, देवलीखुर्द	२१००)	०	,,
,, वापडी	२२५०)	०	,,
,, सबलपुरो	८००)	०	,,
,, मंगलपुरो	८००)	०	,,
,, कोटडो	९००)	०	,,
,, राजलीयो	११२५)	०	,,
,, दांनपुरो	११२५)	०	,,
,, ठीकरीयो	१२७५)	०	,,
,, अखेपुरो	१२७५)	०	,,
,, काकोट	९००)	०	,,
,, पेमपुरो	९००)	०	,,
,, रूणीजो	२०५०)	२०५०)	परबतसर

---

* काम आया गनीमों की राड़ में सं. १८११ में

१. ठि. पांचोतो (पहली पांती) के (८) ठाकुर हठीसिंह का पुत्र ।

२. ,, ,, ,, (दूसरी पांती) ,, (९) ,, सिवसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ८. अणदसिंघ-रुगनाथसिंघोत ९. पेमसिंघ १०. राजसिंघ ११. सुजांणसिंघ १२. भेरूसिंघ १३. भारथसिंघ १४. मोवणसिंघ १५. सिवदांनसिंघ १६. अगरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नीबोद—	६०००)	६०००)	दोलतपुरा	
,, खारीयो	३०००)	०	दरीबे नांवा	
,, सीरसी	—	—	मारोठ	
,, गोपदी	—	—	,,	

पीढियें—: ९. मांनसिंघ-अणदसिंघोत[1] १०. दीपसिंघ ११. जूंझारसिंघ १२. मालमसिंघ १३. देवीसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. रांमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव भयो-वडो—	५०००)	५०००)	मेड़तो	

पीढियें—: ६. जगनाथ-गोयंददासोत[2] ७. पिरागदास ८. भावसिंघ ९. गोपीनाथ १०. सिवसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. हरदांनसिंघ १३. संकरदांन १४. समदरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव गेडी—	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, खेडो अखेराज	१०००)	१०००)	,,	
,, हिगवाणीयो	५००)	५००)	,,	

पीढियें—: ११. लखधीरसिंघ-सिवसिंघोत[3] १२. रतनसिंघ १३. सुखसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. हणवतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सरनावडो—	६०००)	०	नागोर	
,, भयो	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, नावद	२०००)	२०००)	परवतसर	
,, वडावरो	२५००)	२५००)	,,	
,, हरसांणी	१५००)	१०००)	,,	
,, गोठडां	२०००)	२०००)	,,	

पीढियें—: १२. सालमसिंघ-लखधीरसिंघोत[4] १३. फतेसिंघ १४. सरूपसिंघ १५. देवीसिंघ

---

१. ठि. पांचवा के (८) ठा. अणंदसिंह का पुत्र।
२. इसके वंशज गोयंददासोत कहलाते हैं।
३. ठि. भयो वडो के (१०) ठाकुर सिवसिंह का पुत्र।
४. ठि. गेडी के (१०) ठाकुर लखधीरसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डोभड़ी मंडां—	४००)	४००)	मेड़ता	
,, सांवलदास	७००)	७००)	,,	

पीढियें—: १०. सायबसिंघ-गोपीनाथोत[1] ११. चांदसिंघ १२. कनीरांम १३. दानसिंघ १४. विड़दसिंघ १५. दीपसिंघ

गाँव ईटावो बिरामणां रो—	६२५)	६२५)	मेड़ता	आधी पांती
,, पडवालो	१५००)	१५००)	,,	

पांती अेक रो—

पीढियें—: ९. जसकरण-भार्वासघोत[2] १०. अणदसिंघ ११. जोदसिंघ १२. बुधसिंघ १३. सुमेरसिंघ १४. फतेसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. सुरतांणसिंघ

पांती दूजी रा—

गाँव ईटावो बिरामणां—	६२५)	६२५)	मेड़ता	आधी पांती

पीढियें—: १३. पाहाडसिंघ-सुमेरसिंघोत १४. रामनाथ

गाँव ईटावो लाखो—	३०००)	३०००)	मेड़ता	आसांमी २ रे

पांती पेली आध में—

पीढियें—: ११. भारथसिंघ-अणंदसिंघोत[3] १२. पाहाड़सिंघ १३. सलेसिंघ १४. बखतावरसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: १३. सूरसिंघ-पाहाड़सिंघ[4] १४. नाथूसिंघ १५. संपतसिंघ

गाँव ईटावो खोचियां—	१०००)	१०००)	मेड़ना	आसांमी २ रे

पांती पेली आध में—

पीढियें—: १०. दोलतसिंघ-जसकरणोत[5] ११ कांनकसिंघ १२. तेजसिंघ १३. कनीरांम १४. ईसरीसिंघ

पांती दूजी आध में—

---

१. ठि. भयो वडो के (६) ठाकुर गोपीनाथ का पुत्र।

२. ,, ,, ,, ,, (८) ,, भार्वासह का पुत्र।

३. ठि. ईंटावो (बिरामणां) के (१०) ठाकुर अणंदसिह का पुत्र।

४. ठि. ईंटावो (लाखो) की पहली पांती के (१२) ठाकुर पहाड़सिंह का पुत्र।

५. ठि. ईटावो बिरांमणां (पांती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ७. रांमसिंघ-जगनाथोत[1] ८. रूपसिंघ ९. दोलतसिंघ १०. कनकसिंघ
११. धीरतसिंघ १२. भारथसिंघ १३. रुगनाथसिंघ १४. भींवसिंघ
१५. सूरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव जसवंतपुरो	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: १०. सुजांणसिंघ-जसकरणोत[2] ११. केसरीसिंघ १२. समरथसिंघ
१३. रांमसिंघ १४. लिछमणसिंघ १५. लालसिंघ

गांव दमोई वड़ी—	१५००)	१५००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. कुंभकरण-भारथसिंघोत १०. आईदांन ११. किलांणसिंघ १२. मालमसिंघ
१३. वखतावरसिंघ १४. हमीरसिंघ

गांव दमोई खुरद—	१०००)	१०००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. विजेसिंघ-भावसिंघोत[3] १०. पेमसिंघ ११. जोधसिंघ १२. समांनसिंघ

गांव पालड़ी राजां	५००)	०	मेड़ता
,, भूतावो	१४००)	०	,,

पीढियें—: ९. खींवकरण-भावसिंघोत[4] १०. केसरीसिंघ ११. भोपालसिंघ १२. सुरजमल
१३. मंगलसिंघ

गांव डोभड़ी खुरद—	१०००)	५००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. भगवतसिंघ-भावसिंघोत[5] १०. सिभूसिंघ ११. सांवतसिंघ
१२. मोतीसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४. रुगनाथसिंघ

गांव रामसीयो—	२५००)	२५००)	परवतसर

पीढियें—: ९. छतरसाल-भावसिंघोत[6] १०. जोधसिंघ ११. ईंदरसिंघ १२. पिरथीसिंघ
१३. रांमसिंघ १४. रिडमलसिंघ १५. सूरजमल १६. चतरसिंघ
१७. सुरतांणसिंघ

गांव खूडी—	१०००)	१०००)	नागोर

---

१. ठि. भयो वडो के (६) ठाकुर जगन्नाथसिंह का पुत्र ।
२. ठि. ईटावो विरांमणां (पांती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।
३. ठि. भयो वडो के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र ।
४. ,, ,, (८) ,, ,, ,, ।
५. ठि. भयो वडो के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र ।
६. ,, ,, ,, (८) ,, ,, ,, ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ८. गोरधनदास-प्रागदासोत[1] ९. जगतसिंघ १०. जोगीदास. ११. दांनसिंघ १२. सभासिंघ १३. लिछमणसिंघ १४. ईंदरसिंघ १५. मंगलसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव रांणीगाँव—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ११. गुमानसिंघ-जोगीदासोत[2] १२. दुलेसिंघ १३. बाघसिंघ १४. मोहवतसिंघ

गाँव भवाद—	२५००)	२५००)	परबतसर	

पीढियें—: ७. किसोरदास-जगनांथोत ८. रायसिंघ ९. हींदुसिंघ १०. किलांणसिंघ ११. दानसिंघ १२. हरीसिंघ १३. गोपालसिंघ

गांव नोरंगपुरो—	२०००)	२०००)	डीडवाणो	आसांमी २ रे

पांती पेली आध में—

पीढियें—: ६. नाथो-गोयंददासोत ७. विदरावनदास-नाथावत ८. राजसिंघ ९. सेखराज १०. अजबसिंघ ११. मोहणसिंघ १२. बुधसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. भूरसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: ९. अमरसिंघ-राजसिंघोत[3] १०. हरीसिंघ ११. सवाईसिंघ १२. भारथसिंघ १३. किसनसिंघ १४. अनाड़सिंघ १५. विजेसिंघ

गांव बेहड़वो—	४०००)	४०००)	दौलतपुरो	

पीढियें—: ७. फतेसिंघ-नाथावत ८. हिमतसिंघ ९. सीसरांम १०. सीवसिंघ ११. भोमसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. सलेसिंघ

गांव झाड़ोद—	१५००)	७५०)	दौलतपुरो	कुचांमण री भायप

पीढियें—: १०. सरूपसिंघ-जालमसिंघोत[4] ११. किलांणसिंघ १२ स्यांमसिंघ १३ जसवंतसिंघ

खांप माधोदासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. बीरमदेव-दुदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. माधोदास, तिण रा वंस रा माधोदासोत मेड़तीया कहीजै ।

---

१. ठि. भयो वडो के (७) ठाकुर प्रागदास का पुत्र ।

२. ठि. खुड़ी के (१०) ठाकुर जोगीदास का पुत्र ।

३. ठि. नोरंगपुर (पहली पांती) के (८) ठाकुर राजसिंह का पुत्र ।

४. ठि. कुचामन के (९) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

माधोदासोत मेडतीयां रा ठिकांणां री विगत—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रीयां खास—	११२५१)	११२५१)	मेड़ता	
,, अरनीयालो	६०००)	६०००)	,,	
,, ऊपादीयावास	५००)	५००)	,,	
,, वहडवास	१८७५)	१७७५)	,,	
,, अखावास	२७२७)	२७२७)	,,	
,, जडाऊखेडा २	६२५०)	६२५०)	,,	
,, सीरासणो	४५००)	४५००)	,,	
कुल रेख	३६१०३)	३६१०३)		

पीढियें—: ६. सुंदरदास-माधोदासोत ७. गोपालदास ८. प्रतापसिंघ ९. अचलसिंघ १०. कुसलसिंघ ११. सीरदारसिंघ १२. सुरजमल † १३. जवानसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. वीड़दसिंघ १६. सीवनाथसिंघ १७. देवीसिंघ १८. गंभीरसिंघ १९. विजेसिंघ

गाँव मेडास—	५०००)	५०००)	मेड़तो	

पीढियें—: १६. स्यांमसिंघ-विडदसिंघोत[१] १७. लिछमणसिंघ

गांव वीजाथल—	४०००)	४०००)	मेड़ता	
,, भेसड़ो खुरद	४०००)	४०००)	,,	
;; कालीयाठडो	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	१००००)	१००००)		

पीढियें—: १४. ईदरसिंघ-जवांनसिंघोत[२] १५. समरथसिंघ १६. सूरसिंघ

गाँव चीखरणीयो-वडो—	७५००)	७५००)	मेड़ता	
;; चीखरणीयो-खुर्द	३२५०)	३२५०)	,,	
कुल रेख	१०७५०)	१०७५०)		

† सुरजमल महाराजा बखतसिंघ व रामसिंह के बीच मेड़ता में संवत् १८०७ में मिगसर सुद ९ को युद्ध हुआ उसमें काम आया।

१. ठि. रींयांखास के (१५) ठाकुर विड़दसिंह का पुत्र।

२. ठि. रींयांखास के (१३) ठाकुर जवांनसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: १३. मालमसिंघ-सुरजमलोत[1] १४. जेतसिंघ १५. सिवदानसिंघ
१६. सुरतांणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चांदा रुण	२५००)	२५००)	मेड़ता	
,, मेहरासी	२८००)	२८००)	,,	
,, मांणकीयावास	३०००)	३०००)	,,	
,, काटीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, घोलीयो	३००)	३००)	,,	
कुल रेख	९८५०)	९८५०)		

पीढियें —: ११. सुरतांणसिंघ-कुसलसिंघोत[2] १२. कनीरांम † १३. सीवसिंघ
१४. विसनसिंघ १५. रणजीतसिंघ १६ देवीसिंघ १७. रांमसिंघ

गाँव ईडवो—	८७७५)	८७७५)	मेड़ता	

पीढियें—; १०. जूंजारसिंघ-अचलसिंघोत[3] ११. बनेसिंघ १२. सगरांमसिंघ
१३. नरसिंघदास* १४. हणवंतसिंघ-खोळे १५. हरीसिंघ १६. बखसीरांम
१७. रामनाथसिंघ

गांव धोलेराव बडो—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढियें -: १२. फकीरदास-बनेसिंघोत[4] १३. जैसिंघ १४. मोहबतसिंघ

गांव पोलास गाडेतीयां—	१०००)	१०००)	मेड़ता	

पीढियें —: १३. वाघसिंघ-फकीरदासोत[5] १४. धीरतसिंघ

गांव आलणीयावास—	११२२५)	११२२५)	मेड़ता	
,, नाथु री वासणी	१०००)	१०००)	,,	
,, कीलांणी वासणी	६२५)	६२५)	,,	

---

† कनीराम मरहठों के साथ हुए मेड़ता के युद्ध में संवत् १८४७ में काम आया।
* कांम आयो संवत् १८४७ भादवा सुद २ मेड़ते दिखणीयां री फोज सु झगड़ो हुवो तरे।
१. ठि. रीयां खास के (१२) ठाकुर सुरजमल का पुत्र।
२. ,, ,, ,, (१०) ,, कुसलसिंह का पुत्र।
३. ठि. रीयां खास के (९) ठाकुर अचलसिंह का पुत्र।
४. ठि. ईडवो के (११) ठाकुर बनेसिंह का पुत्र।
५. ठि. धोलेराव बडो के (१२) ठाकुर फकीरदास का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पीपलीयो	७५०)	७५०)	मेड़ता	
कुल रेख	१३६००)	१३६००)		

पीढियें—: ६. राजसिंघ † प्रतापसिंघोत[1] १०. किलाँणसिंघ ११ रामसिंघ
१२. लखधीरसिंघ १३. फकीरसिंघ १४. भारथसिंघ १५. हृणवंतसिंघ
१६. अजीतसिंघ १७. ऊदेसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बालोली जाटां—	६२५०)	६२५०)	मेड़ता	
,, बीजारूण	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	८२५०)	८२५०)		

पीढियें—: ६. गोकलदास-प्रतापसिंघोत[2] १०. हींदुसिंघ ११. जोधसिंघ
१२. नीरभेरांम १३. मोहवतसिंघ १४. दोलतसिंघ १५. बभूतसिंघ§
१६. दुरजणसिंघ १७. भवानीसिंघ १८. सगतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नैणीयो—	२५००)	२५००)	परवतसर	

पीढियें—: १०. हठीसिंघ-गोकलदासोत[3] ११. दीपसिंघ १२. बछराज १३. मालमसिंघ
१४. लखधीरसिंघ १५. खुमांणसिंघ १६. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गोठड़ो—	५२५०)	५२५०)	मेड़ता	

पीढियें—: ६. रांमचंदर-प्रतापसिंघोत[4] १०. जसवंतसिंघ ११. चांदसिंघ १२. दांनसिंघ
१३. फतेसिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. मनरूपसिंघ १६. वीजेसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चांनणो वड़ी—	३७५)	३७५)	मेड़ता	
,, चांनणी खुरद	३७५)	३७५)	,,	

पीढियें—: ६. रूपसिंघ-प्रतापसिंघोत[5] १०. ईसरीसिंघ ११. दोलतसिंघ १२. चंदरभांण

---

† संवत् १७६२ भादवा सुद ११ को यह तेवर के नवाब से युद्ध कर पुष्कर में काम आया।
§ बुंदी श्री बाईजी साथे बंदगी में थो सु ऊठे झगड़ो हुवो तरे कांम आयो संवत् १८८६ में।

१. ठि. रीयां खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।
२. ठि. रीयां खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।
३. ठि. बालोली जाटां के (६) ठाकुर गोकुलदास पुत्र।
४. ठि. रीयां खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।
५. ,, ,, (८) ,, ,, ,, ,,

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१३. भारथसिंघ १४. निरभेसिंघ १५. अरजणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सुरियास—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ८. भाखरसिंघ-गोपालदासोत[1] ९. भोजराज १०. जगरांमसिंघ ११. डूंगरसिंघ १२. नवलसिंघ १३. हणवंतसिंघ १४. बलवंतसिंघ

गांव भेसड़ो वडो—	३५००)	३५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ८ भीवसिंघ-गोपालदासोत[2] ९. अणदसिंघ १०. भगवानसिंघ ११. रिणछोड़दास १२. वनेसिंघ १३. समरथसिंघ १४. सरुपसिंघ १५. रामनाथसिंघ

गांव कीतलसर—	३२००)	३२००)	मेड़ता	

पीढियें—: ७. सगतसिंघ-सुंदरदासोत[3] ८. हीमतसिंघ ९. प्रीथीराज १०. मांनसिंघ ११. नवलसिंघ १२. जुंजारसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४. हीरदेरांम १५. भवानीसिंघ १६. मंगलसिंघ

गांव कीरड—	१८७५)	१८७५)	मेड़ता	
„ पालडी सेस	६५०)	६२५)	„	
कुल रेख	२५२५)	२५२५)		

पीढियें— : ९. रतनसिंघ-हीमतसिंघोत[4] १०. अरजनसिंघ ११. सगरांमसिंघ १२. मदनसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. गजसिंघ १५. मंगलसिंघ

गांव भाडली—	१३५०)	६२५)	मेड़तो	

पीढियें—: १०. पदमसिंघ-रतनसिंघोत[5] ११. अमरसिंघ १२. बाहादरसिंघ १३. किलाणसिंघ १४. कनीरांम १५. हिंदुसिंघ १६. अवेसिंघ १७. ईंदरसिंघ १८. डुंगरसिंघ १९. दुरजनसिंघ २०. चिमनसिंघ २१. रांमनाथसिंघ

गांव कवाल—	२०००)	१०००)	सि. नागोर	

---

१. ठि. रीयां खास के (७) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।
२. ठि. „ (७) „ „ „।
३. „ „ (६) सुंदरदास का पुत्र।
४. ठि. कीतलसर के (८) ठाकुर हिमतसिंह का पुत्र।
५. ठि. कीरड के (९) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ११. दांनसिंघ-पदमसिंघोत[1]　१२. कनकसिंघ　१३. सोभासिंघ
१४. चुतरसिंघ १५. ऊदेसिंघ १६. माधोसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बुताटी—	४०००)	४०००)	सि. नागोर	

पीढियें—: ११. अमरसिंघ-पदमसिंघोत[2]　१२. बाहादरसिंघ　१३. बगसीरांम
१४. अनाडसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाँव चुई—	३०००)	३०००)	सि. नागोर	

पीढियें—: ११. सुंदरसिंघ-पदमसिंघोत[3]　१२. रूघनाथसिंघ　१३. करणसिंघ
१४. अमांनसिंघ

गाँव डोभड़ी—	२५००)	२५००)	प्र. मेड़तो	

पीढियें—: ८. माहासिंघ-सगतसिंघोत[4]　९. जगरांमसिंघ　१०. बुधसिंघ
११. जालमसिंघ　१२. जगरूपसिंघ　१३. भेरूसिंघ　१४. रांमनाथ
१५. चांदसिंघ

गाँव वरसणु—	२०००)	२०००)	स. नागोर	आसांमी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ७. सवलसिंघ-सुंदरदासोत[5]　८. जुंजारसिंघ　९. विसनसिंघ　१०. सींभुसिंघ
११. पेमसिंघ　१२. भवांनीसिंघ　१३. पाहाड़सिंघ　१४. नाहरसिंघ
१५. मुकनसिंघ　१६. लिछमणसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: १४. करणसिंघ-पाहाड़सिंघोत[6]　१५. अनाड़सिंघ

गाँव लंगोड—	२०००)	१९००)	मेड़तो	

पीढियें—: ६. मोहवणदास-माधोदासोत　७ दलपतसिंघ　८. मनसिंघ ९. पीरथीसिंघ
१०. हरीसिंघ ११. सांवतसिंघ १२. सालमसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. जैतसिंघ

खांप-सुरतांणोत-मेड़तीया—

---

† कांम आयो १८२४ में नागोर री फोज में जट-वाड़ा कांनी ।
१. ठि. भडाला के (१०) ठाकुर पदमसिंह का पुत्र ।
२. ,, ,, (१०) ,, ,, ,, ।
३. ,, ,, (१०) ,, ,, ।
४. ठि. कीतलसर के (७) ठाकुर सगतसिंह का पुत्र ।
५. ठि. रीयां खास के (६) ठाकुर सुंदरदास का पुत्र ।
६. ठि. वरसणु (की पहली पांती) के (१३) ठाकुर पहाड़सिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. सुरतांणसिंघ, तिण रा वंस रा सुरतांणोत कहीजै ।

सुरतांणोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव गुलर—	७०००)	७०००)	परबतसर	
,, नीवडी	१५००)	१५००)	,,	
,, कुराडो	६०००)	६०००)	,,	
,, साचोर	१५००)	१५००)	,,	
,, अरठ	१०००)	१०००)	,,	
	१७०००)	१७०००)		
गाँव ललांणो-वडो—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	
,, बीठवाल	५०००)	५०००)	,,	
	६२५०)	६२५०)	,,	
कुल रेख	२३२५०)	२३२५०)		

पीढियें—: ६. गोपालदास-सुरतांणोत[1] ७. हरनाथसिंघ ८. अचलदास §
९. रुघनाथसिंघ * १०. अरजनसिंघ ११. जगतसिंघ १२. हरीसिंघ
१३. देवकरण १४. मालमसिंघ १५. बखतावरसिंघ १६. गोपालसिंघ
१७. विसनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोहंडी—	६०००)	६०००)	परबतसर	
, छीतरो	५००)	५००)	,,	
,, पीपलाद	२५००)	२५००)	,,	
,, मेहगांव	१५००)	१५००)	,,	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

---

§ अचलदास सेतुबंध रामेश्वर में बादशाही सेवा में काम आया ।

* चित्तोड़ मे कांम आया संवत् १८२४ रा चेत सुद ३ ।

१. जैमल के पुत्र सुरतांण का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें— : १०. भींवसिंघ-रुघनाथसिंघोत[1] ११. किसोरसिंघ १२. प्रतापसिंघ
१३. सिरदारसिंघ १४. सायबसिंघ १५. जेतसिंघ १६. रिड़मलसिंघ
१७. जुहारसिंघ १८. बलदेवसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बाजुवास—	४०००)	४०००)	मेड़ता	
,, भेरूवास	८३३।-)।	८३३।-)।	परवतसर	
कुल रेख	४८३३।-)।	४८३३।-)।		

पीढियें— : ११. किसनसिंघ-भावसिंघोत[2] १२. फतेसिंघ १३. जवांनसिंघ
१४. ईसरीसिंघ १५. जोधसिंघ १६. रूपसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जावलो—	७०००)	७०००)	मेड़ता	
,, मेहराणो	५०००)	५०००)	,,	
,, आजरोली	३०००)	३०००)	,,	
परगना मेड़ता री रेख	१५०००)	१५०००)		
गाँव जालरो—	६०००)	६०००)	परवतसर	
,, मुडानो	१५००)	१५००)	,,	आधो
,, नादोली	१०००)	१०००)	,,	आधी
,, ढाढोतो	५०००)	५०००)	,,	
,, कुराडो	६०००)	६०००)	,,	
,, घोलीयो	१५००)	१५००)	,,	
,, लखीयावास	२०००)	२०००)	,,	
रेख परवतसर रा गाँव री	२३०००)	२३०००)		
रेख मेड़ता रा गाँवां री	१५०००)	१५०००)		
कुल रेख	३८०००)	३८०००)		

पीढियें—: ९. गोकलदास-अचलदासोत[3] १०. सांवतसिंघ ११. सगरांमसिंघ

---

१. ठि. ललांणो वडो के (९) ठाकुर रुघनाथसिंह का पुत्र।
२ ठि. रोहूंडी के (१०) ठाकुर भींवसिंह का पुत्र।
३. ठि. ललांणो वडो के (८) ठाकुर अचलदास का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२. समरथसिंघ १३ लखधीरसिंघ १४. दुरजणसिंघ १५. नोनदसिंघ
१६. बाघसिंघ १७ केसरीसिंघ १८. प्रतापसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जंझोलो—	५०००)	५०००)	परबतसर	

पीढियें—: १०. सगतसिंघ-गोकलदासोत[1] ११. समासिंघ १२. सेरसिंघ १३. सुमेरसिंघ
१४. जेतसिंघ १५. हरीसिंघ

गाँव भखरी—	३०००)	३०००)	मेड़ता	
,, मोलासर	३०००)	३०००)	,,	
,, नरमो	३०००)	३०००)	,,	
,, राजलोतो	७०००)	७०००)	,,	
,, भांनीगांव	३५००)	३५००)	परबतसर	
कुल रेख	१९५००)	१९५००)		

पीढियें—: ७. दलपत-गोपालदासोत[2] ८. गोरधनदास ९. सींभूसिंघ १०. भेरूसिंघ
११. केसरीसिंघ १२. नवलसिंघ १३. नाहरसिंघ १४. मंगलसिंघ
१५. हरीसिंघ

गाँव सील भखरी	—	—	मेड़ता	पांती दो

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ६. किसनदास-सुरतांणोत[3] ७. बिहारीदास ८. वीठलदास ९. अमरसिंघ
१०. गजसिंघ ११. डुंगरसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. सेवादास १४. मगनीरांम
१५. लालदास १६. चंद्रदास

पांती दूजी आध में—

पीढियें : १२. फतेसिंघ-डुंगरसिंघोत १३. ललितसिंघ १४. भारथसिंघ १५. नंदसिंघ
१६. नाहरसिंघ

सील भखरी (परगना मेड़ता, तिणने किसनपुरो केहे, रेख भरे नहीं, भखरी रा ऊकील)

खांप केसोदासोत मेड़तीया

१. ठि. जालरो के (९) ठाकुर गोकलदास का पुत्र।
२. ठि. ललांणो वडो के (६) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।
३. सुरतांण जैमलोत का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. केसोदास * जैमलोत, तिण रा वंश रा केसोदासोत कहीजे ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बडू—	७०००)	७०००)	परबतसर	
,, चीलु	३०००)	३०००)	,,	
,, खांनपुर	१५००)	१५००)	,,	
,, हरनावो	६०००)	६०००)	,,	
,, भावसी	५००)	५००)	,,	
,, मांणावो	५००)	५००)	,,	
,, भादवो	३५००)	३५००)	,,	
,, गींगोली	३५००)	३५००)	,,	
,, मोरेड	१५००)	१५००)	,,	
,, सीरसु	१५००)	१५००)	,,	
,, दावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,	आधो
,, कणसरीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, हुरडांणी	२०००)	२०००)	,,	

पीढियें—: ९. गिरधरदास § केसोदासोत ७. गदाधर ८. स्यांमसिंघ ९. प्रीथीराज १०. रांमसिंघ ११ रतनसिंघ १२ वदनसिंघ १३. कनीराम १४. सुरतांणसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. सीवनाथसिंघ १७. सवाईसिंघ १८. सेरसिंघ १९. जीवणसिंघ

गाँव सबलपुर—	५०००)	५०००)	परबतसर	
,, ढुढीयो	२०००)	२०००)	,,	
,, माणवो	५००)	५००)	,,	
,, गींगोली	३५००)	३५००)	,,	
,, दावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, वागोट	५०००)	५०००)	,,	
,, कवलांद	१०००)	१०००)	,,	
	१८२५०)	१८२५०)		

* केसोदास संवत् १६५८ में सेतुबन्ध रामेश्वर में जहाँगीर की फौज से युद्ध कर मारा गया ।

§ गिरधरदास लोद की घाटी में बादशाह की फौज से युद्ध कर सं. १६०७ में काम आया ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: १० किसनसिंघ-प्रीथीराजोत[1] ११. मानसिंघ १२. लालसिंघ १३. मोखमसिंघ १४. माधोसिंघ १५. तेजसिंघ-खोळे १६ मोहबतसिंघ १७. रणजीतसिंघ १८. सबलसिंघ १६. स्यांमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बरनेल—	५०००)	५०००)	परवतसर	

पीढ़ियें—: ११. गुमानसिंघ-किसनसिंघोत[2] १२. ऊमेदसिंघ १३. नवलसिंघ १४. पाहाड़सिंघ १५. लिछमणसिंघ १६. चिमनसिंघ

गांव बणागणो—	६०००)	६०००)	दौलतपुरा	

पोढियें—: ११. सेरसिंघ-किसनदासोत[3] १२. कोजुरांम १३. माधोसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. वाघसिंघ

गांव चीतावो—	१०००)	१०००)	परवतसर	

पीढियें—: १४ विडदसिंघ † माधोसिंघोत[4] १५. रतनसिंघ

गांव ऊचेरीयो—	२०००)	२०००)	परवतसर	

पीढियें—: ११. बखतावरसिंघ-किसनसिंघोत[5] १२ सालमसिंघ १३. जोदसिंघ १४. कनकसिंघ १५. रुडसिंघ

गांव बोडावड—	६०००)	६०००)	परवतसर	
,, खोखरो	२५००)	२५००)	,,	
,, आजवो	३०००)	३०००)	,,	
,, कुजा डुंगरी	१५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१३०००)	१२०००)		

पीढियें—: १०. बाहादरसिंघ-प्रीथीसिंघोत[6] ११. जालमसिंघ १२. बखतावरसिंघ§ १३. मंगलसिंघ १४. कीलाणसिंघ १५. सादुलसिंघ

---

† बिड़दसिंह संवत् १८८५ में जयपुर वालों की बाहर में आया।

§ कांम आयो दिखणी माधोराव सुं झगड़ो हुवो जठे स. १८४४ रा सांवण सुद १३।

१. ठि. बडू के (९) ठाकुर प्रिथीराज का पुत्र।

२. ठि. सबलपुर के (१०) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

३. ,, ,, (१०) ,, ,,।

४. ठि. बणागणो के (१३) ठाकुर माधोसिंह का पुत्र।

५. ठि. सबलपुर के ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

६. ठि. बडू के (९) ठाकुर पृथ्वीसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव लाडोली—	४०००)	२०००)	परबतसर	

पीढियें—: ११. देवीसिंघ-बाहादरसिंघोत[1] १२. बखतसिंघ १३. बखसीरांम
१४. भीवसिंघ १५. नोनदसिंघ १६ हृन्नाथसिंघ १७. किलाणसिंघ

गाँव कालवो—	२५००)	१८३३।–)	परबतसर	आसामी ३ रे

सवा पांच आने पांती एक तीजी में—

पीढियें—: ११. दांनसिंघ-बाहादरसिंघोत[2] १२. डुंगरसिंघ १३. लखधीरसिंघ
१४. रणजीतसिंघ १५. गोपालसिंघ १६. रिड़मलसिंघ

सवा पांच आने पांती दूजी तीजी में—

पीढियें—: ११. माधोसिंघ-बाहादरसिंघोत १२. सिभूसिंघ १३ जोरावरसिंघ
१४. मोतीसिंघ १५. मालमसिंघ १६. चैनसिंघ १७. अजीतसिंघ

सवा पांच आने पांती तीजी में—

पीढियें : ११. समरथसिंघ-बाहादरसिंघोत १२. सगतसिंघ १३. चुतरभुज
१४. सायबसिंघ १५. खुमांणसिंघ १६. हरदांनसिंघ १७. अनांडसिंघ

गाँव मांमड़ोली—	२०००)	२०००)	परबतसर	
,, कालवारी ढांणी	३५०)	३५०)	,,	।) पांती

पीढियें—: १०. हींदुसिंघ-प्रीथीराजोत[3] ११. बाघसिंघ १२. सुरतांणसिंघ
१३. अमांनसिंघ १४. हमीरसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. दोलतसिंघ

गाँव बुडसु—	६०००)	६०००)	परबतसर	
,, भींचावो	३०००)	३०००)	,,	
,, लाडोली	५००)	५००)	,,	
,, नगवाडो	५००)	५००)	,,	
,, राजथलियो	१३००)	१३००)	,,	
,, चंडालीयो	५००)	५००)	,,	
,, कचोलीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, आकोदो	३०००)	३०००)	,,	
,, वेगसर	५००)	५००)	,,	

---

१. ठि. वेडावड के (१०) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र।
२ ,, ,, (१०) ,, ,, ।
३. ठि. बढू के (६) ठाकुर प्रीथीराज का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, थेवडी	१५००)	१५००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	१२०५०)	१२०५०)		
गाँव खीदर पुरो—	३०००)	३०००)	परबतसर	
,, गुणावती	२०००)	२०००)	,,	
,, सांमपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, सुपेड	१२५०)	१२५०)	,,	
,, हरनांवो	५००)	५००)	,,	
,, चावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, चाडी	५००)	५००)	,,	
,, देवरी	१२५०)	१२५०)	,,	
,, गावडी	१५००)	१५००)	,,	
,, वडवाली	१२५०)	१२५०)	,,	
,, घानोली	३०००)	३०००)	,,	
,, मोडण	१०००)	१०००)	,,	
,, दरडाणी	१०००)	१०००)	,,	
,, देवलो	१०००)	१०००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	३७५५०)	३७५५०)		

पीढियें —: ९. अखेसिंघ-स्यांमसिंघोत[1] १०. सुरतसिंघ ११. गजसिंघ १२. बुदसिंघ १३. अमांनसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. सिरदारसिंघ १६. माधोसिंघ

गाँव कूकडदो—	३०००)	३०००)	परबतसर	

पीढियें—: १२. दांनसिंघ-गजसिंघोत[2] १३. केसरीसिंघ १४. हणवतसिंघ १५. ग्यांनसिंघ

गाँव मनाणो—	१३५०)	१३५०)	परबतसर	
,, जवादीयो	१५००)	१५००)	,,	
,, हुडीयो	२५००)	२५००)	,,	
,, मनांणी	१३५०)	१३५०)	,,	

---

१. ठि. वडू के (८) ठाकुर श्यांमसिंह का पुत्र।

२. ठि. खीदपुरो के (११) ठाकुर गजसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सीरसलो	२५००)	२५००)	,,	
,, विसरोली	४०००)	४०००)	,,	
,, वडरूण	५०००)	३५००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	१८२००)	१६७००)		

पीढियें—: १०. अमरसिंघ-अखेसिंघोत[1] ११. धीरतसिंघ १२. अभेसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. नाहरसिंघ १५. जुंजारसिंघ १६. केसरीसिंघ १७ फतेसिंघ १८. सिवदांनसिंघ १९. जोरावरसिंघ

गांव डसांणो खुरद—	२०००)	२०००)	परबतसर	

पीढियें—: १३. ऊमेदसिंघ-अभेसिंघोत[2] १४. रणजीतसिंघ १५. गुमांनसिंघ १६. भीवसिंघ १७. भेरूसिंघ

गांव रोडु विरडा—	३०००)	३०००)	नागोर	
,, वांभुवास	३०००)	३०००)	,,	
,, पातुवास	१०००)	१०००)	,,	
,, पुनावास	१०००)	१०००)	,,	
,, मांकडवास	१०००)	१०००)	,,	
,, आसरवो	२०००)	२०००)	परबतसर	
	———	———		
कुल रेख	११०००)	११०००)		

पीढियें—: ११. अणदसिंघ-अमरसिंघोत[3] १२. माहासिंघ १३. लिछमणसिंघ १४. अगरसिंघ १५. जगतसिंघ १६. सवाईसिंघ

गांव टांगलो—	५०००)	४०००	नागोर	
,, खोखरीयो	३०००)	२५००)	परबतसर	
	———	———		
	८०००)	८०००)		

पीढियें—: १०. नवलसिंघ-अखैसिंघोत[4] ११. जालमसिंघ १२. दोलतसिंघ १३. सादुलसिंघ १४. हुकमसिंघ १५. सिरदारसिंघ

१- ठि. खीदपुरो के (९) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र ।
२. ठि. मनाणो के (१२) ठाकुर अभैसिंह का पुत्र
३. ठि. मनाणो के (१०) ठाकुर अमरसिंह का पुत्र ।
४. ठि. खीदपुरो के (९) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव खोजावास—	२०००)	२०००)	परबतसर	

पीढियें—: १०. इंद्रसिंघ-अखेसिंघोत[1] ११. चुतरभुज १२. बखसीरांम १३. खुमांणसिंघ

गांव विदीयाद—	७०००)	७०००)		
,, अडाणी	२०००)	२०००)		
	———	———		
क़ुल रेख	९०००)	९०००)		

पीढियें —: ८. भोजराज-गदाधरोत[2] ९. सुखसिंघ † १०. किसोरसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. सींभुसिंघ १३ किसनसिंघ १४. रांमनाथसिंघ, १५. हरीसिंघ १६. सादूलसिंघ १७. बेरीसाल

गांव डोडवाडो—	१५००)	१५००)	परबतसर	

पीढियें —: ९. सुखरूपसिंघ-भोजराजोत[3] १०. केसरीसिंघ ११. साहेबसिंघ १२. सिवदांनसिंघ १३. रतनसिंघ १४. अनाड़सिंघ

गांव जूसरीयो—	३०००)	३०००)	परबतसर	

पीढियें —: ९. विजेसिंघ-भोजराजोत[4] १०. अजबसिंघ ११. सवाईसिंघ (मेड़ते कांम आयो) १२. अचलसिंघ १३. जवांनसिंघ १४. मंगलसिंघ

गांव तोसीणो—	६०००)	५५००)	परबतसर	
,, रोहां	२०००)	२०००)	,,	
,, साधीया	१५००)	१५००)	,,	

पीढियें —: ७. ऊदेभांण-गिरधरदासोत[5] ८. किलयाणदास ९. मोकमसिंघ * १०. भींवसिंघ ११. सूरजभांण § १२. देवसिंघ १३. अभेसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५. वखतावरसिंघ

---

† खंडेला रा राजा रे मामा भुवा रो थो सु खंडेला वाळां रे नवाब सुं झगड़ो हुवो जठे काम आयो ।

* कांम आयो मेड़ते पातसाह री फौज सुं झगड़ो हुवो जठे संवत् १६९७ रा पौस वद ८ ने ।

§ कांम आयो दिखणीयां री राड़ में सवत् १८२२ रा फागण सुद १५ ।

१. ठि. खीदपुरो के (६) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र ।

२. ठि. बडू के (७) ठाकुर गदाधर का पुत्र ।

३. ठि. विदीयाद के (८) ठाकुर भोजराज का पुत्र ।

४. ठि. विदीयाद के (८) ठाकरे भोजराज का पुत्र ।

५. ठि बड़ू के (६) ठाकुर गिरधरदास का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांप विठलदासोत मेड़तीया

२. दूदो-जोधावत ३. वीरम-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. विठलदास रा वंश रा वीठलदासोत कहीजै

विठलदासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नीबो खास—	१५००)	१५००)	दौलतपुरो	
,, अेवाद	१५००)	१५००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ६. विहारीदास-वीठलदासोत ७. वनमालीदास ८. आईदांन ९. जगतसिंघ १०. फतेसिंघ ११. सूरतसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. साहबसिंघ १४. रणजीतसिंघ

गाँव लुणसरो—	३०००)	३०००)	नागोर	आधो

पीढियें—: ११. विसनसिंघ-फतैसिंघोत[1] १२. सिवसिंघ १३. भेरूसिंघ १४. सांवतसिंघ

गाँव ईग्योर—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. अखैसिंघ-जगतसिंघोत[2] ११. भींवसिंघ १२. सादुलसिंघ १३. लूणकरण १४. कुसलसिंघ १५. नंदसिंघ

खांप किलांणदासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरम-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. किलांणदास रा बंसरा किलांणदासोत मेड़तीया कहीजै

गाँव कला रो वास—	१०००)	१०००)		मेड़ता तिणने पचराडो कहै छे

पीढियें—: ६. स्यांमसिंघ-किलांणदासोत ७. गोकलदास ८. अणदसिंघ ९. हींदुसिंघ १०. भवांनीसिंघ ११. देवीसिंघ १२. जीवणसिंघ १३. नंदसिंघ

खांप दुवारकादासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. दुवारकादास तिण रा बंस रा दुवारकादासोत मेड़तीया कहीजै

दुवारकादासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गाँव वछयारी—	३०००)	३०००)	नागोर	आसांमी २ रे

---

१. ठि नीवीखास के (१०) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र।
२. ठि. ,, ,, ,, (९) ,, जगतसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें—: ६. सुंदरदास-दुवारकादासोत ७. हिरदेरांम ८. जगतसिंघ ९. जोधसिंघ
१०. फतेसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. अरजनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. सिवसिंघ-जोधसिंघोत[1] ११. देवीसिंघ १२. जवारसिंघ

खांप विसनदासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. किलांणदास-जैमलोत ६. विसनदास-किलांणदासोत, विसनदास रा वंस रा विसनदासोत मेड़तीया कहीजै।

विसनदासोत मेड़तीयां री ठिकांणां री विगत—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खोड़ खास—	९०००)	९०००)	गोढवाड	
,, पादरडी	४००)	४००)	,,	
,, ठाकुरलां	५००)	५००)	,,	आधी
,, किलांणसिंघ रो गुढो ,, सोनगरां रो गुढो	६००)	६००)	,,	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

पीढियें—: ७. राजसिंघ-विसनदासोत ८. माधोदास ९. किलांणसिंघ १०. सुरजमल
११. सेरसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. बखतसिंघ १४. चेनसिंघ १५. जसवंतसिंघ
१६. जोरावरसिंघ १७. रणजीतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव अमरपुरो	२०००)	२०००)	डीडवांणो
,, दागऊ	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ८. नारखांन-राजसिंघोत[2] ९. किसनसिंघ † १० बलरांम ११. सिवसिंघ
१२. भोमसिंघ १३. पदमसिंघ १४. प्रभुरांम १५. प्रतापसिंघ १६. ईंदरसिंघ

---

१. ठि. वछयारी के (पहली पांती) के (९) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र।

† कांम आयो खंड़वाटी री घाटी माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री वखत में सवत् १७३५ रो पौस वद ९।

२. ठि. खोड़ खास के (७) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बोरुंदो—	५०००)	५०००)	मेड़ता	
,, कछवाई री वासणी	१२५०)	१२५०)	,,	आधी
	———	———		
कुल रेख	६२५०)	६२५०)		

पीढियें—: ७. गोकलदास † वीसनदासोत ८. गोपीनाथ § ९. प्रतापसिंघ १०. सुरतसिंघ ११. जेतसिंघ १२. सायबसिंघ १३. वदनसिंघ * १४. गोपालसिंघ १५. जैसिंघ १६. फतेसिंघ

गाँव तामडोली—	३२००)	३२००)	मेड़ता	आसांमी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ९. जसकरण-गोपीनाथोत[1] १०. रांमचंदर ११. लालसिंघ १२. हींदुसिंघ १३. अरजनसिंघ १४. भोपालसिंघ १५. केसरीसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: ८. लाडखांन-गोकलदासोत[2] ९. सांवतसिंघ १०. सिरदारसिंघ ११. जालमसिंघ १२. फतेसिंघ १३. भवानीसिंघ १४. मेहताबसिंघ

गाँव वरणो—	२०००)	२०००)	मेड़ता

पीढियें—: १०. रांमचंदर-जसरणोत[3] ११. जोरावरसिंघ १२. कनीरांम १३. गुलाबसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. हुकमसिंघ १६. बखतावरसिंघ

गाँव चोंसली—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ११. लालसिंघ-रांमचंदोत[4] १२. जोधसिंघ ¶ १३. लखधीरसिंघ

---

† गोकुलदास को यह गांव संवत् १६८० में मिला, तथा यह संवत् १६८४ में भगवानदास वाघोत के शामिल गढी में काम आया।

§ यह संवत् १७१४ में उज्जैन के युद्ध में काम आया।

* वदनसिंह और काको सुरजमल संवत् १८४७ रा भादवा सुद २ भोम मेड़ते, सिंधिया माधोराव रे झगड़ो हुवो तरे कांम आया।

¶ कांम आयो संवत् १८१७ में वीलाडे चांपा वतां सुं झगड़ो हुवो जठे।

१. ठि. बोरूंदा के (८) ठाकुर गोपीनाथ का पुत्र।

२. ठि. ,, (७) ,, गोकुलदास का पुत्र।

३. ठि. तामड़ोली (पांती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र।

४. ठि. वरणो के (१०) ठाकुर रांमचंदर का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. पाहाड़सिंघ १५. अमांनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमांर भरे	परगना	विशेष
गाँव जगडवास—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ८. भींवराज-गोकलदासोत[1] ९. अचलदास† १०. अनोपसिंघ ११. जेतसिंघ १२. सालमसिंघ १३. दुरजणसिंघ १४. बेरीसाल १५. चुतरसिंघ

गाँव तिलांणेस—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ११. जोरावरसिंघ-अनोपसिंघोत[2] १२. सींभुसिंघ १३. ग्यांनसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. अनाडसिंघ

गाँव मयापुर—	२५००)	२५००)	मेड़ता	आधो

पीढियें—: ११. सिरदारसिंध-अनोपसिंघोत[3] १२. अभेसिंघ १३. अगरसिंघ १४. ऊगमसिंघ १५. भूरसिंघ

गांव मीदीयान—	३२००)	३२००)	मेड़ता	आसांमी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ९. हरीसिंघ-भींवराजोत[4] १०. ईनदरसिंघ ११. नवलसिंघ १२. सायबसिंघ १३. कोजूरांम १४. भेरुसिंघ १५. सैतानसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: ९. बलरांम-भींवराजोत[5] १०. सिवसिंघ ११. बाहादरसिंघ १२. सवाईसिंघ १३. मोतीसिंघ १४. चुतरभुज १५. सांवतसिंघ

गाँव चुवो—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-हरीसिंघोत[6] ११. तेजसिंघ १२. किसोरसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. मेहताबसिंघ

---

† कांम आयो गढ कुंडांणे ।

१. ठि. बोरुंदा के (७) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र ।

२. ठि. जगडवास के (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र ।

३. ठि. जगड़वास के (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र ।

४. ,, ,, (८) ,, भींवराज का पुत्र ।

५. ,, ,, (८) ,, ,, ,, ।

६. ठि. मिदीयान के (९) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव राजलियावास—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	

पीढियें—: १०. बखतसिंघ-हरीसिंघोत[1] ११. मोहबतसिंघ १२. भावसिंघ
१३. भवानीसिंघ १४. सूमेलसिंघ

खांप गोपीनाथोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. प्रतापसिंघ † ५. गोपालदास ६. किसनदास ७. दुरजणसाल ८. गोपीनाथ रा वंस रा गोपीनाथोत मेड़तीया कहीजै

गोपीनाथोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव घाणोराव खास—	७५००)	७५००)	गोढवाड
,, ईट दडो	१५००)	१५००)	,,
,, किसनपुरो	१५००)	१५००)	,,
,, नीयड	११००)	११००)	,,
,, गुढो मेछनो	११००)	११००)	,,
,, ढालोप	१५००)	१५००)	,,
,, मांगलीयां रो गुडो	२१००)	२१००)	,,
,, राजपुरो	४०००)	४०००)	,,
,, विरमपुरो	१४००)	१४००)	,,
,, मेघा रो गुडो	६००)	६००)	,,
,, भगवानपुरो	३०००)	३०००)	,,
,, कोटडी	१७००)	१७००)	,,
,, रामा रो गुडो	१७००)	१७००)	,,
,, छीडां	१५००)	१५००)	,,
गांव नादाणो वडो—	१०००)	१०००)	,,
,, जाटां रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, पदम पुरो	१५००)	१५००)	,,
,, नालोलाई	१५००)	१५००)	,,
,, कोटवालियां	२०००)	२०००)	,,
,, करेलि	१०००)	१०००)	,,

---

† यह चित्तौड़ के युद्ध में संवत् १६२६ में काम आया।

1. ठि. मिदीयान.के (६) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, लाटाड़ो	१०००)	१०००)	गोढवाड	
,, दूदापुरो	५००)	५००)	,,	
,, गुढो किलांणसिंघ रो	३००)	३००)	,,	
,, सांवलतो	१७५०)	१७५०)	,,	
,, रूपसिंघ रो गुडो	७००)	७००)	,,	
,, नवो गुडो	१५००)	१५००)	,,	
,, नाडोल	४०००)	४०००)	,,	
,, गोहाडो	१४००)	१४००)	,,	
,, रखी	५००)	५००)	,,	
,, डायलाणों	१०००)	१०००)	,,	
,, पाटीयांरो गुडो	७००)	७००)	,	
,, माहाराम को गुडो	१०००)	१०००)	,,	
,, माडोकड़	२४००)	२४००)	,,	
,, वडेल	५००)	५००)	,,	
,, दुदोड	७५०)	७५०)	,,	
,, पुनाडीयो	२०००)	२०००)	,,	
,, चांनांणा रो गुडो	३००)	३००)	,,	
, केसरीसिंघ रो गुडो	४५०)	४५०)	,,	
,, अडसीपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, पादरडी	३००)	३००)	,,	

पीढियें—: ९. सूरतसिंघ-गोपीनाथोत १०. प्रतापसिंघ ११. पदमसिंघ १२. किसनसिंघ १३. वीरमदेव १४. दुरजणसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. नाहारसिंघ १७. हिम्मतसिंघ १८. जोधसिंघ

गाँव चांणोद खास—	६०००)	६०००)	गोढवाड	
,, चांगवो	१६००)	१६००)	,,	
,, ऊमारो गुडो	१६००)	१६००)	,,	
,, बालोलाई	२५००)	२५००)	,,	
,, भाचुदी	१४००)	१४००)	,,	
,, ऊदेलाव	१०००)	१०००)	,,	
,, ढोलारो गाँव	९००)	९००)	,,	
,, वीठोरो	३२००)	३२००)	,,	
,, कीरवो	३२००)	३२००)	,,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, नवो गाँव	२५००)	२५००)	गोढवाड	
,, लांपोद	१२००)	१२००)	,,	
,, साकदडो	७००)	७००)	,,	
,, वड गाँव	३०००)	३०००)	,,	
,, लीचावो	२२००)	२२००)	,,	
,, खीमेल	६०००)	६०००)	,,	
,, मुगघडो	५००)	५००)	,,	
,, किसनपुरो	रेख नहीं	—	,,	
,, अभेपुरो	रेख नहीं	—	,,	
,, घुणी	२०००)	२०००)	,,	
,, खारडो	१६००)	१६००)	,,	
,, वाबा गाँव	१६००)	१६००)	,,	
,, डुंगलि	१०००)	१०००)	,,	
गाँव कोसेलाव—	१०००)	१०००)	,,	
,, विसनपुरो	रेख नहीं	रेख नहीं	,,	
,, वाघणो	,,	,,	,,	
,, दौलतपुरो	,,	,,	,,	
,, भावनगर	,,	,,	,,	

पीढियें—: ९. अनोपसिंघ-गोपीनाथोत १०. सिवसिंघ ११. विसनसिंघ § १२. तेजसिंघ १३. जसवंतसिंघ १४. लिछमणसिंघ १५. किसोरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे
गांव बरकाणो—	३५००)	३५००)
,, सादलवो	१७००)	१७००)
,, टीपरी	२००)	२००)
,, प्रीथीराज रो गुडो	३०००)	३०००)
,, खीवां रो गुढो	२५०)	२५०)
,, ओडवाडीयो	१०००)	१०००)
,, खांगडी	१०००)	१०००)
,, अेलाणी	१८५०)	१८५०)
,, भीवा रो गुडो	रेख नहीं	रेख नहीं

§ विसनसिंह मेड़ता में संवत् १८४७ भादवा सुद २ को मरहठों से लड़कर काम आया।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ९. अभेसिंघ-गोपीनाथोत १०. हरीसिंघ ११. सुरजमल १२. सींभुसिंघ
१३. प्रीथीसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. ऊमेदसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव फालणो—	३७५०)		गोढवाड	
,, चावडेरी	१०००)		,,	
,, चेनपुरो	०)	०)	,,	रेख नहीं
,, बीलीयो	७००)		,,	
,, राणी गाँव खुरद	१०००)		,,	
,, दातीवाड़ो	१७५०)		,,	
,, वडली	७००)		,,	
,, ग्रेलाणी	१८५०)		,,	
,, अखेराज रो गुढो	३००)		,,	
		५८००)		

पीढियें—: १४. वखतावरसिंघ-प्रीथीसिंघोत[1] १५. वभूतसिंघ

गाँव सीदरड़ी—	२०००)	२०००)	गोढवाड	

पीढियें—: ९. हिमतसिंघ-गोपीनाथोत १०. सगरांमसिंघ ११. जेतसिंघ
१२. मोहकमसिंघ १३. जीवराज १४. कुसलसिंघ

खांप चांपावत

१. रिड़मल रौ चांपौ।
२. चांपौ रिड़मलोत तिण रा वंस रा चांपावत कहीजै।

खांप-सगतसिंघोत चांपावत

२. चांपो ३. सगतसिंघ तिण रा वस रा सगतसिंघोत चांपावत कहीजै।

सगतसिंघोतां रां ठिकांणां री विगत

गाँव दासांणीयो—	४५०)	४५०)	गढ जोधपुर	

पीढियें—: ४. देईदास-सगतसिंघोत ५. भवांनीदास ६. किलांणदास ७. आसकरण
८. वेणीदास ९. विजेसिंघ १०. गजसिंघ ११. लालसिंघ १२. जोरावरसिंघ
१३. दलसिंघ १४. चीमनसिंघ १५. ऊमेदसिंघ १६. केसरीसिंघ

---

१. ठि. वरकाणा के (१३) ठाकुर पृथ्वीसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांप रांमसिघोत चांपावत

२. चांपो ३. भेरूदास चांपावत ४. रांमसिंघ तिण रा वंश रा रांमसिघोत कहीजै ।

रांमसिघोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव देवकी—	१०००)	१०००)	जालोर	आसांमी २ रै

पांती आध में—

पीढियें—: ५. छतरसाल-रांमसिंघोत ६. किलांणदास ७. नेतसी ८. गोयंद्रदास ९. गोकलदास १०. देवसिंघ ११. जसकरण १२. आईदांन (खोळे) १३. धनराज १४. हींदुसिंघ १५. रांमकिसन १६. सादुलसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. अनोपसिंघ-गोकलदासोत[१] ११. हरकिसन १२. जवांनसिंघ १३. दुरजणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव चोराऊ—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ९. मोहकमसिंघ-गोयंददासोत[२] १०. अणदसिंघ ११. सुरतांणसिंघ १२. दलेलसिंघ १३. गुमांनसिंघ १४. करणसिंघ १५. वभूतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव थलवाड—	१२५०)	७५०)	जालोर	आधो

पीढियें—: १०. केसरीसिंघ-मोकमसिंघोत[३] ११. कचरदास १२. जोरावरसिंघ १३. गुमांनसिंघ १४. सगरांमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मोदरां—	१०००)	१०००)	जालोर	आधी

पीढियें—: १२. वाघसिंघ-कचरदासोत[४] १३. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मांकणी—	५००)	५००)	जालोर	जब्त

पीढियें—: १०. खींवराज-मोकमसिंघोत[५] ११. जवांनसिंघ १२. भगवतसिंघ

---

१. ठि. देवकी (पहली पांती) के (९) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र ।
२. ठि. ,, ,, (८) ,, गोयंददास का पुत्र ।
३. ठि. चोराऊ के (९) ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र ।
४. ठि. थलवाड़ के (११) ठाकुर कचरदास का पुत्र ।
५. ठि. थलवाड के (९) ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र ।

. T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगनां	वशेष
गाँव लोदराऊ—	१०००)	१०००)	जालोर	
,, मोकमपुरो	१०००)	१०००)	गोढवाड	

पीढियें—: १०. जूंजारसिंघ-मोकमसिंघोत[1] ११. हरीसिंघ १२. हेमसिंघ
१३. मुकनसिंघ १४. जगतसिंघ

गाँव लुहर—	२०००)	१५००)	जालोर	जब्त हुकम नावा में

पीढियें—: ११. बखतसिंघ-जूंजारसिंघोत[2] १२. नाहरसिंघ १३. अभेसिंघ
१४. प्रतापसिंघ १५. मंगलसिंघ

गाँव सकरांणो—	१५००)	१०००)	जालोर

पीढियें—: १०. अणदसिंघ-मोकमसिंघोत ११. लाडखांन १२. फतेसिंघ १३. नाथुसिंघ
१४. बनेसिंघ १५. तेजसिंघ

गांव तालियाणो—	१०००)	७००)	जालोर

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-अणदसिंघोत[3] १२. ऊमेदसिंघ १३. सेरसिंघ
१४. ओनाडसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. लखसिंघ

गांव जेरसीण—	२०००)	६००)	जालोर

पीढियें—: ११. रिणछोड़दास-अणंदसिंघोत[4] १२. मेगराज १३. पदमसिंघ
१४. भोमसिंघ १५ विजेसिंघ

गाँव खांनपुर—	१०००)	६००)	जालोर

पीढियें—: ६. भगवांनदास-छतरसालोत[5] ७ हरदास ८. जसकरण ६. जगनाथ
१०. सांवतसिंघ ११. लालसिंघ १२. गुमांनसिंघ १३. हणवंतसिंघ

खांप जगमालोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भैरूदास ४ जेसो ५ जगमाल (जेसावत रा वंस रा जगमालोत कहीजै)

जगमालोत- चांपावत रा ठिकांणां री विगत

---

१. थलवाड़ के (६) ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र ।
२. ठि. लोदराऊ के (१०) ठाकुर जूंजारसिंह का पुत्र ।
३. ठि. संकराणे के (१०) ठाकुर अणंदसिंह का पुत्र ।
४. ठि. संकराणे के (१०) ठाकुर अणंदसिंह का पुत्र ।
५. ठि. देवकी के (५) ठाकुर छतरसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डाहोली—	१०००)	१०००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ६. सांवलदास-जगमालोत ७. माधोसिंघ ८. हरीदास ९. कनीरांम
१०. लाडखांन ११. सिवदांनसिंघ १२. भावसिंघ १३. वनेसिंघ
१४. जवांनसिंघ १५. जैतसिंघ

गाँव टाटरवो—	१०००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ७. ऊदेसिंघ-सांवलदासोत[1] ८. मोहणदास ९. फतेसिंघ १०. हींदुसिंघ
११. दुरगदास १२. गजसिंघ १३. ईदरसिंघ १४. सगतीदांन

गाँव सुखवासणी—	३३३।–)।	३३३।–)।	मेड़तो	तीजी पांती

पीढियें—: ८. धनराज-ऊदेसिंघोत[2] ९. अखेराज १०. केसरीसिंघ ११. हरनाथसिंघ
१२. ऊमेदसिंघ १३. अमांनसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. ऊरजणसिंघ

खांप गोयंददासोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. गोयंददास तिण रा वंस रा गोयंददासोत कहीजै ।

गोयंददासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव खुडालो—	४०००)	३०००)	गोढवाड	खेडा २
„ वासणी	५०००)	३०००)	सोजत	
कुल रेख	९०००)	६०००)		

पीढियें—: ६. खींवकरण-गोयंददासोत ७. लूणकरण ८. महासिंघ ९. नारखान
१०. हठीसिंघ ११. अभेसिंघ १२. जालमसिंघ १३. खुमांणसिंघ
१४. सालमसिंघ १५. केसरीसिंघ

गांव भेटवाडो—	१५००)	१५००)	गोढवाड	
„ सीरोल	३००)	२००)	„	
कुल रेख	१८००)	१७००)		

पीढियें—: १५. कुसालसिंघ-सालमसिंघोत[3]

---

१. ठि. डाहोली के (६) ठाकुर सांवलदास का पुत्र ।
२. ठि. टाटरवो के (७) ठाकुर उदैसिंह का पुत्र ।
३. ठि. खुडालो के (१४) ठाकुर सालमसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांप हरभांणोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. जैतमाल ६. हरभांण (हरभांण जैतमालोत रा वंस रा हरभांणोत चांपावत कहीजै।)

हरभांणोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मालगढ—	२०००)	२०००)	जोधपुर	-
,, ढीढस	३७५०)	३७५०)	,,	-
कुल रेख	५७५०)	५७५०)		

पीढियें—: ७. मनोहरदास-हरभांणोत ८. गिरधारीदास ९. हरनाथ १०. अचलदास ११. बखतावरसिंघ १२ सुलतांनसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. विसनसिंघ १५. रांमदांनसिंघ १६. जीवराज

दुवारकादासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत

गांव नवंध—	२०००)	२०००)	मेड़ता	खेडा ३

पीढियें—: ७. मोहणदास-हरभांणोत ८. केसरीसिंघ ९. महासिंघ १०. रतनसिंघ ११. रांमसिंघ १२. जोधसिंघ १३. किसनसिंघ १४. चुतरभुज १५. अजीतसिंघ

गांव सोवणीयो—	१८७॥)	१८७॥)	सोजत	पांती चोथी

पीढियें—: ७ नरहरसिंघ-हरभांणोत ८. हरीदास ९. सरूपसिंघ १०. राजसिंघ ११. लालसिंघ १२. मांनसिंघ १३. जीवणसिंघ १४. नरांणसिंघ १५. कनीरांम १६. भवांनीसिंघ

खांप केसोदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. मांडण ६. केसोदास मांडणोत रा वंस रा केसोदासोत चांपावत कहीजै।

केसोदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कावतरां—	२५००)	१०००)	जालोर

पीढियें—: ७. नारांणदास-केसोदासोत ८. आसकरण ९. प्रतापसिंघ १०. केसरीसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३ बखतसिंघ १४. रतनसिंघ

गांव सांणढंढ—	१०००)	१०००)	जालोर

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ९. मुकनदास-आसकरणोत[1]　　१०. ईसरीसिंघ　　११. सवाईसिंघ
१२. जवांनसिंघ १३. वीरमदेव

खांप रायसिंघोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. मांडण ६. रायसिंघ मांडणोत तिण रा वंसे रा रायसिंघोत चांपावत कहीजै ।

रायसिंघोत चांपावतां रा ठिकाणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव धांनणी—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ७. डुंगरसिंघ-रायसिंघोत ८ हरीसिंघ ९. सुरतसिंघ १०. सिवदांनसिंघ
११. प्रतापसिंघ १२. अखेसिंघ १३. मालमसिंघ १४. नवलसिंघ १५. पेमसिंघ

खांप रायमलोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. भीवराज ५. महेसदास ६. जसुतसिंघ ७. रायमल जसुतसिंघोत, रायमल तिण रा वंस रा रायमलोत चांपावत कहीजै ।

रायमलोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव सिणलो—	२५००)	२५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ८ फतेसिंघ-रायमलोत ९. हाथीसिंघ १०. माहासिंघ ११. जोरावरसिंघ
१२. खूमांणसिंघ १३. रतनसिंघ १४. बलवंतसिंघ

खांप बीठलदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो-रिड़मलोत ३. भैरूदास-चांपावत ४. जेसो-भैरूदासोत ५. मांडण-जेसावत ६. गोपालदास-मांडणोत ७. वीठलदास-गोपालदासोत, वीठलदास तिणरा वंस रा वीठलदाससोत चांपावत कहीजै।

वीठलदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव पोहकरण—	१३६२५)	१३६२५)	जोधपुर	खेडा ७
„ वडली	१२५)	१२५)	„	
„ खारारा	३०००)	३०००)	„	खेडा ४
गाँव रोगधडो—	४४०)	४४०)	जोधपुर	

1. ठि. कावतरां के (८) ठाकुर आसकरण का पुत्र ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, भींयां भोजारो	४५०)	४५०)	जोधपुर	
,, चाचाविग	५००)	५००)	,,	
,, कोलंवो	१८८)	५०)	,,	
,, वांमणुवाडो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, सांकडो	६२)	६२)	,,	
,, सीनावरी	१६३)	१६३)	,,	
,, बोडी	१२५)	१२५)	,,	
,, राखडां	५०)	५०)	,,	
,, भाखरी	६३)	६३)	,,	
,, छायण	१२५०)	१२५०)	,,	
,, रोहवो	१८७)	१८७)	,,	
,, आवल	१८८)	१८८)	,,	
,, राठोडांवास	२००)	२००)	,,	
,, भाकी	६३)	६३)	,,	
,, वाधवो	६३)	६३)	,,	
,, गीडांमणी	१२५)	१२५)	,,	
,, गोठ मेणा	१२५)	१२५)	,,	
,, दुदपीजो	२५०)	२५०)	,,	
,, ऊनावड	६२)	६२)	,,	
,, लावो	१३३)	१३३)	,,	
,, बुडीयावास	५०००)	५०००)	,,	खेडा ५
,, घाट सुलतांन रो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, मावो	५००)	५२५)	,,	
,, माघवो	१२५)	१२५)	,,	
,, जेसिंग रो वास	१३१०)	१३१०)	,,	
,, जालर रो वास	१८७)	१८७)	,,	
,, गाँव खेडी	२८०)	२८०)	,,	
,, खारडी	२८०)	२८०)	,,	
,, गोमट	१२५०)	१२५०)	,,	
,, भीलवो	२५०)	२५०)	,,	
,, बीलीयो	२५०)	२५०)	,,	
,, चानणी	१२५)	१२५)	,,	
,, रातडीयो	१२५)	१२५)	,,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, जालेवाडो	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	
,, चीकु	१२५)	१२५)	,,	खेड़ा २
,, गुलरोई	३१३)	३१३)	,,	
,, तीलावा	१२५)	१२५)	,,	
,, सिरदारसिंघ री ढांणी	६२)	६२)	,,	
,, भीखोडाई	१८०)	१८०)	,,	
,, गोमठ दुज़ी	१२५)	३१३)	,,	
,, सनावडो	२००)	२००)	,,	
,, गुडो	१२५)	१२५)	,,	
,, पचवदरीयो	६५०)	६५०)	,,	
,, खातोलाई	६५०)	६५०)	,,	
,, दांतल	६२)	६२)	,,	
,, ढढुवासो	३१३)	३१३)	,,	वास ५
,, गोडी	१७३)	१७३)	,,	
,: टटारी	३१३)	३१३)	,,	
,, देडीयो	७६)	७६)	,,	
,, बांमणाऊ	१०००)	१०००)	,.	
,, कालर जुगारी	२५०)	२५०)	,,	
,, बडली	८००)	११२५)	,,	खेडा ३
,, सारसेण	२००)	२००)	,,	
,, सदा रो वास	२००)	२००)	,,	
,, गाँव माडवो	१२५)	१२५)	,,	जोधपुर
,, होटडी	६३)	६३)	,,	
,, करणीयो	१८६)	१८६)	,,	
,, वागोडो	१८६)	१८६)	,,	
,, सारवो	३००)	३००)	,,	
,, जालरीयो	३००)	३००)	,,	
;, ऊटडी	६२)	६२)	,,	
,, बांमणु	१०००)	१०००)	,,	
,, नावो ,, तोलावरो }	१२५)	१२५)	,, ,,	
,, माही ,, भादवी }	८७५०)	८७५०)	,,	मेहला २
,, माडवो (पटा रो)	१२५)	१२५)	,,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, भाडाला	१२५)	१२५)	जोधपुर	
,, धुडसर	१०००)	१०००)	,,	
,, जालारीयो	१३१०)	१३१०)	,,	
,, जसवंत पुरो	६२५)	६२५)	,,	
,, कालाईयो	१०००)	१०००)	,,	
,, मडलो	१८५०)	१८५०)	,,	
,, कीसमणी	६३)	६३)	,,	
,, ओडण रो वास	१४३७)	१४३७)	,,	
,, ओको	१२५०)	१२५०)	,,	
,, वलांणो	१८८)	१८८)	,,	
,, वरकांणो	३१२)	३१२)	,,	
,, जावरो ,, जालोडो }	६३)	६३)	,,	
,, रुदीयो ,, लोहावो }	१६००)	१६००)	,, ,,	
,, वारेणी वडी	५००)	५००)		
,, रातडीयो ,, रतना रो वास }	१५०)	१५०)	,, ,,	
,, पादडीयो	१२५)	१२५)	,,	
,, भणीयाणो ,, खेतपाली }	१२५०)	१२५०)	,, ,,	
,, रांमदेवरो	८७५०)	८७५०)	,,	
,, मजल	५५४०)	७५००)	सिवांणो	
,, ठाकुरवास	१२५०)	—	,,	
,, करमावास	५०००)	६५००)	,,	खेडा २
,, दूदारोवाडो	२५००)	३०००)	,,	
,, पाता रो वाडो	२०००)	२०००)	,,	
,, खरंटीयो	४०००)	२५००)	,,	
,, रोईचो बडो	१५००)	१५००)	,,	
,, सनेई	१०००)	८००)	,,	
,, रामपुरो	८००)	१२००)	,,	
,, भलड़ां रो वाडो	३०००)	२१००)	,,	
,, कमांरो वाडो	१३००)	११००)	,,	
,, टेरा रो वाडो	१००)	१००)	,,	
,, धुनाडो	४१००)	४५००)	,,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, तीर जालियो	३७५)	५००)	जोधपुर	
,, चीरडीयो	४००)	४००)	,,	
,, ऊतेंसी	१०००)	९००)	,,	
,, जेसावास	४००)	३००)	,,	

पीढियें—: ८. जोगीदास-वीठलदासोत ९. भगवांनदास १०. माहासिंघ ११. देवीसिंघ १२. सबलसिंघ १३. सवाईसिंघ १४. सालमसिंघ १५. बभूतसिंघ (खोळै) १६. गुमांनसिंघ १७. मंगलसिंघ (खोळै)

गांव दासपां—	५०००)	५०००)	जालोर	
,, रुछीयाली	२०००)	२०००)	,,	
,, गजनीपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, रोहीपो	५००)	५००)	,,	
,, निरतां	१०००)	१०००)	,,	
,, कुसालपुर	१०००)	१०००)	,,	
,, ग्रासोवडी	१०००)	१०००)	,,	
,, कमालपुरीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, कोडी	१०००)	१०००)	,,	
,, बागरो	६०००)	५०००)	,,	
,, कोरो	२०००)	२०००)	,,	
,, घडसी	६०००)	०)	सांचोर	
,, वड गांव	५०००)	५०००)	मेड़ता	

पीढियें—: १०. प्रतापसिंघ-भगवानदासोत[1] ११. ग्रनोपसिंघ १२ दौलतसिंघ १३. सिवदांनसिंघ १४. ऊदेराज १५. सादुलसिंघ १६. ग्रनाड़सिंघ १७. सिरदारसिंघ १८. भैंरूसिंघ

गांव साचीदर—	१५००)	११००)	जालोर	

पीढियें—: १७. लालसिंघ-ग्रनाड़सिंघोत[2] १८. ग्रचलसिंघ

गांव ग्रासांणो—	३०००)	३०००)	जालोर	

पीढियें—: १४. सुरतसिंघ-सिवदांनसिंघोत[3] १५. सायबसिंघ १६. लखसिंघ १७. धुडसिंघ

---

१. ठि. पोकरण के (९) ठाकुर भगवांनदास का पुत्र।
२. ठि. दासपां के (१६) ठाकुर अनाड़सिंह का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (१३) ,, ,, ,, ,,।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव खींवाडो—	१००००)	७०००)	गोढवाड़	
,, वीरभांण रो गुडो	२००)	०)	,,	
	——	——		
	१०२००)	७०००)		
,, गाँव वागडीयो	१६५०)	१६५०)	जोधपुर	
,, वालेलाव	७५०)	७५०)	,,	
,, जवेडीयां	११२५)	११२५)	,,	
,, दयालपुरो	१५००)	१५००)	,,	
,, भांगेसर	२०००)	२०००)	सोजत	
,, जवासर	२०००)	२०००)	,,	
	——	——	—	
	१६२२५)	१६०२५)		

पीढियें—: ८. लखधीरसिंघ-वीठलदासोत ९. अखैराज १०. राजसिंघ ११. पेमसिंघ १२. जगतसिंघ १३. नवलसिंघ १४. ग्यांनसिंघ १५. गजसिंघ १६. हमीरसिंघ १७. अजीतसिंघ १८. गुमांनसिंघ

गाँव दुदोड—	२०००)	२०००)	सोजत	
,, रूपसिंघ रो गुडो	२०००)	२०००)	,,	
,, रांमावास	२०००)	२०००)	,,	
,, पातुवास	१०००)	१०००)	,,	

पीढियें—: १२ सगरांमसिंघ-पेमसिंघोत[1] १३. सिवनाथसिंघ १४.दीपसिंघ १५. सेरसिंघ १६. अमरसिंघ १७. भेरूसिंघ

गाँव वासणी मुहतांरी—	२०००)	२०००)	सोजत	

पीढियें —: १२. रतनसिंघ-पेमसिंघोत[2] १३. रांमसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५. जवांनसिंघ १६. दुरजणसिंघ

गाँव मालाली —	७००)	०)	गोढवाड़	पोकरण ऊकील

पीढियें—: १३. ऊमेदसिंघ-रतनसिंघोत[3] १४. ईन्दरसिंघ

---

१. ठि. खींवाड़ा के (११) ठाकुर पेमसिंह का पुत्र।
२. ठि. ,, (११) ,, ,, ,,।
३. ठि. वासणी मुहतारी के (११) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सांमुजो—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. ऊदेसिंघ-लखधीरसिंघोत[1] १०. पदमसिंघ ११. रिणछोड़दास
१२. तेजमाल १३. सेरसिंघ १४. दौलतसिंघ १५. सुरतांणसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव गांधाणा रो गुडो—	१४००)	१०००)	गोढवाड़	

पीढियें—: १३. सुजांणसिंघ-तेजमालोत[2] १४. विजेसिंघ १५. जालमसिंघ १६. नाथुसिंघ
१७. हुकमसिंघ १८. लिछमणसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मोदरां—	१०००)	१०००)	जालोर	आधी

पीढियें—: १२. वखतावरसिंघ-रिणछोडदासोत[3] १३. फतेसिंघ १४. राजसिंघ
१५. पेमसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बाकरो—	३०००)	३०००)	जालोर	
,, सोकडा	३०००)	३०००)	,,	
,, आकेली	३०००)	३०००)	,,	
,, रांमपुरीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, बुरल	१०००)	१०००)	,,	
,, जीवाणो	२०००)	२०००)	,,	
	१३२५०)	१३२५०)		
गाँव नथावडो—	४०००)	४०००)	मेड़तो	
	१७२५०)	१७२५०)		

पीढियें—: ८. अजबसिंघ-वीठलदासोत ९. सगतसिंघ १०. लालसिंघ ११. रांमसिंघ
१२. बाहादरसिंघ १३. अमरसिंघ १४. वभूतसिंघ १५. रूघनाथसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव खोडवो—	२०००)	२०००)	नागोर	
,, बोरटो	२०००)	१०००)	जालोर	
	४०००)	३०००)		

---

१. ठि. खींवाड़ा के (८) ठाकुर लखधीरसिंह का पुत्र।
२. ठि सांमुजा के (१२) ठाकुर तेजमाल का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (११) ,, रिणछोड़दास का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ९. सगतसिंघ-ग्रजवसिंघोत[1] १०. कुसलसिंघ ११. नाथुसिंघ १२. मोखमसिंघ
१३. फतेसिंघ १४. पाहाडसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव पुनासो—	५०००)	५०००)	जालोर	

पीढियें —: १३. जवांनसिंघ-मोहकमसिंघोत[2]

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव-रणसी—	७७००)	७७००)	जोधपुर	
„ मूरकासणी	७५०)	७५०)	„	
, देसणोक	५०००)	४५००)	फलोधी	
„ लोडया रो वास	५००)	५००)	„	
कुल रेख	१३२५०)	१२७५०)		

पीढियें—: ८. पृथीराज-वीठलदासोत ९. धनराज १०. ग्रमरसिंघ ११. मोकमसिंघ
१२. भवांनीसिंघ १३. सादुलसिंघ १४. तेजसिंघ १५. जवारसिंघ
१६. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हरीयां डाणो—	७५००)	०)	जोधपुर पोहकरण रो ऊकील	
„ भाखर वास	२०००)	०)	जेतारण	
	९५००)			

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-ग्रमरसिंघोत[3] १२. बुदसिंघ १३. जेतसिंघ १४ भेरूसिंघ
१५. पीरदांन १६. रणजीतसिंघ १७. हणवंतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नोसर—	२१००)	२१००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. सुरजमल-ग्रमरसिंघोत[4] १२. रूघनाथसिंघ १३. हीमतसिंघ
१४. रणजीतसिंघ १५. ग्रासकरण

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सवाडीयो—	३१५०)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: ८. सिवदांनसिंघ-वीठलदासोत ९. कूंपो १०. जोरावरसिंघ ११. पीरथीराज
१२. भवांनीसिंघ १३. सादुलसिंघ १४. ग्रभेसिंघ

---

१. डि. नथावड़ो के (८) ठाकुर अजबसिंह का पुत्र।
२. ठि. खोडवो के (१२) ठाकुर मोहकमसिंह का पुत्र।
३. ठि. रणसीगांव के (१०) ठाकुर अमरसिंह का पुत्र।
४. „ „ „ (१०) „ „ „।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बाघावास—	४०००)	४०००)	सोजत	

पीढियें—: ९. फतेसिंघ-सिवदांनसिघोत[1] १०. वीजैसिंघ ११. कुसलसिंघ
१२. मोहणसिंघ १३. नाथूसिंघ १४. नवलसिंघ १५. जोरावरसिंघ

गाँव वडी—	१०००)	१०००)	सोजत	।–)। पांती

पीढियें—: ११. पेमसिंघ-विजैसिंघोत[2] १२. खुमांणसिंघ १३. धीरतसिंघ १४. रतनसिंघ

गाँव पीलवो—	१२००)	१२००)	जोधपुर	पांती आधी
,, भोजाकोर	२५०)	२५०)	,,	,,
,, लाखणकोर	२५०)	२५०)	,,	,,
	———	———	—	
कुल रेख	१७००)	१७००)		आध री रेख = ८५०)

पांती आध में—

पीढियें—: ८. देईदास-वीठलदासोत ९. ऊदेभांण १०. साहेबसिंघ ११. सूरसिंघ
१२. चेनसिंघ १३. नवलसिंघ १४. आसकरण १५. मेघसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: १२. खींवकरण-सूरसिंघोत[3] १३. मदनसिंघ १४. जीवराज १५. अभैसिंघ

गाँव पीलवो— भोजाकोर, लाखणकोर, तीन गाँव री
कुल रेख १७००) आध रा ८५०) गढ जोधपुर

गाँव सांवरेज—	७५००)	२०००)	फलोधी	
	———	———		
	९२००)	२८५०)		
गाँव मेहरवास—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. किसोरदास-ऊदेभांणोत[4] ११. सवाईसिंघ १२. बेरीसाल १३. मोतीसिंघ
१४. मेहताबसिंघ

गाँव सरेचां—	२०००)	२०००)	जोधपुर	आसांमी २

---

१. ठि. सवाडीयो के (८) ठाकुर सिवदांनसिंह का पुत्र।
२. ,, बाघावास के (१०) ,, विजैसिंह का पुत्र।
३. ,, पीलवो (पहली पांती) के (११) ठाकुर सूरसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, ,, ,, (९) ऊदैभांण का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें—: ८. आसथांन-वीठलदासोत ९. सांवलदास १०. रांमसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२ छतरसिंघ १३. कनीराम (खोळं) १४. भोपालसिंघ १५. रतनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. माधोसिंघ-सांवलदासोत[1] ११. रामसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. सूरजमल १४. रूघनाथसिंघ १५. बाहादरसिंघ (खोळं) १६. नवलसिंघ

खांप-बलोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास, ४. जेसो, ५. मांडण, ६ गोपालदास, ७. बलु-गोपालदासोत, बलु रा वंस रा बलोत कहीजै ।

बलोत-चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हरसोलाव—	६०००)	६०००)	नागोर	खेडा ४

पीढियें—: ८. दूदो-बलोत ९. जसवंतसिंघ १०. हरीसिंघ ११. सूरतसिंघ १२ गिरधरदास १३. जालमसिंघ १४. दौलतसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. बखतावरसिंघ १७. देवीसिंघ १८. प्रतापसिंघ

गाँव धांमली—	४४००)	४४००)	जोधपुर	खेडा ४

पीढियें—: ८. दवारकादास-बलोत ९. सुंदरसेण १०. अनोपसिंघ ११. पदमसिंघ १२. मोहकमसिंघ १३. जालमसिंघ १४. सींभूसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गाँव बापोड़—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: १४. बाहादरसिंघ-जालमसिंघोत[2] १५. बभूतसिंघ

गाँव चवांधांधीयां—	३२००)	३२००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. सूरजमल-हरीसिंघोत[3] १२. ऊदेसिंघ १३. सिवसिंघ १४. बनेसिंघ १५. थांनसिंघ १६. जूजारसिंघ १७. अजीतसिंघ (खोळं)

गाँव लोरोली-खुरद—	२०००)	२०००)	कोलिया	

---

१. ठि. सरेचां (पहली पांती) के (९) ठाकुर सांवलदास का पुत्र ।

२. ठि. धांमली के (१३) ठाकुर जालमसिंह का पुत्र ।

३. ठि. हरसोलाव के (१०) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें—: ९. सुजांणसिंघ-दवारकादासोत[1] १०. बाहादरसिंघ ११. बुदसिंघ १२. रांमसिंघ १३. बखतावरसिंघ १४. ग्यांनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. गुलाबसिंघ-रांमसिंघोत १४. मुकनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, गाँव खोखरी	१०००)	१०००)	नागोर	आधी
,, लाहोटी	१०००)	१०००)	,,	,,
,, सीणीयो	५००)	५००)	,,	आधो
कुल रेख	२५००)	२५००)		

पीढियें—: ८. उदैभांण-बलोत ९. स्यांमसिंघ १०. वीरभांण ११. नाथूसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. चीमनसिंघ १४. कुसालसिंघ

खांप- भोपतोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरुदास ४. जेसो ५. मांडण ६ गोपालदास ७. भोपत-गोपालदासोत, भोपत रा वंस रा भोपतोत चांपावत कहीजै ।

भोपतोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव खाटू बडो— ९०००) ९०००) नागोर खेडा ५

पीढियें—: ८. सायबखांन-भोपतोत ९. सिवदास १०. रांमसिंघ ११. रूपसिंघ १२. कनकसिंघ १३. बाहादरसिंघ १४. धीरतसिंघ १५. हुकमसिंघ १६. दुरजणसिंघ १७ जोधसिंघ १८. विसनसिंघ

गाँव चूटीसरो— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: १३. तेजसिंघ-कनकसिंघोत[2] १४. चांदसिंघ १५. अमांनसिंघ १६. कुसालसिंघ

गाँव अेवाद— १५००) १५००) नागोर आधी

पीढियें—: १४. विजेसिंघ-तेजसिंघोत[3] १५. बखतावरसिंघ १६. मंगलसिंघ

---

१. ठि. धामली के (८) ठाकुर द्वारकादास का पुत्र ।

२. ठि. खाटू बड़ी के (१२) ठाकुर कनकसिंह का पुत्र।

३. ठि. चूटीसरे के (१३) ठाकुर तेजसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव-डाभ गांव –	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १३. अभैसिंघ-कनकसिंघोत[1] १४. हींदुसिंघ १५. नाथूसिंघ १६. सुरजमल १७. महेसदास

गांव पालोट—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १३. बखसोरांम-कनकसिंघोत[2] १४. सलेसिंघ १५.भोमसिंघ १६. सादुलसिंघ

गांव जाखेड़ो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: १३. बुधसिंघ-कनकसिंघोत १४. दीपसिंघ १५. मोतीसिंघ १६. अजीतसिंघ १७. मेघसिंघ

गांव अडवड—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: १२. गुमांनसिंघ-रूपसिंघोत[3] १३. दलुकरेण १४. मोहणदास १५, देवीसिंघ १६. रुघनाथसिंघ

गांव आगूतो—	४०००)	४०००)	कोलियो	खालसे

पीढियें—: १२. सांवतसिंघ-रूपसिंघोत[4] १३. अमरसिंघ १४. भेरूसिंघ १५. जोगीदास १६. रिड़मलसिंघ

गांव सुनारी—	२०००)	२०००)	नागोर	
,, गांव मडांगणो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें—: ९. संकरदास-सायबखांनोत[5] १०. जगतसिंघ ११. बदरीदास १२. सुरतसिंघ १३. जालमसिंघ १४. सेरसिंघ १५. बदनसिंघ १६. रुघनाथसिंघ १७. बलवंतसिंघ १८. भूरसिंघ

गांव वाटेलो—	१०००)	१०००)	नागोर	

---

१. ठि. खाटू बड़ी के (१२) ठाकुर कनकसिंह का पुत्र।
२. ,, ,, (१२) ,, ,, ,,।
३. ठि. खाटू बड़ी के (११) ठाकुर रूपसिंह का पुत्र।
४. ठि. ,, ,, (११) ,, ,, ,, ,,।
५. ,, ,, ,, (८) ,, ,, सायबखांन का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: १०. जगतसिंघ-संकरदासोत[1] ११. रुगनाथसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३. अमरसिंघ १४. किसनसिंघ १५. पदमसिंघ १६. डूंगरसिंघ १७. लालसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव ओरीठ—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. माधोसिंघ-सायबखांनोत[2] १०. मुकनदास ११. भीमसिंघ १२. सगरांमसिंघ १३. लालसिंघ १४. हणवंतसिंघ १५. गोपालसिंघ

गाँव बरणेल— ४०००) ४०००) नागोर

पीढियें —: ११. लखधीरसिंघ-मुकनदासोत[3] १२. अणदसिंघ १३. अखेसिंघ १४. अमांनसिंघ १५. सिरदारसिंघ

गाँव चाऊ— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें —: ११. हीमनसिंघ-मुकनदासोत[4] १२. रांमसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. बाघसिंघ

गाँव रांमड़ावास खुरद— १०००) १०००) जोधपुर

पीढियें —: ८. करणसिंघ-भोपतोत ९. सगतसिंघ १०. वीरमदेव ११. जूजारसिंघ १२. सिभुसिंघ १३. स्यांमसिंघ १४. ईंदरसिंघ १५. वेरीसाल १६. सादुलसिंघ

गाँव दुजार— १०००) १०००) नागोर

पीढियें —: ९. जगमालसिंघ-करणसिंघोत[5] १०. बाघसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. लालसिंघ १४. जसकरण १५. जगतसिंघ

गाँव पीरोजपुरो— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें —: ९. भगवांनदास-करणसिंघोत १०. गोयंददास ११. गजसिंघ १२. सिभुसिंघ १३. हणवतसिंघ १४. सगतीदांन

गाँव कोन्याडो— १०००) १०००) नागोर

पीढियें —: ९. भारमल-करणसिंघोत १०. किसनसिंघ ११. अणदसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४. चेनसिंघ १५. बखतावरसिंघ १६. चिमनसिंघ १७. मुकनसिंघ

खांप खेतसिंघोत चांपावत

---

१. ठि. सुनारी के (९) ठाकुर संकरदास का पुत्र ।
२. ठि. खाटू बड़ी के (८) ठाकुर सायबखांन का पुत्र ।
३. ठि. ओरीठ के (१०) ठाकुर मुकनदास का पुत्र ।
४. ,, ,, ,, (१०) ,, ,, ,, ।
५. ठि. रांमड़ावास के (८) ठाकुर करणसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव रेख कदीम हमार भरे परगना विशेष

पीढियें—: २. चांपो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. मांडण ६. गोपालदास ७. खेतसिंघ-गोपालदासोत खेतसिंघ रा वंस रा खेतसिंघोत कहीजै।

खेतसिंघोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव हबतसर— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ८. बाहादरसिंघ-खेतसिंघोत ९. गोपीनाथ १०. कीरतसिंघ ११. मदनसिंघ १२. चांदसिंघ १३. बखतसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. चिमनसिंघ

गांव सरासणो— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ८. नाहरखांन-खेतसिंघोत ९. तेजसिंघ १०. हिंदूसिंघ ११. पदमसिंघ १२. चंद्रभांण १३. जवानसिंघ १४. गुलाबसिंघ १५. केसरीसिंघ

गांव खीदावास— १२५०) १२५०) मेड़तो

पीढियें—: ११. भारथसिंघ-हिंदूसिंघोत[1] १२. दुलेहसिंघ १३. नरसिंगदास १४. बभूतसिंघ

खांप हरीदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. मांडण ६. गोपालदास ७. हरीदास-गोपालदासोत, हरीदास रा वंस रा हरीदासोत कहीजै।

हरीदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव गंठीयो— ५०००) २५००) मेड़तो

पीढियें—: ८. विजेराज-हरीदासोत ९. वीरमदेत १०. सवाईसिंघ ११. ग्यांनसिंघ १२. रांमसिंघ (खोळै) १३. चांदसिंघ १४. अमांनसिंघ १५. पीरदांन १६. छतरसिंघ

खांप आईदांनोत चांपावत

पीढियें—: २. चांपो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. मांडण ६. गोपालदास ७. दलपत ८. आईदांन-दलपतोत, आईदांन तिण रा वंस रा आईदांनोत चांपावत कहीजै।

आईदांनोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव आऊवो खास— ३०००) ३०००) सोजत

---

१. ठि सरासणी के (१०) ठाकुर हिंदूसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, कारोलियो	५००)	५००)	सोजत	
,, नरसिंगपुरो	५००)	५००)	,,	
,, काऊ	५००)	५००)	,,	
,, केसरीसिंघ रो गुडो	५००)	५००)	,,	
,, विठोरो खुरद	१०००)	१०००)	,,	
,, रांकोणो	५००)	५००)	,,	
,, रांमसिंघ रो गुडो	५००)	५००)	,,	
,, राजकियावास	१०००)	१०००)	,,	
,, देवली	४०००)	४०००)	,,	खेडा ३
,, कराडी	१५००)	१५००)	,,	
,, नवो खेड़ो	१०००)	१०००)	,,	
,, गाघाणो	१५००)	१५००)	,,	रेख नहीं
,, जेतपुरो	०)	०)	,,	
कुल रेख	१६०००)	१६०००)		

पीढियें—: ९. तेजसिंघ-ग्राईदांनोत १०. हरनाथसिंघ ११. कुसलसिंघ १२. जैतसिंघ १३. सिवसिंघ १४. माधोसिंघ १५. बखतावरसिंघ १६. कुसालसिंघ १७. देवीसिंघ १८. सिंभूसिंघ

गांव बांडसां—	२५००)	२५००)	सोज़त

पीढियें—: १३. कीलाणसिंघ-जैतसिंघोत[1] १४. नाथसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गांव लांबीयां—	३०००)	३०००)	सोजत

पीढियें—: १२. बुधसिंघ-कुसलसिंघोत[2] १३. भींवसिंघ १४. भवांनीसिंघ १५. पीरथीराज १६. गिरधारीसिंघ

गांव वीठोरो वडो—	४०००)	४०००)	सोजत
,, भगवानपुरो	३०००)	३०००)	,,
कुल रेख	७०००)	७०००)	

१. ठि. आउवा के (१२) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र।
२. ठि. ,, ,, (११) ,, कुसलसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: १२. सेरसिंघ-कुसलसिंघोत[1] १३. भोमसिंघ .१४. अभेसिंघ १५. कांनसिंघ
१६. ऊमेदसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बांमसीण—	३०००)	३०००)	सिवांणा	
,, नेहली	१०००)	१०००)	,,	

पीढियें—: १०. रूपसिंघ-तेजसिंघोत[2] ११. रांमसिंघ १२. जेतमाल १३. हटीसिंघ
१४. सोनसिंघ १५. नवलसिंघ १६. वभूतसिंघ १७ रुगनाथसिंघ

गांव हरजी—	३२००)	३२००)	जालोर	

पीढियें—: १२. जवांनसिंघ-रांमसिंघोत[3] १३. लालसिंघ १४. अचलसिंघ १५ हेमसिंघ
१६. दौलतसिंघ १७. रतनसिंघ (खोळै)

गांव जाणोवाणो—	२५००)	२५००)	सिवांणा	
,, पटाऊ	४००)	४००)	,,	
,, वोरनड़ी	५००)	५००)	जोधपुर	
कुल रेख	३४००)	३४००)		

पीढियें—: १०. रतनसिंघ-रूपसिंघोत[4] १२. अखेसिंघ १३. अमरसिंघ १४. नाथूसिंघ
१५. प्रतापसिंघ

गांव दीवांणदी—	५५००)	५५००)	जोधपुर	

पीढियें—: १०. अनोपसिंघ-तेजसिंघोत[5] ११. सुलतांनसिंघ १२. गजसिंघ
१३. नाथूसिंघ १४. वीरमदेव १५. अजीतसिंघ

गांव बांतो—	३५००)	२७००)	सोजत	आधो

पीढियें—: १३. उरजणसिंघ-गजसिंघोत[6] १४. सरूपसिंघ १५. पेमसिंघ
१६. गुमांनसिंघ

गांव भीवालियो—	१५००)	१५००)	सोजत	आधो

---

१. ठि. आउवा के (१२) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र।
२. ,, ,, ,, (६) ठाकुर तेजसिंह का पुत्र।
३. ठि. बांमसीण के (११) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, ,, (१०) ,, रूपसिंह का पुत्र।
५. ठि. आउवा के (६) ,, तेजसिंह का पुत्र।
६. ठि. दीवांणदी के (१२) ठाकुर गजसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ११. मोहणसिंघ-अनोपसिंघोत[1] १२. जालमसिंघ १३. नवलसिंघ
१४. चेनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोयट—	५०००)	३०००)	जोधपुर	
,, तीगरो	१०००)	१०००)	,	
,, नीवली-ब्रिरामणांरी	६२५)	६५५)	,,	
,, कलाली	१२५०)	१२५०)	,,	
,, टुटली	६२५)	६२५)	,,	
,, लालकी	१२५०)	१२५०)	,,	
,, अरठीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, दुदली	६००)	६००)	,,	
,, सुगलो	१०००)	१०००)	,,	
,, जेसावास	२५००)	२५००)	मेड़तो	
,, भोरणीया	३१२५)	३१२५)	सोजत	
कुल रेख	१८५२५)	१६५२५)		

पीढियें—: ६. सगतसिंघ-आईदांनोत १०. भगवतसिंघ ११. किलांणसिंघ १२. ईंदरसिंघ
१३. अचलसिंघ १४. सुलतानसिंघ

गांव आहोर—	४०००)	२०००)	जालोर	
,, गुढो	३०००)	१५००)	,,	
,, पादली	१०००)	१०००)	,,	
,, बागोतरा	१२५०)	६२५)	,,	
,, खेजडीयो	५००)	५००)	,,	
,, सीरली	१०००)	५००)	,,	आधी
कुल रेख	१०७५०)	६१२५)	परगना जालोर री	
गांव सथलांणो—	७०००)	७०००)	जोधपुर	
,, मांडावास	५०००)	५०००)	,,	
कुल रेख	१२०००)	१२०००)		

१. ठि. (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव ढारी —	३०००)	३०००)	नागोर	
,, जुजाणी	३०००)	१५००)	भीनमाल	
	————	————		
	६०००)	४५००)		
	————	————		
कुल रेख	२८७५०)	२२६२५) (गांव आहोर से जुजाणी तक)		

पीढियें—: ९. जगननाथ-आईदांनोत १०. रिणछोड़दास ११. विहारीदास १२. राजसिंघ १३. अनाड़सिंघ १४. सगतीदांन १५. जसवंतसिंघ १६. लालसिंघ १७. भवांनीसिंघ (खोळे)

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भेंसवाडो—	३०००)	३०००)	जालोर	
,, भागल-विरामणांरी	६२५)	६२५)	,,	
,, आकां रो पादर	५००)	५००)	,,	
,, चांदराई	१०००)	१०००)	,,	
,, वीठोड़ो	१०००)	१०००)	,,	
,, ऊकरडां रो पादर	१०००)	१०००)	,,	
	————	————		
	७१२५)	७१२५)		
,, चांचोडीयो	६०००)	६०००)	गोढवाड़	
,, खवासपुरो	३७५०)	३५००)	मेड़तो	
	————	————		
कुल रेख	१६८७५)	१६६२५)		

पीढियें—: १२. जगतसिंघ-विहारीदासोत[1] १३. गुलाबसिंघ १४. नवलसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चवरचां—	२०००)	२०००)	जालोर	

पीढियें—: १२. केसरीसिंघ-विहारीदासोत १३. भेरूंसिंघ १४. जीवराज

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बरवां—	१५००)	१५००)	जोधपुर	

पीढियें—: १०. नरहरदास-जगनाथोत[2] ११. ईंदरभांण १२. पदमसिंघ १३. पीरथीराज १४. कुसालसिंघ (खोळे) २५. सिरदारसिंघ

---

१. ठि. ढारी के (११) ठाकुर विहारीदास का पुत्र ।

२. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव काकांणी—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: १०. मोकमसिंघ-जगनाथोत[1] ११. बखतसिंघ १२. खुमांणसिंघ
१३. सरूपसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. गिरधरदास १६. पनेसिंघ

गाँव चीपर वाड़ो—	३०००)	३०००)	जालोर	

पीढियें—: १२. नाथूसिंघ-बखतसिंघोत[2] १३. बनेसिंघ १४. दौलतसिंघ

गाँव गोधण—	४०००)	४०००)	जालोर	
,, बुडतरो	३०००)	३०००)	,,	

पीढियें—: १०. गीरधरदास-जगनाथोत[3] ११. सिवदांनसिंघ १२. सूरजमल
१३. ग्यांनसिंघ १४. बभूतसिंघ

दो गाँव कुल रेख	७०००)	७०००)	भरे	
गाँव खारड़ो—	५०००)	५०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. सुजांणसिंघ-आईदानोत १०. रुघनाथसिंघ ११. किसनसिंघ
१२. स्यांमसिंघ १३. सिंभूसिंघ १४. रामसिंघ १५. पेमसिंघ १६. पहाड़सिंघ
१७. भारथसिंघ १८. भेरूसिंघ

गाँव सोरांणो—	४१००)	४१००)	सिवांणा	

पीढियें—: १४. ईन्दरसिंघ-सिंभूसिंघोत[4] १५. हीरसिंघ १६. मानसिंघ

गाँव खेजडली-वडी—	३०००)	३०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-रूगनाथसिंघोत[5] १२. सगरांमसिंघ १३. जालमसिंघ
१४. सालमसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. तेजसिंघ १७. रतनसिंघ

गाँव राजोद—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ११. वीसनदास-रुगनाथसिंघोत[6] १२. मनोरदास १३. विजेसिंघ
१४. सेरसिंघ १५. नवलसिंघ

खांप किलांणदासोत- चांपावत

---

१. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र।
२. ठि. काकाणी के (११) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।
३. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र।
४. ठि. खारड़ो के (१३) ठाकुर शंभुसिंह का पुत्र।
५. ठि. ,, ,, (१०) ठाकुर रघुनाथसिंह का पुत्र।
६. ,, ,, ,, (१०) ,, ,, ,,।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: २ चांपो-रिड़मलोत ३. भेरूदास-चांपावत ४. जेसो-भेरूदासोत ५. मांडण-जेसावत ६. गोपालदास-मांडणोत ७. दलपत-गोपालदासोत ८. किलांणदास-दलपतोत किलांणदास रा वंस रा किलांणदासोत चांपावत कहीजै)

किलांणदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भाखेलाव—	१०००)	१०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. गोरधन-किलाणदासोत १०. अनोपसिंघ ११. ईंदरभांण १२. किसनसिंघ १३. रूपसिंघ १४. सालमसिंघ

खांप करणोत-रूपावत, पुनावत, भीमोत

पीढियें—: १. राव रिड़मल २. करण रिड़मल रौ तिण रा करणोत कहीजै।

करणोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव काणांणो—	१२००)	१२००)	सिवाणो	खेडा ३

पीढियें—: ३. लूणकरण-करणोत ४. बीदो ५. नीवो ६. आसकरण ७. दुरगादास ८. अभैकरण ९. सिवकरण १०. फतेकरण ११. करणीदांन १२. स्यामकरण १३. केसरीकरण १४. नथकरण १५. ऊमेदकरण १६. रतनकरण १७. धनकरण

गांव मढली—	६२५)	६२५)	जोधपुर	

पीढियें—: १३. ऊमेदकरण-स्यामकरणोत[1] १४. सुमेरकरण

गांव करनियाली—	४०००)	४०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. लालकरण-फतेकरणोत[2] १२. सिवकरण १३. हमीरकरण १४ अजीतसिंघ १५. मूलराज

गांव झंवर—	३५००)	३५००)	जोधपुर	आधी

पीढियें—: ८. तेजकरण-दुरगादासोत[3] ९. विसनसिंघ १०. सेरसिंघ ११. किलांणसिंघ १२. सालमसिंघ ३. माधोसिंघ

गांव बाघावास—	२८५०)	२८५०)	जोधपुर	खेडा ३
,, बालाऊ	८२५)	८२५)	,,	
,, सबरखीयो	३२५)	३२५)	,,	

---

१. ठि. काणाणां के (१२) ठाकुर स्यामकरण का पुत्र।
२. ,, ,, ,, (११) ,, फतेकरण का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (७) ,, दुर्गादास का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, रोडवो	५२५)	५२५)	जोधपुर	खेडा ४
	———	———		
	४५२५)	४५२५)		
,, गाँव पतासर बगना	७५०)	७५०)	जोधपुर	
,, आकेलडी	२५०)	२५०)	,,	
,, वडनावो	८५०)	८५०)	,,	
,, जाणादेसर	२५००)	२५००)	,,	
;, डोहलो खुरद	२५०)	२५०)	,,	
,, मेगला वास	२५०)	०)	,,	
	———	———	—	
कुल रेख	६३७५)	६१२५)		

पीढियें—: ८. मेहकरण-दुरगदासोत[1] ९. जेतकरण १०. घनस्यांमकरण ११. पेमकरण १२. जैकरण १३. खुमांणकरण १४. सेसकरण

गांव पाडर गांव—	५००)	२५०)	जालोर

पीढियें—: १२. तेजसिंघ-पेमकरणोत[2] १३. डुंगरसिंघ १४. सिरदारसिंघ

गांव राजन वाडी—	५००)	५००)	जालोर

पीढियें—: १२. देवकरण-विमलकरणोत १३. धनसिंघ १४. सेरसिंघ

गांव समदड़ी—	३०००)	३०००)	सिवांणा
,; रनीयोद	३०००)	३०००)	जोधपुर
,, गागुरडो	६४००)	६४००)	सोजत
,, वाग़ास-खेडो	१०००)	१०००)	,,
,; दईपुडो	३०००)	३०००)	जोधपुर
	———	———	
	१६४००)	१६४००)	

पीढियें—: ८. चेनकरण-दुरगदासोत ९. गुमांनकरण १०. ईंदरकरण ११. सालमकरण १२. आईदान १३. देवकरण

गांव सूरपुरो—	२०००)	२०००)	सिवांणो
,, पालडी	४०००)	३०००)	नागोर
,, तखतपुरो	५००)	५००)	,,
	———	———	
कुल रेख	६५००)	५५००)	

---

१. ठि. काकाणा के (७) ठाकुर दुर्गादास का पुत्र ।

२. ठि. बाघावास के (११) ठाकुर पेमकरण का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: ६. बखतसिंघ-चेनकरणोत[1] १०. ऊदेसिंघ ११. जगतसिंघ १२. करणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव तिरगटी —	४००)	४००)	सिवांणा	

पीढियें—: १० सिरदारसिंघ-बखतसिंघोत[2] ११. भोमसिंघ १२ किलांणसिंघ, १३. रुघनाथसिंघ

गाँव जाजोलाई —	१५००)	१५००)	फलोधी	

(सु भाखरी-कहीजे)

पीढियें—: ७ जसकरण-आसकरणोत[3] ८. देवकरण ९. सूरजमल १०. सिरदारसिंघ ११. रतनसिंघ १२ .डूंगरसिंघ

गाँव चांदसमो —	२०००)	०)	जोधपुर-	रेख माफ

पीढियें —: ६. नथकरण-देवकरणोत[4] १०. लालकरण ११. सिवकरण १२. गोयंनदास

गाँव मुडाडो —	५०००)	५०००)	गोढवाड़	

पीढियें —: ५. कांवल-वीदारो[5] ६. मनोहरदास ७. देईदास ८. जगतसिंघ ६. सूरसिंघ १० सुजांणसिंघ ११. खुमांणसिंघ १२. ईंदरसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४ पिरथीराज १५. किलांणसिंघ

गाँव कीटणोद —	५०००)	५०००)	सिवांणा	
,, वाली	२५००)	२५००)	जालोर	
	———	———		
कुल रेख	७५००)	७५००)		

पीढियें —: ३. जांभण-करणा रौ ४. खेतसी ५. मांनसिंघ ६. सादूलसिंघ ७. अमरसिंघ ८. राजसिंघ ६. सुंदरसैण १०. नाहरखान ११. जालमसिंघ १२. मूलराज १३ कनीरांम १४. बभूतसिंघ १५. परतापसिंघ

गाँव रातडीयो —	१३५०)	१३५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ६. केसरीसिंघ-राजसिंघोत[6] १०. बखतसिंघ ११. फतेसिंघ १२. भारथसिंघ १३. ऊदेराज १४. सादूलसिंघ १५. भोपालसिंघ १६. लिछमणसिंघ

१. ठि. सगदड़ी के (८) ठाकुर चैनकरण का पुत्र।
२. ठि सूरपुरा के (६) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।
३. ठि. काणाणा के (६) ठाकुर आसकरण का पुत्र।
४. ठि. जाजोलाई के (८) ठाकुर देवकरण का पुत्र।
५. ठि. काणाणा के (४) ठाकुर वीदा का पुत्र।
६. ठि. कीटणोद के (८) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मोडी—	१५००)	१०००)	जालोर	
,, ईसरोल	१०००)	५००)	सांचोर	आधी
कुल रेख	२५००)	१५००)		

पीढियें—: ३. मांणकराव-करणा रौ ४. सारंग-मांणक रो ५. जालप-सारंग रो ६. भोपत-जालप रो ७. पीरथीराज ८. जोगीदास ९. दयालदास १०. बखतसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. दलकरण १३. कनीरांम १४. जेठकरण

खांप रूपावत

पीढियें—: १. राव रिड़मल २. रूपो-रिड़मल रो, रूपा रा वंस रा रूपावत कहीजै

रूपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कलवांणी— १०००) १०००) कोलीयो पांती आध

पांती आध में—

पीढियें—: ३. सादो रूपा रो ४. भोजराज ५. भांण ६. पूरणमल ७. डूंगरसिंघ ८. जेतसिंघ ९. नाथूसिंघ १०. माहासिंघ ११. तेजसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. वाघसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५. मंगलसिंघ

पांती जबत—

पीढियें—: १२. सिरदारसिंघ-तेजसिंघोत १३. अगरसिंघ

पांती जबत—

पीढियें—: १२. सालमसिंघ-तेजसिंघोत १३. छतरसिंघ

गांव ढाकोरीयो— २०००) १०००) नागोर

पीढियें—: ६. जेमल-भांणोत ७. खेतसी ८. भगवांनदास ९. अमरसिंघ १०. गिरधारीसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. विसनसिंघ १३. बुधसिंघ १४. मुकनसिंघ

गांव ऊदट— २०००) १०००) फलोधी

पांती आध में—

पीढियें—: ६. केसोदास-भांणोत ७. गोपालदास ८. जगनाथ ९. दुरगदास १०. अणदरांम ११. बखतसिंघ १२. नगराज १३. भोमसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. देवीसिंघ

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें—: ५. रांणो-भोजराजोत ६. दयालदास ७. भीवसिंघ ८. करमसिंघ ९. फतेसिंघ १०. वखतसिंघ ११. सवाईसिंघ १२. धनराज १३. रावतसिंघ १४.सांवतसिंघ †

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मुंजासर—	२०००)	२०००)	फलोधी	

पांती आध में—

पीढियें—: ३. तोगो-रूपावत ४. वेरसल ५. हिंगोलदास ६. जगमाल ७. वेणीदास ८. गोयंनदास ९. जगतसिंघ १०. जोधसिंघ ११. करणसिंघ १२. सूरजमल १३. भोपालसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. मदनसिंघ-सूरजमलोत १४. लूणकरण

गांव चाखु— २०००) २०००) फलोधी

पीढियें—: ३. सादो रुपावत ४. भोजराज ५ रांणो ६. दुरगदास ७. रिणछोड़दास ८. राजकरण ९. जसकरण १०. आईदांन ११. मोकमसिंघ १२. भेरूदास १३. जूजारसिंघ १४. मूलराज

गांव भेड़— १०००) १०००) फलोधी

पीढियें—: ४. भोजराज-सादारो ५ रांणो ६. दुरगदास ७. किल्यांणदास ८. रांमचंद्र ९. पदमसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. दोलतसिंघ १२. खेतसिंघ १३. ईसरीसिंघ १४. राजसिंघ

गांव जाजीवाल (राजघरी) १५०) १५०) जोधपुर

पीढियें —: १. वीजेसिंघ २. हीदुसिंघ ३. रतनसिंघ ४. सुमेरसिंघ

खांप- पुनावत

पीढियें—: १. राव चुडो २. पुनपाल-चुडावत तिण रा वंस रा पुनावत कहीजै ।

गांव खुदीयास ३०००) ५००) परबतसर

पीढियें—: ३. डुंगरसिंघ-पुनावत ४. ओनाडसिंघ ५. अजीतसिंघ ६. रूपसिंघ

---

† संवत् १८६५ में बीकानेर वाले युद्ध में काम आया ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

७. दुरजणसिंघ ८. ऊदेसिंघ ९. मानसिंघ १०. देवीसिंघ ११. विजेसिंघ
१२. रुघनाथसिंघ १३ रांमसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. सुजांणसिंघ

खांप- भीयोतां री

पीढियें—: १. राव चूडो २. भीयो-चुडावत, भीयो चुड़ावत तिण रा वंस रा भीयोत कहीजै।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खारा बेरा—	१३००)	१३००)	जोधपुर	

पांती आध में—

पीढियें—: ३. रुघनाथसिंघ ४. माहासिंघ ५. जसकरण ६. कुसालसिंघ ७. कांनसिंघ ८. हुकमसिंघ ९. रावतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. विहारीदास ११. किलांणदास १२. जीवणदास १३. रिणछोड़दास १४. छतरसिंघ १५ सिरदारसिंघ १६. पीरदांन

खांप देवराजोत

पीढियें—: १. राव बीरम २. देवराज-वीरमदेवोत, देवराज रा वंस रा देवराजोत कहीजै।

गांव सेतरावो—	८०५०)	०	जोधपुर	रेख भरे नहीं
,, जेठाणीयो	६००)	०	,,	
,, कालाऊ	२००)	०	,,	निजरांणो भरे
,, केळो	२००)	०	,,	
,, देवड़ो	२००)	०	,,	
,, खीपासर	१००)	०	,,	
,, दुरजण साल रो वास	१००)	०	,,	
,, सुगालीयो	१००)	०	,,	
,, बुडकीयो	रेख नहीं	०	,,	
,, वारणो	,,	०	,,	
,, लोडतो	१०००)	०	,,	खेडा ४
,, बाकरो	६००)	०	,,	
,, नाथडाऊ	३२५०)	०	,,	
,, देवराणीयो	४००)	०	,,	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, लोरलो	३००)	०	जोधपुर	
,, केलड़ी	२००)	०	,,	
,, सोलखीया तला	२००)	०	,,	
,, देवीसर	२००)	०	,,	
,, कानोडीयो	१००)	०	,,	
,, मोडीयो	रेख नहीं	—		

विगत गांवां री, रेख भरे नहीं निजरांणो भरे खेडा २३ री रेख १४८२५)

पीढियें—: ६. राजो-देवराजोत ४. लूणकरण ५. रणीण ६. गघव ७. भीवड ८. बीहड ९. वनो १०. भाखरसी ११. वरसल १२. जगमाल १३. भारमल १४. विहारीदांस १५. ऊरजणसिंघ १६. दोलतसिंघ १७. सूरजमल १८. मोकमसिंघ १९. बखतावरसिंघ

गांव सुवालियो — १०००) ५००) जोधपुर

पीढियें— : १७. जालमसिंघ-दोलतसिंघोत १८. छतरसिंघ ने माहाराज श्री............ पटो इनायत कियो १९. मेघसिंघ २०. मुकनसिंघ

खांप-चाडदे (चाडदेवोत)

पीढियें—: १. राव-वीरम २. देवराज ३. चाडदे–देवराजोत (देवराज रो) चाडदे रा वंस रा चाडदेवोत कहीजै ।

विगत गांवां री रेख भरे नहीं निजरांणो भरे

गांव				
गांव देछु —	०	०	जोधपुर	
,, मडलो	०	०	,,	
,, कोलु	०	०	,,	आदी
,, ठाडीयो	०	०	,,	
,, सगरां	०	०	,,	
,, ईदांरी ढांणी	०	०	,,	
,, रोतिंड	०	०	,,	

पीढियें — : ४. चांपो चाडदे रो ५. बणवीर ६. रांमदास ७. मांडण ८. हाजी ९ खेतसी १०. तेजमाल ११. बलु १२. हरजी १३. सिरदारसिंघ १४. दांनसिंघ १५. वाहादरसिंघ १६. नवलसिंघ

गांव गीलाकोर— ४५०) ४५०) जोधपुर

पांती आध में— (रेख-२२५)

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ४. कुपो—चाडदे रो ५. कांनडदे ६. बाघो ७. पीपो ८. सादो ९. सुरतांणसिंघ १०. खुमांणसिंघ ११. जोगीदास १२. विजेसिंघ १३. रांमसिंघ १४. ईंदरसिंघ † १५. भारथसिंघ १६. पीरदांन

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती आध में—रेख	२२५)			

पीढियें—: ७. पंचाँयण-बाघा रो ८. सायर ९. महेस १०. नेतसी ११. रासो १२. सुंदर १३. देदो १४. नरो १५. रायमल १६. भेरूसिंघ * १७. भोमसिंघ

खांप-गोगादे

१. राव-वीरम २. गोगादे-बीरमोत, गोगादे-बीरमोत रा वंस रा गोगादे कहीजें।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव केतु—	३८२९)	०	जोधपुर	खेड़ा ४

खेड़ा ४-वडोवास १

जेतावतां रो वास १

भला रो वास १

नीबा रो वास १

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सेखाला—	२०००)	०	जोधपुर	खेड़ा ४
,, भुंगरो	२५०)	०		१-सेखालो वास
,, पनासरियो	२५०)	०	,,	१-करणा रो वास
,, तेनो	५००)	०	,,	१-देवडा रो वास
,, वागडीयोवास	५००)	०	,,	१-सांखला रो वास
,, गुडो	५००)	०	,,	
,, चोराकुवो	५००)	०	,,	
,, रांमसीसर	५००)	०	,,	खेड़ा ३
,, नीमड़ी	२५०)	०	,,	१-तोलीसर
,, रतीयो	१५०)	०	,,	१-कोलावास
,, तिवांणो	रेख नहीं		,,	१-राजवारो वास
,, महेस रो वास	,,		,,	
,, जेसा रो वास	,,		,,	
,, खाबडास	,,		,,	

† सवत् १८६३ रा घेरा में हाजर थो तिण बंदगी सूं पटो पायो।

* संवत् १८६३ के घेरे में हाजिर रहा जिससे गांव पाया।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, नाथा रो वास	,,	रेख नहीं	जोधपुर	

पीढियें —: ३. करमसी-गोगादेवोत ४. खेतसी ५. बीसो ६. दासो ७. भीमसिंघ ८. सूजो ९ रतनसिंघ १० रासो ११. भगवांनदास १२. राजसिंघ १३. नाहारखान १४. नाथुसिंघ १५. सबलसिंघ १६. रांमसिसघ

गाँव खिरजां— २३००) ० जोधपुर

रावास-४ १-ओजास १-भोजा रो वास १-जेता रो वास १-सांमलाँ (निजरांणो भरे)

पीढियें - : १३. लाडखांन-राजसिंघोत १४. जसकरण १५. जालमसिंघ १६. नेवसी १७. हिमतसिंघ १८. लालसिंघ

खांप महेचा

१. रावल-सलखो २. रावल-मलीनाथ

महेचां रा ठिकांणां री विगत

गाँव थोब —	२०००)	२०००)	जोधपुर
,, नरसिंग रो वास	३२५)	३२५)	,,
,, तिरसी गडी	२५०)	२५०)	,,
,, जेतावतां रो वास	२५०)	२५०)	,,
;, माडलवास	१७५)	१७५)	;,
,, काना रो गुडो	१६३)	१६३)	,,
कुल रेख	३१६३)	३१६३)	

पीढियें —: ३. जगमाल-मलीनाथ री ४. मंडलीक ५. भोजराज ६. बीदो ७. नीसल ८. वरसिंग ९. हापो १०. मेघराज ११. कलियाणमल १२. बीरमदे १३. केसवदास † १४. मनोरदास § १५. विजेसिंघ (थोब रो पटो पायो) १६. करणसिंघ १७ सिरदारसिंघ १८. जेसिंघ १९. मुकनसिंघ २०. ऊदेसिंघ २१. किलांणसिंघ २२. कुसालसिंघ

गाँव देहुरियो— ५००) ५००) जोधपुर

पीढियें—: १७. सरूपसिंघ-करणसिंघोत १८. चुतरसिंघ १९. जालमसिंघ २०. अणदसिंघ २१. वीडदसिंघ २२. बभूतसिंघ

गाँव पादरडी—(खुरद) २००) २००) सिवांणो

पीढियें—: ११. दूदो मेगराजोत १२. जगमाल १३. भारमल १४. जैतमाल १५. किलांणसिंघ १६. प्रतापसिंघ १७. स्यांमसिंघ १८. गोपालसिंघ १९. गजसिंघ

गाँव नोहरो— ३०००) ३०००) जालोर

---

† उज्जैन के युद्ध में महाराजा जसवंतसिंह की सेना में काम आया।

§ केसवदास के शामिल उज्जैन में काम आया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: १७. बखतसिंघ-प्रतापसिंघोत १८. सत्रुसिंघ १९. रामसिंघ २०. मूलसिंघ २१. छतरसिंघ

खांप जुजांणोयांरो

जुजांणोयां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव थापरण—	४००)	४००)	सिवांणा	

पांती ग्राध में—

पीढियें —: देवीसिंघ, सबलसिंघ, हरनाथसिंघ, सुजांणसिंघ, ग्रमरसिंघ, ग्रनाड़सिंघ

पांती ग्राध में—

पीढियें —: स्यांमसिंघ, हररांम, ग्रोपो, ऊदेराज, मालदांन, चुतरसिंघ

खांप मंडला (मंडलावत)

१. राव रिड़मल २. मंडलो-रिड़मलोत, तिण रा वंस रा (मंड़ला) मंडलावत कहीजै।

मंडलावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव भवराणी—	३७५०)	३७५०)	जालोर
,, गुडो (डुंगरपुर)	५००)	०	,,
,, पालडी	२९००)	१०००)	मेड़ता
कुल रेख	७१५०)	४७५०)	

पीढियें—: ३. सांईदास मंडला रो ४. भांडो ५. हेमराज ६. ठाकुरसी ७. सुंदरदास ८. राजसिंघ ९. भावसिंघ १०. चंद्रभांण ११. डूंगरसिंघ १२. सिवदांनसिंघ १३. किलांणसिंघ १४. सरूपसिंघ १५. नवलसिंघ १६. लालसिंघ

गांव चोढां—	३०००)	३०००)	जोधपुर
,, घाणसां	३०००)	३०००)	जालोर
	६०००)	६०००)	

पीढियें—: १३. सेरसिंघ-सिवदांनसिंघोत[१] १४. गुमांनसिंघ १५. भोपालसिंघ

१. ठि. भंवराणी के (१२) ठाकुर सिवदानसिंह का पुत्र।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सिरांणो—	१२५०)	१२५०)	जालोर	

पीढियें —: १२. मांनसिंघ-डूंगरसिंघोत[1] १३. जेतसिंघ १४. हिमतसिंघ

गांव पाणवो—	१०००)	१०००)	जालोर	
,, वसवांणो	१०००)	१०००)	नागोर	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पीढियें—: ११. केसरीसिंघ–चंद्रभांणोत[2] १२. जोधसिंघ १३. भोमसिंघ १४. नारांणसिंघ

गाँव वीसरोठ—	१५००)	१५००)	जालोर	

पीढियें—: ७. दलपत-ठाकुरसी रो[3] ८ अमरसिंघ ९. लाडखांन १०. जुंजारसिंघ ११. विसनसिंघ १२. मालमसिंघ १३ जवानसिंव १४. कुसालसिंघ

गाव वसवांणी—	१०००)	१०००)	नागोर	आदी

पीढियें ‥: १२. तोगसिंघ-विसनदासोत[4] १३. मोकमसिंघ १४. देवीसिंघ

गाँव चांवडीयाक—	२०००)	२०००)	सोजत	

पीढियें—: ७ नरहरदास–ठाकुरसी रो[5] ८. देईदास ९ उदेसिंघ १०. रांमसिंघ ११. पदमसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३. तेजसिंघ १४. रतनसिंघ १५. सादुलसिंघ

गांव खुडो-वडी	१५००)	१५००)	मेड़ता	आधी

पीढियें—: ५. वीदो–भांडा रो[6] ६. रायमल ७. नाथो ८. चुतरभुज ९. भगवानदास १०. जगराम ११. लालसिंघ १२. अजीतसिंघ

गाँव नेणीयास—	२५०)	२५०)	जालोर	
,, सांवलीयावास	१२५)	१२५)		

---

१. ठि. ,, (११) डूंगरसिंह का पुत्र ।
२. ठि. भंवराणी के (१०) ठाकुर चंद्रभाण का पुत्र ।
३. ठि. ,, (६) ,, ठाकुरसी का पुत्र ।
४. ठि. वीसरोठ के (११) ,, विसनदास का पुत्र ।
५. ठि. भंवराणी के (६) ,, ठाकुरसी का पुत्र ।
६. ठि. ,, (४) ,, भांडा का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ७. रूपसिंघ-रायमलोत[1] ८. नथराम ९. लिखमीदास १०. वागदास ११ गिरधरदास १२. डूंगरसिंघ १३. मांनसिंघ १४. सूरतसिंघ १५. मंगलसिंघ

खांप-पातावत

१. राव-रिड़मल २. पाती रिड़मलोत, तिण रा वंस रा पातावत कहीजै ।

पातावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आऊ—	५०००)	५०००)	फलोधी	
,, भींयासर	४५००)	४५००)	,,	
,, वालासर	५००)	५००)	,,	
,, नोखड़ो	५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

पीढियें—: ३. हमीरसिंघ ४. रतनसिंघ ५. किलांणदास ६. रांमसिंघ ७. ईसरदास ८. राजसिंघ ९. रिणछोडदास १०. सांवलदास ११. खींवकरण १२. पिरथी-राज १३. सरूपसिंघ १४. हरीसिंघ

गांव पलीणो—	२५००)	२५००)	,,	

पीढियें—: ११. सुंदरदास–सांवलदासोत[2] १२. छतरसिंघ १३. मूलसिंघ १४. सिवनाथ-सिंघ

गांव बरजांगसर—	२०००)	२०००)	फलोधी	
,, जेरीयो	१०००)	५००)	,,	
कुल रेख	३०००)	२५००)		

पीढियें—: १० अचलदास-रिणछोड़दासोत[3] ११. पेमसिंघ १२. रायभांण १३. फते-सिंघ १४. रावतसिंघ १५. पीरदांन

गांव घटीयालो—	४०००)	४०००)	फलोधी	

---

१. ठि. खुडी वडी के (६) ठाकुर रायमल का पुत्र ।
२. ठि. आऊ के (१०) ठाकुर सांवलदास का पुत्र ।
३. ठि. ,, , (९) ,, रिणछोड़दास का पुत्र ।

T　　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ९. सूरतसिंघ-राजसिंघोत[१] १०. सिवदांनसिंध ११. सगरांमसिंघ
१२. वांकीदास १३. रांमसिंघ १४. हरनाथसिंघ १५. गुमांनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोहीणो—	३०००)	३०००)	जोधपुर	पांती ॥=)॥।

पांती दोय में—

पीढियें—: ११. गोरखदांन-सिवदांनसिंघोत[२] १२. जोधसिंघ १३. भोपालसिंघ
१४. बभूतसिंघ १५. ऊदेसिंघ

पांती तीजी में— गांव पड़ीयाल में मिले हैं।

पीढियें—: ९. अजबसिंघ–मुकनसिंघोत १०. पदमसिंघ ११. सेरसिंघ १२. अभेसिंघ
१३. दलपतसिंघ

गांव गोदरड़ी —	१०००)	१०००)	फलोधी	
,, गागरडी	०	०	,,	सूनो

पीढियें -: १४. जसवंतसिंघ-भोपालसिंघोत[३] १५. रिणछोड़दास

गांव ग्रामलो—	२०००)	२०००)	फलोधी

पीढियें —: १०. हिमतसिंघोत-सूरतसिंघोत[४] ११. जसकरण १२. रूपसिंघ १३. रावतसिंघ

गांव ऊनावडो—	५००)	५००)	फलोधी

पीढियें—: ११. जसकरण-हिमतसिंघोत[५] १२. अभेसिंघ १३. गोयंनदास
१४. समरथसिंघ

गांव मीठड़ीयो—	६२५)	६२५)	फलोधी

पीढियें—: ८. भवांनीदास-ईसरदासोत[६] ९. वेणीदास १०. हिरदेरांम ११. दांनसिंघ
१२. सिंभूसिंघ १३. लालसिंघ १४ वनेसिंघ १५. कुसलसिंघ

गांव केरलो—	२५०)	२५०)	फलोधी

पीढियें—: ७ मनोहरदास-रांमसिंघोत[७] ८. ग्रासकरण ९. दलपत १०. जीवणसिंघ
११. विजेरांम १२. करणसिंघ १३. मदनसिंघ

---

१. ठि. आऊ के (७) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।
२ ठि. घटियाली के (१०) ठाकुर शिवदानसिंह का पुत्र।
३. ठि. रोहीणो (पांती दो) के (१३) ठाकुर भोपालसिंह का पुत्र।
४. ठि. घटियाली के (९) ठाकुर सूरतसिंह का पुत्र।
५. ठि. आमलो के (१०) ठाकुर हिम्मतसिंह का पुत्र।
६. ठि. आउ के (७) ठाकुर ईसरदास का पुत्र।
७. ठि. आउ के (६) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लांडोयो—	१०००)	१०००)	नागोर	आसांमी २

पांती आध में—

पीढियें—: ६. नगराज-किलांणदासोत[1] ७. चांदसिंघ ८. राजसिंघ ९. पीरथीराज १०. कनीरांम ११. फतेसिंघ १२. सिंभूसिंघ १३. उरजनसिंघ १४. जेतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. सरूपसिंघ-सिंभूसिंघोत[2] १४ सादुलसिंघ १५. जीवणसिंघ

गांव पीपासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. दुलेसिंघ-राजसिंघोत[3] १०. अखेसिंघ ११. भेरूंसिंघ १२. जगरूपसिंघ १३. मगलसिंघ

गांव सेवड़ी—	१०००)	१०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ९. पिरथीराज—राजसिंघोत[4] १०. कनीरांम ११. लिखमीदास १२. मोहनसिंघ १३. छतरसिंघ १४. मालमसिंघ १५. सांवतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ४. परवतसिंघ-हमीरसिंघोत[5] ५. सींगण-परबत रौ ६. हेमराज ७. उरजनसिंघ ८. जगनाथ ९. किसनदास १०. देईदास ११. बीको १२. अनोपसिंघ १३. जेतसिंघ १४. सगरामसिंघ १५ मेघराज १६. सिवदांनसिंघ १७. रामसिंघ

गांव ऊनावडो—	५००)	५००)	फलोधी	

पीढियें—: ८. जगनाथ—चांदसिंघोत[6] ९. बीको १०. गिरधरदास ११. कीरतसिंघ १२. हिंदूसिंघ १३. गोयंददास १४. समरथसिंघ

गांव भगु—	२०००)	२०००)	नागोर	

---

१. ठि आऊ के (५) ठाकुर किलांणदास का पुत्र ।
२. ठि. लाडियो के (१२) ठाकुर शंभुसिंह का पुत्र ।
३. ठि. ,, (८) ,, राजसिंह का पुत्र ।
४. ठि. ,, (८) ,, ,, ,,
५. ठि आऊ के (३) ,, हमीरसिंह का पुत्र ।
६. ठि. लाडियो के (७) ठाकुर चांदसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: ८. किसनदास-चांदसिंघोत[1] ९. मेघराज १०. पेमसिंघ ११. सुरतांणसिंघ १२. सिभूसिंघ १३. भींवसिंघ १४. मोतीसिंघ १५. मंगलसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव करणु—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	
,, लुभावसीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, वाभुवास	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	३२५०)	३२५०)		

पीढियें —: १०. रूपसिंघ–मेघराजोत[2] ११. मोहकमसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. उदेसिंघ १४. पीरदांन

गांव खारीयो वडो—	१५००)	१५००)	मेड़तो	आधो

पीढियें —: १०. कुसलसिंघ-मेघराजोत[3] ११. वखतसिंघ १२. भींवसिंघ १३. पीरदांन

गाँव चोटीलो—	२५००)	२५००)	जोधपुर

पीढियें —: ५. मालमसिंघ–रतनसिंघोत ६. राणो ७. मांडण ८. भगवांनदास ९. पिरथीराज १०. सूरजमल ११. तेजमल १२. सुरतांणसिंघ १३. जसवंतसिंघ १४. भवानीदास १५. अचलसिंघ १६. अमरसिंघ

गाँव अजासर—	६२५)	६२५)	जोधपुर

पीढियें : ७. देईदास-रांणोत[4] ८. रामदास ९. दयालदास १०. केसरीसिंघ ११. फतेसिंघ १२. हरीसिंघ १३. गुमांनसिंघ १४. रतनसिंघ १५. विसनसिंघ

गाँव केलणसर—	२५००)	२५००)	फलोधी	आसामी २ रे

पांती आध में—

पीढियें —: ५. जेमल-रतनसिंघोत[5] ६ गोपालदास ७. रांमचंदर ८. मयामल ९. विजेसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. खींवकरण १२. चतरसिंघ १३. रावतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १२. मदनसिंघ-खींवकरणोत[6] १३. किलांणसिंघ

---

१. ठि. लाडियो के (७) ठाकुर चांदसिंघ का पुत्र।
२. ठि. भगु के (९) ठाकुर मेघराज का पुत्र।
३. ,, ,, (९) ,, ,, ,,
४. ठि. चोटीला के (६) ठाकुर राणा का पुत्र।
५ ठि. आऊ के ४) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।
६. ठि. केलणसर (पहली पांती) के (११) ठाकुर खींवकरण का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मोटेई—	१५००)	१५००)	फलोधी	
,, चिडी	४५०)	४५०)	,,	
	———	———		
कुल रेख	१९५०)	१९५०)		

पीढियें—: ११. मूलसिंघ-जोरावरसिंघोत[1] १२. कुसालसिंघ १३. खुमांणसिंघ १४. लखसिंघ

गाँव पड़ीयाल—	४४००)	४४००)	फलोधी	
,, देगावडी	६००)	६००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पांतो आध में—

पीढियें—: ८. मुकनदास-रामचंदोत[2] ९. जोगीदास १०. हठीसिंघ ११. सुखसिंघ १२. भोमसिंघ १३. चेनसिंघ १४. रणजीतसिंघ

पांतो आध में—

पीढियें—: ७. मनोहरदास-गोपालदासोत[3] ८. जोगीदास ९. रायसिंघ १०. मेघराज † ११. वीरभांण १२. रिधसिंघ १३. रावतसिंघ १४. अजीतसिंघ

गाँव घोलासर—	४०००)	४०००)	फलोधी	

पीढियें—: १३. लालसिंघ-भोमसिंघोत[4] १४. धनसिंघ

गाँव रणसीसर—	१०००)	१०००)	फलोधी	

पीढियें—: ९. तिलोकसिंघ-मुकनदासोत[5] १०. जोरावरसिंघ ११. भोपालसिंघ १२. बखतावरसिंघ १३. दोलतसिंघ

गाँव मेहाकोर —	६२५)	६२५)	फलोधी	

---

† यह संवत् १८४७ में मेड़ता के युद्ध में काम आया।
१. ठि. केलणसर (पहली पांती) के (१०) ठाकुर जोरावरसिंह का पुत्र।
२. ठि. केलणसर (पहली पांती) के (७) ठाकुर रामचंद्र का पुत्र।
३. ठि. ,, ,, (६) ,, गोपालदास का पुत्र।
४. ठि. पड़ियाल ,, (१२) ,, भोमसिंह का पुत्र।
५. ठि. ,, ,, (८) ,, मुकनदास का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ६. भोपत-जैमलोत ७. नरहरदास ८. आसकरण ९. ऊदेसिंघ
१०. जीवणदास ११. रांमसिंघ १२. करणसिंघ - १३. खुमांणसिंघ
१४. सादुलसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लूणो—	६२५)	६२५)	फलोधी	

पांती आध में—

पीढियें —: ८. गोयंनदास-नरहरदासोत[1] ९. चांदसिंघ १०. करमसिंघ ११. धीरतसिंघ
१२. हिंदुसिंघ १३. मेघराज १४. रावतसिंघ १५. जोगराज

पांती आध में—

पीढियें—: ११. मूलसिंघ-करमसिंघोत[2] १२. भवानीसिंघ १३. विसनसिंघ
१४. विड़दसिंघ

गांव लुंबावसीयो—	६२५)	६२५)	फलोधी	

पीढियें—: ११. केसरीसिंघ हरकिसनोत १२. बाघसिंघ १३. मेघराज १४. भोजराज
१५. भोपालसिंघ १६. वभूतसिंघ

गांव बुगडी—	७००)	७००)	फलोधी	आसांमी ३ रे
„ हरबुसर	८००)	८००)	,,	
कुल रेख	१५००)	१५००)		

पांती तीजी में— । –)॥ (पहली)

पीढियें —: ७. दयालदास-भोपतोत ८. केसरीसिंघ ९. तेजमाल १०. जेतसिंघ
११. बांकीदास १२. अनाड़सिंघ १३. सुखसिंघ

पांती तीजी में— । –)। (दूजी)

पीढियें —: १२. नाराणदास-जेतसिंघोत १३. दुरजणसिंघ १४. नाथुसिंघ १५. राजसिंघ

पांती तीजी में— ।–)। (तीजी)

पीढियें—: ८. भागसिंघ-दयालदासोत[3] ९. करणसिंघ १०. जूंजारसिंघ ११. सरूपसिंघ
१२. ऊमेदसिंघ १३ मोहवतसिंघ १४ सिवनाथसिंघ

---

१. ठि. मेहाकोर के (७) ठाकुर नरहरदास का पुत्र।
२. ठि. लूणो के (१०) ठाकुर करमसिंह का पुत्र।
३. ठि. बुगड़ी के (७) ठाकुर दयालदास का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जोधियासी—	२०००)	२०००)	नागोर	

(गांव जोधियासी सेवड़ी ग्राधी में मिले है।)

पीढियाँ ४. परबतसिंघ-हमीरसिंघोत में मिले है।

पीढियें—: १०. बनेसिंघ-किसनदासोत[1] ११. बांकीदास १२. सगरांमसिंघ
१३. ग्रनाडसिंघ १४. सादुलसिंघ

गांव मांडवली—	५००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ११. दुरजणसिंघ-बनेसिंघोत[2] १२. सेरसिंघ १३. चांदसिंघ १४. विसनसिंघ

गांव मूडासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ४. गंगादास-हमीरसिंघोत[3] ५. नेतसी ६. हिंगोलदास ७. दुरजणसाल
८. सेखराज ९. रामदास १०. गणेसदास ११. बदरीदास १२. कीरतसिंघ
१३. सभासिंघ १४. सूरजमल १५. खीवराज १६. लिछमणसिंघ

गांव चीमणवो—	१५००)	१५००)	फलोधी	

पीढियें—: ८. खेतसिंघ-दुरजनसालोत[4] ९. सगतसिंघ १०. भगवतसिंघ ११. जोधसिंघ
१२. ईंदरसिंघ १३. सगरांमसिंघ १४. बाघसिंघ १५. मोहकमसिंघ
१६. करणसिंघ १७. सूरसिंघ

गांव रिडमलसर—	१६२५)	१६२५)	जोधपुर	ग्रासांमी २ रे
,, पचाणसर	३७५)	३७५)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पांती ग्राध में—

पीढियें —: ३. लूभो-पातावत ४. पिरथीराज ५. सेसमल ६. कनीरांम ७. करमसिंघ
८ सादुलसिंघ ९. ग्रासकरण १०. तेजमाल ११. सुंदरसिंघ १२. सवाईसिंघ
१३. सुमेलसिंघ १४. गुलाबसिंघ

पांती दूजी ग्राध री—

---

१. ठि. सेवड़ी (पांती दो) के (९) ठाकुर किसनदास का पुत्र।
२. ठि. जोधियासी के (१०) ठाकुर बनेसिंह का पुत्र।
३. आउ के (३) ठाकुर हमीरसिंह का पुत्र।
४. ठि. मूडासर के (७) ठाकुर दुरजनसाल का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: १४. जोधसिंघ-सुमेलसिंघोत[१] १५. गिरवरसिंघ

खांप कूंपावत

पीढियें—: १. राव-रिडमल २. अखेराज ३ मेहेराज ४. कूपो, तिण रा कूंपावत कही जैं।

खांप मांडणोत कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५. मांडण-कुंपावत, तिण रा मांडणोत-कूंपावत कहीजै ।

मांडणोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आसोप—	१८७५०)	१८७५०)	जोधपुर	
,, कुकडदो	२०००)	२०००)	,,	
,, रामपुरो	२७५०)	२७५०)	,,	
,, रडोद	४५००)	४५००)	,,	आधी
,, ककडाय	३०००)	३०००)	नागोर	
	———	———		
कुल रेख	३१०००)	३१०००)		

पीढियें—: ६. खींवकरण-मांडणोत ७. किसनदास ८. मुकनदांस ९. जेतसिंघ १०. रांमसिंघ ११. कनीरांम १२. दलपत १३. महेसदास १४. रतनसिंघ १५. केसरीसिंघ १६. बखतावरसिंघ १७. सिवनाथसिंघ (खोळै) १८. चैनसिंघ (खोळै)

गांव गर्जसिंघपुरो—	७५००)	७५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. छतरसिंघ-रांमसिंघोत[२] १२. जगरांमसिंघ १३. भारथसिंघ १४. बाघसिंघ १५. माधोसिंघ १६. अचलसिंघ

गांव रड़ोद—	४५००)	४५००)	जोधपुर	आधी आसांमी ३ रे
पांती ≡।॥ रेख	२०००)			

पीढियें—: १३ सालमसिंघ-जगरांमसिंघोत[३] १४. गुलाबसिंघ

पांती =)॥। छठी रेख	१५००)			

---

१. ठि. रिड़मलसर (पहली पांती) के (१३) ठाकुर सुमेलसिंह का पुत्र ।

२. ठि. आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।

३. ठि. गर्जसिंघपुरो के (१३) ठाकुर जगरांमसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें— १३. सायबसिंघ-जगरांमसिंघोत[1] १४. खुमांणसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती –)॥ री रेख—	१०००)			

पीढियें—: १३. पेमसिंघ-जगरांमसिंघोत[2] १४. अजीतसिंघ १५. भोमसिंघ (खोळै)

गांव गारासणी—	२५००)	२५००)	जोधपुर	
,, जबरखीयो	१०००)	१०००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	३५००)	३५००)		

पीढियें—: ११. सिरदारसिंघ-रांमसिंघोत[3] १२. जोधसिंघ १३. अणंदसिंघ १४. ईसरीसिंघ १५. अभेकरण १६. जसवंतसिंघ १७. सिवनाथसिंघ

गांव नेतडीयां—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढियें—: १२. पिरथीराज-सिरदारसिंघोत[4] १३. अनोपसिंघ १४. नराणदास १५. जीवणदास १६. गुमांनसिंघ

गांव वासणी—	३०००)	०	नागोर	आसोप रा कांमेती

पीढियें—: १२. जोदसिंघ-सिरदारसिंघोत[5] १३. अणदसिंघ १४. हरीसिंघ १५. करणसिंघ १६. मालमसिंघ

गांव सारंगवासणी—	१०००)	१०००)	मेड़ता	

पीढियें:— ११. विसनसिंघ-रांमसिंघोत[6] १२. नाहरसिंघ १३. खुमांणसिघ १४. सोभसिघ

गांव गोयंदपुरो—	७५०)	७५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. मनोहरदास-मुकनदासोत १०. सुभकरण ११. दलकरण १२. जवांनसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. मूलसिंघ

गांव खारीयारी वासणी—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	

पीढियें —: ८. दुवारकादास-किसनदासोत[7] ९. मोकमसिंघ १०. चंद्रभांण ११. आईदांन

---

१. ठि. गजसिंहपुरो के (१३) ठाकुर जगरांमसिंह का पुत्र ।

२. ,, ,, (१३) ,, ,, ,, ।

३. ठि. आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।

४. ठि. गारासणी के (११) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र ।

५. ठि. गारासणी के (११) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र ।

६. ठि. आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।

७. ठि. आसोप के (७) ठाकुर किसनदास का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१२. सवाईसिंघ १३. नवलसिंघ १४. सेरसिंघ १५. पेमसिंघ
१६. लिछमणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नाडसर—	५०००)	५०००)	जोधपुर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ७. राजसिंघ-खींवकरणोत[1] ८. नाहरखांन ९. सूरजमल १०. कीरतसिंघ ११. वाहादरसिंघ १२. वगसीरांम १३. ऊदेसिंघ १४. करणसिंघ १५. जवानसिंघ १६. ईंदरसिंघ १७. रुघनाथसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. सूरतसिंघ-वगसीरांमोत[2] १४. मोतीसिंघ १५. पाहाड़सिंघ

गाँव राजोद—	४०००)	४०००	मेड़ता

पीढियें—: १४. अनोपसिंघ-सुरतांणसिंघोत[3] १५. हरीसिंघ

गाँव पीराऊ—	५००)	५००)	नागोर

पीढियें—: जैसिंघ-राजसिंघोत[4] ९. विजेसिंघ १०. सायबसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. मोकमसिंघ १३. नाथुसिंघ १४. मदनसिंघ १५. गुमांनसिंघ १६. नाराणदास

गाँव सरगीयो वडो—	८००)	८००)	जोधपुर
,, सरगीयो तीजो	८००)	८००)	,,
कुल रेख	१६००)	१६००)	

पीढियें—: ७. कांनसिंघ-खींवकरणोत[5] ८. भावसिंघ ९. फतैसिंघ १०. अणदसिंघ ११. बाहादरसिंघ १२. उमेदसिंघ १३. सूरतसिंघ १४. समरथसिंघ १५. भोमसिंघ

गाँव भांनावास—	२०००)	२०००)	मेड़ता

---

१. ठि. आसोप के (६) ठाकुर खींवकरण का पुत्र।
२. ठि. नाडसर (पहली पांती) के (१२) ठाकुर वगसीराम का पुत्र।
३. ठि. ,, ,, (१३) ,, सूरतसिंह का पुत्र।
४. ठि. ,, ,, (७) ,, राजसिंह का पुत्र।
५. ठि. आसोप कें (६) ठाकुर खींवकरण का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: १०. चतरसिंघ-फतैसिंघोत[1] ११. जसकरण १२. मोहनसिंघ १३. फोजसिंघ १४. लिछमणसिंघ १५. जूंजारसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव चांदेलाव -	३२८०)	३२८०)	जोधपुर	
,, रूपाथल	५०००)	५०००)	नागोर	
	-- ---	———		
कुल रेख	८२८०)	८२८०)		

पीढियें —: ६. पूरणमल-माँडणोत ७. वेणीदास ८. स्यामसिंघ ९. हिमतसिंघ १०. छतरसिंघ ११. मोहनसिंघ १२. धीरतसिंघ १३ देवसिंघ १४. किलांणसिंघ १५. ईंदरसिंघ १६. जवारसिंघ

गाँव खेराट—	१५००)	१५००)	नागोर	

पीढियें—: ९. सूरजमल-स्यांमसिंघोत[2] १० जीवणसिंघ ११ सिरदारसिंघ १२. जेसिंघ १३. सगरांमसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. सगतीदांन

गाँव चांमां—	४०००)	४०००)	कोलिया	

पीढियें—: १०. हरनाथ-सूरजमलोत ११. केसरीसिंघ १२. हींदुसिंघ १३. अमरसिंघ १४. दुलेसिंघ १५. अरजनसिंघ

गांव सांडावास—	१०००)	१०००)	मेड़ता	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ११. जगरांमसिंघ-हरनाथसिंघोत[3] १२. पाहाड़सिंघ १३. दलेलसिंघ १४. भेरूसिंघ १५. सवलसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. अजीतसिंघ-पाहाड़सिंघ १४ भगवतसिंघ

गांव सागू वडी—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. दीपसिंघ-सूरजमलोत[4] ११. कनीरांम १२. सिंभुसिंघ १३. रांमसिंघ १४. बभूतसिंघ १५ चिमनसिंघ

गांव ऊण —	२०००)	२०००)	नागोर	

---

१. ठि- सरगियो वडो के (९) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र।
२. ठि. चांदेलाव के (८) ठाकुर स्यामसिंह का पुत्र।
३. ठि. चांमां के (१०) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
४. ठि. नाडसर के (९) ठाकुर सूरजमल का पुत्र।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें - : ११. भोजराज-हरनाथसिंघोत[1] १२ नाथूसिंघ १३. रतनसिंघ १४. दुरजणसिंघ १५ सगतीदांन

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नदवांण —	५००)	०	नागोर	

पीढियें —: ११. तेजसिंघ-दीपसिंघोत[2] १२. भेरूसिंघ १३. बनेसिंघ १४. चिमनसिंघ १५. अगरसिंघ

गाँवबोडीद-बडी —	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. सांवलदास-स्यांमसिंघोत[3] १० जीवणसिंघ ११. सिरदारसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३. भारथसिंघ १४. दुरजणसिंघ १५. पीरदान १६. मूलसिंघ

गाँव सेदरीयो—	५००)	५००)	नागोर	

पीढियें —: ९. चतरसाल-स्यामसिंघोत[4] १०. सुजांणसिंघ ११. सूरजमल १२. सायबसिंघ १३. बखतावरसिंघ १४. स्यामसिंघ

गाँव मीठड़ी —	१२५०)	१०००)	जालोर	२५०) रेख माफ
,, रांवणीयांणौ	१५६२॥)	१५६२॥)	जोधपुर	पांती ।)
कुल रेख	२८१२॥)	२५६२॥)		

पीढियें—: ८. सबळसिंघ-वेणीदासोत[5] ९ ईसरदास १०. आसकरण ११. अनोपसिंघ १२. केसरीसिंघ १३ भोमालसिंघ १४. ग्यांनसिंघ

गाँव जेतीवास—	७००)	७००)	जोधपुर	

पीढियें - : ६. दलपत-मांडणोत ७. सबलसिंघ ८. रांमसिंघ ९. रुगनाथसिंघ १०. चंदरभांण ११. मुकनसिंघ १२. रतनसिंघ

गाँव रांमासणी—	६२५०)	६२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. मदनसिंघ-रांमसिंघोत[6] १०. भावसिंघ ११. सुजांणसिंघ १२. जेतसिंघ १३. भवांनीसिंघ १४. अभेसिंघ १५. चांदसिंघ

---

१. ठि. चांमां के (१०) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र ।
२. ठि. सागूवड़ी के (१०) ठाकुर दीपसिंह का पुत्र ।
३. ठि. चांदेलाव के (८) ठाकुर स्यामसिंह का पुत्र ।
४. ठि. ,, (८) ,, ,, ,, ।
५. ठि. ,, (७) वेणीदास का पुत्र ।
६. ठि. जैतीवास के (८) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पारासरो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. विसनसिंघ-रांमसिंघोत[1] १०. जालमसिंघ ११. अजबसिंघ १२. भारथ-सिंघ १३. सिवनाथसिंघ १४. जोरावरसिंघ

गांव सुहांणो —	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. केसरीसिंघ-सबलसिंघोत[2] ९. अमरसिंघ १०. सगरांमसिंघ ११. सरूप-सिंघ १२. राजसिंघ १३. स्यांमसिंघ १४. धनसिंघ १५. वागसिंघ

गांव खारियो वडो—	१५००)	१५००)	मेड़ता	आधो

पीढियें—: ९ लूणकरण-केसरीसिंघोत[3] १०. सिवकरण ११. चेनकरण १२. नाथुसिंघ १३. अरजनसिंघ

खांप महेसदासोत कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५. महेसदास-कूंपावत रा वंस रा महेसदासोत कूंपावत कहीजै।

महेसदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कंटालीया—	७५००)	७५००)	सोजत	खेड़ा ७
,, बोरनडी	१३००)	१३००)	,,	
,, वोपारी	४०००)	४०००)	,,	
,, सीचीयाक	८००)	८००)	,,	
,, नीबली	७००)	७००)	,,	
,, मसाजण मगरा में है रेख नहीं				

पीढियें—: ६. सादुलसिंघ-महेसदासोत ७. जसवंतसिंघ ८. किसनसिंघ ९. सबलसिंघ १०. भावसिंघ ११. वखतसिंघ १२. सगरांमसिंघ १३. कुसलसिंघ १४. सिभू-सिंघ १५. गोरधनदास

गांव डोरनडी—	३०००)	३०००)	सोजत	आसांमी ३ रे
पांती आध में— ।।) रेख १५००)				

पीढियें—: ९. सबलसिंघ-किसनसिंघोत[4] ११. जगतसिंघ १२. बनेसिंघ १३. गुलाब-सिंघ १४. समरथसिंघ

---

१. ठि. जैतीवास के (८) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।

२ ठि. ,, (७) ,, सबलसिंह का पुत्र।

३. ठि सुहाणों के (८) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।

४. ठि. कंटालिया के (८) ठाकुर किशनसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती चौथी में—	।) रेख ७५०)			

पीढियें—: १३ लालसिंघ-बनेसिंघोत[1] १४. अमरसिंघ

पांती चौथी में—	।) रेख ७५०)			

पीढियें —: १२. सिवसिंघ-जगतसिंघोत[2] १३. भेरूंसिंघ १४. रांमसिंघ (खोळै) १५ रूपसिंघ

गाँव भोजावास—	७००)	७००)	सोजत	

पीढियें —: ७. किलांणदास-सादूलसिंघोत[3] ८. राघोदास ९. गोकलदास १०. हिमतसिंघ ११. सूरतसिंघ १२. वनराज १३. ऊदेसिंघ १४. चनणसिंघ १५. विजेसिंघ

गाँव सीरीयारी बड़ी—	१८५०)	१८५०)	सोजत	
,, सीरीयारी खुरद	१८५०)	१८५०)	,,	
,, फुलाद	४००)	४००)	,,	
,, कोसवारो	२००)	२००)	,,	खेड़ो सून
,, डीगोर	३००)	३००)	,,	
कुल रेख	४६००)	४६००)		

पीढियें—: ६. आसकरण-महेसदासोत ७. अमरसिंघ ८. केसरीसिंघ ९. रूपसिं १०. हठीसिंघ ११. सूरजमल १२. सगरांमसिंघ १३. जोधसिंघ १४. दोलतसिंघ १५. मालमसिंघ १६. रतनसिंघ (खोळै) १७. सिवनाथसिंघ

गाँव रांवणीयांणो—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	आधो तिण में पांती दोय
पांती आध में— ॥)				

पीढियें—: ११. रायसिंघ-हठीसिंघोत[4] १२. नरसिंगदास १३. भोमसिंघ १४. धीरतसिंघ

पांती आध में— ॥)

१. ठि. डोरनडी के (आधी) के (१२) ठाकुर बनेसिंह का पुत्र ।
२. ठि. ,, ,, (११) ,, जगतसिंह का पुत्र ।
३. ठि. कंटालिया के (६) ठाकुर सादुलसिंह का पुत्र ।
४. ठि. सिरियारी के (१०) ठाकुर हठीसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ७. अभोपसिंघ-आसकरणोत[१] ८. नारसिंघ ६. सिरदारसिंघ १०. माहासिंघ ११. गाडसिंघ १२. सूरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मेहलाप—	१५००)	१५००)	सोजत	

पीढियें—: ६. चतरसिंघ-केसरीसिंघोत[२] १०. सुंदरदास ११. तेजसिंघ १२. ग्यांनसिंघ १३. कायमसिंघ १४. अमरसिंघ १५. लिछमणसिंघ

गांव सूरसिंघ रो गुडो—	१०००)	१०००)	सोजत	

पीढियें—: ८. दयालदास-अमरसिंघोत[३] ६. सिंभूसिंघ १०. लालसिंघ ११. जगरांमसिंघ १२. जसवंतसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. माधोसिंघ १५. अमरसिंघ

खांप ऊदेसिंघोत-कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५. ऊदेसिंघ-कूंपावत तिण रा बंस रा ऊदेसिंघोत कूंपावत कहीजै।

ऊदेसिंघोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव चेलावास—	४५००)	४५००)	सोजत	
,, गोपावास	१०००)	०		
कुल रेख	५५००)	४५००)		

पीढियें—: ६. नराणदास-ऊदेसिंघोत ७. लिछमणदास ८ मेघराज ६. किलांणदास १०. भीवसिंघ ११. रतनसिंघ १२. जूजारसिंघ १३. मुकनसिंघ १४. गुमानसिंघ १५. सगतसिंघ १६. मोहबतसिंघ

गांव मलसा बावड़ी—	४३००)	४३००)	सोजत	खेड़ा २
,, वाणीयामाली	७००)	७००)	,,	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें—: ८. रतनसिंघ-लिछमणदासोत[४] ६. जुजारसिंघ १०. ईंदरसिंघ ११. सरूपसिंघ १२. हरीसिंघ

---

१. ठि. सिरीयारी के (६) ठाकुर आसकरण का पुत्र।

२. ठि. सिरियारी बड़ी के (८) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।

३. ठि. ,, ,, (७) ,, अमरसिंह का पुत्र।

४. ठि. चेलावास के (७) ठाकुर लिछमणसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हापत—	१२५०)	१२५०)	सोजत	

पीढियें—: ८. कुंभकरण ६. लिछमणदासोत[1] ६. भारमल १०. चंदरभांण ११. अभेरांम १२. किलांणसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. आईदांन १५. अनाड़सिंघ

गाँव सोहावास—	४०००)	४०००)	गोढवाड़	

पीढियें —: ६. सांवलदास-ऊदेसिंघोत ७. डुंगरसिंघ ८. मेहकरण ६. सिरदारसिंघ १०. वीरमदेव ११. सिंभूसिंघ १२. कुमेरसिंघ १३. फतेसिंघ १४. हरनाथसिंघ १५. रणजीतसिंघ

गाँव बुसी—	१००००)	१००००)	गोढवाड़	
,, परतापगढ़	१०००)	१०००)	,,	
,, गिरधरदास रो गुडो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	१२०००)	१२०००)		

पीढियें—: ६. वेरीसाल-ऊदेसिंघोत ७. भोपतसिंघ ८. पचाणदास ६. मुकनसिंघ १०. जसवंतसिंघ ११. सिवदानसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. छतंरसिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. दुरजणसिंघ (खोळॅ) १६. वभूतसिंघ

खांप ईसरदासोत-कूंपावत

पीढियें—:४. कूंपो ५. ईसरदास कूंपावत तिण रा वंस रा ईसरदासोत कूंपावत कहीजै ।

ईसरदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव चंडावल—	६२५०)	६२५०)	सोजत	
,, छोतरीयो	२५००)	२५००)	,,	
,, राणावास	५०००)	५०००)	,,	
,, चवाडियां	२०००)	२०००)	,,	
,, पाचनडो वडो	८७५)	८७५)	,,	
,, पाचनडो खुरद	८७५)	८७५)	,,	
,, खारचीयां	१२५०)	१२५०)	,,	
,, वछराज रो गुडो	१२५०)	१२५०)	,,	
कुल रेख	२००००)	२००००)		

१. ठि. चेलावास के (७) ठाकुर लिछमणसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ६. चांदसिंघ-ईसरदासोत ७. गोरधनदास ८. व्रिजेसिंत्र ६. फतेसिंव १०. पिरथीराज ११. सेरसिंघ १२. हरीसिंघ १३. विसनसिंघ १४. सांवत-सिंघ १५. लिछमणसिंघ १६. प्रतापसिंघ १७. सगतीदांन

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव राजोलो खुरद—	६२५)	६२५)	सोजत	आधो

पीढियें—: १०. ऊदेसिंघ-फतैसिंघोत[1] ११. सवाईसिंघ १२. सिंभूसिंघ १३. जैतसिंघ १४. घनसिंघ. १५. सादुलसिंघ

गांव माटो—	८७५०)	६७५०)	सोजत

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-फतैसिंघोत[2] ११. कुसलसिंघोत १२. सिवसिंघ १३. चेनसिंघ १४. कुसलसिंघ १५. करणसिंध (खोळै) १६. मालमसिंघ १७. छतरसिंघ

गाँव सुकेलाव—	३०००)	३०००)	सोजत

पीढियें—: ८. जगनाथ-गोरधनदासोत[3] ६. भगवानदास १०. हरभांण ११. विहारी-दास १२. दुरगदास १३. वभूतसिंघ १४. हठीसिंघ १५. सवाईसिंघ

खांप-तिलोकदासोत-कूंपावत

पीढियें—: ४. कूपो ५. तिलोकदासोत-कूंपावत तिण रा वंस रा तिलोकदासोत कूंपावत कहीजै ।

तिलोकदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव घणलो—	३०००)	३०००)	सोजत
,, दुरगा रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, भोजा रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, गुमांनपुरो	५००)	०	,,
कुल रेख	५५००)	५०००)	

पीढियें—: ६. भींवसिंघ–तिलोकदासोत ७. दयालसिंघ ८. माधोसिंघ ६. फतेसिंघ १० खींवकरण ११. कुंभकरण १२. केसरीसिंघ १३. ऊदेसिंघ १४. विड़दसिंघ १५. वाघसिंघ १६. बाहादरसिंघ

---

१. ठि. चंडावल के (६) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र ।
२ ठि. चंडावल के (६) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र ।
३. ठि. ,, (७) ,, गोरधनदास का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

खांप-नरावत

१. राव सूजो २. नरो-सूजावत तिण रा वंस रा नरावत कहीजै।

नरावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव भडाणो—	६०००)	६०००)	नागोर	

पीढियें—: ३ गोयंनदास-नरावत ४. राजसिंघ ५. मांनसिंघ ६. प्रागदास ७ सबल-सिंघ ८. चंदरसेण ९. पदमसिंघ १०. सूरतसिंघ ११. धीरतसिंघ† १२. सिरदारसिंघ १३. फतेसिंघ १४. विसनसिंघ १५. लिछमणसिंघ

गाँव वेलिमा री वासणी	१५००)	१५००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ११. संगरामसिंघ-सूरतसिंघोत[1] (संवत् १८०२ में वासणी पाई) १२. देव-सिंघ १३ सरूपसिंघ १४. आसकरण

गाँव बुहु—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. कुसलसिंघ-सबलसिंघोत[2] ९. सिरदारसिंघ १०. रतनसिंघ ११. सेरसिंघ १२. बभूतसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गाँव कसूबी पादडां—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ६. जसवंतसिंघ-मांनसिंघोत[3] ७ जगतसिंघ ८. बलुसिंघ ९. लालसिंघ १०. सवाईसिंघ ११. अखेसिंघ १२. चांदसिंघ १३. अजीतसिंघ १४. सिवनाथसिंघ

गाँव बाघरासर—	३०००)	३०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांती दोय में— ॥=) ॥। रेख २०००)

पीढियें —: ४. पिरथीराज-गोयंनदासोत[4] ५. किसनदास ६. स्यामसिंघ ७. रुघनाथसिंघ ८. वीरमदेव ९. मोहकमसिंघ १०. जगरांमसिंघ ११. विजेसिंघ १२. खडग-सिंघ १३. किसनसिंघ

विगत पांतो तीजो में रेख—१०००)

---

† भडाणो पायो संवत् १७८९ मा सुद ७ महाराज श्री अभेसिंघजी रे समै।

१. ठि. भडाणो के (१०) ठाकुर सूरतसिंह का पुत्र।

२. ठि. भडाणो के (७) ठाकुर सबलसिंह का पुत्र।

३. ठि. ,, (५) ,, मानसिंह का पुत्र।

४. ठि. ,, (३) ,, गोयंददास का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ६. विगतसिंघ-वीरमदेव रो[1] १०. बाघसिंघ ११ नाथुसिंघ १२. दलेलसिंघ

खांप-नारणोत

१. राव रिड़मल २. नारण-रिड़मलोत

नारणोतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बोसुरी—	१०००)	१०००)	नागोर	आधी

पीढियें—: १. रुघनाथसिंघ-नारण रो २. जोरावरसिंघ ३. बांकीदास ४. हिंदूसिंघ ५. करणसिंघ ६. सगतीदांन

खांप-कांधलोत

१. राव रिड़मल २. कांधल-रिड़मल रो तिण रा बंस रा कांधलोत है।

कांधलोतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव लांबो जटां—	६२५०)	६२५०)	मेड़ता

पीढियें—: १. अमानसिंघ २. करणसिंघ ३. रुघनाथसिंघ

खांप-बीदावत

१. राव-जोधो २. बीदो-जोधावत तिण रा बंस रा बीदावत कहीजें।

बीदावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव सांगु खुरद—	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: १. मुथरादास २. मुकनदास ३. खंगारसिंघ ४. नाथुसिंघ ५. अजीतसिंघ ६. लालसिंघ

गाँव कुसियो—	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: १. रुघनाथसिंघ २. गुमानसिंघ ३. भोपालसिंघ ४. चांदसिंघ

खांप-ऊदावत-बेडवासीया

१. रावल-तीडो २. कांनडदे-रावल तीडा रो ३. रावल-कांनडदे रो ४. त्रिभांणसी-रावल रो ५. ऊदो-तिण रा बंस रा ऊदावत कहीजै। (सु बीकानेर रे गांव सहुवे था सु ऊदा सुं तीजो वीरम हुवो सु राव जोधा रा राज में गांव में बेडवासीये आय वसीया, जठा पछै बेडवासीया ऊदावत कहीजें।)

ऊदावत-बेडवासीयां रा ठिकांणां री विगत

---

१. ठि. बाघरासर के (८) ठाकुर वीरम का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव बेड वासीयो— गढ जोधपुर रेख २६००) में वाद पांती आना –)।।। री रेख २००) री गांत्र बेगडीया वालां रे सु ऊठे लिखीजसी बाकी आंना ।।। =)। री रेख २४००) री आसांमी ६ रै तिण री विगत—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बेड वासीयो—	२४००)	२४००)	जोधपुर	आसांमी ६ रे

।–)।। पांती रेख— ६५०) री

पीढियें—: ६. विजेरांम-ऊदावत ७. वीरम गांव सहुवां सु राव-जोधाजी रा राज में गांव वेड वासीये आयो) ८. पिरथीराज ६. संसारचंद १०. मालमसिंघ ११. रायसिंघ १२. पुरणसिंघ १३. मानसिंघ १४. सीयो १५. विहारी-दास १६. वखनसिंघ १७. हिंदूसिंघ १८. करणसिंघ १६. सादुलसिंघ

—)।।। पांती रेख— ३००)

पीढियें—: १५. हीरदेरांम-सीयावत[1] १६. अजवसिंघ १७. आसकरण १८. छतर-सिंघ १६. जुंझारसिंघ

–)।।। पांती रेख — ३००)

पीढियें—: १०. भांण-ससारचंद रो[2] ११. माधोसिंघ १२. देईदास १३. ऊगरसिंघ १४. हरीसिंघ १५. मयाजल १६. विसनसिंघ १७. प्रतापसिंघ

–)।।। पांती रेख— २५०)

पीढियें— १५. जगतसिंघ-हरीसिंघोत[3] १६. मांधोसिंघ १७. बनेसिंघ १८. खुमांणसिंघ १६. जसवंतसिंघ

–)।।। पांती रेख— ३००)

पीढियें—: ११. बाघसिंघ-भांणोत[4] १२. नेतसी १३. चांदसिंघ १४. सिवदांनसिंघ १५. सेरसिंघ १६. नवलसिंघ

–)।।। पांती रेख — ३००)

पीढियें –: मेहो-संसारचंद रो[5] ११. सांवलदास १२. अमरसिंघ १३. रूपसिंघ

---

१. ठि. वेडवासियो के (१४) ठाकुर सीया का पुत्र ।
२ ठि. ,, (६) ,, संसारचंद का पुत्र ।
३. ठि. वेडवासियो (दो पांती) के (१४) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र ।
४. ठि. ,, ,, (१०) ,, भांण का पुत्र ।
५. ठि. ,, ,, (६) ,, संसारचंद का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

१४. बिहारीदास १५ देईदांन १६. जोरावरसिंघ १७. सालमसिंघ
१८. चुतरभुज

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बेगडीयां—	५५०)	५५०)	जोधपुर	हुंस –)॥।
,, बेडवासीयो	२००)	२००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	७५०)	७५०)		

पीढियें--: १२. रांमसिंघ-माधोसिंघोत[1] १३. गोदो १४. रतनसिंघ १५. सवाईसिंघ
१६. देवीसिंघ १७. अनाड़सिंघ १८. आसकरण

गांव धुनाड़ियो—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें--: ११. रिड़मलसिंघ-मालमसिंघोत[2] १२. आसकरण १३. हरदास
१४. भोपतसिंघ १५. जेसिंघ १६. भेरूसिंघ १७. थांनसिंघ

खांप-जैतावतां री

१. राव रिडमल-अखेराज पंचायण २. जेतो-पंचायणोत तिण रा वंस रा जेतावत कहीजै।

पिरथीराजोत जैतावत

४. जेतो ५. पिरथीराज-जेतावत तिण रा वंस रा पिरथीराजोत-जेतावत कहीजै।

पिरथीराजोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव बगड़ी—	१२०००)	१२०००)	सोजत
,, घनायो	१५००)	१५००)	,,
,, दुरगां रो वास	४००)	४००)	,,
,, हांसयावास	३००)	३००)	,,
,, खोड़ीयो	३००)	३००)	,,
,, पिरथीपुरो	३००)	३००)	,,
,, खिरणी खेड़ो	२००)	२००)	,,
	———	———	
कुल रेख	१५०००)	१५०००)	

१. ठि. बेडवासियो के (१०) ठाकुर माधोसिंह का पुत्र।
२. ठि. ,, ,, (१०) ,, मालमसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें— ६. बाघसिंघ-पिरथीराजोत ७. कुंभकरण ८. देवकरण ६. प्रतापसिंघ १०. दुरजणसिंघ ११. पाहाड़सिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. हिंदूसिंघ १४. केसरीसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. नाहारसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नुन—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. कासीरांम-कुंभकरणोत[1] ६. मुकनदास १०. जालमसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. करणसिंघ १३. सुमेलसिंघ

गाँव सेरणो—	२०००)	२०००)	जालोर	

पीढियें—: ८. सूरजमल-कुंभकरणोत[2] ६. किलयांणसिंघ १०. तखतसिंघ ११. जैतसिंघ १२. गजसिंघ

गाँव खोखरो—	६०००)	५०००)	सोजत	खेड़ा ५

पीढियें—: ७. भगवांनदास-बाघसिंघोत[3] ८. सुजांणसिंघ ६. बीको १०. रूपसिंघ ११. रुघनाथसिंघ १२. रतनसिंघ १३. जोधसिंघ १४. भवानीसिंघ १५. सालमसिंघ १६. ग्यांनसिंघ १७. गजसिंघ १८. भेरूसिंघ

गाँव वालो—	१०००)	१०००)	सोजत	पैदास २०००)

पीढियें—: ८. ऊदेभांण-भगवांनदासोत ६. प्रतापसिंघ १०. हठीसिंघ ११. सेरसिंघ १२. सरूपसिंघ १३. बनेसिंघ १४. बभूतसिंघ

खांप-आसकरणोत जैतावत

४. जेतो ५. देईदास ६. आसकरण-देईदासोत रा वंस रा आसकरणोत जैतावत कहीजै।

आसकरणोत जैतावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव थांवलो—	४०००)	४०००)	जालोर	

पीढियें—: ७. केसोदास-आसकरणोत ८. मोहणदास ६. हेबतसिंघ १०. कुंभकरण ११. हिरदेरांम १२. सूरतसिंघ १३. मोहकमसिंघ १४. लालसिंघ १५. ईंदरसिंघ १६. बेरीसाल

गाँव आलासण—	१०००)	१०००)	जालोर	आधो

---

१. ठि. बगड़ी के (७) ठाकुर कुंभकरण का पुत्र।
२. ठि. ,, (७) ,, ,, ,,।
३. ठि. ,, (६) ,, बाघसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ११. रतनसिंघ-हिरदेरांमोत[1] १२. सबलसिंघ १३. नाहरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव-रायरो बड़ो—	६००)	६००)	जालोर	
,, रायरो खुरद	४००)	४००)	,,	
कुल रेख	१०००)	१०००)		

पीढियें—: ११. ऊमेदसिंघ-हिरदेरांमोत[2] १२. सगरांमसिंघ १३. सुखसिंघ १४. सिवसिंघ १५. जुहारसिंघ १६. दोलतसिंघ

गांव समदांणी—	४००)	४००)	भीनमाल	

पीढियें—: १०. सूरजमल-कुंभकरणोत[3] ११. दलसिंघ १२. नगराज १३. हिंदूसिंघ १४. कुसालसिंघ

गांव लांबोड़ी—	५००)	५००)	सोजत	
,, सांवलदास रो गुढो	५००)	५००)	,,	
,, सोभा रो गुढो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पीढियें—: ७. किलांणदास-आसकरणोत ८. किसनदास ९. करमसेण १०. जगरूपसिंघ ११. नाहरखान १२. सिवदांन १३. गजसिंघ १४. ग्यांनसिंघ १५. भोमसिंघ

गांव मुरढावो—	६२५)	६२५)	सोजत	

पीढियें—: ७. दलपत-आसकरणोत ८. जैतसिंघ ९. ईंदरसिंघ १०. सगरांमसिंघ ११. अमरसिंघ १२. नाहरसिंघ १३. देवीसिंघ

खांप-भोपतोत-जैतावत

पीढियें—: ४. जेतो ५. देईदास ६. भोपत-देईदासोत तिण रा बंस रा भोपतोत-जैतावत कहीजै ।

---

१. ठि. थांवलो के (११) ठाकुर हिरदैराम का पुत्र ।
२. ठि. ,, (११) ,, ,, ,, ।
३. ठि. ,, के (१०) ठाकुर कुंभकरण का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

भोपतोत जैतावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खांडो देवल—	१२५०)	१२५०)	भीनमाल	

पीढियें—: ७ माधोसिंघ-भोपतोत ८. स्यांमसिंघ ९. गोरधनसिंघ १०. फतेसिंघ ११. सुरतांणसिंघ १२. विसनसिंघ १३. विजेसिंघ १४. चेनसिंघ १५. नवलसिंघ

गांव रांमसिंघ रो गुडो—	२०००)	२०००)	सोजत	हेस ३

पीढियें—: ७. रांमसिंघ-भोपतोत ८. भाखरसिंघ ९. करणसिंघ १०. हिंदूसिंघ ११. जालमसिंघ १२. समरथसिंघ १३. सूरजमल १४. दुरगदास

खांप-कलावतां री

पीढियें—: १. राव-रिड़मल २. अखेराज ३. पंचांण ४. कलो, तिण रा बंस रा कलावत कहीजै ।

कलावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव हूण—	१०००)	१०००)	सोजत

पीढियें—: १. मनोरदास २. नाहरखांन ३. सिरदारसिंघ ४. ग्यांनसिंघ ५. जालमसिंघ ६. कायमसिंघ ७. अजीतसिंघ

गांव जाढण—	१५००)	१५००)	सोजत

पीढियें—: ५. जसकरण-कलावत ६. पूरणमल ७. हरीसिंघ ८. सुजांणसिंघ ९. सायबखान १०. सिरदारसिंघ ११. पेमसिंघ १२. हरनाथसिंघ १३. छतरसिंघ १४. भोमसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. रुघनाथसिंघ

खाँप-गोयंददासोत जोधा

पीढियें—: १. मोटा राजा श्री ऊदेसिंघजी २. भगवांनदास ३. गोयंददास तिण रा बंस रा गोयंददासोत कहीजै ।

गोयंददासोत जोधाँ रा ठिकाँणाँ री विगत

गांव खेरवो—	१००००)	१००००)	जोधपुर
,, आयेची	११२५)	११२५)	,,
,, बुधवाड़ो	१८७५)	१८७५)	,,
,, बापुनी	१२५०)	१२५०)	,,

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

मांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
„ सुगालीयो	७५०)	७५०)	जोधपुर	
„ आकड़ावास	५००)	५००)	„	
„ नीवलो	२५०)	२५०)	सोजत	
„ घनेरीयो	३०००)	३०००)	मेड़ता	
„ धनड़ी	१५००)	१५००)	„	
„ बडायलि	७५००)	७५००)	„	
कुल रेख	२७७५०)	२७७५०)		
गांव बलाड़ो—	१२५०)	१२५०)	जेतारण	आध
„ हींगवाणियो	१२५०)	१२५०)	„	„
कुल रेख	२५००)	२५००)		

पीढियें—: ५. सिवदांनसिंघ-रिणछोड़दासोत ६. जोधसिंघ ७. सायवसिंघ ८. दलेलसिंघ ९. जालमसिंघ १०. नाहारसिंघ ११. सादुलसिंघ १२. सालमसिंघ १३. विड़दसिंघ

गांव खारड़ी—	३१२५)	३१२५)	सोजत

पीढियें—: ७. मोहकमसिंघ-जोधसिंघोत[1] ८. भवानीसिंघ ९. मालमसिंघ १०. नवलसिंघ ११. दुरजणसिंघ

गांव बूटीयास—	२५००)	२५००)	जेतारण

पीढियें—: ६. फतेसिंघ-सिवदांनसिंघोत[2] ७. दोलतसिंघ ८. स्यांमसिंघ ९. बनेसिंघ १०. दांनसिंघ ११. मालमसिंघ १२. माधोसिंघ

गांव बाबरो—	रेख ५०००)	सु माफ है	जैतारण
„ कुसलपुरो			„
„ सेजपुरो			„
„ रातडीयो			„
„ देवगढ			„

---

१. ठि. बलाड़ो के (६) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र ।
२. ठि. „ (५) „ शिवदानसिंह का पुत्र ।

T　CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पांच फेर बसे है				
कुल रेख	५०००)	माफ है		

पीढियें—: ४. हिरदेनारायण-गोयंददासोत ५. अखेराज ६. रुघनाथसिंघ ७. प्रतापसिंघ ८. दोलतसिंघ ९. रांमसिंघ १०. करणसिंघ ११. हिमतसिंघ १२. माधोसिंघ

गाँव रोईचो—	९०००)	९०००)	मेड़ता	
,, डऊकीयो	३०००)	३०००)	,,	
कुल रेख	१२०००)	१२०००)		

पीढियें—: ६. हरनाथसिंघ-अखैसिंघोत[1] ७. सगतसिंघ ८. ऊमेदसिंघ ९. दुलेहसिंघ १०. वखतावरसिंघ ११. केसरीसिंघ

गाँव अेलचपुरो— १०००) १०००) डीडवाणो

पीढियें—: ६. देवसिंघ-अखैसिंघोत[2] ७. सिवसिंघ ८. अमांनसिंघ ९. तखतसिंघ १०. मूलसिंघ

गांव आंतरोली-वडी— ४०००) ४०००) मेड़ता

पीढियें—: ४. जगरूपसिंघ-गोयंददासोत ५. रायसिंघ ६. जैंसिंघ ७. सुरतांणसिंघ ८. बाहादरसिंघ ९. सेरसिंघ १०. पिरथीसिंघ ११. नंदुसिंघ १२. सिवनाथसिंघ

खांप-गोपालदासोत जोधा

पीढियें—: १. मोटा राजा ऊदेसिंघजी २. भगवांनदास ३. गोपालदास † जोधा, तिण रा वंस रा गोपालदासोत जोधा कहीजै।

गोपालदासोत जोधा रा ठिकांणां री विगत

गाँव तोलासर – १५००) १५००) दोलतपुरा

---

† गोपालदास कांम आयो संवत् १६६४ में महाराज श्री गजसिंघजी से झगड़ो कंवरपदे गाँव वीलीया में हुवो।

१. ठि. बावरा के (५) ठाकुर अखैराज का पुत्र।

२. ठि. ,, (५) ,, ,, ,,।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: ४. किसोरदास-गोपालदासोत ५. नाहरसिंघ ६. माहासिंघ ७. सवाईसिंघ ८. जालमसिंघ ९. रांमसिंघ १०. रुघनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मालावासणो—	५००)	५००)	डीडवाणो	

पीढियें —: ८. सालमसिंघ-सवाईसिंघोत[१] ९. सुरतांणसिंघ § १०. विसालसिंघ

गांव खातोलाई—	१०००)	१०००)	मेड़ता	

पीढियें —: ६. केसरीसिंघ-नाहरसिंघोत[२] ७. रूपसिंघ ८. दुरजणसिंघ ९. सालमसिंघ १०. भीवसिंघ ११. प्रभूदांन

खांप-जगनाथोत जोधा

पीढियें—: १. महाराजा श्री ऊदेसिंघजी २ नरहरदास ३. जगनाथ तिण रा वंस रा जगनाथोत जोधा कहीजै ।

जगनाथोत जोधा रा ठिकांणां री विगत

गांव मोडरो—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ४. जसकरण-जगनाथोत ५. विजेसिंघ ६. सूरसिंघ ७. अमरसिंघ ८. बनेसिंघ ९. देवीसिंघ १०. बखतावरसिंघ ११. मुकनसिंघ

खांप-रतनोत-जोधा

पीढियें —: १ महाराज श्री मोटा राजा उदैसिंघजी २. जैतसिंघ ३ हरीसिंघ * ४. रतन सिंघ, तिण रा वंस रा रतनोत जोधा कहीजै ।

रतनोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव दुगोलि खास—	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, गुलर	३०००)	३०००)	,,	}
,, गुमेर	२०००)	२०००)	,,	
,, तुवरो	३०००)	३०००)	,,	

§ कांम आयो डीडवाणा संवत् १८६५ में ।

* यह गांव जेठाणे में खरवा के प्रतापसिंघ से लड़कर सं. १६५७ में काम आया ।

१. ठि. तोलासर के (७। ठाकुर सवाईसिंह का पुत्र ।

२. ठि. ,, (५) ,, नाहरसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, माजरो मीठो	१०००)	१०००)	मेड़ता	
,, अडसी गांव	३०००)	३०००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	१४०००)	१४०००)		

पीढियें—: ५. किसनसिंघ-रतनसिंघोत ६. सांवतसिंघ ७. सिरदारसिंग ८. राघोदास ९ ग्यांनसिंघ १०. सिवनाथसिंघ ११. बखतावरसिंघ १२. वीजेसिंघ

गांव कबेडीयो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. विसनसिंघ-सिरदारसिंघोत[1] ९. बदनसिंघ १०. हणवंतसिंघ ११. जसवंतसिंघ

गांव दुदोलि—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ६. ईसरीसिंघ-किसनसिंघोत[2] ७. जूंजारसिंघ ८. वेरीसाल ९. हुकमसिंघ १०. अमरसिंघ ११. जालमसिंघ

गांव झाडेली -	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ७. धीरतसिंघ-केसरीसिंघोत ८ चतरसिंघ ९. केसरीसिंघ १०. महेसदास ११. रणजीतसिंघ १२. सिवदांनसिंघ

गांव नीबेड़ो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ६. जगतसिंघ-किसनसिंघोत ७. जसकरण ८. मांनसिंघ ९. ऊमेदसिंघ १०. अमरसिंघ ११. हरनाथसिंघ

गांव लोटोतो—	५०००)	५०००)	जेतारण	
,, बांकलीयो	२०००)	२०००)	नागोर	
,, ढाकावास	२०००)	२०००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	९०००)	९०००)		

पीढियें—: ५. रांमसिंघ-रतनसिंघोत ६. जोधसिंघ ७. सिवसिंघ ८. जालमसिंघ ९. सेरसिंघ १०. ऊदेसिंघ ११. ईंदरसिंघ १२. प्रतापसिंघ

गांव राबडीयाक—	४०००)	४०००)	जेतारण	आधी

---

१. ठि. दुगोली के (७) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।

२. ठि. ,, (५) ,, किसनसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ७. अभेसिंघ-जोधसिंघोत[1] ८. राजसिंघ ९. मांनसिंघ १०. बखतावरसिंघ ११. अजीतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बांजाकुडी—	२०००)	२०००)	जैतारण	आधो

पीढियें—: ७. सिवसिंघ-जोधसिंघोत[2] ८. बखसीरांम-सिवसिंघोत ९. चुतरभुज १०. कुसालसिंघ ११. रणजीतसिंघ १२. मुकनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नोखो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. अणदसिंघ-रतनसिंघोत ६. सूरजमल ७. भीवसिंघ ८. नाहारसिंघ ९. हुकमसिंघ १०. मोतीसिंघ ११. दोलतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पठांणां रो वास—	५००)	५००)	डीडवाणो	आसांमी २ रे
„ वाभुवासी	१०००)	१०००)	नागोर	„
कुल रेख	१५००)	१५००)		

। पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ६. पदमसिंघ-अणंदसिंघोत[3] ७. मोहकमसिंघ ८. लालसिंघ ९. सिवसिंघ १०. परभूदांन ११. रणजीतसिंघ

। पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ७. राजसिंघ-पदमसिंघोत[4] ८. छतरसिंघ ९. अगरसिंघ १०. देवीसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आमलवासी—	५००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ६. सूरतसिंघ-अणदसिंघोत[5] ७. हिमतसिंघ ८. समेलसिंघ ९. जोरावरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोजो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. करणसिंघ-रतनसिंघोत ६. बखतसिंघ ७. जगरांमसिंघ ८. अनाड़सिंघ ९. रुघनाथसिंघ १०. रणजीतसिंघ ११. हमीरसिंघ

---

१. ठि. लोटोती के (६) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र।
२ ठि. „ (६) „ „ „।
३. ठि. नोखो के (५) ठाकुर अणंदसिंह का पुत्र।
४. ठि पठांणां री बास के (६) ठाकुर पदमसिंह का पुत्र।
५ ठि नोखो के (५) ठाकुर अणंदसिंह का पत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गुढो रोयलो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांतो आध में— ॥)

पीढियें—: ६. मालमसिंघ-करणसिंघोत[1] ७. अजबसिंघ ८. जैतसिंघ ९. गुलाबसिंघ १०. राजसिंघ ११. चिमनसिंघ

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ९. जीवणसिंघ-जैतसिंघोत[2] १०. भूरसिंघ ११. हमीरसिंघ

गाँव चावली	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: ६. कुसलसिंघ-करणसिंघोत[3] ७. फतेसिंघ ८. मालमसिंघ ९. जीवणसिंघ १०. अमांनसिंघ ११. वेरीसाल १२. सरूपसिंघ

गाँव खारी—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ६. बखतसिंघ-करणसिंघोत[4] ७. सुजांणसिंघ ८. कनीरांम ९. भेरूसिंघ १०. स्यांमसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. डूंगरसिंघ

गाँव खांभीवाद--	५०००)	५०००)	नागोर

पीढियें—: ५ सवाईसिंघ-रतनसिंघोत ६. ऊदेसिंघ ७. अखेसिंघ ८. वनेसिंघ ९. रूपसिंघ १०. हणवंतसिंघ ११. विड़दसिंघ

गाँव खेवर—	३०००)	३०००)	नागोर

पीढियें—: ८. रिड़मल-अखैसिंघोत[5] ९. चिमनसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. हरनाथसिंघ

गांव डाभड़ी—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ५. वाघसिंघ-रतनसिंघोत ६. दुरजणसिंघ ७. जसकरण ८. सिंभूसिंघ ९. जालमसिंघ १०. पाहाड़सिंघ ११. रणजीतसिंघ

खांप-किलांणदासोत-जोधा

१. ठि. रोजो के (५) ठाकुर करणसिंह का पुत्र।
२. ठि. „ (दूजी पांती) के (८) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र।
३. ठि. „ (५) ठाकुर करणसिंह का पुत्र।
४. ठि. „ (५) „ „ „।
५, ठि. खांभीवाद के (७) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: १. माहाराज श्री ऊदेसिंघजी २. जैतसिंघ ३. हरीसिंघ ४. किलांण-दास, तिण रा वंस रा किलांणदासोत जोधा कहीजै ।

किलांणदासोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जालणीयासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें:— ५. रूपसिंघ-किलांणदासोत ६. भीवसिंघ ७. मांनसिंघ ८. बदरीदास ९. पेमसिंघ १०. विड़दसिंघ

गांव आकोडो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. हरनाथसिंघ-किलांणदासोत ६. जगरांमसिंघ ७. पाहाड़सिंघ ८. चांदसिंघ ९. बलदेवसिंघ

गांव जांणेवो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी ३ रे

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ५. कुसालसिंघ-किलांणदासोत ६. अनोपसिंघ ७. सूरजमल ८. खेतसिंघ ९. जसकरण १०. भेरूसिंघ ११. अमांनसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें— १०. भोपालसिंघ-जसकरणोत[1] ११. जुहारसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें—: १०. सिवसिंघ-जसकरणोत[2] ११. चैनसिंघ

खांप-अमरसिंघोत जोधा

पीढियें—: १. माहाराज श्री गजसिंघजी २. अमरसिंघ-गजसिंघोत (नागोर राज कियो) अमरसिंघ रा वंस रा अमरसिंघोत जोधा कहीजै ।

अमरसिंघोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव सेवो—	४०००)	०	दोलतपुरा	खेड़ा १ आसांमी ३

---

१. ठि. जाणेवो (पहली पांती) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।

२. ठि. ,, ,, (९) ,, ,, ,, ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ३. ईसरीसिंघ-अमरसिंघोत ४. अनोपसिंघ ५. अणदसिंघ ६. करणसिंघ ७. बखतावरसिंघ ८. नाथूसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें —: ७. बनेसिंघ-करणसिंघोत ८. सिवसिंघ ९. फकीरसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें—: ८. सेरसिंघ-बनैसिंघोत

गाँव सेवो— परगनां दौलतपुरा रौ, रेख भरे नहीं, राजवी तिण सूं ।

खाँप-किसोरसिंघोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

पीढियें—: १. महाराज श्री अजीतसिंघजी २. किसोरसिंघजी † तिण री खवास रा किसोरसिंघोत कहीजै ।

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जलवाणो—	५०००)	५०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ३. जैतसिंघ-किसोरसिंघोत ४. भैरूंसिंघ § ५. बखतावरसिंघ ६. बलवंतसिंघ

खांप-जोधां रा ठिकांणां री विगत

राव जोधो संवत् १४७२ रा वैसाख सुद ४ रो जनम संवत् १५१५ जोधाजी जोधपुर सैर वसायौ ने गढ करायो । संवत् १५४५ रा माहा सुद ११ रा अंतकाळ हुवो तिण रा बंस रा जोधा कहीजै ।

खाँप-खंगारोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव जोधो २. जोगो ३. खंगार, तिण रा वंस रा खंगारोत कहीजै ।

गाँव खारीयो—	१२५०)	६२५)	जोधपुर
,, पुनास	९००)	९००)	
कुल रेख	२१५०)	१५२५)	

---

† किसोरसिंहजी कांम आया गांव नरासर में खेजड़ला वाळा रे झगड़ो हुवो जठे रास वाळा केसरीसिंहजी रा हाथ सूं संवत् १८०९ रा काती वद १४ नैं ।

§ कांम आयो अजमेर दिखणियां सूं झगड़ो हुवो जठै ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ४. गांगो-खंगारोत ५. मांनसिंघ ६. आसकरण ७. दवारकादास ८. राघोदास ९. जसकरण १०. फरसरांम ११. जीवणसिंघ* १२. फतैसिंघ १३. रतनसिंघ १४. गोपीनाथ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जालसू-बड़ी—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पांती आध में—

पीढियें—: ९. बिहारीदास-गोयंददासोत १०. पदमसिंघ ११. जैतसिंघ १२. सूरजमल १३. पेमसिंघ १४. जवांनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. गुमानसिंघ-बिहारीदासोत[1] ११. अभैसिंघ १२. पहाड़सिंघ १३. कुसलसिंघ १४. सिवसिंघ १५. भींवसिंघ

गांव डाहोली (खारी)	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. चंद्रभांण-दवारकादासोत[2] ९. हरनाथसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. केसरीसिंघ १२. नाहरसिंघ १३. हुकमसिंघ १४. सांवतसिंघ[3] १५. जेतसिंघ

गांव छापली—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ६. पूरणमल-मांनसिंघोत[4] ७. कीरतसिंघ ८. कुंभकरण ९. नाथूसिंघ १०. मालमसिंघ ११. भवानीसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. रूपसिंघ १४. तखतसिंघ

खांप-बाघावत जोधां रा ठिांकणां री विगत

१. राव बाघो संवत् १५१४ रो जनम ने संवत् १५७१ अंतकाळ हुवो कंवरपदे, तिण रा वंस रा बाघावत जोधा कहीजै।

गांव पहाड़पुरो—	२०००)	२०००)	जालोर	
„ नींबावस	१५००)	१०००)	„	
„ मागल	१०००)	१०००)	„	

---

* यह संवत् १८५३ में खींवसर में काम आया।

१. गांव जालसू बड़ी की (पहली पांती) के (९) ठाकुर बिहारीदास का पुत्र।

२. गांव खारियो के (७) ठाकुर द्वारकादास का पुत्र।

३. युद्ध में कांम आयो संवत् १८४७ में।

४. गांव खारियो के (५) ठाकुर मानसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, खांनपुर	५००)	५००)	जालोर	
,, नीवली सुंडारी	२५००)	२५००)	सोजत	
कुल रेख	७५००)	७०००)		
गाँव आंटण—	७७५)	७७५)	जोधपुर	
,, मोकलावास	४००)	४००)	सोजत	
कुल रेख	११७५)	११७५)		

पीढियें —: ७. जैंसिंघ-माधोसिंघोत ८. ऊदेभांण ६. दोलतसिंघ § १०. सेरसिंघ ११. सिवसिंघ १२. स्यांमसिंघ १३. अमांनसिंघ १४. जूंजारसिंघ

गाँव सिकारपुरो—	२०००)	२०००)	जोधपुर	
,, कुकडनाडो	१५००)	१५००)	,,	
कुल रेख	३५००)	३५००)		

पीढियें —: ६. सुभकरण-ऊदेभांणोत १०. भगवतसिंघ ११. जीवराज १२. पिरथीसिंघ १३. छतरसिंघ १४. बभूतसिंघ

खांप-गाँगावत जोधाँ रा ठिकाँणाँ री विगत

१. राव सूजा २. बागा ३. गांगा, राव गांगो संवत् १५४० रो जनम नै संवत् १५८८ अंतकाळ हुवो, तिण रा वंस रा गांगावत-जोधा कहीजै ।

गांव कालिजाड—	१२५०)	१२००)	जोधपुर	

पीढियें—: २. किसनसिंघ-गांगावत ३. राघोदास ४. अचलदास ५. किरतसिंघ ६. सूजांणसिंघ ७. बिहारीदास ८. बखतसिंघ ६. हरीसिंघ * १०. सांवलदास ११. विजैसिंघ

गांव हंजावास—	१८७।।)	१८७।।)	जोधपुर	

§ कांम आयो पाटण री राड़ में संवत् १८४६ ।

* तुगा से झगड़े में घाव लागा सु सांभर आया फोत हुवो, संवत् १८३१ में ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ९. अजबसिंघ-बखतसिंघोत[1] १०. रांमसिंघ ११ अमरसिंघ १२. अखैंसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव साली—	६२५)	६२५)	जोधपुर	

पीढियें—: २. मांनसिंघ-गांगावत ३. नरहरदास ४. राघोदास ५. मोहणदास ६. कुसलसिंघ ७ केसोदास ८. जगरूपसिंघ ९. सूरतसिंघ १०. नगराज ११. सेरसिंघ १२. जसवंतसिंघ १३. रतनसिंघ

खांप-रांमोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

राव, सूजा, बागा, गांगा

१. राव मालदेव संवत् १५६८ री जनम नै संवत् १६१९ में अंतकाळ हुवो २. रांमसिंघ मालदेवोत तिण रा वंस रा रांमोत कहीजै ।

गांव पावो—	५०००)	५०००)	गोढवाड	
,, हींगोलो	२०००)	५००)	,,	
,, ईंदगपुरीयो	२०००)	५००)	,,	
, गोवड़ी	०	०	,,	रेख नहीं
,, चेनपुरो	०	०	,,	रेख नहीं
कुल रेख	९०००)	६०००)		

पीढियें—: ३. करणसिंघ-रांमोत ४. भींवसिंघ ५. कांनसिंघ ६. रिणछोड़दास ७. रूपसिंघ ८. छतरसिंघ ९. जसवंतसिंघ १०. बुधसिंघ ११. वीरमदेव १२. जालमसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. जूहारसिंघ

खांप-चंद्रसेणोत जोधाँ रा ठिकांणाँ री विगत

सूजा-बागा-गागा १. राव मालदेव २. राव चंद्रसेण संवत् १५९८ रो जनम ने संवत् १६१९ में राव मालदेवजी री गादी बैठा जोधपुर में, ने चंद्रसेण पातसाही चाकर नहीं हुवो। तिण रा वंस रा चंद्रसेणोत जोधा कहीजै।

गांव पालड़ी—	३०००)	२५००)	नागोर
,, बुटाणो	३०००)	२५००)	,,
कुल रेख	६०००)	५०००)	

[1] गांव कालिजड के (८' ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ३ ऊगरसेण-चंद्रसेणोत ४. करमसेण ५. स्यांमसिंघ ६. अखेराज
७. नरसिंगदस ८ रूपसिंघ § ९. सुरतांणसिंघ १०. फतेसिंघ ११. रतनसिंघ
१२. सूरजभांण १३. विजैसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नीबड़ी-कोठारीयां—	५०००)	५०००)	मेड़ता	जब्त है

पीढियें—: ८. दोलतसिंघ-नरसिंघदासोत[1] ९. सेरसिंघ १०. गुलाबसिंघ ११. मुकनसिंघ
१२. मरजादसिंघ १३. बभूतसिंघ

गाँव छापड़ां—	६०००)	६०००)	नागोर

पीढियें—: ५. मोहणदास-करमसेणोत[2] ६. रांमचंदर ७. सुजांणसिंघ ८. भोपतसिंघ
९. जसकरण १०. रामसिंघ ११. भैरूसिंघ १२. बाहादरसिंघ १३. हणवंतसिंघ

गाँव डीकावो—	३०००)	३०००)	दौलतपुरा

पीढियें—: ८. जगमाल-सुजाणसिंघोत[3] ९. रिड़मल १०. लखधीर ११. रांमदास
१२. सिवदास १३. रुघनाथसिंघ

गाँव पावटो—	२०००)	२०००)	दौलतपुरो

पीढियें—: ७. सबळसिंघ-रांमचंदरोत[4] ८. सिभूसिंघ ९. कुसलसिंघ १०. किसनसिंघ
११. मंगलसिंघ १२ गाढसिंघ

खाँप-रतनसिंघोत जोधा रा ठिकाँणाँ री विगत

सूजा-वाघा-गांगा-रतनसिंघ

गांव भादराजण—	२५००)	२५००)	जोधपुर
,, राहणो	३७५०)	३७५०)	,,
,, वायद	१८७५)	१८७५)	,,
,, पाती	६२५)	६२५)	,,

---

§ कांम आयो संवत् १९९७ बखतसिंह अर सवाई जयसिंह रे झगड़ो हुवो गगवाणे जठे।

१. गांव पालड़ी के (७) ठाकुर नरसिंहदास का पुत्र।

२. ,, ,, (४) ,, करमसेण का पुत्र।

३. गांव छापड़ां के (७) ठाकुर सुजांणसिंह का पुत्र।

४. गांव ,, (६) ,, रामचन्द्र का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सिंघाणो	६२५)	६२५)	जोधपुर	
,, बाकली	५००)	५००)	,,	
,, घुमरियो	२००)	२००)	,,	
,, सेलड़ी	२५०)	२५०)	,,	
,, जेठांणी	२५०)	खेड़ो सूनो	,,	
,, भाडला	२५०)	२५०)	,,	
,, राखणो	५००)	५००)	,,	
,, सुगालीयो	३७५)	३७५)	,,	
गाँव भांडेलाव—	४०००)	४०००)	,,	
,, खाडी	२५००)	२५००)	,,	
,, महेलडी	१००)	१००)	,,	
,, ऊदरां	५००)	५००)	,,	
,, जैतपुरो	२५००)	२५००)	,,	
,, गोयंदलाव	१५००)	१५००)	,,	
,, मुड़ीयावास	१०००)	१०००)	,,	
,, नीबलो	५००)	५००)	,,	
,, गिरवरियो	२५०)	२५०)	,,	
,, चुडो	५०)	५०)	,,	
,, गुबड़ो	५०)	५०)	,,	
,, चेडां	१०००)	१०००)	,,	
,, घाणो	१७००)	१७००)	,,	
,, सीधला	१७००)	१७००)	,,	
,, मोटी	५०)	सूनो	,,	
,, मायलोवास	३५०)	३५०)	,,	
,, हेमलीयास	४००)	४००)	,,	
,, पादरलां	५००)	५००)	,,	
,, सीसलोर	४००)	४००)	,,	
,, काबो	२०००)	२०००)	जालोर	
कुल रेख	३२७५०)	३१६५०)		

पीढियें—: ३. सादुलसिंघ-रतनसिंघोत ४. मुकनदास ५. ऊदेभांण ६ बिहारीदास ७. बाघसिंघ ८. ऊदेराज ९. ऊमेदसिंघ १०. जालमसिंघ ११. बखतावरसिंघ १२. ईंदरभांण १३. सगरांमसिंघ

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परवना	विशेष
गांव रांमो—	२०००)	२०००)	जोधपुर	
,, रेबड़ां वडी	२५०)	२५०)	,,	
	———	———		
कुल रेख	२२५०)	२२५०)		

पीढियें—: १०. जगतसिंघ-ऊमेदसिंघोत[1] ११. अजीतसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गांव सीरांणो—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. केसरीसिंघ-ऊदेराजोत[2] १०. भवांनीसिंघ ११. अचलसिंघ १२. चिमनसिंघ

गांव जलेली वडी—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ८. अभैराज-बाघसिंघोत[3] ९. किलांणसिंघ १०. देवसिंघ ११. बभूतसिंघ १२. लालसिंघ

गांव भंवरी—	२५००)	२५००)	जोधपुर	
,, पचपदरीयो	१५००)	१५००)	,,	
,, जादरी	२०००)	१०००)	गोढवाड	
,, प्रतापसिंघ रो गुडो	२००)	२००)	जोधपुर	
	———	———		
कुल रेख	६२००)	५२००)		

पीढियें—: ६. मोवणदास-ऊदेभांणोत[4] ७. प्रतापसिंघ ८. भींवसिंघ ९. कुसालसिंघ १०. सेरसिंघ ११. देवीसिंघ १२. माधोसिंघ १३. वेरीसाल

गांव बीजली—	५००)	५००)	जोधपुर	
,, गोदावसीयो	३००)	३००)	,,	
,, कुडली	३२५)	३२५)	,,	
	———	———		
कुल रेख	११२५)	११२५)		

---

१. ठि. भांडेलाव के (६) ठाकुर उमेदसिंह का पुत्र ।
२. ,, ,, (८) ,, उदैराज का पुत्र ।
३. ,, ,, (७) ,, बाघसिंह का पुत्र ।
४. ,, ,, (५) ,, उदैभांण का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: ६. देईदास-ऊदेभांणोत[1] ७. सिवदांनसिंघ ८. नरांणदास ९. वीरमदेव १०. जोरावरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव डीरी—	२५०)	२५०)	जोधपुर	
,, वीजां	२५००)	२५००)	,,	
कुल रेख	२७५०)	२७५०)		

पीढियें —: ५. जोगीदास-मुकनदासोत[2] ६. लालसिंघ ७. ऊदेसिंघ ८. जैतसिंघ ९. रुघनाथसिंघ १०. सादूळसिंघ ११. पिरथीसिंघ १२. सिवनाथसिंघ

गांव धवलेरीयो—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर

पीढियें —: ७. जीवराज-लालसिंघोत[3] ८. स्यांमसिंघ ९. चैनसिंघ १०. भोमसिंघ ११. अमरसिंघ

गांव देवासरण—	१०००)	१०००)	जोधपुर
,, जोलणो	५००)	५००)	,,
कुल रेख	१५००)	१५००)	

पीढियें —: ५. चंद्रभांण-मुकनदासोत[4] ६. आसकरण ७, वीरभांण ८. जगभांण ९. रतनसिंघ १०. भवांनीसिंघ

गांव सदावास—	१२५)	०	जोधपुर

पीढियें —: ९. कनीरांम-जगभांणोत[5] १०. जैतसिंघ ११. बनेसिंघ

गांव बालो—	३५००)	३५००)	जोधपुर
,, नीलकंठ	२०००)	२०००)	,,
,, कुलथांणो	१२५०)	१२५०)	,,
कुल रेख	६७५०)	६७५०)	

१. ठि. भांडेलाव के (५) ठाकुर उदैभांण का पुत्र।
२ ठि. ,, (४) ,, मुकनदास का पुत्र।
३. गांव डीरी के (६) ,, लालसिंह का पुत्र।
४. ,, भांडेलाव के (४) ठाकुर मुकनदास का पुत्र।
५. गांव जोलणो के (८) ठाकुर जगभांण का पुत्र।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें —: ४ लिछमणसिंघ-सादूळसिंघोत[1] ५. हिमतसिंघ ६ सगतसिंघ ७. अभैसिंघ ८. मांनसिंघ ९. अखेसिंघ १०. नाहारसिंघ ११. बभूतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भोडंर—	९००)	९००)	जोधपुर	
,, ऊमकली	५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१४००)	१४००)		

पीढियें—: ७. लालसिंघ-सगतसिंघोत[2] ८. रुघनाथसिंघ ९. रतनसिंघ १०. तेजसिंघ ११. हिमतसिंघ

गांव तोडवी— ५००) ५००) जोधपुर

पीढियें—: ५ हरीसिंघ-लिछमणसिंघोत[3] ६. अणंदसिंघ ७. जसवंतसिंघ ८. किलांण-सिंघ ९. कुसालसिंघ १०. बभूतसिंघ

गांव मोरढंढ— ५००) ५००) जोधपुर

पीढियें—: ८. गुमांनसिंघ-जसवंतसिंघोत[4] ९. तेजसिंघ १०. अजीतसिंघ

गांव बांणण— ८००) ८००) जोधपुर

पीढियें—: ४. रांमसिंघ-सादूळसिंघोत[5] ५. भगवांनदास ६. हिमतसिंघ ७. सगतसिंघ ८. अभैसिंघ ९. सुजांणसिंघ १०. जैतसिंघ ११. सगतीदांन

गांव कोरांणो— ५००) ५००) जोधपुर

पीढियें—: ६. सेरसिंघ-भगवांनदासोत[6] ७. अखेसिंघ § ८. नवलसिंघ ९. तेजसिंघ

खांप-महेसदासोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव २. महेसदास-तिण रा बंस रा महेसदासोत जोधा कहीजै ।

---

§ कांम आयो घोरीमने सरायां सूं झगड़ो हुवो उण में संवत् १८७७ में ।

१. गांव भांडेलाव के (३) ठाकुर सादूलसिंह का पुत्र ।

२. गांव वालो के (६) ,, सगतसिंह का पुत्र ।

३. ,, ,, (४) ,, लिछमणसिंह का पुत्र ।

४. गांप तोडवी के (७) ठाकुर जसवंतसिंह का पुत्र ।

५. ,, भांडेलाव के (३) ,, सादूलसिंह का पुत्र ।

६. ,, वांणण के (४) ,, भगवानदास का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पाटोदी—	१०००)	१०००)	सीवांणो	
,, आरब रो खेड़ो	१०००)	५००)	,,	
,, घड़सी रो खेड़ो	१०००)	५००)	सेरगढ	
कुल रेख	३०००)	२०००)		

पीढियें—: ३. रांमदास-महेसदासोत ४. गोयंददास ५. सबळसिंग ६. दुरजणसिंघ ७. सूरजमल ८. जालमसिंघ ९. जवांनसिंघ १०. भारथसिंघ ११. रांमसिंघ १२. कुसालसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव केसवांणो—	५०००)	५०००)	जालोर	
,, जोरवाड़ो	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	७०००)	७०००)		

पीढियें—: ७. जोरावरसिंघ-दुरजणसिंघोत[1] ८. बाहादरसिंघ ९. बाघसिंघ १०. बभूतसिंघ ११. वेरीसाल

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सिरथलो—	१०००)	१०००)	भीनमाल	

पीढियें—: ८. केसरीसिंघ-जोरावरसिंघोत[2] ९. दौलतसिंघ १०. सगतीदांन

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव फलसूंड—	१०००)	१०००)	जोधपुर	आसांमी ४ रे

पांती चौथी में— (१)

पीढियें—: ७. ऊदेसिंघ-दुरजणसिंघोत[3] ८. भींवसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. नाहरसिंघ ११. मोड़सिंघ १२. बभूतसिंघ

पांती चौथी में—(२)

पीढियें—: ६. दौलतसिंघ-सबळसिंघोत[4] ७. सुजांणसिंघ ८. सेरसिंघ ९. तेजमाल १०. मेघराज ११. ऊमेदसिंघ

---

१. गांव पाटोदी के (६) ठाकुर दुर्जनसिंह का पुत्र।
२. गांव केसवाणो के (७) ,, जोरावरसिंह का पुत्र।
३. गांव-पाटोदी के (६) ,, दुर्जनसिंह का पुत्र।
४. गांव पाटोदी के (५) ठाकुर सबलसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती चौथी में— ३)

पीढियें—: ७. सिवदांनसिंघ-दौलतसिंघोत[1] ८. चेनसिंघ ९. रिणछोड़दास १०. जूंजारसिंघ ११. केसोदास १२. रणजीतसिंघ

पांती चौथी में—(४)

पीढियें—: ७ हिंदूसिंघ-दौलतसिंघोत[2] ८. ऊमेदसिंघ ९. खेतसिंघ १०. भोजराज

टिप्पणी—गांव फळसूंड गढ जोधपुर री, इण गांव री सींव में खेड़ा ५६ मंडै, तिण में खेड़ो १ वसै, ईणां रै बाकी ५५ सूना। तिणां री नांव नहीं।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नांगांणो—	५००)	५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. पिरथीराज-भींवसिंघोत[3] १०. बभूतसिंघ ११. जसवंतसिंघ

गांव नेहवाई—	२०००)	२०००)	सिवांणो	

पीढियें—: ८ धीरतसिंघ-ऊदेसिंघोत[4] ९. छतरसिंघ १०. भोमसिंघ ११. सगतसिंघ १२. गोपाळसिंघ

गांव नेवरी—	१७००)	१७००)	जोधपुर	
,, बांकीवाड़ो	२५०)	२५०)	,,	
कुल रेख	१९५०)	१९५०)		

पीढियें—: ९. मांनसिंघ-धीरतसिंघोत[5] १०. किलांणसिंघ ।–। पांती सिवसिंघ-मांनसिंघोत ना ओलाद ११. देवीसिंघ ।। = ।।। किलांणसिघ री पांती सो हमे सारौ गांव देवीसिंघ रै नांवे।

गांव साई—	२०००)	२०००)	जोधपुर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ७. अनोपसिंघ-दुरजणसिंघोत[6] ८. सवाईसिंघ ९. विजैसिंघ १०. देवीसिंघ ११. बखतसिंघ १२. ऊदेसिंघ

---

१. गांव फलसूंड की (दूसरी पांती) के (६) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र।
२. गांव फलसूंड की (दूसरी दांती) के (६) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र।
३. ,, ,, (पहली पांती) (८) ,, भींवसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, ,, ,, (७) उदैसिंह का पुत्र।
५. गांव नेहवाई के (८) ठाकुर धीरतसिंह का का पुत्र।
६, ,, पाटोदी के (६) ,, दुरजणसिंह का पुत्र।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें—: ८. अनाड़सिंघ-सवाईसिंघोत[1] ९. सगतसिंघ १०. गोपालसिंघ ११. धनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सीरत—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ३. दूदो-महेसदासोत ४. बेणीदास ५. गिरधरदास ६. विजैसिंघ ७. जीवण-दास ८. माहासिंघ ९. बनेसिंघ १०. दौलतसिंघ

खांप-भोजराजोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव २. भोजराज-मालदेवोत रा वंस रा भोजराजोत जोधा कहीजै ।

गांव भागासणी—	२०००)	२०००)	जोधपुर

पीढियें—: ३. करमसेण-भोजराजोत ४. स्यांमसिंघ ५. रांमसिंघ ६. जोधसिंघ ७. सूरजमल ८. दोलतसिंघ ९. जोरावरसिंघ १०. गोपालदास ११. मूलसिंघ १२. सगतीदांन

खांप-अभैराजोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

पीढियें—: १. राव मालदेव २. रायमल ३. कनीरांम ४. अभैराज रा वंस रा अभै-राजोत जोधा कहीजै ।

गांव नीबी खास—	२२००)	२२००)	नागोर	खेड़ा २
,, कीतलसर	५००)	५००)	,,	सूनो
,, पीरावास	२५०)	२५०)	,,	
,, वीरावास	२५०)	२५०)	,,	
,, वेहडो	२०००)	२०००)	,,	
,, वीजपुड	५००)	५००)	,,	
,, खार }	१०००)	१०००)	,,	
,, नोखो }	—	—	,,	
,, चांदराई	५००)	५००)	,,	
,, भूरडीयो	२०००)	२०००)	,,	
,, बागरांसर	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	१०२००)	१०२००)		

१. गांव साई (पहली पांती) के (८) ठाकुर सवाईसिंह का पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें --: ५. कीरतसिंघ-अभैराजतोत ६. जैंतसिंघ ७. हठीसिंघ ८. लालसिंघ ९. धीरतसिह १०. अमरसिंघ ११. ईंदरसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. हणवंतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खारडीयो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ७. दुरजणसिंघ-जैंतसिंघोत[1] ८. सोभासिंघ ९. बाघसिंघ १०. हणवंतसिंघ ११. रणजीतसिंघ १२. जूंजारसिंघ १३. वभूतसिंघ

गांव बासणी —	१०००)	१०००)	नागोर	आसांमी २ रे
,, खांनपुर मांजरो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पांती आध में— ।।)

पीढियें —: ८. संगरांमसिंघ-दुरजणसिंघोत[2] ९. चतरभुज १०. भैरूंसिंघ ११. मोहणसिंघ

पांती आध में— ।।)

पीढियें —: ९. विगतसिंघ-सगरांमसिंघ[3] १०. करनसिंघ ११. अरजणसिंघ

गांव हुडाव स—	३०००)	३०००)	नागोर	
,, भलनावो	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें—: ८. सुरतांणसिंघ-हठीसिंघोत[4] ९. सखरूपसिंघ १०. सूरजमल ११. अनोपसिंघ १२. पिरथीसिंघ १३. किसनसिंघ

गांव दताऊ—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ५. हीरदेरांम-अभैराजोत ६. फतैसिंघ ७. भोमसिंघ ८. सिरदारसिंघ ९. मोहबतसिंघ १०. अगरसिंघ

---

१. ठि. नीबी खास के (६) ठाकुर जैंतसिंह का पुत्र ।
२. ठि. खारडीयो के (७) ठाकुर दुरजनसिंह का पुत्र ।
३. ठि. बासणी पहली पांती) के (८) ठाकुर संगरामसिंह का पुत्र ।
४. ठि. नीबी खास के (७) ठाकुर हठीसिंह पुत्र ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ७. लखधीरसिंघ-फतैसिंघोत[1] ८. जगरांमसिंघ ९. ऊमेदसिंघ १०. लालसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चक—	१५००)	१५००)	डीडवाणो	

पीढियें—: ७. मोहणसिंघ-फतैसिंघोत[2] ८. गजसिंघ ९. सादुळसिंघ १०. सांवतसिंघ ११. जवांनसिंघ

गांव देवड़ाटी—	२०००)	२०००)	कोळियो	आसांमी २ रे

पांती आध में— पहली

पीढियें—: ६. जसकरण-हिरदेरांमोत[3] ७. किसोरसिंघ ८. रांमसिंघ ९. हठीसिंघ १०. पाहाड़सिंघ ११. मोहबतसिंघ १२. सुजांणसिंघ १३. डूंगरसिंघ

पांती आध में— दूजी

पीढियें—: ८. पदमसिंघ-किसोरसिंघोत[4] ९. जालमसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. भारथसिंघ

गांव डाबरीयांणी—	२५००)	२५००)	मेड़तो	वडी
,, डेभावास	३०००)	३०००)	,,	
कुल रेख	५५००)	५५००)		

पीढियें—: ५. अमरसिंघ-अभैराजोत ६. फतैसिंघ ७. किसोरसिंघ ८. सवाईसिंघ ९. रूपसिंघ १०. लखधीरसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. मोतीसिंघ

केसरीसिंघोत जोधाँ रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव १. रायमल ३. किलाँणदास ४. नरसिंगदास ५. केसरीसिंघ रा वंस रा केसरीसिंघोत जोधा कहीजै ।

गाँव लाडणू—	५०००)	५०००)	नागोर	खेड़ा २
,, कसुंबी	१०००)	१०००)		
,, अलीपुरो	१०००)	१०००)		
,, रोडु	३०००)	३०००)		

---

१. ठि. दताऊ (पहली पांती) के (६) ठाकुर फतहसिंह का पुत्र ।
२. ठि. दताऊ (पहली पांती) के (६) ठाकुर फतहसिंह का पुत्र ।
३. ठि. ,, ,, ,, (५) ठाकुर हिरदैरांम का पुत्र ।
४. ठि. देवड़ाटी (पहली पांती) के (७) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सीलणवाद	७०००)	७०००)		
,, करवासी	३०००)	३०००)		
कुल रेख	२००००)	२००००)		

पीढियें—: ६. चंदरभांण-केसरीसिंघोत ७. जूंजारसिंघ ८. लखघीरसिंघ ९. भारथसिंघ १०. सिवदांनसिंघ ११. पदमसिंघ १२. मंगलसिंघ १३. बाहादरसिंघ

गांव सींगरावट-खुरद	१०००)	१०००)	कोलियो	
,, तुवरो वडो	७५०)	४००)		
,, तुवरो छोटो	७५०)	३५०)		
कुल रेख	३५००)	१७५०)		

पीढियें—: १२. लिछमणसिंघ-पदमसिंघोत १३. मेघसिंघ

गांव खोवताणो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १२. चांदसिंघ-पदमसिंघोत १३. बखतावरसिंघ

गांव लेहडी—	५००)	५००)		
,, दोलतपुरो	५००)	५००)		
,, सुवादियो	३०००)	३०००)		
,, माथासुख	६०००)	६०००)		
,, बांघड़	३०००)	३०००)		
कुल रेख	१३०००)	१३०००)		

पीढियें—: १०. गोपाळदास-भारथसिंघोत ११. प्रतापसिंघ १२. माधोसिंघ १३. पेमसिंघ

गांव गोराऊ—	६०००)	४०००)		
,, भावलो	४०००)	३५००)		
,, अंमदपुरीयो	१०००)	१०००)		
कुल रेख	११०००)	८५००)		

पीढियें—: १०. मालमसिंघ-भारथसिंघोत ११. रणजीतसिंघ १२. भैरूंसिंघ

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बालसमंद—	३०००)	३०००)	नागोर	
पांती दोय में—रेख	२०००)			पांती ॥=)॥।

पीढियें—: ९. हरीसिंघ-लखघीरसिंघोत १०. समरथसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. दांनसिंघ

पांती तीजी की रेख—	१०००)			

पीढियें—: ९. रांमसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. सूरसिंघ ११. स्यांमसिंघ १२. अनाड़सिंघ

गाँव गोदरावास—	२०००)	२०००)	कोलिया	

पीढियें—: ९. हीमतसिंघ-लखघीरसिंघोत १०. फकीरसिंघ ११. सिवनाथसिंघ

गाँव मांमड़ोदो—	२०००)	२०००)	नागोर	
,, तीतरी	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	४०००)	४०००)		

पीढियें—: ९. ईसरीसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. भोपतसिंघ ११. जालमसिंघ १२. गाढसिंघ

गाँव डोबरां रौ वास—	५००)	२५०)	नागोर	आधो

पीढियें—: ९. सादूळसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. मनरूपसिंघ ११. सिंभूसिंघ १२. बदनसिंघ

गाँव तुबरो बडो—	७५०)	७५०)	नागोर	
,, तुवरो छोटो	७५०)	७५०)	,,	
कुल रेख	१५००)	१५००)		

पीढियें—: १०. गुलाबसिंघ-सादूळसिंघोत ११. किसनसिंघ १२. रांमनाथसिंघ

गाँव घांनणी—	३०००)	३०००)	नागोर	
पांती छठी में—रेख	५००) री			

पीढियें—: ९. गुमांनसिंघ-जूंजारसिंघोत १०. सिवसिंघ ११. स्यांमसिंघ १२. दौलतसिंघ

पांती छठी में—रेख ५००) री

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ८. हिंदूसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. बुधसिंघ १०. मोहबतसिंघ ११. भगवतसिंघ १२. सांवतसिंघ १३. गुलाबसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती दोय में—रेख	२०००)			

पीढियें —: ८. ऊमेदसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. जसकरण १०. विसनसिंघ ११. हणवंतसिंघ

गांव छपारो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. सुखसिंघ-हिंदूसिंघोत १०. कुसालसिंघ ११. गोकलसिंघ १२. भैरूसिंघ १३. भूरसिंघ

गाँव धुडीयो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. लालसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. बनेसिंघ १०. ऊदेभांण ११. मंगलसिंघ १२. सबळसिंघ

गांव बाठड़ी—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें:— १०. सूरजभांण-बनेसिंघोत ११. अखैसिंघ १२. पिरथीसिंघ

गाँव खंगार—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे
पांती आध में— ॥)				

पीढियें—: ११. डूंगरसिंघ-सूरजभांणोत १२. कायमसिंघ १३. रांमसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ८. ईंदरसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. जालमसिंघ १०. खुमांणसिंघ ११. भोपत-सिंघ १२. भारथसिंघ

गाँव तिपनी—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. राजसिंघजूंजारसिंघोत ९. मुकनसिंघ १०. हरनाथसिंघ ११. सिवनाथसिंघ

गांव मडाम—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें -: ८. धीरजसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. कनकसिंघ १०. रांमसिंघ ११. पूरणसिंघ १२. किसनसिंघ

गाँव बीठडवो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. सुरतांणसिंघ-धीरजसिंघोत १०. हठीसिंघ ११. नाथूसिंघ

गांव नदवाण—	५००)	५००)	नागोर	आधो

पीढियें—: ८. जैतसिंघ-जूंजारसिंघोत ९. दानसिंघ १०. सांवतसिंघ ११. विजैराज

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गांव रणसीसर—	१०००)	१०००)	नागोर	आघो

पीढियें—: ८. मनरूपसिंघ-जूंझारसिंघोत ९. सलेहसिंघ १०. जसवंतसिंघ ११. सिरदार-सिंघ १२. रांमनाथसिंघ १३. हरदांनसिंघ

गांव छाजोली—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें —: ७. डूंगरसिंघ-चंद्रभाणोत ८. अणदसिंघ ९. मोहकमसिंघ १०. कीरतसिंघ ११. रामसिंघ १२. मानसिंघ १३. फूलसिंघ १४. सोभासिंघ

गांव बांभणवो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांतो आध में— ॥)

पीढियें—: ११. भोमसिंघ-कीरतसिंघोत १२. उगमसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. प्रभूदांन १५. नोनदसिंघ

पांती आध री विगत—

पीढियें—: ११. सूरसिंघ-किरतसिंघोत १२. गुलाबसिंघ १३. सिवसिंघ

गांव भेणवाद—	२०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. विसनसिंघ-अणंदसिंघोत १०. रूपसिंघ ११. अजीतसिंघ १२. राजसिंघ

गांव आसोटो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. अभैसिंघ-अणंदसिंघोत १०. जुगभांण ११. अजीतसिंघ १२. अनाड़सिंघ १३. पेमसिंघ

गांव पाटण—	१०००)	१०००)	कोलियो	

पीढियें—: ८. अमरसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. भोजराज १०. सालमसिंघ ११. देवीसिंघ १२. माधोसिंघ १३. रांमनाथसिंघ

गांव पड़ीहारी—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. किसोरसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. रुघनाथसिंघ १०. सिवसिंघ ११. ग्यानसिंघ

गांव भवादोयो—	२०००)	२०००)	कोलियो	

पीढियें—: ८. सिरदारसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. मोहणसिंघ १०. बखतसिंघ ११. भोपतसिंघ १२. बागसिंघ १३. विजैसिंघ

गांव कसूबी जाखडां—	१५००)	१५००)	नागोर	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, कसूबी मेहलां	१५००)	१५००)	,,	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें —: ६. अरजनसिंघ-केसरीसिंघोत ७ सूरजमल ८. वनेसिंघ ९. नरांणदास
१०. अखेसिंघ ११. मंगलसिंघ १२. रुघनाथसिंघ

गांव टालणाऊ—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. ऊमेदसिंघ-वनेसिंघोत १०. सेवसिंघ ११. बाघसिंघ १२. राजसिंघ
१३. मूलसिंघ १४. मेहतावसिंघ

गांव कांगसीयो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. दांनसिंघ-बनेसिंघोत १०. दुलेहसिंघ ११. रतनसिंघ

गांव लाछडी —	२०००)	२०००)	कोलियो	

पीढियें —: ८. सबळसिंघ-सूरजमलोत ९ जैसिंघ § १०. कनीरांम ११. हणवंतसिंघ
१२. सिवनाथसिंघ

गांव कुभावसीयो—	१०००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ८. भोजराज-सूरजमोलत ९. नथराज १०. देवीसिंघ १२. जसकरण
१२. अमांनसिंघ

गांव भडारी—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २

पांती आध री विगत—

पीढियें—: ११. चिमनसिंघ-देवीसिंघोत १२. रूपसिंघ

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ७ भगवतसिंघ-गोपीनाथोत (गोपीनाथ-केसरीसिंघोत) ९. सायबसिंघ
१०. भैरूसिंघ ११. कनीरांम १२. चिमनसिंघ

गांव रायधणो —	३०००)	३०००)	नागोर	आसांमी २

पाती आध में—

पीढियें —: १०. जगरांमसिंघ-नथराजोत ११ ईंदरसिंघ १२. जुहारसिंघ

---

§ जैसिंघ अमरकोट में तालपुरों से युद्ध हुआ वहां काम आया ।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पांती आध में—

पीढियें —: ७. सुजांणसिंघ-अरजणसिंघोत ८. सुखरूपसिंघ ९. सिवसिंघ १०. मोहकमसिंघ ११. जिदूसिंघ १२. रतनसिंघ १३. सुजांणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सेवो—	५ ००)	५०००)	कोलियो	
,, रसीदपुरो	३०००)	३०००)	दोलतपुरो	
कुल रेख	८०००)	८०००)		

पीढियें—: ९. कनकसिंघ-सुखरूपसिंघोत १०. अभैसिंघ ११. मालमसिंघ १२. जालमसिंघ १३. जगतसिंघ १४. चुतरसिंघ

गांव सींगरावट—	३०००)	३०००)	कोलियो	
,, सांवराद	२०००)	२०००)	नागोर	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें —: १०. त्रिसनसिंघ-कनकसिंघोत ११. मोतीसिंघ १२. मोहणसिंघ १३. नाथूसिंघ

गांव गिरधारीपुरो—	१०००)	१०००)	कोलियो	

पीढियें—: १२. गायड़सिंघ-मोतीसिंघोत

गांव भींडीयासरी—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. जवांनसिंघ-कनकसिंघोत ११. चांदसिंघ १२. भावसिंघ १३. धौकलसिंघ

गांव लोटसर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ७. रतनसिंघ-अरजणसिंघोत ८. नवलसिंघ ९. दलेलसिंघ १०. अमांनसिंघ ११. पाहाड़सिंघ १२. धनसिंघ

गांव खारडीयो—	२५००)	२५००)	नागोर	आसांमी २
,, मंगलपुरो	२५००)	२५००)	,,	,,
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पांती आध में—

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

पीढियें—: ८. रूपसिंघ-रतनसिंघोत ९. जालमसिंघ १०. लालसिंघ * ११. मंगलसिंघ १२. अजीतसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

पांती आध में— (अे घनांणी री पांती में मिळै है।)

पीढियें—: ९. बखतसिंघ-हिंदूसिंघोत १०. मोतीसिंघ ११. जवारसिंघ १२. बलवंतसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव खुणखुणो—	३०००)	३०००)	कोलियो	

पीढियें—: ६. गोपीनाथ-केसरीसिंघोत ७ हरनाथसिंघ ८. खींवकरण ९. जगतसिंघ १०. वेरीसाल ११. सिरदारसिंघ १२. भींवसिंघ १३. विसनसिंघ

गाँव हीरावती— १०००) १०००) नागोर

पीढियें—: १०. अजीतसिंघ-जगतसिंघोत ११. सूरजमल १२. रूपसिंघ १३ सवाईसिंघ

गाँव बुढोद— २०००) २०००) कोलियो

पीढियें—: ९. बखतसिंघ-खींवकरणोत १०. दुलेहसिंह ११. लिछमणसिंघ १२. मोतीसिंघ १३ नाहारसिंघ १४. सूरसिंघ

गाँव जांणी— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ८. करणसिंघ-हरनाथसिंघोत ९. हिमतसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. अनाड़सिंघ १२. वाघसिंघ १३. विजेसिंघ १४ मेहताबसिंघ

गाँव बीचावो— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ९. ऊमेदसिंघ-करणसिंघोत १०. गुमांनसिंघ ११. नवलसिंघ १२. चिमनसिंघ

गाँव थांणू— ३०००) ३०००) नागोर

पांती आध में—

पीढियें—: ८. प्रीथीसिंघ-हरनाथसिंघोत ९. सरूपसिंघ १०. अमांनसिंघ ११. नवलसिंघ १२. मुकनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. गुमांनसिंघ-सरूपसिंघोत ११. रणजीतसिंघ १२. डुंगरसिंघ १३. रांमसिंघ

गाँव हुसेनपुरो— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ९. माहासिंघ-पिरथीसिंघोत १०. खड़गसिंघ ११. रिड़मलसिंघ १२. अमरसिंघ १३. गूदड़सिंघ

---

* लालसिंह रायपुर पर फौज आई तब सं. १८३४ में काम आया।

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गांव अंगरोटीयो—	१०००)	१०००)	कोलियो	
,, सीकराली	२०००)	२०००)	नागोर	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें—: ७. चतरभुज-अरजनसिंघोत ८. भोजराज ९. वखतसिंघ १०. अमांनसिंघ ११. हणवंतसिंघ १२. लिछमणसिंघ

गाँव चीतावो—	१०००)	१०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ९. भवांनीसिंघ-भोजराजोत १०. वदनसिंघ ११. रुघनाथसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ९. सिंभूसिंघ-भोजराजोत १०. जीवणसिंघ ११. जैंतसिंघ १२. केसरीसिंघ

गांव खाटू-खुरद—	७०००)	६०००)	नागोर	आसांमी ३ रे

पांती तीजी में— (१)

पीढियें—: ६. किसनसिंघ-केसरीसिंघोत ७. दौलतसिंघ ८. ग्यांनसिंघ ९. चांदसिंघ १०. रांमसिंघ ११. समरथसिंघ १२. ईंदरसिंघ

पांती तीजी में— (२)

पीढियें—: १०. प्रभूदांन-चांदसिंघोत ११. नोनदसिंघ १२. सूरसिंघ १३. रूपसिंघ

पांती तीजी में— (३)

पीढियें—: ९. ज्ञालमसिंघ-ग्यांनसिंघोत १०. जोगीदास ११. मंगलसिंघ १२. विड़दसिंघ

गांव रायसिंघपुरो	२०००)	२०००)	कोलियो	रेख घटी ७५०)

पीढियें—: ८. विजैसिंघ-दौलतसिंघोत ९. चैनसिंघ १०. सूरजमल ११. रणजीतसिंघ १२. भवांनीसिंघ १६. मेहतावसिंघ

खांप-बिहारीदासोत जोधाँ रा ठिकाँणाँ री विगत

पीढियें—: १. राव मालदेव २. रायमल ३. किलांणदास ४. ईसरदास ५. बिहारीदास, तिण रा वंस रा बिहारीदासोत जोधा कहीजै।

गांव रोहीसी —	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ६. विठलदास-बिहारीदासोत ७. किसोरसिंघ ८. हठीसिंघ ९. गजसिंघ १०. प्रतापसिंघ ११. दलेलसिंघ १२. कुसालसिंघ १३. जीवणसिंघ १४. अमरसिंघ १५ बलवंतसिंघ

गांव मुडियासरी—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. माहासिंघ-किसोरसिंघोत ९. गुमांनसिंघ १०. बाहादरसिंघ ११. गुलाबसिंघ १२. वखतावरसिंघ

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

विगत में आये हुए

चारण, भाट व ब्राह्मणों

के

सांसण आदि की सारिणी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
अखई सोढ़ावत चारण	मांडवो, वास	पोकरण	राव हमीर जगमालोत माला का पोता
अचळा चंदरीया बारठ	आकोघणी	जोधपुर	रावळ जगमाल
अचळा घणपालोत बारठ	भापरी	पोकरण	राव गोइंद नरावत
अमरा दूदावत बारठ	वडी रा बास	जोधपुर	राव श्री रिड़मलजी
अमरा दूदावत रोहीड़ा	मथांणीयो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
आलु बावट रोहड़ीया	भाडु री बास	जोधपुर	राव चौडा
आवा तेजावत बीठु	अचला रा खेत	मेड़ता	अचळा रायमलोत
ऊरजन माचावढ़ां महीया	रोहड़ा री वास	सीवांणा	रांणा देईदास
कनीया वीका	बुटेळाव	सोजत	राव श्री जोधाजी
करमसीयोत लाखा कनीया चारण	सोवांणीयो	फलोघी	राजा रायसिंघ किलांणमलोत
करमा पुनावत रीछड़ा मुगळ लषणीयां	बणलीयो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
करमसीहोत जीवण	म्हेंहू जीवण री वास	पोकरण	पोकरण रा. माला करण हदो रतनसीयोत, कान्हावत, गोदो मेघराजोत लूका, राव कवरो, मांणकराव, जीवण भोजावत सगतो धरावत, भूणीयांणी पोकरणां
काछेला सुर दुबड़ी	कुवड़ो	जोधपुर	सींघल चांपा मैणावत
कान्हा उत्तमसीयोत लालस	चचळाव	जोधपुर	राव जोधाजी
कान्हा उत्तमसीयोत लालस	सुवेरी	जोधपुर	राव जोधाजी
किसना दुरसावत आढ़ा	हींगोलो खुरद	जोधपुर	राजा श्री गजसिंघजी
केसा जीवाउत रोहड़ीयं बारठ	ऊदळीया वास	जोधपुर	राजा उदैसिंघजी
केसोदास सांदुवोत गाडण	सोभड़ा वास	सोभत	गजसिंघजी
खंगार मेहडु	गुड़ली	जोधपुर	रावळ हापा
खींवा वेणीदासोत जगहट	थांणा	मेड़ता	राव कानीदास

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत
	३५१ (भा० २)	
जगो गोपाळ	३६६ (भा० १)	
बारठ हेमराज खींवा, मालौ समुरथा का सुरतांण जालप का	३५० (भा० २)	राव गांगे के समय में दिया।
सारंग जैतमालोत रामचंद गोपाळोत	२५८ (भा० १)	
चवंडदास मेहराजोत	२३६ (भा० १)	
मानो राईमल	३१८ (भा० १)	
कूंपो पंचाइणोत	१६५ (भा० २)	
चारण रूपा सांकर का, ऊदौ रांमा का, सांवत देदा का	२७३ (भा० २)	बाद में राव मालदेजी ने चारण अचळा लालावत को और दिया। कहा जाता है कि एक बार राजा उदयसिंहजी ने हस्तक्षेप किया था।
कनियौ रूपसी ठाकुरसी चतरावत	४८८ (भा० १)	
नरौ, चतरभुज, देवौ मेहाजळ रौ धनौ, लाला	२८ (भा० २)	
देवराज भारमलोत करमा का पोता	२४२ (भा० १)	
खमीदास मेघराजोत मुगल का पोता		
देवीदास जीवण रौ	३५१ (भा० २)	आपस में वैर था, वैर समाप्त करने के उपलक्ष में खेत दिया गया।/१६९२
भोजराज	२८६ (भा० १)	
टीलो सिवदास	३११ (भा० १)	
	३११ (भा० १)	चांचलवा को साथ दिया।
महेसदास	२६२ (भा० १)	
किलांणदास-रूपसोत	२५८ (भा० १)	लाख रु. का पुरस्कार/१६८३जेठ सुदि१३
गाडण उदैकरण, भोजराज, भींव, केसोदास	४८६ (भा० १)	
	३६७ (भा० १)	
आईदांन-जगा का पुत्र	१८५ (भा० २)	

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
खींवा अणदोत चारण	म्हेडू खीदा रौ वास	पोकरण	भाटी रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत
खींवराज जैमलोत दधवाड़िया	राजगीया वास बडो	स ंभत	महाराजा गजसिंहजी
खेतसी परवतलाल	भाटेळाई वड़ी	जोधपुर	महाराजा गजसिंहजी
गेई रतनावत खड़ीयौ	गेहावास	जैतारण	राव रतनसी खींवावत
गेहलांणंद देवादत	सांदुवा रौ बास	जोधपुर	राव वैरसल प्रीथीराज जैतावत
गोकळचंद द्वारकानाथोत	घोळीयो	मेड़ता	महाराजा जसवंतसिंहजी
गोपाल रांमदासोत बरसड़ा	बरबड़ा री वासणी	जोधपुर	राजा श्री उदैसिंहजी
गोयंद संढ़ायच	आखा रौ वास	जोधपुर	कड़वड़ रौ रा. पंचाईण अखैराजोत
चकोर अमरावत थेहड़	चंगावड़ो तीजौ	जोधपुर	राव गांगा
चंडीदास	मोडी बड़ी	जोधपुर	उदैसिंहजी
चाकर रूपसी कवरावत	रतनू रूपसी रौ वास	पोकरण	भाटी रावळ, भींव हरराजोत
चांदण लुणावत खिड़ीया	सांषीडो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
चाडा माडणोत घधवाड़िया	जारोड़ो वेणां	मेड़ता	राव अचळा रायमलोत
चुवंडदास कलावत, देवीदास रांमदासोत	अंगदवास	सोझत	राजा उदैसिंघ
चोसंघ बीजावत संढ़ाईच	वास संढ़ाईचां रौ	सीवाणा	रा. कूंपा जोगावत
चोला मेहावत	मीठोली	जोधपुर	मोटा राजा
जगहथ पोटल काला राव के लड़के	खांनपुरो	मेड़ता	दूदा जोधावत
जीमो हरावत वसड़ो	ढ़ांढ़णीयो खुरद	जोधपुर	राव चूंडा
जीवा नेतावत मीसण	तीघरीयौ	जोधपुर	राजा श्री सूरजसिंहजी
जोधा सारंगोत मेहडु	जोधावास	जैतारण	डूंगरसी उदावत
झुठा बीकावत	झुठा री बासणी	जोधपुर	श्रीमालदेजी
टीकम गीथावत	वेराही वास ३	जोधपुर	राव चूंडाजी
ठाकुरसी बारठ	सेवी	जोधपुर.	रावळ जगमाल
भट्ट तिलंग का लड़का नाराइण	नाथल कुंडी	सोझत	राजा उदैसिंघजी
तीकम संढ़ायचा	वही काभड़ी री	जोधपुर	राजा सूरजसिंहजी
तेजसी बीसलोत रोहड़िया बारठ	मुळीयावास	सोझत	श्री गांगाजी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
म्हैडू हरदास खीदावत	३५२ (भा० २)	१६८८ सांवण वद १३
दधवाड़ियो ग्रासकरण, प्रीथीराज खींवराजोत	४८६ (भा० १)	१६९४ काती सुद ९
—	३०४ (भा० १)	
खेड़ो ग्रासो पीथावत बीको देईदांन को	५४९ (भा० १)	
वुढ़ो दलो सेहसा का लड़का	२५५ (भा० १)	
—	१९८ (भा० २)	१७७१
मनोहर पीथावत	२४० (भा० १)	
सुदर गुणेस	२४३ (भा० १)	
नगराज, खेतसी	२४१ (भा० १)	
भांनीदास चंडीदास रो, नेहररांम भगवांन सीरंग रा	२६७ (भा० १)	
रतनूं, किसनो, पीथो, रूपा सीहोत, जगो, खेतसी	३५२ (भा० २)	मेघराज नराइण कांमदार था, इसको हुक्म मिलने पर गांव दिया।
भैंरवदास	२६२ (भा० १)	
सुंदरदास मोहणदास माधोदासोत	१६५ (भा० २)	
—	४८३ (भा० १)	
चारण वेणो मांडण, नगो गोपळ, रूपो राजा	२७६ (भा० २)	
जगहट सोढ़ो	३५० (भा० १)	
ग्रमरो पुंजावत, दुरगो नादावत	१७६ (भा० १)	
धरमो लाला रो	३०३ (भा० १)	
पूरण जीवावत	२४१ (भा० १)	
मेहडु वाघो सुरतांण हरीदास लुणावत	५५० (भा० १)	
नाथो दासावत	२४२ (भा० १)	
चवंडै मेघराजोत मोटोला ईसरोत	३१२ (भा० १)	
गंगादास	३६७ (भा० १)	
भाट गोपाळ बाळमुकंदोत	४८३ (भा० १)	
खींवराज, खंगार	३३५ (भा० १)	
बारठ चांवडदास किलांणदासोत	४८८ (भा० १)	१६६४

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्त्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
तेजा करमसीयोत आसीया	तेजा री वासणी	जैतारण	दलपत उदैसीयोत
थीरा दूदावत रोहड़ीया	खारी थीरावास	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
थीरा वरसंघोत चारण	खारी खुरद	जोधपुर	राव सूजाजी
दमान रूपसीयोत दसौंधी	मोगावास	मेड़ता	राव सूरजसिंघजी
दला चोभावत आसीया	लखाण छुंम	जोधपुर	रा. पता नगावत
दांना मोकळ रा रतनु	लेलावासणी	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
दांना हरराजोत रतनु	गेमावास	मेड़ता	राजा सूरजसिंघजी
दांमो हरखावत रोहड़ीया	सांसण गांव	जोधपुर	रा. पता घड़सीयोत
दुदा वीदावत वीठु	बीजा रौ वास	जोधपुर	रा. महेस घड़सीयोत
दुदुवत सांदु	छीड़ियो	जोधपुर	राजा सूरसिंघजी
दुरसा मेहावत आढ़ा	लूगीयो	मेड़ता	सुरतांण जैमलोत
दुरसा मेहावत आढ़ा	दागलो	जैतारण	राजा सगतसिंघजी ऊदेसिंघोत
दुरसा मेहावत, कीसन दुरसावत	पंचेटीयो	सोझत	महाराजा गजसिंहजी
दूदा अमरावत आसीया	खीनवड़ो	जोधपुर	उहड़ जैमल नेतसोत
देवलिंग आढ़ी वेरा करमसीयोत की पत्नि	बीजळीयावस	सोझत	सूरजसिंघ
देवीदांन गुणावत	वास बारेट रोहड़ीया	सीवांणा	राव चंदरसेन मालदेवोत
देवीदास भेरवोत बारठ	रेपड़ावास तीजो	सोझत	प्रथीराज कुंपावत
धरमो चांदणोत खड़ीया	कांवळीयां	मेड़ता	वरसिंघ जोधावत
धारावत चारण	रतनू भारमल रौ वास	पोकरण	भाटी रावळ कीलांणदास हरराजोत
नरसिंघ संढ़ाइच	मोगढो खुरद	जोधपुर	नाहड़राव पड़ीहार
नाथा रतनसियोत रोहड़िया	मोरटहुको	सोझत	महाराजा जसवंतसिंघ
नाल्हा वछावत चारण	केलावो आघो	पोकरण	राव गोयंद नरावत
नीवा करमावत चारण, पीथो टोहावत काका भतीज	छड़ोई कलाण रौ वास	सीवाणा	रांणा देवीदास बीजावत

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
आसीया हाथी मोटौ तेजावत	५५१ (भा० १)	१६२२
चवंडदास कलावत अर दईदास रांमदासोत	२४० (भा० १)	
भादो कलौ लाषा	३५० (भा० १)	
रिणछोड़ विहारीदास, चुतरभुज विहारीदासोत हर रांम मदमन की	१६८ (भा० २)	
जोगौ सेसमलोत	२६३ (भा० १)	
लिखमीदास मेघराजोत	२६३ (भा० १)	
सांवळदास दांनावत लिखमीदास जसावत	१६४ (भा० २)	
जसौ रूपौ	२७२ (भा० १)	
गोयंल चोला	२५५ (भा० १)	
माधोदास	३४६ (भा० १)	
डूंगरसी सादुळोत देईदांन जगमालोत	२१२ (भा० २)	
आढ़ा रतनसी डूंगरसीयोत, रांमा सारदुळोत	५५० (भा० १)	गिरदी गांग पट्टे में था तब यह गांव दिया गया।
—	२८३ (भा०१)	संवत् १६७७ की काती सुद ७ की वह में आढ़ो महेसदास किसनावत है।
सादूळ रूपा	३०३ (भा० १)	
आसीयौ नरसिंघदास नरहरदास जगावत	४८७ (भा० १)	पहले गांव लोळवस दुघवड़ को दिया १४ वर्ष बाद बदल कर बीजळीयावस दिया/१६६४ महा बद ११
बारठ समुरतौ, रांमचंद गोयंद	२७६ (भा० २)	
—	४५८ (भा० १)	
किसनदास केसौदास सांवळ झांझणोत	१२८ (भा० २)	
भैरूदास		
रतनूं रांणो भारमलोत	३५३ (भा० २)	
	२४१ (भा० १)	
किसनदास देदावत	४८४ (भा० १)	१७१५ फागुन सुद ७
—	३५५ (भा० २)	
चारण ऊदौ हमीर का भानौ भारमल	२७७ (भा० २)	
चारण दांना किसनावत नराइण खेता, ईसर मेहजळ, भारमल माना का		

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गाव का नाम	परगना	दाता
नींबा खेतावत चारण	गेहा वासणी	जैंतारण	रा. खीवो ऊदावत
पत्ता देवादत बारठ	बाजोळी चारणां री	मेड़ता	दूदा जोधावत
पत्ता वरसावत चारण	वोढ़णीयो (ओढ़णीयो)	पोकरण	भाटी रावत कीलांणदास हरदासोत
परतापसिंघ नांदणोत बारठ	भीलावास	मेड़ता	राजा श्री सूरजसिंघजी
पाला ऊदावत रतनु	परबतसर रा खेत	मेड़ता	रा. दूदाजोधावत
पीथा भांणावत गाडण	छुबली (शुवली)	जोधपुर	रा. जैंतमाल खावत
पुनराव ने वेवढो आसीया	खाढ़ावास	जोधपुर	रा. श्री जोधाजी
बावट आलावत रौ लाधा	भुंडुरौ वास	जोधपुर	रा. चूंडा
बोकसी सांकर भैंरावत नरबोत (चारण)	सरवड़ी सींधलां री	जोधपुर	रणधीर कोभावत
बोहीगुण मालावत खड़िया	बोहोगुण री बासणी	जैंतारण	रा. भानीदास खीवावत
भरमां रूपावत रतनु	रंभलावास	मेड़ता	रा. जेसा सीहावत
भींवा बरसलोत	रंतु	जोधपुर	रावळ महेसदास
भैंरव नीवावत रोहड़ीया बारठ	रेपड़ावास खुरद	सोझत	राव श्री गांगाजी
भैंरव हरखावर खीड़ीया	चारणां री वासणी	जोधपुर	राजा उदैसिंघजी
भोजा जैसावत मीसण	लुणावस तीजो	जोधपुर	राव सातल जोधावत
मनो रूपसोत भाट	वुजड़ो	जोधपुर	मोटा राजाजी
महेस दूदावत रोहड़ीया बारठ	खारीबास	जोधपुर	वडोवास राव सते चुंडावत
महेसदास मेघराज किसनावत आढ़ा	गोधावास	सोझत	जसवंतसिंघजी
माधवदास चूंडावत दधवाड़ीया	नापावस	सोझत	राजा श्री सूरजसिंघजी
माला ऊदावत सांदु	खुढ़ालो	जोधपुर	मोटा राजा
माला उदावत सांदू	गुदीसर खुरद	मेड़ता	राजा श्री सूरजसिंघजी
माला कचरावत धीरण	करांणी	जोधपुर	उहड़ मांडण गोपाळदासोत
माला तेजावत बीठू	जोधड़ावास खुरद	मेड़ता	रा. जैंमल वीरमदेवोत
माना रामावत आसीया	वसी	जोधपुर	राजा श्री सूरजसिंहजी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
कविया रांमदास मांडण, चांवडादास देईदास	५४९ (भा० १)	
महेस चुतरावत खेतसी बेणावत	१८४ (भा० २)	
	३५० (भा० २)	पोकरण के आ. मेघराज मु. नराइण और कलु कांमदार को हुक्म मिला जब गांव दिया।
परतापमलोत, किलांणदास कानड़ राजसीहोत	१५२ (भा० २)	
तेजसी, नाथो सांकर के पुत्र	१६५ (भा० २)	
वीरम कमौ	३०४ (भा० १)	
	२४० (भा० १)	
दुदौ डूंगरोत -	३०४ (भा० १)	
कलौ रांमदासोत	२९३ (भा० १)	
खिडीयौ खेतसी पहराजोत	५५१ (भा० १)	
सांवळदास कांनावत रांमसिंघ-सांदूळोत	१४१ (भा० २)	
खेतसी भींवावत	३६६ (भा० १)	१६९५
गजसी नरावत, माधौ मेवाहरोत	४८५ (भा० १)	
चंदौ खगारोत	२४१ (भा० १)	
साजण भींव	२४३ (भा० १)	
भाट रिणछोड़ विहारीदासोत	२५५ (भा० १)	१६५१
नाथौ रजनसिंघोत	२३९ (भा० १)	
महेसदास किसनावत	४८४ (भा० १)	१७०२
दधवाड़ीयौ सूरदास मोवणदास माधोदासोत विसनदास सांमदासोत	४८७ (भा० १)	१६५४
आसो सांवतसी माला रा बेटा कुंभो ईसरदासोत	३४९ (भा० १)	१६४०
सांवतसी आसकरणोत कुंभो ईसरदासोत	१९७ (भा० २)	
	३०३ (भा० १)	
पीथौ नरसंघ का; खेमो ईसर का	१६४ (भा० २)	
	२८७ (भा० ?)	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्त्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
मांना रांमावत	छाहली	जोधपुर	जैतसी उदैसिंघोत
मांडण खींवसुरा खिड़ीया	भावली चारणों री	मेड़ता	वीरमदेव दूदावत
मुहड़ ठाकुर सोनावत चारण	कांर	जोधपुर	रावळ मेघराज
मेघराज गेहावत रतनु	चांपावसणी	जोधपुर	रा. भींवा वाघावत
मेलौ गोगरठराउ आसीया	नेसड़ो	जोधपुर	सीचल वीसळदे वीरावत
मेहका सोलावत सिढाइच	सिढ़ाइच मेहका रा वास	पोकरण	रा. प्रथीराज गोईंदोत नरावत
मेहा दुसळोत	खेड़ी	जोधपुर	राव मालदेजी
मेहा रोहड़ीया बारठ	सांवरो	जोधपुर	रावळ मालजी
मोका मांडणोत	डागसूरीयो	मेड़ता	रा. बलभदर सुरतांणोत
मोटल मांड़णोत ड़िखीया	रळीयावतो खुरद	मेड़ता	जैमल वीरमदेवोत
मोटस सांरणोत मीसण	तांबड़ीयौ खुरद	जोधपुर	राजा ऊदैसिंघजी
रतना चाचावत संढ़ायच	कानावास	जोधपुर	रा. काना वीजा सिवराजोत
रतना डाहावत मीसण	रतनावास	मेड़ता	रा. रतनसी दूदावत
रला गोयदोत जगहट	रलावसे	जोधपुर	श्रीमालदेवजी
राजसी अखावत	दुपावास	जोधपुर	राजा गजसिंघजी
राजसी परतापलोत बारहठ	जालीवाडो खुरद	जोधपुर	राजा श्रीगजसिंघजी
राजसी प्रीथीमलोत बारठ	पीथावास	मेड़ता	राजा श्रीगजसिंघजी
रांमौ धरमसीयोत सांदू	रांमा री वासणी	सोझत	राजा उदैसिंघजी
रेप चाहैडोत रोहड़ीया	रेपड़ावास वडौ	सोझत	राव श्रीजोधाजी
लखा नांदणोत बारठ	ऊंचीहेड़ो	मेड़ता	राजा सूरजसिंघजी
लखा नांदणोत रोहड़ीया	रहैनड़ी	सोझत	राजा सूरजसिंघजी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
जसो मांनावत	२४३ (भा० १)	
भगवान जसावत नराईण अखावत	१६८ (भा० २)	
जगमाळ अखावत	३६७ (भा० १)	
करम सुन्दर	२४२ (भा० १)	
	२८६ (भा० १)	
चारण करमसी महेसुर चंदो अमरा	३५३ (भा० २)	राव गोईंद की वार में झलारियौ पट्टै था, तब खेत दिया गया।
मेघराज डूंगरसी	२४२ (भा० १)	
	३६६ (भा० १)	
पिरथीराज सुंदरदासोत और जगनाथ मनोहरदासोत	१४० (भा० २)	
लिखमीदास भैंरवदासोत नहर, सूजावत नहर भोजराजोत	१६७ (भा० २)	
महेस मोटलोत	२३९ (भा० १)	
नाथौ रूपावत	२५४ (भा० १)	
	१८५ (भा० २)	बाद में सुरतांण जैमलोत ने मीसण से छुड़ा कर चुतरा जैमलोत को प्रदान किया। चुतरे ने आधा गांव अपनी बहिन जिसने कि मीसण दांन के साथ शादी की थी उसको दे दिया और आधा खुद ने रखा।
नादे करनोत	२४२ (भा० १)	
भैरू भींवराज राजप्रोत	२६८ (भा० १)	१६८६
किल्यांणदास कांनु राजसिंघोत	२५५ (भा० १)	
किलांणदास कांना राजसी का पुत्र	१४१ (भा० २)	
सांढू गोयंददास राघावत रतनसी देदु कुंभो मनोहरदास नाथौ अखावत	४८७ (भा० १)	राव मालदेवजी की वार में दिया।
बारठ चूंडो अखावत	४८५ (भा० १)	
गिरधरदास लखावत के बेटे आसकरण प्रीथीराज	१४० (भा० २)	
बारठ आसकरण प्रीथीराज गिरधरदासोत	४८५ (भा० १)	स० १६७२ मिगसर सुदि ७

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
लाला पुनसरोत बारठ	बडौवास	सीवाणा	रा. पंचाईण बरसिंघोत महेवचा
लाखा नांदणोत रोहड़ीया	सींधला नडी	जैतारण	राजा श्रीसूरजसिंघजी
लाखा दासावत चारण	लाखा वासणी	जैतारण	रा. रतनसी खींवावत
लुंभा चांदणोत खिड़या	खारड़ी	मेड़ता	वरसिंघ जोधावत
लुंभा सादा मेघावत	नांदणहाई रौ वास	पोकरण	राव सूजो, सांगो जैमल
लोलो नोखावत चारण	उजळां	पोकरण	राव गोईंद नरावत
वसता भाखरोत बारठ	मालवी	जोधपुर	रावळ भारमल
सकर तेजसोहोत	वीधुवास	मेड़ता	सूरजसिंघजी
संकर मैरावत रतनुं	हरलाई	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
साजण मेरावत बारठ	खिनावड़ी चारणां रौ बास	जैतारण	सुरतांण जैतसीयोत
सांकर नेतसीयोत	लोहण हेड़ो	सोझत	राव रिडमल
सांकर हीगोळावत रतनुं	नैंते री वासणी	मेड़ता	रा. सुरतांण जैमलोत
सांदु नाथ अखावत	पळासलो रांमा रौ	सोझत	महाराजा जसवंतसिंहजी कु. पृथ्वीसिंह
सारंग सोनावत चारण	कोडुखां	सीवांणा	रा. बरसल पिरथीराजोत
सिवदास सोमावत वणसूर	मोतीसरी	जोधपुर	राजा श्रीउदैसिंघजी
सीयो चंदरावत	मोडरीयो	मेड़ता	रा. सीहा वरसिंघोत
सुजावत सुरतांण	जुढियो	जोधपुर	ईंदा रांणा टोहु
सूरा अचळावत खिड़या	मोहलावास	मेड़ता	मालदेजी
हमीर पुनावत	बाळा	जोधपुर	उहड़ नैतसी काजावत
हेमो चौमावत बारठ	रीछोली	सीवांणो	राव मालदेजी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
चारण वीरा नरबद गोपाळ मनावत	२७५ (भा० २)	बाद में माळदेवजी ने बारठ जसा गोईंदोत को दिया।
बारठ नरहरदास लाखावत	५४८ (भा० १)	
कछेला गोदा गेलां का, खेमौ सेखा का, माधौ तेजा का	५५१ (भा० १)	
भगवान ईसर	१२६ (भा० २)	
	३५४ (भा० २)	
चारण रांमदासोत जगमाल सूजावत देईदांन हापावत	३५४ (भा० २)	जोधाजी गयाजी गये जब यह गांव दान दिया।
	३६६ (भा० १)	
देईदास रांमदासोत	१६४ (भा० २)	
महेसा नाथोत	३३५ (भा० १)	
बारठ गोरणदास मेघराज का गरबदास दूदा का	५४८ (भा० १)	
चावडदास किलांणदासोत	४८४ (भा० १)	
रांमसिंघ सादुळोत सूरौ कलावत	१६५ (भा० २)	
	४८७ (भा० १)	गंगा के ऊपर दिया गया।/१७१५ पौस सुद २
सोहड़ राजौ भांनौ सहसौ महेस अखावत	२७४ (भा० २)	गंगा के पुत्र पत्ता ने राव मालदेजी से विनती करके दिलवाया था।
	२८७ (भा० १)	
भगवांन जसावत कमो सुंदर रौ नाराण अखावत	१७६ (भा० २)	बाद में जैमल वीरमदेवोत ने खड़ीया मांडणोत को दिया।
समुरसी राजो	३११ (भा० १)	
किसनदास केसौदासोत	१२६ (भा० २)	
राघौदास	३०४ (भा० १)	
चारण आखौ गोईंद चतरौ जेता रौ रांमदास पीथा।	२७५ (भा० २)	रा. गंगावत ने गांव देने की सिफारिश की।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
अखैराज दलपतोत प्रोहत	भैंसेर	जोधपुर	राव मालदेजी
अनंत रीखावत श्रीमाली	धरमावासणी (अनंत री बासणी	सोझत	राव श्री गांगाजी
आसलो हरदेधरोत श्रीमाली	लुढावास	सोझत	राव श्रीजोधाजी
आसा देदावत	बावड़ी वास	फलोधी	राव जोधाजी
आवो खींवावत बामण	महिलावाई खुरद	जोधपुर	राव मालदेजी
अंबास ब्यास	जेसलवस	जोधपुर	राव श्री मालदेजी
ऊदा दामावत	छोम	जोधपुर	राव जोधाजी
कंधल मोजावत	देहुरीयो	जैतारण	रतनसी खींवावत
कान्हा बाल्हावत	सातोसणी	सीवांणा	रांणा देवीदास बीजावत
कांना जगावत त्रिवाड़ी	राघा री वासणी	सोझत	महाराजा श्रीजसवंतसिंहजी
कांना उदारायोत	पांचोडोळी वास	मेड़ता	वरसिंघ जोधावत
कांना रंगावत देरासरी	कांनावास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
कांना रंगावत देरासरी	कांनावास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
किसन प्रोहत	कवलली	जोधपुर	रावळ पता
कूंपा रंगावत देरासरी	मालपुरीयौ	सोझत	राव श्रीमालदेजी
केलण	दावड़ीयाणी खुरद	मेड़ता	जैमल वीरमदेवोत
केसा कूंपावत	घटीयाळो	जोधपुर	राव गांगौ
खंगार चांपावत राय गुर	आकेलड़ी	जोधपुर	सोनगरा अखेराज
खीदा कान्हावत	नीबहलो गंगादास	मेड़ता	राईमल दुदावत
खीवड़ देईदास साधु पलीवाल	कालीया वासणी	सीवाणां	राव मालदेजी

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
.	३३४ (भा० १)	
वास जीवण सांवळ, हरदास राघोदास	४८१ (भा० १)	बोहड़ानडी और घरमावासणी दिया गया फिर राजा ने बोहड़ानड़ी को जब्त कर लिया ।
गोपीनाथ रांमचंदोत, मनोहर अणदोत रामजी हरनाथोत हरजी किसनोत	४७९ (भा० १)	
बास २ भाई बेटा	२९ (भा० २)	
	२८६ (भा० १)	
हेंसा ३ सांसण	२५७ (भा० १)	सं० १५८०
राजो उदावत	३३४ (भा० १)	
हरीदास नरा रांमो अचळदासोत	५४३ (भा० १)	
जीवो तीकम का, ईसर कांना का खंगार रांमदास रोहीदास वीदा का	२६८ (भा० २)	
त्रिवाड़ी कांना जगा	४७९ (भा० १)	यह गांव राजकुमार के जन्म की बधाई पर दिया गया ।/सं० १७०९
	१३९ (भा० २)	भाईयों में बंटवारा हो गया और अलग अलग बस गये ।
जसवंत अखैराज नीलकंठ किसनदासोत	२३९ (भा० १)	
ब्राह्मण जीवण जसावत और मनोहर रांमावत	४८१ (भा० १)	
	३६५ (भा० १)	
ब्राह्मण पीतांबर पीराजोत हरवंस दमा	४८२ (भा० २)	
गिरधर तुलछीदासोत रांमचंद डांवरोत	१६३ (भा० २)	
जगनाथ ठाकुर गोपी	३१० (भा० १)	
महैराज टोकरी	२६७ (भा० १)	
राईचंद सुरतांणोत करन तारावत	१६३ (भा० २)	
प्रो. कलो गंगादास मांडण बसतो अणंदा का	२६९ (भा० २)	बाद में रावळ मेघराज हापावत ने बरसिंघोत को दिया फिर बाद में राव चंदरसेन मालदेवोत ने गांव छीन लिया प्रो० खीवड़ ने पेश होकर नमस्कार किया ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
खीवा देवाकर रा आचारज सीवड़	वड़ां खुरद	जोधपुर	रा. श्रीमालदेजी
खेता खीढ़ावत आचारज सीवड़	खारा वेरा	जोधपुर	राव श्री गाँगाजी
खेतो वोलावत	सुकरलाई	जोधपुर	सींधल वीर
गदाधर जीवावत	लूणकरण री वासणी	मेड़ता	राठोड़ सहसा तेजसीहोत
गीथावत	चगांवड़ो आदु	जोधपुर	सांसण पड़ीहारां
गोतम ग्येनसर	हरमु री वासणी	मेड़ता	जैमल वीरमदेवोत
गोदा कोहावत वीस हेमावत	डोहली खुरद	जोधपुर	रांणा देवीदास बीजावत
गोपाल लखावत पाटीख गोलवाळ	संथाणो सरंगवास	मेड़ता	
गोपाल वेळा री आचारज	अरट नडी	जोधपुर	राव चंद्रसेन
चतरभुज कानावत	केलण कोट	सीवाणां	रांणा देवीदास बींजावत
चोहोथो सीवउत	मेरो वावड़ी	जैतारण	जैतसी उदावत
जगनाथ सदाफळोत	जगनाथपुरी	मेड़ता	जगमाल वीरमदेवोत
जगदे रांमदेव	सांवळीयावास खुरद	मेड़ता	वीरमदेव दूदावत
जगहठ बाखळ चांदणोत	सीहा री वासणी	मेड़ता	वरसिंघ जोधावत
जागेसर किसनदासोत व्यास	गैलावास खुरद	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
जैना रामावत व्यास	जैना वासणी	जैतारण	डुंगरसी उदावत
टीला काजावत	खीचवंध	लोधी	राव हमीर नरावत
टोहा खेतावत	लोरड़ी खुरद	जोधपुर	राव मालदेजी
डूगर नाथावत विसनो	तालकीयो	सोझत	राव गांगाजी
डूंगर पदमावत	ब्रमपुरी	जैतारण	जैतसी उदावत
ताराईत मांडा सीहावत	भाटेळाई खुरद	जोधपुर	राव चूंडाजी
तेजा राढ़वत पांचलोढ़ा अचारज	चवंडवा	जोधपुर	राव श्रीचूंडाजी
तेजा खींवा	भैंसेरवास तीजो	जोधपुर	राव चूंडा
थाढ़ा गुदवच	नहेरवो वडो	जोधपुर	राव श्रीमालदेजी
दामां हरपालोत	माडाहाई	जोधपुर	राव जोधाजी
दामां हरपालोत	तिंवरी	जोधपुर	राव जोधाजी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
कचरो देईद सोत	२५६ (भा० १)	
	२३८ (भा० १)	
	२८६ (भा० १)	
स्यामो जगावत बीको नरावत	२१२ (भा० २)	
मेणराज चंड	३११ (भा० १)	
	१३९ (भा० १)	राजा सूरजसिंघजी ने व्यास सादुळ को संवत् १६७६ में फिर दिया ।
	३०१ (भा०) १	
रेखो पीतांबर का, वलु गोरधन का, भूधर गोईंद का	३११ (भा० २)	
	२९२ (भा० १)	
ऊदेसी केसा का, पीथो नरा का	२७३ (भा० २)	
अचळदास ठाकुरसी राईसलोत कचरो नेतसीयोत	(५४३ भा० १)	
मोहण तुलसो किसनदासोत	२१२ (भा० २)	
रामेस्वर कचरावत फरसरांम कचरावत सारंग रामजी हररांम रुघनाथ	१६४ (भा० २)	
लखो उदैसी	१५२ (भा० २)	
रिणछोड़ नीलकंठ	२९२ (भा० १)	
व्यास रांमचंद सांवळोत हरजी जनावत	५४७ (भा० १)	
रांम गढ़ावत	३० (भा० २)	
दुपो जसपाळ	३०३ (भा० १)	
गंगादास तीकम	२८२ (भा० १)	
वीरो खेतसी धनो पीतावत पीराग ईसर का	५४४ (भा० १)	द्वारकाजी में दिया गया ।
	३०१ (भा० १)	
ऊरजो मानां	२३७ (भा० १)	
चंवडीया नेता मानावत	३५५ (भा० १)	
जैतमाल	२८५ (भा० १)	
	२३६ (भा० १)	गयाजी में दिया, तिंवरी ग्राम भी।
अखैराज दळपतोत	२३६ (भा० १)	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
दामां हरपालोत	नारसुवा रो बास	जोधपुर	राव जोधाजी
देव वीरणी	डोडीयाळ	जोधपुर	महाराजा श्रीजसवंतसिंहजी
देवा केलण राजगर	वाकी वाहो खुरद	जोधपुर	रांणा देवीदास
देदा नापा बीजावा	ऊमरळाई खुरद	सीवाणा	किसना रायमलोत देवीदासोत
नरपत सांकरोत श्रीमाली	वीढ़ा वासणी	जोधपुर	राव श्रीमालदेवजी
नरसिंघ चोथोत	पांचवो	सोझत	वीरमदे वाघावत
नाढ़ा दामावत	आसरावो	जोधपुर	भारमल जोधावत
वांना रोहड़ीयोत	सीलोर रा वास	सीवाणा	रावत हापा जैतमाल
नाराईण तेजावत आचारज सोथड़ा	मोडी खुरद	जोधपुर	राजा श्रीउदैसिंघजी
पदमा पोकरणा	ऊपाचीया री बासणी	जोधपुर	राव श्रीजोधाजी
परबत सदावत	सीहथळी	सीवाणा	रांणा देवीदास बीजावत
पीजळ बीवल	बड़ली	जोधपुर	राव चूडाजी
पीतांबर वागदे रा	सूरजमल री बास	जोधपुर	राव श्रीमालदेजी
पीथड़	सोढ़ा बाभण री बास	जोधपुर	रा. ईहड़
पीथोड़ सोढ़ावत	तिसीगड़ी वली री बास थोभ री	सीवाणा	धुहड़ आसथानोत
पीथावत राजगुरू	मोरवी खुरद	जैतारण	जैतसी ऊदावत
पूना अखावत रायगुर	पुनाईता	जोधपुर	रिड़मलजी
बछा गुगली द्वारकाजी सेवगां नुं	कांनावस	जोधपुर	श्री मोटा राजाजी
बरसल सांवतोत	लोळावास	सीवांणा	रांणा देवीदास बीजावत
बींजा गदाधर व्यास	कारोलीयो	जैतारण	जसवंत डूंगरसियोत
भवरण रांमावत	सेपाउवों की वासनी	जोधपुर	राव जोधा
भवानीदास तेजसीहोत	चांवडीयो भाघो	मेड़ता	बीरमदे का पुत्र जगमाल
भाखर नरहरोत	भाखर वासणी	जैतारण	उदा सूजावत
भारमल किसनावत	बिघई कुवो	जोधपुर	राव मालदेजी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेश/संवत्
गोदो नेतलोत	३४० (भा० १)	
	३४१ (भा० १)	
तेजसी पोमा	३०३ (भा० १)	
लखौ नरा कूंपो केसव जसौ करमसी	२७१ (भा० २)	
नीलकंठ गिरधर	२३७ (भा० १)	सं० १५९५
लाधौ उदावत मोणदास जैतसीयोत धनराज तिलोकसी	४८० (भा० १)	बाद में राजा चोलण की तरह पुरोहित सीहे पीथावत रायसल राजावत ने आधा गांव स्वीकार करना मंजूर कर लिया।
मांडण हरदासोत	३०२ (भा० १)	
हेम्दास् लिखमीदास, देवीदास हेमराज खेतौ सूरा, रतनौ रावतोत	२६६ (भा० २)	
गोव्रदास सांमदासोत	२३७ (भा० १)	सं० १६४०
हरजं कलावत	२३९ (भा० १)	
भानोमांडण का, सूजा धना का	२७३ (भा० २)	राव मालदेजी ने प्रो. सादूळ हमीर को और दिया था।
भगवानदास दयाल मांनसिंघोत	२३६ (भा० १)	
सारंगार दवारकेसर	२३८ (भा० १)	
	३०२ (भा० १)	पड़ीहारों की बार में दिया।
किसना द्वारकादास केसा	२६८ (भा० २)	
लिखमीदास वीठळोत डूंगर दयाळ	५४४ (भा० १)	
ठाकुरसीवीठल	२६७ (भा० १)	
सांवळदा	२६० (भा० १)	
खंगार रांदासोत	२७० (भा० २)	
व्यास नरंवाछा का, हररांम गवाल का	५४७ (भा० १)	सूर्यग्रहण में दान दिया।
किसनो	३१० (भा० १)	
जोगीदास ऐसोत राजसी सादूळ	१२८ (भा० २)	
चत्रभुज भवांन का, विजेरांम पिराग का	५२८ (भा० १)	
दांनो सादुोत	३३४ (भा० १)	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
भोजा कूंपावत सीवड़	तालूकीयो	जैतारण	ऊदा सूजावत
महेराज सीहावत	हींगोलो खुरद	जोधपुर	राव चूंडा
माहव रायगुर	रावळवास	जोधपुर	सोनगरा मांनसिंघ
मुरार खेतावत भाटी	नरसिंघ री वासणी	सोझत	राव श्री जोधाजी
मूळा कूंपावत	खेड़ापौ	जोधपुर	राव मालदेजी
मूळा कूंपावत सीवड़	धुहड़ीया वासणी	सोझत	राव श्रीगांगाजी
मूळा कूंपावत सीवड़	वीकरलाई	जैतारण	राव श्रीमालदेजी
मूळा कूंपावत	ढ़ंढ़ोरीयौ	जोधपुर	राव मालदेजी
मूळो कूंपावत सीवड़	चाहड़वास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
मोकळ कचरोत	महैकर रौ वास	सीवाणां	डूंगरसी करमसीहोत जोगइत देवीदासोत
रणमल अणदोत पुणायचा	नागाणौ री वास	जोधपुर	भारमल जोधावत
राजा चोहथोत	रूपावास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
राजा चेहरा सीवड़	राजावासणी	जोधपुर	राठोड़ भींव वाघाव सुजावत
रांमा तीलावत गुजरगौड़	वांभणवास	मेड़ता	दूदे जोधावत
रांम दासावत वीरा अमरावत	महेबारी	सीवांणा	केसोदास भाखरसीयोत
रांम डुगावत जागरवाळी	खेडी चंपा	मेड़ता	वीरमदे दूदावत
रांमा मुरार	खेडेचौ	जोधपुर	राव श्रीगांगाजी
राइमल खेतावत	धुवलेरियो	जोधपुर	राव मालदे
राईसल राजावत	केलरियां री वासणी	जोधपुर	राव मालदेजी

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
हरीदास	५४३ (भा० १)	भोजा जब जोधपुर आया तब दिया गया।
दमोदर	३०१ (भा० १)	
जीवौ किसनावत	२६८ (भा० १)	
जोसी कचरो दामोदर और वीसनदास मथुरादासोत	४८१ (भा० १)	बाद में राजा श्रीऊदैसिंघजी ने संवत् १६४२ आसोज सुद ४ में पट्टे कर दिया।
माधोदास मोहणदासोत	३४९ (भा० १)	
गोरधन जगनाथ सादूळ का लड़का	४७९ (भा० १)	धूहड़ीया वासणी चाहड़वास भी दिया गया।
रांमसिंघ गोपाळदासोत नरसिंघदास रामदासोत	५४६ (भा० १)	
दवारकादास गोयंददासोत	३४९ (भा० १)	
राघोदास घनौ किसनावत और रूपा सांवळदासोत	४८० (भा० १)	धुहड़ीया वासणी ग्राम साथ में दिया।
	२७२ (भा० २)	बाद में राव मालदेव ने तेजसी मोकळोत को दिया।
नाथौ टीकम	३०२ (भा० १)	
चांदावत नैं थळौ उदावत नैं मोणदास जैंतसीयोत	४७८ (भा० १)	बाद में रावरांम मालदेओत ने संवत् १६६१ काती सुद ९ राजावत को फिर दिया। १५८८ जेठ सुद ७ (को प्रथम दान)
कचरौ नेतसी रो	२३८ (भा० १)	
संकर गोपाळ	१५२ (भा० २)	
सूरौ, माघौ, रांमावत, सादूळ आसवत हेमो माहव रो,	२६८ (भा० २)	रा. कीलांण रायपाळोत धुड़डोत का महेवा से अपना निवासस्थान छोड़ कर एक भाखरी के पास घर बना कर बस गये।
जगनाथ चांपावत जीवो सुरताणोत	१७५ (भा० २)	
कचरौ दामोदर	२५४ (भा० १)	
	२८५ (भा० १)	
कलौ जेसावत हरीदासोत	३१० (भा० १)	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
रायसल राजावत राजा जगनाथ	वडीयाळो	सोझत	मालदेवजी
लीला मनांणी	वीलासर	जोधपुर	रावळ मेघराज
वीजड़ वीमलां	कांनुढ़ीयो	जोधपुर	वीरम कलावत
सदा उछतोत श्रीमाली	पळासलो बासरो	सोझत	राव गांगाजी
सहेसा सीनल कुतब	कंवारड़ो	जोधपुर	पतो गांवावत
साकर हरहरा रायगुर	मादड़ी	जोधपुर	राव कानड़दे सोनगरा
सांगा दूदावत	आसराबो	सीवाणा	रांणा देवीदास बीजावत
सीधप जोसी	पाटोधी रो वास	सीवांणा	रांणा देवीदास
सीवदे राय रै	ढ़ाबरवास २	जोधपुर	राव कानड़ दे
सिवराज देईदास देवराजोत	ढ़ेलाणो	फलोधी	राजा श्री उदैसिंघजी
सोमाईत गोहलां रो गुर	काळु बडी	जोधपुर	रावळ जगमाल मालावत
सोमो मदन जात सोथड़ो लाधो	सुराणी खुरद	जोधपुर	राव गांगाजी
सोढ़ा बांभण	नगा रो वास	जोधपुर	रावळपता
सोढ़ा बांभण घीधा	मेघावस	जोधपुर	हीखा जैंतमलोत
सोढ़ा बांभण	नागाणा रो वास	जोधपुर	कीलांण रायपालोत
सोहड़ जंता मनणा	पटाऊ रो बास मनणां रो	सीवाणा	रांणा देईदास बीजावत
सोकर चाहौड़ोत	सरवड़ी	सीवांणा	सोम जैंतमालोत सलखावत
हदू वूटहड़ोत भीदा थाहरोत काका भतीज	खीदाकुवो कीटणोद रो वास	सीवांणा	रांणा देवीदास वीजावत
हरमा माला लखमणोत	धरमदबारी	जोधपुर	राव श्रीरिडमलजी
अन्य			
आसायच भोपा	साठी को बडो	जोधपुर	राव जोधाजी
खुजमहमद पीरजादा निजाम व नीजरवली	खातोळाई	मेड़ता	महाराजा जसवंतसिंघजी
खेचरखांन जोगी नीरमल धन के चेलों को	हरीबास	सोझत	महाराजा जसवंतसिंघजी
थान रावळ जोगी	झीलेळाव	जैतारण	मेर रावत देवा मेहरोत
देवसी राठोड़ भोपा	आसरवा रो वास	जोधपुर	भारमल जोधावत
पींडतां तुंवर		पोकरण	तुंवर रांमदे अर्जैसिंहोत
भाखर सीहेड़ा का कीला चाचावत पाबूजी के भोपे को	कोळू	फलोधी	राव गांगा
सांखला हरभू पीर	वोहोगटी बास २	फलोधी	राव जोधा

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
लखँ उदावत और मोवणदास जेतसीयोत	४७८ (भा० १)	
साजन	३६५ (भा० १)	
माधो रांमदासोत	३१६ (भा० १)	
बासं श्रीरांम, कलो माधोदासोत	४८१ (भा० १)	
		राव श्रीमालदेजी ने संवत् १५६४ महा वद ७ में तांबा पत्र करा दिया।/सं० १५८५
	२८५ (भा० १)	
जेतो जसावत	२६६ (भा० १)	
मेहो रूपा मनोहर जैमल नाढ़ो चांदा का भादो कांना	२६७ (भा० २)	
डूंगरसी नेतावत, तिलोकसी हरखो गांगावत	२७२ (भा० २)	१६७५ में पाटोदी पर जैसलमेर की फौज आई थी।
सिवराज के पुत्र भांनो नारण और बरसल	२६७ (भा० १)	
	३१ (भा० २)	
करमांणद लिखमीदास	३६५ (भा० १)	
कानो अखै तोगो	३१० (भा० १)	
हमीर	३६६ (भा० १)	
दुपो जीवावत	३०२ (भा० १)	
	३०५ (भा० १)	
डाहो खीवा सूजो माधा कलु अणदा का	२७१ (भा० २)	
प्रो. मोहणदास सूजावत जगनाथ लिखमीदासोत राधो नारणोत	२७१ (भा० २)	
सुरतांण देवीदास जेतमल नाराईण भलो चांदा का	२७० (भा० २)	
मालो दिदावत	२६८ (भा० १)	

अन्य

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
भोपा धांधल करमसी	३३५ (भा० १)	श्री माताजी के पुजारी।
	१६६ (भा० २)	सं० १७०६
जोगी हरखवन खेचरवन	४८६ (भा० १)	पहले यह गांव सुजांणसिंह भगवानदासोत के द्वारा खेचरखांन को दिया गया बाद में सुजांणसिंह की मृत्यु के पश्चात् महाराजा ने ताम्रपत्र पर दान के रूप में गांव लिख दिया।/सं० १७०३ रतनसी खींवावत की वार में दिया गया।
	५५२ (भा० १)	
	३०४ (भा० १)	
	३४८ (भा० २)	
जगो दूदावत जैतमालोत	२६ (भा० २)	
	३० (भा० २)	

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

शुद्धि-पत्र

भाग १

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि-शोधन
८	८	आय के स्थान पर आप पढ़ें।
३१	अंतिम	काहु नी के स्थान पर काहुनी (ग्राम) पढ़ें, तदनुसार अर्थभेद भी ग्रहण करें।
३२	२	,, ,, ,, ,,
५६	१०	पैरा नं० ८८ के स्थान पर ८९ पढ़ें।
५६	१५	भोजावाद के स्थान पर मोजाबाद पढ़ें।
९७	प्रथम	६६८ के स्थान पर १६६८ पढ़ें।
११९	२०	१९९४ के स्थान पर १६९४ पढ़ें।
१३२	१२	वेजयां के स्थान पर वेजपां पढ़ें।
१३६	१२	भार के स्थान पर मार पढ़ें, तदनुसार फुट नोट में अर्थ 'पेट में कटारी मार कर मरा', ग्रहण करें।
१६५	५	पाळी के स्थान पर पाली पढ़ें।
१८६	३	पैरा नं० १४६ के स्थान पर २४६ पढ़ें।
१८९	१४	पैरा नं० १४७ के स्थान पर २४७ पढ़ें।

भाग २

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि-शोधन
५१	८	मंडोवर के स्थान पर मांडव पढ़ें।
९२	१५	१८१४ के स्थान पर १७१४ पढ़ें।
५०१	१५	मांहिम है सर भोज दे के स्थान पर "मांहि महेसर भोजदे" पढ़ें।

भाग ३

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि-शोधन
९६		अन्य आसामियों के शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये नाम उन योद्धाओं के हैं जो धवलपुर के युद्ध में काम आये (मूंदियाड़ की ख्यात पृ० १४८)

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

Opinions

"I have finished the first reading of this excellent work almost at a breath and found it very valuable. It opens many a vista of original research in the History of Rajputana such as Revenue administration of Marwar, distribution of races in Marwar and above all a social History of Medieval Marwar. The Editor's Introduction written by Shri Narayan Singh Bhati has been very ably written, hardly leaving any room for reviewer to say something original. Foot notes will prove useful."

Prof. K. R. Qanungo
Formerly Professor & Head of the
Deptt. of History, Universities
of Dacca & Lucknow.

× × ×

"राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-इतिहास सम्बन्धी अनेकानेक प्रचलित धारणाओं तथा मान्यताओं में कई उल्लेखनीय परिवर्तन या संशोधन अब आवश्यक हो गये हैं। यों इसको प्रकाशित करके राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान ने राजस्थान के इतिहास सम्बन्धी खोज का एक सर्वथा नया अनपेक्षित अध्याय प्रारंभ किया है। इस ग्रंथ के सुविज्ञ सम्पादक डा० नारायणसिंह भाटी ने, अपनी विस्तृत भूमिका में विविध विषयक जानकारी प्रस्तुत कर, इस ग्रंथ के पाठकों तथा इतिहास-संशोधकों का मार्ग सुगम ही नहीं कर दिया है, परन्तु इस समूचे प्रकाशन का महत्व और भी बढ़ा दिया है।"

—डा० रघुवीरसिंह
सीतामऊ

× × ×

"आपने नैणसी के ग्रंथों का सम्पादन व प्रकाशन करके हिन्दी साहित्य, विशेषकर इतिहास के विद्यार्थियों का बड़ा ही उपकार किया है। नैणसी का यह ग्रंथ उनकी 'ख्यात' से कहीं अधिक मूल्यवान है और उस पर इतना विस्तृत, विद्वतापूर्ण सम्पादकीय लिखकर उसके महत्व को आपने हर प्रकार से बहुत अधिक बढ़ा दिया है।"

—प्रो० परमात्माशरण
हैदराबाद

CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy